तारीख़ी सहायफ़

असल इबरानी और अरामी मतन से नया उर्दू तरजुमा

उर्दू जियो वरझ़न

The Historical Books. Joshua-Esther in Modern Urdu
Translated from the Original Hebrew and Aramaic
Urdu Geo Version (Hindi script)

© 2021 Urdu Geo Version
www.urdugeoversion.com

This work is licensed under a Creative Commons Attribution
- NonCommercial - NoDerivatives 4.0 International Public License.
https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/legalcode

For permissions & requests regarding printing & further formats
contact info@urdugeoversion.com.

तारीख़ी सहायफ़

यशुअ	1	2 सलातीन	197
क़ुज़ात	33	1 तवारीख़	240
रूत	66	2 तवारीख़	278
1 समुएल	71	अज़रा	326
2 समुएल	115	नहमियाह	340
1 सलातीन	153	आस्तर	360

हरफ़े-आग़ाज़

अज़ीज़ क़ारी! आपके हाथ में किताबे-मुक़द्दस का नया उर्दू तरजुमा है। यह इलाही किताब इनसान के लिए अल्लाह तआला का कलाम है। इसमें इनसान के साथ अल्लाह की मुहब्बत और उसके लिए उस की मरज़ी और मनशा का इज़हार है।

किताबे-मुक़द्दस पुराने और नए अहदनामे का मजमुआ है। पुराना अहदनामा तौरेत, तारीख़ी सहायफ़, हिकमत और ज़बूर के सहायफ़, और अंबिया के सहायफ़ पर मुश्तमिल है। नया अहदनामा इंजीले-मुक़द्दस का पाक कलाम है।

पुराने अहदनामे की असल ज़बान इबरानी और अरामी और नए अहदनामे की यूनानी है। ज़ेरे-नज़र मतन इन ज़बानों का बराहे-रास्त तरजुमा है। मुतरजिम ने हर मुमकिन कोशिश की है कि असल ज़बानों का सहीह सहीह मफ़हूम अदा करे।

पाक कलाम के तमाम मुतरजिमीन को दो सवालों का सामना है : पहला यह कि असल मतन का सहीह सहीह तरजुमा किया जाए। दूसरा यह कि जिस ज़बान में तरजुमा करना मक़सूद हो उस की ख़ूबसूरती और चाशनी भी बरक़रार रहे और पाक मतन के साथ वफ़ादारी भी मुतअस्सिर न हो। चुनाँचे हर मुतरजिम को फ़ैसला करना होता है कि कहाँतक वुह लफ़्ज़ बलफ़्ज़ तरजुमा करे और कहाँतक उर्दू ज़बान की सेहत, ख़ूबसूरती और चाशनी को मद्दे-नज़र रखते हुए क़दरे आज़ादाना तरजुमा करे। मुख़्तलिफ़ तरजुमों में जो बाज़ औक़ात थोड़ा-बहत फ़रक़ नज़र आता है उसका यही सबब है कि एक मुतरजिम असल अलफ़ाज़ का ज़्यादा पाबंद रहा है जबकि दूसरे ने मफ़हूम को अदा करने में उर्दू ज़बान की रिआयत करके क़दरे आज़ाद तरीक़े से मतलब को अदा करने की कोशिश की है। इस तरजुमे में जहाँ तक हो सका असल ज़बान के क़रीब रहने की कोशिश की गई है। याद रहे कि सुर्ख़ियाँ और उनवानात मतन का हिस्सा नहीं हैं। उनको महज़ क़ारी की सहूलत की ख़ातिर दिया गया है।

चूँकि असल ज़बानों में अंबिया के लिए इज़्ज़त के वुह अलक़ाब इस्तेमाल नहीं किए गए जिनका आज-कल रिवाज है, इसलिए इलहामी मतन के एहतराम को मलहूज़े-ख़ातिर रखते हुए तरजुमे में अलक़ाब का इज़ाफ़ा करने से गुरेज़ किया गया है।

किताबे-मुक़द्दस में मज़कूर जवाहरात का तरजुमा जदीद साइंसी तहक़ीक़ात के मुताबिक़ किया गया है।

चूँकि वक़्त के साथ साथ नाप-तोल की मिक़दारें क़दरे बदल गईं इसलिए तरजुमे में उनकी अदायगी में ख़ास मुश्किल पेश आई।

जहाँ रूह का लफ़्ज़ सीग़ाए-मुज़क्कर में अदा किया गया है वहाँउससे मुराद रूहुल-क़ुद्स यानी ख़ुदा का रूह है। जब वुह और मानों में मुस्तामल है तब मामूल के मुताबिक़ सीग़ाए-मुअन्नस इस्तेमाल हुआ है।

इंजीले-मुक़द्दस में बपतिस्मा देने का लुग़वी मतलब ग़ोता देना है। जिस शख़्स को बपतिस्मा दिया जाता है उसे पानी में ग़ोता दिया जाता है।

बारी तआला के फ़ज़ल से इंजीले-मुक़द्दस के कई उर्दू तरजुमे दस्तयाब हैं। इन सबका मक़सद यही है कि असल ज़बान का मफ़हूम अदा किया जाए। इनका आपस में मुक़ाबला नहीं है बल्कि मुख़्तलिफ़ तरजुमों का एक दूसरे के साथ मुवाज़ना करने से असली ज़बान के मफ़हूम की गहराई और वुसअत सामने आती है और यों मुख़्तलिफ़ तरजुमे मिलकर कलामे-मुक़द्दस की पूरी तफ़्हीम में मुअविन साबित होते हैं।

अल्लाह करे कि यह तरजुमा भी उसके ज़िंदा कलाम का मतलब और मक़सद और उस की वुसअत और गहराई को ज़्यादा सफ़ाई से समझने में मदद का बाइस बने।

नाशिरीन

यशुअ

रब यशुअ को राहनुमाई की ज़िम्मेदारी सौंपता है

1 रब के ख़ादिम मूसा की मौत के बाद
रब मूसा के मददगार यशुअ बिन नून से
हमकलाम हुआ। उसने कहा, 2“मेरा ख़ादिम मूसा
फ़ौत हो गया है। अब उठ, इस पूरी क़ौम के
साथ दरियाए-यरदन को पार करके उस मुल्क
में दाख़िल हो जा जो मैं इसराईलियों को देने
को हूँ। 3जिस ज़मीन पर भी तू अपना पाँव
रखेगा उसे मैं मूसा के साथ किए गए वादे के
मुताबिक़ तुझे दूँगा। 4तुम्हारे मुल्क की सरहद्दें यह
होंगी : जुनूब में नजब का रेगिस्तान, शिमाल में
लुबनान, मशरिक़ में दरियाए-फ़ुरात और मग़रिब
में बहीराए-रूम। हित्ती क़ौम का पूरा इलाक़ा इसमें
शामिल होगा। 5तेरे जीते-जी कोई तेरा सामना
नहीं कर सकेगा। जिस तरह मैं मूसा के साथ था,
उसी तरह तेरे साथ भी हूँगा। मैं तुझे कभी नहीं
छोड़ूँगा, न तुझे तर्क करूँगा।
6मज़बूत और दिलेर हो, क्योंकि तू ही इस
क़ौम को मीरास में वह मुल्क देगा जिसका मैंने
उनके बापदादा से क़सम खाकर वादा किया था।
7लेकिन ख़बरदार, मज़बूत और बहुत दिलेर हो।
एहतियात से उस पूरी शरीअत पर अमल कर
जो मेरे ख़ादिम मूसा ने तुझे दी है। उससे न दाईं
और न बाईं तरफ़ हटना। फिर जहाँ कहीं भी तू
जाए कामयाब होगा। 8जो बातें इस शरीअत की
किताब में लिखी हैं वह तेरे मुँह से न हटें। दिन-रात
उन पर ग़ौर करता रह ताकि तू एहतियात से
इसकी हर बात पर अमल कर सके। फिर तू हर
काम में कामयाब और ख़ुशहाल होगा।
9मैं फिर कहता हूँ कि मज़बूत और दिलेर हो।
न घबरा और न हौसला हार, क्योंकि जहाँ भी तू
जाएगा वहाँ रब तेरा ख़ुदा तेरे साथ रहेगा।”

मुल्क में दाख़िल होने की तैयारियाँ

10फिर यशुअ क़ौम के निगहबानों से मुख़ातिब
हुआ, 11“ख़ैमागाह में हर जगह जाकर लोगों को
इत्तला दें कि सफ़र के लिए खाने का बंदोबस्त
कर लें। क्योंकि तीन दिन के बाद आप दरियाए-
यरदन को पार करके उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करेंगे
जो रब आपका ख़ुदा आपको विरसे में दे रहा है।”
12फिर यशुअ रूबिन, जद और मनस्सी के
आधे क़बीले से मुख़ातिब हुआ, 13“यह बात
याद रखें जो रब के ख़ादिम मूसा ने आपसे कही
थी, ‘रब तुम्हारा ख़ुदा तुमको दरियाए-यरदन के
मशरिक़ी किनारे पर का यह इलाक़ा देता है
ताकि तुम यहाँ अमनो-अमान के साथ रह सको।’
14अब जब हम दरियाए-यरदन को पार कर रहे हैं
तो आपके बाल-बच्चे और मवेशी यहीं रह सकते
हैं। लेकिन लाज़िम है कि आपके तमाम जंग करने
के क़ाबिल मर्द मुसल्लह होकर अपने भाइयों के
आगे आगे दरिया को पार करें। आपको उस वक़्त
तक अपने भाइयों की मदद करना है 15जब तक
रब उन्हें वह आराम न दे जो आपको हासिल है

और वह उस मुल्क पर क़ब्ज़ा न कर लें जो रब
आपका ख़ुदा उन्हें दे रहा है। इसके बाद ही आपको
अपने उस इलाक़े में वापस जाकर आबाद होने
की इजाज़त होगी जो रब के ख़ादिम मूसा ने
आपको दरियाए-यरदन के मशरिक़ी किनारे पर
दिया था।”
16उन्होंने जवाब में यशुअ से कहा, “जो भी
हुक्म आपने हमें दिया है वह हम मानेंगे और जहाँ
भी हमें भेजेंगे वहाँ जाएंगे। 17जिस तरह हम मूसा
की हर बात मानते थे उसी तरह आपकी भी हर
बात मानेंगे। लेकिन रब आपका ख़ुदा उसी तरह
आपके साथ हो जिस तरह वह मूसा के साथ था।
18जो भी आपके हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी करके
आपकी वह तमाम बातें न माने जो आप फ़रमाएँगे
उसे सज़ाए-मौत दी जाए। लेकिन मज़बूत और
दिलेर हों!”

यरीहू शहर में इसराईली जासूस

2 फिर यशुअ ने चुपके से दो जासूसों को
शित्तीम से भेज दिया जहाँ इसराईली
ख़ैमागाह थी। उसने उनसे कहा, “जाकर मुल्क
का जायज़ा लें, ख़ासकर यरीहू शहर का।” वह
रवाना हुए और चलते चलते एक कसबी के घर
पहुँचे जिसका नाम राहब था। वहाँ वह रात के
लिए ठहर गए। 2लेकिन यरीहू के बादशाह को
इत्तला मिली कि आज शाम को कुछ इसराईली
मर्द यहाँ पहुँच गए हैं जो मुल्क की जासूसी करना
चाहते हैं। 3यह सुनकर बादशाह ने राहब को ख़बर
भेजी, “उन आदमियों को निकाल दो जो तुम्हारे
पास आकर ठहरे हुए हैं, क्योंकि यह पूरे मुल्क
की जासूसी करने के लिए आए हैं।”
4लेकिन राहब ने दोनों आदमियों को छुपा रखा
था। उसने कहा, “जी, यह आदमी मेरे पास आए
तो थे लेकिन मुझे मालूम नहीं था कि कहाँ से आए
हैं। 5जब दिन ढलने लगा और शहर के दरवाज़ों
को बंद करने का वक़्त आ गया तो वह चले गए।
मुझे मालूम नहीं कि किस तरफ़ गए। अब जल्दी
करके उनका पीछा करें। ऐन मुमकिन है कि आप
उन्हें पकड़ लें।” 6हक़ीक़त में राहब ने उन्हें छत पर
ले जाकर वहाँ पर पड़े सन के डंठलों के नीचे छुपा
दिया था। 7राहब की बात सुनकर बादशाह के
आदमी वहाँ से चले गए और शहर से निकलकर
जासूसों के ताक़्क़ुब में उस रास्ते पर चलने लगे
जो दरियाए-यरदन के उन कम-गहरे मक़ामों तक
ले जाता है जहाँ उसे पैदल उबूर किया जा सकता
था। और ज्योंही यह आदमी निकले, शहर का
दरवाज़ा उनके पीछे बंद कर दिया गया।
8जासूसों के सो जाने से पहले राहब ने छत
पर आकर 9उनसे कहा, “मैं जानती हूँ कि रब
ने यह मुल्क आपको दे दिया है। आपके बारे में
सुनकर हम पर दहशत छा गई है, और मुल्क के
तमाम बाशिंदे हिम्मत हार गए हैं। 10क्योंकि हमें
ख़बर मिली है कि आपके मिसर से निकलते वक़्त
रब ने बहरे-क़ुलज़ुम का पानी किस तरह आपके
आगे ख़ुश्क कर दिया। यह भी हमारे सुनने में
आया है कि आपने दरियाए-यरदन के मशरिक़ में
रहनेवाले दो बादशाहों सीहोन और ओज के साथ
क्या कुछ किया, कि आपने उन्हें पूरी तरह तबाह
कर दिया। 11यह सुनकर हमारी हिम्मत टूट गई।
आपके सामने हम सब हौसला हार गए हैं, क्योंकि
रब आपका ख़ुदा आसमानो-ज़मीन का ख़ुदा है।
12अब रब की क़सम खाकर मुझसे वादा करें कि
आप उसी तरह मेरे ख़ानदान पर मेहरबानी करेंगे
जिस तरह कि मैंने आप पर की है। और ज़मानत
के तौर पर मुझे कोई निशान दें 13कि आप मेरे
माँ-बाप, मेरे बहन-भाइयों और उनके घरवालों को
ज़िंदा छोड़कर हमें मौत से बचाए रखेंगे।”
14आदमियों ने कहा, “हम अपनी जानों को
ज़मानत के तौर पर पेश करते हैं कि आप महफ़ूज़
रहेंगे। अगर आप किसी को हमारे बारे में इत्तला
न दें तो हम आपसे ज़रूर मेहरबानी और वफ़ादारी
से पेश आएँगे जब रब हमें यह मुल्क अता
फ़रमाएगा।”
15तब राहब ने शहर से निकलने में उनकी
मदद की। चूँकि उसका घर शहर की चारदीवारी
से मुलहिक़ था इसलिए आदमी खिड़की से

निकलकर रस्से के ज़रीए बाहर की ज़मीन पर
उतर आए। 16उतरने से पहले राहब ने उन्हें
हिदायत की, "पहाड़ी इलाक़े की तरफ़ चले जाएँ।
जो आपका ताक़्क़ुब कर रहे हैं वह वहाँ आपको
ढूँड नहीं सकेंगे। तीन दिन तक यानी जब तक
वह वापस न आ जाएँ वहाँ छुपे रहना। इसके बाद
जहाँ जाने का इरादा है चले जाना।"

17आदमियों ने उससे कहा, "जो क़सम आपने
हमें खिलाई है हम ज़रूर उसके पाबंद रहेंगे।
लेकिन शर्त यह है 18कि आप हमारे इस मुल्क
में आते वक़्त क़िरमिज़ी रंग का यह रस्सा उस
खिड़की के सामने बाँध दें जिसमें से आपने हमें
उतरने दिया है। यह भी लाज़िम है कि उस वक़्त
आपके माँ-बाप, भाई-बहनें और तमाम घरवाले
आपके घर में हों। 19अगर कोई आपके घर में से
निकले और मार दिया जाए तो यह हमारा क़ुसूर
नहीं होगा, हम ज़िम्मेदार नहीं ठहरेंगे। लेकिन
अगर किसी को हाथ लगाया जाए जो आपके घर
के अंदर हो तो हम ही उस की मौत के ज़िम्मेदार
ठहरेंगे। 20और किसी को हमारे मामले के बारे में
इत्तला न देना, वरना हम उस क़सम से आज़ाद हैं
जो आपने हमें खिलाई।"

21राहब ने जवाब दिया, "ठीक है, ऐसा ही
हो।" फिर उसने उन्हें रुख़सत किया और वह
रवाना हुए। और राहब ने अपनी खिड़की के साथ
मज़कूरा रस्सा बाँध दिया।

22जासूस चलते चलते पहाड़ी इलाक़े में आ
गए। वहाँ वह तीन दिन रहे। इतने में उनका
ताक़्क़ुब करनेवाले पूरे रास्ते का खोज लगाकर
ख़ाली हाथ लौटे। 23फिर दोनों जासूसों ने पहाड़ी
इलाक़े से उतरकर दरियाए-यरदन को पार किया
और यशुअ बिन नून के पास आकर सब कुछ
बयान किया जो उनके साथ हुआ था। 24उन्होंने
कहा, "यक़ीनन रब ने हमें पूरा मुल्क दे दिया है।
हमारे बारे में सुनकर मुल्क के तमाम बाशिंदों पर
दहशत तारी हो गई है।"

इसराईली दरियाए-यरदन को उबूर करते हैं

3 सुबह-सवेरे उठकर यशुअ और तमाम
इसराईली शित्तीम से रवाना हुए। जब वह
दरियाए-यरदन पर पहुँचे तो उसे उबूर न किया
बल्कि रात के लिए किनारे पर रुक गए। 2वह
तीन दिन वहाँ रहे। फिर निगहबानों ने ख़ैमागाह
में से गुज़रकर 3लोगों को हुक्म दिया, "जब आप
देखें कि लावी के क़बीले के इमाम रब आपके ख़ुदा
के अहद का संदूक़ उठाए हुए हैं तो अपने अपने
मक़ाम से रवाना होकर उसके पीछे हो लें। 4फिर
आपको पता चलेगा कि कहाँ जाना है, क्योंकि
आप पहले कभी वहाँ नहीं गए। लेकिन संदूक़ के
तक़रीबन एक किलोमीटर पीछे रहें और ज़्यादा
क़रीब न जाएँ।"

5यशुअ ने लोगों को बताया, "अपने आपको
मख़सूसो-मुक़द्दस करें, क्योंकि कल रब आपके
दरमियान हैरतअंगेज़ काम करेगा।"

6अगले दिन यशुअ ने इमामों से कहा, "अहद
का संदूक़ उठाकर लोगों के आगे आगे दरिया को
पार करें।" चुनाँचे इमाम संदूक़ को उठाकर आगे
आगे चल दिए। 7और रब ने यशुअ से फ़रमाया,
"मैं तुझे तमाम इसराईलियों के सामने सरफ़राज़
कर दूँगा, और आज ही मैं यह काम शुरू करूँगा
ताकि वह जान लें कि जिस तरह मैं मूसा के
साथ था उसी तरह तेरे साथ भी हूँ। 8अहद का
संदूक़ उठानेवाले इमामों को बता देना, 'जब आप
दरियाए-यरदन के किनारे पहुँचेंगे तो वहाँ पानी में
रुक जाएँ'।"

9यशुअ ने इसराईलियों से कहा, "मेरे पास
आएँ और रब अपने ख़ुदा के फ़रमान सुन लें।
10आज आप जान लेंगे कि ज़िंदा ख़ुदा आपके
दरमियान है और कि वह यक़ीनन आपके आगे
आगे जाकर दूसरी क़ौमों को निकाल देगा, ख़ाह
वह कनानी, हित्ती, हिव्वी, फ़रिज़्ज़ी, जिरजासी,
अमोरी या यबूसी हों। 11यह यों ज़ाहिर होगा
कि अहद का यह संदूक़ जो तमाम दुनिया के
मालिक का है आपके आगे आगे दरियाए-यरदन

में जाएगा। 12अब ऐसा करें कि हर क़बीले में से एक एक आदमी को चुन लें ताकि बारह अफ़राद जमा हो जाएँ। 13फिर इमाम तमाम दुनिया के मालिक रब के अहद का संदूक़ उठाकर दरिया में जाएंगे। और ज्योंही वह अपने पाँव पानी में रखेंगे तो पानी का बहाव रुक जाएगा और आनेवाला पानी ढेर बनकर खड़ा रहेगा।”

14चुनाँचे इसराईली अपने ख़ैमों को समेटकर रवाना हुए, और अहद का संदूक़ उठानेवाले इमाम उनके आगे आगे चल दिए। 15फ़सल की कटाई का मौसम था, और दरिया का पानी किनारों से बाहर आ गया था। लेकिन ज्योंही संदूक़ को उठानेवाले इमामों ने दरिया के किनारे पहुँचकर पानी में क़दम रखा 16तो आनेवाले पानी का बहाव रुक गया। वह उनसे दूर एक शहर के क़रीब ढेर बन गया जिसका नाम आदम था और जो ज़रतान के नज़दीक है। जो पानी दूसरी यानी बहीराए-मुरदार की तरफ़ बह रहा था वह पूरी तरह उतर गया। तब इसराईलियों ने यरीहू शहर के मुक़ाबिल दरिया को पार किया। 17रब का अहद का संदूक़ उठानेवाले इमाम दरियाए-यरदन के बीच में ख़ुश्क ज़मीन पर खड़े रहे जबकि बाक़ी लोग ख़ुश्क ज़मीन पर से गुज़र गए। इमाम उस वक़्त तक वहाँ खड़े रहे जब तक तमाम इसराईलियों ने ख़ुश्क ज़मीन पर चलकर दरिया को पार न कर लिया।

यादगार पत्थर

4 जब पूरी क़ौम ने दरियाए-यरदन को उबूर कर लिया तो रब यशुअ से हमकलाम हुआ, 2“हर क़बीले में से एक एक आदमी को चुन ले। 3फिर इन बारह आदमियों को हुक्म दे कि जहाँ इमाम दरियाए-यरदन के दरमियान खड़े हैं वहाँ से बारह पत्थर उठाकर उन्हें उस जगह रख दो जहाँ तुम आज रात ठहरोगे।”

4चुनाँचे यशुअ ने उन बारह आदमियों को बुलाया जिन्हें उसने इसराईल के हर क़बीले से चुन लिया था 5और उनसे कहा, “रब अपने ख़ुदा के संदूक़ के आगे आगे चलकर दरिया के दरमियान तक जाएँ। आपमें से हर आदमी एक एक पत्थर उठाकर अपने कंधे पर रखे और बाहर ले जाए। कुल बारह पत्थर होंगे, इसराईल के हर क़बीले के लिए एक। 6यह पत्थर आपके दरमियान एक यादगार निशान रहेंगे। आइंदा जब आपके बच्चे आपसे पूछेंगे कि इन पत्थरों का क्या मतलब है 7तो उन्हें बताना, ‘यह हमें याद दिलाते हैं कि दरियाए-यरदन का बहाव रुक गया जब रब का अहद का संदूक़ उसमें से गुज़रा।’ यह पत्थर अबद तक इसराईल को याद दिलाते रहेंगे कि यहाँ क्या कुछ हुआ था।”

8इसराईलियों ने ऐसा ही किया। उन्होंने दरियाए-यरदन के बीच में से अपने क़बीलों की तादाद के मुताबिक़ बारह पत्थर उठाए, बिलकुल उसी तरह जिस तरह रब ने यशुअ को फ़रमाया था। फिर उन्होंने यह पत्थर अपने साथ लेकर उस जगह रख दिए जहाँ उन्हें रात के लिए ठहरना था। 9साथ साथ यशुअ ने उस जगह भी बारह पत्थर खड़े किए जहाँ अहद का संदूक़ उठानेवाले इमाम दरियाए-यरदन के दरमियान खड़े थे। यह पत्थर आज तक वहाँ पड़े हैं। 10संदूक़ को उठानेवाले इमाम दरिया के दरमियान खड़े रहे जब तक लोगों ने तमाम अहकाम जो रब ने यशुअ को दिए थे पूरे न कर लिए। यों सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा मूसा ने यशुअ को फ़रमाया था।

लोग जल्दी जल्दी दरिया में से गुज़रे। 11जब सब दूसरे किनारे पर थे तो इमाम भी रब का संदूक़ लेकर किनारे पर पहुँचे और दुबारा क़ौम के आगे आगे चलने लगे। 12और जिस तरह मूसा ने फ़रमाया था, रूबिन, जद और मनस्सी के आधे क़बीले के मर्द मुसल्लह होकर बाक़ी इसराईली क़बीलों से पहले दरिया के दूसरे किनारे पर पहुँच गए थे। 13तक़रीबन 40,000 मुसल्लह मर्द उस वक़्त रब के सामने यरीहू के मैदान में पहुँच गए ताकि वहाँ जंग करें। 14उस दिन रब ने यशुअ को पूरी इसराईली क़ौम के सामने सरफ़राज़ किया।

उसके जीते-जी लोग उसका यों ख़ौफ़ मानते रहे
जिस तरह पहले मूसा का।
15फिर रब ने यशुअ से कहा, 16“अहद का
संदूक़ उठानेवाले इमामों को दरिया में से निकलने
का हुक्म दे।” 17यशुअ ने ऐसा ही किया 18तो
ज्योंही इमाम किनारे पर पहुँच गए पानी दुबारा
बहकर दरिया के किनारों से बाहर आने लगा।
19इसराईलियों ने पहले महीने के दसवें दिन[a]
दरियाए-यरदन को उबूर किया। उन्होंने अपने ख़ैमे
यरीहू के मशरिक़ में वाक़े जिलजाल में खड़े किए।
20वहाँ यशुअ ने दरिया में से चुने हुए बारह पत्थरों
को खड़ा किया। 21उसने इसराईलियों से कहा,
“आइंदा जब आपके बच्चे अपने अपने बाप से
पूछेंगे कि इन पत्थरों का क्या मतलब है 22तो
उन्हें बताना, ‘यह वह जगह है जहाँ इसराईली
क़ौम ने ख़ुश्क ज़मीन पर दरियाए-यरदन को पार
किया।’ 23क्योंकि रब आपके ख़ुदा ने उस वक़्त
तक आपके आगे आगे दरिया का पानी ख़ुश्क
कर दिया जब तक आप वहाँ से गुज़र न गए,
बिलकुल उसी तरह जिस तरह बहरे-क़ुलज़ुम के
साथ किया था जब हम उसमें से गुज़रे। 24उसने
यह काम इसलिए किया ताकि ज़मीन की तमाम
क़ौमें अल्लाह की क़ुदरत को जान लें और आप
हमेशा रब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानें।”

5 यह ख़बर दरियाए-यरदन के मग़रिब में
आबाद तमाम अमोरी बादशाहों और
साहिली इलाक़े में आबाद तमाम कनानी
बादशाहों तक पहुँच गई कि रब ने इसराईलियों
के सामने दरिया को उस वक़्त तक ख़ुश्क कर
दिया जब तक सबने पार न कर लिया था। तब
उनकी हिम्मत टूट गई और उनमें इसराईलियों का
सामना करने की जुर्रत न रही।

जिलजाल में ख़तना

2उस वक़्त रब ने यशुअ से कहा, “पत्थर
की छुरियाँ बनाकर पहले की तरह इसराई-
लियों का ख़तना करवा दे।” 3चुनाँचे यशुअ
ने पत्थर की छुरियाँ बनाकर एक जगह पर
इसराईलियों का ख़तना करवाया जिसका नाम
बाद में ‘ख़तना पहाड़’ रखा गया। 4बात यह थी
कि जो मर्द मिसर से निकलते वक़्त जंग करने
के क़ाबिल थे वह रेगिस्तान में चलते चलते मर
चुके थे। 5मिसर से रवाना होनेवाले इन तमाम
मर्दों का ख़तना हुआ था, लेकिन जितने लड़कों
की पैदाइश रेगिस्तान में हुई थी उनका ख़तना
नहीं हुआ था। 6चूँकि इसराईली रब के ताबे नहीं
रहे थे इसलिए उसने क़सम खाई थी कि वह उस
मुल्क को नहीं देखेंगे जिसमें दूध और शहद की
कसरत है और जिसका वादा उसने क़सम खाकर
उनके बापदादा से किया था। नतीजे में इसराईली
फ़ौरन मुल्क में दाख़िल न हो सके बल्कि उन्हें उस
वक़्त तक रेगिस्तान में फिरना पड़ा जब तक वह
तमाम मर्द मर न गए जो मिसर से निकलते वक़्त
जंग करने के क़ाबिल थे। 7उनकी जगह रब ने
उनके बेटों को खड़ा किया था। यशुअ ने उन्हीं का
ख़तना करवाया। उनका ख़तना इसलिए हुआ कि
रेगिस्तान में सफ़र के दौरान उनका ख़तना नहीं
किया गया था।
8पूरी क़ौम के मर्दों का ख़तना होने के बाद वह
उस वक़्त तक ख़ैमागाह में रहे जब तक उनके
ज़ख़म ठीक नहीं हो गए थे। 9और रब ने यशुअ
से कहा, “आज मैंने मिसर की रुसवाई तुमसे दूर
कर दी है।”[b] इसलिए उस जगह का नाम आज
तक जिलजाल यानी लुढ़काना रहा है।
10जब इसराईली यरीहू के मैदानी इलाक़े में
वाक़े जिलजाल में ख़ैमाज़न थे तो उन्होंने फ़सह
की ईद भी मनाई। महीने का चौधवाँ दिन था,
11और अगले ही दिन वह पहली दफ़ा उस मुल्क
की पैदावार में से बेख़मीरी रोटी और अनाज के
भुने हुए दाने खाने लगे। 12उसके बाद के दिन मन
का सिलसिला ख़त्म हुआ और इसराईलियों के
लिए यह सहूलत न रही। उस साल से वह कनान
की पैदावार से खाने लगे।

[a]यानी अप्रैल में।

[b]लफ़्ज़ी तरजुमा : लुढ़काकर दूर कर दी है।

फ़रिश्ते से यशुअ की मुलाक़ात

13एक दिन यशुअ यरीहू शहर के क़रीब था। अचानक एक आदमी उसके सामने खड़ा नज़र आया जिसके हाथ में नंगी तलवार थी। यशुअ ने उसके पास जाकर पूछा, "क्या आप हमारे साथ या हमारे दुश्मनों के साथ हैं?"

14आदमी ने कहा, "नहीं, मैं रब के लशकर का सरदार हूँ और अभी अभी तेरे पास पहुँचा हूँ।"

यह सुनकर यशुअ ने गिरकर उसे सिजदा किया और पूछा, "मेरे आक़ा अपने ख़ादिम को क्या फ़रमाना चाहते हैं?"

15रब के लशकर के सरदार ने जवाब में कहा, "अपने जूते उतार दे, क्योंकि जिस जगह पर तू खड़ा है वह मुक़द्दस है।" यशुअ ने ऐसा ही किया।

यरीहू की तबाही

6 उन दिनों में इसराईलियों की वजह से यरीहू के दरवाज़े बंद ही रहे। न कोई बाहर निकला, न कोई अंदर गया। 2रब ने यशुअ से कहा, "मैंने यरीहू को उसके बादशाह और फ़ौजी अफ़सरों समेत तेरे हाथ में कर दिया है। 3जो इसराईली जंग के लिए तेरे साथ निकलेंगे उनके साथ शहर की फ़सील के साथ साथ चलकर एक चक्कर लगाओ और फिर ख़ैमागाह में वापस आ जाओ। छः दिन तक ऐसा ही करो। 4सात इमाम एक एक नरसिंगा उठाए अहद के संदूक़ के आगे आगे चलें। फिर सातवें दिन शहर के गिर्द सात चक्कर लगाओ। साथ साथ इमाम नरसिंगे बजाते रहें। 5जब वह नरसिंगों को बजाते बजाते लंबी-सी फूँक मारेंगे तो फिर तमाम इसराईली बड़े ज़ोर से जंग का नारा लगाएँ। इस पर शहर की फ़सील गिर जाएगी और तेरे लोग हर जगह सीधे शहर में दाख़िल हो सकेंगे।"

6यशुअ बिन नून ने इमामों को बुलाकर उनसे कहा, "रब के अहद का संदूक़ उठाकर मेरे साथ चलें। और सात इमाम एक एक नरसिंगा उठाए संदूक़ के आगे आगे चलें।" 7फिर उसने बाक़ी लोगों से कहा, "आएँ, शहर की फ़सील के साथ साथ चलकर एक चक्कर लगाएँ। मुसल्लह आदमी रब के संदूक़ के आगे आगे चलें।"

8सब कुछ यशुअ की हिदायात के मुताबिक़ हुआ। सात इमाम नरसिंगे बजाते हुए रब के आगे आगे चले जबकि रब के अहद का संदूक़ उनके पीछे पीछे था। 9मुसल्लह आदमियों में से कुछ बजानेवाले इमामों के आगे आगे और कुछ संदूक़ के पीछे पीछे चलने लगे। इतने में इमाम नरसिंगे बजाते रहे। 10लेकिन यशुअ ने बाक़ी लोगों को हुक्म दिया था कि उस दिन जंग का नारा न लगाएँ। उसने कहा, "जब तक मैं हुक्म न दूँ उस वक़्त तक एक लफ़्ज़ भी न बोलना। जब मैं इशारा दूँगा तो फिर ही ख़ूब नारा लगाना।" 11इसी तरह रब के संदूक़ ने शहर की फ़सील के साथ साथ चलकर चक्कर लगाया। फिर लोगों ने ख़ैमागाह में लौटकर वहाँ रात गुज़ारी।

12-13अगले दिन यशुअ सुबह-सवेरे उठा, और इमामों और फ़ौजियों ने दूसरी मरतबा शहर का चक्कर लगाया। उनकी वही तरतीब थी। पहले कुछ मुसल्लह आदमी, फिर सात नरसिंगे बजानेवाले इमाम, फिर रब के अहद का संदूक़ उठानेवाले इमाम और आख़िर में मज़ीद कुछ मुसल्लह आदमी थे। चक्कर लगाने के दौरान इमाम नरसिंगे बजाते रहे। 14इस दूसरे दिन भी वह शहर का चक्कर लगाकर ख़ैमागाह में लौट आए। उन्होंने छः दिन तक ऐसा ही किया।

15सातवें दिन उन्होंने सुबह-सवेरे उठकर शहर का चक्कर यों लगाया जैसे पहले छः दिनों में, लेकिन इस दफ़ा उन्होंने कुल सात चक्कर लगाए। 16सातवें चक्कर पर इमामों ने नरसिंगों को बजाते हुए लंबी-सी फूँक मारी। तब यशुअ ने लोगों से कहा, "जंग का नारा लगाएँ, क्योंकि रब ने आपको यह शहर दे दिया है। 17शहर को और जो कुछ उसमें है तबाह करके रब के लिए मख़सूस करना है। सिर्फ़ राहब कसबी को उन लोगों समेत बचाना है जो उसके घर में हैं। क्योंकि उसने हमारे उन जासूसों को छुपा दिया जिनको हमने यहाँ भेजा था। 18लेकिन अल्लाह के लिए मख़सूस

चीज़ों को हाथ न लगाना, क्योंकि अगर आप
उनमें से कुछ ले लें तो अपने आपको तबाह
करेंगे बल्कि इसराईली ख़ैमागाह पर भी तबाही
और आफ़त लाएँगे। 19जो कुछ भी चाँदी, सोने,
पीतल या लोहे से बना है वह रब के लिए मख़सूस
है। उसे रब के ख़ज़ाने में डालना है।”
20जब इमामों ने लंबी फूँक मारी तो
इसराईलियों ने जंग के ज़ोरदार नारे लगाए।
अचानक यरीहू की फ़सील गिर गई, और हर
शख़्स अपनी अपनी जगह पर सीधा शहर में
दाख़िल हुआ। यों शहर इसराईल के क़ब्ज़े में
आ गया। 21जो कुछ भी शहर में था उसे उन्होंने
तलवार से मारकर रब के लिए मख़सूस किया,
ख़ाह मर्द या औरत, जवान या बुज़ुर्ग, गाय-बैल,
भेड़-बकरी या गधा था।
22जिन दो आदमियों ने मुल्क की जासूसी की
थी उनसे यशुअ ने कहा, “अब अपनी क़सम
का वादा पूरा करें। कसबी के घर में जाकर उसे
और उसके तमाम घरवालों को निकाल लाएँ।”
23चुनाँचे यह जवान आदमी गए और राहब,
उसके माँ-बाप, भाइयों और बाक़ी रिश्तेदारों को
उस की मिलकियत समेत निकालकर ख़ैमागाह
से बाहर कहीं बसा दिया। 24फिर उन्होंने पूरे
शहर को और जो कुछ उसमें था भस्म कर
दिया। लेकिन चाँदी, सोने, पीतल और लोहे का
तमाम माल उन्होंने रब के घर के ख़ज़ाने में
डाल दिया। 25यशुअ ने सिर्फ़ राहब कसबी और
उसके घरवालों को बचाए रखा, क्योंकि उसने
उन आदमियों को छुपा दिया था जिन्हें यशुअ ने
यरीहू भेजा था। राहब आज तक इसराईलियों के
दरमियान रहती है।
26उस वक़्त यशुअ ने क़सम खाई, “रब की
लानत उस पर हो जो यरीहू का शहर नए सिरे से
तामीर करने की कोशिश करे। शहर की बुनियाद
रखते वक़्त वह अपने पहलौठे से महरूम हो
जाएगा, और उसके दरवाज़ों को खड़ा करते वक़्त
वह अपने सबसे छोटे बेटे से हाथ धो बैठेगा।”
27यों रब यशुअ के साथ था, और उस की
शोहरत पूरे मुल्क में फैल गई।

अकन का गुनाह

7 लेकिन जहाँ तक रब के लिए मख़सूस
चीज़ों का ताल्लुक़ था इसराईलियों ने
बेवफ़ाई की। यहूदाह के क़बीले के एक आदमी ने
उनमें से कुछ अपने लिए ले लिया। उसका नाम
अकन बिन करमी बिन ज़बदी बिन ज़ारह था। तब
रब का ग़ज़ब इसराईलियों पर नाज़िल हुआ।
2यह यों ज़ाहिर हुआ कि यशुअ ने कुछ
आदमियों को यरीहू से अई शहर को भेज दिया
जो बैतेल के मशरिक़ में बैत-आवन के क़रीब है।
उसने उनसे कहा, “उस इलाक़े में जाकर उस
की जासूसी करें।” चुनाँचे वह जाकर ऐसा ही
करने लगे। 3जब वापस आए तो उन्होंने यशुअ
से कहा, “इसकी ज़रूरत नहीं कि तमाम लोग
अई पर हमला करें। उसे शिकस्त देने के लिए दो
या तीन हज़ार मर्द काफ़ी हैं। बाक़ी लोगों को न
भेजें वरना वह ख़ाहमख़ाह थक जाएंगे, क्योंकि
दुश्मन के लोग कम हैं।” 4चुनाँचे तक़रीबन तीन
हज़ार आदमी अई से लड़ने गए। लेकिन वह अई
के मर्दों से शिकस्त खाकर फ़रार हुए, 5और उनके
36 अफ़राद शहीद हुए। अई के आदमियों ने शहर
के दरवाज़े से लेकर शबरीम तक उनका ताक़्क़ुब
करके वहाँ की ढलान पर उन्हें मार डाला। तब
इसराईली सख़्त घबरा गए, और उनकी हिम्मत
जवाब दे गई।
6यशुअ ने रंजिश का इज़हार करके अपने
कपड़ों को फाड़ दिया और रब के संदूक़ के सामने
मुँह के बल गिर गया। वहाँ वह शाम तक पड़ा रहा।
इसराईल के बुज़ुर्गों ने भी ऐसा ही किया और
अपने सर पर ख़ाक डाल ली। 7यशुअ ने कहा,
“हाय, ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़! तूने इस क़ौम को
दरियाए-यरदन में से गुज़रने क्यों दिया अगर तेरा
मक़सद सिर्फ़ यह था कि हमें अमोरियों के हवाले
करके हलाक करे? काश हम दरिया के मशरिक़ी
किनारे पर रहने के लिए तैयार होते! 8ऐ रब,

अब मैं क्या कहूँ जब इसराईल अपने दुश्मनों के
सामने से भाग आया है? 9कनानी और मुल्क की
बाक़ी क़ौमें यह सुनकर हमें घेर लेंगी और हमारा
नामो-निशान मिटा देंगी। अगर ऐसा होगा तो फिर
तू ख़ुद अपना अज़ीम नाम क़ायम रखने के लिए
क्या करेगा?”

10जवाब में रब ने यशुअ से कहा, “उठकर
खड़ा हो जा! तू क्यों मुँह के बल पड़ा है?
11इसराईल ने गुनाह किया है। उन्होंने मेरे अहद
की ख़िलाफ़वरज़ी की है जो मैंने उनके साथ बाँधा
था। उन्होंने मख़सूसशुदा चीज़ों में से कुछ ले लिया
है, और चोरी करके चुपके से अपने सामान में
मिला लिया है। 12इसी लिए इसराईली अपने
दुश्मनों के सामने क़ायम नहीं रह सकते बल्कि
पीठ फेरकर भाग रहे हैं। क्योंकि इस हरकत
से इसराईल ने अपने आपको भी हलाकत के
लिए मख़सूस कर लिया है। जब तक तुम अपने
दरमियान से वह कुछ निकालकर तबाह न कर
लो जो तबाही के लिए मख़सूस है उस वक़्त
तक मैं तुम्हारे साथ नहीं हूँगा। 13अब उठ और
लोगों को मेरे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस कर। उन्हें
बता देना, ‘अपने आपको कल के लिए मख़सूसो-
मुक़द्दस करना, क्योंकि रब जो इसराईल का ख़ुदा
है फ़रमाता है कि ऐ इसराईल, तेरे दरमियान ऐसा
माल है जो मेरे लिए मख़सूस है। जब तक तुम उसे
अपने दरमियान से निकाल न दो अपने दुश्मनों के
सामने क़ायम नहीं रह सकोगे।’

14कल सुबह को हर एक क़बीला अपने
आपको पेश करे। रब ज़ाहिर करेगा कि क़ुसूरवार
शख़्स कौन-से क़बीले का है। फिर उस क़बीले
के कुंबे बारी बारी सामने आएँ। जिस कुंबे
को रब क़ुसूरवार ठहराएगा उसके मुख़्तलिफ़
ख़ानदान सामने आएँ। और जिस ख़ानदान को
रब क़ुसूरवार ठराएगा उसके मुख़्तलिफ़ अफ़राद
सामने आएँ। 15जो रब के लिए मख़सूस माल
के साथ पकड़ा जाएगा उसे उस की मिलकियत
समेत जला देना है, क्योंकि उसने रब के अहद की
ख़िलाफ़वरज़ी करके इसराईल में शर्मनाक काम
किया है।”

16अगले दिन सुबह-सवेरे यशुअ ने क़बी-
लों को बारी बारी अपने पास आने दिया। जब
यहूदाह के क़बीले की बारी आई तो रब ने
उसे क़ुसूरवार ठहराया। 17जब उस क़बीले के
मुख़्तलिफ़ कुंबे सामने आए तो रब ने ज़ारह
के कुंबे को क़ुसूरवार ठहराया। जब ज़ारह के
मुख़्तलिफ़ ख़ानदान सामने आए तो रब ने ज़बदी
का ख़ानदान क़ुसूरवार ठहराया। 18आख़िरकार
यशुअ ने उस ख़ानदान को फ़रदन फ़रदन अपने
पास आने दिया, और अकन बिन करमी बिन
ज़बदी बिन ज़ारह पकड़ा गया। 19यशुअ ने उससे
कहा, “बेटा, रब इसराईल के ख़ुदा को जलाल दो
और उस की सताइश करो। मुझे बता दो कि तुमने
क्या किया। कोई भी बात मुझसे मत छुपाना।”

20अकन ने जवाब दिया, “वाक़ई मैंने रब
इसराईल के ख़ुदा का गुनाह किया है। 21मैंने लूटे
हुए माल में से बाबल का एक शानदार चोग़ा,
तक़रीबन सवा दो किलोग्राम चाँदी और आधे
किलोग्राम से ज़ायद सोने की ईंट ले ली थी। यह
चीज़ें देखकर मैंने उनका लालच किया और उन्हें
ले लिया। अब वह मेरे ख़ैमे की ज़मीन में दबी
हुई हैं। चाँदी को मैंने बाक़ी चीज़ों के नीचे छुपा
दिया।”

22यह सुनकर यशुअ ने अपने बंदों को अकन
के ख़ैमे के पास भेज दिया। वह दौड़कर वहाँ पहुँचे
तो देखा कि यह माल वाक़ई ख़ैमे की ज़मीन में
छुपाया हुआ है और कि चाँदी दूसरी चीज़ों के नीचे
पड़ी है। 23वह यह सब कुछ ख़ैमे से निकालकर
यशुअ और तमाम इसराईलियों के पास ले आए
और रब के सामने रख दिया। 24फिर यशुअ और
तमाम इसराईली अकन बिन ज़ारह को पकड़कर
वादीए-अकूर में ले गए। उन्होंने चाँदी, लिबास,
सोने की ईंट, अकन के बेटे-बेटियों, गाय-बैलों,
गधों, भेड़-बकरियों और उसके ख़ैमे ग़रज़ उस
की पूरी मिलकियत को उस वादी में पहुँचा दिया।

25यशुअ ने कहा, “तुम यह आफ़त हम
पर क्यों लाए हो? आज रब तुम पर ही
आफ़त लाएगा।” फिर पूरे इसराईल ने अकन को
उसके घरवालों समेत संगसार करके जला दिया।
26अकन के ऊपर उन्होंने पत्थरों का बड़ा ढेर लगा
दिया जो आज तक वहाँ मौजूद है। यही वजह
है कि आज तक उसका नाम वादीए-अकूर यानी
आफ़त की वादी रहा है।

इसके बाद रब का सख़्त ग़ज़ब ठंडा हो गया।

अई की शिकस्त

8 फिर रब ने यशुअ से कहा, “मत डर और
मत घबरा बल्कि तमाम फ़ौजी अपने साथ
लेकर अई शहर पर हमला कर। क्योंकि मैंने अई
के बादशाह, उस की क़ौम, उसके शहर और मुल्क
को तेरे हाथ में कर दिया है। 2लाज़िम है कि तू
अई और उसके बादशाह के साथ वह कुछ करे
जो तूने यरीहू और उसके बादशाह के साथ किया
था। लेकिन इस मरतबा तुम उसका माल और
मवेशी अपने पास रख सकते हो। हमला करते
वक़्त शहर के पीछे घात लगा।”

3चुनाँचे यशुअ पूरे लशकर के साथ अई पर
हमला करने के लिए निकला। उसने अपने सबसे
अच्छे फ़ौजियों में से 30,000 को चुन लिया
और उन्हें रात के वक़्त अई के ख़िलाफ़ भेजकर
4हुक्म दिया, “ध्यान दें कि आप शहर के पीछे
घात लगाएँ। सबके सब शहर के क़रीब ही तैयार
रहें। 5इतने में मैं बाक़ी मर्दों के साथ शहर के क़रीब
आ जाऊँगा। और जब शहर के लोग पहले की
तरह हमारे साथ लड़ने के लिए निकलेंगे तो हम
उनके आगे आगे भाग जाएंगे। 6वह हमारे पीछे
पड़ जाएंगे और यों हम उन्हें शहर से दूर ले जाएंगे,
क्योंकि वह समझेंगे कि हम इस दफ़ा भी पहले
की तरह उनसे भाग रहे हैं। 7फिर आप उस जगह
से निकलें जहाँ आप घात में बैठे होंगे और शहर
पर क़ब्ज़ा कर लें। रब आपका ख़ुदा उसे आपके
हाथ में कर देगा। 8जब शहर आपके क़ब्ज़े में होगा
तो उसे जला देना। वही करें जो रब ने फ़रमाया
है। मेरी इन हिदायात पर ध्यान दें।”

9यह कहकर यशुअ ने उन्हें अई की तरफ़ भेज
दिया। वह रवाना होकर अई के मग़रिब में घात में
बैठ गए। यह जगह बैतेल और अई के दरमियान
थी। लेकिन यशुअ ने यह रात बाक़ी लोगों के साथ
ख़ैमागाह में गुज़ारी। 10अगले दिन सुबह-सवेरे
यशुअ ने आदमियों को जमा करके उनका जायज़ा
लिया। फिर वह इसराईल के बुज़ुर्गों के साथ
उनके आगे आगे अई की तरफ़ चल दिया। 11जो
लशकर उसके साथ था वह चलते चलते अई के
सामने पहुँच गया। उन्होंने शहर के शिमाल में
अपने ख़ैमे लगाए। उनके और शहर के दरमियान
वादी थी।

12जो शहर के मग़रिब में अई और बैतेल
के दरमियान घात लगाए बैठे थे वह तक़रीबन
5,000 मर्द थे। 13यों शहर के मग़रिब और
शिमाल में आदमी लड़ने के लिए तैयार हुए। रात
के वक़्त यशुअ वादी में पहुँच गया।

14जब अई के बादशाह ने शिमाल में
इसराईलियों को देखा तो उसने जल्दी जल्दी
तैयारियाँ कीं। अगले दिन सुबह-सवेरे वह अपने
आदमियों के साथ शहर से निकला ताकि
इसराईलियों के साथ लड़े। यह जगह वादीए-
यरदन की तरफ़ थी। बादशाह को मालूम न हुआ
कि इसराईली शहर के पीछे घात में बैठे हैं। 15जब
अई के मर्द निकले तो यशुअ और उसका लशकर
शिकस्त का इज़हार करके रेगिस्तान की तरफ़
भागने लगे।

16तब अई के तमाम मर्दों को इसराईलियों का
ताक़्क़ुब करने के लिए बुलाया गया, और यशुअ
के पीछे भागते भागते वह शहर से दूर निकल गए।
17एक मर्द भी अई या बैतेल में न रहा बल्कि
सबके सब इसराईलियों के पीछे पड़ गए। न सिर्फ़
यह बल्कि उन्होंने शहर का दरवाज़ा खुला छोड़
दिया।

18फिर रब ने यशुअ से कहा, “जो शमशेर तेरे
हाथ में है उसे अई के ख़िलाफ़ उठाए रख, क्योंकि

मैं यह शहर तेरे हाथ में कर दूँगा।” यशुअ ने ऐसा
ही किया, 19और ज्योंही उसने अपनी शमशेर से
अई की तरफ़ इशारा किया घात में बैठे आदमी जल्दी से अपनी जगह से निकल आए और दौड़ दौड़कर शहर पर झपट पड़े। उन्होंने उस पर क़ब्ज़ा करके जल्दी से उसे जला दिया।

20जब अई के आदमियों ने मुड़कर नज़र डाली तो देखा कि शहर से धुएँ के बादल उठ रहे हैं। लेकिन अब उनके लिए भी बचने का कोई रास्ता न रहा, क्योंकि जो इसराईली अब तक उनके आगे आगे रेगिस्तान की तरफ़ भाग रहे थे वह अचानक मुड़कर ताक़्क़ुब करनेवालों पर टूट
पड़े। 21क्योंकि जब यशुअ और उसके साथ के आदमियों ने देखा कि घात में बैठे इसराईलियों ने शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया है और कि शहर से धुआँ उठ रहा है तो उन्होंने मुड़कर अई के
आदमियों पर हमला कर दिया। 22साथ साथ
शहर में दाख़िल हुए इसराईली शहर से निकलकर पीछे से उनसे लड़ने लगे। चुनाँचे अई के आदमी बीच में फँस गए। इसराईलियों ने सबको क़त्ल कर दिया, और न कोई बचा, न कोई फ़रार हो
सका। 23सिर्फ़ अई के बादशाह को ज़िंदा पकड़ा
और यशुअ के पास लाया गया।

24अई के मर्दों का ताक़्क़ुब करते करते उन सबको खुले मैदान और रेगिस्तान में तलवार से मार देने के बाद इसराईलियों ने अई शहर में वापस आकर तमाम बाशिंदों को हलाक कर दिया।
25उस दिन अई के तमाम मर्द और औरतें मारे गए,
कुल 12,000 अफ़राद। 26क्योंकि यशुअ ने उस
वक़्त तक अपनी शमशेर उठाए रखी जब तक अई के तमाम बाशिंदों को हलाक न कर दिया गया।
27सिर्फ़ शहर के मवेशी और लूटा हुआ माल बच गया, क्योंकि इस दफ़ा रब ने हिदायत की थी कि इसराईली उसे ले जा सकते हैं।

28यशुअ ने अई को जलाकर उसे हमेशा के लिए मलबे का ढेर बना दिया। यह मक़ाम आज
तक वीरान है। 29अई के बादशाह की लाश उसने
शाम तक दरख़्त से लटकाए रखी। फिर जब सूरज डूबने लगा तो यशुअ ने अपने लोगों को हुक्म दिया कि बादशाह की लाश को दरख़्त से उतार दें। तब उन्होंने उसे शहर के दरवाज़े के पास फेंककर उस पर पत्थर का बड़ा ढेर लगा दिया। यह ढेर आज तक मौजूद है।

ऐबाल पहाड़ पर अहद की तजदीद

30उस वक़्त यशुअ ने रब इसराईल के ख़ुदा
की ताज़ीम में ऐबाल पहाड़ पर क़ुरबानगाह बनाई
31जिस तरह रब के ख़ादिम मूसा ने इसराईलियों
को हुक्म दिया था। उसने उसे मूसा की शरीअत की किताब में दर्ज हिदायात के मुताबिक़ बनाया। क़ुरबानगाह के पत्थर तराशे बग़ैर लगाए गए, और उन पर लोहे का आला न चलाया गया। उस पर उन्होंने रब को भस्म होनेवाली और सलामती की क़ुरबानियाँ पेश कीं।

32वहाँ यशुअ ने इसराईलियों की मौजूदगी में
पत्थरों पर मूसा की शरीअत दुबारा लिख दी।
33फिर बुज़ुर्गों, निगहबानों और क़ाज़ियों के साथ
मिलकर तमाम इसराईली दो गुरोहों में तक़सीम हुए। परदेसी भी उनमें शामिल थे। एक गुरोह गरिज़ीम पहाड़ के सामने खड़ा हुआ और दूसरा ऐबाल पहाड़ के सामने। दोनों गुरोह एक दूसरे के मुक़ाबिल खड़े रहे जबकि लावी के क़बीले के इमाम उनके दरमियान खड़े हुए। उन्होंने रब के अहद का संदूक़ उठा रखा था। सब कुछ उन हिदायात के ऐन मुताबिक़ हुआ जो रब के ख़ादिम मूसा ने इसराईलियों को बरकत देने के लिए दी थीं।

34फिर यशुअ ने शरीअत की तमाम बातों की तिलावत की, उस की बरकात भी और उस की लानतें भी। सब कुछ उसने वैसा ही पढ़ा जैसा कि
शरीअत की किताब में दर्ज था। 35जो भी हुक्म
मूसा ने दिया था उसका एक भी लफ़्ज़ न रहा जिसकी तिलावत यशुअ ने तमाम इसराईलियों की पूरी जमात के सामने न की हो। और सबने यह बातें सुनीं। इसमें औरतें, बच्चे और उनके दरमियान रहनेवाले परदेसी सब शामिल थे।

जिबऊनी यशुअ को धोका देते हैं

9 इन बातों की ख़बर दरियाए-यरदन के
मग़रिब के तमाम बादशाहों तक पहुँची,
ख़ाह वह पहाड़ी इलाक़े, मग़रिब के नशेबी पहाड़ी
इलाक़े या साहिली इलाक़े में लुबनान तक रहते
थे। उनकी यह क़ौमें थीं : हित्ती, अमोरी, कनानी,
फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी और यबूसी। 2अब यह यशुअ
और इसराईलियों से लड़ने के लिए जमा हुए।

3लेकिन जब जिबऊन शहर के बाशिंदों को पता
चला कि यशुअ ने यरीहू और अई के साथ क्या
किया है 4तो उन्होंने एक चाल चली। अपने साथ
सफ़र के लिए खाना लेकर वह यशुअ के पास चल
पड़े। उनके गधों पर ख़स्ताहाल बोरियाँ और मै की
ऐसी पुरानी और घिसी-फटी मशकें लदी हुई थीं
जिनकी बार बार मरम्मत हुई थी। 5मर्दों ने ऐसे
पुराने जूते पहन रखे थे जिन पर जगह जगह पैवंद
लगे हुए थे। उनके कपड़े भी घिसे-फटे थे, और
सफ़र के लिए जो रोटी उनके पास थी वह ख़ुश्क
और टुकड़े टुकड़े हो गई थी। 6ऐसी हालत में वह
यशुअ के पास जिलजाल की ख़ैमागाह में पहुँच
गए। उन्होंने उससे और बाक़ी इसराईली मर्दों से
कहा, “हम एक दूर-दराज़ मुल्क से आए हैं। आएँ,
हमारे साथ मुआहदा करें।”

7लेकिन इसराईलियों ने हिव्वियों से कहा,
“शायद आप हमारे इलाक़े के बीच में कहीं बसते
हैं। अगर ऐसा है तो हम किस तरह आपसे
मुआहदा कर सकते हैं?”

8वह यशुअ से बोले, “हम आपकी ख़िदमत के
लिए हाज़िर हैं।”

यशुअ ने पूछा, “आप कौन हैं और कहाँ से आए
हैं?” 9उन्होंने जवाब दिया, “आपके ख़ादिम
आपके ख़ुदा के नाम के बाइस एक निहायत दूर-
दराज़ मुल्क से आए हैं। क्योंकि उस की ख़बर
हम तक पहुँच गई है, और हमने वह सब कुछ
सुन लिया है जो उसने मिसर में 10और दरियाए-
यरदन के मशरिक़ में रहनेवाले दो बादशाहों के
साथ किया यानी हसबोन के बादशाह सीहोन और
बसन के बादशाह ओज के साथ जो अस्तारात
में रहता था। 11तब हमारे बुज़ुर्गों बल्कि हमारे
मुल्क के तमाम बाशिंदों ने हमसे कहा, ‘सफ़र
के लिए खाना लेकर उनसे मिलने जाएँ। उनसे
बात करें कि हम आपकी ख़िदमत के लिए हाज़िर
हैं। आएँ, हमारे साथ मुआहदा करें।’ 12हमारी
यह रोटी अभी गरम थी जब हम इसे सफ़र के
लिए अपने साथ लेकर आपसे मिलने के लिए
अपने घरों से रवाना हुए। और अब आप ख़ुद देख
सकते हैं कि यह ख़ुश्क और टुकड़े टुकड़े हो गई है।
13और मै की इन मशकों की घिसी-फटी हालत
देखें। भरते वक़्त यह नई और लचकदार थीं। यही
हमारे कपड़ों और जूतों की हालत भी है। सफ़र
करते करते यह ख़त्म हो गए हैं।”

14इसराईलियों ने मुसाफ़िरों का कुछ खाना
लिया। अफ़सोस, उन्होंने रब से हिदायत न माँगी।
15फिर यशुअ ने उनके साथ सुलह का मुआहदा
किया और जमात के राहनुमाओं ने क़सम खाकर
उस की तसदीक़ की। मुआहदे में इसराईल ने वादा
किया कि जिबऊनियों को जीने देगा।

16तीन दिन गुज़रे तो इसराईलियों को
पता चला कि जिबऊनी हमारे क़रीब ही
और हमारे इलाक़े के ऐन बीच में रहते हैं।
17इसराईली रवाना हुए और तीसरे दिन
उनके शहरों के पास पहुँचे जिनके नाम
जिबऊन, कफ़ीरा, बैरोत और क़िरियत-
यारीम थे। 18लेकिन चूँकि जमात के राह-
नुमाओं ने रब इसराईल के ख़ुदा की क़सम खाकर
उनसे वादा किया था इसलिए उन्होंने जिबऊनियों
को हलाक न किया। पूरी जमात राहनुमाओं
पर बुड़बुड़ाने लगी, 19लेकिन उन्होंने जवाब में
कहा, “हमने रब इसराईल के ख़ुदा की क़सम
खाकर उनसे वादा किया, और अब हम उन्हें
छेड़ नहीं सकते। 20चुनाँचे हम उन्हें जीने देंगे
और वह क़सम न तोड़ेंगे जो हमने उनके साथ
खाई। ऐसा न हो कि अल्लाह का ग़ज़ब हम
पर नाज़िल हो जाए। 21उन्हें जीने दो।” फिर
फ़ैसला यह हुआ कि जिबऊनी लकड़हारे और

पानी भरनेवाले बनकर पूरी जमात की ख़िदमत
करें। यों इसराईली राहनुमाओं का उनके साथ
वादा क़ायम रहा।

22यशुअ ने जिबऊनियों को बुलाकर कहा,
“तुमने हमें धोका देकर क्यों कहा कि हम आपसे
निहायत दूर रहते हैं हालाँकि तुम हमारे इलाक़े
के बीच में ही रहते हो? 23चुनाँचे अब तुम पर
लानत हो। तुम लकड़हारे और पानी भरनेवाले
बनकर हमेशा के लिए मेरे ख़ुदा के घर की ख़िदमत
करोगे।”

24उन्होंने जवाब दिया, “आपके ख़ादिमों को
साफ़ बताया गया था कि रब आपके ख़ुदा ने अपने
ख़ादिम मूसा को क्या हुक्म दिया था, कि उसे
आपको पूरा मुल्क देना और आपके आगे आगे
तमाम बाशिंदों को हलाक करना है। यह सुनकर
हम बहुत डर गए कि हमारी जान नहीं बचेगी।
इसी लिए हमने यह सब कुछ किया। 25अब हम
आपके हाथ में हैं। हमारे साथ वह कुछ करें जो
आपको अच्छा और ठीक लगता है।”

26चुनाँचे यशुअ ने उन्हें इसराईलियों से
बचाया, और उन्होंने जिबऊनियों को हलाक
न किया। 27उसी दिन उसने जिबऊनियों को
लकड़हारे और पानी भरनेवाले बना दिया
ताकि वह जमात और रब की उस क़ुर-
बानगाह की ख़िदमत करें जिसका मक़ाम रब को
अभी चुनना था। और यह लोग आज तक यही
कुछ करते हैं।

अमोरियों की शिकस्त

10 यरूशलम के बादशाह अदूनी-सिदक़
को ख़बर मिली कि यशुअ ने अई पर
यों क़ब्ज़ा करके उसे मुकम्मल तौर पर तबाह
कर दिया है जिस तरह उसने यरीहू और उसके
बादशाह के साथ भी किया था। उसे यह इत्तला
भी दी गई कि जिबऊन के बाशिंदे इसराईलियों के
साथ सुलह का मुआहदा करके उनके दरमियान
रह रहे हैं। 2यह सुनकर वह और उस की क़ौम
निहायत डर गए, क्योंकि जिबऊन बड़ा शहर था।
वह अहमियत के लिहाज़ से उन शहरों के बराबर
था जिनके बादशाह थे, बल्कि वह अई शहर से भी
बड़ा था, और उसके तमाम मर्द बेहतरीन फ़ौजी
थे।

3चुनाँचे यरूशलम के बादशाह अदूनी-सिदक़ ने
अपने क़ासिद हबरून के बादशाह हूहाम, यरमूत
के बादशाह पीराम, लकीस के बादशाह यफ़ीअ
और इजलून के बादशाह दबीर के पास भेज दिए।
4पैग़ाम यह था, “आएँ और जिबऊन पर हमला
करने में मेरी मदद करें, क्योंकि उसने यशुअ और
इसराईलियों के साथ सुलह का मुआहदा कर
लिया है।” 5यरूशलम, हबरून, यरमूत, लकीस
और इजलून के यह पाँच अमोरी बादशाह मुत्तहिद
हुए। वह अपने तमाम फ़ौजियों को लेकर चल पड़े
और जिबऊन का मुहासरा करके उससे जंग करने
लगे।

6उस वक़्त यशुअ ने अपने ख़ैमे जिलजाल में
लगाए थे। जिबऊन के लोगों ने उसे पैग़ाम भेज
दिया, “अपने ख़ादिमों को तर्क न करें। जल्दी
से हमारे पास आकर हमें बचाएँ! हमारी मदद
कीजिए, क्योंकि पहाड़ी इलाक़े के तमाम अमोरी
बादशाह हमारे ख़िलाफ़ मुत्तहिद हो गए हैं।”

7यह सुनकर यशुअ अपनी पूरी फ़ौज के साथ
जिलजाल से निकला और जिबऊन के लिए
रवाना हुआ। उसके बेहतरीन फ़ौजी भी सब उसके
साथ थे। 8रब ने यशुअ से कहा, “उनसे मत
डरना, क्योंकि मैं उन्हें तेरे हाथ में कर चुका
हूँ। उनमें से एक भी तेरा मुक़ाबला नहीं करने
पाएगा।” 9और यशुअ ने जिलजाल से सारी रात
सफ़र करते करते अचानक दुश्मन पर हमला
किया। 10उस वक़्त रब ने इसराईलियों के देखते
देखते दुश्मन में अबतरी पैदा कर दी, और उन्होंने
जिबऊन के क़रीब दुश्मन को ज़बरदस्त शिकस्त
दी। इसराईली बैत-हौरून तक पहुँचानेवाले रास्ते
पर अमोरियों का ताक़्क़ुब करते करते उन्हें
अज़ीक़ा और मक़्क़ेदा तक मौत के घाट उतारते
गए। 11और जब अमोरी इस रास्ते पर अज़ीक़ा
की तरफ़ भाग रहे थे तो रब ने आसमान से उन

पर बड़े बड़े ओले बरसाए जिन्होंने इसराईलियों
की निसबत ज़्यादा दुश्मनों को हलाक कर दिया।
12उस दिन जब रब ने अमोरियों को इसराईल
के हाथ में कर दिया तो यशुअ ने इसराईलियों की
मौजूदगी में रब से कहा,
“ऐ सूरज, जिबऊन के ऊपर रुक जा!
ऐ चाँद, वादीए-ऐयालोन पर ठहर जा!”
13तब सूरज रुक गया, और चाँद ने आगे
हरकत न की। जब तक कि इसराईल ने अपने
दुश्मनों से पूरा बदला न ले लिया उस वक़्त तक
वह रुके रहे। इस बात का ज़िक्र याशर की किताब
में किया गया है। सूरज आसमान के बीच में रुक
गया और तक़रीबन एक पूरे दिन के दौरान ग़ुरूब
न हुआ। 14यह दिन मुन्फ़रिद था। रब ने इनसान
की इस तरह की दुआ न कभी इससे पहले, न
कभी इसके बाद सुनी। क्योंकि रब ख़ुद इसराईल
के लिए लड़ रहा था। 15इसके बाद यशुअ पूरे
इसराईल समेत जिलजाल की ख़ैमागाह में लौट
आया।

पाँच अमोरी बादशाहों की गिरिफ़्तारी

16लेकिन पाँचों अमोरी बादशाह फ़रार होकर
मक़्क़ेदा के एक ग़ार में छुप गए थे। 17यशुअ को
इत्तला दी गई 18तो उसने कहा, “कुछ बड़े बड़े
पत्थर लुढ़काकर ग़ार का मुँह बंद करना, और
कुछ आदमी उस की पहरादारी करें। 19लेकिन
बाक़ी लोग न रुकें बल्कि दुश्मनों का ताक़्क़ुब
करके पीछे से उन्हें मारते जाएँ। उन्हें दुबारा अपने
शहरों में दाख़िल होने का मौक़ा मत देना, क्योंकि
रब आपके ख़ुदा ने उन्हें आपके हाथ में कर दिया
है।” 20चुनाँचे यशुअ और बाक़ी इसराईली उन्हें
हलाक करते रहे, और कम ही अपने शहरों की
फ़सील में दाख़िल हो सके। 21इसके बाद पूरी
फ़ौज सहीह-सलामत यशुअ के पास मक़्क़ेदा की
लशकरगाह में वापस पहुँच गई।
अब से किसी में भी इसराईलियों को धमकी
देने की जुर्रत न रही।
22फिर यशुअ ने कहा, “ग़ार के मुँह को
खोलकर यह पाँच बादशाह मेरे पास निकाल
लाएँ।” 23लोग ग़ार को खोलकर यरूशलम,
हबरून, यरमूत, लकीस और इजलून के बादशाहों
को यशुअ के पास निकाल लाए। 24यशुअ ने
इसराईल के मर्दों को बुलाकर अपने साथ खड़े
फ़ौजी अफ़सरों से कहा, “इधर आकर अपने पैरों
को बादशाहों की गरदनों पर रख दें।” अफ़सरों
ने ऐसा ही किया। 25फिर यशुअ ने उनसे कहा,
“न डरें और न हौसला हारें। मज़बूत और दिलेर
हों। रब यही कुछ उन तमाम दुश्मनों के साथ
करेगा जिनसे आप लड़ेंगे।” 26यह कहकर उसने
बादशाहों को हलाक करके उनकी लाशें पाँच
दरख़्तों से लटका दीं। वहाँ वह शाम तक लटकी
रहीं। 27जब सूरज डूबने लगा तो लोगों ने यशुअ
के हुक्म पर लाशें उतारकर उस ग़ार में फेंक दीं
जिसमें बादशाह छुप गए थे। फिर उन्होंने ग़ार के
मुँह को बड़े बड़े पत्थरों से बंद कर दिया। यह
पत्थर आज तक वहाँ पड़े हुए हैं।

मज़ीद अमोरी शहरों पर क़ब्ज़ा

28उस दिन मक़्क़ेदा यशुअ के क़ब्ज़े में आ
गया। उसने पूरे शहर को तलवार से रब के लिए
मख़सूस करके तबाह कर दिया। बादशाह समेत
सब हलाक हुए और एक भी न बचा। शहर के
बादशाह के साथ उसने वह सुलूक किया जो उसने
यरीहू के बादशाह के साथ किया था।
29फिर यशुअ ने तमाम इसराईलियों के साथ
वहाँ से आगे निकलकर लिबना पर हमला किया।
30रब ने उस शहर और उसके बादशाह को भी
इसराईल के हाथ में कर दिया। यशुअ ने तलवार
से शहर के तमाम बाशिंदों को हलाक किया, और
एक भी न बचा। बादशाह के साथ उसने वही
सुलूक किया जो उसने यरीहू के बादशाह के साथ
किया था।
31इसके बाद उसने तमाम इसराईलियों के
साथ लिबना से आगे बढ़कर लकीस का मुहासरा
किया। जब उसने उस पर हमला किया 32तो रब

ने यह शहर उसके बादशाह समेत इसराईल के
हाथ में कर दिया। दूसरे दिन वह यशुअ के क़ब्ज़े में
आ गया। शहर के सारे बाशिंदों को उसने तलवार
से हलाक किया, जिस तरह कि उसने लिबना
के साथ भी किया था। 33साथ साथ यशुअ ने
जज़र के बादशाह हूरम और उसके लोगों को भी
शिकस्त दी जो लकीस की मदद करने के लिए
आए थे। उनमें से एक भी न बचा।

34फिर यशुअ ने तमाम इसराईलियों के साथ
लकीस से आगे बढ़कर इजलून का मुहासरा कर
लिया। उसी दिन उन्होंने उस पर हमला करके
35उस पर क़ब्ज़ा कर लिया। जिस तरह लकीस
के साथ हुआ उसी तरह इजलून के साथ भी
किया गया यानी शहर के तमाम बाशिंदे तलवार
से हलाक हुए।

36इसके बाद यशुअ ने तमाम इसराईलियों के
साथ इजलून से आगे बढ़कर हबरून पर हमला
किया। 37शहर पर क़ब्ज़ा करके उन्होंने बादशाह,
इर्दगिर्द की आबादियाँ और बाशिंदे सबके सब
तहे-तेग़ कर दिए। कोई न बचा। इजलून की तरह
उन्होंने उसे पूरे तौर पर तमाम बाशिंदों समेत रब
के लिए मख़सूस करके तबाह कर दिया।

38फिर यशुअ तमाम इसराईलियों के साथ
मुड़कर दबीर की तरफ़ बढ़ गया। उस पर हमला
करके 39उसने शहर, उसके बादशाह और इर्दगिर्द
की आबादियों पर क़ब्ज़ा कर लिया। सबको नेस्त
कर दिया गया, एक भी न बचा। यों दबीर के साथ
वह कुछ हुआ जो पहले हबरून और लिबना उसके
बादशाह समेत हुआ था।

40इस तरह यशुअ ने जुनूबी कनान के तमाम
बादशाहों को शिकस्त देकर उनके पूरे मुल्क पर
क़ब्ज़ा कर लिया यानी मुल्क के पहाड़ी इलाक़े
पर, जुनूब के दश्ते-नजब पर, मग़रिब के नशेबी
पहाड़ी इलाक़े पर और वादीए-यरदन के मग़रिब
में वाक़े पहाड़ी ढलानों पर। उसने किसी को भी
बचने न दिया बल्कि हर जानदार को रब के लिए
मख़सूस करके हलाक कर दिया। यह सब कुछ
वैसा ही हुआ जैसा रब इसराईल के ख़ुदा ने हुक्म
दिया था।

41यशुअ ने उन्हें क़ादिस-बरनीअ से लेकर
ग़ज़्ज़ा तक और जुशन के पूरे इलाक़े से लेकर
जिबऊन तक शिकस्त दी। 42इन तमाम बादशाहों
और उनके ममालिक पर यशुअ ने एक ही वक़्त
फ़तह पाई, क्योंकि इसराईल का ख़ुदा इसराईल
के लिए लड़ा।

43इसके बाद यशुअ तमाम इसराईलियों के
साथ जिलजाल की ख़ैमागाह में लौट आया।

शिमाली इत्तहादियों पर फ़तह

11 जब हसूर के बादशाह याबीन को
इन वाक़ियात की ख़बर मिली तो
उसने मदून के बादशाह यूबाब और सिमरोन और
अकशाफ़ के बादशाहों को पैग़ाम भेजे। 2इसके
अलावा उसने उन बादशाहों को पैग़ाम भेजे जो
शिमाल में थे यानी शिमाली पहाड़ी इलाक़े में,
वादीए-यरदन के उस हिस्से में जो किन्नरत यानी
गलील के जुनूब में है, मग़रिब के नशेबी पहाड़ी
इलाक़े में, मग़रिब में वाक़े नाफ़त-दोर में 3और
कनान के मशरिक़ और मग़रिब में। याबीन ने
अमोरियों, हित्तियों, फ़रिज़्ज़ियों, पहाड़ी इलाक़े
के यबूसियों और हरमून पहाड़ के दामन में वाक़े
मुल्के-मिसफ़ाह के हिव्वियों को भी पैग़ाम भेजे।

4चुनाँचे यह अपनी तमाम फ़ौजों को लेकर
जंग के लिए निकले। उनके आदमी समुंदर के
साहिल की रेत की मानिंद बेशुमार थे। उनके
पास मुतअद्दिद घोड़े और रथ भी थे। 5इन तमाम
बादशाहों ने इसराईल से लड़ने के लिए मुत्तहिद
होकर अपने ख़ैमे मरूम के चश्मे पर लगा दिए।

6रब ने यशुअ से कहा, “उनसे मत डरना,
क्योंकि कल इसी वक़्त तक मैंने उन सबको
हलाक करके इसराईल के हवाले कर दिया होगा।
तुझे उनके घोड़ों की कोंचों को काटना और उनके
रथों को जला देना है।”

7चुनाँचे यशुअ अपने तमाम फ़ौजियों को लेकर
मरूम के चश्मे पर आया और अचानक दुश्मन

पर हमला किया। 8और रब ने दुश्मनों को
इसराईलियों के हवाले कर दिया। इसराईलियों
ने उन्हें शिकस्त दी और उनका ताक़्क़ुब करते
करते शिमाल में बड़े शहर सैदा और मिस्रफ़ात-
मायम तक जा पहुँचे। इसी तरह उन्होंने मशरिक़ में
वादीए-मिसफ़ाह तक भी उनका ताक़्क़ुब किया।
आख़िर में एक भी न बचा। 9रब की हिदायत के
मुताबिक़ यशुअ ने दुश्मन के घोड़ों की कोंचों को
कटवाकर उसके रथों को जला दिया।

शिमाली कनान पर क़ब्ज़ा

10फिर यशुअ वापस आया और हसूर को अपने
क़ब्ज़े में ले लिया। हसूर उन तमाम बादशाहतों
का सदर मक़ाम था जिन्हें उन्होंने शिकस्त दी थी।
इसराईलियों ने शहर के बादशाह को मार दिया
11और शहर के हर जानदार को अल्लाह के हवाले
करके हलाक कर दिया। एक भी न बचा। फिर
यशुअ ने शहर को जला दिया।

12इसी तरह यशुअ ने उन बाक़ी बादशाहों के
शहरों पर भी क़ब्ज़ा कर लिया जो इसराईल के
ख़िलाफ़ मुत्तहिद हो गए थे। हर शहर को उसने रब
के ख़ादिम मूसा के हुक्म के मुताबिक़ तबाह कर
दिया। बादशाहों समेत सब कुछ नेस्त कर दिया
गया। 13लेकिन यशुअ ने सिर्फ़ हसूर को जलाया।
पहाड़ियों पर के बाक़ी शहरों को उसने रहने दिया।
14लूट का जो भी माल जानवरों समेत उनमें पाया
गया उसे इसराईलियों ने अपने पास रख लिया।
लेकिन तमाम बाशिंदों को उन्होंने मार डाला और
एक भी न बचने दिया। 15क्योंकि रब ने अपने
ख़ादिम मूसा को यही हुक्म दिया था, और यशुअ
ने सब कुछ वैसे ही किया जैसे रब ने मूसा को
हुक्म दिया था।

16यों यशुअ ने पूरे कनान पर क़ब्ज़ा कर लिया।
इसमें पहाड़ी इलाक़ा, पूरा दश्ते-नजब, जुशन का
पूरा इलाक़ा, मग़रिब का नशेबी पहाड़ी इलाक़ा,
वादीए-यरदन और इसराईल के पहाड़ उनके
दामन की पहाड़ियों समेत शामिल थे। 17अब
यशुअ की पहुँच जुनूब में सईर की तरफ़ बढ़नेवाले
पहाड़ ख़लक़ से लेकर लुबनान के मैदानी इलाक़े
के शहर बाल-जद तक थी जो हरमून पहाड़ के
दामन में था। यशुअ ने इन इलाक़ों के तमाम
बादशाहों को पकड़कर मार डाला। 18लेकिन
इन बादशाहों से जंग करने में बहुत वक़्त लगा,
19क्योंकि जिबऊन में रहनेवाले हिव्वियों के
अलावा किसी भी शहर ने इसराईलियों से सुलह
न की। इसलिए इसराईल को उन सब पर जंग
करके ही क़ब्ज़ा करना पड़ा। 20रब ही ने उन्हें
अकड़ने दिया था ताकि वह इसराईल से जंग करें
और उन पर रहम न किया जाए बल्कि उन्हें पूरे
तौर पर रब के हवाले करके हलाक किया जाए।
लाज़िम था कि उन्हें यों नेस्तो-नाबूद किया जाए
जिस तरह रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

21उस वक़्त यशुअ ने उन तमाम अना-
क़ियों को हलाक कर दिया जो हबरून, दबीर,
अनाब और उन तमाम जगहों में रहते थे जो
यहूदाह और इसराईल के पहाड़ी इलाक़े में थीं।
उसने उन सबको उनके शहरों समेत अल्लाह के
हवाले करके तबाह कर दिया। 22इसराईल के पूरे
इलाक़े में अनाक़ियों में से एक भी न बचा। सिर्फ़
ग़ज़्ज़ा, जात और अशदूद में कुछ ज़िंदा रहे।

23ग़रज़ यशुअ ने पूरे मुल्क पर यों क़ब्ज़ा
किया जिस तरह रब ने मूसा को बताया था। फिर
उसने उसे क़बीलों में तक़सीम करके इसराईल
को मीरास में दे दिया। जंग ख़त्म हुई, और मुल्क
में अमनो-अमान क़ायम हो गया।

मूसा की फ़ुतूहात का ख़ुलासा

12 दर्जे-ज़ैल दरियाए-यरदन के मशरिक़
में उन बादशाहों की फ़हरिस्त है जिन्हें
इसराईलियों ने शिकस्त दी थी और जिनके इलाक़े
पर उन्होंने क़ब्ज़ा किया था। यह इलाक़ा जुनूब
में वादीए-अरनोन से लेकर शिमाल में हरमून
पहाड़ तक था, और उसमें वादीए-यरदन का पूरा
मशरिक़ी हिस्सा शामिल था।

2पहले का नाम सीहोन था। वह अमोरियों
का बादशाह था और उसका दारुल-हुकूमत

हसबोन था। अरोईर शहर यानी वादीए-अर-
नोन के दरमियान से लेकर अम्मोनियों की
सरहद दरियाए-यब्बोक़ तक सारा इलाक़ा उस
की गिरिफ़्त में था। इसमें जिलियाद का आधा
हिस्सा भी शामिल था। 3इसके अलावा सीहोन
का क़ब्ज़ा दरियाए-यरदन के पूरे मशरिक़ी किनारे
पर किन्नरत यानी गलील की झील से लेकर
बहीराए-मुरदार के पास शहर बैत-यसीमोत तक
बल्कि उसके जुनूब में पहाड़ी सिलसिले पिसगा
के दामन तक था।

4दूसरा बादशाह जिसने शिकस्त खाई थी बसन
का बादशाह ओज था। वह रफ़ाइयों के देवक़ामत
क़बीले में से बाक़ी रह गया था, और उस की
हुकूमत के मरकज़ अस्तारात और इदरई थे।
5शिमाल में उस की सलतनत की सरहद हरमून
पहाड़ थी और मशरिक़ में सलका शहर। बसन
का तमाम इलाक़ा जसूरियों और माकातियों की
सरहद तक उसके हाथ में था और इसी तरह
जिलियाद का शिमाली हिस्सा बादशाह सीहोन
की सरहद तक।

6इसराईल ने रब के ख़ादिम मूसा की राहनुमाई
में इन दो बादशाहों पर फ़तह पाई थी, और मूसा
ने यह इलाक़ा रूबिन, जद और मनस्सी के आधे
क़बीले के सुपुर्द किया था।

यशुअ की फ़ुतूहात का ख़ुलासा

7दर्जे-ज़ैल दरियाए-यरदन के मग़रिब के
उन बादशाहों की फ़हरिस्त है जिन्हें इसराई-
लियों ने यशुअ की राहनुमाई में शिकस्त
दी थी और जिनकी सलतनत वादीए-लुबनान
के शहर बाल-जद से लेकर सईर की तरफ़
बढ़नेवाले पहाड़ ख़लक़ तक थी। बाद में यशुअ
ने यह सारा मुल्क इसराईल के क़बीलों में
तक़सीम करके उन्हें मीरास में दे दिया 8यानी
पहाड़ी इलाक़ा, मग़रिब का नशेबी पहाड़ी
इलाक़ा, यरदन की वादी, उसके मग़रिब में
वाक़े पहाड़ी ढलानें, यहूदाह का रेगिस्तान
और दश्ते-नजब। पहले यह सब कुछ हित्तियों,
अमोरियों, कनानियों, फ़रिज़्ज़ियों, हिव्वियों और
यबूसियों के हाथ में था। ज़ैल के हर शहर का
अपना बादशाह था, और हर एक ने शिकस्त
खाई : 9यरीहू, अई नज़्द बैतेल, 10यरूशलम,
हबरून, 11यरमूत, लकीस, 12इजलून, जज़र,
13दबीर, जिदर, 14हुरमा, अराद, 15लिबना,
अदुल्लाम, 16मक़्क़ेदा, बैतेल, 17तफ़्फ़ुअह,
हिफ़र, 18अफ़ीक़, लश्शरून, 19मदून, हसूर,
20सिमरोन-मरोन, अकशाफ़, 21तानक, मजिद्दो,
22क़ादिस, करमिल का युक़नियाम, 23नाफ़त-
दोर में वाक़े दोर, जिलजाल का गोयम 24और
तिरज़ा। बादशाहों की कुल तादाद 31 थी।

कनान के बाक़ी इलाक़ों पर क़ब्ज़ा करने का हुक्म

13 जब यशुअ बूढ़ा था तो रब ने उससे
कहा, “तू बहुत बूढ़ा हो चुका है,
लेकिन अभी काफ़ी कुछ बाक़ी रह गया है
जिस पर क़ब्ज़ा करने की ज़रूरत है। 2-3इसमें
फ़िलिस्तियों के तमाम इलाक़े उनके शाही शहरों
ग़ज़्ज़ा, अशदूद, अस्क़लून, जात और अक़रून
समेत शामिल हैं और इसी तरह जसूर का इलाक़ा
जिसकी जुनूबी सरहद वादीए-सैहूर है जो मिसर
के मशरिक़ में है और जिसकी शिमाली सरहद
अक़रून है। उसे भी मुल्के-कनान का हिस्सा
क़रार दिया जाता है। अव्वियों का इलाक़ा भी
4जो जुनूब में है अब तक इसराईल के क़ब्ज़े में
नहीं आया। यही बात शिमाल पर भी सादिक़
आती है। सैदानियों के शहर मआरा से लेकर
अफ़ीक़ शहर और अमोरियों की सरहद तक सब
कुछ अब तक इसराईल की हुकूमत से बाहर है।
5इसके अलावा जबलियों का मुल्क और मशरिक़
में पूरा लुबनान हरमून पहाड़ के दामन में बाल-
जद से लेकर लबो-हमात तक बाक़ी रह गया
है। 6इसमें उन सैदानियों का तमाम इलाक़ा भी
शामिल है जो लुबनान के पहाड़ों और मिस्रफ़ात-
मायम के दरमियान के पहाड़ी इलाक़े में आबाद
हैं। इसराईलियों के बढ़ते बढ़ते मैं ख़ुद ही इन

लोगों को उनके सामने से निकाल दूँगा। लेकिन
लाज़िम है कि तू क़ुरा डालकर यह पूरा मुल्क
मेरे हुक्म के मुताबिक़ इसराईलियों में तक़सीम
करे। 7उसे नौ बाक़ी क़बीलों और मनस्सी के आधे
क़बीले को विरासत में दे दे।”

यरदन के मशरिक़ में मुल्क की तक़सीम

8रब का ख़ादिम मूसा रूबिन, जद और मनस्सी
के बाक़ी आधे क़बीले को दरियाए-यरदन का
मशरिक़ी इलाक़ा दे चुका था। 9-10यों हसबोन
के अमोरी बादशाह सीहोन के तमाम शहर उनके
क़ब्ज़े में आ गए थे यानी जुनूबी वादीए-अरनोन के
किनारे पर शहर अरोईर और उसी वादी के बीच के
शहर से लेकर शिमाल में अम्मोनियों की सरहद
तक। दीबोन और मीदबा के दरमियान का मैदाने-
मुरतफ़ा भी इसमें शामिल था 11और इसी तरह
जिलियाद, जसूरियों और माकातियों का इलाक़ा,
हरमून का पहाड़ी इलाक़ा और सलका शहर तक
बसन का सारा इलाक़ा भी।

12पहले यह सारा इलाक़ा बसन के बादशाह
ओज के क़ब्ज़े में था जिसकी हुकूमत के मरकज़
अस्तारात और इदरई थे। रफ़ाइयों के देवक़ामत
क़बीले से सिर्फ़ ओज बाक़ी रह गया था। मूसा
की राहनुमाई के तहत इसराईलियों ने उस इलाक़े
पर फ़तह पाकर तमाम बाशिंदों को निकाल दिया
था। 13सिर्फ़ जसूरी और माकाती बाक़ी रह गए
थे, और यह आज तक इसराईलियों के दरमियान
रहते हैं।

14सिर्फ़ लावी के क़बीले को कोई ज़मीन न
मिली, क्योंकि उनका मौरूसी हिस्सा जलनेवाली
वह क़ुरबानियाँ हैं जो रब इसराईल के ख़ुदा के
लिए चढ़ाई जाती हैं। रब ने यही कुछ मूसा को
बताया था।

रूबिन का क़बायली इलाक़ा

15मूसा ने रूबिन के क़बीले को उसके
कुंबों के मुताबिक़ ज़ैल का इलाक़ा दिया।
16वादीए-अरनोन के किनारे पर शहर अरोईर
और उसी वादी के बीच के शहर से लेकर
मीदबा 17और हसबोन तक। वहाँ के मैदाने-
मुरतफ़ा पर वाक़े तमाम शहर भी रूबिन
के सुपुर्द किए गए यानी दीबोन, बामात-
बाल, बैत-बाल-मऊन, 18यहज़, क़दीमात,
मिफ़ात, 19क़िरियतायम, सिबमाह, ज़िर-
तुस-सहर जो बहीराए-मुरदार के मशरिक़ में
वाक़े पहाड़ी इलाक़े में है, 20बैत-फ़ग़ूर, पिसगा
के पहाड़ी सिलसिले पर मौजूद आबादियाँ और
बैत-यसीमोत। 21मैदाने-मुरतफ़ा के तमाम शहर
रूबिन के क़बीले को दिए गए यानी अमोरियों
के बादशाह सीहोन की पूरी बादशाही जिसका
दारुल-हुकूमत हसबोन शहर था। मूसा ने सीहोन
को मार डाला था और उसके साथ पाँच मिदियानी
रईसों को भी जिन्हें सीहोन ने अपने मुल्क में
मुक़र्रर किया था। इन रईसों के नाम इवी, रक़म,
सूर, हूर और रबा थे। 22जिन लोगों को उस
वक़्त मारा गया उनमें से बिलाम बिन बओर
भी था जो ग़ैबदान था। 23रूबिन के क़बीले की
मग़रिबी सरहद दरियाए-यरदन थी। यही शहर
और आबादियाँ रूबिन के क़बीले को उसके कुंबों
के मुताबिक़ दी गईं, और वह उस की मीरास
ठहरीं।

जद के क़बीले का इलाक़ा

24मूसा ने जद के क़बीले को उसके कुंबों के
मुताबिक़ ज़ैल का इलाक़ा दिया। 25याज़ेर का
इलाक़ा, जिलियाद के तमाम शहर, अम्मोनियों
का आधा हिस्सा रब्बा के क़रीब शहर अरोईर
तक 26-27और हसबोन के बादशाह सीहोन
की बादशाही का बाक़ी शिमाली हिस्सा यानी
हसबोन, रामतुल-मिसफ़ाह और बतूनीम के
दरमियान का इलाक़ा और महनायम और दबीर
के दरमियान का इलाक़ा। इसके अलावा जद को
वादीए-यरदन का वह मशरिक़ी हिस्सा भी मिल
गया जो बैत-हारम, बैत-निमरा, सुक्कात और
सफ़ोन पर मुश्तमिल था। यों उस की शिमाली
सरहद किन्नरत यानी गलील की झील का जुनूबी

किनारा था। 28यही शहर और आबादियाँ जद के
क़बीले को उसके कुंबों के मुताबिक़ दी गईं, और
वह उस की मीरास ठहरीं।

मनस्सी के मशरिक़ी हिस्से का इलाक़ा

29जो इलाक़ा मूसा ने मनस्सी के आधे हिस्से
को उसके कुंबों के मुताबिक़ दिया था 30वह
महनायम से लेकर शिमाल में ओज बादशाह की
तमाम बादशाही पर मुश्तमिल था। उसमें मुल्के-
बसन और वह 60 आबादियाँ शामिल थीं जिन
पर याईर ने फ़तह पाई थी। 31जिलियाद का
आधा हिस्सा ओज की हुकूमत के दो मराकिज़
अस्तारात और इदरई समेत मकीर बिन मनस्सी
की औलाद को उसके कुंबों के मुताबिक़ दिया
गया। 32मूसा ने इन मौरूसी ज़मीनों की तक़सीम
उस वक़्त की थी जब वह दरियाए-यरदन के
मशरिक़ में मोआब के मैदानी इलाक़े में यरीहू शहर
के मुक़ाबिल था।

33लेकिन लावी को मूसा से कोई मौरूसी
ज़मीन नहीं मिली थी, क्योंकि रब इसराईल का
ख़ुदा उनका मौरूसी हिस्सा है जिस तरह उसने
उनसे वादा किया था।

कनान की तक़सीम

14 इसराईल के बाक़ी साढ़े नौ क़बीलों
को दरियाए-यरदन के मग़रिब में यानी
मुल्के-कनान में ज़मीन मिल गई। इसके लिए
इलियज़र इमाम, यशुअ बिन नून और क़बीलों
के आबाई घरानों के सरबराहों ने 2क़ुरा डालकर
मुक़र्रर किया कि हर क़बीले को कौन कौन-सा
इलाक़ा मिल जाए। यों वैसा ही हुआ जिस तरह
रब ने मूसा को हुक्म दिया था। 3-4मूसा अढ़ाई
क़बीलों को उनकी मौरूसी ज़मीन दरियाए-यरदन
के मशरिक़ में दे चुका था, क्योंकि यूसुफ़ की
औलाद के दो क़बीले मनस्सी और इफ़राईम वुजूद
में आए थे। लेकिन लावियों को उनके दरमियान
ज़मीन न मिली। इसराईलियों ने लावियों को
ज़मीन न दी बल्कि उन्हें सिर्फ़ रिहाइश के लिए
शहर और रेवड़ों के लिए चरागाहें दीं। 5यों उन्होंने
ज़मीन को उन्हीं हिदायात के मुताबिक़ तक़सीम
किया जो रब ने मूसा को दी थीं।

कालिब हबरून पाने की गुज़ारिश करता है

6जिलजाल में यहूदाह के क़बीले के मर्द यशुअ
के पास आए। यफ़ुन्ना क़निज़्ज़ी का बेटा कालिब
भी उनके साथ था। उसने यशुअ से कहा,
“आपको याद है कि रब ने मर्दे-ख़ुदा मूसा से
आपके और मेरे बारे में क्या कुछ कहा जब हम
क़ादिस-बरनीअ में थे। 7मैं 40 साल का था
जब रब के ख़ादिम मूसा ने मुझे मुल्के-कनान
का जायज़ा लेने के लिए क़ादिस-बरनीअ से
भेज दिया। जब वापस आया तो मैंने मूसा को
दियानतदारी से सब कुछ बताया जो देखा था।
8अफ़सोस कि जो भाई मेरे साथ गए थे उन्होंने
लोगों को डराया। लेकिन मैं रब अपने ख़ुदा का
वफ़ादार रहा। 9उस दिन मूसा ने क़सम खाकर
मुझसे वादा किया, ‘जिस ज़मीन पर तेरे पाँव
चले हैं वह हमेशा तक तेरी और तेरी औलाद की
विरासत में रहेगी। क्योंकि तू रब मेरे ख़ुदा का
वफ़ादार रहा है।’ 10और अब ऐसा ही हुआ है
जिस तरह रब ने वादा किया था। उसने मुझे अब
तक ज़िंदा रहने दिया है। रब को मूसा से यह बात
किए 45 साल गुज़र गए हैं। उस सारे अरसे में
हम रेगिस्तान में घुमते-फिरते रहे हैं। आज मैं 85
साल का हूँ, 11और अब तक उतना ही ताक़तवर
हूँ जितना कि उस वक़्त था जब मैं जासूस था।
अब तक मेरी बाहर निकलने और जंग करने की
वही क़ुव्वत क़ायम है। 12अब मुझे वह पहाड़ी
इलाक़ा दे दें जिसका वादा रब ने उस दिन मुझसे
किया था। आपने ख़ुद सुना है कि अनाक़ी वहाँ
बड़े क़िलाबंद शहरों में बसते हैं। लेकिन शायद
रब मेरे साथ हो और मैं उन्हें निकाल दूँ जिस तरह
उसने फ़रमाया है।”

13तब यशुअ ने कालिब बिन यफ़ुन्ना को
बरकत देकर उसे विरासत में हबरून दे दिया।
14-15पहले हबरून क़िरियत-अरबा यानी अरबा

का शहर कहलाता था। अरबा अनाक़ियों का सबसे बड़ा आदमी था। आज तक यह शहर कालिब की औलाद की मिलकियत रही है। वजह यह है कि कालिब रब इसराईल के ख़ुदा का वफ़ादार रहा। फिर जंग ख़त्म हुई, और मुल्क में अमनो-अमान क़ायम हो गया।

यहूदाह की सरहद्दें

15 जब इसराईलियों ने क़ुरा डाल-
कर मुल्क को तक़सीम किया तो
यहूदाह के क़बीले को उसके कुंबों के मुताबिक़
कनान का जुनूबी हिस्सा मिल गया। इस इलाक़े
की सरहद मुल्के-अदोम और इंतहाई जुनूब में
सीन का रेगिस्तान था।

2यहूदाह की जुनूबी सरहद बहीराए-मुरदार के
जुनूबी सिरे से शुरू होकर 3जुनूब की तरफ़ चलती
चलती दर्राए-अक़्रब्बीम पहुँच गई। वहाँ से वह
सीन की तरफ़ जारी हुई और क़ादिस-बरनीअ के
जुनूब में से आगे निकलकर हसरोन तक पहुँच
गई। हसरोन से वह अद्दार की तरफ़ चढ़ गई
और फिर क़रक़ा की तरफ़ मुड़ी। 4इसके बाद
वह अज़मून से होकर मिसर की सरहद पर वाक़े
वादीए-मिसर तक पहुँच गई जिसके साथ साथ
चलती हुई वह समुंदर पर ख़त्म हुई। यह यहूदाह
की जुनूबी सरहद थी।

5मशरिक़ में उस की सरहद बहीराए-मुरदार के
साथ साथ चलकर वहाँ ख़त्म हुई जहाँ दरियाए-
यरदन बहीराए-मुरदार में बहता है।

यहूदाह की शिमाली सरहद यहीं से शुरू होकर
6बैत-हुजलाह की तरफ़ चढ़ गई, फिर बैत-अराबा
के शिमाल में से गुज़रकर रूबिन के बेटे बोहन के
पत्थर तक पहुँच गई। 7वहाँ से सरहद वादीए-
अकूर में उतर गई और फिर दुबारा दबीर की तरफ़
चढ़ गई। दबीर से वह शिमाल यानी जिलजाल
की तरफ़ जो दर्राए-अदुम्मीम के मुक़ाबिल है मुड़
गई (यह दर्रा वादी के जुनूब में है)। यों वह चलती
चलती शिमाली सरहद ऐन-शम्स और ऐन-राजिल
तक पहुँच गई। 8वहाँ से वह वादीए-बिन-हिन्नूम
में से गुज़रती हुई यबूसियों के शहर यरूशलम के
जुनूब में से आगे निकल गई और फिर उस पहाड़
पर चढ़ गई जो वादीए-बिन-हिन्नूम के मग़रिब
और मैदाने-रफ़ाईम के शिमाली किनारे पर है।
9वहाँ सरहद मुड़कर चश्मा बनाम निफ़तूह की
तरफ़ बढ़ गई और फिर पहाड़ी इलाक़े इफ़रोन के
शहरों के पास से गुज़रकर बाला यानी क़िरियत-
यारीम तक पहुँच गई। 10बाला से मुड़कर यहूदाह
की यह सरहद मग़रिब में सईर के पहाड़ी इलाक़े
की तरफ़ बढ़ गई और यारीम पहाड़ यानी कसलून
के शिमाली दामन के साथ साथ चलकर बैत-शम्स
की तरफ़ उतरकर तिमनत पहुँच गई। 11वहाँ से
वह अक़रून के शिमाल में से गुज़र गई और फिर
मुड़कर सिक्करून और बाला पहाड़ की तरफ़
बढ़कर यबनियेल पहुँच गई। वहाँ यह शिमाली
सरहद समुंदर पर ख़त्म हुई।

12समुंदर मुल्के-यहूदाह की मग़रिबी सर-
हद थी। यही वह इलाक़ा था जो यहूदाह के क़बीले
को उसके ख़ानदानों के मुताबिक़ मिल गया।

हबरून और दबीर पर फ़तह

13रब के हुक्म के मुताबिक़ यशुअ ने कालिब
बिन यफ़ुन्ना को उसका हिस्सा यहूदाह में दे
दिया। वहाँ उसे हबरून शहर मिल गया। उस वक़्त
उसका नाम क़िरियत-अरबा था (अरबा अनाक़
का बाप था)। 14हबरून में तीन अनाक़ी बनाम
सीसी, अख़ीमान और तलमी अपने घरानों समेत
रहते थे। कालिब ने तीनों को हबरून से निकाल
दिया। 15फिर वह आगे दबीर के बाशिंदों से लड़ने
चला गया। दबीर का पुराना नाम क़िरियत-सिफ़र
था। 16कालिब ने कहा, "जो क़िरियत-सिफ़र पर
फ़तह पाकर क़ब्ज़ा करेगा उसके साथ मैं अपनी
बेटी अकसा का रिश्ता बाँधूँगा।" 17कालिब के
भाई ग़ुतनियेल बिन क़नज़ ने शहर पर क़ब्ज़ा कर
लिया। चुनाँचे कालिब ने उसके साथ अपनी बेटी
अकसा की शादी कर दी।

18जब अकसा ग़ुतनियेल के हाँ जा रही थी तो
उसने उसे उभारा कि वह कालिब से कोई खेत

पाने की दरख़ास्त करे। अचानक वह गधे से उतर गई। कालिब ने पूछा, “क्या बात है?” 19अकसा ने जवाब दिया, “जहेज़ के लिए मुझे एक चीज़ से नवाज़ें। आपने मुझे दश्ते-नजब में ज़मीन दे दी है। अब मुझे चश्मे भी दे दीजिए।” चुनाँचे कालिब ने उसे अपनी मिलकियत में से ऊपर और नीचेवाले चश्मे भी दे दिए।

यहूदाह के क़बीले के शहर

20जो मौरूसी ज़मीन यहूदाह के क़बीले को उसके कुंबों के मुताबिक़ मिली 21उसमें ज़ैल के शहर शामिल थे। जुनूब में मुल्के-अदोम की सरहद की तरफ़ यह शहर थे : क़बज़िएल, इदर, यजूर, 22क़ीना, दीमूना, अदअदा, 23क़ादिस, हसूर, इतनान, 24ज़ीफ़, तलम, बालोत, 25हसूर-हदत्ता, क़रियोत-हसरोन यानी हसूर, 26अमाम, समा, मोलादा, 27हसार-जद्दा, हिशमोन, बैत-फ़लत, 28हसार-सुआल, बैर-सबा, बिज़योतियाह, 29बाला, इय्यीम, अज़म, 30इलतोलद, कसील, हुरमा, 31सिक़लाज, मदमन्ना, सनसन्ना, 32लबाओत, सिलहीम, ऐन और रिम्मोन। इन शहरों की तादाद 29 थी। हर शहर के गिर्दो-नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं।

33मग़रिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े में यह शहर थे : इस्ताल, सुरआ, अस्ना, 34ज़नूह, ऐन-जन्नीम, तफ़्फ़ुअह, ऐनाम, 35यरमूत, अदुल्लाम, सोका, अज़ीक़ा, 36शारैम, अदितैम और जदीरा यानी जदीरतैम। इन शहरों की तादाद 14 थी। हर शहर के गिर्दो-नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं।

37इनके अलावा यह शहर भी थे : ज़नान, हदाशा, मिजदल-जद, 38दिलान, मिसफ़ाह, युक़तियेल, 39लकीस, बुसक़त, इजलून, 40कब्बून, लहमास, कितलीस, 41जदीरोत, बैत-दजून, नामा और मक़्क़ेदा। इन शहरों की तादाद 16 थी। हर शहर के गिर्दो-नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं।

42इस इलाक़े में यह शहर भी थे : लिबना, इतर, असन, 43यिफ़ताह, अस्ना, नसीब, 44क़ईला, अकज़ीब और मरेसा। इन शहरों की तादाद 9 थी। हर शहर के गिर्दो-नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं।

45इनके अलावा यह शहर भी थे : अक़रून उसके गिर्दो-नवाह की आबादियों और देहातों समेत, 46फिर अक़रून से लेकर मग़रिब की तरफ़ अशदूद तक तमाम क़सबे और आबादियाँ। 47अशदूद ख़ुद भी उसके गिर्दो-नवाह की आबादियों और देहातों समेत इसमें शामिल था और इसी तरह ग़ज़्ज़ा उसके गिर्दो-नवाह की आबादियों और देहातों समेत यानी तमाम आबादियाँ मिसर की सरहद पर वाक़े वादीए-मिसर और समुंदर के साहिल तक।

48पहाड़ी इलाक़े के यह शहर यहूदाह के क़बीले के थे : समीर, यत्तीर, सोका, 49दन्ना, क़िरियत-सन्ना यानी दबीर, 50अनाब, इस्तमोह, अनीम, 51जुशन, हौलून और जिलोह। इन शहरों की तादाद 11 थी, और उनके गिर्दो-नवाह की आबादियाँ भी उनके साथ गिनी जाती थीं।

52इनके अलावा यह शहर भी थे : अराब, दूमा, इशआन, 53यनूम, बैत-तफ़्फ़ुअह, अफ़ीक़ा, 54हुमता, क़िरियत-अरबा यानी हबरून और सीऊर। इन शहरों की तादाद 9 थी। हर शहर के गिर्दो-नवाह की आबादियाँ उसमें गिनी जाती थीं।

55इनके अलावा यह शहर भी थे : मऊन, करमिल, ज़ीफ़, यूत्ता, 56यज़्रएल, युक़दियाम, ज़नूह, 57क़ैन, जिबिया और तिमनत। इन शहरों की तादाद 10 थी। हर शहर के गिर्दो-नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं।

58इनके अलावा यह शहर भी थे : हलहूल, बैत-सूर, जदूर, 59मारात, बैत-अनोत और इल्तक़ोन। इन शहरों की तादाद 6 थी। हर शहर के गिर्दो-नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं।

60फिर क़िरियत-बाल यानी क़िरियत-यारीम और रब्बा भी यहूदाह के पहाड़ी इलाक़े में शामिल

थे। हर शहर के गिर्दो-नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं।

61रेगिस्तान में यह शहर यहूदाह के क़बीले के थे : बैत-अराबा, मिद्दीन, सकाका, 62निबसान, नमक का शहर और ऐन-जदी। इन शहरों की तादाद 6 थी। हर शहर के गिर्दो-नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं।

63लेकिन यहूदाह का क़बीला यबूसियों को यरूशलम से निकालने में नाकाम रहा। इसलिए उनकी औलाद आज तक यहूदाह के क़बीले के दरमियान रहती है।

इफ़राईम और मनस्सी की जुनूबी सरहद

16 क़ुरा डालने से यूसुफ़ की औलाद का इलाक़ा मुक़र्रर किया गया। उस की सरहद यरीहू के क़रीब दरियाए-यरदन से शुरू हुई, शहर के मशरिक़ में चश्मों के पास से गुज़री और रेगिस्तान में से चलती चलती बैतेल के पहाड़ी इलाक़े तक पहुँची। 2लूज़ यानी बैतेल से आगे निकलकर वह अरकियों के इलाक़े में अतारात पहुँची। 3वहाँ से वह मग़रिब की तरफ़ उतरती उतरती यफ़लीतियों के इलाक़े में दाख़िल हुई जहाँ वह नशेबी बैत-हौरून में से गुज़रकर जज़र के पीछे समुंदर पर ख़त्म हुई। 4यह उस इलाक़े की जुनूबी सरहद थी जो यूसुफ़ की औलाद इफ़राईम और मनस्सी के क़बीलों को विरासत में दिया गया।

इफ़राईम का इलाक़ा

5इफ़राईम के क़बीले को उसके कुंबों के मुताबिक़ यह इलाक़ा मिल गया : उस की जुनूबी सरहद अतारात-अद्दार और बालाई बैत-हौरून से होकर 6-8समुंदर पर ख़त्म हुई। उस की शिमाली सरहद मग़रिब में समुंदर से शुरू हुई और क़ाना नदी के साथ चलती चलती तफ़्फ़ुअह तक पहुँची। वहाँ से वह शिमाल की तरफ़ मुड़ी और मिक्मताह तक पहुँचकर दुबारा मशरिक़ की तरफ़ चलने लगी। फिर वह तानत-सैला से होकर यानूह पहुँची। मशरिक़ी सरहद शिमाल में यानूह से शुरू हुई और अतारात से होकर दरियाए-यरदन के मग़रिबी किनारे तक उतरी और फिर किनारे के साथ जुनूब की तरफ़ चलती चलती नारा और इसके बाद यरीहू पहुँची। वहाँ वह दरियाए-यरदन पर ख़त्म हुई। यही इफ़राईम और उसके कुंबों की सरहद्दें थीं।

9इसके अलावा कुछ शहर और उनके गिर्दो-नवाह की आबादियाँ इफ़राईम के लिए मुक़र्रर की गईं जो मनस्सी के इलाक़े में थीं। 10इफ़राईम के मर्दों ने जज़र में आबाद कनानियों को न निकाला। इसलिए उनकी औलाद आज तक वहाँ रहती है, अलबत्ता उसे बेगार में काम करना पड़ता है।

मनस्सी का इलाक़ा

17 यूसुफ़ के पहलौठे मनस्सी की औलाद को दो इलाक़े मिल गए। दरियाए-यरदन के मशरिक़ में मकीर के घराने को जिलियाद और बसन दिए गए। मकीर मनस्सी का पहलौठा और जिलियाद का बाप था, और उस की औलाद माहिर फ़ौजी थी। 2अब क़ुरा डालने से दरियाए-यरदन के मग़रिब में वह इलाक़ा मुक़र्रर किया गया जहाँ मनस्सी के बाक़ी बेटों की औलाद को आबाद होना था। इनके छः कुंबे थे जिनके नाम अबियज़र, ख़लक़, असरियेल, सिकम, हिफ़र और समीदा थे।

3सिलाफ़िहाद बिन हिफ़र बिन जिलियाद बिन मकीर बिन मनस्सी के बेटे नहीं थे बल्कि सिर्फ़ बेटियाँ। उनके नाम महलाह, नुआह, हुजलाह, मिलकाह और तिरज़ा थे। 4यह ख़वातीन इलियज़र इमाम, यशुअ बिन नून और क़ौम के बुज़ुर्गों के पास आईं और कहने लगीं, “रब ने मूसा को हुक्म दिया था कि वह हमें भी क़बायली इलाक़े का कोई हिस्सा दे।” यशुअ ने रब का हुक्म मानकर न सिर्फ़ मनस्सी की नरीना औलाद को ज़मीन दी बल्कि उन्हें भी। 5नतीजे में मनस्सी के क़बीले को दरियाए-यरदन के मग़रिब में ज़मीन के दस हिस्से मिल गए और मशरिक़ में जिलियाद और बसन। 6मग़रिब में न

सिर्फ़ मनस्सी की नरीना औलाद के ख़ानदानों को
ज़मीन मिली बल्कि बेटियों के ख़ानदानों को भी।
इसके बरअक्स मशरिक़ में जिलियाद की ज़मीन
सिर्फ़ नरीना औलाद में तक़सीम की गई।
7मनस्सी के क़बीले के इलाक़े की सरहद
आशर से शुरू हुई और सिकम के मशरिक़
में वाक़े मिक्मताह से होकर जुनूब की तरफ़
चलती हुई ऐन-तफ़्फ़ुअह की आबादी तक पहुँची।
8तफ़्फ़ुअह के गिर्दो-नवाह की ज़मीन इफ़राईम
की मिलकियत थी, लेकिन मनस्सी की सरहद
पर के यह शहर मनस्सी की अपनी मिलकियत
थे। 9वहाँ से सरहद क़ाना नदी के जुनूबी किनारे
तक उतरी। फिर नदी के साथ चलती चलती वह
समुंदर पर ख़त्म हुई। नदी के जुनूबी किनारे पर
कुछ शहर इफ़राईम की मिलकियत थे अगरचे वह
मनस्सी के इलाक़े में थे। 10लेकिन मजमूई तौर
पर मनस्सी का क़बायली इलाक़ा क़ाना नदी के
शिमाल में था और इफ़राईम का इलाक़ा उसके
जुनूब में। दोनों क़बीलों का इलाक़ा मग़रिब में
समुंदर पर ख़त्म हुआ। मनस्सी के इलाक़े के
शिमाल में आशर का क़बायली इलाक़ा था और
मशरिक़ में इशकार का।
11आशर और इशकार के इलाक़ों के दर्जे-
ज़ैल शहर मनस्सी की मिलकियत थे : बैत-
शान, इबलियाम, दोर यानी नाफ़त-दोर, ऐन-
दोर, तानक और मजिद्दो उनके गिर्दो-नवाह की
आबादियों समेत। 12लेकिन मनस्सी का क़बीला
वहाँ के कनानियों को निकाल न सका बल्कि वह
वहाँ बसते रहे। 13बाद में भी जब इसराईल की
ताक़त बढ़ गई तो कनानियों को निकाला न गया
बल्कि उन्हें बेगार में काम करना पड़ा।

इफ़राईम और मनस्सी मज़ीद ज़मीन का तक़ाज़ा करते हैं

14यूसुफ़ के क़बीले इफ़राईम और मनस्सी
दरियाए-यरदन के मग़रिब में ज़मीन पाने के बाद
यशुअ के पास आए और कहने लगे, “आपने
हमारे लिए क़ुरा डालकर ज़मीन का सिर्फ़ एक
हिस्सा क्यों मुक़र्रर किया? हम तो बहुत ज़्यादा
लोग हैं, क्योंकि रब ने हमें बरकत देकर बड़ी क़ौम
बनाया है।”
15यशुअ ने जवाब दिया, “अगर आप इतने
ज़्यादा हैं और आपके लिए इफ़राईम का पहाड़ी
इलाक़ा काफ़ी नहीं है तो फिर फ़रिज़्ज़ियों और
रफ़ाइयों के पहाड़ी जंगलों में जाएँ और उन्हें
काटकर काश्त के क़ाबिल बना लें।”
16यूसुफ़ के क़बीलों ने कहा, “पहाड़ी इलाक़ा
हमारे लिए काफ़ी नहीं है, और मैदानी इलाक़े
में आबाद कनानियों के पास लोहे के रथ हैं,
उनके पास भी जो वादीए-यज्रएल में हैं और उनके
पास भी जो बैत-शान और उसके गिर्दो-नवाह की
आबादियों में रहते हैं।”
17लेकिन यशुअ ने जवाब में कहा, “आप
इतनी बड़ी और ताक़तवर क़ौम हैं कि आपका
इलाक़ा एक ही हिस्से पर महदूद नहीं रहेगा
18बल्कि जंगल का पहाड़ी इलाक़ा भी आपकी
मिलकियत में आएगा। उसके जंगलों को काटकर
काश्त के क़ाबिल बना लें तो यह तमाम इलाक़ा
आप ही का होगा। आप बाक़ी इलाक़े पर भी
क़ब्ज़ा करके कनानियों को निकाल देंगे अगरचे
वह ताक़तवर हैं और उनके पास लोहे के रथ हैं।”

बाक़ी सात क़बीलों को ज़मीन मिलती है

18 कनान पर ग़ालिब आने के बाद
इसराईल की पूरी जमात सैला शहर
में जमा हुई। वहाँ उन्होंने मुलाक़ात का ख़ैमा खड़ा
किया।
2अब तक सात क़बीलों को ज़मीन नहीं मिली
थी। 3यशुअ ने इसराईलियों को समझाकर कहा,
“आप कितनी देर तक सुस्त रहेंगे? आप कब
तक उस मुल्क पर क़ब्ज़ा नहीं करेंगे जो रब
आपके बापदादा के ख़ुदा ने आपको दे दिया है?
4अब हर क़बीले के तीन तीन आदमियों को चुन
लें। उन्हें मैं मुल्क का दौरा करने के लिए भेज दूँगा
ताकि वह तमाम क़बायली इलाक़ों की फ़हरिस्त
तैयार करें। इसके बाद वह मेरे पास वापस आकर

5मुल्क को सात इलाक़ों में तक़सीम करें। लेकिन
ध्यान रखें कि जुनूब में यहूदाह का इलाक़ा और
शिमाल में इफ़राईम और मनस्सी का इलाक़ा है।
उनकी सरहद्दें मत छेड़ना! 6वह आदमी लिख लें
कि सात नए क़बायली इलाक़ों की सरहद्दें कहाँ
कहाँ तक हैं और फिर इनकी फ़हरिस्तें पेश करें।
फिर मैं रब आपके ख़ुदा के हुज़ूर मुक़द्दस क़ुरा
डालकर हर एक की ज़मीन मुक़र्रर करूँगा। 7याद
रहे कि लावियों को कोई इलाक़ा नहीं मिलना है।
उनका हिस्सा यह है कि वह रब के इमाम हैं।
और जद, रूबिन और मनस्सी के आधे क़बीले
को भी मज़ीद कुछ नहीं मिलना है, क्योंकि उन्हें
रब के ख़ादिम मूसा से दरियाए-यरदन के मशरिक़
में उनका हिस्सा मिल चुका है।”

8तब वह आदमी रवाना होने के लिए तैयार हुए
जिन्हें मुल्क का दौरा करने के लिए चुना गया
था। यशुअ ने उन्हें हुक्म दिया, “पूरे मुल्क में से
गुज़रकर तमाम शहरों की फ़हरिस्त बनाएँ। जब
फ़हरिस्त मुकम्मल हो जाए तो उसे मेरे पास ले
आएँ। फिर मैं सैला में रब के हुज़ूर आपके लिए
क़ुरा डाल दूँगा।” 9आदमी चले गए और पूरे मुल्क
में से गुज़रकर तमाम शहरों की फ़हरिस्त बना ली।
उन्होंने मुल्क को सात हिस्सों में तक़सीम करके
तमाम तफ़सीलात किताब में दर्ज कीं और यह
किताब सैला की ख़ैमागाह में यशुअ को दे दी।
10फिर यशुअ ने रब के हुज़ूर क़ुरा डालकर यह
इलाक़े बाक़ी सात क़बीलों और उनके कुंबों में
तक़सीम कर दिए।

बिनयमीन का इलाक़ा

11जब क़ुरा डाला गया तो बिनयमीन के क़बीले
और उसके कुंबों को पहला हिस्सा मिल गया।
उस की ज़मीन यहूदाह और यूसुफ़ के क़बीलों
के दरमियान थी। 12उस की शिमाली सरहद
दरियाए-यरदन से शुरू हुई और यरीहू के शिमाल
में पहाड़ी ढलान पर चढ़कर पहाड़ी इलाक़े में से
मग़रिब की तरफ़ गुज़री। बैत-आवन के बयाबान
को पहुँचने पर 13वह लूज़ यानी बैतेल की तरफ़
बढ़कर शहर के जुनूब में पहाड़ी ढलान पर चलती
चलती आगे निकल गई। वहाँ से वह अतारात-
अद्दार और उस पहाड़ी तक पहुँची जो नशेबी बैत-
हौरून के जुनूब में है। 14फिर वह जुनूब की तरफ़
मुड़कर मग़रिबी सरहद के तौर पर क़िरियत-बाल
यानी क़िरियत-यारीम के पास आई जो यहूदाह
के क़बीले की मिलकियत थी। 15बिनयमीन की
जुनूबी सरहद क़िरियत-यारीम के मग़रिबी किनारे
से शुरू होकर निफ़तूह चश्मा तक पहुँची। 16फिर
वह उस पहाड़ के दामन पर उतर आई जो वादीए-
बिन-हिन्नूम के मग़रिब में और मैदाने-रफ़ाईम के
शिमाल में वाक़े है। इसके बाद सरहद यबूसियों
के शहर के जुनूब में से गुज़री और यों वादीए-
हिन्नूम को पार करके ऐन-राजिल के पास आई।
17फिर वह शिमाल की तरफ़ मुड़कर ऐन-शम्स के
पास से गुज़री और दर्राए-अदुम्मीम के मुक़ाबिल
शहर जलीलोत तक पहुँचकर रूबिन के बेटे बोहन
के पत्थर के पास उतर आई। 18वहाँ से वह उस
ढलान के शिमाली रुख़ पर से गुज़री जो वादीए-
यरदन के मग़रिबी किनारे पर है। फिर वह वादी
में उतरकर 19बैत-हुजलाह की शिमाली पहाड़ी
ढलान से गुज़री और बहीराए-मुरदार के शिमाली
किनारे पर ख़त्म हुई, वहाँ जहाँ दरियाए-यरदन
उसमें बहता है। यह थी बिनयमीन की जुनूबी
सरहद। 20उस की मशरिक़ी सरहद दरियाए-
यरदन थी। यही वह इलाक़ा था जो बिनयमीन के
क़बीले को उसके कुंबों के मुताबिक़ दिया गया।

21ज़ैल के शहर इस इलाक़े में शामिल
थे : यरीहू, बैत-हुजलाह, इमक़-क़सीस, 22बैत-
अराबा, समरैम, बैतेल, 23अव्वीम, फ़ारा, उफ़रा,
24कफ़रुल-अम्मोनी, उफ़नी और जिबा। यह
कुल 12 शहर थे। हर शहर के गिर्दो-नवाह की
आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं। 25इनके
अलावा यह शहर भी थे : जिबऊन, रामा, बैरोत,
26मिसफ़ाह, कफ़ीरा, मौज़ा, 27रक़म, इर्फ़एल,
तराला, 28ज़िला, अलिफ़, यबूसियों का शहर
यरूशलम, जिबिया और क़िरियत-यारीम। इन
शहरों की तादाद 14 थी। हर शहर के गिर्दो-

नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं।
यह तमाम शहर बिनयमीन और उसके कुंबों की
मिलकियत थे।

शमाऊन का इलाक़ा

19 जब क़ुरा डाला गया तो शमाऊन
के क़बीले और उसके कुंबों को
दूसरा हिस्सा मिल गया। उस की ज़मीन
यहूदाह के क़बीले के इलाक़े के दरमियान
थी। 2उसे यह शहर मिल गए : बैर-सबा
(सबा), मोलादा, 3हसार-सुआल, बाला,
अज़म, 4इलतोलद, बतूल, हुरमा, 5सिक़-
लाज, बैत-मर्कबोत, हसार-सूसा, 6बैत-लबाओत
और सारूहन। इन शहरों की तादाद 13 थी। हर
शहर के गिर्दो-नवाह की आबादियाँ उसके साथ
गिनी जाती थीं। 7इनके अलावा यह चार शहर भी
शमाऊन के थे : ऐन, रिम्मोन, इतर और असन।
हर शहर के गिर्दो-नवाह की आबादियाँ उसके
साथ गिनी जाती थीं। 8इन शहरों के गिर्दो-नवाह
की तमाम आबादियाँ बालात-बैर यानी नजब के
रामा तक उनके साथ गिनी जाती थीं। यह थी
शमाऊन और उसके कुंबों की मिलकियत। 9यह
जगहें इसलिए यहूदाह के क़बीले के इलाक़े से
ली गईं कि यहूदाह का इलाक़ा उसके लिए बहुत
ज़्यादा था। यही वजह है कि शमाऊन का इलाक़ा
यहूदाह के बीच में है।

ज़बूलून का इलाक़ा

10-12जब क़ुरा डाला गया तो ज़बूलून के
क़बीले और उसके कुंबों को तीसरा हिस्सा मिल
गया। उस की जुनूबी सरहद युक़नियाम की नदी
से शुरू हुई और फिर मशरिक़ की तरफ़ दबासत,
मरअला और सारीद से होकर किसलोत-तबूर
के इलाक़े तक पहुँची। इसके बाद वह मुड़कर
मशरिक़ी सरहद के तौर पर दाबरत के पास
आई और चढ़ती चढ़ती यफ़ीअ पहुँची। 13वहाँ
से वह मज़ीद मशरिक़ की तरफ़ बढ़ती हुई जात-
हिफ़र, एत-क़ाज़ीन और रिम्मोन से होकर नेआ
के पास आई। 14ज़बूलून की शिमाली और
मग़रिबी सरहद हन्नातोन में से गुज़रती गुज़रती
वादीए-इफ़ताहेल पर ख़त्म हुई। 15बारह शहर
उनके गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत ज़बूलून
की मिलकियत में आए जिनमें क़त्तात, नहलाल,
सिमरोन, इदाला और बैत-लहम शामिल थे।
16ज़बूलून के क़बीले को यही कुछ उसके कुंबों
के मुताबिक़ मिल गया।

इशकार का इलाक़ा

17जब क़ुरा डाला गया तो इशकार के क़बीले
और उसके कुंबों को चौथा हिस्सा मिल गया।
18उसका इलाक़ा यज्रएल से लेकर शिमाल की
तरफ़ फैल गया। यह शहर उसमें शामिल थे :
कसूलोत, शूनीम, 19हफ़ारैम, शियून, अनाख़रत,
20रब्बीत, क़िसियोन, इबज़, 21रैमत, ऐन-
जन्नीम, ऐन-हद्दा और बैत-फ़स्सीस। 22शिमाल
में यह सरहद तबूर पहाड़ से शुरू हुई और शख़सूमा
और बैत-शम्स से होकर दरियाए-यरदन तक उतर
आई। 16 शहर उनके गिर्दो-नवाह की आबादियों
समेत इशकार की मिलकियत में आए। 23उसे
यह पूरा इलाक़ा उसके कुंबों के मुताबिक़ मिल
गया।

आशर का इलाक़ा

24जब क़ुरा डाला गया तो आशर के क़बीले
और उसके कुंबों को पाँचवाँ हिस्सा मिल
गया। 25उसके इलाक़े में यह शहर शामिल
थे : ख़िलक़त, हली, बतन, अकशाफ़,
26अलम्मलिक, अमआद और मिसाल। उस की
सरहद समुंदर के साथ साथ चलती हुई करमिल
के पहाड़ी सिलसिले के दामन में से गुज़री
और उतरती उतरती सैहूर-लिबनात तक पहुँची।
27वहाँ वह मशरिक़ में बैत-दजून की तरफ़ मुड़कर
ज़बूलून के इलाक़े तक पहुँची और उस की
मग़रिबी सरहद के साथ चलती चलती शिमाल
में वादीए-इफ़ताहेल तक पहुँची। आगे बढ़ती हुई
वह बैत-इमक़ और नइयेल से होकर शिमाल की

तरफ़ मुड़ी जहाँ काबूल था। 28फिर वह इबरून,
रहोब, हम्मून और क़ाना से होकर बड़े शहर सैदा
तक पहुँची। 29इसके बाद आशर की सरहद रामा
की तरफ़ मुड़कर फ़सीलदार शहर सूर के पास
आई। वहाँ वह हूसा की तरफ़ मुड़ी और चलती
चलती अकज़ीब के क़रीब समुंदर पर ख़त्म हुई।
3022 शहर उनके गिर्दो-नवाह की आबादियों
समेत आशर की मिलकियत में आए। इनमें उम्मा,
अफ़ीक़ और रहोब शामिल थे। 31आशर को
उसके कुंबों के मुताबिक़ यही कुछ मिला।

नफ़ताली का इलाक़ा

32जब क़ुरा डाला गया तो नफ़ताली के
क़बीले और उसके कुंबों को छटा हिस्सा मिल
गया। 33-34जुनूब में उस की सरहद दरियाए-
यरदन पर लक़्क़ूम से शुरू हुई और मग़रिब
की तरफ़ चलती चलती यबनियेल, अदामी-
नक़ब, ऐलोन-ज़ाननीम और हलफ़ से होकर
अज़नूत-तबूर तक पहुँची। वहाँ से वह मग़रिबी
सरहद की हैसियत से हुक़्क़ोक़ के पास आई।
नफ़ताली की जुनूबी सरहद ज़बूलून की शिमाली
सरहद और मग़रिब में आशर की मशरिक़ी
सरहद थी। दरियाए-यरदन और यहूदाह[a] उस
की मशरिक़ी सरहद थी। 35ज़ैल के फ़सीलदार
शहर नफ़ताली की मिलकियत में आए : सद्दीम,
सैर, हम्मत, रक़्क़त, किन्नरत, 36अदामा, रामा,
हसूर, 37क़ादिस, इदरई, ऐन-हसूर, 38इरून,
मिजदलेल, हुरीम, बैत-अनात और बैत-शम्स।
ऐसे 19 शहर थे। हर शहर के गिर्दो-नवाह
की आबादियाँ भी उसके साथ गिनी जाती
थीं। 39नफ़ताली को यही कुछ उसके कुंबों के
मुताबिक़ मिला।

दान का इलाक़ा

40जब क़ुरा डाला गया तो दान के क़बी-
ले और उसके कुंबों को सातवाँ हिस्सा
मिला। 41उसके इलाक़े में यह शहर शा-
मिल थे : सुरआ, इस्ताल, ईर-शम्स,
42शालब्बीन, ऐयालोन, इतला, 43ऐलोन,
तिमनत, अक़रून, 44इल्तक़िह, जिब्बतून,
बालात, 45यहूद, बनी-बरक़, जात-रिम्मोन,
46मे-यरकून और रक़्क़ून उस इलाक़े समेत जो
याफ़ा के मुक़ाबिल है। 47अफ़सोस, दान का
क़बीला अपने इस इलाक़े पर क़ब्ज़ा करने में
कामयाब न हुआ, इसलिए उसके मर्दों ने लशम
शहर पर हमला करके उस पर फ़तह पाई और
उसके बाशिंदों को तलवार से मार डाला। फिर वह
ख़ुद वहाँ आबाद हुए। उस वक़्त लशम शहर का
नाम दान में तबदील हुआ। (दान उनके क़बीले
का बाप था।) 48लेकिन यशुअ के ज़माने में दान
के क़बीले को उसके कुंबों के मुताबिक़ मज़कूरा
तमाम शहर और उनके गिर्दो-नवाह की आबादियाँ
मिल गईं।

यशुअ को भी ज़मीन मिलती है

49पूरे मुल्क को तक़सीम करने के बाद
इसराईलियों ने यशुअ बिन नून को भी अपने
दरमियान कुछ मौरूसी ज़मीन दे दी। 50रब के
हुक्म पर उन्होंने उसे इफ़राईम का शहर तिमनत-
सिरह दे दिया। यशुअ ने ख़ुद इसकी दरख़ास्त
की थी। वहाँ जाकर उसने शहर को अज़ सरे-नौ
तामीर किया और उसमें आबाद हुआ।
51ग़रज़ यह वह तमाम ज़मीनें हैं जो इलियज़र
इमाम, यशुअ बिन नून और क़बीलों के आबाई
घरानों के सरबराहों ने सैला में मुलाक़ात के ख़ैमे
के दरवाज़े पर क़ुरा डालकर तक़सीम की थीं। यों
तक़सीम करने का यह काम मुकम्मल हुआ।

[a]यहाँ यहूदाह का मतलब मुल्के-बसन हो सकता है जो मनस्सी के इलाक़े में था लेकिन जिस पर यहूदाह के क़बीले के मर्द याईर ने फ़तह पाई थी।

पनाह के छः शहर

20 रब ने यशुअ से कहा, 2“इसराई-
लियों को हुक्म दे कि उन हिदायात
के मुताबिक़ पनाह के शहर चुन लो जिन्हें मैं तुम्हें
मूसा की मारिफ़त दे चुका हूँ। 3इन शहरों में वह
लोग फ़रार हो सकते हैं जिनसे कोई इत्तफ़ाक़न
यानी ग़ैरइरादी तौर पर हलाक हुआ हो। यह उन्हें
मरे हुए शख़्स के उन रिश्तेदारों से पनाह देंगे
जो बदला लेना चाहेंगे। 4लाज़िम है कि ऐसा
शख़्स पनाह के शहर के पास पहुँचने पर शहर के
दरवाज़े के पास बैठे बुज़ुर्गों को अपना मामला पेश
करे। उस की बात सुनकर बुज़ुर्ग उसे अपने शहर
में दाख़िल होने की इजाज़त दें और उसे अपने
दरमियान रहने के लिए जगह दे दें। 5अब अगर
बदला लेनेवाला उसके पीछे पड़कर वहाँ पहुँचे तो
बुज़ुर्ग मुलज़िम को उसके हाथ में न दें, क्योंकि
यह मौत ग़ैरइरादी तौर पर और नफ़रत रखे बग़ैर
हुई है। 6वह उस वक़्त तक शहर में रहे जब तक
मक़ामी अदालत मामले का फ़ैसला न कर दे।
अगर अदालत उसे बेगुनाह क़रार दे तो वह उस
वक़्त के इमामे-आज़म की मौत तक उस शहर
में रहे। इसके बाद उसे अपने उस शहर और घर
को वापस जाने की इजाज़त है जिससे वह फ़रार
होकर आया है।”

7इसराईलियों ने पनाह के यह शहर चुन लिए :
नफ़ताली के पहाड़ी इलाक़े में गलील का क़ादिस,
इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े में सिकम और यहूदाह
के पहाड़ी इलाक़े में क़िरियत-अरबा यानी हबरून।
8दरियाए-यरदन के मशरिक़ में उन्होंने बसर को
चुन लिया जो यरीहू से काफ़ी दूर मैदाने-मुरतफ़ा
में है और रूबिन के क़बीले की मिलकियत है।
मुल्के-जिलियाद में रामात जो जद के क़बीले का
है और बसन में जौलान जो मनस्सी के क़बीले का
है चुना गया।

9यह शहर तमाम इसराईलियों और इस-
राईल में रहनेवाले अजनबियों के लिए मुक़र्रर
किए गए। जिससे भी ग़ैरइरादी तौर पर कोई
हलाक हुआ उसे इनमें पनाह लेने की इजाज़त
थी। इनमें वह उस वक़्त तक बदला लेनेवालों
से महफ़ूज़ रहता था जब तक मक़ामी अदालत
फ़ैसला नहीं कर देती थी।

लावियों के शहर और चरागाहें

21 फिर लावी के क़बीले के आबाई
घरानों के सरबराह इलियज़र इमाम,
यशुअ बिन नून और इसराईल के बाक़ी क़बीलों
के आबाई घरानों के सरबराहों के पास आए 2जो
उस वक़्त सैला में जमा थे। लावियों ने कहा,
“रब ने मूसा की मारिफ़त हुक्म दिया था कि हमें
बसने के लिए शहर और रेवड़ों को चराने के लिए
चरागाहें दी जाएँ।” 3चुनाँचे इसराईलियों ने रब
की यह बात मानकर अपने इलाक़ों में से शहर
और चरागाहें अलग करके लावियों को दे दीं।

4क़ुरा डाला गया तो लावी के घराने क़िहात
को उसके कुंबों के मुताबिक़ पहला हिस्सा मिल
गया। पहले हारून के कुंबे को यहूदाह, शमाऊन
और बिनयमीन के क़बीलों के 13 शहर दिए
गए। 5बाक़ी क़िहातियों को दान, इफ़राईम और
मग़रिबी मनस्सी के क़बीलों के 10 शहर मिल
गए।

6जैरसोन के घराने को इशकार, आशर,
नफ़ताली और मनस्सी के क़बीलों के 13 शहर
दिए गए। यह मनस्सी का वह इलाक़ा था जो
दरियाए-यरदन के मशरिक़ में मुल्के-बसन में था।
7मिरारी के घराने को उसके कुंबों के मुताबिक़
रूबिन, जद और ज़बूलून के क़बीलों के 12 शहर
मिल गए।

8यों इसराईलियों ने क़ुरा डालकर लावियों को
मज़कूरा शहर और उनके गिर्दो-नवाह की चरागाहें
दे दीं। वैसा ही हुआ जैसा रब ने मूसा की मारिफ़त
हुक्म दिया था।

क़िहात के घराने के शहर

9-10क़ुरा डालते वक़्त लावी के घराने क़िहात
में से हारून के कुंबे को पहला हिस्सा मिल गया।

उसे यहूदाह और शमाऊन के क़बीलों के यह शहर
दिए गए : 11पहला शहर अनाक़ियों के बाप का
शहर क़िरियत-अरबा था जो यहूदाह के पहाड़ी
इलाक़े में है और जिसका मौजूदा नाम हबरून
है। उस की चरागाहें भी दी गईं, 12लेकिन हबरून
के इर्दगिर्द की आबादियाँ और खेत कालिब बिन
यफ़ुन्ना की मिलकियत रहे। 13हारून के कुंबे का
यह शहर पनाह का शहर भी था जिसमें हर वह
शख़्स पनाह ले सकता था जिससे कोई ग़ैरइरादी
तौर पर हलाक हुआ था। इसके अलावा हारून के
कुंबे को लिबना, 14यत्तीर, इस्तिमुअ, 15हौलून,
दबीर, 16ऐन, यूत्ता और बैत-शम्स के शहर भी
मिल गए। उसे यहूदाह और शमाऊन के क़बीलों
के कुल 9 शहर उनकी चरागाहों समेत मिल गए।
17-18इनके अलावा बिनयमीन के क़बीले के चार
शहर उस की मिलकियत में आए यानी जिबऊन,
जिबा, अनतोत और अलमोन। 19ग़रज़ हारून के
कुंबे को 13 शहर उनकी चरागाहों समेत मिल
गए। 20लावी के क़बीले के घराने क़िहात के
बाक़ी कुंबों को क़ुरा डालते वक़्त इफ़राईम के
क़बीले के शहर मिल गए। 21इनमें इफ़राईम के
पहाड़ी इलाक़े का शहर सिकम शामिल था जिसमें
हर वह शख़्स पनाह ले सकता था जिससे कोई
ग़ैरइरादी तौर पर हलाक हुआ था, फिर जज़र,
22क़िबज़ैम और बैत-हौरून। इन चार शहरों की
चरागाहें भी मिल गईं। 23-24दान के क़बीले ने
भी उन्हें चार शहर उनकी चरागाहों समेत दिए
यानी इल्तक़िह, जिब्बतून, ऐयालोन और जात-
रिम्मोन। 25मनस्सी के मग़रिबी हिस्से से उन्हें दो
शहर तानक और जात-रिम्मोन उनकी चरागाहों
समेत मिल गए। 26ग़रज़ क़िहात के बाक़ी कुंबों
को कुल 10 शहर उनकी चरागाहों समेत मिले।

जैरसोन के घराने के शहर

27लावी के क़बीले के घराने जैरसोन को
मनस्सी के मशरिक़ी हिस्से के दो शहर उनकी
चरागाहों समेत दिए गए : मुल्के-बसन में जौलान
जिसमें हर वह शख़्स पनाह ले सकता था जिससे
कोई ग़ैरइरादी तौर पर हलाक हुआ था, और
बइस्तराह। 28-29इशकार के क़बीले ने उसे चार
शहर उनकी चरागाहों समेत दिए : क़िसियोन,
दाबरत, यरमूत और ऐन-जन्नीम। 30-31इसी
तरह उसे आशर के क़बीले के भी चार शहर उनकी
चरागाहों समेत दिए गए : मिसाल, अबदोन,
ख़िलक़त और रहोब। 32नफ़ताली के क़बीले ने
तीन शहर उनकी चरागाहों समेत दिए : गलील
का क़ादिस जिसमें हर वह शख़्स पनाह ले सकता
था जिससे कोई ग़ैरइरादी तौर पर हलाक हुआ था,
फिर हम्मात-दोर और क़रतान। 33ग़रज़ जैरसोन
के घराने को 13 शहर उनकी चरागाहों समेत मिल
गए।

मिरारी के घराने के शहर

34-35अब रह गया लावी के क़बीले का घराना
मिरारी। उसे ज़बूलून के क़बीले के चार शहर
उनकी चरागाहों समेत मिल गए : युक़नियाम,
क़रता, दिम्ना और नहलाल। 36-37इसी तरह उसे
रूबिन के क़बीले के भी चार शहर उनकी चरागाहों
समेत मिल गए : बसर, यहज़, क़दीमात और
मिफ़ात। 38-39जद के क़बीले ने उसे चार शहर
उनकी चरागाहों समेत दिए : मुल्के-जिलियाद
का रामात जिसमें हर वह शख़्स पनाह ले सकता
था जिससे कोई ग़ैरइरादी तौर पर हलाक हुआ
था, फिर महनायम, हसबोन और याज़ेर। 40ग़रज़
मिरारी के घराने को कुल 12 शहर उनकी
चरागाहों समेत मिल गए।

41इसराईल के मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में जो
लावियों के शहर उनकी चरागाहों समेत थे उनकी
कुल तादाद 48 थी। 42हर शहर के इर्दगिर्द
चरागाहें थीं।

अल्लाह ने अपना वादा पूरा किया

43यों रब ने इसराईलियों को वह पूरा मुल्क
दे दिया जिसका वादा उसने उनके बापदादा से
क़सम खाकर किया था। वह उस पर क़ब्ज़ा
करके उसमें रहने लगे। 44और रब ने चारों

तरफ़ अमनो-अमान मुहैया किया जिस तरह उसने
उनके बापदादा से क़सम खाकर वादा किया था।
उसी की मदद से इसराईली तमाम दुश्मनों पर
ग़ालिब आए थे। 45जो अच्छे वादे रब ने इसराईल
से किए थे उनमें से एक भी नामुकम्मल न रहा
बल्कि सबके सब पूरे हो गए।

मशरिक़ी क़बीलों को घर वापस जाने की इजाज़त

22 फिर यशुअ ने रूबिन, जद और
मनस्सी के आधे क़बीले के मर्दों को
अपने पास बुलाकर 2कहा, “जो भी हुक्म रब
के ख़ादिम मूसा ने आपको दिया था उसे आपने
पूरा किया। और आपने मेरी हर बात मानी है।
3आपने काफ़ी अरसे से आज तक अपने भाइयों
को तर्क नहीं किया बल्कि बिलकुल वही कुछ
किया है जो रब की मरज़ी थी। 4अब रब आपके
ख़ुदा ने आपके भाइयों को मौऊदा मुल्क दे दिया
है, और वह सलामती के साथ उसमें रह रहे हैं।
इसलिए अब वक़्त आ गया है कि आप अपने घर
वापस चले जाएँ, उस मुल्क में जो रब के ख़ादिम
मूसा ने आपको दरियाए-यरदन के पार दे दिया
है। 5लेकिन ख़बरदार, एहतियात से उन हिदायात
पर चलते रहें जो रब के ख़ादिम मूसा ने आपको
दे दीं। रब अपने ख़ुदा से प्यार करें, उस की तमाम
राहों पर चलें, उसके अहकाम मानें, उसके साथ
लिपटे रहें, और पूरे दिलो-जान से उस की ख़िदमत
करें।” 6यह कहकर यशुअ ने उन्हें बरकत देकर
रुख़सत कर दिया, और वह अपने घर चले गए।
7मनस्सी के आधे क़बीले को मूसा से मुल्के-
बसन में ज़मीन मिल गई थी। दूसरे हिस्से को
यशुअ से ज़मीन मिल गई थी, यानी दरियाए-
यरदन के मग़रिब में जहाँ बाक़ी क़बीले आबाद
हुए थे। मनस्सी के मर्दों को रुख़सत करते वक़्त
यशुअ ने उन्हें बरकत देकर 8कहा, “आप बड़ी
दौलत के साथ अपने घर लौट रहे हैं। आपको
बड़े रेवड़, सोना, चाँदी, लोहा और बहुत-से कपड़े
मिल गए हैं। जब आप अपने घर पहुँचेंगे तो माले-
ग़नीमत उनके साथ बाँटें जो घर में रह गए हैं।”
9फिर रूबिन, जद और मनस्सी के आधे
क़बीले के मर्द बाक़ी इसराईलियों को सैला में
छोड़कर मुल्के-जिलियाद की तरफ़ रवाना हुए जो
दरियाए-यरदन के मशरिक़ में है। वहाँ उनके अपने
इलाक़े थे जिनमें उनके क़बीले रब के उस हुक्म
के मुताबिक़ आबाद हुए थे जो उसने मूसा की
मारिफ़त दिया था।

मशरिक़ी क़बीले क़ुरबानगाह बना लेते हैं

10यह मर्द चलते चलते दरियाए-यरदन के
मग़रिब में एक जगह पहुँचे जिसका नाम गलीलोत
था। वहाँ यानी मुल्के-कनान में ही उन्होंने एक बड़ी
और शानदार क़ुरबानगाह बनाई। 11इसराईलियों
को ख़बर दी गई, “रूबिन, जद और मनस्सी के
आधे क़बीले ने कनान की सरहद पर गलीलोत में
क़ुरबानगाह बना ली है। यह क़ुरबानगाह दरियाए-
यरदन के मग़रिब में यानी हमारे ही इलाक़े में है!”
12तब इसराईल की पूरी जमात मशरिक़ी
क़बीलों से लड़ने के लिए सैला में जमा हुई।
13लेकिन पहले उन्होंने इलियज़र इमाम के बेटे
फ़ीनहास को मुल्के-जिलियाद को भेजा जहाँ
रूबिन, जद और मनस्सी का आधा क़बीला
आबाद थे। 14उसके साथ 10 आदमी यानी हर
मग़रिबी क़बीले का एक नुमाइंदा था। हर एक
अपने आबाई घराने और कुंबे का सरबराह था।
15जिलियाद में पहुँचकर उन्होंने मशरिक़ी क़बीलों
से बात की। 16“रब की पूरी जमात आपसे पूछती
है कि आप इसराईल के ख़ुदा से बेवफ़ा क्यों
हो गए हैं? आपने रब से अपना मुँह फेरकर
यह क़ुरबानगाह क्यों बनाई है? इससे आपने
रब से सरकशी की है। 17क्या यह काफ़ी नहीं
था कि हमसे फ़ग़ूर के बुत की पूजा करने का
गुनाह सरज़द हुआ? हम तो आज तक पूरे तौर
पर उस गुनाह से पाक-साफ़ नहीं हुए गो उस
वक़्त रब की जमात को वबा की सूरत में सज़ा
मिल गई थी। 18तो फिर आप क्या कर रहे हैं?

आप दुबारा रब से अपना मुँह फेरकर दूर हो
रहे हैं। देखें, अगर आप आज रब से सरकशी
करें तो कल वह इसराईल की पूरी जमात के
साथ नाराज़ होगा। 19अगर आप समझते हैं कि
आपका मुल्क नापाक है और आप इसलिए उसमें
रब की ख़िदमत नहीं कर सकते तो हमारे पास
रब के मुल्क में आएँ जहाँ रब की सुकूनतगाह है,
और हमारी ज़मीनों में शरीक हो जाएँ। लेकिन रब
से या हमसे सरकशी मत करना। रब हमारे ख़ुदा
की क़ुरबानगाह के अलावा अपने लिए कोई और
क़ुरबानगाह न बनाएँ! 20क्या इसराईल की पूरी
जमात पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल न हुआ जब
अकन बिन ज़ारह ने माले-ग़नीमत में से कुछ चोरी
किया जो रब के लिए मख़सूस था? उसके गुनाह
की सज़ा सिर्फ़ उस तक ही महदूद न रही बल्कि
और भी हलाक हुए।”

21रूबिन, जद और मनस्सी के आधे क़बीले
के मर्दों ने इसराईली कुंबों के सरबराहों को
जवाब दिया, 22“रब क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा, हाँ
रब क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा हक़ीक़त जानता है, और
इसराईल भी यह बात जान ले! न हम सरकश
हुए हैं, न रब से बेवफ़ा। अगर हम झूट बोलें तो
आज ही हमें मार डालें! 23हमने यह क़ुरबानगाह
इसलिए नहीं बनाई कि रब से दूर हो जाएँ। हम
उस पर कोई भी क़ुरबानी चढ़ाना नहीं चाहते,
न भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ, न ग़ल्ला की
नज़रें और न ही सलामती की क़ुरबानियाँ। अगर
हम झूट बोलें तो रब ख़ुद हमारी अदालत करे।
24हक़ीक़त में हमने यह क़ुरबानगाह इसलिए
तामीर की कि हम डरते हैं कि मुस्तक़बिल में
किसी दिन आपकी औलाद हमारी औलाद से
कहे, ‘आपका रब इसराईल के ख़ुदा के साथ क्या
वास्ता है? 25आख़िर रब ने हमारे और आपके
दरमियान दरियाए-यरदन की सरहद मुक़र्रर की
है। चुनाँचे आपको रब की इबादत करने का कोई
हक़ नहीं!’ ऐसा करने से आपकी औलाद हमारी
औलाद को रब की ख़िदमत करने से रोकेगी।
26यही वजह है कि हमने यह क़ुरबानगाह बनाई,
भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ या ज़बह की कोई और
क़ुरबानी चढ़ाने के लिए नहीं 27बल्कि आपको
और आनेवाली नसलों को इस बात की याद
दिलाने के लिए कि हमें भी रब के ख़ैमे में भस्म
होनेवाली क़ुरबानियाँ, ज़बह की क़ुरबानियाँ और
सलामती की क़ुरबानियाँ चढ़ाने का हक़ है। यह
क़ुरबानगाह हमारे और आपके दरमियान गवाह
रहेगी। अब आपकी औलाद कभी भी हमारी
औलाद से नहीं कह सकेगी, ‘आपको रब की
जमात के हुक़ूक़ हासिल नहीं।’ 28और अगर
वह किसी वक़्त यह बात करे तो हमारी औलाद
कह सकेगी, ‘यह क़ुरबानगाह देखें जो रब की
क़ुरबानगाह की हूबहू नक़ल है। हमारे बापदादा
ने इसे बनाया था, लेकिन इसलिए नहीं कि हम
इस पर भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ और ज़बह की
क़ुरबानियाँ चढ़ाएँ बल्कि आपको और हमें गवाही
देने के लिए कि हमें मिलकर रब की इबादत करने
का हक़ है।’ 29हालात कभी भी यहाँ तक न
पहुँचें कि हम रब से सरकशी करके अपना मुँह
उससे फेर लें। नहीं, हमने यह क़ुरबानगाह भस्म
होनेवाली क़ुरबानियाँ, ग़ल्ला की नज़रें और ज़बह
की क़ुरबानियाँ चढ़ाने के लिए नहीं बनाई। हम
सिर्फ़ रब अपने ख़ुदा की सुकूनतगाह के सामने
की क़ुरबानगाह पर ही अपनी क़ुरबानियाँ पेश
करना चाहते हैं।”

30जब फ़ीनहास और इसराईली जमात के
कुंबों के सरबराहों ने जिलियाद में रूबिन, जद और
मनस्सी के आधे क़बीले की यह बातें सुनीं तो वह
मुतमइन हुए। 31फ़ीनहास ने उनसे कहा, “अब
हम जानते हैं कि रब आइंदा भी हमारे दरमियान
रहेगा, क्योंकि आप उससे बेवफ़ा नहीं हुए हैं।
आपने इसराईलियों को रब की सज़ा से बचा
लिया है।”

32इसके बाद फ़ीनहास और बाक़ी इस-
राईली सरदार रूबिन, जद और मनस्सी के आधे
क़बीले को मुल्के-जिलियाद में छोड़कर मुल्के-
कनान में लौट आए। वहाँ उन्होंने सब कुछ बताया
जो हुआ था। 33बाक़ी इसराईलियों को यह बात

पसंद आई, और वह अल्लाह की तमजीद करके
रूबिन और जद से जंग करने और उनका इलाक़ा
तबाह करने के इरादे से बाज़ आए। 34रूबिन और
जद के क़बीलों ने नई क़ुरबानगाह का नाम गवाह
रखा, क्योंकि उन्होंने कहा, “यह क़ुरबानगाह
हमारे और दूसरे क़बीलों के दरमियान गवाह है
कि रब हमारा भी ख़ुदा है।”

यशुअ की आख़िरी नसीहतें

23 अब इसराईली काफ़ी देर से सलामती
से अपने मुल्क में रहते थे, क्योंकि रब
ने उन्हें इर्दगिर्द के दुश्मनों के हमलों से महफ़ूज़
रखा। जब यशुअ बहुत बूढ़ा हो गया था 2तो उसने
इसराईल के तमाम बुज़ुर्गों, सरदारों, क़ाज़ियों
और निगहबानों को अपने पास बुलाकर कहा,
“अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ। 3आपने अपनी आँखों
से देखा कि रब ने इस इलाक़े की तमाम क़ौमों के
साथ क्या कुछ किया है। रब आपके ख़ुदा ही ने
आपके लिए जंग की। 4याद रखें कि मैंने मशरिक़
में दरियाए-यरदन से लेकर मग़रिब में समुंदर तक
सारा मुल्क आपके क़बीलों में तक़सीम कर दिया
है। बहुत-सी क़ौमों पर मैंने फ़तह पाई, लेकिन
चंद एक अब तक बाक़ी रह गई हैं। 5लेकिन रब
आपका ख़ुदा आपके आगे आगे चलते हुए उन्हें
भी निकालकर भगा देगा। आप उनकी ज़मीनों
पर क़ब्ज़ा कर लेंगे जिस तरह रब आपके ख़ुदा ने
वादा किया है।

6अब पूरी हिम्मत से हर बात पर अमल करें
जो मूसा की शरीअत की किताब में लिखी हुई है।
न दाईं और न बाईं तरफ़ हटें। 7उन दीगर क़ौमों
से रिश्ता मत बाँधना जो अब तक मुल्क में बाक़ी
रह गई हैं। उनके बुतों के नाम अपनी ज़बान पर
न लाना, न उनके नाम लेकर क़सम खाना। न
उनकी ख़िदमत करना, न उन्हें सिजदा करना।
8रब अपने ख़ुदा के साथ यों लिपटे रहना जिस
तरह आज तक लिपटे रहे हैं।

9रब ने आपके आगे आगे चलकर बड़ी बड़ी
और ताक़तवर क़ौमें निकाल दी हैं। आज तक
आपके सामने कोई नहीं खड़ा रह सका। 10आपमें
से एक शख़्स हज़ार दुश्मनों को भगा देता है,
क्योंकि रब आपका ख़ुदा ख़ुद आपके लिए लड़ता
है जिस तरह उसने वादा किया था। 11चुनाँचे
संजीदगी से ध्यान दें कि आप रब अपने ख़ुदा
से प्यार करें, क्योंकि आपकी ज़िंदगी इसी पर
मुनहसिर है। 12अगर आप उससे दूर होकर उन
दीगर क़ौमों से लिपट जाएँ जो अब तक मुल्क
में बाक़ी हैं और उनके साथ रिश्ता बाँधें 13तो रब
आपका ख़ुदा यक़ीनन इन क़ौमों को आपके आगे
से नहीं निकालेगा। इसके बजाए यह आपको
फँसाने के लिए फंदा और जाल बनेंगे। यह
यक़ीनन आपकी पीठों के लिए कोड़े और आँखों
के लिए काँटे बन जाएंगे। आख़िर में आप उस
अच्छे मुल्क में से मिट जाएंगे जो रब आपके ख़ुदा
ने आपको दे दिया है।

14आज मैं वहाँ जा रहा हूँ जहाँ किसी न किसी
दिन दुनिया के हर शख़्स को जाना होता है। लेकिन
आपने पूरे दिलो-जान से जान लिया है कि जो
भी वादा रब आपके ख़ुदा ने आपके साथ किया
वह पूरा हुआ है। एक भी अधूरा नहीं रह गया।
15लेकिन जिस तरह रब ने हर वादा पूरा किया
है बिलकुल उसी तरह वह तमाम आफ़तें आप
पर नाज़िल करेगा जिनके बारे में उसने आपको
ख़बरदार किया है अगर आप उसके ताबे न रहें।
फिर वह आपको उस अच्छे मुल्क में से मिटा देगा
जो उसने आपको दे दिया है। 16अगर आप उस
अहद को तोड़ें जो उसने आपके साथ बाँधा है और
दीगर माबूदों की पूजा करके उन्हें सिजदा करें तो
फिर रब का पूरा ग़ज़ब आप पर नाज़िल होगा और
आप जल्द ही उस अच्छे मुल्क में से मिट जाएंगे
जो उसने आपको दे दिया है।”

अल्लाह और इसराईल के दरमियान अहद की तजदीद

24 फिर यशुअ ने इसराईल के तमाम
क़बीलों को सिकम शहर में जमा
किया। उसने इसराईल के बुज़ुर्गों, सरदारों,

क़ाज़ियों और निगहबानों को बुलाया, और वह
मिलकर अल्लाह के हुज़ूर हाज़िर हुए।

2फिर यशुअ इसराईली क़ौम से मुख़ातिब
हुआ। “रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है,
‘क़दीम ज़माने में तुम्हारे बापदादा दरियाए-फ़ुरात
के पार बसते और दीगर माबूदों की पूजा करते थे।
इब्राहीम और नहूर का बाप तारह भी वहाँ आबाद
था। 3लेकिन मैं तुम्हारे बाप इब्राहीम को वहाँ से
लेकर यहाँ लाया और उसे पूरे मुल्के-कनान में
से गुज़रने दिया। मैंने उसे बहुत औलाद दी। मैंने
उसे इसहाक़ दिया 4और इसहाक़ को याक़ूब और
एसौ। एसौ को मैंने पहाड़ी इलाक़ा सईर अता
किया, लेकिन याक़ूब अपने बेटों के साथ मिसर
चला गया।

5बाद में मैंने मूसा और हारून को मिसर भेज
दिया और मुल्क पर बड़ी मुसीबतें नाज़िल करके
तुम्हें वहाँ से निकाल लाया। 6चलते चलते तुम्हारे
बापदादा बहरे-क़ुलज़ुम पहुँच गए। लेकिन मिसरी
अपने रथों और घुड़सवारों से उनका ताक़्क़ुब
करने लगे। 7तुम्हारे बापदादा ने मदद के लिए
रब को पुकारा, और मैंने उनके और मिसरियों
के दरमियान अंधेरा पैदा किया। मैं समुंदर उन
पर चढ़ा लाया, और वह उसमें ग़रक़ हो गए।
तुम्हारे बापदादा ने अपनी ही आँखों से देखा कि
मैंने मिसरियों के साथ क्या कुछ किया।

तुम बड़े अरसे तक रेगिस्तान में घूमते फिरे।
8आख़िरकार मैंने तुम्हें उन अमोरियों के मुल्क
में पहुँचाया जो दरियाए-यरदन के मशरिक़ में
आबाद थे। गो उन्होंने तुमसे जंग की, लेकिन मैंने
उन्हें तुम्हारे हाथ में कर दिया। तुम्हारे आगे आगे
चलकर मैंने उन्हें नेस्तो-नाबूद कर दिया, इसलिए
तुम उनके मुल्क पर क़ब्ज़ा कर सके। 9मोआब
के बादशाह बलक़ बिन सफ़ोर ने भी इसराईल
के साथ जंग छेड़ी। इस मक़सद के तहत उसने
बिलाम बिन बओर को बुलाया ताकि वह तुम पर
लानत भेजे। 10लेकिन मैं बिलाम की बात मानने
के लिए तैयार नहीं था बल्कि वह तुम्हें बरकत
देने पर मजबूर हुआ। यों मैंने तुम्हें उसके हाथ से
महफ़ूज़ रखा।

11फिर तुम दरियाए-यरदन को पार करके
यरीहू के पास पहुँच गए। इस शहर के बाशिंदे और
अमोरी, फ़रिज़्ज़ी, कनानी, हित्ती, जिरजासी,
हिव्वी और यबूसी तुम्हारे ख़िलाफ़ लड़ते रहे,
लेकिन मैंने उन्हें तुम्हारे क़ब्ज़े में कर दिया। 12मैंने
तुम्हारे आगे ज़ंबूर भेज दिए जिन्होंने अमोरियों के
दो बादशाहों को मुल्क से निकाल दिया।

यह सब कुछ तुम्हारी अपनी तलवार और
कमान से नहीं हुआ बल्कि मेरे ही हाथ से। 13मैंने
तुम्हें बीज बोने के लिए ज़मीन दी जिसे तैयार
करने के लिए तुम्हें मेहनत न करनी पड़ी। मैंने
तुम्हें शहर दिए जो तुम्हें तामीर करने न पड़े। उनमें
रहकर तुम अंगूर और ज़ैतून के ऐसे बाग़ों का फल
खाते हो जो तुमने नहीं लगाए थे’।”

14यशुअ ने बात जारी रखते हुए कहा, “चुनाँचे
रब का ख़ौफ़ मानें और पूरी वफ़ादारी के साथ
उस की ख़िदमत करें। उन बुतों को निकाल फेंकें
जिनकी पूजा आपके बापदादा दरियाए-फ़ुरात के
पार और मिसर में करते रहे। अब रब ही की
ख़िदमत करें! 15लेकिन अगर रब की ख़िदमत
करना आपको बुरा लगे तो आज ही फ़ैसला करें
कि किसकी ख़िदमत करेंगे, उन देवताओं की
जिनकी पूजा आपके बापदादा ने दरियाए-फ़ुरात
के पार की या अमोरियों के देवताओं की जिनके
मुल्क में आप रह रहे हैं। लेकिन जहाँ तक मेरा
और मेरे ख़ानदान का ताल्लुक़ है हम रब ही की
ख़िदमत करेंगे।”

16अवाम ने जवाब दिया, “ऐसा कभी न हो कि
हम रब को तर्क करके दीगर माबूदों की पूजा करें।
17रब हमारा ख़ुदा ही हमारे बापदादा को मिसर
की ग़ुलामी से निकाल लाया और हमारी आँखों
के सामने ऐसे अज़ीम निशान पेश किए। जब हमें
बहुत क़ौमों में से गुज़रना पड़ा तो उसी ने हर वक़्त
हमारी हिफ़ाज़त की। 18और रब ही ने हमारे आगे
आगे चलकर इस मुल्क में आबाद अमोरियों और

बाक़ी क़ौमों को निकाल दिया। हम भी उसी की
ख़िदमत करेंगे, क्योंकि वही हमारा ख़ुदा है!”
19यह सुनकर यशुअ ने कहा, “आप रब की
ख़िदमत कर ही नहीं सकते, क्योंकि वह क़ुद्दूस
और ग़यूर ख़ुदा है। वह आपकी सरकशी और
गुनाहों को मुआफ़ नहीं करेगा। 20बेशक वह आप
पर मेहरबानी करता रहा है, लेकिन अगर आप
रब को तर्क करके अजनबी माबूदों की पूजा करें
तो वह आपके ख़िलाफ़ होकर आप पर बलाएँ
लाएगा और आपको नेस्तो-नाबूद कर देगा।”
21लेकिन इसराईलियों ने इसरार किया, “जी
नहीं, हम रब की ख़िदमत करेंगे!” 22फिर यशुअ
ने कहा, “आप ख़ुद इसके गवाह हैं कि आपने
रब की ख़िदमत करने का फ़ैसला कर लिया है।”
उन्होंने जवाब दिया, “जी हाँ, हम इसके गवाह
हैं!” 23यशुअ ने कहा, “तो फिर अपने दरमियान
मौजूद बुतों को तबाह कर दें और अपने दिलों को
रब इसराईल के ख़ुदा के ताबे रखें।” 24अवाम ने
यशुअ से कहा, “हम रब अपने ख़ुदा की ख़िदमत
करेंगे और उसी की सुनेंगे।”
25उस दिन यशुअ ने इसराईलियों के लिए रब
से अहद बाँधा। वहाँ सिकम में उसने उन्हें अहकाम
और क़वायद देकर 26अल्लाह की शरीअत की
किताब में दर्ज किए। फिर उसने एक बड़ा पत्थर
लेकर उसे उस बलूत के साये में खड़ा किया जो रब
के मक़दिस के पास था। 27उसने तमाम लोगों से
कहा, “इस पत्थर को देखें! यह गवाह है, क्योंकि
इसने सब कुछ सुन लिया है जो रब ने हमें बता
दिया है। अगर आप कभी अल्लाह का इनकार
करें तो यह आपके ख़िलाफ़ गवाही देगा।”
28फिर यशुअ ने इसराईलियों को फ़ारिग़ कर
दिया, और हर एक अपने अपने क़बायली इलाक़े
में चला गया।

यशुअ और इलियज़र का इंतक़ाल

29कुछ देर के बाद रब का ख़ादिम यशुअ बिन
नून फ़ौत हुआ। उस की उम्र 110 साल थी।
30उसे उस की मौरूसी ज़मीन में दफ़नाया गया,
यानी तिमनत-सिरह में जो इफ़राईम के पहाड़ी
इलाक़े में जास पहाड़ के शिमाल में है।
31जब तक यशुअ और वह बुज़ुर्ग ज़िंदा रहे
जिन्होंने अपनी आँखों से सब कुछ देखा था जो
रब ने इसराईल के लिए किया था उस वक़्त तक
इसराईल रब का वफ़ादार रहा।
32मिसर को छोड़ते वक़्त इसराईली यूसुफ़
की हड्डियाँ अपने साथ लाए थे। अब उन्होंने उन्हें
सिकम शहर की उस ज़मीन में दफ़न कर दिया
जो याक़ूब ने सिकम के बाप हमोर की औलाद से
चाँदी के सौ सिक्कों के बदले ख़रीद ली थी। यह
ज़मीन यूसुफ़ की औलाद की विरासत में आ गई
थी।
33इलियज़र बिन हारून भी फ़ौत हुआ। उसे
जिबिया में दफ़नाया गया। इफ़राईम के पहाड़ी
इलाक़े का यह शहर उसके बेटे फ़ीनहास को दिया
गया था।

क़ुज़ात

जुनूबी कनान पर मुकम्मल क़ाबू नहीं पाया जाता

1 यशुअ की मौत के बाद इसराईलियों ने
रब से पूछा, “कौन-सा क़बीला पहले
निकलकर कनानियों पर हमला करे?” 2रब ने
जवाब दिया, “यहूदाह का क़बीला शुरू करे। मैंने
मुल्क को उनके क़ब्ज़े में कर दिया है।”
3तब यहूदाह के क़बीले ने अपने भाइयों
शमाऊन के क़बीले से कहा, “आएँ, हमारे साथ
निकलें ताकि हम मिलकर कनानियों को उस
इलाक़े से निकाल दें जो क़ुरा ने यहूदाह के क़बीले
के लिए मुक़र्रर किया है। इसके बदले हम बाद में
आपकी मदद करेंगे जब आप अपने इलाक़े पर
क़ब्ज़ा करने के लिए निकलेंगे।” चुनाँचे शमाऊन
के मर्द यहूदाह के साथ निकले। 4जब यहूदाह ने
दुश्मन पर हमला किया तो रब ने कनानियों और
फ़रिज़्ज़ियों को उसके क़ाबू में कर दिया। बज़क़
के पास उन्होंने उन्हें शिकस्त दी, गो उनके कुल
10,000 आदमी थे।
5वहाँ उनका मुक़ाबला एक बादशाह से हुआ
जिसका नाम अदूनी-बज़क़ था। जब उसने देखा
कि कनानी और फ़रिज़्ज़ी हार गए हैं 6तो
वह फ़रार हुआ। लेकिन इसराईलियों ने उसका
ताक़्क़ुब करके उसे पकड़ लिया और उसके हाथों
और पैरों के अंगूठों को काट लिया। 7तब अदूनी-
बज़क़ ने कहा, “मैंने ख़ुद सत्तर बादशाहों के हाथों
और पैरों के अंगूठों को कटवाया, और उन्हें मेरी
मेज़ के नीचे गिरे हुए खाने के रद्दी टुकड़े जमा
करने पड़े। अब अल्लाह मुझे इसका बदला दे रहा
है।” उसे यरूशलम लाया गया जहाँ वह मर गया।
8यहूदाह के मर्दों ने यरूशलम पर भी हमला
किया। उस पर फ़तह पाकर उन्होंने उसके बाशिंदों
को तलवार से मार डाला और शहर को जला
दिया। 9इसके बाद वह आगे बढ़कर उन कनानियों
से लड़ने लगे जो पहाड़ी इलाक़े, दश्ते-नजब और
मग़रिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े में रहते थे।
10उन्होंने हबरून शहर पर हमला किया जो पहले
क़िरियत-अरबा कहलाता था। वहाँ उन्होंने सीसी,
अख़ीमान और तलमी की फ़ौजों को शिकस्त दी।
11फिर वह आगे दबीर के बाशिंदों से लड़ने चले
गए। दबीर का पुराना नाम क़िरियत-सिफ़र था।
12कालिब ने कहा, “जो क़िरियत-सिफ़र पर
फ़तह पाकर क़ब्ज़ा करेगा उसके साथ मैं अपनी
बेटी अकसा का रिश्ता बाँधूँगा।” 13कालिब के
छोटे भाई ग़ुतनियेल बिन क़नज़ ने शहर पर क़ब्ज़ा
कर लिया। चुनाँचे कालिब ने उसके साथ अपनी
बेटी अकसा की शादी कर दी। 14जब अकसा
ग़ुतनियेल के हाँ जा रही थी तो उसने उसे उभारा
कि वह कालिब से कोई खेत पाने की दरख़ास्त
करे। अचानक वह गधे से उतर गई। कालिब ने
पूछा, “क्या बात है?” 15अकसा ने जवाब दिया,
“जहेज़ के लिए मुझे एक चीज़ से नवाज़ें। आपने
मुझे दश्ते-नजब में ज़मीन दे दी है। अब मुझे चश्मे
भी दे दीजिए।” चुनाँचे कालिब ने उसे अपनी

मिलकियत में से ऊपर और नीचेवाले चश्मे भी
दे दिए।

16जब यहूदाह का क़बीला खजूरों के शहर से
रवाना हुआ था तो क़ीनी भी उनके साथ यहूदाह
के रेगिस्तान में आए थे। (क़ीनी मूसा के सुसर
यितरो की औलाद थे)। वहाँ वह दश्ते-नजब में
अराद शहर के क़रीब दूसरे लोगों के दरमियान ही
आबाद हुए।

17यहूदाह का क़बीला अपने भाइयों शमाऊन
के क़बीले के साथ आगे बढ़ा। उन्होंने कनानी
शहर सफ़त पर हमला किया और उसे अल्लाह के
लिए मख़सूस करके मुकम्मल तौर पर तबाह कर
दिया। इसलिए उसका नाम हुरमा यानी अल्लाह
के लिए तबाही पड़ा। 18फिर यहूदाह के फ़ौजियों
ने ग़ज़्ज़ा, अस्क़लून और अक़रून के शहरों पर
उनके गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत फ़तह
पाई। 19रब उनके साथ था, इसलिए वह पहाड़ी
इलाक़े पर क़ब्ज़ा कर सके। लेकिन वह समुंदर
के साथ के मैदानी इलाक़े में आबाद लोगों को
निकाल न सके। वजह यह थी कि इन लोगों के
पास लोहे के रथ थे। 20मूसा के वादे के मुताबिक़
कालिब को हबरून शहर मिल गया। उसने उसमें
से अनाक़ के तीन बेटों को उनके घरानों समेत
निकाल दिया।

21लेकिन बिनयमीन का क़बीला यरू-
शलम के रहनेवाले यबूसियों को निकाल न
सका। आज तक यबूसी वहाँ बिनयमीनियों के
साथ आबाद हैं।

शिमाली कनान पर मुकम्मल क़ाबू नहीं पाया जाता

22-23इफ़राईम और मनस्सी के क़बीले बैतेल
पर क़ब्ज़ा करने के लिए निकले (बैतेल का पुराना
नाम लूज़ था)। जब उन्होंने अपने जासूसों को
शहर की तफ़तीश करने के लिए भेजा तो रब
उनके साथ था। 24उनके जासूसों की मुलाक़ात
एक आदमी से हुई जो शहर से निकल रहा था।
उन्होंने उससे कहा, "हमें शहर में दाख़िल होने
का रास्ता दिखाएँ तो हम आप पर रहम करेंगे।"
25उसने उन्हें अंदर जाने का रास्ता दिखाया, और
उन्होंने उसमें घुसकर तमाम बाशिंदों को तलवार
से मार डाला सिवाए मज़कूरा आदमी और उसके
ख़ानदान के। 26बाद में वह हित्तियों के मुल्क में
गया जहाँ उसने एक शहर तामीर करके उसका
नाम लूज़ रखा। यह नाम आज तक रायज है।

27लेकिन मनस्सी ने हर शहर के बा-
शिंदे न निकाले। बैत-शान, तानक, दोर,
इबलियाम, मजिद्दो और उनके गिर्दो-नवाह की
आबादियाँ रह गईं। कनानी पूरे अज़्म के साथ
उनमें टिके रहे। 28बाद में जब इसराईल की
ताक़त बढ़ गई तो इन कनानियों को बेगार में काम
करना पड़ा। लेकिन इसराईलियों ने उस वक़्त भी
उन्हें मुल्क से न निकाला।

29इसी तरह इफ़राईम के क़बीले ने भी जज़र
के बाशिंदों को न निकाला, और यह कनानी उनके
दरमियान आबाद रहे।

30ज़बूलून के क़बीले ने भी क़ितरोन और
नहलाल के बाशिंदों को न निकाला बल्कि यह
उनके दरमियान आबाद रहे, अलबत्ता उन्हें बेगार
में काम करना पड़ा।

31आशर के क़बीले ने न अक्को के बाशिंदों को
निकाला, न सैदा, अहलाब, अकज़ीब, हिलबा,
अफ़ीक़ या रहोब के बाशिंदों को। 32इस वजह से
आशर के लोग कनानी बाशिंदों के दरमियान रहने
लगे।

33नफ़ताली के क़बीले ने बैत-शम्स और बैत-
अनात के बाशिंदों को न निकाला बल्कि वह भी
कनानियों के दरमियान रहने लगे। लेकिन बैत-
शम्स और बैत-अनात के बाशिंदों को बेगार में
काम करना पड़ा।

34दान के क़बीले ने मैदानी इलाक़े पर क़ब्ज़ा
करने की कोशिश तो की, लेकिन अमोरियों ने उन्हें
आने न दिया बल्कि पहाड़ी इलाक़े तक महदूद
रखा। 35अमोरी पूरे अज़्म के साथ हरिस पहाड़,
ऐयालोन और सालबीम में टिके रहे। लेकिन जब

इफ़राईम और मनस्सी की ताक़त बढ़ गई तो अमोरियों को बेगार में काम करना पड़ा।

36अमोरियों की सरहद दर्राए-अक़्रब्बीम से लेकर सिला से परे तक थी।

रब का फ़रिश्ता इसराईल को मलामत करता है

2 रब का फ़रिश्ता जिलजाल से चढ़कर बोकीम पहुँचा। वहाँ उसने इसराईलियों से कहा, "मैं तुम्हें मिसर से निकालकर उस मुल्क में लाया जिसका वादा मैंने क़सम खाकर तुम्हारे बापदादा से किया था। उस वक़्त मैंने कहा कि मैं तुम्हारे साथ अपना अहद कभी नहीं तोड़ूँगा। 2और मैंने हुक्म दिया, 'इस मुल्क की क़ौमों के साथ अहद मत बाँधना बल्कि उनकी क़ुरबानगाहों को गिरा देना।' लेकिन तुमने मेरी न सुनी। यह तुमने क्या किया? 3इसलिए अब मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैं उन्हें तुम्हारे आगे से नहीं निकालूँगा। वह तुम्हारे पहलुओं में काँटे बनेंगे, और उनके देवता तुम्हारे लिए फंदा बने रहेंगे।"

4रब के फ़रिश्ते की यह बात सुनकर इसराईली ख़ूब रोए। 5यही वजह है कि उस जगह का नाम बोकीम यानी रोनेवाले पड़ गया। फिर उन्होंने वहाँ रब के हुज़ूर क़ुरबानियाँ पेश कीं।

इसराईल बेवफ़ा हो जाता है

6यशुअ के क़ौम को रुख़सत करने के बाद हर एक क़बीला अपने इलाक़े पर क़ब्ज़ा करने के लिए रवाना हुआ था। 7जब तक यशुअ और वह बुज़ुर्ग ज़िंदा रहे जिन्होंने वह अज़ीम काम देखे हुए थे जो रब ने इसराईलियों के लिए किए थे उस वक़्त तक इसराईली रब की वफ़ादारी से ख़िदमत करते रहे। 8फिर रब का ख़ादिम यशुअ बिन नून इंतक़ाल कर गया। उस की उम्र 110 साल थी। 9उसे तिमनत-हरिस में उस की अपनी मौरूसी ज़मीन में दफ़नाया गया। (यह शहर इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े में जास पहाड़ के शिमाल में है।)

10जब हमअसर इसराईली सब मरकर अपने बापदादा से जा मिले तो नई नसल उभर आई जो न तो रब को जानती, न उन कामों से वाक़िफ़ थी जो रब ने इसराईल के लिए किए थे। 11उस वक़्त वह ऐसी हरकतें करने लगे जो रब को बुरी लगीं। उन्होंने बाल देवता के बुतों की पूजा करके 12रब अपने बापदादा के ख़ुदा को तर्क कर दिया जो उन्हें मिसर से निकाल लाया था। वह गिर्दो-नवाह की क़ौमों के दीगर माबूदों के पीछे लग गए और उनकी पूजा भी करने लगे। इससे रब का ग़ज़ब उन पर भड़का, 13क्योंकि उन्होंने उस की ख़िदमत छोड़कर बाल देवता और अस्तारात देवी की पूजा की। 14रब यह देखकर इसराईलियों से नाराज़ हुआ और उन्हें डाकुओं के हवाले कर दिया जिन्होंने उनका माल लूटा। उसने उन्हें इर्दगिर्द के दुश्मनों के हाथ बेच डाला, और वह उनका मुक़ाबला करने के क़ाबिल न रहे। 15जब भी इसराईली लड़ने के लिए निकले तो रब का हाथ उनके ख़िलाफ़ था। नतीजतन वह हारते गए जिस तरह उसने क़सम खाकर फ़रमाया था।

जब वह इस तरह बड़ी मुसीबत में थे 16तो रब उनके दरमियान क़ाज़ी बरपा करता जो उन्हें लूटनेवालों के हाथ से बचाते। 17लेकिन वह उनकी न सुनते बल्कि ज़िना करके दीगर माबूदों के पीछे लगे और उनकी पूजा करते रहते। गो उनके बापदादा रब के अहकाम के ताबे रहे थे, लेकिन वह ख़ुद बड़ी जल्दी से उस राह से हट जाते जिस पर उनके बापदादा चले थे। 18लेकिन जब भी वह दुश्मन के ज़ुल्म और दबाव तले कराहने लगते तो रब को उन पर तरस आ जाता, और वह किसी क़ाज़ी को बरपा करता और उस की मदद करके उन्हें बचाता।

जितने अरसे तक क़ाज़ी ज़िंदा रहता उतनी देर तक इसराईली दुश्मनों के हाथ से महफ़ूज़ रहते। 19लेकिन उसके मरने पर वह दुबारा अपनी पुरानी राहों पर चलने लगते, बल्कि जब वह मुड़कर दीगर माबूदों की पैरवी और पूजा करने लगते तो उनकी रविश बापदादा की रविश से भी

बुरी होती। वह अपनी शरीर हरकतों और हटधर्म
राहों से बाज़ आने के लिए तैयार ही न होते।
20इसलिए अल्लाह को इसराईल पर बड़ा ग़ुस्सा
आया। उसने कहा, "इस क़ौम ने वह अहद तोड़
दिया है जो मैंने इसके बापदादा से बाँधा था।
यह मेरी नहीं सुनती, 21इसलिए मैं उन क़ौमों
को नहीं निकालूँगा जो यशुअ की मौत से लेकर
आज तक मुल्क में रह गई हैं। यह क़ौमें इसमें
आबाद रहेंगी, 22और मैं उनसे इसराईलियों को
आज़माकर देखूँगा कि आया वह अपने बापदादा
की तरह रब की राह पर चलेंगे या नहीं।"
23चुनाँचे रब ने इन क़ौमों को न यशुअ के हवाले
किया, न फ़ौरन निकाला बल्कि उन्हें मुल्क में ही
रहने दिया।

अल्लाह इसराईल को कनानी क़ौमों से आज़माता है

3 रब ने कई एक क़ौमों को मुल्के-कनान में
रहने दिया ताकि उन तमाम इसराईलियों
को आज़माए जो ख़ुद कनान की जंगों में शरीक
नहीं हुए थे। 2नीज़, वह नई नसल को जंग करना
सिखाना चाहता था, क्योंकि वह जंग करने से
नावाक़िफ़ थी। ज़ैल की क़ौमें कनान में रह गई
थीं : 3फ़िलिस्ती उनके पाँच हुक्मरानों समेत,
तमाम कनानी, सैदानी और लुबनान के पहाड़ी
इलाक़े में रहनेवाले हिव्वी जो बाल-हरमून पहाड़
से लेकर लबो-हमात तक आबाद थे। 4उनसे
रब इसराईलियों को आज़माना चाहता था। वह
देखना चाहता था कि क्या यह मेरे उन अहकाम
पर अमल करते हैं या नहीं जो मैंने मूसा की
मारिफ़त उनके बापदादा को दिए थे।

ग़ुतनियेल क़ाज़ी

5चुनाँचे इसराईली कनानियों, हित्तियों,
अमोरियों, फ़रिज़्ज़ियों, हिव्वियों और यबू-
सियों के दरमियान ही आबाद हो गए। 6न सिर्फ़
यह बल्कि वह इन क़ौमों से अपने बेटे-बेटियों का
रिश्ता बाँधकर उनके देवताओं की पूजा भी करने
लगे। 7इसराईलियों ने ऐसी हरकतें कीं जो रब
की नज़र में बुरी थीं। रब को भूलकर उन्होंने बाल
देवता और यसीरत देवी की ख़िदमत की।
8तब रब का ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ,
और उसने उन्हें मसोपुतामिया के बादशाह कूशन-
रिसअतैम के हवाले कर दिया। इसराईली आठ
साल तक कूशन के ग़ुलाम रहे। 9लेकिन जब
उन्होंने मदद के लिए रब को पुकारा तो उसने
उनके लिए एक नजातदहिंदा बरपा किया।
कालिब के छोटे भाई ग़ुतनियेल बिन क़नज़ ने
उन्हें दुश्मन के हाथ से बचाया। 10उस वक़्त
ग़ुतनियेल पर रब का रूह नाज़िल हुआ, और
वह इसराईल का क़ाज़ी बन गया। जब वह जंग
करने के लिए निकला तो रब ने मसोपुतामिया के
बादशाह कूशन-रिसअतैम को उसके हवाले कर
दिया, और वह उस पर ग़ालिब आ गया।
11तब मुल्क में चालीस साल तक अमनो-
अमान क़ायम रहा। लेकिन जब ग़ुतनियेल बिन
क़नज़ फ़ौत हुआ 12तो इसराईली दुबारा वह कुछ
करने लगे जो रब की नज़र में बुरा था। इसलिए
उसने मोआब के बादशाह इजलून को इसराईल
पर ग़ालिब आने दिया। 13इजलून ने अम्मोनियों
और अमालीक़ियों के साथ मिलकर इसराईलियों
से जंग की और उन्हें शिकस्त दी। उसने खजूरों
के शहर पर क़ब्ज़ा किया, 14और इसराईल 18
साल तक उस की ग़ुलामी में रहा।

अहूद क़ाज़ी की चालाकी

15इसराईलियों ने दुबारा मदद के लिए रब को
पुकारा, और दुबारा उसने उन्हें नजातदहिंदा अता
किया यानी बिनयमीन के क़बीले का अहूद बिन
जीरा जो बाएँ हाथ से काम करने का आदी था।
इसी शख़्स को इसराईलियों ने इजलून बादशाह
के पास भेज दिया ताकि वह उसे ख़राज के पैसे
अदा करे। 16अहूद ने अपने लिए एक दोधारी
तलवार बना ली जो तक़रीबन डेढ़ फ़ुट लंबी थी।
जाते वक़्त उसने उसे अपनी कमर के दाईं तरफ़
बाँधकर अपने लिबास में छुपा लिया। 17जब वह

इजलून के दरबार में पहुँच गया तो उसने मोआब
के बादशाह को ख़राज पेश किया। इजलून बहुत
मोटा आदमी था। 18फिर अहूद ने उन आदमियों
को रुख़सत कर दिया जिन्होंने उसके साथ ख़राज
उठाकर उसे दरबार तक पहुँचाया था। 19-20अहूद
भी वहाँ से रवाना हुआ, लेकिन जिलजाल के बुतों
के क़रीब वह मुड़कर इजलून के पास वापस गया।

इजलून बालाख़ाने में बैठा था जो ज़्यादा ठंडा
था और उसके ज़ाती इस्तेमाल के लिए मख़सूस
था। अहूद ने अंदर जाकर बादशाह से कहा, "मेरी
आपके लिए ख़ुफ़िया ख़बर है।" बादशाह ने कहा,
"ख़ामोश!" बाक़ी तमाम हाज़िरीन कमरे से चले
गए तो अहूद ने कहा, "जो ख़बर मेरे पास आपके
लिए है वह अल्लाह की तरफ़ से है!" यह सुनकर
इजलून खड़ा होने लगा, 21लेकिन अहूद ने उसी
लमहे अपने बाएँ हाथ से कमर के दाईं तरफ़ बँधी
हुई तलवार को पकड़कर उसे मियान से निकाला
और इजलून के पेट में धँसा दिया। 22तलवार
इतनी धँस गई कि उसका दस्ता भी चरबी में ग़ायब
हो गया और उस की नोक टाँगों में से निकली।
तलवार को उसमें छोड़कर 23अहूद ने कमरे के
दरवाज़ों को बंद करके कुंडी लगाई और साथवाले
कमरे में से निकलकर चला गया।

24थोड़ी देर के बाद बादशाह के नौकरों ने
आकर देखा कि दरवाज़ों पर कुंडी लगी है। उन्होंने
एक दूसरे से कहा, "वह हाजत रफ़ा कर रहे
होंगे," 25इसलिए कुछ देर के लिए ठहरे। लेकिन
दरवाज़ा न खुला। इंतज़ार करते करते वह थक
गए, लेकिन बेसूद, बादशाह ने दरवाज़ा न खोला।
आख़िरकार उन्होंने चाबी ढूँडकर दरवाज़ों को
खोल दिया और देखा कि मालिक की लाश फ़र्श
पर पड़ी हुई है।

26नौकरों के झिजकने की वजह से अहूद बच
निकला और जिलजाल के बुतों से गुज़रकर सईरा
पहुँच गया जहाँ वह महफ़ूज़ था। 27वहाँ इफ़राईम
के पहाड़ी इलाक़े में उसने नरसिंगा फूँक दिया
ताकि इसराईली लड़ने के लिए जमा हो जाएँ।
वह इकट्ठे हुए और उस की राहनुमाई में वादीए-
यरदन में उतर गए। 28अहूद बोला, "मेरे पीछे
हो लें, क्योंकि अल्लाह ने आपके दुश्मन मोआब
को आपके हवाले कर दिया है।" चुनाँचे वह
उसके पीछे पीछे वादी में उतर गए। पहले उन्होंने
दरियाए-यरदन के कम-गहरे मक़ामों पर क़ब्ज़ा
करके किसी को दरिया पार करने न दिया। 29उस
वक़्त उन्होंने मोआब के 10,000 ताक़तवर और
जंग करने के क़ाबिल आदमियों को मार डाला।
एक भी न बचा।

30उस दिन इसराईल ने मोआब को ज़ेर कर
दिया, और 80 साल तक मुल्क में अमनो-अमान
क़ायम रहा।

शमजर क़ाज़ी

31अहूद के दौर के बाद इसराईल का एक और
नजातदहिंदा उभर आया, शमजर बिन अनात।
उसने बैल के आँकुस से 600 फ़िलिस्तियों को
मार डाला।

दबोरा नबिया और लशकर का सरदार बरक़

4 जब अहूद फ़ौत हुआ तो इसराईली दुबारा
ऐसी हरकतें करने लगे जो रब के नज़दीक
बुरी थीं। 2-3इसलिए रब ने उन्हें कनान के
बादशाह याबीन के हवाले कर दिया। याबीन का
दारुल-हुकूमत हसूर था, और उसके पास 900
लोहे के रथ थे। उसके लशकर का सरदार सीसरा
था जो हरूसत-हगोयम में रहता था। याबीन ने 20
साल इसराईलियों पर बहुत ज़ुल्म किया, इसलिए
उन्होंने मदद के लिए रब को पुकारा।

4उन दिनों में दबोरा नबिया इसराईल की क़ाज़ी
थी। उसका शौहर लफ़ीदोत था, 5और वह 'दबोरा
के खजूर' के पास रहती थी जो इफ़राईम के
पहाड़ी इलाक़े में रामा और बैतेल के दरमियान
था। इस दरख़्त के साये में वह इसराईलियों के
मामलात के फ़ैसले किया करती थी। 6एक दिन
दबोरा ने बरक़ बिन अबीनुअम को बुलाया। बरक़
नफ़ताली के क़बायली इलाक़े के शहर क़ादिस में
रहता था। दबोरा ने बरक़ से कहा, "रब इसराईल

का ख़ुदा आपको हुक्म देता है, 'नफ़ताली और
ज़बूलून के क़बीलों में से 10,000 मर्दों को जमा
करके उनके साथ तबूर पहाड़ पर चढ़ जा! 7मैं
याबीन के लशकर के सरदार सीसरा को उसके
रथों और फ़ौज समेत तेरे क़रीब की क़ैसोन नदी
के पास खींच लाऊँगा। वहाँ मैं उसे तेरे हाथ में कर
दूँगा'।"

8बरक़ ने जवाब दिया, "मैं सिर्फ़ इस सूरत में
जाऊँगा कि आप भी साथ जाएँ। आपके बग़ैर
मैं नहीं जाऊँगा।" 9दबोरा ने कहा, "ठीक है, मैं
ज़रूर आपके साथ जाऊँगी। लेकिन इस सूरत
में आपको सीसरा पर ग़ालिब आने की इज़्ज़त
हासिल नहीं होगी बल्कि एक औरत को। क्योंकि
रब सीसरा को एक औरत के हवाले कर देगा।"

चुनाँचे दबोरा बरक़ के साथ क़ादिस गई।
10वहाँ बरक़ ने ज़बूलून और नफ़ताली के क़बीलों
को अपने पास बुला लिया। 10,000 आदमी उस
की राहनुमाई में तबूर पहाड़ पर चले गए। दबोरा
भी साथ गई।

11उन दिनों में एक क़ीनी बनाम हिबर ने अपना
ख़ैमा क़ादिस के क़रीब ऐलोन-ज़ाननीम में लगाया
हुआ था। क़ीनी मूसा के साले होबाब की औलाद
में से था। लेकिन हिबर दूसरे क़ीनियों से अलग
रहता था।

12अब सीसरा को इत्तला दी गई कि बरक़ बिन
अबीनुअम फ़ौज लेकर पहाड़ तबूर पर चढ़ गया
है। 13यह सुनकर वह हरूसत-हगोयम से रवाना
होकर अपने 900 रथों और बाक़ी लशकर के
साथ क़ैसोन नदी पर पहुँच गया।

14तब दबोरा ने बरक़ से बात की, "हमला
के लिए तैयार हो जाएँ, क्योंकि रब ने आज
ही सीसरा को आपके क़ाबू में कर दिया है। रब
आपके आगे आगे चल रहा है।" चुनाँचे बरक़
अपने 10,000 आदमियों के साथ तबूर पहाड़
से उतर आया। 15जब उन्होंने दुश्मन पर हमला
किया तो रब ने कनानियों के पूरे लशकर में रथों
समेत अफ़रा-तफ़री पैदा कर दी। सीसरा अपने
रथ से उतरकर पैदल ही फ़रार हो गया।

16बरक़ के आदमियों ने भागनेवाले फ़ौ-
जियों और उनके रथों का ताक़्क़ुब करके उनको
हरूसत-हगोयम तक मारते गए। एक भी न बचा।

सीसरा का अंजाम

17इतने में सीसरा पैदल चलकर क़ीनी आदमी
हिबर की बीवी याएल के ख़ैमे के पास भाग आया
था। वजह यह थी कि हसूर के बादशाह याबीन
के हिबर के घराने के साथ अच्छे ताल्लुक़ात थे।
18याएल ख़ैमे से निकलकर सीसरा से मिलने
गई। उसने कहा, "आएँ मेरे आक़ा, अंदर आएँ
और न डरें।" चुनाँचे वह अंदर आकर लेट गया,
और याएल ने उस पर कम्बल डाल दिया।

19सीसरा ने कहा, "मुझे प्यास लगी है, कुछ
पानी पिला दो।" याएल ने दूध का मशकीज़ा
खोलकर उसे पिला दिया और उसे दुबारा छुपा
दिया। 20सीसरा ने दरख़ास्त की, "दरवाज़े में
खड़ी हो जाओ! अगर कोई आए और पूछे कि
क्या ख़ैमे में कोई है तो बोलो कि नहीं, कोई नहीं
है।"

21यह कहकर सीसरा गहरी नींद सो गया,
क्योंकि वह निहायत थका हुआ था। तब याएल
ने मेख़ और हथोड़ा पकड़ लिया और दबे पाँव
सीसरा के पास जाकर मेख़ को इतने ज़ोर से उस
की कनपटी में ठोंक दिया कि मेख़ ज़मीन में धँस
गई और वह मर गया।

22कुछ देर के बाद बरक़ सीसरा के ताक़्क़ुब में
वहाँ से गुज़रा। याएल ख़ैमे से निकलकर उससे
मिलने आई और बोली, "आएँ, मैं आपको वह
आदमी दिखाती हूँ जिसे आप ढूँड रहे हैं।" बरक़
उसके साथ ख़ैमे में दाख़िल हुआ तो क्या देखा
कि सीसरा की लाश ज़मीन पर पड़ी है और मेख़
उस की कनपटी में से गुज़रकर ज़मीन में गड़ गई
है।

23उस दिन अल्लाह ने कनानी बादशाह याबीन
को इसराईलियों के सामने ज़ेर कर दिया।
24इसके बाद उनकी ताक़त बढ़ती गई जबकि

याबीन कमज़ोर होता गया और आख़िरकार इसराईलियों के हाथों तबाह हो गया।

दबोरा और बरक़ का गीत

5 फ़तह के दिन दबोरा ने बरक़ बिन अबीनुअम के साथ यह गीत गाया,

2“अल्लाह की सताइश हो! क्योंकि इसराईल के सरदारों ने राहनुमाई की, और अवाम निकलने के लिए तैयार हुए।

3ऐ बादशाहो, सुनो! ऐ हुक्मरानो, मेरी बात पर तवज्जुह दो! मैं रब की तमजीद में गीत गाऊँगी, रब इसराईल के ख़ुदा की मद्हसराई करूँगी।

4ऐ रब, जब तू सईर से निकल आया और अदोम के खुले मैदान से रवाना हुआ तो ज़मीन काँप उठी और आसमान से पानी टपकने लगा, बादलों से बारिश बरसने लगी।

5कोहे-सीना के रब के हुज़ूर पहाड़ हिलने लगे, रब इसराईल के ख़ुदा के सामने वह कपकपाने लगे।

6शमजर बिन अनात और याएल के दिनों में सफ़र के पक्के और सीधे रास्ते ख़ाली रहे और मुसाफ़िर उनसे हटकर बल खाते हुए छोटे छोटे रास्तों पर चलकर अपनी मनज़िल तक पहुँचते थे।

7देहात की ज़िंदगी सूनी हो गई। गाँव में रहना मुश्किल था जब तक मैं, दबोरा जो इसराईल की माँ हूँ खड़ी न हुई।

8शहर के दरवाज़ों पर जंग छिड़ गई जब उन्होंने नए माबूदों को चुन लिया। उस वक़्त इसराईल के 40,000 मर्दों के पास एक भी ढाल या नेज़ा न था।

9मेरा दिल इसराईल के सरदारों के साथ है और उनके साथ जो ख़ुशी से जंग के लिए निकले। रब की सताइश करो!

10ऐ तुम जो सफ़ेद गधों पर कपड़े बिछाकर उन पर सवार हो, अल्लाह की तमजीद करो! ऐ तुम जो पैदल चल रहे हो, अल्लाह की तारीफ़ करो!

11सुनो! जहाँ जानवरों को पानी पिलाया जाता है वहाँ लोग रब के नजातबख़्श कामों की तारीफ़ कर रहे हैं, उन नजातबख़्श कामों की जो उसने इसराईल के देहातियों की ख़ातिर किए। तब रब के लोग शहर के दरवाज़ों के पास उतर आए।

12ऐ दबोरा, उठें, उठें! उठें, हाँ उठें और गीत गाएँ! ऐ बरक़, खड़े हो जाएँ! ऐ अबीनुअम के बेटे, अपने क़ैदियों को बाँधकर ले जाएँ!

13फिर बचे हुए फ़ौजी पहाड़ी इलाक़े से उतरकर क़ौम के शुरफ़ा के पास आए, रब की क़ौम सूरमाओं के साथ मेरे पास उतर आई।

14इफ़राईम से जिसकी जड़ें अमालीक़ में हैं वह उतर आए, और बिनयमीन के मर्द उनके पीछे हो लिए। मकीर से हुक्मरान और ज़बूलून से सिपहसालार उतर आए।

15इशकार के रईस भी दबोरा के साथ थे, और उसके फ़ौजी बरक़ के पीछे होकर वादी में दौड़ आए। लेकिन रूबिन का क़बीला अपने इलाक़े में रहकर सोच-बिचार में उलझा रहा।

16तू क्यों अपने ज़ीन के दो बोरों के दरमियान बैठा रहा? क्या गल्लों के दरमियान चरवाहों की बाँसरियों की आवाज़ें सुनने के लिए? रूबिन का क़बीला अपने इलाक़े में रहकर सोच-बिचार में उलझा रहा।

17जिलियाद के घराने दरियाए-यरदन के मशरिक़ में ठहरे रहे। और दान का क़बीला, वह क्यों बहरी जहाज़ों के पास रहा? आशर का क़बीला भी साहिल पर बैठा रहा, वह आराम से अपनी बंदरगाहों के पास ठहरा रहा,

18जबकि ज़बूलून और नफ़ताली अपनी जान पर खेलकर मैदाने-जंग में आ गए।

19बादशाह आए और लड़े, कनान के बादशाह मजिद्दो नदी पर तानक के पास इसराईल से लड़े। लेकिन वहाँ से वह चाँदी का लूटा हुआ माल वापस न लाए।

20आसमान से सितारों ने सीसरा पर हमला किया, अपनी आसमानी राहों को छोड़कर वह उससे और उस की क़ौम से लड़ने आए।

21क़ैसोन नदी उन्हें उड़ा ले गई, वह नदी जो क़दीम ज़माने से बहती है। ऐ मेरी जान, मज़बूती से आगे चलती जा!

22उस वक़्त टापों का बड़ा शोर सुनाई दिया। दुश्मन के ज़बरदस्त घोड़े सरपट दौड़ रहे थे।

23रब के फ़रिश्ते ने कहा, 'मीरोज़ शहर पर लानत करो, उसके बाशिंदों पर ख़ूब लानत करो! क्योंकि वह रब की मदद करने न आए, वह सूरमाओं के ख़िलाफ़ रब की मदद करने न आए।'

24हिबर क़ीनी की बीवी मुबारक है! ख़ैमों में रहनेवाली औरतों में से वह सबसे मुबारक है!

25जब सीसरा ने पानी माँगा तो याएल ने उसे दूध पिलाया। शानदार प्याले में लस्सी डालकर वह उसे उसके पास लाई।

26लेकिन फिर उसने अपने हाथ से मेख़ और अपने दहने हाथ से मज़दूरों का हथोड़ा पकड़कर सीसरा का सर फोड़ दिया, उस की खोपड़ी टुकड़े टुकड़े करके उस की कनपटी को छेद दिया।

27उसके पाँवों में वह तड़प उठा। वह गिरकर वहीं पड़ा रहा। हाँ, वह उसके पाँवों में गिरकर हलाक हुआ।

28सीसरा की माँ ने खिड़की में से झाँका और दरीचे में से देखती देखती रोती रही, 'उसके रथ के पहुँचने में इतनी देर क्यों हो रही है? रथों की आवाज़ अब तक क्यों सुनाई नहीं दे रही?'

29उस की दानिशमंद ख़वातीन उसे तस-
ल्ली देती हैं और वह ख़ुद उनकी बात दोहराती है,
30'वह लूटा हुआ माल आपस में बाँट रहे होंगे।
हर मर्द के लिए एक दो लड़कियाँ और सीसरा के
लिए रंगदार लिबास होगा। हाँ, वह रंगदार लिबास
और मेरी गरदन को सजाने के लिए दो नफ़ीस
रंगदार कपड़े ला रहे होंगे।'

31ऐ रब, तेरे तमाम दुश्मन सीसरा की तरह हलाक हो जाएँ! लेकिन जो तुझसे प्यार करते हैं वह पूरे ज़ोर से तुलू होनेवाले सूरज की मानिंद हों।"

बरक़ की इस फ़तह के बाद इसराईल में 40 साल अमनो-अमान क़ायम रहा।

मिदियानी इसराईलियों को दबाते हैं

6 फिर इसराईली दुबारा वह कुछ करने लगे
जो रब को बुरा लगा, और उसने उन्हें
सात साल तक मिदियानियों के हवाले कर दिया।
2मिदियानियों का दबाव इतना ज़्यादा बढ़ गया
कि इसराईलियों ने उनसे पनाह लेने के लिए
पहाड़ी इलाक़े में शिगाफ़, ग़ार और गढ़ियाँ बना
लीं। 3क्योंकि जब भी वह अपनी फ़सलें लगाते
तो मिदियानी, अमालीक़ी और मशरिक़ के दीगर
फ़ौजी उन पर हमला करके 4मुल्क को घेर लेते
और फ़सलों को ग़ज़्ज़ा शहर तक तबाह करते।
वह खानेवाली कोई भी चीज़ नहीं छोड़ते थे, न
कोई भेड़, न कोई बैल, और न कोई गधा। 5और
जब वह अपने मवेशियों और ख़ैमों के साथ पहुँचते
तो टिड्डियों के दलों की मानिंद थे। इतने मर्द और
ऊँट थे कि उनको गिना नहीं जा सकता था। यों
वह मुल्क पर चढ़ आते थे ताकि उसे तबाह करें।
6इसराईली मिदियान के सबब से इतने पस्तहाल
हुए कि आख़िरकार मदद के लिए रब को पुकारने
लगे।

7-8तब उसने उनमें एक नबी भेज दिया जिसने
कहा, "रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि मैं
ही तुम्हें मिसर की ग़ुलामी से निकाल लाया। 9मैंने
तुम्हें मिसर के हाथ से और उन तमाम ज़ालिमों
के हाथ से बचा लिया जो तुम्हें दबा रहे थे। मैं
उन्हें तुम्हारे आगे आगे निकालता गया और उनकी

ज़मीन तुम्हें दे दी। 10उस वक़्त मैंने तुम्हें बताया,
‘मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। जिन अमोरियों के मुल्क
में तुम रह रहे हो उनके देवताओं का ख़ौफ़ मत
मानना। लेकिन तुमने मेरी न सुनी’।”

रब जिदाऊन को बुलाता है

11एक दिन रब का फ़रिश्ता आया और उफ़रा
में बलूत के एक दरख़्त के साये में बैठ गया। यह
दरख़्त अबियज़र के ख़ानदान के एक आदमी का
था जिसका नाम युआस था। वहाँ अंगूर का रस
निकालने का हौज़ था, और उसमें युआस का
बेटा जिदाऊन छुपकर गंदुम झाड़ रहा था, हौज़ में
इसलिए कि गंदुम मिदियानियों से महफ़ूज़ रहे।
12रब का फ़रिश्ता जिदाऊन पर ज़ाहिर हुआ और
कहा, “ऐ ज़बरदस्त सूरमे, रब तेरे साथ है!”

13जिदाऊन ने जवाब दिया, “नहीं जनाब,
अगर रब हमारे साथ हो तो यह सब कुछ हमारे
साथ क्यों हो रहा है? उसके वह तमाम मोजिज़े
आज कहाँ नज़र आते हैं जिनके बारे में हमारे
बापदादा हमें बताते रहे हैं? क्या वह नहीं कहते
थे कि रब हमें मिसर से निकाल लाया? नहीं,
जनाब। अब ऐसा नहीं है। अब रब ने हमें तर्क
करके मिदियान के हवाले कर दिया है।”

14रब ने उस की तरफ़ मुड़कर कहा, “अपनी
इस ताक़त में जा और इसराईल को मिदियान के
हाथ से बचा। मैं ही तुझे भेज रहा हूँ।”

15लेकिन जिदाऊन ने एतराज़ किया, “ऐ रब,
मैं इसराईल को किस तरह बचाऊँ? मेरा ख़ानदान
मनस्सी के क़बीले का सबसे कमज़ोर ख़ानदान है,
और मैं अपने बाप के घर में सबसे छोटा हूँ।”

16रब ने जवाब दिया, “मैं तेरे साथ हूँगा, और
तू मिदियानियों को यों मारेगा जैसे एक ही आदमी
को।”

17तब जिदाऊन ने कहा, “अगर मुझ पर तेरे
करम की नज़र हो तो मुझे कोई इलाही निशान
दिखा ताकि साबित हो जाए कि वाक़ई रब ही मेरे
साथ बात कर रहा है। 18मैं अभी जाकर क़ुरबानी
तैयार करता हूँ और फिर वापस आकर उसे तुझे
पेश करूँगा। उस वक़्त तक रवाना न हो जाना।”

रब ने कहा, “ठीक है, मैं तेरी वापसी का
इंतज़ार करके ही जाऊँगा।”

19जिदाऊन चला गया। उसने बकरी का बच्चा
ज़बह करके तैयार किया और पूरे 16 किलोग्राम
मैदे से बेख़मीरी रोटी बनाई। फिर गोश्त को टोकरी
में रखकर और उसका शोरबा अलग बरतन में
डालकर वह सब कुछ रब के फ़रिश्ते के पास लाया
और उसे बलूत के साये में पेश किया।

20रब के फ़रिश्ते ने कहा, “गोश्त और बेख़मीरी
रोटी को लेकर इस पत्थर पर रख दे, फिर शोरबा
उस पर उंडेल दे।” जिदाऊन ने ऐसा ही किया।
21रब के फ़रिश्ते के हाथ में लाठी थी। अब उसने
लाठी के सिरे से गोश्त और बेख़मीरी रोटी को छू
दिया। अचानक पत्थर से आग भड़क उठी और
ख़ुराक भस्म हो गई। साथ साथ रब का फ़रिश्ता
ओझल हो गया।

22फिर जिदाऊन को यक़ीन आया कि यह
वाक़ई रब का फ़रिश्ता था, और वह बोल उठा,
“हाय रब क़ादिरे-मुतलक़! मुझ पर अफ़सोस,
क्योंकि मैंने रब के फ़रिश्ते को रूबरू देखा है।”

23लेकिन रब उससे हमकलाम हुआ और कहा,
“तेरी सलामती हो। मत डर, तू नहीं मरेगा।”

24वहीं जिदाऊन ने रब के लिए क़ुरबान-
गाह बनाई और उसका नाम ‘रब सलामत है’
रखा। यह आज तक अबियज़र के ख़ानदान के
शहर उफ़रा में मौजूद है।

जिदाऊन बाल की क़ुरबानगाह गिरा देता है

25उसी रात रब जिदाऊन से हमकलाम हुआ,
“अपने बाप के बैलों में से दूसरे बैल को जो
सात साल का है चुन ले। फिर अपने बाप की
वह क़ुरबानगाह गिरा दे जिस पर बाल देवता को
क़ुरबानियाँ चढ़ाई जाती हैं, और यसीरत देवी का
वह खंबा काट डाल जो साथ खड़ा है। 26इसके
बाद उसी पहाड़ी क़िले की चोटी पर रब अपने
ख़ुदा के लिए सहीह क़ुरबानगाह बना दे। यसीरत

के खंबे की कटी हुई लकड़ी और बैल को उस पर रखकर मुझे भस्म होनेवाली क़ुरबानी पेश कर।”

27चुनाँचे जिदाऊन ने अपने दस नौकरों को साथ लेकर वह कुछ किया जिसका हुक्म रब ने उसे दिया था। लेकिन वह अपने ख़ानदान और शहर के लोगों से डरता था, इसलिए उसने यह काम दिन के बजाए रात के वक़्त किया।

28सुबह के वक़्त जब शहर के लोग उठे तो देखा कि बाल की क़ुरबानगाह ढा दी गई है और यसीरत देवी का साथवाला खंबा काट दिया गया है। इनकी जगह एक नई क़ुरबानगाह बनाई गई है जिस पर बैल को चढ़ाया गया है। 29उन्होंने एक दूसरे से पूछा, “किसने यह किया?” जब वह इस बात की तफ़तीश करने लगे तो किसी ने उन्हें बताया कि जिदाऊन बिन युआस ने यह सब कुछ किया है।

30तब वह युआस के घर गए और तक़ाज़ा किया, “अपने बेटे को घर से निकाल लाएँ। लाज़िम है कि वह मर जाए, क्योंकि उसने बाल की क़ुरबानगाह को गिराकर साथवाला यसीरत देवी का खंबा भी काट डाला है।”

31लेकिन युआस ने उनसे जो उसके सामने खड़े थे कहा, “क्या आप बाल के दिफ़ा में लड़ना चाहते हैं? जो भी बाल के लिए लड़ेगा उसे कल सुबह तक मार दिया जाएगा। अगर बाल वाक़ई ख़ुदा है तो वह ख़ुद अपने दिफ़ा में लड़े जब कोई उस की क़ुरबानगाह को ढा दे।”

32चूँकि जिदाऊन ने बाल की क़ुरबानगाह गिरा दी थी इसलिए उसका नाम यरुब्बाल यानी ‘बाल उससे लड़े’ पड़ गया।

जिदाऊन अल्लाह से निशान माँगता है

33कुछ देर के बाद तमाम मिदियानी, अमालीक़ी और दूसरी मशरिक़ी क़ौमें जमा हुईं और दरियाए-यरदन को पार करके अपने डेरे मैदाने-यज्रएल में लगाए। 34फिर रब का रूह जिदाऊन पर नाज़िल हुआ। उसने नरसिंगा फूँककर अबियज़र के ख़ानदान के मर्दों को अपने पीछे हो लेने के लिए बुलाया। 35साथ साथ उसने अपने क़ासिदों को मनस्सी के क़बीले और आशर, ज़बूलून और नफ़ताली के क़बीलों के पास भी भेज दिया। तब वह भी आए और जिदाऊन के मर्दों के साथ मिलकर उसके पीछे हो लिए।

36जिदाऊन ने अल्लाह से दुआ की, “अगर तू वाक़ई इसराईल को अपने वादे के मुताबिक़ मेरे ज़रीए बचाना चाहता है 37तो मुझे यक़ीन दिला। मैं रात को ताज़ा कतरी हुई ऊन गंदुम गाहने के फ़र्श पर रख दूँगा। कल सुबह अगर सिर्फ़ ऊन पर ओस पड़ी हो और इर्दगिर्द का सारा फ़र्श ख़ुश्क हो तो मैं जान लूँगा कि वाक़ई तू अपने वादे के मुताबिक़ इसराईल को मेरे ज़रीए बचाएगा।”

38वही कुछ हुआ जिसकी दरख़ास्त जिदाऊन ने की थी। अगले दिन जब वह सुबह-सवेरे उठा तो ऊन ओस से तर थी। जब उसने उसे निचोड़ा तो इतना पानी था कि बरतन भर गया।

39फिर जिदाऊन ने अल्लाह से कहा, “मुझसे ग़ुस्से न हो जाना अगर मैं तुझसे एक बार फिर दरख़ास्त करूँ। मुझे एक आख़िरी दफ़ा ऊन के ज़रीए तेरी मरज़ी जाँचने की इजाज़त दे। इस दफ़ा ऊन ख़ुश्क रहे और इर्दगिर्द के सारे फ़र्श पर ओस पड़ी हो।” 40उस रात अल्लाह ने ऐसा ही किया। सिर्फ़ ऊन ख़ुश्क रही जबकि इर्दगिर्द के सारे फ़र्श पर ओस पड़ी थी।

अल्लाह जिदाऊन के साथियों को चुन लेता है

7 सुबह-सवेरे यरुब्बाल यानी जिदाऊन अपने तमाम लोगों को साथ लेकर हरोद चश्मे के पास आया। वहाँ उन्होंने अपने डेरे लगाए। मिदियानियों ने अपनी ख़ैमागाह उनके शिमाल में मोरिह पहाड़ के दामन में लगाई हुई थी।

2रब ने जिदाऊन से कहा, “तेरे पास ज़्यादा लोग हैं! मैं इस क़िस्म के बड़े लशकर को मिदियानियों पर फ़तह नहीं दूँगा, वरना इसराईली मेरे सामने डींगें मारकर कहेंगे, ‘हमने अपनी ही

ताक़त से अपने आपको बचाया है!’ 3इसलिए
लशकरगाह में एलान कर कि जो डर के मारे परेशान हो वह अपने घर वापस चला जाए।” जिदाऊन ने यों किया तो 22,000 मर्द वापस चले गए जबकि 10,000 जिदाऊन के पास रहे।

4लेकिन रब ने दुबारा जिदाऊन से बात की, “अभी तक ज़्यादा लोग हैं! इनके साथ उतरकर चश्मे के पास जा। वहाँ मैं उन्हें जाँचकर उनको मुक़र्रर करूँगा जिन्हें तेरे साथ जाना है।” 5चुनाँचे
जिदाऊन अपने आदमियों के साथ चश्मे के पास उतर आया। रब ने उसे हुक्म दिया, “जो भी अपना हाथ पानी से भरकर उसे कुत्ते की तरह चाट ले उसे एक तरफ़ खड़ा कर। दूसरी तरफ़ उन्हें खड़ा कर जो घुटने टेककर पानी पीते हैं।”
6300 आदमियों ने अपना हाथ पानी से भरकर उसे चाट लिया जबकि बाक़ी सब पीने के लिए झुक गए।

7फिर रब ने जिदाऊन से फ़रमाया, “मैं इन 300 चाटनेवाले आदमियों के ज़रीए इसराईल को बचाकर मिदियानियों को तेरे हवाले कर दूँगा। बाक़ी तमाम मर्दों को फ़ारिग़ कर। वह सब अपने अपने घर वापस चले जाएँ।” 8चुनाँचे जिदाऊन
ने बाक़ी तमाम आदमियों को फ़ारिग़ कर दिया। सिर्फ़ मुक़र्ररा 300 मर्द रह गए। अब यह दूसरों की ख़ुराक और नरसिंगे अपने पास रखकर जंग के लिए तैयार हुए। उस वक़्त मिदियानी ख़ैमागाह इसराईलियों के नीचे वादी में थी।

मिदियानियों पर जिदाऊन की फ़तह

9जब रात हुई तो रब जिदाऊन से हमकलाम हुआ, “उठ, मिदियानी ख़ैमागाह के पास उतरकर उस पर हमला कर, क्योंकि मैं उसे तेरे हाथ में दे
दूँगा। 10लेकिन अगर तू इससे डरता है तो पहले
अपने नौकर फ़ूराह के साथ उतरकर 11वह बातें
सुन ले जो वहाँ के लोग कह रहे हैं। तब उन पर हमला करने की जुर्रत बढ़ जाएगी।”

जिदाऊन फ़ूराह के साथ ख़ैमागाह के किनारे के पास उतर आया। 12मिदियानी, अमालीक़ी
और मशरिक़ के दीगर फ़ौजी टिड्डियों के दल की तरह वादी में फैले हुए थे। उनके ऊँट साहिल की रेत की तरह बेशुमार थे। 13जिदाऊन दबे
पाँव दुश्मन के इतने क़रीब पहुँच गया कि उनकी बातें सुन सकता था। ऐन उस वक़्त एक फ़ौजी दूसरे को अपना ख़ाब सुना रहा था, “मैंने ख़ाब में देखा कि जौ की बड़ी रोटी लुढ़कती लुढ़कती हमारी ख़ैमागाह में उतर आई। यहाँ वह इतनी शिद्दत से ख़ैमे से टकरा गई कि ख़ैमा उलटकर ज़मीनबोस हो गया।” 14दूसरे ने जवाब दिया,
“इसका सिर्फ़ यह मतलब हो सकता है कि इसराईली मर्द जिदाऊन बिन युआस की तलवार ग़ालिब आएगी! अल्लाह उसे मिदियानियों और पूरी लशकरगाह पर फ़तह देगा।”

15ख़ाब और उस की ताबीर सुनकर जिदाऊन ने अल्लाह को सिजदा किया। फिर उसने इसराईली ख़ैमागाह में वापस आकर एलान किया, “उठें! रब ने मिदियानी लशकरगाह को तुम्हारे हवाले कर दिया है।” 16उसने अपने 300
मर्दों को सौ सौ के तीन गुरोहों में तक़सीम करके हर एक को एक नरसिंगा और एक घड़ा दे दिया। हर घड़े में मशाल थी। 17-18उसने हुक्म दिया,
“जो कुछ मैं करूँगा उस पर ग़ौर करके वही कुछ करें। पूरी ख़ैमागाह को घेर लें और ऐन वही कुछ करें जो मैं करूँगा। जब मैं अपने सौ लोगों के साथ ख़ैमागाह के किनारे पहुँचूँगा तो हम अपने नरसिंगों को बजा देंगे। यह सुनते ही आप भी यही कुछ करें और साथ साथ नारा लगाएँ, ‘रब के लिए और जिदाऊन के लिए’!”

19तक़रीबन आधी रात को जिदाऊन अपने सौ मर्दों के साथ मिदियानी ख़ैमागाह के किनारे पहुँच गया। थोड़ी देर पहले पहरेदार बदल गए थे। अचानक इसराईलियों ने अपने नरसिंगों को बजाया और अपने घड़ों को टुकड़े टुकड़े कर
दिया। 20फ़ौरन सौ सौ के दूसरे दो गुरोहों ने भी
ऐसा ही किया। अपने दहने हाथ में नरसिंगा और बाएँ हाथ में भड़कती मशाल पकड़कर वह नारा लगाते रहे, “रब के लिए और जिदाऊन के लिए!”

21लेकिन वह ख़ैमागाह में दाख़िल न हुए बल्कि
वहीं उसके इर्दगिर्द खड़े रहे। दुश्मन में बड़ी अफ़रा-
तफ़री मच गई। चीख़ते-चिल्लाते सब भाग जाने
की कोशिश करने लगे। 22जिदाऊन के 300
आदमी अपने नरसिंगे बजाते रहे जबकि रब ने
ख़ैमागाह में ऐसी गड़बड़ पैदा की कि लोग एक
दूसरे से लड़ने लगे। आख़िरकार पूरा लशकर बैत-
सित्ता, सरीरात और अबील-महूला की सरहद
तक फ़रार हुआ जो तब्बात के क़रीब है।
23फिर जिदाऊन ने नफ़ताली, आशर और
पूरे मनस्सी के मर्दों को बुला लिया, और
उन्होंने मिलकर मिदियानियों का ताक़्क़ुब किया।
24उसने अपने क़ासिदों के ज़रीए इफ़राईम के
पूरे पहाड़ी इलाक़े के बाशिंदों को भी पैग़ाम भेज
दिया, "उतर आएँ और मिदियानियों को भाग
जाने से रोकें! बैत-बारा तक उन तमाम जगहों
पर क़ब्ज़ा कर लें जहाँ दुश्मन दरियाए-यरदन को
पा-प्यादा पार कर सकता है।"
इफ़राईमी मान गए, 25और उन्होंने दो
मिदियानी सरदारों को पकड़कर उनके सर क़लम
कर दिए। सरदारों के नाम ओरेब और ज़एब थे,
और जहाँ उन्हें पकड़ा गया उन जगहों के नाम
'ओरेब की चट्टान' और 'ज़एब का अंगूर का
रस निकालनेवाला हौज़' पड़ गया। इसके बाद
वह दुबारा मिदियानियों का ताक़्क़ुब करने लगे।
दरियाए-यरदन को पार करने पर उनकी मुलाक़ात
जिदाऊन से हुई, और उन्होंने दोनों सरदारों के सर
उसके सुपुर्द कर दिए।

इफ़राईम नाराज़ हो जाता है

8 लेकिन इफ़राईम के मर्दों ने शिकायत
की, "आपने हमसे कैसा सुलूक किया?
आपने हमें क्यों नहीं बुलाया जब मिदियान से
लड़ने गए?" ऐसी बातें करते करते उन्होंने
जिदाऊन के साथ सख़्त बहस की। 2लेकिन
जिदाऊन ने जवाब दिया, "क्या आप मुझसे कहीं
ज़्यादा कामयाब न हुए? और जो अंगूर फ़सल
जमा करने के बाद इफ़राईम के बाग़ों में रह जाते
हैं क्या वह मेरे छोटे ख़ानदान अबियज़र की पूरी
फ़सल से ज़्यादा नहीं होते? 3अल्लाह ने तो
मिदियान के सरदारों ओरेब और ज़एब को आपके
हवाले कर दिया। इसकी निसबत मुझसे क्या
कामयाबी हासिल हुई है?" यह सुनकर इफ़राईम
के मर्दों का ग़ुस्सा ठंडा हो गया।

सुक्कात और फ़नुएल जिदाऊन की मदद नहीं करते

4जिदाऊन अपने 300 मर्दों समेत दरि-
याए-यरदन को पार कर चुका था। दुश्मन का
ताक़्क़ुब करते करते वह थक गए थे। 5इसलिए
जिदाऊन ने क़रीब के शहर सुक्कात के बाशिंदों
से गुज़ारिश की, "मेरे फ़ौजियों को कुछ रोटी दे
दें। वह थक गए हैं, क्योंकि हम मिदियानी सरदार
ज़िबह और ज़लमुन्ना का ताक़्क़ुब कर रहे हैं।"
6लेकिन सुक्कात के बुज़ुर्गों ने जवाब दिया, "हम
आपके फ़ौजियों को रोटी क्यों दें? क्या आप
ज़िबह और ज़लमुन्ना को पकड़ चुके हैं कि हम
ऐसा करें?" 7यह सुनकर जिदाऊन ने कहा,
"ज्योंही रब इन दो सरदारों ज़िबह और ज़लमुन्ना
को मेरे हाथ में कर देगा मैं तुमको रेगिस्तान
की काँटेदार झाड़ियों और ऊँटकटारों से गाहकर
तबाह कर दूँगा।"
8वह आगे निकलकर फ़नुएल शहर पहुँच गया।
वहाँ भी उसने रोटी माँगी, लेकिन फ़नुएल के
बाशिंदों ने सुक्कात का-सा जवाब दिया। 9यह
सुनकर उसने कहा, "जब मैं सलामती से वापस
आऊँगा तो तुम्हारा यह बुर्ज गिरा दूँगा!"

मिदियानियों पर पूरी फ़तह

10अब ज़िबह और ज़लमुन्ना क़रक़ूर पहुँच
गए थे। 15,000 अफ़राद उनके साथ रह गए
थे, क्योंकि मशरिक़ी इत्तहादियों के 1,20,000
तलवारों से लैस फ़ौजी हलाक हो गए थे।
11जिदाऊन ने मिदियानियों के पीछे चलते हुए
ख़ानाबदोशों का वह रास्ता इस्तेमाल किया जो
नूबह और युगबहा के मशरिक़ में है। इस तरीक़े

से उसने उनकी लशकरगाह पर उस वक़्त हमला
किया जब वह अपने आपको महफ़ूज़ समझ रहे
थे। 12दुश्मन में अफ़रा-तफ़री पैदा हुई और ज़िबह
और ज़लमुन्ना फ़रार हो गए। लेकिन जिदाऊन ने
उनका ताक़्क़ुब करते करते उन्हें पकड़ लिया।
13इसके बाद जिदाऊन लौटा। वह अभी
हरिस के दर्रा से उतर रहा था 14कि सुक्कात
के एक जवान आदमी से मिला। जिदाऊन ने
उसे पकड़कर मजबूर किया कि वह शहर के
राहनुमाओं और बुज़ुर्गों की फ़हरिस्त लिखकर
दे। 77 बुज़ुर्ग थे। 15जिदाऊन उनके पास गया
और कहा, "देखो, यह हैं ज़िबह और ज़लमुन्ना!
तुमने इन्हीं की वजह से मेरा मज़ाक़ उड़ाकर
कहा था कि हम आपके थकेहारे फ़ौजियों को
रोटी क्यों दें? क्या आप ज़िबह और ज़लमुन्ना
को पकड़ चुके हैं कि हम ऐसा करें?" 16फिर
जिदाऊन ने शहर के बुज़ुर्गों को गिरिफ़्तार करके
उन्हें काँटेदार झाड़ियों और ऊँटकटारों से गाहकर
सबक़ सिखाया। 17फिर वह फ़नुएल गया और
वहाँ का बुर्ज गिराकर शहर के मर्दों को मार डाला।
18इसके बाद जिदाऊन ज़िबह और ज़ल-
मुन्ना से मुख़ातिब हुआ। उसने पूछा, "उन
आदमियों का हुलिया कैसा था जिन्हें तुमने तबूर
पहाड़ पर क़त्ल किया?"

उन्होंने जवाब दिया, "वह आप जैसे थे, हर एक
शहज़ादा लग रहा था।"

19जिदाऊन बोला, "वह मेरे सगे भाई थे। रब
की हयात की क़सम, अगर तुम उनको ज़िंदा
छोड़ते तो मैं तुम्हें हलाक न करता।"

20फिर वह अपने पहलौठे यतर से मुख़ा-
तिब होकर बोला, "इनको मार डालो!" लेकिन
यतर अपनी तलवार मियान से निकालने से
झिजका, क्योंकि वह अभी बच्चा था और डरता
था। 21तब ज़िबह और ज़लमुन्ना ने कहा, "आप
ही हमें मार दें! क्योंकि जैसा आदमी वैसी उस की
ताक़त!" जिदाऊन ने खड़े होकर उन्हें तलवार से
मार डाला और उनके ऊँटों की गरदनों पर लगे
तावीज़ उतारकर अपने पास रखे।

जिदाऊन के सबब से इसराईल बुतपरस्ती में उलझ जाता है

22इसराईलियों ने जिदाऊन के पास आकर
कहा, "आपने हमें मिदियानियों से बचा लिया है,
इसलिए हम पर हुकूमत करें, आप, आपके बाद
आपका बेटा और उसके बाद आपका पोता।"

23लेकिन जिदाऊन ने जवाब दिया, "न मैं आप
पर हुकूमत करूँगा, न मेरा बेटा। रब ही आप पर
हुकूमत करेगा। 24मेरी सिर्फ़ एक गुज़ारिश है। हर
एक मुझे अपने लूटे हुए माल में से एक एक बाली
दे दे।" बात यह थी कि दुश्मन के तमाम अफ़राद
ने सोने की बालियाँ पहन रखी थीं, क्योंकि वह
इसमाईली थे।

25इसराईलियों ने कहा, "हम ख़ुशी से बाली
देंगे।" एक चादर ज़मीन पर बिछाकर हर एक ने
एक एक बाली उस पर फेंक दी। 26सोने की इन
बालियों का वज़न तक़रीबन 20 किलोग्राम था।
इसके अलावा इसराईलियों ने मुख़्तलिफ़ तावीज़,
कान के आवेज़े, अरग़वानी रंग के शाही लिबास
और ऊँटों की गरदनों में लगी क़ीमती ज़ंजीरें भी
दे दीं।

27इस सोने से जिदाऊन ने एक अफ़ोद[a]
बनाकर उसे अपने आबाई शहर उफ़रा में खड़ा
किया जहाँ वह उसके और तमाम ख़ानदान के
लिए फंदा बन गया। न सिर्फ़ यह बल्कि पूरा
इसराईल ज़िना करके बुत की पूजा करने लगा।

28उस वक़्त मिदियान ने ऐसी शिकस्त खाई
कि बाद में इसराईल के लिए ख़तरे का बाइस न
रहा। और जितनी देर जिदाऊन ज़िंदा रहा यानी
40 साल तक मुल्क में अमनो-अमान क़ायम
रहा।

[a]आम तौर पर इबरानी में अफ़ोद का मतलब इमामे-आज़म का बालापोश था (देखिए ख़ुरूज 28:4), लेकिन यहाँ इससे मुराद बुतपरस्ती की कोई चीज़ है।

29जंग के बाद जिदाऊन बिन युआस दुबारा उफ़रा में रहने लगा। 30उस की बहुत-सी बीवियाँ और 70 बेटे थे। 31उस की एक दाश्ता भी थी जो सिकम शहर में रिहाइशपज़ीर थी और जिसके एक बेटा पैदा हुआ। जिदाऊन ने बेटे का नाम अबीमलिक रखा। 32जिदाऊन उम्ररसीदा था जब फ़ौत हुआ। उसे अबियज़रियों के शहर उफ़रा में उसके बाप युआस की क़ब्र में दफ़नाया गया।

33जिदाऊन के मरते ही इसराईली दुबारा ज़िना करके बाल के बुतों की पूजा करने लगे। वह बाल-बरीत को अपना ख़ास देवता बनाकर 34रब अपने ख़ुदा को भूल गए जिसने उन्हें इर्दगिर्द के दुश्मनों से बचा लिया था। 35उन्होंने यरुब्बाल यानी जिदाऊन के ख़ानदान को भी उस एहसान के लिए कोई मेहरबानी न दिखाई जो जिदाऊन ने उन पर किया था।

अबीमलिक बादशाह बन जाता है

9 एक दिन यरुब्बाल यानी जिदाऊन का बेटा अबीमलिक अपने मामुओं और माँ के बाक़ी रिश्तेदारों से मिलने के लिए सिकम गया। उसने उनसे कहा, 2“सिकम शहर के तमाम बाशिंदों से पूछें, क्या आप अपने आप पर जिदाऊन के 70 बेटों की हुकूमत ज़्यादा पसंद करेंगे या एक ही शख़्स की? याद रहे कि मैं आपका ख़ूनी रिश्तेदार हूँ!” 3अबीमलिक के मामुओं ने सिकम के तमाम बाशिंदों के सामने यह बातें दोहराईं। सिकम के लोगों ने सोचा, “अबीमलिक हमारा भाई है” इसलिए वह उसके पीछे लग गए। 4उन्होंने उसे बाल-बरीत देवता के मंदिर से चाँदी के 70 सिक्के भी दे दिए।

इन पैसों से अबीमलिक ने अपने इर्दगिर्द आवारा और बदमाश आदमियों का गुरोह जमा किया। 5उन्हें अपने साथ लेकर वह उफ़रा पहुँचा जहाँ बाप का ख़ानदान रहता था। वहाँ उसने अपने तमाम भाइयों यानी जिदाऊन के 70 बेटों को एक ही पत्थर पर क़त्ल कर दिया। सिर्फ़ यूताम जो जिदाऊन का सबसे छोटा बेटा था कहीं छुपकर बच निकला। 6इसके बाद सिकम और बैत-मिल्लो के तमाम लोग उस बलूत के साये में जमा हुए जो सिकम के सतून के पास था। वहाँ उन्होंने अबीमलिक को अपना बादशाह मुक़र्रर किया।

यूताम की अबीमलिक और सिकम पर लानत

7जब यूताम को इसकी इत्तला मिली तो वह गरिज़ीम पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया और ऊँची आवाज़ से चिल्लाया, “ऐ सिकम के बाशिंदो, सुनें मेरी बात! सुनें अगर आप चाहते हैं कि अल्लाह आपकी भी सुने। 8एक दिन दरख़्तों ने फ़ैसला किया कि हम पर कोई बादशाह होना चाहिए। वह उसे चुनने और मसह करने के लिए निकले। पहले उन्होंने ज़ैतून के दरख़्त से बात की, ‘हमारे बादशाह बन जाएँ!’ 9लेकिन ज़ैतून के दरख़्त ने जवाब दिया, ‘क्या मैं अपना तेल पैदा करने से बाज़ आऊँ जिसकी अल्लाह और इनसान इतनी क़दर करते हैं ताकि दरख़्तों पर हुकूमत करूँ? हरगिज़ नहीं!’ 10इसके बाद दरख़्तों ने अंजीर के दरख़्त से बात की, ‘आएँ, हमारे बादशाह बन जाएँ!’ 11लेकिन अंजीर के दरख़्त ने जवाब दिया, ‘क्या मैं अपना मीठा और अच्छा फल लाने से बाज़ आऊँ ताकि दरख़्तों पर हुकूमत करूँ? हरगिज़ नहीं!’ 12फिर दरख़्तों ने अंगूर की बेल से बात की, ‘आएँ, हमारे बादशाह बन जाएँ!’ 13लेकिन अंगूर की बेल ने जवाब दिया, ‘क्या मैं अपना रस पैदा करने से बाज़ आऊँ जिससे अल्लाह और इनसान ख़ुश हो जाते हैं ताकि दरख़्तों पर हुकूमत करूँ? हरगिज़ नहीं!’ 14आख़िरकार दरख़्त काँटेदार झाड़ी के पास आए और कहा, ‘आएँ और हमारे बादशाह बन जाएँ!’ 15काँटेदार झाड़ी ने जवाब दिया, ‘अगर तुम वाक़ई मुझे मसह करके अपना बादशाह बनाना चाहते हो तो आओ और मेरे साये में पनाह लो। अगर तुम ऐसा नहीं

करना चाहते तो झाड़ी से आग निकलकर लुबनान के देवदार के दरख़्तों को भस्म कर दे'।"

16यूताम ने बात जारी रखकर कहा, "अब मुझे बताएँ, क्या आपने वफ़ादारी और सच्चाई का इज़हार किया जब आपने अबीमलिक को अपना बादशाह बना लिया? क्या आपने जिदाऊन और उसके ख़ानदान के साथ अच्छा सुलूक किया? क्या आपने उस पर शुक्रगुज़ारी का वह इज़हार किया जिसके लायक़ वह था? 17मेरे बाप ने आपकी ख़ातिर जंग की। आपको मिदियानियों से बचाने के लिए उसने अपनी जान ख़तरे में डाल दी। 18लेकिन आज आप जिदाऊन के घराने के ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए हैं। आपने उसके 70 बेटों को एक ही पत्थर पर ज़बह करके उस की लौंडी के बेटे अबीमलिक को सिकम का बादशाह बना लिया है, और यह सिर्फ़ इसलिए कि वह आपका रिश्तेदार है। 19अब सुनें! अगर आपने जिदाऊन और उसके ख़ानदान के साथ वफ़ादारी और सच्चाई का इज़हार किया है तो फिर अल्लाह करे कि अबीमलिक आपके लिए ख़ुशी का बाइस हो और आप उसके लिए। 20लेकिन अगर ऐसा नहीं था तो अल्लाह करे कि अबीमलिक से आग निकलकर आप सबको भस्म कर दे जो सिकम और बैत-मिल्लो में रहते हैं! और आग आपसे निकलकर अबीमलिक को भी भस्म कर दे!" 21यह कहकर यूताम ने भागकर बैर में पनाह ली, क्योंकि वह अपने भाई अबीमलिक से डरता था।

सिकम के बाशिंदे अबीमलिक के ख़िलाफ़ हो जाते हैं

22अबीमलिक की इसराईल पर हुकूमत तीन साल तक रही। 23लेकिन फिर अल्लाह ने एक बुरी रूह भेज दी जिसने अबीमलिक और सिकम के बाशिंदों में नाइत्तफ़ाक़ी पैदा कर दी। नतीजे में सिकम के लोगों ने बग़ावत की। 24यों अल्लाह ने उसे इसकी सज़ा दी कि उसने अपने भाइयों यानी जिदाऊन के 70 बेटों को क़त्ल किया था। सिकम के बाशिंदों को भी सज़ा मिली, क्योंकि उन्होंने इसमें अबीमलिक की मदद की थी।

25उस वक़्त सिकम के लोग इर्दगिर्द की चोटियों पर चढ़कर अबीमलिक की ताक में बैठ गए। जो भी वहाँ से गुज़रा उसे उन्होंने लूट लिया। इस बात की ख़बर अबीमलिक तक पहुँच गई।

26उन दिनों में एक आदमी अपने भाइयों के साथ सिकम आया जिसका नाम जाल बिन अबद था। सिकम के लोगों से उसका अच्छा-ख़ासा ताल्लुक़ बन गया, और वह उस पर एतबार करने लगे। 27अंगूर की फ़सल पक गई थी। लोग शहर से निकले और अपने बाग़ों में अंगूर तोड़कर उनसे रस निकालने लगे। फिर उन्होंने अपने देवता के मंदिर में जशन मनाया। जब वह ख़ूब खा-पी रहे थे तो अबीमलिक पर लानत करने लगे। 28जाल बिन अबद ने कहा, "सिकम का अबीमलिक के साथ क्या वास्ता कि हम उसके ताबे रहें? वह तो सिर्फ़ यरुब्बाल का बेटा है, जिसका नुमाइंदा ज़बूल है। उस की ख़िदमत मत करना बल्कि सिकम के बानी हमोर के लोगों की! हम अबीमलिक की ख़िदमत क्यों करें? 29काश शहर का इंतज़ाम मेरे हाथ में होता! फिर मैं अबीमलिक को जल्द ही निकाल देता। मैं उसे चैलेंज देता कि आओ, अपने फ़ौजियों को जमा करके हमसे लड़ो!"

अबीमलिक सिकम से लड़ता है

30जाल बिन अबद की बात सुनकर सिकम का सरदार ज़बूल बड़े ग़ुस्से में आ गया। 31अपने क़ासिदों की मारिफ़त उसने अबीमलिक को चुपके से इत्तला दी, "जाल बिन अबद अपने भाइयों के साथ सिकम आ गया है जहाँ वह पूरे शहर को आपके ख़िलाफ़ खड़े हो जाने के लिए उकसा रहा है। 32अब ऐसा करें कि रात के वक़्त अपने फ़ौजियों समेत इधर आएँ और खेतों में ताक में रहें। 33सुबह-सवेरे जब सूरज तुलू होगा तो शहर पर हमला करें। जब जाल अपने आदमियों के साथ आपके ख़िलाफ़ लड़ने आएगा

तो उसके साथ वह कुछ करें जो आप मुनासिब
समझते हैं।” 34यह सुनकर अबीमलिक रात के
वक़्त अपने फ़ौजियों समेत रवाना हुआ। उसने
उन्हें चार गुरोहों में तक़सीम किया जो सिकम को
घेरकर ताक में बैठ गए।

35सुबह के वक़्त जब जाल घर से निकलकर
शहर के दरवाज़े में खड़ा हुआ तो अबीमलिक और
उसके फ़ौजी अपनी छुपने की जगहों से निकल
आए। 36उन्हें देखकर जाल ने ज़बूल से कहा,
“देखो, लोग पहाड़ों की चोटियों से उतर रहे हैं!”
ज़बूल ने जवाब दिया, “नहीं, नहीं, जो आपको
आदमी लग रहे हैं वह सिर्फ़ पहाड़ों के साये हैं।”
37लेकिन जाल को तसल्ली न हुई। वह दुबारा
बोल उठा, “देखो, लोग दुनिया की नाफ़[a] से उतर
रहे हैं। और एक और गुरोह रम्मालों के बलूत से
होकर आ रहा है।” 38फिर ज़बूल ने उससे कहा,
“अब तेरी बड़ी बड़ी बातें कहाँ रहीं? क्या तूने नहीं
कहा था, ‘अबीमलिक कौन है कि हम उसके ताबे
रहें?’ अब यह लोग आ गए हैं जिनका मज़ाक़ तूने
उड़ाया। जा, शहर से निकलकर उनसे लड़!”

39तब जाल सिकम के मर्दों के साथ शहर
से निकला और अबीमलिक से लड़ने लगा।
40लेकिन वह हार गया, और अबीमलिक ने
शहर के दरवाज़े तक उसका ताक़्क़ुब किया।
भागते भागते सिकम के बहुत-से अफ़राद रास्ते
में गिरकर हलाक हो गए। 41फिर अबीमलिक
अरूमा चला गया जबकि ज़बूल ने पीछे रहकर
जाल और उसके भाइयों को शहर से निकाल
दिया।

42अगले दिन सिकम के लोग शहर से
निकलकर मैदान में आना चाहते थे। जब
अबीमलिक को यह ख़बर मिली 43-44तो उसने
अपनी फ़ौज को तीन गुरोहों में तक़सीम किया।
यह गुरोह दुबारा सिकम को घेरकर घात में बैठ
गए। जब लोग शहर से निकले तो अबीमलिक
अपने गुरोह के साथ छुपने की जगह से निकल
आया और शहर के दरवाज़े में खड़ा हो गया। बाक़ी
दो गुरोह मैदान में मौजूद अफ़राद पर टूट पड़े और
सबको हलाक कर दिया। 45फिर अबीमलिक
ने शहर पर हमला किया। लोग पूरा दिन लड़ते
रहे, लेकिन आख़िरकार अबीमलिक ने शहर पर
क़ब्ज़ा करके तमाम बाशिंदों को मौत के घाट
उतार दिया। उसने शहर को तबाह किया और
खंडरात पर नमक बिखेरकर उस की हतमी तबाही
ज़ाहिर कर दी।

46जब सिकम के बुर्ज के रहनेवालों को यह
इत्तला मिली तो वह एल-बरीत देवता के मंदिर के
तहख़ाने में छुप गए। 47जब अबीमलिक को पता
चला 48तो वह अपने फ़ौजियों समेत ज़लमोन
पहाड़ पर चढ़ गया। वहाँ उसने कुल्हाड़ी से शाख़
काटकर अपने कंधों पर रख ली और अपने
फ़ौजियों को हुक्म दिया, “जल्दी करो! सब
ऐसा ही करो।” 49फ़ौजियों ने भी शाख़ें काटीं
और फिर अबीमलिक के पीछे लगकर मंदिर के
पास वापस आए। वहाँ उन्होंने तमाम लकड़ी
तहख़ाने की छत पर जमा करके उसे जला दिया।
यों सिकम के बुर्ज के तक़रीबन 1,000 मर्दो-
ख़वातीन सब भस्म हो गए।

अबीमलिक की मौत

50वहाँ से अबीमलिक तैबिज़ के ख़िलाफ़ बढ़
गया। उसने शहर का मुहासरा करके उस पर
क़ब्ज़ा कर लिया। 51लेकिन शहर के बीच में
एक मज़बूत बुर्ज था। तमाम मर्दो-ख़वातीन उसमें
फ़रार हुए और बुर्ज के दरवाज़ों पर कुंडी लगाकर
छत पर चढ़ गए।

52अबीमलिक लड़ते लड़ते बुर्ज के दर-
वाज़े के क़रीब पहुँच गया। वह उसे जलाने की
कोशिश करने लगा 53तो एक औरत ने चक्की
का ऊपर का पाट उसके सर पर फेंक दिया, और
उस की खोपड़ी फट गई। 54जल्दी से अबीमलिक
ने अपने सिलाहबरदार को बुलाया। उसने कहा,
“अपनी तलवार खींचकर मुझे मार दो! वरना

[a]मतलब ग़ालिबन कोहे-गरिज़ीम है।

लोग कहेंगे कि एक औरत ने मुझे मार डाला।” चुनाँचे नौजवान ने अपनी तलवार उसके बदन में से गुज़ार दी और वह मर गया। 55जब फ़ौजियों ने देखा कि अबीमलिक मर गया है तो वह अपने अपने घर चले गए।

56यों अल्लाह ने अबीमलिक को उस बदी का बदला दिया जो उसने अपने 70 भाइयों को क़त्ल करके अपने बाप के ख़िलाफ़ की थी। 57और अल्लाह ने सिकम के बाशिंदों को भी उनकी शरीर हरकतों की मुनासिब सज़ा दी। यूताम बिन यरुब्बाल की लानत पूरी हुई।

तोला और याईर

10 अबीमलिक की मौत के बाद तोला बिन फ़ुव्वा बिन दोदो इसराईल को बचाने के लिए उठा। वह इशकार के क़बीले से था और इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े के शहर समीर में रिहाइशपज़ीर था। 2तोला 23 साल इसराईल का क़ाज़ी रहा। फिर वह फ़ौत हुआ और समीर में दफ़नाया गया।

3उसके बाद जिलियाद का रहनेवाला याईर क़ाज़ी बन गया। उसने 22 साल इसराईल की राहनुमाई की। 4याईर के 30 बेटे थे। हर बेटे का एक एक गधा और जिलियाद में एक एक आबादी थी। आज तक इनका नाम ‘हव्वोत-याईर’ यानी याईर की बस्तियाँ है। 5जब याईर इंतक़ाल कर गया तो उसे क़ामोन में दफ़नाया गया।

इसराईल दुबारा रब से दूर हो जाता है

6याईर की मौत के बाद इसराईली दुबारा ऐसी हरकतें करने लगे जो रब को बुरी लगीं। वह कई देवताओं के पीछे लग गए जिनमें बाल देवता, अस्तारात देवी और शाम, सैदा, मोआब, अम्मोनियों और फ़िलिस्तियों के देवता शामिल थे। यों वह रब की परस्तिश और ख़िदमत करने से बाज़ आए। 7तब उसका ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ, और उसने उन्हें फ़िलिस्तियों और अम्मोनियों के हवाले कर दिया। 8उसी साल के दौरान इन क़ौमों ने जिलियाद में इसराईलियों के उस इलाक़े पर क़ब्ज़ा किया जिसमें पुराने ज़माने में अमोरी आबाद थे और जो दरियाए-यरदन के मशरिक़ में था। फ़िलिस्ती और अम्मोनी 18 साल तक इसराईलियों को कुचलते और दबाते रहे। 9न सिर्फ़ यह बल्कि अम्मोनियों ने दरियाए-यरदन को पार करके यहूदाह, बिनयमीन और इफ़राईम के क़बीलों पर भी हमला किया।

जब इसराईली बड़ी मुसीबत में थे 10तो आख़िरकार उन्होंने मदद के लिए रब को पुकारा और इक़रार किया, “हमने तेरा गुनाह किया है। अपने ख़ुदा को तर्क करके हमने बाल के बुतों की पूजा की है।” 11रब ने जवाब में कहा, “जब मिसरी, अमोरी, अम्मोनी, फ़िलिस्ती, 12सैदानी, अमालीक़ी और माओनी तुम पर ज़ुल्म करते थे और तुम मदद के लिए मुझे पुकारने लगे तो क्या मैंने तुम्हें न बचाया? 13इसके बावुजूद तुम बार बार मुझे तर्क करके दीगर माबूदों की पूजा करते रहे हो। इसलिए अब से मैं तुम्हारी मदद नहीं करूँगा। 14जाओ, उन देवताओं के सामने चीख़ते-चिल्लाते रहो जिन्हें तुमने चुन लिया है! वही तुम्हें मुसीबत से निकालें।”

15लेकिन इसराईलियों ने रब से फ़रियाद की, “हमसे ग़लती हुई है। जो कुछ भी तू मुनासिब समझता है वह हमारे साथ कर। लेकिन तू ही हमें आज बचा।” 16वह अजनबी माबूदों को अपने बीच में से निकालकर रब की दुबारा ख़िदमत करने लगे। तब वह इसराईल का दुख बरदाश्त न कर सका।

इफ़ताह क़ाज़ी बन जाता है

17उन दिनों में अम्मोनी अपने फ़ौजियों को जमा करके जिलियाद में ख़ैमाज़न हुए। जवाब में इसराईली भी जमा हुए और मिसफ़ाह में अपने ख़ैमे लगाए। 18जिलियाद के राहनुमाओं ने एलान किया, “हमें ऐसे आदमी की ज़रूरत है जो हमारे आगे चलकर अम्मोनियों पर हमला करे। जो कोई

ऐसा करे वह जिलियाद के तमाम बाशिंदों का
सरदार बनेगा।”

11 उस वक़्त जिलियाद में एक ज़बरदस्त
सूरमा बनाम इफ़ताह था। बाप का
नाम जिलियाद था जबकि माँ कसबी थी।
2लेकिन बाप की बीवी के बेटे भी थे। जब बालिग़
हुए तो उन्होंने इफ़ताह से कहा, “हम मीरास तेरे
साथ नहीं बाँटेंगे, क्योंकि तू हमारा सगा भाई नहीं
है।” उन्होंने उसे भगा दिया, 3और वह वहाँ से
हिजरत करके मुल्के-तोब में जा बसा। वहाँ कुछ
आवारा लोग उसके पीछे हो लिए जो उसके साथ
इधर-उधर घुमते-फिरते रहे।

4जब कुछ देर के बाद अम्मोनी फ़ौज इसराईल
से लड़ने आई 5तो जिलियाद के बुज़ुर्ग इफ़ताह
को वापस लाने के लिए मुल्के-तोब में आए।
6उन्होंने गुज़ारिश की, “आएँ, अम्मोनियों से
लड़ने में हमारी राहनुमाई करें।” 7लेकिन इफ़ताह
ने एतराज़ किया, “आप इस वक़्त मेरे पास क्यों
आए हैं जब मुसीबत में हैं? आप ही ने मुझसे
नफ़रत करके मुझे बाप के घर से निकाल दिया
था।”

8बुज़ुर्गों ने जवाब दिया, “हम इसलिए आपके
पास वापस आए हैं कि आप अम्मोनियों के साथ
जंग में हमारी मदद करें। अगर आप ऐसा करें
तो हम आपको पूरे जिलियाद का हुक्मरान बना
लेंगे।” 9इफ़ताह ने पूछा, “अगर मैं आपके साथ
अम्मोनियों के ख़िलाफ़ लड़ूँ और रब मुझे उन पर
फ़तह दे तो क्या आप वाक़ई मुझे अपना हुक्मरान
बना लेंगे?” 10उन्होंने जवाब दिया, “रब हमारा
गवाह है! वही हमें सज़ा दे अगर हम अपना वादा
पूरा न करें।”

11यह सुनकर इफ़ताह जिलियाद के बुज़ुर्गों
के साथ मिसफ़ाह गया। वहाँ लोगों ने उसे
अपना सरदार और फ़ौज का कमाँडर बना लिया।
मिसफ़ाह में उसने रब के हुज़ूर वह तमाम बातें
दोहराईं जिनका फ़ैसला उसने बुज़ुर्गों के साथ
किया था।

जंग से गुरेज़ करने की कोशिश

12फिर इफ़ताह ने अम्मोनी बादशाह के पास
अपने क़ासिदों को भेजकर पूछा, “हमारा आपसे
क्या वास्ता कि आप हमसे लड़ने आए हैं?”
13बादशाह ने जवाब दिया, “जब इसराईली
मिसर से निकले तो उन्होंने अरनोन, यब्बोक़ और
यरदन के दरियाओं के दरमियान का इलाक़ा
मुझसे छीन लिया। अब उसे झगड़ा किए बग़ैर
मुझे वापस कर दो।”

14फिर इफ़ताह ने अपने क़ासिदों को दुबारा
अम्मोनी बादशाह के पास भेजकर 15कहा,
“इसराईल ने न तो मोआबियों से और न
अम्मोनियों से ज़मीन छीनी। 16हक़ीक़त यह है
कि जब हमारी क़ौम मिसर से निकली तो वह
रेगिस्तान में से गुज़रकर बहरे-क़ुलज़ुम और वहाँ
से होकर क़ादिस पहुँच गई। 17क़ादिस से उन्होंने
अदोम के बादशाह के पास क़ासिद भेजकर
गुज़ारिश की, ‘हमें अपने मुल्क में से गुज़रने दें।’
लेकिन उसने इनकार किया। फिर इसराईलियों
ने मोआब के बादशाह से दरख़ास्त की, लेकिन
उसने भी अपने मुल्क में से गुज़रने की इजाज़त न
दी। इस पर हमारी क़ौम कुछ देर के लिए क़ादिस
में रही। 18आख़िरकार वह रेगिस्तान में वापस
जाकर अदोम और मोआब के जुनूब में चलते
चलते मोआब के मशरिक़ी किनारे पर पहुँची,
वहाँ जहाँ दरियाए-अरनोन उस की सरहद है।
लेकिन वह मोआब के इलाक़े में दाख़िल न हुए
बल्कि दरिया के मशरिक़ में ख़ैमाज़न हुए। 19वहाँ
से इसराईलियों ने हसबोन के रहनेवाले अमोरी
बादशाह सीहोन को पैग़ाम भिजवाया, ‘हमें अपने
मुल्क में से गुज़रने दें ताकि हम अपने मुल्क
में दाख़िल हो सकें।’ 20लेकिन सीहोन को शक
हुआ। उसे यक़ीन नहीं था कि वह मुल्क में से
गुज़रकर आगे बढ़ेंगे। उसने न सिर्फ़ इनकार किया
बल्कि अपने फ़ौजियों को जमा करके यहज़ शहर
में ख़ैमाज़न हुआ और इसराईलियों के साथ लड़ने
लगा।

21लेकिन रब इसराईल के ख़ुदा ने सीहोन और उसके तमाम फ़ौजियों को इसराईल के हवाले कर दिया। उन्होंने उन्हें शिकस्त देकर अमोरियों के पूरे मुल्क पर क़ब्ज़ा कर लिया। 22यह तमाम इलाक़ा जुनूब में दरियाए-अरनोन से लेकर शिमाल में दरियाए-यब्बोक़ तक और मशरिक़ के रेगिस्तान से लेकर मग़रिब में दरियाए-यरदन तक हमारे क़ब्ज़े में आ गया। 23देखें, रब इसराईल के ख़ुदा ने अपनी क़ौम के आगे आगे अमोरियों को निकाल दिया है। तो फिर आपका इस मुल्क पर क़ब्ज़ा करने का क्या हक़ है? 24आप भी समझते हैं कि जिसे आपके देवता कमोस ने आपके आगे से निकाल दिया है उसके मुल्क पर क़ब्ज़ा करने का आपका हक़ है। इसी तरह जिसे रब हमारे ख़ुदा ने हमारे आगे आगे निकाल दिया है उसके मुल्क पर क़ब्ज़ा करने का हक़ हमारा है। 25क्या आप अपने आपको मोआबी बादशाह बलक़ बिन सफ़ोर से बेहतर समझते हैं? उसने तो इसराईल से लड़ने बल्कि झगड़ने तक की हिम्मत न की। 26अब इसराईली 300 साल से हसबोन और अरोईर के शहरों में उनके गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत आबाद हैं और इसी तरह दरियाए-अरनोन के किनारे पर के शहरों में। आपने इस दौरान इन जगहों पर क़ब्ज़ा क्यों न किया? 27चुनाँचे मैंने आपसे ग़लत सुलूक नहीं किया बल्कि आप ही मेरे साथ ग़लत सुलूक कर रहे हैं। क्योंकि मुझसे जंग छेड़ना ग़लत है। रब जो मुंसिफ़ है वही आज इसराईल और अम्मोन के झगड़े का फ़ैसला करे!”

28लेकिन अम्मोनी बादशाह ने इफ़ताह के पैग़ाम पर ध्यान न दिया।

इफ़ताह की फ़तह

29फिर रब का रूह इफ़ताह पर नाज़िल हुआ, और वह जिलियाद और मनस्सी में से गुज़र गया, फिर जिलियाद के मिसफ़ाह के पास वापस आया। वहाँ से वह अपनी फ़ौज लेकर अम्मोनियों से लड़ने निकला।

30पहले उसने रब के सामने क़सम खाई, “अगर तू मुझे अम्मोनियों पर फ़तह दे 31और मैं सहीह-सलामत लौटूँ तो जो कुछ भी पहले मेरे घर के दरवाज़े से निकलकर मुझसे मिले वह तेरे लिए मख़सूस किया जाएगा। मैं उसे भस्म होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर पेश करूँगा।”

32फिर इफ़ताह अम्मोनियों से लड़ने गया, और रब ने उसे उन पर फ़तह दी। 33इफ़ताह ने अरोईर में दुश्मन को शिकस्त दी और इसी तरह मिन्नीत और अबील-करामीम तक मज़ीद बीस शहरों पर क़ब्ज़ा कर लिया। यों इसराईल ने अम्मोन को ज़ेर कर दिया।

इफ़ताह की वापसी

34इसके बाद इफ़ताह मिसफ़ाह वापस चला गया। वह अभी घर के क़रीब था कि उस की इकलौती बेटी दफ़ बजाती और नाचती हुई घर से निकल आई। इफ़ताह का कोई और बेटा या बेटी नहीं थी। 35अपनी बेटी को देखकर वह रंज के मारे अपने कपड़े फाड़कर चीख़ उठा, “हाय मेरी बेटी! तूने मुझे ख़ाक में दबाकर तबाह कर दिया है, क्योंकि मैंने रब के सामने ऐसी क़सम खाई है जो बदली नहीं जा सकती।”

36बेटी ने कहा, “अब्बू, आपने क़सम खाकर रब से वादा किया है, इसलिए लाज़िम है कि मेरे साथ वह कुछ करें जिसकी क़सम आपने खाई है। आख़िर उसी ने आपको दुश्मन से बदला लेने की कामयाबी बख़्श दी है। 37लेकिन मेरी एक गुज़ारिश है। मुझे दो माह की मोहलत दें ताकि मैं अपनी सहेलियों के साथ पहाड़ों में जाकर अपनी ग़ैरशादीशुदा हालत पर मातम करूँ।”

38इफ़ताह ने इजाज़त दी। फिर बेटी दो माह के लिए अपनी सहेलियों के साथ पहाड़ों में चली गई और अपनी ग़ैरशादीशुदा हालत पर मातम किया। 39फिर वह अपने बाप के पास वापस आई, और उसने अपनी क़सम का वादा पूरा किया। बेटी ग़ैरशादीशुदा थी।

उस वक़्त से इसराईल में दस्तूर रायज है 40कि इसराईल की जवान औरतें सालाना चार दिन के लिए अपने घरों से निकलकर इफ़ताह की बेटी की याद में जशन मनाती हैं।

इफ़राईम का क़बीला इफ़ताह पर हमला करता है

12 अम्मोनियों पर फ़तह के बाद इफ़राईम के क़बीले के आदमी जमा हुए और दरियाए-यरदन को पार करके इफ़ताह के पास आए जो सफ़ोन में था। उन्होंने शिकायत की, "आप क्यों हमें बुलाए बग़ैर अम्मोनियों से लड़ने गए? अब हम आपको आपके घर समेत जला देंगे!"

2इफ़ताह ने एतराज़ किया, "जब मेरी और मेरी क़ौम का अम्मोनियों के साथ सख़्त झगड़ा छिड़ गया तो मैंने आपको बुलाया, लेकिन आपने मुझे उनके हाथ से न बचाया। 3जब मैंने देखा कि आप मदद नहीं करेंगे तो अपनी जान ख़तरे में डालकर आपके बग़ैर ही अम्मोनियों से लड़ने गया। और रब ने मुझे उन पर फ़तह बख़्शी। अब मुझे बताएँ कि आप क्यों मेरे पास आकर मुझ पर हमला करना चाहते हैं?"

4इफ़राईमियों ने जवाब दिया, "तुम जो जिलियाद में रहते हो बस इफ़राईम और मनस्सी के क़बीलों से निकले हुए भगोड़े हो।" तब इफ़ताह ने जिलियाद के मर्दों को जमा किया और इफ़राईमियों से लड़कर उन्हें शिकस्त दी।

5फिर जिलियादियों ने दरियाए-यरदन के कम-गहरे मक़ामों पर क़ब्ज़ा कर लिया। जब कोई गुज़रना चाहता तो वह पूछते, "क्या आप इफ़राईमी हैं?" अगर वह इनकार करता 6तो जिलियाद के मर्द कहते, "तो फिर लफ़्ज़ 'शिब्बोलेत'[a] बोलें।" अगर वह इफ़राईमी होता तो इसके बजाए "सिब्बोलेत" कहता। फिर जिलियादी उसे पकड़कर वहीं मार डालते। उस वक़्त कुल 42,000 इफ़राईमी हलाक हुए।

7इफ़ताह ने छः साल इसराईल की राहनुमाई की। जब फ़ौत हुआ तो उसे जिलियाद के किसी शहर में दफ़नाया गया।

इबज़ान, ऐलोन और अबदोन

8इफ़ताह के बाद इबज़ान इसराईल का क़ाज़ी बना। वह बैत-लहम में आबाद था, 9और उसके 30 बेटे और 30 बेटियाँ थीं। उस की तमाम बेटियाँ शादीशुदा थीं और इस वजह से बाप के घर में नहीं रहती थीं। लेकिन उसे 30 बेटों के लिए बीवियाँ मिल गई थीं, और सब उसके घर में रहते थे। इबज़ान ने सात साल के दौरान इसराईल की राहनुमाई की। 10फिर वह इंतक़ाल कर गया और बैत-लहम में दफ़नाया गया।

11उसके बाद ऐलोन क़ाज़ी बना। वह ज़बूलून के क़बीले से था और 10 साल के दौरान इसराईल की राहनुमाई करता रहा। 12जब वह कूच कर गया तो उसे ज़बूलून के ऐयालोन में दफ़न किया गया।

13फिर अबदोन बिन हिल्लेल क़ाज़ी बना। वह शहर फ़िरआतोन का था। 14उसके 40 बेटे और 30 पोते थे जो 70 गधों पर सफ़र किया करते थे। अबदोन ने आठ साल के दौरान इसराईल की राहनुमाई की। 15फिर वह भी जान-बहक़ हो गया, और उसे अमालीक़ियों के पहाड़ी इलाक़े के शहर फ़िरआतोन में दफ़नाया गया, जो उस वक़्त इफ़राईम का हिस्सा था।

समसून की पैदाइश की पेशगोई

13 फिर इसराईली दुबारा ऐसी हरकतें करने लगे जो रब को बुरी लगीं। इसलिए उसने उन्हें फ़िलिस्तियों के हवाले कर दिया जो उन्हें 40 साल दबाते रहे। 2उस वक़्त एक आदमी सुरआ शहर में रहता था जिसका

[a]यानी नदी।

नाम मनोहा था। दान के क़बीले का यह आदमी
बेऔलाद था, क्योंकि उस की बीवी बाँझ थी।
3एक दिन रब का फ़रिश्ता मनोहा की बीवी
पर ज़ाहिर हुआ और कहा, “गो तुझसे बच्चे पैदा
नहीं हो सकते, अब तू हामिला होगी, और तेरे बेटा
पैदा होगा। 4मै या कोई और नशा-आवर चीज़ मत
पीना, न कोई नापाक चीज़ खाना। 5क्योंकि जो
बेटा पैदा होगा वह पैदाइश से ही अल्लाह के लिए
मख़सूस होगा। लाज़िम है कि उसके बाल कभी न
काटे जाएँ। यही बच्चा इसराईल को फ़िलिस्तियों
से बचाने लगेगा।”
6बीवी अपने शौहर मनोहा के पास गई और उसे
सब कुछ बताया, “अल्लाह का एक बंदा मेरे पास
आया। वह अल्लाह का फ़रिश्ता लग रहा था, यहाँ
तक कि मैं सख़्त घबरा गई। मैंने उससे न पूछा कि
वह कहाँ से है, और ख़ुद उसने मुझे अपना नाम न
बताया। 7लेकिन उसने मुझे बताया, ‘तू हामिला
होगी, और तेरे बेटा पैदा होगा। अब मै या कोई
और नशा-आवर चीज़ मत पीना, न कोई नापाक
चीज़ खाना। क्योंकि बेटा पैदाइश से ही मौत तक
अल्लाह के लिए मख़सूस होगा’।”
8यह सुनकर मनोहा ने रब से दुआ की, “ऐ रब,
बराहे-करम मर्दे-ख़ुदा को दुबारा हमारे पास भेज
ताकि वह हमें सिखाए कि हम उस बेटे के साथ
क्या करें जो पैदा होनेवाला है।” 9अल्लाह ने उस
की सुनी और अपने फ़रिश्ते को दुबारा उस की
बीवी के पास भेज दिया। उस वक़्त वह शौहर के
बग़ैर खेत में थी। 10फ़रिश्ते को देखकर वह जल्दी
से मनोहा के पास आई और उसे इत्तला दी, “जो
आदमी पिछले दिनों में मेरे पास आया वह दुबारा
मुझ पर ज़ाहिर हुआ है!”
11मनोहा उठकर अपनी बीवी के पीछे पीछे
फ़रिश्ते के पास आया। उसने पूछा, “क्या आप
वही आदमी हैं जिसने पिछले दिनों में मेरी बीवी से
बात की थी?” फ़रिश्ते ने जवाब दिया, “जी, मैं
ही था।” 12फिर मनोहा ने सवाल किया, “जब
आपकी पेशगोई पूरी हो जाएगी तो हमें बेटे के
तर्ज़े-ज़िंदगी और सुलूक के सिलसिले में किन
किन बातों का ख़याल करना है?”
13रब के फ़रिश्ते ने जवाब दिया, “लाज़िम है
कि तेरी बीवी उन तमाम चीज़ों से परहेज़ करे
जिनका ज़िक्र मैंने किया। 14वह अंगूर की कोई
भी पैदावार न खाए। न वह मै, न कोई और
नशा-आवर चीज़ पिए। नापाक चीज़ें खाना भी
मना है। वह मेरी हर हिदायत पर अमल करे।”
15मनोहा ने रब के फ़रिश्ते से गुज़ारिश की,
“मेहरबानी करके थोड़ी देर हमारे पास ठहरें ताकि
हम बकरी का बच्चा ज़बह करके आपके लिए
खाना तैयार कर सकें।” 16अब तक मनोहा ने यह
बात नहीं पहचानी थी कि मेहमान असल में रब
का फ़रिश्ता है। फ़रिश्ते ने जवाब दिया, “ख़ाह तू
मुझे रोके भी मैं कुछ नहीं खाऊँगा। लेकिन अगर
तू कुछ करना चाहे तो बकरी का बच्चा रब को
भस्म होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर पेश कर।”
17मनोहा ने उससे पूछा, “आपका क्या नाम
है? क्योंकि जब आपकी यह बातें पूरी हो जाएँगी
तो हम आपकी इज़्ज़त करना चाहेंगे।” 18फ़रिश्ते
ने सवाल किया, “तू मेरा नाम क्यों जानना चाहता
है? वह तो तेरी समझ से बाहर है।” 19फिर
मनोहा ने एक बड़े पत्थर पर रब को बकरी का
बच्चा और ग़ल्ला की नज़र पेश की। तब रब ने
मनोहा और उस की बीवी के देखते देखते एक
हैरतअंगेज़ काम किया। 20जब आग के शोले
आसमान की तरफ़ बुलंद हुए तो रब का फ़रिश्ता
शोले में से ऊपर चढ़कर ओझल हो गया। मनोहा
और उस की बीवी मुँह के बल गिर गए।
21जब रब का फ़रिश्ता दुबारा मनोहा और
उस की बीवी पर ज़ाहिर न हुआ तो मनोहा को
समझ आई कि रब का फ़रिश्ता ही था। 22वह
पुकार उठा, “हाय, हम मर जाएंगे, क्योंकि हमने
अल्लाह को देखा है!” 23लेकिन उस की बीवी ने
एतराज़ किया, “अगर रब हमें मार डालना चाहता
तो वह हमारी क़ुरबानी क़बूल न करता। फिर न
वह हम पर यह सब कुछ ज़ाहिर करता, न हमें
ऐसी बातें बताता।”

24कुछ देर के बाद मनोहा के हाँ बेटा पैदा हुआ। बीवी ने उसका नाम समसून रखा। बच्चा बड़ा होता गया, और रब ने उसे बरकत दी। 25अल्लाह का रूह पहली बार महने-दान में जो सुरआ और इस्ताल के दरमियान है उस पर नाज़िल हुआ।

समसून की फ़िलिस्ती औरत से शादी

14 एक दिन समसून तिमनत में फ़िलिस्तियों के पास ठहरा हुआ था। वहाँ उसने एक फ़िलिस्ती औरत देखी जो उसे पसंद आई। 2अपने घर लौटकर उसने अपने वालिदैन को बताया, "मुझे तिमनत की एक फ़िलिस्ती औरत पसंद आई है। उसके साथ मेरा रिश्ता बाँधने की कोशिश करें।" 3उसके वालिदैन ने जवाब दिया, "क्या आपके रिश्तेदारों और क़ौम में कोई क़ाबिले-क़बूल औरत नहीं है? आपको नामख़तून और बेदीन फ़िलिस्तियों के पास जाकर उनमें से कोई औरत ढूँडने की क्या ज़रूरत थी?" लेकिन समसून बज़िद रहा, "उसी के साथ मेरी शादी कराएँ! वही मुझे ठीक लगती है।"

4उसके माँ-बाप को मालूम नहीं था कि यह सब कुछ रब की तरफ़ से है जो फ़िलिस्तियों से लड़ने का मौक़ा तलाश कर रहा था। क्योंकि उस वक़्त फ़िलिस्ती इसराईल पर हुकूमत कर रहे थे।

5चुनाँचे समसून अपने माँ-बाप समेत तिमनत के लिए रवाना हुआ। जब वह तिमनत के अंगूर के बाग़ों के क़रीब पहुँचे तो समसून अपने माँ-बाप से अलग हो गया। अचानक एक जवान शेरबबर दहाड़ता हुआ उस पर टूट पड़ा। 6तब अल्लाह का रूह इतने ज़ोर से समसून पर नाज़िल हुआ कि उसने अपने हाथों से शेर को यों फाड़ डाला, जिस तरह आम आदमी बकरी के छोटे बच्चे को फाड़ डालता है। लेकिन उसने अपने वालिदैन को इसके बारे में कुछ न बताया। 7आगे निकलकर वह तिमनत पहुँच गया। मज़कूरा फ़िलिस्ती औरत से बात हुई और वह उसे ठीक लगी।

8कुछ देर के बाद वह शादी करने के लिए दुबारा तिमनत गए। शहर पहुँचने से पहले समसून रास्ते से हटकर शेरबबर की लाश को देखने गया। वहाँ क्या देखता है कि शहद की मक्खियों ने शेर के पिंजर में अपना छत्ता बना लिया है। 9समसून ने उसमें हाथ डालकर शहद को निकाल लिया और उसे खाते हुए चला। जब वह अपने माँ-बाप के पास पहुँचा तो उसने उन्हें भी कुछ दिया, मगर यह न बताया कि कहाँ से मिल गया है।

10तिमनत पहुँचकर समसून का बाप दुलहन के ख़ानदान से मिला जबकि समसून ने दूल्हे की हैसियत से ऐसी ज़ियाफ़त की जिस तरह उस ज़माने में दस्तूर था।

फ़िलिस्ती समसून को धोका देते हैं

11जब दुलहन के घरवालों को पता चला कि समसून तिमनत पहुँच गया है तो उन्होंने उसके पास 30 जवान आदमी भेज दिए कि उसके साथ ख़ुशी मनाएँ। 12समसून ने उनसे कहा, "मैं आपसे पहेली पूछता हूँ। अगर आप ज़ियाफ़त के सात दिनों के दौरान इसका हल बता सकें तो मैं आपको कतान के 30 क़ीमती कुरते और 30 शानदार सूट दे दूँगा। 13लेकिन अगर आप मुझे इसका सहीह मतलब न बता सकें तो आपको मुझे 30 क़ीमती कुरते और 30 शानदार सूट देने पड़ेंगे।" उन्होंने जवाब दिया, "अपनी पहेली सुनाएँ।"

14समसून ने कहा, "खानेवाले में से खाना निकला और ज़ोरावर में से मिठास।"

तीन दिन गुज़र गए। जवान पहेली का मतलब न बता सके। 15चौथे दिन उन्होंने दुलहन के पास जाकर उसे धमकी दी, "अपने शौहर को हमें पहेली का मतलब बताने पर उकसाओ, वरना हम तुम्हें तुम्हारे ख़ानदान समेत जला देंगे। क्या तुम लोगों ने हमें सिर्फ़ इसलिए दावत दी कि हमें लूट लो?"

16दुलहन समसून के पास गई और आँसू बहा बहाकर कहने लगी, "तू मुझे प्यार नहीं करता! हक़ीक़त में तू मुझसे नफ़रत करता है। तूने मेरी क़ौम के लोगों से पहेली पूछी है लेकिन मुझे

इसका मतलब नहीं बताया।” समसून ने जवाब दिया, “मैंने अपने माँ-बाप को भी इसका मतलब नहीं बताया तो तुझे क्यों बताऊँ?” 17ज़ियाफ़त के पूरे हफ़्ते के दौरान दुलहन उसके सामने रोती रही।

सातवें दिन समसून दुलहन की इल्तिजाओं से इतना तंग आ गया कि उसने उसे पहेली का हल बता दिया। तब दुलहन ने फुरती से सब कुछ फ़िलिस्तियों को सुना दिया। 18सूरज के ग़ुरूब होने से पहले पहले शहर के मर्दों ने समसून को पहेली का मतलब बताया, “क्या कोई चीज़ शहद से ज़्यादा मीठी और शेरबबर से ज़्यादा ज़ोरावर होती है?” समसून ने यह सुनकर कहा, “आपने मेरी जवान गाय लेकर हल चलाया है, वरना आप कभी भी पहेली का हल न निकाल सकते।” 19फिर रब का रूह उस पर नाज़िल हुआ। उसने अस्क़लून शहर में जाकर 30 फ़िलिस्तियों को मार डाला और उनके लिबास लेकर उन आदमियों को दे दिए जिन्होंने उसे पहेली का मतलब बता दिया था।

इसके बाद वह बड़े ग़ुस्से में अपने माँ-बाप के घर चला गया। 20लेकिन उस की बीवी की शादी समसून के शहबाले से कराई गई जो 30 जवान फ़िलिस्तियों में से एक था।

समसून फ़िलिस्तियों से बदला लेता है

15 कुछ दिन गुज़र गए। जब गंदुम की कटाई होने लगी तो समसून बकरी का बच्चा अपने साथ लेकर अपनी बीवी से मिलने गया। सुसर के घर पहुँचकर उसने बीवी के कमरे में जाने की दरख़ास्त की। लेकिन बाप ने इनकार किया। 2उसने कहा, “यह नहीं हो सकता! मैंने बेटी की शादी आपके शहबाले से करा दी है। असल में मुझे यक़ीन हो गया था कि अब आप उससे सख़्त नफ़रत करते हैं। लेकिन कोई बात नहीं। उस की छोटी बहन से शादी कर लें। वह ज़्यादा ख़ूबसूरत है।”

3समसून बोला, “इस दफ़ा मैं फ़िलिस्तियों से ख़ूब बदला लूँगा, और कोई नहीं कह सकेगा कि मैं हक़ पर नहीं हूँ।” 4वहाँ से निकलकर उसने 300 लोमड़ियों को पकड़ लिया। दो दो की दुमों को बाँधकर उसने हर जोड़े की दुमों के साथ मशाल लगा दी 5और फिर मशालों को जलाकर लोमड़ियों को फ़िलिस्तियों के अनाज के खेतों में भगा दिया। खेतों में पड़े पूले उस अनाज समेत भस्म हुए जो अब तक काटा नहीं गया था। अंगूर और ज़ैतून के बाग़ भी तबाह हो गए।

6फ़िलिस्तियों ने दरियाफ़्त किया कि यह किसका काम है। पता चला कि समसून ने यह सब कुछ किया है, और कि वजह यह है कि तिमनत में उसके सुसर ने उस की बीवी को उससे छीनकर उसके शहबाले को दे दिया है। यह सुनकर फ़िलिस्ती तिमनत गए और समसून के सुसर को उस की बेटी समेत पकड़कर जला दिया। 7तब समसून ने उनसे कहा, “यह तुमने क्या किया है! जब तक मैंने पूरा बदला न लिया मैं नहीं रुकूँगा।” 8वह इतने ज़ोर से उन पर टूट पड़ा कि बेशुमार फ़िलिस्ती हलाक हुए। फिर वह उस जगह से उतरकर ऐताम की चट्टान के ग़ार में रहने लगा।

लही में समसून फ़िलिस्तियों से लड़ता है

9जवाब में फ़िलिस्ती फ़ौज यहूदाह के क़बायली इलाक़े में दाख़िल हुई। वहाँ वह लही शहर के पास ख़ैमाज़न हुए। 10यहूदाह के बाशिंदों ने पूछा, “क्या वजह है कि आप हमसे लड़ने आए हैं?” फ़िलिस्तियों ने जवाब दिया, “हम समसून को पकड़ने आए हैं ताकि उसके साथ वह कुछ करें जो उसने हमारे साथ किया है।”

11तब यहूदाह के 3,000 मर्द ऐताम पहाड़ के ग़ार के पास आए और समसून से कहा, “यह आपने हमारे साथ क्या किया? आपको तो पता है कि फ़िलिस्ती हम पर हुकूमत करते हैं।” समसून ने जवाब दिया, “मैंने उनके साथ सिर्फ़ वह कुछ किया जो उन्होंने मेरे साथ किया था।”

12यहूदाह के मर्द बोले, “हम आपको बाँधकर फ़िलिस्तियों के हवाले करने आए हैं।” समसून ने कहा, “ठीक है, लेकिन क़सम खाएँ कि आप ख़ुद मुझे क़त्ल नहीं करेंगे।”

13उन्होंने जवाब दिया, “हम आपको हरगिज़ क़त्ल नहीं करेंगे बल्कि आपको सिर्फ़ बाँधकर उनके हवाले कर देंगे।” चुनाँचे वह उसे दो ताज़ा ताज़ा रस्सों से बाँधकर फ़िलिस्तियों के पास ले गए।

14समसून अभी लही से दूर था कि फ़िलिस्ती नारे लगाते हुए उस की तरफ़ दौड़े आए। तब रब का रूह बड़े ज़ोर से उस पर नाज़िल हुआ। उसके बाज़ुओं से बँधे हुए रस्से सन के जले हुए धागे जैसे कमज़ोर हो गए, और वह पिघलकर हाथों से गिर गए। 15कहीं से गधे का ताज़ा जबड़ा पकड़कर उसने उसके ज़रीए हज़ार अफ़राद को मार डाला।

16उस वक़्त उसने नारा लगाया, “गधे के जबड़े से मैंने उनके ढेर लगाए हैं! गधे के जबड़े से मैंने हज़ार मर्दों को मार डाला है!” 17इसके बाद उसने गधे का यह जबड़ा फेंक दिया। उस जगह का नाम रामत-लही यानी जबड़ा पहाड़ी पड़ गया।

18समसून को वहाँ बड़ी प्यास लगी। उसने रब को पुकारकर कहा, “तू ही ने अपने ख़ादिम के हाथ से इसराईल को यह बड़ी नजात दिलाई है। लेकिन अब मैं प्यास से मरकर नामख़तून दुश्मन के हाथ में आ जाऊँगा।” 19तब अल्लाह ने लही में ज़मीन को छेदा, और गढ़े से पानी फूट निकला। समसून उसका पानी पीकर दुबारा ताज़ादम हो गया। यों उस चश्मे का नाम ऐन-हक़्क़ोरे यानी पुकारनेवाले का चश्मा पड़ गया। आज भी वह लही में मौजूद है।

20फ़िलिस्तियों के दौर में समसून 20 साल तक इसराईल का क़ाज़ी रहा।

समसून ग़ज़्ज़ा का दरवाज़ा उठा ले जाता है

16 एक दिन समसून फ़िलिस्ती शहर ग़ज़्ज़ा में आया। वहाँ वह एक कसबी को देखकर उसके घर में दाख़िल हुआ। 2जब शहर के बाशिंदों को इत्तला मिली कि समसून शहर में है तो उन्होंने कसबी के घर को घेर लिया। साथ साथ वह रात के वक़्त शहर के दरवाज़े पर ताक में रहे। फ़ैसला यह हुआ, “रात के वक़्त हम कुछ नहीं करेंगे, जब पौ फटेगी तब उसे मार डालेंगे।”

3समसून अब तक कसबी के घर में सो रहा था। लेकिन आधी रात को वह उठकर शहर के दरवाज़े के पास गया और दोनों किवाड़ों को कुंडे और दरवाज़े के दोनों बाज़ुओं समेत उखाड़कर अपने कंधों पर रख लिया। यों चलते चलते वह सब कुछ उस पहाड़ी की चोटी पर ले गया जो हबरून के मुक़ाबिल है।

समसून और दलीला

4कुछ देर के बाद समसून एक औरत की मुहब्बत में गिरिफ़्तार हो गया जो वादीए-सूरिक़ में रहती थी। उसका नाम दलीला था। 5यह सुनकर फ़िलिस्ती सरदार उसके पास आए और कहने लगे, “समसून को उकसाएँ कि वह आपको अपनी बड़ी ताक़त का भेद बताए। हम जानना चाहते हैं कि हम किस तरह उस पर ग़ालिब आकर उसे यों बाँध सकें कि वह हमारे क़ब्ज़े में रहे। अगर आप यह मालूम कर सकें तो हममें से हर एक आपको चाँदी के 1,100 सिक्के देगा।”

6चुनाँचे दलीला ने समसून से सवाल किया, “मुझे अपनी बड़ी ताक़त का भेद बताएँ। क्या आपको किसी ऐसी चीज़ से बाँधा जा सकता है जिसे आप तोड़ नहीं सकते?” 7समसून ने जवाब दिया, “अगर मुझे जानवरों की सात ताज़ा नसों से बाँधा जाए तो फिर मैं आम आदमी जैसा कमज़ोर हो जाऊँगा।” 8फ़िलिस्ती सरदारों ने दलीला को सात ताज़ा नसें मुहैया कर दीं, और उसने समसून को उनसे बाँध लिया। 9कुछ फ़िलिस्ती आदमी साथवाले कमरे में छुप गए। फिर दलीला चिल्ला उठी, “समसून, फ़िलिस्ती आपको पकड़ने आए हैं!” यह सुनकर समसून ने नसों को यों तोड़ दिया जिस तरह डोरी टूट

जाती है जब आग में से गुज़रती है। चुनाँचे उस की ताक़त का पोल न खुला।

10दलीला का मुँह लटक गया। “आपने झूट बोलकर मुझे बेवुक़ूफ़ बनाया है। अब आएँ, मेहरबानी करके मुझे बताएँ कि आपको किस तरह बाँधा जा सकता है।” 11समसून ने जवाब दिया, “अगर मुझे ग़ैरइस्तेमालशुदा रस्सों से बाँधा जाए तो फिर ही मैं आम आदमी जैसा कमज़ोर हो जाऊँगा।” 12दलीला ने नए रस्से लेकर उसे उनसे बाँध लिया। इस मरतबा भी फ़िलिस्ती साथवाले कमरे में छुप गए थे। फिर दलीला चिल्ला उठी, “समसून, फ़िलिस्ती आपको पकड़ने आए हैं!” लेकिन इस बार भी समसून ने रस्सों को यों तोड़ लिया जिस तरह आम आदमी डोरी को तोड़ लेता है।

13दलीला ने शिकायत की, “आप बार बार झूट बोलकर मेरा मज़ाक़ उड़ा रहे हैं। अब मुझे बताएँ कि आपको किस तरह बाँधा जा सकता है।” समसून ने जवाब दिया, “लाज़िम है कि आप मेरी सात ज़ुल्फ़ों को खड्डी के ताने के साथ बुनें। फिर ही आम आदमी जैसा कमज़ोर हो जाऊँगा।” 14जब समसून सो रहा था तो दलीला ने ऐसा ही किया। उस की सात ज़ुल्फ़ों को ताने के साथ बुनकर उसने उसे शटल के ज़रीए खड्डी के साथ लगाया। फिर वह चिल्ला उठी, “समसून, फ़िलिस्ती आपको पकड़ने आए हैं!” समसून जाग उठा और अपने बालों को शटल समेत खड्डी से निकाल लिया।

15यह देखकर दलीला ने मुँह फूलाकर मलामत की, “आप किस तरह दावा कर सकते हैं कि मुझसे मुहब्बत रखते हैं? अब आपने तीन मरतबा मेरा मज़ाक़ उड़ाकर मुझे अपनी बड़ी ताक़त का भेद नहीं बताया।” 16रोज़ बरोज़ वह अपनी बातों से उस की नाक में दम करती रही। आख़िरकार समसून इतना तंग आ गया कि उसका जीना दूभर हो गया। 17फिर उसने उसे खुलकर बात बताई, “मैं पैदाइश ही से अल्लाह के लिए मख़सूस हूँ, इसलिए मेरे बालों को कभी नहीं काटा गया। अगर सर को मुँडवाया जाए तो मेरी ताक़त जाती रहेगी और मैं हर दूसरे आदमी जैसा कमज़ोर हो जाऊँगा।”

18दलीला ने जान लिया कि अब समसून ने मुझे पूरी हक़ीक़त बताई है। उसने फ़िलिस्ती सरदारों को इत्तला दी, “आओ, क्योंकि इस मरतबा उसने मुझे अपने दिल की हर बात बताई है।” यह सुनकर वह मुक़र्ररा चाँदी अपने साथ लेकर दलीला के पास आए।

19दलीला ने समसून का सर अपनी गोद में रखकर उसे सुला दिया। फिर उसने एक आदमी को बुलाकर समसून की सात ज़ुल्फ़ों को मुँडवाया। यों वह उसे पस्त करने लगी, और उस की ताक़त जाती रही। 20फिर वह चिल्ला उठी, “समसून, फ़िलिस्ती आपको पकड़ने आए हैं!” समसून जाग उठा और सोचा, “मैं पहले की तरह अब भी अपने आपको बचाकर बंधन को तोड़ दूँगा।” अफ़सोस, उसे मालूम नहीं था कि रब ने उसे छोड़ दिया है। 21फ़िलिस्तियों ने उसे पकड़कर उस की आँखें निकाल दीं। फिर वह उसे ग़ज़्ज़ा ले गए जहाँ उसे पीतल की ज़ंजीरों से बाँधा गया। वहाँ वह क़ैदख़ाने की चक्की पीसा करता था।

22लेकिन होते होते उसके बाल दुबारा बढ़ने लगे।

समसून का आख़िरी इंतक़ाम

23एक दिन फ़िलिस्ती सरदार बड़ा जशन मनाने के लिए जमा हुए। उन्होंने अपने देवता दजून को जानवरों की बहुत-सी क़ुरबानियाँ पेश करके अपनी फ़तह की ख़ुशी मनाई। वह बोले, “हमारे देवता ने हमारे दुश्मन समसून को हमारे हवाले कर दिया है।” 24समसून को देखकर अवाम ने दजून की तमजीद करके कहा, “हमारे देवता ने हमारे दुश्मन को हमारे हवाले कर दिया है! जिसने हमारे मुल्क को तबाह किया और हममें से इतने लोगों को मार डाला वह अब हमारे क़ाबू में आ गया है!” 25इस क़िस्म की बातें करते करते

उनकी ख़ुशी की इंतहा न रही। तब वह चिल्लाने लगे, "समसून को बुलाओ ताकि वह हमारे दिलों को बहलाए।"

चुनाँचे उसे उनकी तफ़रीह के लिए जेल से लाया गया और दो सतूनों के दरमियान खड़ा कर
दिया गया। 26समसून उस लड़के से मुख़ातिब
हुआ जो उसका हाथ पकड़कर उस की राहनुमाई कर रहा था, "मुझे छत को उठानेवाले सतूनों के पास ले जाओ ताकि मैं उनका सहारा लूँ।"
27इमारत मर्दों और औरतों से भरी थी। फ़िलिस्ती सरदार भी सब आए हुए थे। सिर्फ़ छत पर समसून का तमाशा देखनेवाले तक़रीबन 3,000 अफ़राद थे।

28फिर समसून ने दुआ की, "ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, मुझे याद कर। बस एक दफ़ा और मुझे पहले की तरह क़ुव्वत अता फ़रमा ताकि मैं एक ही वार से फ़िलिस्तियों से अपनी आँखों का बदला ले
सकूँ।" 29यह कहकर समसून ने उन दो मरकज़ी सतूनों को पकड़ लिया जिन पर छत का पूरा वज़न था। उनके दरमियान खड़े होकर उसने पूरी
ताक़त से ज़ोर लगाया 30और दुआ की, "मुझे फ़िलिस्तियों के साथ मरने दे!" अचानक सतून हिल गए और छत धड़ाम से फ़िलिस्तियों के तमाम सरदारों और बाक़ी लोगों पर गिर गई। इस तरह समसून ने पहले की निसबत मरते वक़्त कहीं ज़्यादा फ़िलिस्तियों को मार डाला।

31समसून के भाई और बाक़ी घरवाले आए और उस की लाश को उठाकर उसके बाप मनोहा की क़ब्र के पास ले गए। वहाँ यानी सुरआ और इस्ताल के दरमियान उन्होंने उसे दफ़नाया। समसून 20 साल इसराईल का क़ाज़ी रहा।

मीकाह का बुत

17 इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े में एक आदमी रहता था जिसका नाम मीकाह था। 2एक दिन उसने अपनी माँ से बात
की, "आपके चाँदी के 1,100 सिक्के चोरी हो गए थे, ना? उस वक़्त आपने मेरे सामने ही चोर पर लानत भेजी थी। अब देखें, वह पैसे मेरे पास हैं। मैं ही चोर हूँ।" यह सुनकर माँ ने जवाब दिया,
"मेरे बेटे, रब तुझे बरकत दे!" 3मीकाह ने उसे
तमाम पैसे वापस कर दिए, और माँ ने एलान किया, "अब से यह चाँदी रब के लिए मख़सूस हो! मैं आपके लिए तराशा और ढाला हुआ बुत बनवाकर चाँदी आपको वापस कर देती हूँ।"

4चुनाँचे जब बेटे ने पैसे वापस कर दिए तो माँ ने उसके 200 सिक्के सुनार के पास ले जाकर लकड़ी का तराशा और ढाला हुआ बुत बनवाया। मीकाह ने यह बुत अपने घर में खड़ा
किया, 5क्योंकि उसका अपना मक़दिस था।
उसने मज़ीद बुत और एक अफ़ोद[a] भी बनवाया और फिर एक बेटे को अपना इमाम बना लिया।
6उस ज़माने में इसराईल का कोई बादशाह नहीं था बल्कि हर कोई वही कुछ करता जो उसे दुरुस्त लगता था।

7उन दिनों में लावी के क़बीले का एक जवान आदमी यहूदाह के क़बीले के शहर बैत-लहम में
आबाद था। 8अब वह शहर को छोड़कर रिहाइश की कोई और जगह तलाश करने लगा। इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े में से सफ़र करते करते वह
मीकाह के घर पहुँच गया। 9मीकाह ने पूछा, "आप कहाँ से आए हैं?" जवान ने जवाब दिया, "मैं लावी हूँ। मैं यहूदाह के शहर बैत-लहम का रहनेवाला हूँ लेकिन रिहाइश की किसी और जगह की तलाश में हूँ।"

10मीकाह बोला, "यहाँ मेरे पास अपना घर बनाकर मेरे बाप और इमाम बनें। तब आपको साल में चाँदी के दस सिक्के और ज़रूरत के मुताबिक़ कपड़े और ख़ुराक मिलेगी।"

---

[a]आम तौर पर इबरानी में अफ़ोद का मतलब इमामे-आज़म का बालापोश था (देखिए ख़ुरूज 28:4), लेकिन यहाँ इससे मुराद बुतपरस्ती की कोई चीज़ है।

11लावी मुत्तफ़िक़ हुआ। वह वहाँ आबाद हुआ,
और मीकाह ने उसके साथ बेटों का-सा सुलूक
किया। 12उसने उसे इमाम मुक़र्रर करके सोचा,
13“अब रब मुझ पर मेहरबानी करेगा, क्योंकि
लावी मेरा इमाम बन गया है।”

दान का क़बीला ज़मीन की तलाश करता है

18 उन दिनों में इसराईल का बाद-
शाह नहीं था। और अब तक दान के
क़बीले को अपना कोई क़बायली इलाक़ा नहीं
मिला था, इसलिए उसके लोग कहीं आबाद होने
की तलाश में रहे। 2उन्होंने अपने ख़ानदानों में से
सुरआ और इस्ताल के पाँच तजरबाकार फ़ौजियों
को चुनकर उन्हें मुल्क की तफ़तीश करने के लिए
भेज दिया। यह मर्द इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े में
से गुज़रकर मीकाह के घर के पास पहुँच गए। जब
वह वहाँ रात के लिए ठहरे हुए थे 3तो उन्होंने देखा
कि जवान लावी बैत-लहम की बोली बोलता है।
उसके पास जाकर उन्होंने पूछा, “कौन आपको
यहाँ लाया है? आप यहाँ क्या करते हैं? और
आपका इस घर में रहने का क्या मक़सद है?”
4लावी ने उन्हें अपनी कहानी सुनाई, “मीकाह ने
मुझे नौकरी देकर अपना इमाम बना लिया है।”
5फिर उन्होंने उससे गुज़ारिश की, “अल्लाह से
दरियाफ़्त करें कि क्या हमारे सफ़र का मक़सद
पूरा हो जाएगा या नहीं?” 6लावी ने उन्हें तसल्ली
दी, “सलामती से आगे बढ़ें। आपके सफ़र का
मक़सद रब को क़बूल है, और वह आपके साथ
है।”

7तब यह पाँच आदमी आगे निकले और सफ़र
करते करते लैस पहुँच गए। उन्होंने देखा कि
वहाँ के लोग सैदानियों की तरह पुरसुकून और
बेफ़िकर ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं। कोई नहीं था जो
उन्हें दबाता या उन पर ज़ुल्म करता। यह भी
मालूम हुआ कि अगर उन पर हमला किया जाए
तो उनका इत्तहादी शहर सैदा उनसे इतनी दूर है
कि उनकी मदद नहीं कर सकेगा, और क़रीब कोई
इत्तहादी नहीं है जो उनका साथ दे। 8वह पाँच
जासूस सुरआ और इस्ताल वापस चले गए। जब
वहाँ पहुँचे तो दूसरों ने पूछा, “सफ़र कैसा रहा?”
9जासूसों ने जवाब में कहा, “आएँ, हम जंग के
लिए निकलें! हमें एक बेहतरीन इलाक़ा मिल
गया है। आप क्यों झिजक रहे हैं? जल्दी करें,
हम निकलें और उस मुल्क पर क़ब्ज़ा कर लें!
10वहाँ के लोग बेफ़िकर हैं और हमले की तवक़्क़ो
ही नहीं करते। और ज़मीन वसी और ज़रख़ेज़ है,
उसमें किसी भी चीज़ की कमी नहीं है। अल्लाह
आपको वह मुल्क देने का इरादा रखता है।”

दान के मर्द मीकाह का बुत इमाम समेत छीन लेते हैं

11दान के क़बीले के 600 मुसल्लह आदमी
सुरआ और इस्ताल से रवाना हुए। 12रास्ते
में उन्होंने अपनी लशकरगाह यहूदाह के शहर
क़िरियत-यारीम के क़रीब लगाई। इसलिए यह
जगह आज तक महने-दान यानी दान की
ख़ैमागाह कहलाती है। 13वहाँ से वह इफ़राईम
के पहाड़ी इलाक़े में दाख़िल हुए और चलते चलते
मीकाह के घर पहुँच गए।

14जिन पाँच मर्दों ने लैस की तफ़तीश की थी
उन्होंने अपने साथियों से कहा, “क्या आपको
मालूम है कि इन घरों में एक अफ़ोद, एक तराशा
और ढाला हुआ बुत और दीगर कई बुत हैं? अब
सोच लें कि क्या किया जाए।”

15पाँचों ने मीकाह के घर में दाख़िल होकर
जवान लावी को सलाम किया 16जबकि बाक़ी
600 मुसल्लह मर्द गेट पर खड़े रहे। 17जब लावी
बाहर खड़े मर्दों के पास गया तो इन पाँचों ने अंदर
घुसकर तराशा और ढाला हुआ बुत, अफ़ोद और
बाक़ी बुत छीन लिए। 18यह देखकर लावी चीख़ने
लगा, “क्या कर रहे हो!”

19उन्होंने कहा, “चुप! कोई बात न करो
बल्कि हमारे साथ जाकर हमारे बाप और इमाम
बनो। हमारे साथ जाओगे तो पूरे क़बीले के इमाम
बनोगे। क्या यह एक ही ख़ानदान की ख़िदमत
करने से कहीं बेहतर नहीं होगा?” 20यह सुनकर

इमाम ख़ुश हुआ। वह अफ़ोद, तराशा हुआ बुत और बाक़ी बुतों को लेकर मुसाफ़िरों में शरीक हो गया। 21फिर दान के मर्द रवाना हुए। उनके बाल-बच्चे, मवेशी और क़ीमती मालो-मता उनके आगे आगे था।

22जब मीकाह को बात का पता चला तो वह अपने पड़ोसियों को जमा करके उनके पीछे दौड़ा। इतने में दान के लोग घर से दूर निकल चुके थे। 23जब वह सामने नज़र आए तो मीकाह और उसके साथियों ने चीख़ते-चिल्लाते उन्हें रुकने को कहा। दान के मर्दों ने पीछे देखकर मीकाह से कहा, “क्या बात है? अपने इन लोगों को बुलाकर क्यों ले आए हो?” 24मीकाह ने जवाब दिया, “तुम लोगों ने मेरे बुतों को छीन लिया गो मैंने उन्हें ख़ुद बनवाया है। मेरे इमाम को भी साथ ले गए हो। मेरे पास कुछ नहीं रहा तो अब तुम पूछते हो कि क्या बात है?”

25दान के अफ़राद बोले, “ख़ामोश! ख़बरदार, हमारे कुछ लोग तेज़मिज़ाज हैं। ऐसा न हो कि वह ग़ुस्से में आकर तुमको तुम्हारे ख़ानदान समेत मार डालें।” 26यह कहकर उन्होंने अपना सफ़र जारी रखा। मीकाह ने जान लिया कि मैं अपने थोड़े आदमियों के साथ उनका मुक़ाबला नहीं कर सकूँगा, इसलिए वह मुड़कर अपने घर वापस चला गया। 27उसके बुत दान के क़ब्ज़े में रहे, और इमाम भी उनमें टिक गया। फिर वह लैस के इलाक़े में दाख़िल हुए जिसके बाशिंदे पुरसुकून और बेफ़िकर ज़िंदगी गुज़ार रहे थे। दान के फ़ौजी उन पर टूट पड़े और सबको तलवार से क़त्ल करके शहर को भस्म कर दिया। 28किसी ने भी उनकी मदद न की, क्योंकि सैदा बहुत दूर था, और क़रीब कोई इत्तहादी नहीं था जो उनका साथ देता। यह शहर बैत-रहोब की वादी में था। दान के अफ़राद शहर को अज़ सरे-नौ तामीर करके उसमें आबाद हुए। 29और उन्होंने उसका नाम अपने क़बीले के बानी के नाम पर दान रखा (दान इसराईल का बेटा था)।

30वहाँ उन्होंने तराशा हुआ बुत रखकर पूजा के इंतज़ाम पर यूनतन मुक़र्रर किया जो मूसा के बेटे जैरसोम की औलाद में से था। जब यूनतन फ़ौत हुआ तो उस की औलाद क़ौम की जिलावतनी तक दान के क़बीले में यही ख़िदमत करती रही। 31मीकाह का बनवाया हुआ बुत तब तक दान में रहा जब तक अल्लाह का घर सैला में था।

एक लावी की अपनी दाश्ता के साथ सुलह

19 उस ज़माने में जब इसराईल का कोई बादशाह नहीं था एक लावी ने अपने घर में दाश्ता रखी जो यहूदाह के शहर बैत-लहम की रहनेवाली थी। आदमी इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े के किसी दूर-दराज़ कोने में आबाद था। 2लेकिन एक दिन औरत मर्द से नाराज़ हुई और मैके वापस चली गई। चार माह के बाद 3लावी दो गधे और अपने नौकर को लेकर बैत-लहम के लिए रवाना हुआ ताकि दाश्ता का ग़ुस्सा ठंडा करके उसे वापस आने पर आमादा करे।

जब उस की मुलाक़ात दाश्ता से हुई तो वह उसे अपने बाप के घर में ले गई। उसे देखकर सुसर इतना ख़ुश हुआ 4कि उसने उसे जाने न दिया। दामाद को तीन दिन वहाँ ठहरना पड़ा जिस दौरान सुसर ने उस की ख़ूब मेहमान-नवाज़ी की। 5चौथे दिन लावी सुबह-सवेरे उठकर अपनी दाश्ता के साथ रवाना होने की तैयारियाँ करने लगा। लेकिन सुसर उसे रोककर बोला, “पहले थोड़ा-बहुत खाकर ताज़ादम हो जाएँ, फिर चले जाना।” 6दोनों दुबारा खाने-पीने के लिए बैठ गए।

सुसर ने कहा, “बराहे-करम एक और रात यहाँ ठहरकर अपना दिल बहलाएँ।” 7मेहमान जाने की तैयारियाँ करने तो लगा, लेकिन सुसर ने उसे एक और रात ठहरने पर मजबूर किया। चुनाँचे वह हार मानकर रुक गया।

8पाँचवें दिन आदमी सुबह-सवेरे उठा और जाने के लिए तैयार हुआ। सुसर ने ज़ोर दिया, “पहले कुछ खाना खाकर ताज़ादम हो जाएँ। आप दोपहर

के वक़्त भी जा सकते हैं।” चुनाँचे दोनों खाने के
लिए बैठ गए।
9दोपहर के वक़्त लावी अपनी बीवी और नौकर
के साथ जाने के लिए उठा। सुसर एतराज़ करने
लगा, “अब देखें, दिन ढलनेवाला है। रात ठहरकर
अपना दिल बहलाएँ। बेहतर है कि आप कल
सुबह-सवेरे ही उठकर घर के लिए रवाना हो
जाएँ।” 10-11लेकिन अब लावी किसी भी सूरत
में एक और रात ठहरना नहीं चाहता था। वह अपने
गधों पर ज़ीन कसकर अपनी बीवी और नौकर के
साथ रवाना हुआ।
चलते चलते दिन ढलने लगा। वह यबूस यानी
यरूशलम के क़रीब पहुँच गए थे। शहर को
देखकर नौकर ने मालिक से कहा, “आएँ, हम
यबूसियों के इस शहर में जाकर वहाँ रात गुज़ारें।”
12लेकिन लावी ने एतराज़ किया, “नहीं, यह
अजनबियों का शहर है। हमें ऐसी जगह रात नहीं
गुज़ारना चाहिए जो इसराईली नहीं है। बेहतर
है कि हम आगे जाकर जिबिया की तरफ़ बढ़ें।
13अगर हम जल्दी करें तो हो सकता है कि
जिबिया या उससे आगे रामा तक पहुँच सकें। वहाँ
आराम से रात गुज़ार सकेंगे।”
14चुनाँचे वह आगे निकले। जब सूरज ग़ुरूब
होने लगा तो वह बिनयमीन के क़बीले के शहर
जिबिया के क़रीब पहुँच गए 15और रास्ते से
हटकर शहर में दाख़िल हुए। लेकिन कोई उनकी
मेहमान-नवाज़ी नहीं करना चाहता था, इसलिए
वह शहर के चौक में रुक गए।
16फिर अंधेरे में एक बूढ़ा आदमी वहाँ से
गुज़रा। असल में वह इफ़राईम के पहाड़ी
इलाक़े का रहनेवाला था और जिबिया में
अजनबी था, क्योंकि बाक़ी बाशिंदे बिन-
यमीनी थे। अब वह खेत में अपने काम से फ़ारिग़
होकर शहर में वापस आया था। 17मुसाफ़िरों
को चौक में देखकर उसने पूछा, “आप कहाँ से
आए और कहाँ जा रहे हैं?” 18लावी ने जवाब
दिया, “हम यहूदाह के बैत-लहम से आए हैं और
इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े के एक दूर-दराज़ कोने
तक सफ़र कर रहे हैं। वहाँ मेरा घर है और वहीं
से मैं रवाना होकर बैत-लहम चला गया था। इस
वक़्त मैं रब के घर जा रहा हूँ। लेकिन यहाँ जिबिया
में कोई नहीं जो हमारी मेहमान-नवाज़ी करने के
लिए तैयार हो, 19हालाँकि हमारे पास खाने की
तमाम चीज़ें मौजूद हैं। गधों के लिए भूसा और
चारा है, और हमारे लिए भी काफ़ी रोटी और मै
है। हमें किसी भी चीज़ की ज़रूरत नहीं है।”
20बूढ़े ने कहा, “फिर मैं आपको अपने घर में
ख़ुशआमदीद कहता हूँ। अगर आपको कोई चीज़
दरकार हो तो मैं उसे मुहैया करूँगा। हर सूरत में
चौक में रात मत गुज़ारना।” 21वह मुसाफ़िरों को
अपने घर ले गया और गधों को चारा खिलाया।
मेहमानों ने अपने पाँव धोकर खाना खाया और मै
पी।

जिबिया के लोगों का जुर्म

22वह यों खाने की रिफ़ाक़त से लुत्फ़-
अंदोज़ हो रहे थे कि जिबिया के कुछ शरीर मर्द
घर को घेरकर दरवाज़े को ज़ोर से खटखटाने
लगे। वह चिल्लाए, “उस आदमी को बाहर ला
जो तेरे घर में ठहरा हुआ है ताकि हम उससे
ज़्यादती करें!” 23बूढ़ा आदमी बाहर गया ताकि
उन्हें समझाए, “नहीं, भाइयो, ऐसा शैतानी अमल
मत करना। यह अजनबी मेरा मेहमान है। ऐसी
शर्मनाक हरकत मत करना! 24इससे पहले मैं
अपनी कुँवारी बेटी और मेहमान की दाश्ता को
बाहर ले आता हूँ। उन्हीं से ज़्यादती करें। जो जी
चाहे उनके साथ करें, लेकिन आदमी के साथ ऐसी
शर्मनाक हरकत न करें।”
25लेकिन बाहर के मर्दों ने उस की न सुनी। तब
लावी अपनी दाश्ता को पकड़कर बाहर ले गया
और उसके पीछे दरवाज़ा बंद कर दिया। शहर के
आदमी पूरी रात उस की बेहुरमती करते रहे। जब
पौ फटने लगी तो उन्होंने उसे फ़ारिग़ कर दिया।
26सूरज के तुलू होने से पहले औरत उस घर के
पास वापस आई जिसमें शौहर ठहरा हुआ था।

दरवाज़े तक तो वह पहुँच गई लेकिन फिर गिरकर
वहीं की वहीं पड़ी रही।

जब दिन चढ़ गया 27तो लावी जाग उठा
और सफ़र करने की तैयारियाँ करने लगा। जब
दरवाज़ा खोला तो क्या देखता है कि दाश्ता सामने
ज़मीन पर पड़ी है और हाथ दहलीज़ पर रखे
हैं। 28वह बोला, “उठो, हम चलते हैं।” लेकिन
दाश्ता ने जवाब न दिया। यह देखकर आदमी ने
उसे गधे पर लाद लिया और अपने घर चला गया।

29जब पहुँचा तो उसने छुरी लेकर औरत की
लाश को 12 टुकड़ों में काट लिया, फिर उन्हें
इसराईल की हर जगह भेज दिया। 30जिसने भी
यह देखा उसने घबराकर कहा, “ऐसा जुर्म हमारे
दरमियान कभी नहीं हुआ। जब से हम मिसर
से निकलकर आए हैं ऐसी हरकत देखने में नहीं
आई। अब लाज़िम है कि हम ग़ौर से सोचें और
एक दूसरे से मशवरा करके अगले क़दम के बारे
में फ़ैसला करें।”

जिबिया को सज़ा देने का फ़ैसला

20 तमाम इसराईली एक दिल होकर
मिसफ़ाह में रब के हुज़ूर जमा हुए।
शिमाल के दान से लेकर जुनूब के बैर-सबा तक
सब आए। दरियाए-यरदन के पार जिलियाद से
भी लोग आए। 2इसराईली क़बीलों के सरदार
भी आए। उन्होंने मिलकर एक बड़ी फ़ौज तैयार
की, तलवारों से लैस 4,00,000 मर्द जमा हुए।
3बिनयमीनियों को इस जमात के बारे में इत्तला
मिली।

इसराईलियों ने पूछा, “हमें बताएँ कि यह
हैबतनाक जुर्म किस तरह सरज़द हुआ?”
4मक़तूला के शौहर ने उन्हें अपनी कहानी सुनाई,
“मैं अपनी दाश्ता के साथ जिबिया में आ ठहरा
जो बिनयमीनियों के इलाक़े में है। हम वहाँ रात
गुज़ारना चाहते थे। 5यह देखकर शहर के मर्दों
ने मेरे मेज़बान के घर को घेर लिया ताकि मुझे
क़त्ल करें। मैं तो बच गया, लेकिन मेरी दाश्ता से
इतनी ज़्यादती हुई कि वह मर गई। 6यह देखकर
मैंने उस की लाश को टुकड़े टुकड़े करके यह टुकड़े
इसराईल की मीरास की हर जगह भेज दिए ताकि
हर एक को मालूम हो जाए कि हमारे मुल्क में
कितना घिनौना जुर्म सरज़द हुआ है। 7इस पर
आप सब यहाँ जमा हुए हैं। इसराईल के मर्दो, अब
लाज़िम है कि आप एक दूसरे से मशवरा करके
फ़ैसला करें कि क्या करना चाहिए।”

8तमाम मर्द एक दिल होकर खड़े हुए। सबका
फ़ैसला था, “ हममें से कोई भी अपने घर वापस
नहीं जाएगा 9जब तक जिबिया को मुनासिब
सज़ा न दी जाए। लाज़िम है कि हम फ़ौरन शहर
पर हमला करें और इसके लिए क़ुरा डालकर रब
से हिदायत लें। 10हम यह फ़ैसला भी करें कि
कौन कौन हमारी फ़ौज के लिए खाने-पीने का
बंदोबस्त कराएगा। इस काम के लिए हममें से
हर दसवाँ आदमी काफ़ी है। बाक़ी सब लोग सीधे
जिबिया से लड़ने जाएँ ताकि उस शर्मनाक जुर्म
का मुनासिब बदला लें जो इसराईल में हुआ है।”

11यों तमाम इसराईली मुत्तहिद होकर जिबिया
से लड़ने के लिए गए। 12रास्ते में उन्होंने
बिनयमीन के हर कुंबे को पैग़ाम भिजवाया,
“आपके दरमियान घिनौना जुर्म हुआ है। 13अब
जिबिया के इन शरीर आदमियों को हमारे हवाले
करें ताकि हम उन्हें सज़ाए-मौत देकर इसराईल में
से बुराई मिटा दें।”

लेकिन बिनयमीनी इसके लिए तैयार न हुए।
14वह पूरे क़बायली इलाक़े से आकर जिबिया
में जमा हुए ताकि इसराईलियों से लड़ें। 15उसी
दिन उन्होंने अपनी फ़ौज का बंदोबस्त किया।
जिबिया के 700 तजरबाकार फ़ौजियों के
अलावा तलवारों से लैस 26,000 अफ़राद थे।
16इन फ़ौजियों में से 700 ऐसे मर्द भी थे जो
अपने बाएँ हाथ से फ़लाख़न चलाने की इतनी
महारत रखते थे कि पत्थर बाल जैसे छोटे निशाने
पर भी लग जाता था। 17दूसरी तरफ़ इसराईल
के 4,00,000 फ़ौजी खड़े हुए, और हर एक के
पास तलवार थी।

18पहले इसराईली बैतेल चले गए। वहाँ उन्होंने
अल्लाह से दरियाफ़्त किया, “कौन-सा क़बीला
हमारे आगे आगे चले जब हम बिनयमीनियों पर
हमला करें?” रब ने जवाब दिया, “यहूदाह सबसे
आगे चले।”

बिनयमीन के ख़िलाफ़ जंग

19अगले दिन इसराईली रवाना हुए और
जिबिया के क़रीब पहुँचकर अपनी लश-
करगाह लगाई। 20फिर वह हमला के लिए निकले
और तरतीब से लड़ने के लिए खड़े हो गए। 21यह
देखकर बिनयमीनी शहर से निकले और उन पर
टूट पड़े। नतीजे में 22,000 इसराईली शहीद हो
गए।

22-23इसराईली बैतेल चले गए और शाम तक
रब के हुज़ूर रोते रहे। उन्होंने रब से पूछा, “क्या
हम दुबारा अपने बिनयमीनी भाइयों से लड़ने
जाएँ?” रब ने जवाब दिया, “हाँ, उन पर हमला
करो!” यह सुनकर इसराईलियों का हौसला बढ़
गया और वह अगले दिन वहीं खड़े हो गए जहाँ
पहले दिन खड़े हुए थे। 24लेकिन जब वह शहर के
क़रीब पहुँचे 25तो बिनयमीनी पहले की तरह शहर
से निकलकर उन पर टूट पड़े। उस दिन तलवार
से लैस 18,000 इसराईली शहीद हो गए।

26फिर इसराईल का पूरा लशकर बैतेल चला
गया। वहाँ वह शाम तक रब के हुज़ूर रोते और
रोज़ा रखते रहे। उन्होंने रब को भस्म होनेवाली
क़ुरबानियाँ और सलामती की क़ुरबानियाँ पेश
करके 27उससे दरियाफ़्त किया कि हम क्या करें।
(उस वक़्त अल्लाह के अहद का संदूक़ बैतेल में
था 28जहाँ फ़ीनहास बिन इलियज़र बिन हारून
इमाम था।) इसराईलियों ने पूछा, “क्या हम एक
और मरतबा अपने बिनयमीनी भाइयों से लड़ने
जाएँ या इससे बाज़ आएँ?” रब ने जवाब दिया,
“उन पर हमला करो, क्योंकि कल ही मैं उन्हें
तुम्हारे हवाले कर दूँगा।”

बिनयमीन का सत्यानास

29इस दफ़ा कुछ इसराईली जिबिया के इर्दगिर्द
घात में बैठ गए। 30बाक़ी अफ़राद पहले दो दिनों
की-सी तरतीब के मुताबिक़ लड़ने के लिए खड़े
हो गए। 31बिनयमीनी दुबारा शहर से निकलकर
उन पर टूट पड़े। जो रास्ते बैतेल और जिबिया
की तरफ़ ले जाते हैं उन पर और खुले मैदान में
उन्होंने तक़रीबन 30 इसराईलियों को मार डाला।
यों लड़ते लड़ते वह शहर से दूर होते गए। 32वह
पुकारे, “अब हम उन्हें पहली दो मरतबा की तरह
शिकस्त देंगे!”

लेकिन इसराईलियों ने मनसूबा बाँध लिया था,
“हम उनके आगे आगे भागते हुए उन्हें शहर से दूर
रास्तों पर खींच लेंगे।” 33यों वह भागने लगे और
बिनयमीनी उनके पीछे पड़ गए। लेकिन बाल-
तमर के क़रीब इसराईली रुककर मुड़ गए और
उनका सामना करने लगे। अब बाक़ी इसराईली
जो जिबा के इर्दगिर्द और खुले मैदान में घात
में बैठे थे अपनी छुपने की जगहों से निकल
आए। 34अचानक जिबिया के बिनयमीनियों को
10,000 बेहतरीन फ़ौजियों का सामना करना
पड़ा, उन मर्दों का जो पूरे इसराईल से चुने गए
थे। बिनयमीनी उनसे ख़ूब लड़ने लगे, लेकिन
उनकी आँखें अभी इस बात के लिए बंद थीं कि
उनका अंजाम क़रीब आ गया है। 35उस दिन
इसराईलियों ने रब की मदद से फ़तह पाकर
तलवार से लैस 25,100 बिनयमीनी फ़ौजियों
को मौत के घाट उतार दिया। 36तब बिनयमीनियों
ने जान लिया कि दुश्मन हम पर ग़ालिब आ गए
हैं। क्योंकि इसराईली फ़ौज ने अपने भाग जाने से
उन्हें जिबिया से दूर खींच लिया था ताकि शहर के
इर्दगिर्द घात में बैठे मर्दों को शहर पर हमला करने
का मौक़ा मुहैया करें। 37तब यह मर्द निकलकर
शहर पर टूट पड़े और तलवार से तमाम बाशिंदों
को मार डाला, 38-39फिर मनसूबे के मुताबिक़
आग लगाकर धुएँ का बड़ा बादल पैदा किया
ताकि भागनेवाले इसराईलियों को इशारा मिल

जाए कि वह मुड़कर बिनयमीनियों का मुक़ाबला
करें।

उस वक़्त तक बिनयमीनियों ने तक़रीबन 30
इसराईलियों को मार डाला था, और उनका
ख़याल था कि हम उन्हें पहले की तरह शिकस्त
दे रहे हैं। 40अचानक उनके पीछे धुएँ का बादल
आसमान की तरफ़ उठने लगा। जब बिनयमीनियों
ने मुड़कर देखा कि शहर के कोने कोने से धुआँ
निकल रहा है 41तो इसराईल के मर्द रुक गए और
पलटकर उनका सामना करने लगे।

बिनयमीनी सख़्त घबरा गए, क्योंकि उन्होंने
जान लिया कि हम तबाह हो गए हैं। 42-43तब
उन्होंने मशरिक़ के रेगिस्तान की तरफ़ फ़रार
होने की कोशिश की। लेकिन अब वह मर्द
भी उनका ताक़्क़ुब करने लगे जिन्होंने घात
में बैठकर जिबिया पर हमला किया था। यों
इसराईलियों ने मफ़रूरों को घेरकर मार डाला।
44उस वक़्त बिनयमीन के 18,000 तजरबाकार
फ़ौजी हलाक हुए। 45जो बच गए वह रेगिस्तान
की चट्टान रिम्मोन की तरफ़ भाग निकले। लेकिन
इसराईलियों ने रास्ते में उनके 5,000 अफ़राद
को मौत के घाट उतार दिया। इसके बाद उन्होंने
जिदओम तक उनका ताक़्क़ुब किया। मज़ीद
2,000 बिनयमीनी हलाक हुए। 46इस तरह
बिनयमीन के कुल 25,000 तलवार से लैस और
तजरबाकार फ़ौजी मारे गए।

47सिर्फ़ 600 मर्द बचकर रिम्मोन की चट्टान
तक पहुँच गए। वहाँ वह चार महीने तक टिके रहे।
48तब इसराईली ताक़्क़ुब करने से बाज़ आकर
बिनयमीन के क़बायली इलाक़े में वापस आए।
वहाँ उन्होंने जगह बजगह जाकर सब कुछ मौत के
घाट उतार दिया। जो भी उन्हें मिला वह तलवार
की ज़द में आ गया, ख़ाह इनसान था या हैवान।
साथ साथ उन्होंने तमाम शहरों को आग लगा दी।

बिनयमीनियों को औरतें मिलती हैं

21 जब इसराईली मिसफ़ाह में जमा
हुए थे तो सबने क़सम खाकर कहा
था, "हम कभी भी अपनी बेटियों का किसी
बिनयमीनी मर्द के साथ रिश्ता नहीं बाँधेंगे।" 2अब
वह बैतेल चले गए और शाम तक अल्लाह के
हुज़ूर बैठे रहे। रो रोकर उन्होंने दुआ की, 3"ऐ
रब, इसराईल के ख़ुदा, हमारी क़ौम का एक पूरा
क़बीला मिट गया है! यह मुसीबत इसराईल पर
क्यों आई?"

4अगले दिन वह सुबह-सवेरे उठे और
क़ुरबानगाह बनाकर उस पर भस्म होनेवाली और
सलामती की क़ुरबानियाँ चढ़ाईं। 5फिर वह एक
दूसरे से पूछने लगे, "जब हम मिसफ़ाह में रब के
हुज़ूर जमा हुए तो हमारी क़ौम में से कौन कौन
इजतिमा में शरीक न हुआ?" क्योंकि उस वक़्त
उन्होंने क़सम खाकर एलान किया था, "जिसने
यहाँ रब के हुज़ूर आने से इनकार किया उसे ज़रूर
सज़ाए-मौत दी जाएगी।" 6अब इसराईलियों को
बिनयमीनियों पर अफ़सोस हुआ। उन्होंने कहा,
"एक पूरा क़बीला मिट गया है। 7अब हम उन
थोड़े बचे-खुचे आदमियों को बीवियाँ किस तरह
मुहैया कर सकते हैं? हमने तो रब के हुज़ूर क़सम
खाई है कि अपनी बेटियों का उनके साथ रिश्ता
नहीं बाँधेंगे। 8लेकिन हो सकता है कोई ख़ानदान
मिसफ़ाह के इजतिमा में न आया हो। आओ,
हम पता करें।" मालूम हुआ कि यबीस-जिलियाद
के बाशिंदे नहीं आए थे। 9यह बात फ़ौजियों को
गिनने से पता चली, क्योंकि गिनते वक़्त यबीस-
जिलियाद का कोई भी शख़्स फ़ौज में नहीं था।

10तब उन्होंने 12,000 फ़ौजियों को चुनकर
उन्हें हुक्म दिया, "यबीस-जिलियाद पर हमला
करके तमाम बाशिंदों को बाल-बच्चों समेत मार
डालो। 11सिर्फ़ कुँवारियों को ज़िंदा रहने दो।"

12फ़ौजियों ने यबीस में 400 कुँवारियाँ
पाईं। वह उन्हें सैला ले आए जहाँ इस-
राईलियों का लशकर ठहरा हुआ था। 13वहाँ से
उन्होंने अपने क़ासिदों को रिम्मोन की चट्टान के
पास भेजकर बिनयमीनियों के साथ सुलह कर
ली। 14फिर बिनयमीन के 600 मर्द रेगिस्तान से
वापस आए, और उनके साथ यबीस-जिलियाद

की कुँवारियों की शादी हुई। लेकिन यह सबके
लिए काफ़ी नहीं थीं।
15इसराईलियों को बिनयमीन पर अफ़-
सोस हुआ, क्योंकि रब ने इसराईल के क़बीलों
में ख़ला डाल दिया था। 16जमात के बुज़ुर्गों ने
दुबारा पूछा, “हमें बिनयमीन के बाक़ी मर्दों के
लिए कहाँ से बीवियाँ मिलेंगी? उनकी तमाम
औरतें तो हलाक हो गई हैं। 17लाज़िम है कि
उन्हें उनका मौरूसी इलाक़ा वापस मिल जाए।
ऐसा न हो कि वह बिलकुल मिट जाएँ। 18लेकिन
हम अपनी बेटियों की उनके साथ शादी नहीं करा
सकते, क्योंकि हमने क़सम खाकर एलान किया
है, ‘जो अपनी बेटी का रिश्ता बिनयमीन के किसी
मर्द से बाँधेगा उस पर अल्लाह की लानत हो’।”
19यों सोचते सोचते उन्हें आख़िरकार यह
तरकीब सूझी, “कुछ देर के बाद यहाँ सैला में
रब की सालाना ईद मनाई जाएगी। सैला बैतेल
के शिमाल में, लबूना के जुनूब में और उस रास्ते
के मशरिक़ में है जो बैतेल से सिकम तक ले
जाता है। 20अब बिनयमीनी मर्दों के लिए हमारा
मशवरा है कि ईद के दिनों में अंगूर के बाग़ों
में छुपकर घात में बैठ जाएँ। 21जब लड़कियाँ
लोकनाच के लिए सैला से निकलेंगी तो फिर
बाग़ों से निकलकर उन पर झपट पड़ना। हर
आदमी एक लड़की को पकड़कर उसे अपने घर
ले जाए। 22जब उनके बाप और भाई हमारे पास
आकर आपकी शिकायत करेंगे तो हम उनसे
कहेंगे, ‘बिनयमीनियों पर तरस खाएँ, क्योंकि
जब हमने यबीस पर फ़तह पाई तो हम उनके लिए
काफ़ी औरतें हासिल न कर सके। आप बेक़ुसूर
हैं, क्योंकि आपने उन्हें अपनी बेटियों को इरादतन
तो नहीं दिया’।” 23बिनयमीनियों ने बुज़ुर्गों की
इस हिदायत पर अमल किया। ईद के दिनों में
जब लड़कियाँ नाच रही थीं तो बिनयमीनियों ने
उतनी पकड़ लीं कि उनकी कमी पूरी हो गई।
फिर वह उन्हें अपने क़बायली इलाक़े में ले गए
और शहरों को दुबारा तामीर करके उनमें बसने
लगे। 24बाक़ी इसराईली भी वहाँ से चले गए। हर
एक अपने क़बायली इलाक़े में वापस चला गया।
25उस ज़माने में इसराईल में कोई बादशाह नहीं
था। हर एक वही कुछ करता जो उसे मुनासिब
लगता था।

रूत

इलीमलिक मोआब चला जाता है

1 [1-2]उन दिनों जब क़ाज़ी क़ौम की राहनुमाई
किया करते थे तो इसराईल में काल
पड़ा। यहूदाह के शहर बैत-लहम में एक इफ़राती
आदमी रहता था जिसका नाम इलीमलिक था।
काल की वजह से वह अपनी बीवी नओमी और
अपने दो बेटों महलोन और किलियोन को लेकर
मुल्के-मोआब में जा बसा।
[3]लेकिन कुछ देर के बाद इलीमलिक फ़ौत हो
गया, और नओमी अपने दो बेटों के साथ अकेली
रह गई। [4]महलोन और किलियोन ने मोआब की
दो औरतों से शादी कर ली। एक का नाम उरफ़ा
था और दूसरी का रूत। लेकिन तक़रीबन दस
साल के बाद [5]दोनों बेटे भी जान-बहक़ हो गए।
अब नओमी का न शौहर और न बेटे ही रहे थे।

नओमी रूत के साथ वापस चली जाती है

[6-7]एक दिन नओमी को मुल्के-मोआब में ख़बर
मिली कि रब अपनी क़ौम पर रहम करके उसे
दुबारा अच्छी फ़सलें दे रहा है। तब वह अपने वतन
यहूदाह के लिए रवाना हुई। उरफ़ा और रूत भी
साथ चलीं।
जब वह उस रास्ते पर आ गईं जो यहूदाह तक
पहुँचाता है [8]तो नओमी ने अपनी बहुओं से कहा,
"अब अपने माँ-बाप के घर वापस चली जाएँ। रब
आप पर उतना रहम करे जितना आपने मरहूमों
और मुझ पर किया है। [9]वह आपको नए घर और
नए शौहर मुहैया करके सुकून दे।"
यह कहकर उसने उन्हें बोसा दिया। दोनों रो
पड़ीं [10]और एतराज़ किया, "हरगिज़ नहीं, हम
आपके साथ आपकी क़ौम के पास जाएँगी।"
[11]लेकिन नओमी ने इसरार किया, "बेटियो, बस
करें और अपने अपने घर वापस चली जाएँ। अब
मेरे साथ जाने का क्या फ़ायदा? मुझसे तो मज़ीद
कोई बेटा पैदा नहीं होगा जो आपका शौहर बन
सके। [12]नहीं बेटियो, वापस चली जाएँ। मैं तो
इतनी बूढ़ी हो चुकी हूँ कि दुबारा शादी नहीं कर
सकती। और अगर इसकी उम्मीद भी होती बल्कि
मेरी शादी आज रात को होती और मेरे हाँ बेटे
पैदा होते [13]तो क्या आप उनके बालिग़ हो जाने
तक इंतज़ार कर सकतीं? क्या आप उस वक़्त
तक किसी और से शादी करने से इनकार करतीं?
नहीं, बेटियो। रब ने अपना हाथ मेरे ख़िलाफ़
उठाया है, तो आप इस लानत की ज़द में क्यों
आएँ?"
[14]तब उरफ़ा और रूत दुबारा रो पड़ीं। उरफ़ा ने
अपनी सास को चूमकर अलविदा कहा, लेकिन
रूत नओमी के साथ लिपटी रही। [15]नओमी ने
उसे समझाने की कोशिश की, "देखें, उरफ़ा
अपनी क़ौम और अपने देवताओं के पास वापस
चली गई है। अब आप भी ऐसा ही करें।"
[16]लेकिन रूत ने जवाब दिया, "मुझे आपको
छोड़कर वापस जाने पर मजबूर न कीजिए। जहाँ

आप जाएँगी मैं जाऊँगी। जहाँ आप रहेंगी वहाँ मैं
भी रहूँगी। आपकी क़ौम मेरी क़ौम और आपका
ख़ुदा मेरा ख़ुदा है। 17जहाँ आप मरेंगी वहीं मैं
मरूँगी और वहीं दफ़न हो जाऊँगी। सिर्फ़ मौत
ही मुझे आपसे अलग कर सकती है। अगर मेरा
यह वादा पूरा न हो तो अल्लाह मुझे सख़्त सज़ा
दे!”

18नओमी ने जान लिया कि रूत का साथ
जाने का पक्का इरादा है, इसलिए वह ख़ामोश
हो गई और उसे समझाने से बाज़ आई। 19वह
चल पड़ीं और चलते चलते बैत-लहम पहुँच गईं।
जब दाख़िल हुईं तो पूरे शहर में हलचल मच गई।
औरतें कहने लगीं, “क्या यह नओमी नहीं है?”

20नओमी ने जवाब दिया, “अब मुझे नओमी[a]
मत कहना बल्कि मारा,[b] क्योंकि क़ादिरे-मुतलक़
ने मुझे सख़्त मुसीबत में डाल दिया है। 21यहाँ
से जाते वक़्त मेरे हाथ भरे हुए थे, लेकिन अब
रब मुझे ख़ाली हाथ वापस ले आया है। चुनाँचे
मुझे नओमी मत कहना। रब ने ख़ुद मेरे ख़िलाफ़
गवाही दी है, क़ादिरे-मुतलक़ ने मुझे इस मुसीबत
में डाला है।”

22जब नओमी अपनी मोआबी बहू के साथ
बैत-लहम पहुँची तो जौ की फ़सल की कटाई शुरू
हो चुकी थी।

रूत की बोअज़ से मुलाक़ात

2 बैत-लहम में नओमी के मरहूम शौहर का
रिश्तेदार रहता था जिसका नाम बोअज़
था। वह असरो-रसूख़ रखता था, और उस की
ज़मीनें थीं।

2एक दिन रूत ने अपनी सास से कहा, “मैं
खेतों में जाकर फ़सल की कटाई से बची हुई बालें
चुन लूँ। कोई न कोई तो मुझे इसकी इजाज़त
देगा।” नओमी ने जवाब दिया, “ठीक है बेटी,
जाएँ।” 3रूत किसी खेत में गई और मज़दूरों के
पीछे पीछे चलती हुई बची हुई बालें चुनने लगी।
उसे मालूम न था कि खेत का मालिक सुसर का
रिश्तेदार बोअज़ है।

4इतने में बोअज़ बैत-लहम से पहुँचा। उसने
अपने मज़दूरों से कहा, “रब आपके साथ हो।”
उन्होंने जवाब दिया, “और रब आपको भी बरकत
दे!” 5फिर बोअज़ ने मज़दूरों के इंचार्ज से
पूछा, “उस जवान औरत का मालिक कौन है?”
6आदमी ने जवाब दिया, “यह मोआबी औरत
नओमी के साथ मुल्के-मोआब से आई है। 7इसने
मुझसे मज़दूरों के पीछे चलकर बची हुई बालें
चुनने की इजाज़त ली। यह थोड़ी देर झोंपड़ी के
साये में आराम करने के सिवा सुबह से लेकर अब
तक काम में लगी रही है।”

8यह सुनकर बोअज़ ने रूत से बात की, “बेटी,
मेरी बात सुनें! किसी और खेत में बची हुई बालें
चुनने के लिए न जाएँ बल्कि यहीं मेरी नौकरानियों
के साथ रहें। 9खेत के उस हिस्से पर ध्यान दें जहाँ
फ़सल की कटाई हो रही है और नौकरानियों के
पीछे पीछे चलती रहें। मैंने आदमियों को आपको
छेड़ने से मना किया है। जब भी आपको प्यास
लगे तो उन बरतनों से पानी पीना जो आदमियों
ने कुएँ से भर रखे हैं।”

10रूत मुँह के बल झुक गई और बोली, “मैं
इस लायक़ नहीं कि आप मुझ पर इतनी मेहरबानी
करें। मैं तो परदेसी हूँ। आप क्यों मेरी क़दर करते
हैं?” 11बोअज़ ने जवाब दिया, “मुझे वह कुछ
बताया गया है जो आपने अपने शौहर की वफ़ात
से लेकर आज तक अपनी सास के लिए किया है।
आप अपने माँ-बाप और अपने वतन को छोड़कर
एक क़ौम में बसने आई हैं जिसे पहले से नहीं
जानती थीं। 12आप रब इसराईल के ख़ुदा के परों
तले पनाह लेने आई हैं। अब वह आपको आपकी
नेकी का पूरा अज्र दे।” 13रूत ने कहा, “मेरे
आक़ा, अल्लाह करे कि मैं आइंदा भी आपकी
मंज़ूरे-नज़र रहूँ। गो मैं आपकी नौकरानियों की

[a]ख़ुशगवार, ख़ुशीवाली।

[b]कड़वी।

हैसियत भी नहीं रखती तो भी आपने मुझसे शफ़क़त भरी बातें करके मुझे तसल्ली दी है।”

14खाने के वक़्त बोअज़ ने रूत को बुलाकर कहा, “इधर आकर रोटी खाएँ और अपना नवाला सिरके में डुबो दें।” रूत उसके मज़दूरों के साथ बैठ गई, और बोअज़ ने उसे जौ के भुने हुए दाने दे दिए। रूत ने जी भरकर खाना खाया। फिर भी कुछ बच गया। 15जब वह काम जारी रखने के लिए उठी तो बोअज़ ने हुक्म दिया, “उसे पूलों के दरमियान भी बालें जमा करने दो, और अगर वह ऐसा करे तो उस की बेइज़्ज़ती मत करना। 16न सिर्फ़ यह बल्कि काम करते वक़्त इधर-उधर पूलों की कुछ बालें ज़मीन पर गिरने दो। जब वह उन्हें जमा करने आए तो उसे मत झिड़कना!”

17रूत ने खेत में शाम तक काम जारी रखा। जब उसने बालों को कूट लिया तो दानों के तक़रीबन 13 किलोग्राम निकले। 18फिर वह सब कुछ उठाकर अपने घर वापस ले आई और सास को दिखाया। साथ साथ उसने उसे वह भुने हुए दाने भी दिए जो दोपहर के खाने से बच गए थे। 19नओमी ने पूछा, “आपने यह सब कुछ कहाँ से जमा किया? बताएँ, आप कहाँ थीं? अल्लाह उसे बरकत दे जिसने आपकी इतनी क़दर की है!”

रूत ने कहा, “जिस आदमी के खेत में मैंने आज काम किया उसका नाम बोअज़ है।” 20नओमी पुकार उठी, “रब उसे बरकत दे! वह तो हमारा क़रीबी रिश्तेदार है, और शरीअत के मुताबिक़ उसका हक़ है कि वह हमारी मदद करे। अब मुझे मालूम हुआ है कि अल्लाह हम पर और हमारे मरहूम शौहरों पर रहम करने से बाज़ नहीं आया!”

21रूत बोली, “उसने मुझसे यह भी कहा कि कहीं और न जाना बल्कि कटाई के इख़्तिताम तक मेरे मज़दूरों के पीछे पीछे बालें जमा करना।”

22नओमी ने जवाब में कहा, “बहुत अच्छा। बेटी, ऐसा ही करें। उस की नौकरानियों के साथ रहने का यह फ़ायदा है कि आप महफ़ूज़ रहेंगी। किसी और के खेत में जाएँ तो हो सकता है कि कोई आपको तंग करे।”

23चुनाँचे रूत जौ और गंदुम की कटाई के पूरे मौसम में बोअज़ की नौकरानियों के पास जाती और बची हुई बालें चुनती। शाम को वह अपनी सास के घर वापस चली जाती थी।

रूत की शादी की कोशिशें

3 एक दिन नओमी रूत से मुख़ातिब हुई, “बेटी, मैं आपके लिए घर का बंदोबस्त करना चाहती हूँ, ऐसी जगह जहाँ आपकी ज़रूरियात आइंदा भी पूरी होती रहेंगी। 2अब देखें, जिस आदमी की नौकरानियों के साथ आपने बालें चुनी हैं वह हमारा क़रीबी रिश्तेदार है। आज शाम को बोअज़ गाहने की जगह पर जौ फटकेगा। 3तो सुन लें, अच्छी तरह नहाकर ख़ुशबूदार तेल लगा लें और अपना सबसे ख़ूबसूरत लिबास पहन लें। फिर गाहने की जगह जाएँ। लेकिन उसे पता न चले कि आप आई हैं। जब वह खाने-पीने से फ़ारिग़ हो जाएँ 4तो देख लें कि बोअज़ सोने के लिए कहाँ लेट जाता है। फिर जब वह सो जाएगा तो वहाँ जाएँ और कम्बल को उसके पैरों से उतारकर उनके पास लेट जाएँ। बाक़ी जो कुछ करना है वह आपको उसी वक़्त बताएगा।”

5रूत ने जवाब दिया, “ठीक है। जो कुछ भी आपने कहा है मैं करूँगी।” 6वह अपनी सास की हिदायत के मुताबिक़ तैयार हुई और शाम के वक़्त गाहने की जगह पर पहुँची। 7वहाँ बोअज़ खाने-पीने और ख़ुशी मनाने के बाद जौ के ढेर के पास लेटकर सो गया। फिर रूत चुपके से उसके पास आई। उसके पैरों से कम्बल हटाकर वह उनके पास लेट गई।

8आधी रात को बोअज़ घबरा गया। टटोल टटोलकर उसे पता चला कि पैरों के पास औरत पड़ी है। 9उसने पूछा, “कौन है?” रूत ने जवाब दिया, “आपकी ख़ादिमा रूत। मेरी एक गुज़ारिश है। चूँकि आप मेरे क़रीबी रिश्तेदार हैं इसलिए आपका हक़ है कि मेरी ज़रूरियात पूरी करें। मेहरबानी करके अपने लिबास का दामन मुझ पर बिछाकर ज़ाहिर करें कि मेरे साथ शादी करेंगे।”

10बोअज़ बोला, “बेटी, रब आपको बरकत दे!
अब आपने अपने सुसराल से वफ़ादारी का पहले
की निसबत ज़्यादा इज़हार किया है, क्योंकि आप
जवान आदमियों के पीछे न लगीं, ख़ाह ग़रीब हों
या अमीर। 11बेटी, अब फ़िकर न करें। मैं ज़रूर
आपकी यह गुज़ारिश पूरी करूँगा। आख़िर तमाम
मक़ामी लोग जान गए हैं कि आप शरीफ़ औरत
हैं। 12आपकी बात सच है कि मैं आपका क़रीबी
रिश्तेदार हूँ और यह मेरा हक़ है कि आपकी
ज़रूरियात पूरी करूँ। लेकिन एक और आदमी है
जिसका आपसे ज़्यादा क़रीबी रिश्ता है। 13रात
के लिए यहाँ ठहरें! कल मैं उस आदमी से बात
करूँगा। अगर वह आपसे शादी करके रिश्तेदारी
का हक़ अदा करना चाहे तो ठीक है। अगर नहीं
तो रब की क़सम, मैं यह ज़रूर करूँगा। आप सुबह
के वक़्त तक यहीं लेटी रहें।”

14चुनाँचे रूत बोअज़ के पैरों के पास लेटी रही।
लेकिन वह सुबह मुँह अंधेरे उठकर चली गई ताकि
कोई उसे पहचान न सके, क्योंकि बोअज़ ने कहा
था, “किसी को पता न चले कि कोई औरत यहाँ
गाहने की जगह पर मेरे पास आई है।” 15रूत के
जाने से पहले बोअज़ बोला, “अपनी चादर बिछा
दें!” फिर उसने कोई बरतन छः दफ़ा जौ के दानों
से भरकर चादर में डाल दिया और उसे रूत के
सर पर रख दिया। फिर वह शहर में वापस चला
गया।

16जब रूत घर पहुँची तो सास ने पूछा, “बेटी,
वक़्त कैसा रहा?” रूत ने उसे सब कुछ सुनाया
जो बोअज़ ने जवाब में किया था। 17रूत बोली,
“जौ के यह दाने भी उस की तरफ़ से हैं। वह
नहीं चाहता था कि मैं ख़ाली हाथ आपके पास
वापस आऊँ।” 18यह सुनकर नओमी ने रूत
को तसल्ली दी, “बेटी, जब तक कोई नतीजा
न निकले यहाँ ठहर जाएँ। अब यह आदमी
आराम नहीं करेगा बल्कि आज ही मामले का हल
निकालेगा।”

4 बोअज़ शहर के दरवाज़े के पास जाकर
बैठ गया जहाँ बुज़ुर्ग फ़ैसले किया करते
थे। कुछ देर के बाद वह रिश्तेदार वहाँ से गुज़रा
जिसका ज़िक्र बोअज़ ने रूत से किया था। बोअज़
उससे मुख़ातिब हुआ, “दोस्त, इधर आएँ। मेरे
पास बैठ जाएँ।”

रिश्तेदार उसके पास बैठ गया 2तो बोअज़ ने
शहर के दस बुज़ुर्गों को भी साथ बिठाया। 3फिर
उसने रिश्तेदार से बात की, “नओमी मुल्के-
मोआब से वापस आकर अपने शौहर इलीमलिक
की ज़मीन फ़रोख़्त करना चाहती है। 4यह ज़मीन
हमारे ख़ानदान का मौरूसी हिस्सा है, इसलिए
मैंने मुनासिब समझा कि आपको इत्तला दूँ
ताकि आप यह ज़मीन ख़रीद लें। बैत-लहम के
बुज़ुर्ग और साथ बैठे राहनुमा इसके गवाह होंगे।
लाज़िम है कि यह ज़मीन हमारे ख़ानदान का
हिस्सा रहे, इसलिए बताएँ कि क्या आप इसे
ख़रीदकर छुड़ाएँगे? आपका सबसे क़रीबी रिश्ता
है, इसलिए यह आप ही का हक़ है। अगर
आप ज़मीन ख़रीदना न चाहें तो यह मेरा हक़
बनेगा।” रिश्तेदार ने जवाब दिया, “ठीक है, मैं
इसे ख़रीदकर छुड़ाऊँगा।” 5फिर बोअज़ बोला,
“अगर आप नओमी से ज़मीन ख़रीदें तो आपको
उस की मोआबी बहू रूत से शादी करनी पड़ेगी
ताकि मरहूम शौहर की जगह औलाद पैदा करें
जो उसका नाम रखकर यह ज़मीन सँभालें।”

6यह सुनकर रिश्तेदार ने कहा, “फिर मैं इसे
ख़रीदना नहीं चाहता, क्योंकि ऐसा करने से मेरी
मौरूसी ज़मीन को नुक़सान पहुँचेगा। आप ही इसे
ख़रीदकर छुड़ाएँ।”

7उस ज़माने में अगर ऐसे किसी मामले में कोई
ज़मीन ख़रीदने का अपना हक़ किसी दूसरे को
मुंतक़िल करना चाहता था तो वह अपनी चप्पल
उतारकर उसे दे देता था। इस तरीक़े से फ़ैसला
क़ानूनी तौर पर तय हो जाता था। 8चुनाँचे रूत के
ज़्यादा क़रीबी रिश्तेदार ने अपनी चप्पल उतारकर
बोअज़ को दे दी और कहा, “आप ही ज़मीन को
ख़रीद लें।” 9तब बोअज़ ने बुज़ुर्गों और बाक़ी
लोगों के सामने एलान किया, “आज आप गवाह
हैं कि मैंने नओमी से सब कुछ ख़रीद लिया है

जो उसके मरहूम शौहर इलीमलिक और उसके
दो बेटों किलियोन और महलोन का था। 10साथ
ही मैंने महलोन की बेवा मोआबी औरत रूत से
शादी करने का वादा किया है ताकि महलोन
के नाम से बेटा पैदा हो। यों मरहूम की मौरूसी
ज़मीन ख़ानदान से छिन नहीं जाएगी, और उसका
नाम हमारे ख़ानदान और बैत-लहम के बाशिंदों में
क़ायम रहेगा। आज आप सब गवाह हैं!”

11बुज़ुर्गों और शहर के दरवाज़े पर बैठे दीगर
मर्दों ने इसकी तसदीक़ की, “हम गवाह हैं!
रब आपके घर में आनेवाली इस औरत को उन
बरकतों से नवाज़े जिनसे उसने राख़िल और
लियाह को नवाज़ा, जिनसे तमाम इसराईली
निकले। रब करे कि आपकी दौलत और इज़्ज़त
इफ़राता यानी बैत-लहम में बढ़ती जाए। 12वह
आप और आपकी बीवी को उतनी औलाद बख़्शे
जितनी तमर और यहूदाह के बेटे फ़ारस के
ख़ानदान को बख़्शी थी।”

13चुनाँचे रूत बोअज़ की बीवी बन गई। और
रब की मरज़ी से रूत शादी के बाद हामिला हुई।
जब उसके बेटा हुआ 14तो बैत-लहम की औरतों
ने नओमी से कहा, “रब की तमजीद हो! आपको
यह बच्चा अता करने से उसने ऐसा शख़्स मुहैया
किया है जो आपका ख़ानदान सँभालेगा। अल्लाह
करे कि उस की शोहरत पूरे इसराईल में फैल
जाए। 15उससे आप ताज़ादम हो जाएँगी, और
बुढ़ापे में वह आपको सहारा देगा। क्योंकि आपकी
बहू जो आपको प्यार करती है और जिसकी
क़दरो-क़ीमत सात बेटों से बढ़कर है उसी ने उसे
जन्म दिया है!”

16नओमी बच्चे को अपनी गोद में बिठाकर उसे
पालने लगी। 17पड़ोसी औरतों ने उसका नाम
ओबेद यानी ख़िदमत करनेवाला रखा। उन्होंने
कहा, “नओमी के हाँ बेटा पैदा हुआ है!”

ओबेद दाऊद बादशाह के बाप यस्सी का
बाप था। 18ज़ैल में फ़ारस का दाऊद तक
नसबनामा है : फ़ारस, हसरोन, 19राम,
अम्मीनदाब, 20नहसोन, सलमोन, 21बोअज़,
ओबेद, 22यस्सी और दाऊद।

1 समुएल

हन्ना अल्लाह से बच्चा माँगती है

1 इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े के शहर
रामातायम-सोफ़ीम यानी रामा में एक
इफ़राईमी रहता था जिसका नाम इलक़ाना बिन
यरोहाम बिन इलीहू बिन तूख़ू बिन सूफ़ था।
2इलक़ाना की दो बीवियाँ थीं। एक का नाम हन्ना
था और दूसरी का फ़निन्ना। फ़निन्ना के बच्चे थे,
लेकिन हन्ना बेऔलाद थी।

3इलक़ाना हर साल अपने ख़ानदान समेत
सफ़र करके सैला के मक़दिस के पास जाता
ताकि वहाँ रब्बुल-अफ़वाज के हुज़ूर क़ुरबानी
गुज़राने और उस की परस्तिश करे। उन दिनों
में एली इमाम के दो बेटे हुफ़नी और फ़ीनहास
सैला में इमाम की ख़िदमत अंजाम देते थे। 4हर
साल इलक़ाना अपनी क़ुरबानी पेश करने के बाद
क़ुरबानी के गोश्त के टुकड़े फ़निन्ना और उसके
बेटे-बेटियों में तक़सीम करता। 5हन्ना को भी
गोश्त मिलता, लेकिन जहाँ दूसरों को एक हिस्सा
मिलता वहाँ उसे दो हिस्से मिलते थे। क्योंकि
इलक़ाना उससे बहुत मुहब्बत रखता था, अगरचे
अब तक रब की मरज़ी नहीं थी कि हन्ना के
बच्चे पैदा हों। 6फ़निन्ना की हन्ना से दुश्मनी थी,
इसलिए वह हर साल हन्ना के बाँझपन का मज़ाक़
उड़ाकर उसे तंग करती थी। 7साल बसाल ऐसा
ही हुआ करता था। जब भी वह रब के मक़दिस
के पास जाते तो फ़निन्ना हन्ना को इतना तंग
करती कि वह उस की बातें सुन सुनकर रो पड़ती
और खा-पी न सकती। 8फिर इलक़ाना पूछता,
"हन्ना, तू क्यों रो रही है? तू खाना क्यों नहीं
खा रही? उदास होने की क्या ज़रूरत? मैं तो हूँ।
क्या यह दस बेटों से कहीं बेहतर नहीं?"

9एक दिन जब वह सैला में थे तो हन्ना खाने-
पीने के बाद दुआ करने के लिए उठी। एली इमाम
रब के मक़दिस के दरवाज़े के पास कुरसी पर
बैठा था। 10हन्ना शदीद परेशानी के आलम में
फूट फूटकर रोने लगी। रब से दुआ करते करते
11उसने क़सम खाई, "ऐ रब्बुल-अफ़वाज, मेरी
बुरी हालत पर नज़र डालकर मुझे याद कर!
अपनी ख़ादिमा को मत भूलना बल्कि बेटा अता
फ़रमा! अगर तू ऐसा करे तो मैं उसे तुझे वापस
कर दूँगी। ऐ रब, उस की पूरी ज़िंदगी तेरे लिए
मख़सूस होगी! इसका निशान यह होगा कि
उसके बाल कभी नहीं कटवाए जाएंगे।"

12हन्ना बड़ी देर तक यों दुआ करती रही। एली
उसके मुँह पर ग़ौर करने लगा 13तो देखा कि हन्ना
के होंट तो हिल रहे हैं लेकिन आवाज़ सुनाई नहीं
दे रही, क्योंकि हन्ना दिल ही दिल में दुआ कर
रही थी। लेकिन एली को ऐसा लग रहा था कि
वह नशे में धुत है, 14इसलिए उसने उसे झिड़कते
हुए कहा, "तू कब तक नशे में धुत रहेगी? मै पीने
से बाज़ आ!"

15हन्ना ने जवाब दिया, “मेरे आक़ा, ऐसी कोई
बात नहीं है। मैंने न मै, न कोई और नशा-आवर
चीज़ चखी है। बात यह है कि मैं बड़ी रंजीदा हूँ,
इसलिए रब के हुज़ूर अपने दिल की आहो-ज़ारी
उंडेल दी है।[a] 16यह न समझें कि मैं निकम्मी
औरत हूँ, बल्कि मैं बड़े ग़म और अज़ियत में दुआ
कर रही थी।”

17यह सुनकर एली ने जवाब दिया, “सलामती
से अपने घर चली जा! इसराईल का ख़ुदा तेरी
दरख़ास्त पूरी करे।” 18हन्ना ने कहा, “अपनी
ख़ादिमा पर आपकी नज़रे-करम हो।” फिर उसने
जाकर कुछ खाया, और उसका चेहरा उदास न
रहा।

समुएल की पैदाइश और बचपन

19अगले दिन पूरा ख़ानदान सुबह-सवेरे उठा।
उन्होंने मक़दिस में जाकर रब की परस्तिश की,
फिर रामा वापस चले गए जहाँ उनका घर था।
और रब ने हन्ना को याद करके उस की दुआ
सुनी। 20इलक़ाना और हन्ना के बेटा पैदा हुआ।
हन्ना ने उसका नाम समुएल यानी ‘उसका नाम
अल्लाह है’ रखा, क्योंकि उसने कहा, “मैंने उसे
रब से माँगा।”

21अगले साल इलक़ाना ख़ानदान के साथ
मामूल के मुताबिक़ सैला गया ताकि रब को
सालाना क़ुरबानी पेश करे और अपनी मन्नत पूरी
करे। 22लेकिन हन्ना न गई। उसने अपने शौहर
से कहा, “जब बच्चा दूध पीना छोड़ देगा तब ही
मैं उसे लेकर रब के हुज़ूर पेश करूँगी। उस वक़्त
से वह हमेशा वहीं रहेगा।” 23इलक़ाना ने जवाब
दिया, “वह कुछ कर जो तुझे मुनासिब लगे। बच्चे
का दूध छुड़ाने तक यहाँ रह। लेकिन रब अपना
कलाम क़ायम रखे।” चुनाँचे हन्ना बच्चे के दूध
छुड़ाने तक घर में रही।

24जब समुएल ने दूध पीना छोड़ दिया तो हन्ना
उसे सैला में रब के मक़दिस के पास ले गई, गो
बच्चा अभी छोटा था। क़ुरबानियों के लिए उसके
पास तीन बैल, मैदे के तक़रीबन 16 किलोग्राम
और मै की मशक थी। 25बैल को क़ुरबानगाह पर
चढ़ाने के बाद इलक़ाना और हन्ना बच्चे को एली
के पास ले गए। 26हन्ना ने कहा, “मेरे आक़ा,
आपकी हयात की क़सम, मैं वही औरत हूँ जो
कुछ साल पहले यहाँ आपकी मौजूदगी में खड़ी
दुआ कर रही थी। 27उस वक़्त मैंने इलतमास
की थी कि रब मुझे बेटा अता करे, और रब ने मेरी
सुनी है। 28चुनाँचे अब मैं अपना वादा पूरा करके
बेटे को रब को वापस कर देती हूँ। उम्र-भर वह रब
के लिए मख़सूस होगा।” तब उसने रब के हुज़ूर
सिजदा किया।

हन्ना का गीत

2 वहाँ हन्ना ने यह गीत गाया,
“मेरा दिल रब की ख़ुशी मनाता है, क्योंकि
उसने मुझे क़ुव्वत अता की है। मेरा मुँह दिलेरी से
अपने दुश्मनों के ख़िलाफ़ बात करता है, क्योंकि
मैं तेरी नजात के बाइस बाग़ बाग़ हूँ।

2रब जैसा क़ुद्दूस कोई नहीं है, तेरे सिवा कोई
नहीं है। हमारे ख़ुदा जैसी कोई चट्टान नहीं है।
3डींगें मारने से बाज़ आओ! गुस्ताख़ बातें
मत बको! क्योंकि रब ऐसा ख़ुदा है जो सब
कुछ जानता है, वह तमाम आमाल को तोलकर
परखता है। 4अब बड़ों की कमानें टूट गई हैं
जबकि गिरनेवाले क़ुव्वत से कमरबस्ता हो गए
हैं। 5जो पहले सेर थे वह रोटी मिलने के लिए
मज़दूरी करते हैं जबकि जो पहले भूके थे वह सेर
हो गए हैं। बेऔलाद औरत के सात बच्चे पैदा हुए
हैं जबकि वाफ़िर बच्चों की माँ मुरझा रही है।

6रब एक को मरने देता और दूसरे को ज़िंदा
होने देता है। वह एक को पाताल में उतरने देता
और दूसरे को वहाँ से निकल आने देता है। 7रब
ही ग़रीब और अमीर बना देता है, वही पस्त
करता और वही सरफ़राज़ करता है। 8वह ख़ाक

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : अपनी जान उंडेल दी है।

में दबे आदमी को खड़ा करता है और राख में
लेटे ज़रूरतमंद को सरफ़राज़ करता है, फिर उन्हें
रईसों के साथ इज़्ज़त की कुरसी पर बिठा देता
है। क्योंकि दुनिया की बुनियादें रब की हैं, और
उसी ने उन पर ज़मीन रखी है।

9वह अपने वफ़ादार पैरोकारों के पाँव महफ़ूज़
रखेगा जबकि शरीर तारीकी में चुप हो जाएंगे।
क्योंकि इनसान अपनी ताक़त से कामयाब नहीं
होता। 10जो रब से लड़ने की जुर्रत करें वह पाश
पाश हो जाएंगे। रब आसमान से उनके ख़िलाफ़
गरजकर दुनिया की इंतहा तक सबकी अदालत
करेगा। वह अपने बादशाह को तक़वियत और
अपने मसह किए हुए ख़ादिम को क़ुव्वत अता
करेगा।”
11फिर इलक़ाना और हन्ना रामा में अपने घर
वापस चले गए। लेकिन उनका बेटा एली इमाम के
पास रहा और मक़दिस में रब की ख़िदमत करने
लगा।

एली के बेटों की बेदीन ज़िंदगी

12लेकिन एली के बेटे बदमाश थे। न वह
रब को जानते थे, 13न इमाम की हैसियत से
अपने फ़रायज़ सहीह तौर पर अदा करते थे।
क्योंकि जब भी कोई आदमी अपनी क़ुरबानी पेश
करके रिफ़ाक़ती खाने के लिए गोश्त उबालता
तो एली के बेटे अपने नौकर को वहाँ भेज देते।
यह नौकर सिहशाख़ा काँटा 14देग में डालकर
गोश्त का हर वह टुकड़ा अपने मालिकों के
पास ले जाता जो काँटे से लग जाता। यही
उनका तमाम इसराईलियों के साथ सुलूक था जो
सैला में क़ुरबानियाँ चढ़ाने आते थे। 15न सिर्फ़
यह बल्कि कई बार नौकर उस वक़्त भी आ
जाता जब जानवर की चरबी अभी क़ुरबानगाह
पर जलानी होती थी। फिर वह तक़ाज़ा करता,
“मुझे इमाम के लिए कच्चा गोश्त दे दो! उसे
उबला गोश्त मंज़ूर नहीं बल्कि सिर्फ़ कच्चा गोश्त,
क्योंकि वह उसे भूनना चाहता है।” 16क़ुरबानी
पेश करनेवाला एतराज़ करता, “पहले तो रब
के लिए चरबी जलाना है, इसके बाद ही जो
जी चाहे ले लें।” फिर नौकर बदतमीज़ी करता,
“नहीं, उसे अभी दे दो, वरना मैं ज़बरदस्ती ले
लूँगा।” 17इन जवान इमामों का यह गुनाह रब
की नज़र में निहायत संगीन था, क्योंकि वह रब
की क़ुरबानियाँ हक़ीर जानते थे।

माँ-बाप समुएल से मिलने आते हैं

18लेकिन छोटा समुएल रब के हुज़ूर ख़िदमत
करता रहा। उसे भी दूसरे इमामों की तरह कतान
का बालापोश दिया गया था। 19हर साल जब
उस की माँ ख़ाविंद के साथ क़ुरबानी पेश करने
के लिए सैला आती तो वह नया चोग़ा सीकर उसे
दे देती। 20और रवाना होने से पहले एली समुएल
के माँ-बाप को बरकत देकर इलक़ाना से कहता,
“हन्ना ने रब से बच्चा माँग लिया और जब मिला
तो उसे रब को वापस कर दिया। अब रब आपको
इस बच्चे की जगह मज़ीद बच्चे दे।” इसके बाद
वह अपने घर चले जाते। 21और वाक़ई, रब ने
हन्ना को मज़ीद तीन बेटे और दो बेटियाँ अता
कीं। यह बच्चे घर में रहे, लेकिन समुएल रब के
हुज़ूर ख़िदमत करते करते जवान हो गया।

एली के बेटे बाप की नहीं सुनते

22एली उस वक़्त बहुत बूढ़ा हो चुका था। बेटों
का तमाम इसराईल के साथ बुरा सुलूक उसके
कानों तक पहुँच गया था, बल्कि यह भी कि बेटे
उन औरतों से नाजायज़ ताल्लुक़ात रखते हैं जो
मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर ख़िदमत करती
हैं। 23उसने उन्हें समझाया भी था, “आप ऐसी
हरकतें क्यों कर रहे हैं? मुझे तमाम लोगों से
आपके शरीर कामों की ख़बरें मिलती रहती हैं।
24बेटो, ऐसा मत करना! जो बातें आपके बारे
में रब की क़ौम में फैल गई हैं वह अच्छी नहीं।
25देखें, अगर इनसान किसी दूसरे इनसान का
गुनाह करे तो हो सकता है अल्लाह दोनों का
दरमियानी बनकर क़ुसूरवार शख़्स पर रहम करे।

लेकिन अगर कोई रब का गुनाह करे तो फिर कौन
उसका दरमियानी बनकर उसे बचाएगा?”
लेकिन एली के बेटों ने बाप की न सुनी, क्योंकि
रब की मरज़ी थी कि उन्हें सज़ाए-मौत मिल जाए।
26लेकिन समुएल उनसे फ़रक़ था। जितना वह
बड़ा होता गया उतनी उस की रब और इनसान के
सामने क़बूलियत बढ़ती गई।

एली के घराने को सज़ा मिलने की पेशगोई

27एक दिन एक नबी एली के पास आया और
कहा, “रब फ़रमाता है, ‘क्या जब तेरा बाप हारून
और उसका घराना मिसर के बादशाह के ग़ुलाम थे
तो मैंने अपने आपको उस पर ज़ाहिर न किया?
28गो इसराईल के बारह क़बीले थे लेकिन मैंने
मुक़र्रर किया कि उसी के घराने के मर्द मेरे इमाम
बनकर क़ुरबानगाह के सामने ख़िदमत करें, बख़ूर
जलाएँ और मेरे हुज़ूर इमाम का बालापोश पहनें।
साथ साथ मैंने उन्हें क़ुरबानगाह पर जलनेवाली
क़ुरबानियों का एक हिस्सा मिलने का हक़ दे
दिया। 29तो फिर तुम लोग ज़बह और ग़ल्ला की
वह क़ुरबानियाँ हक़ीर क्यों जानते हो जो मुझे ही
पेश की जाती हैं और जो मैंने अपनी सुकूनतगाह
के लिए मुक़र्रर की थीं? एली, तू अपने बेटों
का मुझसे ज़्यादा एहतराम करता है। तुम तो मेरी
क़ौम इसराईल की हर क़ुरबानी के बेहतरीन हिस्से
खा खाकर मोटे हो गए हो।’
30चुनाँचे रब जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता
है, वादा तो मैंने किया था कि लावी के क़बीले
का तेरा घराना हमेशा ही इमाम की ख़िदमत
सरंजाम देगा। लेकिन अब मैं एलान करता हूँ कि
ऐसा कभी नहीं होगा! क्योंकि जो मेरा एहतराम
करते हैं उनका मैं एहतराम करूँगा, लेकिन जो
मुझे हक़ीर जानते हैं उन्हें हक़ीर जाना जाएगा।
31इसलिए सुन! ऐसे दिन आ रहे हैं जब मैं तेरी
और तेरे घराने की ताक़त यों तोड़ डालूँगा कि घर
का कोई भी बुज़ुर्ग नहीं पाया जाएगा। 32और तू
मक़दिस में मुसीबत देखेगा हालाँकि मैं इसराईल
के साथ भलाई करता रहूँगा। तेरे घर में कभी
भी बुज़ुर्ग नहीं पाया जाएगा। 33मैं तुममें से हर
एक को तो अपनी ख़िदमत से निकालकर हलाक
नहीं करूँगा जब तेरी आँखें धुँधली-सी पड़ जाएँगी
और तेरी जान हलकान हो जाएगी। लेकिन तेरी
तमाम औलाद ग़ैरतबई मौत मरेगी। 34तेरे बेटे
हुफ़नी और फ़ीनहास दोनों एक ही दिन हलाक
हो जाएंगे। इस निशान से तुझे यक़ीन आएगा कि
जो कुछ मैंने फ़रमाया है वह सच है।
35तब मैं अपने लिए एक इमाम खड़ा करूँगा
जो वफ़ादार रहेगा। जो भी मेरा दिल और मेरी
जान चाहेगी वही वह करेगा। मैं उसके घर की
मज़बूत बुनियादें रखूँगा, और वह हमेशा तक मेरे
मसह किए हुए ख़ादिम के हुज़ूर आता जाता
रहेगा। 36उस वक़्त तेरे घर के बचे हुए तमाम
अफ़राद उस इमाम के सामने झुक जाएंगे और
पैसे और रोटी माँगकर इलतमास करेंगे, ‘मुझे
इमाम की कोई न कोई ज़िम्मेदारी दें ताकि रोटी
का टुकड़ा मिल जाए’।”

अल्लाह समुएल से हमकलाम होता है

3 छोटा समुएल एली के ज़ेरे-निगरानी रब के
हुज़ूर ख़िदमत करता था। उन दिनों में रब
की तरफ़ से बहुत कम पैग़ाम या रोयाएँ मिलती
थीं। 2एक रात एली जिसकी आँखें इतनी कमज़ोर
हो गई थीं कि देखना तक़रीबन नामुमकिन था
मामूल के मुताबिक़ सो गया था। 3समुएल भी लेट
गया था। वह रब के मक़दिस में सो रहा था जहाँ
अहद का संदूक़ पड़ा था। शमादान अब तक रब के
हुज़ूर जल रहा था 4-5कि अचानक रब ने आवाज़
दी, “समुएल!” समुएल ने जवाब दिया, “जी,
मैं अभी आता हूँ।” वह भागकर एली के पास
गया और कहा, “जी जनाब, मैं हाज़िर हूँ। आपने
मुझे बुलाया?” एली बोला, “नहीं, मैंने तुम्हें नहीं
बुलाया। वापस जाकर दुबारा लेट जाओ।” चुनाँचे
समुएल दुबारा लेट गया।
6लेकिन रब ने एक बार फिर आवाज़ दी,
“समुएल!” लड़का दुबारा उठा और एली के पास
जाकर बोला, “जी जनाब, मैं हाज़िर हूँ। आपने

मुझे बुलाया?” एली ने जवाब दिया, “नहीं बेटा, मैंने तुम्हें नहीं बुलाया। दुबारा सो जाओ।”

7उस वक़्त समुएल रब की आवाज़ नहीं पहचान सकता था, क्योंकि अभी उसे रब का कोई पैग़ाम नहीं मिला था। 8चुनाँचे रब ने तीसरी बार आवाज़ दी, “समुएल!” एक और मरतबा समुएल उठ खड़ा हुआ और एली के पास जाकर बोला, “जी जनाब, मैं हाज़िर हूँ। आपने मुझे बुलाया?” यह सुनकर एली ने जान लिया कि रब समुएल से हमकलाम हो रहा है। 9इसलिए उसने लड़के को बताया, “अब दुबारा लेट जाओ, लेकिन अगली दफ़ा जब आवाज़ सुनाई दे तो तुम्हें कहना है, ‘ऐ रब, फ़रमा। तेरा ख़ादिम सुन रहा है’।”

समुएल एक बार फिर अपने बिस्तर पर लेट गया। 10रब आकर वहाँ खड़ा हुआ और पहले की तरह पुकारा, “समुएल! समुएल!” लड़के ने जवाब दिया, “ऐ रब, फ़रमा। तेरा ख़ादिम सुन रहा है।” 11फिर रब समुएल से हमकलाम हुआ, “देख, मैं इसराईल में इतना हौलनाक काम करूँगा कि जिसे भी इसकी ख़बर मिलेगी उसके कान बजने लगेंगे। 12उस वक़्त मैं शुरू से लेकर आख़िर तक वह तमाम बातें पूरी करूँगा जो मैंने एली और उसके घराने के बारे में की हैं। 13मैं एली को आगाह कर चुका हूँ कि उसका घराना हमेशा तक मेरी अदालत का निशाना बना रहेगा। क्योंकि गो उसे साफ़ मालूम था कि उसके बेटे अपनी ग़लत हरकतों से मेरा ग़ज़ब अपने आप पर लाएँगे तो भी उसने उन्हें करने दिया और न रोका। 14मैंने क़सम खाई है कि एली के घराने का क़ुसूर न ज़बह और न ग़ल्ला की किसी क़ुरबानी से दूर किया जा सकता है बल्कि इसका कफ़्फ़ारा कभी भी नहीं दिया जा सकेगा!”

15इसके बाद समुएल सुबह तक अपने बिस्तर पर लेटा रहा। फिर वह मामूल के मुताबिक़ उठा और रब के घर के दरवाज़े खोल दिए। वह एली को अपनी रोया बताने से डरता था, 16लेकिन एली ने उसे बुलाकर कहा, “समुएल, मेरे बेटे!” समुएल ने जवाब दिया, “जी, मैं हाज़िर हूँ।” 17एली ने पूछा, “रब ने तुम्हें क्या बताया है? कोई भी बात मुझसे मत छुपाना! अल्लाह तुम्हें सख़्त सज़ा दे अगर तुम एक लफ़्ज़ भी मुझसे पोशीदा रखो।” 18फिर समुएल ने उसे खुलकर सब कुछ बता दिया और एक बात भी न छुपाई। एली ने कहा, “वही रब है। जो कुछ उस की नज़र में ठीक है उसे वह करे।”

19समुएल जवान होता गया, और रब उसके साथ था। उसने समुएल की हर बात पूरी होने दी। 20पूरे इसराईल ने दान से लेकर बैर-सबा तक जान लिया कि रब ने अपने नबी समुएल की तसदीक़ की है। 21अगले सालों में भी रब सैला में अपने कलाम से समुएल पर ज़ाहिर होता रहा।

4 यों समुएल का कलाम सैला से निकलकर पूरे इसराईल में फैल गया।

फ़िलिस्ती अहद का संदूक़ छीन लेते हैं

एक दिन इसराईल की फ़िलिस्तियों के साथ जंग छिड़ गई। इसराईलियों ने लड़ने के लिए निकलकर अबन-अज़र के पास अपनी लशकरगाह लगाई जबकि फ़िलिस्तियों ने अफ़ीक़ के पास अपने डेरे डाले। 2पहले फ़िलिस्तियों ने इसराईलियों पर हमला किया। लड़ते लड़ते उन्होंने इसराईल को शिकस्त दी। तक़रीबन 4,000 इसराईली मैदाने-जंग में हलाक हुए।

3फ़ौज लशकरगाह में वापस आई तो इसराईल के बुज़ुर्ग सोचने लगे, “रब ने फ़िलिस्तियों को हम पर क्यों फ़तह पाने दी? आओ, हम रब के अहद का संदूक़ सैला से ले आएँ ताकि वह हमारे साथ चलकर हमें दुश्मन से बचाए।”

4चुनाँचे अहद का संदूक़ जिसके ऊपर रब्बुल-अफ़वाज करूबी फ़रिश्तों के दरमियान तख़्तनशीन है सैला से लाया गया। एली के दो बेटे हुफ़नी और फ़ीनहास भी साथ आए। 5जब अहद का संदूक़ लशकरगाह में पहुँचा तो इसराईली निहायत ख़ुश होकर बुलंद आवाज़ से

नारे लगाने लगे। इतना शोर मच गया कि ज़मीन हिल गई।

6यह सुनकर फ़िलिस्ती चौंक उठे और एक दूसरे से पूछने लगे, "यह कैसा शोर है जो इसराईली लशकरगाह में हो रहा है?" जब पता चला कि रब के अहद का संदूक़ इसराईली लशकरगाह में आ गया है 7तो वह घबराकर चिल्लाए, "उनका देवता उनकी लशकरगाह में आ गया है। हाय, हमारा सत्यानास हो गया है! पहले तो ऐसा कभी नहीं हुआ है। 8हम पर अफ़सोस! कौन हमें इन ताक़तवर देवताओं से बचाएगा? क्योंकि इन्हीं ने रेगिस्तान में मिसरियों को हर क़िस्म की बला से मारकर हलाक कर दिया था। 9भाइयो, अब दिलेर हो और मरदानगी दिखाओ, वरना हम उसी तरह इबरानियों के ग़ुलाम बन जाएंगे जैसे वह अब तक हमारे ग़ुलाम थे। मरदानगी दिखाकर लड़ो!" 10आपस में ऐसी बातें करते करते फ़िलिस्ती लड़ने के लिए निकले और इसराईल को शिकस्त दी। हर तरफ़ क़त्ले-आम नज़र आया, और 30,000 प्यादे इसराईली काम आए। बाक़ी सब फ़रार होकर अपने अपने घरों में छुप गए। 11एली के दो बेटे हुफ़नी और फ़ीनहास भी उसी दिन हलाक हुए, और अल्लाह के अहद का संदूक़ फ़िलिस्तियों के क़ब्ज़े में आ गया।

एली की मौत

12उसी दिन बिनयमीन के क़बीले का एक आदमी मैदाने-जंग से भागकर सैला पहुँच गया। उसके कपड़े फटे हुए थे और सर पर ख़ाक थी। 13-15एली सड़क के किनारे अपनी कुरसी पर बैठा था। वह अब अंधा हो चुका था, क्योंकि उस की उम्र 98 साल थी। वह बड़ी बेचैनी से रास्ते पर ध्यान दे रहा था ताकि जंग की कोई ताज़ा ख़बर मिल जाए, क्योंकि उसे इस बात की बड़ी फ़िकर थी कि अल्लाह का संदूक़ लशकरगाह में है।

जब वह आदमी शहर में दाख़िल हुआ और लोगों को सारा माजरा सुनाया तो पूरा शहर चिल्लाने लगा। जब एली ने शोर सुना तो उसने पूछा, "यह क्या शोर है?" बिनयमीनी दौड़कर एली के पास आया और बोला, 16"मैं मैदाने-जंग से आया हूँ। आज ही मैं वहाँ से फ़रार हुआ।" एली ने पूछा, "बेटा, क्या हुआ?" 17क़ासिद ने जवाब दिया, "इसराईली फ़िलिस्तियों के सामने फ़रार हुए। फ़ौज को हर तरफ़ शिकस्त माननी पड़ी, और आपके दोनों बेटे हुफ़नी और फ़ीनहास भी मारे गए हैं। अफ़सोस, अल्लाह का संदूक़ भी दुश्मन के क़ब्ज़े में आ गया है।"

18अहद के संदूक़ का ज़िक्र सुनते ही एली अपनी कुरसी पर से पीछे की तरफ़ गिर गया। चूँकि वह बूढ़ा और भारी-भरकम था इसलिए उस की गरदन टूट गई और वह वहीं मक़दिस के दरवाज़े के पास ही मर गया। वह 40 साल इसराईल का क़ाज़ी रहा था।

फ़ीनहास की बेवा की मौत

19उस वक़्त एली की बहू यानी फ़ीनहास की बीवी का पाँव भारी था और बच्चा पैदा होनेवाला था। जब उसने सुना कि अल्लाह का संदूक़ दुश्मन के हाथ में आ गया है और कि सुसर और शौहर दोनों मर गए हैं तो उसे इतना सख़्त सदमा पहुँचा कि वह शदीद दर्दे-ज़ह में मुब्तला हो गई। वह झुक गई, और बच्चा पैदा हुआ। 20उस की जान निकलने लगी तो दाइयों ने उस की हौसलाअफ़्ज़ाई करके कहा, "डरो मत! तुम्हारे बेटा पैदा हुआ है।" लेकिन माँ ने न जवाब दिया, न बात पर ध्यान दिया। 21-22क्योंकि वह अल्लाह के संदूक़ के छिन जाने और सुसर और शौहर की मौत के बाइस निहायत बेदिल हो गई थी। उसने कहा, "बेटे का नाम यकबोद यानी 'जलाल कहाँ रहा' है, क्योंकि अल्लाह के संदूक़ के छिन जाने से अल्लाह का जलाल इसराईल से जाता रहा है।"

फ़िलिस्तियों में अहद का संदूक़

5 फ़िलिस्ती अल्लाह का संदूक़ अबन-अज़र
से अशदूद शहर में ले गए। 2वहाँ उन्होंने
उसे अपने देवता दजून के मंदिर में बुत के क़रीब
रख दिया। 3अगले दिन सुबह-सवेरे जब अशदूद
के बाशिंदे मंदिर में दाख़िल हुए तो क्या देखते हैं
कि दजून का मुजस्समा मुँह के बल रब के संदूक़
के सामने ही पड़ा है। उन्होंने दजून को उठाकर
दुबारा उस की जगह पर खड़ा किया। 4लेकिन
अगले दिन जब सुबह-सवेरे आए तो दजून दुबारा
मुँह के बल रब के संदूक़ के सामने पड़ा हुआ था।
लेकिन इस मरतबा बुत का सर और हाथ टूटकर
दहलीज़ पर पड़े थे। सिर्फ़ धड़ रह गया था। 5यही
वजह है कि आज तक दजून का कोई भी पुजारी
या मेहमान अशदूद के मंदिर की दहलीज़ पर क़दम
नहीं रखता।

6फिर रब ने अशदूद और गिर्दो-नवाह के देहातों
पर सख़्त दबाव डालकर बाशिंदों को परेशान कर
दिया। उनमें अचानक अज़ियतनाक फोड़ों की
वबा फैल गई। 7जब अशदूद के लोगों ने इसकी
वजह जान ली तो वह बोले, "लाज़िम है कि
इसराईल के ख़ुदा का संदूक़ हमारे पास न रहे।
क्योंकि उसका हम पर और हमारे देवता दजून
पर दबाव नाक़ाबिले-बरदाश्त है।"

8उन्होंने तमाम फ़िलिस्ती हुक्मरानों को इकट्ठा
करके पूछा, "हम इसराईल के ख़ुदा के संदूक़ के
साथ क्या करें?"

उन्होंने मशवरा दिया, "उसे जात शहर में ले
जाएँ।" 9लेकिन जब अहद का संदूक़ जात में
छोड़ा गया तो रब का दबाव उस शहर पर भी
आ गया। बड़ी अफ़रा-तफ़री पैदा हुई, क्योंकि
छोटों से लेकर बड़ों तक सबको अज़ियतनाक
फोड़े निकल आए। 10तब उन्होंने अहद का संदूक़
आगे अक़रून भेज दिया।

लेकिन संदूक़ अभी पहुँचनेवाला था कि
अक़रून के बाशिंदे चीख़ने लगे, "वह इसराईल
के ख़ुदा का संदूक़ हमारे पास लाए हैं ताकि हमें
हलाक कर दें!" 11तमाम फ़िलिस्ती हुक्मरानों
को दुबारा बुलाया गया, और अक़रूनियों ने
तक़ाज़ा किया कि संदूक़ को शहर से दूर किया
जाए। वह बोले, "इसे वहाँ वापस भेजा जाए जहाँ
से आया है, वरना यह हमें बल्कि पूरी क़ौम को
हलाक कर डालेगा।" क्योंकि शहर पर रब का
सख़्त दबाव हावी हो गया था। मोहलक वबा के
बाइस उसमें ख़ौफ़ो-हिरास की लहर दौड़ गई।
12जो मरने से बचा उसे कम अज़ कम फोड़े
निकल आए। चारों तरफ़ लोगों की चीख़-पुकार
फ़िज़ा में बुलंद हुई।

अहद का संदूक़ इसराईल वापस लाया जाता है

6 अल्लाह का संदूक़ अब सात महीने
फ़िलिस्तियों के पास रहा था। 2आ-
ख़िरकार उन्होंने अपने तमाम पुजारियों और
रम्मालों को बुलाकर उनसे मशवरा किया, "अब
हम रब के संदूक़ का क्या करें? हमें बताएँ कि इसे
किस तरह इसके अपने मुल्क में वापस भेजें।"

3पुजारियों और रम्मालों ने जवाब दिया, "अगर
आप उसे वापस भेजें तो वैसे मत भेजना बल्कि
क़ुसूर की क़ुरबानी साथ भेजना। तब आपको
शफ़ा मिलेगी, और आप जान लेंगे कि वह आपको
सज़ा देने से क्यों नहीं बाज़ आया।"

4फ़िलिस्तियों ने पूछा, "हम उसे किस क़िस्म
की क़ुसूर की क़ुरबानी भेजें?"

उन्होंने जवाब दिया, "फ़िलिस्तियों के पाँच
हुक्मरान हैं, इसलिए सोने के पाँच फोड़े और
पाँच चूहे बनवाएँ, क्योंकि आप सब इस एक ही
वबा की ज़द में आए हुए हैं, ख़ाह हुक्मरान हों,
ख़ाह रिआया। 5सोने के यह फोड़े और मुल्क
को तबाह करनेवाले चूहे बनाकर इसराईल के
देवता का एहतराम करें। शायद वह यह देखकर
आप, आपके देवताओं और मुल्क को सज़ा
देने से बाज़ आए। 6आप क्यों पुराने ज़माने के
मिसरियों और उनके बादशाह की तरह अड़ जाएँ?
क्योंकि उस वक़्त अल्लाह ने मिसरियों को इतनी

सख़्त मुसीबत में डाल दिया कि आख़िरकार उन्हें
इसराईलियों को जाने देना पड़ा।
7अब बैलगाड़ी बनाकर उसके आगे दो गाएँ
जोतें। ऐसी गाएँ हों जिनके दूध पीनेवाले बच्चे
हों और जिन पर अब तक जुआ न रखा गया
हो। गायों को बैलगाड़ी के आगे जोतें, लेकिन
उनके बच्चों को साथ जाने न दें बल्कि उन्हें कहीं
बंद रखें। 8फिर रब का संदूक़ बैलगाड़ी पर रखा
जाए और उसके साथ एक थैला जिसमें सोने की
वह चीज़ें हों जो आप क़ुसूर की क़ुरबानी के तौर
पर भेज रहे हैं। इसके बाद गायों को खुला छोड़
दें। 9ग़ौर करें कि वह कौन-सा रास्ता इख़्तियार
करेंगी। अगर इसराईल के बैत-शम्स की तरफ़
चलें तो फिर मालूम होगा कि रब हम पर यह बड़ी
मुसीबत लाया है। लेकिन अगर वह कहीं और चलें
तो मतलब होगा कि इसराईल के देवता ने हमें
सज़ा नहीं दी बल्कि सब कुछ इत्तफ़ाक़ से हुआ
है।”
10फ़िलिस्तियों ने ऐसा ही किया। उन्होंने दो
गाएँ नई बैलगाड़ी में जोतकर उनके छोटे बच्चों
को कहीं बंद रखा। 11फिर उन्होंने अहद का संदूक़
उस थैले समेत जिसमें सोने के चूहे और फोड़े थे
बैलगाड़ी पर रखा।
12जब गायों को छोड़ दिया गया तो वह
डकराती डकराती सीधी बैत-शम्स के रास्ते
पर आ गईं और न दाईं, न बाईं तरफ़ हटीं।
फ़िलिस्तियों के सरदार बैत-शम्स की सरहद तक
उनके पीछे चले।
13उस वक़्त बैत-शम्स के बाशिंदे नीचे वादी
में गंदुम की फ़सल काट रहे थे। अहद का संदूक़
देखकर वह निहायत ख़ुश हुए। 14बैलगाड़ी एक
खेत तक पहुँची जिसका मालिक बैत-शम्स का
रहनेवाला यशुअ था। वहाँ वह एक बड़े पत्थर के
पास रुक गई। लोगों ने बैलगाड़ी की लकड़ी टुकड़े
टुकड़े करके उसे जला दिया और गायों को ज़बह
करके रब को भस्म होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर
पेश किया। 15लावी के क़बीले के कुछ मर्दों ने
रब के संदूक़ को बैलगाड़ी से उठाकर सोने की
चीज़ों के थैले समेत पत्थर पर रख दिया। उस
दिन बैत-शम्स के लोगों ने रब को भस्म होनेवाली
और ज़बह की क़ुरबानियाँ पेश कीं।
16यह सब कुछ देखने के बाद फ़िलिस्ती
सरदार उसी दिन अक़रून वापस चले गए।
17फ़िलिस्तियों ने अपना क़ुसूर दूर करने के लिए
हर एक शहर के लिए सोने का एक फोड़ा बना
लिया था यानी अशदूद, ग़ज़्ज़ा, अस्क़लून, जात
और अक़रून के लिए एक एक फोड़ा। 18इसके
अलावा उन्होंने हर शहर और उसके गिर्दो-नवाह
की आबादियों के लिए सोने का एक एक चूहा
बना लिया था। जिस बड़े पत्थर पर अहद का
संदूक़ रखा गया वह आज तक यशुअ बैत-शम्सी
के खेत में इस बात की गवाही देता है।

अहद का संदूक़ क़िरियत-यारीम में

19लेकिन रब ने बैत-शम्स के बाशिंदों को सज़ा
दी, क्योंकि उनमें से बाज़ ने अहद के संदूक़ में
नज़र डाली थी। उस वक़्त 70 अफ़राद हलाक
हुए। रब की यह सख़्त सज़ा देखकर बैत-शम्स
के लोग मातम करने लगे। 20वह बोले, “कौन
इस मुक़द्दस ख़ुदा के हुज़ूर क़ायम रह सकता
है? यह हमारे बस की बात नहीं, लेकिन हम
रब का संदूक़ किसके पास भेजें?” 21आख़िर
में उन्होंने क़िरियत-यारीम के बाशिंदों को पैग़ाम
भेजा, “फ़िलिस्तियों ने रब का संदूक़ वापस कर
दिया है। अब आएँ और उसे अपने पास ले जाएँ!”
7 यह सुनकर क़िरियत-यारीम के मर्द आए
और रब का संदूक़ अपने शहर में ले गए।
वहाँ उन्होंने उसे अबीनदाब के घर में रख दिया जो
पहाड़ी पर था। अबीनदाब के बेटे इलियज़र को
मख़सूस किया गया ताकि वह अहद के संदूक़
की पहरादारी करे।

तौबा की वजह से इसराईली फ़िलिस्तियों पर फ़तह पाते हैं

2अहद का संदूक़ 20 साल के तवील अरसे
तक क़िरियत-यारीम में पड़ा रहा। इस दौरान

तमाम इसराईल मातम करता रहा, क्योंकि लगता
था कि रब ने उन्हें तर्क कर दिया है। 3फिर
समुएल ने तमाम इसराईलियों से कहा, “अगर
आप वाक़ई रब के पास वापस आना चाहते हैं
तो अजनबी माबूदों और अस्तारात देवी के बुत
दूर कर दें। पूरे दिल के साथ रब के ताबे होकर
उसी की ख़िदमत करें। फिर ही वह आपको
फ़िलिस्तियों से बचाएगा।”

4इसराईलियों ने उस की बात मान ली। वह
बाल और अस्तारात के बुतों को फेंककर सिर्फ़ रब
की ख़िदमत करने लगे। 5तब समुएल ने एलान
किया, “पूरे इसराईल को मिसफ़ाह में जमा करें
तो मैं वहाँ रब से दुआ करके आपकी सिफ़ारिश
करूँगा।” 6चुनाँचे वह सब मिसफ़ाह में जमा हुए।
तौबा का इज़हार करके उन्होंने कुएँ से पानी
निकालकर रब के हुज़ूर उंडेल दिया। साथ साथ
उन्होंने पूरा दिन रोज़ा रखा और इक़रार किया,
“हमने रब का गुनाह किया है।” वहाँ मिसफ़ाह में
समुएल ने इसराईलियों के लिए कचहरी लगाई।

7फ़िलिस्ती हुक्मरानों को पता चला कि
इसराईली मिसफ़ाह में जमा हुए हैं तो वह उनसे
लड़ने के लिए आए। यह सुनकर इसराईली सख़्त
घबरा गए 8और समुएल से मिन्नत की, “दुआ
करते रहें! रब हमारे ख़ुदा से इलतमास करने से
न रुकें ताकि वह हमें फ़िलिस्तियों से बचाए।”
9तब समुएल ने भेड़ का दूध पीता बच्चा चुनकर
रब को भस्म होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर पेश
किया। साथ साथ वह रब से इलतमास करता
रहा।

और रब ने उस की सुनी। 10समुएल अभी
क़ुरबानी पेश कर रहा था कि फ़िलिस्ती वहाँ
पहुँचकर इसराईलियों पर हमला करने के लिए
तैयार हुए। लेकिन उस दिन रब ने ज़ोर से कड़कती
हुई आवाज़ से फ़िलिस्तियों को इतना दहशतज़दा
कर दिया कि वह दरहम-बरहम हो गए और
इसराईली आसानी से उन्हें शिकस्त दे सके।
11इसराईलियों ने मिसफ़ाह से निकलकर बैत-
कार के नीचे तक दुश्मन का ताक़्क़ुब किया। रास्ते
में बहुत-से फ़िलिस्ती हलाक हुए।

12इस फ़तह की याद में समुएल ने मिसफ़ाह
और शेन के दरमियान एक बड़ा पत्थर नसब
कर दिया। उसने पत्थर का नाम अबन-अज़र
यानी ‘मदद का पत्थर’ रखा। क्योंकि उसने कहा,
“यहाँ तक रब ने हमारी मदद की है।” 13इस
तरह फ़िलिस्तियों को मग़लूब किया गया, और
वह दुबारा इसराईल के इलाक़े में न घुसे। जब
तक समुएल जीता रहा फ़िलिस्तियों पर रब का
सख़्त दबाव रहा। 14और अक़रून से लेकर जात
तक जितनी इसराईली आबादियाँ फ़िलिस्तियों के
हाथ में आ गई थीं वह सब उनकी ज़मीनों समेत
दुबारा इसराईल के क़ब्ज़े में आ गईं। अमोरियों
के साथ भी सुलह हो गई।

15समुएल अपने जीते-जी इसराईल का क़ाज़ी
और राहनुमा रहा। 16हर साल वह बैतेल,
जिलजाल और मिसफ़ाह का दौरा करता, क्योंकि
इन तीन जगहों पर वह इसराईलियों के लिए
कचहरी लगाया करता था। 17इसके बाद वह
दुबारा रामा अपने घर वापस आ जाता जहाँ
मुस्तक़िल कचहरी थी। वहाँ उसने रब के लिए
क़ुरबानगाह भी बनाई थी।

इसराईल बादशाह का तक़ाज़ा करता है

8 जब समुएल बूढ़ा हुआ तो उसने अपने दो
बेटों को इसराईल के क़ाज़ी मुक़र्रर किया।
2बड़े का नाम योएल था और छोटे का अबियाह।
दोनों बैर-सबा में लोगों की कचहरी लगाते थे।
3लेकिन वह बाप के नमूने पर नहीं चलते बल्कि
रिश्वत खाकर ग़लत फ़ैसले करते थे।

4फिर इसराईल के बुज़ुर्ग मिलकर समुएल के
पास आए, जो रामा में था। 5उन्होंने कहा, “देखें,
आप बूढ़े हो गए हैं और आपके बेटे आपके नमूने
पर नहीं चलते। अब हम पर बादशाह मुक़र्रर करें
ताकि वह हमारी उस तरह राहनुमाई करे जिस
तरह दीगर अक़वाम में दस्तूर है।”

6जब बुज़ुर्गों ने राहनुमाई के लिए बादशाह का तक़ाज़ा किया तो समुएल निहायत नाख़ुश हुआ। चुनाँचे उसने रब से हिदायत माँगी। 7रब ने जवाब दिया, "जो कुछ भी वह तुझसे माँगते हैं उन्हें दे दे। इससे वह तुझे रद्द नहीं कर रहे बल्कि मुझे, क्योंकि वह नहीं चाहते कि मैं उनका बादशाह रहूँ। 8जब से मैं उन्हें मिसर से निकाल लाया वह मुझे छोड़कर दीगर माबूदों की ख़िदमत करते आए हैं। और अब वह तुझसे भी यही सुलूक कर रहे हैं। 9उनकी बात मान ले, लेकिन संजीदगी से उन्हें उन पर हुकूमत करनेवाले बादशाह के हुक़ूक़ से आगाह कर।"

बादशाह के हुक़ूक़

10समुएल ने बादशाह का तक़ाज़ा करने-वालों को सब कुछ कह सुनाया जो रब ने उसे बताया था। 11वह बोला, "जो बादशाह आप पर हुकूमत करेगा उसके यह हुक़ूक़ होंगे : वह आपके बेटों की भरती करके उन्हें अपने रथों और घोड़ों को सँभालने की ज़िम्मेदारी देगा। उन्हें उसके रथों के आगे आगे दौड़ना पड़ेगा। 12कुछ उस की फ़ौज के जनरल और कप्तान बनेंगे, कुछ उसके खेतों में हल चलाने और फ़सलें काटने पर मजबूर हो जाएंगे, और बाज़ को उसके हथियार और रथ का सामान बनाना पड़ेगा। 13बादशाह आपकी बेटियों को आपसे छीन लेगा ताकि वह उसके लिए खाना पकाएँ, रोटी बनाएँ और ख़ुशबू तैयार करें। 14वह आपके खेतों और आपके अंगूर और ज़ैतून के बाग़ों का बेहतरीन हिस्सा चुनकर अपने मुलाज़िमों को दे देगा। 15बादशाह आपके अनाज और अंगूर का दसवाँ हिस्सा लेकर अपने अफ़सरों और मुलाज़िमों को दे देगा। 16आपके नौकर-नौकरानियाँ, आपके मोटे-ताज़े बैल और गधे उसी के इस्तेमाल में आएँगे। 17वह आपकी भेड़-बकरियों का दसवाँ हिस्सा तलब करेगा, और आप ख़ुद उसके ग़ुलाम होंगे।

18तब आप पछताकर कहेंगे, 'हमने बादशाह का तक़ाज़ा क्यों किया?' लेकिन जब आप रब के हुज़ूर चीख़ते-चिल्लाते मदद चाहेंगे तो वह आपकी नहीं सुनेगा।"

19लेकिन लोगों ने समुएल की बात न मानी बल्कि कहा, "नहीं, तो भी हम बादशाह चाहते हैं, 20क्योंकि फिर ही हम दीगर क़ौमों की मानिंद होंगे। फिर हमारा बादशाह हमारी राहनुमाई करेगा और जंग में हमारे आगे आगे चलकर दुश्मन से लड़ेगा।" 21समुएल ने रब के हुज़ूर यह बातें दोहराईं। 22रब ने जवाब दिया, "उनका तक़ाज़ा पूरा कर, उन पर बादशाह मुक़र्रर कर!"

फिर समुएल ने इसराईल के मर्दों से कहा, "हर एक अपने अपने शहर वापस चला जाए।"

साऊल बाप की गधियाँ तलाश करता है

9 बिनयमीन के क़बायली इलाक़े में एक बिनयमीनी बनाम क़ीस रहता था जिसका अच्छा-ख़ासा असरो-रसूख़ था। बाप का नाम अबियेल बिन सरोर बिन बकोरत बिन अफ़ीख़ था। 2क़ीस का बेटा साऊल जवान और ख़ूबसूरत था बल्कि इसराईल में कोई और इतना ख़ूबसूरत नहीं था। साथ साथ वह इतना लंबा था कि बाक़ी सब लोग सिर्फ़ उसके कंधों तक आते थे।

3एक दिन साऊल के बाप क़ीस की गधियाँ गुम हो गईं। यह देखकर उसने अपने बेटे साऊल को हुक्म दिया, "नौकर को अपने साथ लेकर गधियों को ढूँड लाएँ।" 4दोनों आदमी इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े और सलीसा के इलाक़े में से गुज़रे, लेकिन बेसूद। फिर उन्होंने सालीम के इलाक़े में खोज लगाया, लेकिन वहाँ भी गधियाँ न मिलीं। इसके बाद वह बिनयमीन के इलाक़े में घूमते फिरे, लेकिन बेफ़ायदा। 5चलते चलते वह सूफ़ के क़रीब पहुँच गए। साऊल ने नौकर से कहा, "आओ, हम घर वापस चलें, ऐसा न हो कि वालिद गधियों की नहीं बल्कि हमारी फ़िकर करें।"

6लेकिन नौकर ने कहा, "इस शहर में एक मर्दे-ख़ुदा है। लोग उस की बड़ी इज़्ज़त करते हैं, क्योंकि जो कुछ भी वह कहता है वह पूरा हो जाता

है। क्यों न हम उसके पास जाएँ? शायद वह हमें
बताए कि गधियों को कहाँ ढूँडना चाहिए।”
7साऊल ने पूछा, “लेकिन हम उसे क्या दें?
हमारा खाना ख़त्म हो गया है, और हमारे पास
उसके लिए तोहफ़ा नहीं है।”
8नौकर ने जवाब दिया, “कोई बात नहीं, मेरे
पास चाँदी का छोटा सिक्का[a] है। यह मैं मर्दे-ख़ुदा
को दे दूँगा ताकि बताए कि हम किस तरफ़ ढूँडें।”
9-11साऊल ने कहा, “ठीक है, चलें।” वह
शहर की तरफ़ चल पड़े ताकि मर्दे-ख़ुदा से बात
करें। जब पहाड़ी ढलान पर शहर की तरफ़ चढ़ रहे
थे तो कुछ लड़कियाँ पानी भरने के लिए निकलीं।
आदमियों ने उनसे पूछा, “क्या ग़ैबबीन शहर में
है?” (पुराने ज़माने में नबी ग़ैबबीन कहलाता था।
अगर कोई अल्लाह से कुछ मालूम करना चाहता
तो कहता, “आओ, हम ग़ैबबीन के पास चलें।”)
12-13लड़कियों ने जवाब दिया, “जी, वह
अभी अभी पहुँचा है, क्योंकि शहर के लोग
आज पहाड़ी पर क़ुरबानियाँ चढ़ाकर ईद मना
रहे हैं। अगर जल्दी करें तो पहाड़ी पर चढ़ने से
पहले उससे मुलाक़ात हो जाएगी। उस वक़्त तक
ज़ियाफ़त शुरू नहीं होगी जब तक ग़ैबबीन पहुँच
न जाए। क्योंकि उसे पहले खाने को बरकत देना
है, फिर ही मेहमानों को खाना खाने की इजाज़त
है। अब जाएँ, क्योंकि इसी वक़्त आप उससे बात
कर सकते हैं।”
14चुनाँचे साऊल और नौकर शहर की तरफ़
बढ़े। शहर के दरवाज़े पर ही समुएल से मुलाक़ात
हो गई जो वहाँ से निकलकर क़ुरबानगाह की
पहाड़ी पर चढ़ने को था।

समुएल साऊल की मेहमान-नवाज़ी करता है

15रब समुएल को एक दिन पहले पैग़ाम दे
चुका था, 16“कल मैं इसी वक़्त मुल्के-बिनयमीन
का एक आदमी तेरे पास भेज दूँगा। उसे मसह
करके मेरी क़ौम इसराईल पर बादशाह मुक़र्रर
कर। वह मेरी क़ौम को फ़िलिस्तियों से बचाएगा।
क्योंकि मैंने अपनी क़ौम की मुसीबत पर ध्यान
दिया है, और मदद के लिए उस की चीख़ें मुझ
तक पहुँच गई हैं।” 17अब जब समुएल ने शहर
के दरवाज़े से निकलते हुए साऊल को देखा तो
रब समुएल से हमकलाम हुआ, “देख, यही वह
आदमी है जिसका ज़िक्र मैंने कल किया था। यही
मेरी क़ौम पर हुकूमत करेगा।”
18वहीं शहर के दरवाज़े पर साऊल समुएल से
मुख़ातिब हुआ, “मेहरबानी करके मुझे बताइए
कि ग़ैबबीन का घर कहाँ है?” 19समुएल ने
जवाब दिया, “मैं ही ग़ैबबीन हूँ। आएँ, उस पहाड़ी
पर चलें जिस पर ज़ियाफ़त हो रही है, क्योंकि
आज आप मेरे मेहमान हैं। कल मैं सुबह-सवेरे
आपको आपके दिल की बात बता दूँगा। 20जहाँ
तक तीन दिन से गुमशुदा गधियों का ताल्लुक़ है,
उनकी फ़िकर न करें। वह तो मिल गई हैं। वैसे
आप और आपके बाप के घराने को इसराईल
की हर क़ीमती चीज़ हासिल है।” 21साऊल ने
पूछा, “यह किस तरह? मैं तो इसराईल के सबसे
छोटे क़बीले बिनयमीन का हूँ, और मेरा ख़ानदान
क़बीले में सबसे छोटा है।”
22समुएल साऊल को नौकर समेत उस हाल
में ले गया जिसमें ज़ियाफ़त हो रही थी। तक़रीबन
30 मेहमान थे, लेकिन समुएल ने दोनों आदमियों
को सबसे इज़्ज़त की जगह पर बिठा दिया।
23ख़ानसामे को उसने हुक्म दिया, “अब गोश्त
का वह टुकड़ा ले आओ जो मैंने तुम्हें देकर कहा
था कि उसे अलग रखना है।” 24ख़ानसामे ने
क़ुरबानी की रान लाकर उसे साऊल के सामने
रख दिया। समुएल बोला, “यह आपके लिए
महफ़ूज़ रखा गया है। अब खाएँ, क्योंकि दूसरों
को दावत देते वक़्त मैंने यह गोश्त आपके लिए
और इस मौक़े के लिए अलग कर लिया था।”
चुनाँचे साऊल ने उस दिन समुएल के साथ खाना
खाया।

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : चाँदी के सिक्के की एक चौथाई

25ज़ियाफ़त के बाद वह पहाड़ी से उतरकर शहर वापस आए, और समुएल अपने घर की छत पर साऊल से बातचीत करने लगा। 26अगले दिन जब पौ फटने लगी तो समुएल ने नीचे से साऊल को जो छत पर सो रहा था आवाज़ दी, “उठें! मैं आपको रुख़सत करूँ।” साऊल जाग उठा और वह मिलकर रवाना हुए। 27जब वह शहर के किनारे पर पहुँचे तो समुएल ने साऊल से कहा, “अपने नौकर को आगे भेजें।” जब नौकर चला गया तो समुएल बोला, “ठहर जाएँ, क्योंकि मुझे आपको अल्लाह का एक पैग़ाम सुनाना है।”

साऊल को मसह किया जाता है

10 फिर समुएल ने कुप्पी लेकर साऊल के सर पर ज़ैतून का तेल उंडेल दिया और उसे बोसा देकर कहा, “रब ने आपको अपनी ख़ास मिलकियत पर राहनुमा मुक़र्रर किया है। 2मेरे पास से चले जाने के बाद जब आप बिनयमीन की सरहद के शहर ज़िलज़ख़ के क़रीब राख़िल की क़ब्र के पास से गुज़रेंगे तो आपकी मुलाक़ात दो आदमियों से होगी। वह आपसे कहेंगे, ‘जो गधियाँ आप ढूँडने गए वह मिल गई हैं। और अब आपके बाप गधियों की नहीं बल्कि आपकी फ़िकर कर रहे हैं। वह कह रहे हैं कि मैं किस तरह अपने बेटे का पता करूँ?’

3आप आगे जाकर तबूर के बलूत के दरख़्त के पास पहुँचेंगे। वहाँ तीन आदमी आपसे मिलेंगे जो अल्लाह की इबादत करने के लिए बैतेल जा रहे होंगे। एक के पास तीन छोटी बकरियाँ, दूसरे के पास तीन रोटियाँ और तीसरे के पास मै की मशक होगी। 4वह आपको सलाम कहकर दो रोटियाँ देंगे। उनकी यह रोटियाँ क़बूल करें।

5इसके बाद आप अल्लाह के जिबिया जाएंगे जहाँ फ़िलिस्तियों की चौकी है। शहर में दाख़िल होते वक़्त आपकी मुलाक़ात नबियों के एक जुलूस से होगी जो उस वक़्त पहाड़ी की क़ुरबानगाह से उतर रहा होगा। उनके आगे आगे सितार, दफ़, बाँसरियाँ और सरोद बजानेवाले चलेंगे, और वह नबुव्वत की हालत में होंगे। 6रब का रूह आप पर भी नाज़िल होगा, और आप उनके साथ नबुव्वत करेंगे। उस वक़्त आप फ़रक़ शख़्स में तबदील हो जाएंगे।

7जब यह तमाम निशान वुजूद में आएँगे तो वह कुछ करें जो आपके ज़हन में आ जाए, क्योंकि अल्लाह आपके साथ होगा। 8फिर मेरे आगे जिलजाल चले जाएँ। मैं भी आऊँगा और वहाँ भस्म होनेवाली और सलामती की क़ुरबानियाँ पेश करूँगा। लेकिन आपको सात दिन मेरा इंतज़ार करना है। फिर मैं आकर आपको बता दूँगा कि आगे क्या करना है।”

9साऊल रवाना होने के लिए समुएल के पास से मुड़ा तो अल्लाह ने उसका दिल तबदील कर दिया। जिन निशानों की भी पेशगोई समुएल ने की थी वह उसी दिन पूरी हुई। 10जब साऊल और उसका नौकर जिबिया पहुँचे तो वहाँ उनकी मुलाक़ात मज़कूरा नबियों के जुलूस से हुई। अल्लाह का रूह साऊल पर नाज़िल हुआ, और वह उनके दरमियान नबुव्वत करने लगा। 11कुछ लोग वहाँ थे जो बचपन से उससे वाक़िफ़ थे। साऊल को यों नबियों के दरमियान नबुव्वत करते हुए देखकर वह आपस में कहने लगे, “क़ीस के बेटे के साथ क्या हुआ? क्या साऊल को भी नबियों में शुमार किया जाता है?” 12एक मक़ामी आदमी ने जवाब दिया, “कौन इनका बाप है?” बाद में यह मुहावरा बन गया, “क्या साऊल को भी नबियों में शुमार किया जाता है?”

13नबुव्वत करने के इख़्तिताम पर साऊल पहाड़ी पर चढ़ गया जहाँ क़ुरबानगाह थी। 14जब साऊल नौकर समेत वहाँ पहुँचा तो उसके चचा ने पूछा, “आप कहाँ थे?” साऊल ने जवाब दिया, “हम गुमशुदा गधियों को ढूँडने के लिए निकले थे। लेकिन जब वह न मिलीं तो हम समुएल के पास गए।” 15चचा बोला, “अच्छा? उसने आपको क्या बताया?” 16साऊल ने जवाब दिया, “ख़ैर, उसने कहा कि गधियाँ मिल गई हैं।” लेकिन जो

कुछ समुएल ने बादशाह बनने के बारे में बताया
था उसका ज़िक्र उसने न किया।

साऊल बादशाह बन जाता है

17कुछ देर के बाद समुएल ने अवाम को
बुलाकर मिसफ़ाह में रब के हुज़ूर जमा किया।
18उसने कहा, “रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता
है, ‘मैं इसराईल को मिसर से निकाल लाया।
मैंने तुम्हें मिसरियों और उन तमाम सलतनतों से
बचाया जो तुम पर ज़ुल्म कर रही थीं। 19लेकिन
गो मैंने तुम्हें तुम्हारी तमाम मुसीबतों और तंगियों
से छुटकारा दिया तो भी तुमने अपने ख़ुदा को
मुस्तरद कर दिया। क्योंकि तुमने इसरार किया
कि हम पर बादशाह मुक़र्रर करो! अब अपने
अपने क़बीलों और ख़ानदानों की तरतीब के
मुताबिक़ रब के हुज़ूर खड़े हो जाओ’।”

20यह कहकर समुएल ने तमाम क़बीलों को रब
के हुज़ूर पेश किया। क़ुरा डाला गया तो बिनयमीन
के क़बीले को चुना गया। 21फिर समुएल ने
बिनयमीन के क़बीले के सारे ख़ानदानों को रब
के हुज़ूर पेश किया। मतरी के ख़ानदान को चुना
गया। यों क़ुरा डालते डालते साऊल बिन क़ीस
को चुना गया। लेकिन जब साऊल को ढूँडा गया
तो वह ग़ायब था।

22उन्होंने रब से दरियाफ़्त किया, “क्या
साऊल यहाँ पहुँच चुका है?” रब ने जवाब दिया,
“वह सामान के बीच में छुप गया है।” 23कुछ
लोग दौड़कर उसे सामान में से निकालकर अवाम
के पास ले आए। जब वह लोगों में खड़ा हुआ तो
इतना लंबा था कि बाक़ी सब लोग सिर्फ़ उसके
कंधों तक आते थे।

24समुएल ने कहा, “यह आदमी देखो जिसे
रब ने चुन लिया है। अवाम में उस जैसा कोई
नहीं है!” तमाम लोग ख़ुशी के मारे “बादशाह
ज़िंदाबाद!” का नारा लगाते रहे। 25समुएल ने
बादशाह के हुक़ूक़ तफ़सील से सुनाए। उसने
सब कुछ किताब में लिख दिया और उसे रब के
मक़दिस में महफ़ूज़ रखा। फिर उसने अवाम को
रुख़सत कर दिया।

26साऊल भी अपने घर चला गया जो जिबिया
में था। कुछ फ़ौजी उसके साथ चले जिनके दिलों
को अल्लाह ने छू दिया था। 27लेकिन ऐसे शरीर
लोग भी थे जिन्होंने उसका मज़ाक़ उड़ाकर पूछा,
“भला यह किस तरह हमें बचा सकता है?” वह
उसे हक़ीर जानते थे और उसे तोहफ़े पेश करने
के लिए भी तैयार न हुए। लेकिन साऊल उनकी
बातें नज़रंदाज़ करके ख़ामोश ही रहा।

साऊल अम्मोनियों पर फ़तह पाता है

11 कुछ देर के बाद अम्मोनी बाद-
शाह नाहस ने अपनी फ़ौज लेकर
यबीस-जिलियाद का मुहासरा किया। यबीस के
तमाम अफ़राद ने उससे गुज़ारिश की, “हमारे
साथ मुआहदा करें तो हम आइंदा आपके ताबे
रहेंगे।” 2नाहस ने जवाब दिया, “ठीक है,
लेकिन इस शर्त पर कि मैं हर एक की दहनी
आँख निकालकर तमाम इसराईल की बेइज़्ज़ती
करूँगा!” 3यबीस के बुज़ुर्गों ने दरख़ास्त की,
“हमें एक हफ़ते की मोहलत दीजिए ताकि हम
अपने क़ासिदों को इसराईल की हर जगह भेजें।
अगर कोई हमें बचाने के लिए न आए तो हम
हथियार डालकर शहर को आपके हवाले कर
देंगे।”

4क़ासिद साऊल के शहर जिबिया भी पहुँच
गए। जब मक़ामी लोगों ने उनका पैग़ाम सुना
तो पूरा शहर फूट फूटकर रोने लगा। 5उस वक़्त
साऊल अपने बैलों को खेतों से वापस ला रहा
था। उसने पूछा, “क्या हुआ है? लोग क्यों रो रहे
हैं?” उसे क़ासिदों का पैग़ाम सुनाया गया। 6तब
साऊल पर अल्लाह का रूह नाज़िल हुआ, और
उसे सख़्त ग़ुस्सा आया। 7उसने बैलों का जोड़ा
लेकर उन्हें टुकड़े टुकड़े कर दिया। फिर क़ासिदों
को यह टुकड़े पकड़ाकर उसने उन्हें यह पैग़ाम
देकर इसराईल की हर जगह भेज दिया, “जो
साऊल और समुएल के पीछे चलकर अम्मोनियों

से लड़ने नहीं जाएगा उसके बैल इसी तरह टुकड़े
टुकड़े कर दिए जाएंगे!”
यह ख़बर सुनकर लोगों पर रब की दहशत
तारी हो गई, और सबके सब एक दिल होकर
अम्मोनियों से लड़ने के लिए निकले। 8बज़क़ के
क़रीब साऊल ने फ़ौज का जायज़ा लिया। यहूदाह
के 30,000 अफ़राद थे और बाक़ी क़बीलों के
3,00,000।
9उन्होंने यबीस-जिलियाद के क़ासिदों को
वापस भेजकर बताया, “कल दोपहर से पहले
पहले आपको बचा लिया जाएगा।” वहाँ के
बाशिंदे यह ख़बर सुनकर बहुत ख़ुश हुए।
10उन्होंने अम्मोनियों को इत्तला दी, “कल हम
हथियार डालकर शहर के दरवाज़े खोल देंगे। फिर
वह कुछ करें जो आपको ठीक लगे।”
11अगले दिन सुबह-सवेरे साऊल ने फ़ौज को
तीन हिस्सों में तक़सीम किया। सूरज के तुलू होने
से पहले पहले उन्होंने तीन सिम्तों से दुश्मन की
लशकरगाह पर हमला किया। दोपहर तक उन्होंने
अम्मोनियों को मार मारकर ख़त्म कर दिया। जो
थोड़े-बहुत लोग बच गए वह यों तित्तर-बित्तर हो
गए कि दो भी इकट्ठे न रहे।

साऊल की दुबारा तसदीक़

12फ़तह के बाद लोग समुएल के पास आकर
कहने लगे, “वह लोग कहाँ हैं जिन्होंने एतराज़
किया कि साऊल हम पर हुकूमत करे? उन्हें ले
आएँ ताकि हम उन्हें मार दें।” 13लेकिन साऊल ने
उन्हें रोक दिया। उसने कहा, “नहीं, आज तो हम
किसी भी भाई को सज़ाए-मौत नहीं देंगे, क्योंकि
इस दिन रब ने इसराईल को रिहाई बख़्शी है!”
14फिर समुएल ने एलान किया, “आओ, हम
जिलजाल जाकर दुबारा इसकी तसदीक़ करें कि
साऊल हमारा बादशाह है।”
15चुनाँचे तमाम लोगों ने जिलजाल जाकर
रब के हुज़ूर इसकी तसदीक़ की कि साऊल
हमारा बादशाह है। इसके बाद उन्होंने रब के हुज़ूर
सलामती की क़ुरबानियाँ पेश करके बड़ा जशन
मनाया।

समुएल की अलविदाई तक़रीर

12 तब समुएल तमाम इसराईल से
मुख़ातिब हुआ, “मैंने आपकी हर बात
मानकर आप पर बादशाह मुक़र्रर किया है। 2अब
यही आपके आगे आगे चलकर आपकी राहनुमाई
करेगा। मैं ख़ुद बूढ़ा हूँ, और मेरे बाल सफ़ेद हो गए
हैं जबकि मेरे बेटे आपके दरमियान ही रहते हैं।
मैं जवानी से लेकर आज तक आपकी राहनुमाई
करता आया हूँ। 3अब मैं हाज़िर हूँ। अगर मुझसे
कोई ग़लती हुई है तो रब और उसके मसह किए
हुए बादशाह के सामने इसकी गवाही दें। क्या मैंने
किसी का बैल या गधा लूट लिया? क्या मैंने
किसी से ग़लत फ़ायदा उठाया या किसी पर ज़ुल्म
किया? क्या मैंने कभी किसी से रिश्वत लेकर
ग़लत फ़ैसला किया है? अगर ऐसा हुआ तो मुझे
बताएँ! फिर मैं सब कुछ वापस कर दूँगा।”
4इजतिमा ने जवाब दिया, “न आपने हमसे
ग़लत फ़ायदा उठाया, न हम पर ज़ुल्म किया
है। आपने कभी भी रिश्वत नहीं ली।” 5समुएल
बोला, “आज रब और उसका मसह किया हुआ
बादशाह गवाह हैं कि आपको मुझ पर इलज़ाम
लगाने का कोई सबब न मिला।” अवाम ने कहा,
“जी, ऐसा ही है।” 6समुएल ने बात जारी रखी,
“रब ख़ुद मूसा और हारून को इसराईल के
राहनुमा बनाकर आपके बापदादा को मिसर से
निकाल लाया। 7अब यहाँ रब के तख़्ते-अदालत
के सामने खड़े हो जाएँ तो मैं आपको उन तमाम
भलाइयों की याद दिलाऊँगा जो रब ने आप और
आपके बापदादा से की हैं।
8आपका बाप याक़ूब मिसर आया। जब मिसरी
उस की औलाद को दबाने लगे तो उन्होंने चीख़ते-
चिल्लाते रब से मदद माँगी। तब उसने मूसा और
हारून को भेज दिया ताकि वह पूरी क़ौम को
मिसर से निकालकर यहाँ इस मुल्क में लाएँ।
9लेकिन जल्द ही वह रब अपने ख़ुदा को भूल

गए, इसलिए उसने उन्हें दुश्मन के हवाले कर
दिया। कभी हसूर शहर के बादशाह का कमाँडर
सीसरा उनसे लड़ा, कभी फ़िलिस्ती और कभी
मोआब का बादशाह। 10हर दफ़ा आपके बापदादा
ने चीख़ते-चिल्लाते रब से मदद माँगी और इक़रार
किया, 'हमने गुनाह किया है, क्योंकि हमने रब
को तर्क करके बाल और अस्तारात के बुतों की
पूजा की है। लेकिन अब हमें दुश्मनों से बचा!
फिर हम सिर्फ़ तेरी ही ख़िदमत करेंगे।' 11और
हर बार रब ने किसी न किसी को भेज दिया, कभी
जिदाऊन, कभी बरक़, कभी इफ़ताह और कभी
समुएल को। उन आदमियों की मारिफ़त अल्लाह
ने आपको इर्दगिर्द के तमाम दुश्मनों से बचाया,
और मुल्क में अमनो-अमान क़ायम हो गया।

12लेकिन जब अम्मोनी बादशाह नाहस आपसे
लड़ने आया तो आप मेरे पास आकर तक़ाज़ा
करने लगे कि हमारा अपना बादशाह हो जो हम
पर हुकूमत करे, हालाँकि आप जानते थे कि
रब हमारा ख़ुदा हमारा बादशाह है। 13अब वह
बादशाह देखें जिसे आप माँग रहे थे! रब ने
आपकी ख़ाहिश पूरी करके उसे आप पर मुक़र्रर
किया है। 14चुनाँचे रब का ख़ौफ़ मानें, उस की
ख़िदमत करें और उस की सुनें। सरकश होकर
उसके अहकाम की ख़िलाफ़वरज़ी मत करना।
अगर आप और आपका बादशाह रब से वफ़ादार
रहेंगे तो वह आपके साथ होगा। 15लेकिन अगर
आप उसके ताबे न रहें और सरकश होकर उसके
अहकाम की ख़िलाफ़वरज़ी करें तो वह आपकी
मुख़ालफ़त करेगा, जिस तरह उसने आपके
बापदादा की भी मुख़ालफ़त की।

16अब खड़े होकर देखें कि रब क्या करनेवाला
है। वह आपकी आँखों के सामने ही बड़ा मोजिज़ा
करेगा। 17इस वक़्त गंदुम की कटाई का मौसम
है। गो इन दिनों में बारिश नहीं होती, लेकिन मैं
दुआ करूँगा तो रब गरजते बादल और बारिश
भेजेगा। तब आप जान लेंगे कि आपने बादशाह
का तक़ाज़ा करते हुए रब के नज़दीक कितनी बुरी
बात की है।"

18समुएल ने पुकारकर रब से दुआ की, और
उस दिन रब ने गरजते बादल और बारिश भेज दी।
यह देखकर इजतिमा सख़्त घबराकर समुएल और
रब से डरने लगा। 19सबने समुएल से इलतमास
की, "रब अपने ख़ुदा से दुआ करके हमारी
सिफ़ारिश करें ताकि हम मर न जाएँ। क्योंकि
बादशाह का तक़ाज़ा करने से हमने अपने गुनाहों
में इज़ाफ़ा किया है।"

20समुएल ने लोगों को तसल्ली देकर कहा,
"मत डरें। बेशक आपसे ग़लती हुई है, लेकिन
आइंदा ख़याल रखें कि आप रब से दूर न हो
जाएँ बल्कि पूरे दिल से उस की ख़िदमत करें।
21बेमानी बुतों के पीछे मत पड़ना। न वह फ़ायदे
का बाइस हैं, न आपको बचा सकते हैं। उनकी
कोई हैसियत नहीं है। 22रब अपने अज़ीम नाम
की ख़ातिर अपनी क़ौम को नहीं छोड़ेगा, क्योंकि
उसने आपको अपनी क़ौम बनाने का फ़ैसला
किया है। 23जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है, मैं इसमें
रब का गुनाह नहीं करूँगा कि आपकी सिफ़ारिश
करने से बाज़ आऊँ। और आइंदा भी मैं आपको
अच्छे और सहीह रास्ते की तालीम देता रहूँगा।
24लेकिन ध्यान से रब का ख़ौफ़ मानें और पूरे
दिल और वफ़ादारी से उस की ख़िदमत करें। याद
रहे कि उसने आपके लिए कितने अज़ीम काम
किए हैं। 25लेकिन अगर आप ग़लत काम करने
पर तुले रहें तो आप अपने बादशाह समेत दुनिया
में से मिट जाएंगे।"

फ़िलिस्तियों से जंग

13 साऊल 30 साल का था जब
तख़्तनशीन हुआ। दो साल हुकू-
मत करने के बाद 2उसने अपनी फ़ौज के लिए
3,000 इसराईली चुन लिए। जंग लड़ने के
क़ाबिल बाक़ी आदमियों को उसने फ़ारिग़ कर
दिया। 2,000 फ़ौजियों की ड्यूटी मिकमास और
बैतेल के पहाड़ी इलाक़े में लगाई गई जहाँ साऊल
ख़ुद था। बाक़ी 1,000 अफ़राद यूनतन के पास
बिनयमीन के शहर जिबिया में थे।

3एक दिन यूनतन ने जिबिया की फ़िलिस्ती चौकी पर हमला करके उसे शिकस्त दी। जल्द ही यह ख़बर दूसरे फ़िलिस्तियों तक पहुँच गई। साऊल ने मुल्क के कोने कोने में क़ासिद भेज दिए, और वह नरसिंगा बजाते बजाते लोगों को यूनतन की फ़तह सुनाते गए। 4तमाम इसराईल में ख़बर फैल गई, "साऊल ने जिबिया की फ़िलिस्ती चौकी को तबाह कर दिया है, और अब इसराईल फ़िलिस्तियों की ख़ास नफ़रत का निशाना बन गया है।" साऊल ने तमाम मर्दों को फ़िलिस्तियों से लड़ने के लिए जिलजाल में बुलाया।

5फ़िलिस्ती भी इसराईलियों से लड़ने के लिए जमा हुए। उनके 30,000 रथ, 6,000 घुड़सवार और साहिल की रेत जैसे बेशुमार प्यादा फ़ौजी थे। उन्होंने बैत-आवन के मशरिक़ में मिकमास के क़रीब अपने ख़ैमे लगाए। 6इसराईलियों ने देखा कि हम बड़े ख़तरे में आ गए हैं, और दुश्मन हम पर बहुत दबाव डाल रहा है तो परेशानी के आलम में कुछ ग़ारों और दराड़ों में और कुछ पत्थरों के दरमियान या क़ब्रों और हौज़ों में छुप गए। 7कुछ इतने डर गए कि वह दरियाए-यरदन को पार करके जद और जिलियाद के इलाक़े में चले गए।

साऊल की बेसब्री

साऊल अब तक जिलजाल में था, लेकिन जो आदमी उसके साथ रहे थे वह ख़ौफ़ के मारे थरथरा रहे थे। 8समुएल ने साऊल को हिदायत दी थी कि सात दिन मेरा इंतज़ार करें। लेकिन सात दिन गुज़र गए, और समुएल न आया। साऊल के फ़ौजी मुंतशिर होने लगे 9तो साऊल ने हुक्म दिया, "भस्म होनेवाली और सलामती की क़ुरबानियाँ ले आओ।" फिर उसने ख़ुद क़ुरबानियाँ पेश कीं।

10वह अभी इस काम से फ़ारिग़ ही हुआ था कि समुएल पहुँच गया। साऊल उसे ख़ुशआमदीद कहने के लिए निकला। 11लेकिन समुएल ने पूछा, "आपने क्या किया?"

साऊल ने जवाब दिया, "लोग मुंतशिर हो रहे थे, और आप वक़्त पर न आए। जब मैंने देखा कि फ़िलिस्ती मिकमास के क़रीब जमा हो रहे हैं 12तो मैंने सोचा, 'फ़िलिस्ती यहाँ जिलजाल में आकर मुझ पर हमला करने को हैं, हालाँकि मैंने अभी रब से दुआ नहीं की कि वह हम पर मेहरबानी करे।' इसलिए मैंने जुर्रत करके ख़ुद क़ुरबानियाँ पेश कीं।"

13समुएल बोला, "यह कैसी अहमक़ाना हरकत थी! आपने रब अपने ख़ुदा का हुक्म न माना। रब तो आप और आपकी औलाद को हमेशा के लिए इसराईल पर मुक़र्रर करना चाहता था। 14लेकिन अब आपकी बादशाहत क़ायम नहीं रहेगी। चूँकि आपने उस की न सुनी इसलिए रब ने किसी और को चुनकर अपनी क़ौम का राहनुमा मुक़र्रर किया है, एक ऐसे आदमी को जो उस की सोच रखेगा।"

15फिर समुएल जिलजाल से चला गया।

जंग की तैयारियाँ

बचे हुए इसराईली साऊल के पीछे दुश्मन से लड़ने गए। वह जिलजाल से रवाना होकर जिबिया पहुँच गए। जब साऊल ने वहाँ फ़ौज का जायज़ा लिया तो बस 600 अफ़राद रह गए थे। 16साऊल, यूनतन और उनकी फ़ौज बिनयमीन के शहर जिबिया में टिक गए जबकि फ़िलिस्ती मिकमास के पास ख़ैमाज़न थे। 17कुछ देर के बाद फ़िलिस्तियों के तीन दस्ते मुल्क को लूटने के लिए निकले। एक सुआल के इलाक़े के शहर उफ़रा की तरफ़ चल पड़ा, 18दूसरा बैत-हौरून की तरफ़ और तीसरा उस पहाड़ी सिलसिले की तरफ़ जहाँ से वादीए-ज़बोईम और रेगिस्तान देखा जा सकता है।

19उन दिनों में पूरे मुल्के-इसराईल में लोहार नहीं था, क्योंकि फ़िलिस्ती नहीं चाहते थे कि इसराईली तलवारें या नेज़े बनाएँ। 20अपने हलों,

कुदालों, कुल्हाड़ियों या दराँतियों को तेज़ करवाने
के लिए तमाम इसराईलियों को फ़िलिस्तियों
के पास जाना पड़ता था। 21फ़िलिस्ती हलों,
कुदालों, काँटों और कुल्हाड़ियों को तेज़ करने के
लिए और आँकुसों की नोक ठीक करने के लिए
चाँदी के सिक्के की दो तिहाई लेते थे। 22नतीजे
में उस दिन साऊल और यूनतन के सिवा किसी
भी इसराईली के पास तलवार या नेज़ा नहीं था।

यूनतन फ़िलिस्तियों पर हमला करता है

23फ़िलिस्तियों ने मिकमास के दर्रे पर क़ब्ज़ा
करके वहाँ चौकी क़ायम की थी।

14 एक दिन यूनतन ने अपने जवान
सिलाहबरदार से कहा, “आओ, हम
परली तरफ़ जाएँ जहाँ फ़िलिस्ती फ़ौज की चौकी
है।” लेकिन उसने अपने बाप को इत्तला न दी।

2साऊल उस वक़्त अनार के दरख़्त के साये में
बैठा था जो जिबिया के क़रीब के मिजरोन में था।
600 मर्द उसके पास थे। 3अख़ियाह इमाम भी
साथ था जो इमाम का बालापोश पहने हुए था।
अख़ियाह यकबोद के भाई अख़ीतूब का बेटा था।
उसका दादा फ़ीनहास और परदादा एली था, जो
पुराने ज़माने में सैला में रब का इमाम था। किसी
को भी मालूम न था कि यूनतन चला गया है।

4-5फ़िलिस्ती चौकी तक पहुँचने के लिए
यूनतन ने एक तंग रास्ता इख़्तियार किया जो दो
कड़ाड़ों के दरमियान से गुज़रता था। पहले का
नाम बोसीस था, और वह शिमाल में मिकमास
के मुक़ाबिल था। दूसरे का नाम सना था, और
वह जुनूब में जिबा के मुक़ाबिल था। 6यूनतन
ने अपने जवान सिलाहबरदार से कहा, “आओ,
हम परली तरफ़ जाएँ जहाँ इन नामख़तूनों की
चौकी है। शायद रब हमारी मदद करे, क्योंकि
उसके नज़दीक कोई फ़रक़ नहीं कि हम ज़्यादा
हों या कम।” 7उसका सिलाहबरदार बोला, “जो
कुछ आप ठीक समझते हैं, वही करें। ज़रूर जाएँ।
जो कुछ भी आप कहेंगे, मैं हाज़िर हूँ।” 8यूनतन
बोला, “ठीक है। फिर हम यों दुश्मनों की तरफ़
बढ़ते जाएंगे, कि हम उन्हें साफ़ नज़र आएँ।
9अगर वह हमें देखकर पुकारें, ‘रुक जाओ, वरना
हम तुम्हें मार देंगे!’ तो हम अपने मनसूबे से बाज़
आकर उनके पास नहीं जाएंगे। 10लेकिन अगर
वह पुकारें, ‘आओ, हमारे पास आ जाओ!’ तो
हम ज़रूर उनके पास चढ़ जाएंगे। क्योंकि यह
इसका निशान होगा कि रब उन्हें हमारे क़ब्ज़े में
कर देगा।”

11चुनाँचे वह चलते चलते फ़िलिस्ती चौकी को
नज़र आए। फ़िलिस्ती शोर मचाने लगे, “देखो,
इसराईली अपने छुपने के बिलों से निकल रहे
हैं!” 12चौकी के फ़ौजियों ने दोनों को चैलेंज
किया, “आओ, हमारे पास आओ तो हम तुम्हें
सबक़ सिखाएँगे।” यह सुनकर यूनतन ने अपने
सिलाहबरदार को आवाज़ दी, “आओ, मेरे पीछे
चलो! रब ने उन्हें इसराईल के हवाले कर दिया
है।” 13दोनों अपने हाथों और पैरों के बल चढ़ते
चढ़ते चौकी तक जा पहुँचे। जब यूनतन आगे आगे
चलकर फ़िलिस्तियों के पास पहुँच गया तो वह
उसके सामने गिरते गए। साथ साथ सिलाहबरदार
पीछे से लोगों को मारता गया।

14इस पहले हमले के दौरान उन्होंने तक़रीबन
20 आदमियों को मार डाला। उनकी लाशें आध
एकड़ ज़मीन पर बिखरी पड़ी थीं। 15अचानक पूरी
फ़ौज में दहशत फैल गई, न सिर्फ़ लशकरगाह
बल्कि खुले मैदान में भी। चौकी के मर्द और
लूटनेवाले दस्ते भी थरथराने लगे। साथ साथ
ज़लज़ला आया। रब ने तमाम फ़िलिस्ती फ़ौजियों
के दिलों में दहशत पैदा की।

रब फ़िलिस्तियों पर फ़तह देता है

16साऊल के जो पहरेदार जिबिया से दुश्मन की
हरकतों पर ग़ौर कर रहे थे उन्होंने अचानक देखा
कि फ़िलिस्ती फ़ौज में हलचल मच गई है, अफ़रा-
तफ़री कभी इस तरफ़, कभी उस तरफ़ बढ़ रही
है। 17साऊल ने फ़ौरन हुक्म दिया, “फ़ौजियों
को गिनकर मालूम करो कि कौन चला गया है।”
मालूम हुआ कि यूनतन और उसका सिलाहबरदार

मौजूद नहीं हैं। 18साऊल ने अख़ियाह को हुक्म
दिया, "अहद का संदूक़ ले आएँ।" क्योंकि वह
उन दिनों में इसराईली कैंप में था। 19लेकिन
साऊल अभी अख़ियाह से बात कर रहा था कि
फ़िलिस्ती लशकरगाह में हंगामा और शोर बहुत
ज़्यादा बढ़ गया। साऊल ने इमाम से कहा, "कोई
बात नहीं, रहने दें।" 20वह अपने 600 अफ़राद
को लेकर फ़ौरन दुश्मन पर टूट पड़ा। जब उन
तक पहुँच गए तो मालूम हुआ कि फ़िलिस्ती एक
दूसरे को क़त्ल कर रहे हैं, और हर तरफ़ हंगामा
ही हंगामा है।

21फ़िलिस्तियों ने काफ़ी इसराईलियों को
अपनी फ़ौज में शामिल कर लिया था। अब
यह लोग फ़िलिस्तियों को छोड़कर साऊल और
यूनतन के पीछे हो लिए। 22इनके अलावा जो
इसराईली इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े में इधर-
उधर छुप गए थे, जब उन्हें ख़बर मिली कि
फ़िलिस्ती भाग रहे हैं तो वह भी उनका ताक़्क़ुब
करने लगे। 23लड़ते लड़ते मैदाने-जंग बैत-आवन
तक फैल गया। इस तरह रब ने उस दिन
इसराईलियों को बचा लिया।

साऊल की बेसोचे-समझे लानत

24उस दिन इसराईली सख़्त लड़ाई के बाइस
बड़ी मुसीबत में थे। इसलिए साऊल ने क़सम
खाकर कहा, "उस पर लानत जो शाम से पहले
खाना खाए। पहले मैं अपने दुश्मन से इंतक़ाम
लूँगा, फिर ही सब खा-पी सकते हैं।" इस वजह
से किसी ने रोटी को हाथ तक न लगाया। 25पूरी
फ़ौज जंगल में दाख़िल हुई तो वहाँ ज़मीन पर
शहद के छत्ते थे। 26तमाम लोग जब उनके पास
से गुज़रे तो देखा कि उनसे शहद टपक रहा है।
लेकिन किसी ने थोड़ा भी लेकर खाने की जुर्रत न
की, क्योंकि सब साऊल की लानत से डरते थे।

27यूनतन को लानत का इल्म न था, इसलिए
उसने अपनी लाठी का सिरा किसी छत्ते में
डालकर उसे चाट लिया। उस की आँखें फ़ौरन
चमक उठीं, और वह ताज़ादम हो गया। 28किसी
ने देखकर यूनतन को बताया, "आपके बाप ने
फ़ौज से क़सम खिलाकर एलान किया है कि उस
पर लानत जो इस दिन कुछ खाए। इसी वजह से
हम सब इतने निढाल हो गए हैं।" 29यूनतन ने
जवाब दिया, "मेरे बाप ने मुल्क को मुसीबत में
डाल दिया है! देखो, इस थोड़े-से शहद को चखने
से मेरी आँखें कितनी चमक उठीं और मैं कितना
ताज़ादम हो गया। 30बेहतर होता कि हमारे लोग
दुश्मन से लूटे हुए माल में से कुछ न कुछ खा लेते।
लेकिन इस हालत में हम फ़िलिस्तियों को किस
तरह ज़्यादा नुक़सान पहुँचा सकते हैं?"

31उस दिन इसराईली फ़िलिस्तियों को
मिकमास से मार मारकर ऐयालोन तक पहुँच
गए। लेकिन शाम के वक़्त वह निहायत निढाल
हो गए थे। 32फिर वह लूटे हुए रेवड़ों पर टूट
पड़े। उन्होंने जल्दी जल्दी भेड़-बकरियों, गाय-
बैलों और बछड़ों को ज़बह किया। भूक की
शिद्दत की वजह से उन्होंने ख़ून को सहीह तौर
से निकलने न दिया बल्कि जानवरों को ज़मीन
पर छोड़कर गोश्त को ख़ून समेत खाने लगे।

33किसी ने साऊल को इत्तला दी, "देखें, लोग
रब का गुनाह कर रहे हैं, क्योंकि वह गोश्त खा
रहे हैं जिसमें अब तक ख़ून है।" यह सुनकर
साऊल पुकार उठा, "आप रब से वफ़ादार नहीं
रहे!" फिर उसने साथवाले आदमियों को हुक्म
दिया, "कोई बड़ा पत्थर लुढ़काकर इधर ले आएँ!
34फिर तमाम आदमियों के पास जाकर उन्हें बता
देना, 'अपने जानवरों को मेरे पास ले आएँ ताकि
उन्हें पत्थर पर ज़बह करके खाएँ। वरना आप
ख़ूनआलूदा गोश्त खाकर रब का गुनाह करेंगे'।"

सब मान गए। उस शाम वह साऊल के पास
आए और अपने जानवरों को पत्थर पर ज़बह
किया। 35वहाँ साऊल ने पहली दफ़ा रब की
ताज़ीम में क़ुरबानगाह बनाई।

36फिर उसने एलान किया, "आएँ, हम अभी
इसी रात फ़िलिस्तियों का ताक़्क़ुब करके उनमें
लूट-मार का सिलसिला जारी रखें ताकि एक भी
न बचे।" फ़ौजियों ने जवाब दिया, "ठीक है, वह

कुछ करें जो आपको मुनासिब लगे।” लेकिन इमाम बोला, “पहले हम अल्लाह से हिदायत लें।” 37चुनाँचे साऊल ने अल्लाह से पूछा, “क्या हम फ़िलिस्तियों का ताक़्क़ुब जारी रखें? क्या तू उन्हें इसराईल के हवाले कर देगा?” लेकिन इस मरतबा अल्लाह ने जवाब न दिया।

38यह देखकर साऊल ने फ़ौज के तमाम राहनुमाओं को बुलाकर कहा, “किसी ने गुनाह किया है। मालूम करने की कोशिश करें कि कौन क़ुसूरवार है। 39रब की हयात की क़सम जो इसराईल का नजातदहिंदा है, क़ुसूरवार को फ़ौरन सज़ाए-मौत दी जाएगी, ख़ाह वह मेरा बेटा यूनतन क्यों न हो।” लेकिन सब ख़ामोश रहे।

40तब साऊल ने दुबारा एलान किया, “पूरी फ़ौज एक तरफ़ खड़ी हो जाए और यूनतन और मैं दूसरी तरफ़।” लोगों ने जवाब दिया, “जो आपको मुनासिब लगे वह करें।” 41फिर साऊल ने रब इसराईल के ख़ुदा से दुआ की, “ऐ रब, हमें दिखा कि कौन क़ुसूरवार है!”

जब क़ुरा डाला गया तो यूनतन और साऊल के गुरोह को क़ुसूरवार क़रार दिया गया और बाक़ी फ़ौज को बेक़ुसूर। 42फिर साऊल ने हुक्म दिया, “अब क़ुरा डालकर पता करें कि मैं क़ुसूरवार हूँ या यूनतन।” जब क़ुरा डाला गया तो यूनतन क़ुसूरवार ठहरा। 43साऊल ने पूछा, “बताएँ, आपने क्या किया?” यूनतन ने जवाब दिया, “मैंने सिर्फ़ थोड़ा-सा शहद चख लिया जो मेरी लाठी के सिरे पर लगा था। लेकिन मैं मरने के लिए तैयार हूँ।” 44साऊल ने कहा, “यूनतन, अल्लाह मुझे सख़्त सज़ा दे अगर मैं आपको इसके लिए सज़ाए-मौत न दूँ।” 45लेकिन फ़ौजियों ने एतराज़ किया, “यह कैसी बात है? यूनतन ही ने अपने ज़बरदस्त हमले से इसराईल को आज बचा लिया है। उसे किस तरह सज़ाए-मौत दी जा सकती है? कभी नहीं! अल्लाह की हयात की क़सम, उसका एक बाल भी बीका नहीं होगा, क्योंकि आज उसने अल्लाह की मदद से फ़तह पाई है।” यों फ़ौजियों ने यूनतन को मौत से बचा लिया।

46तब साऊल ने फ़िलिस्तियों का ताक़्क़ुब करना छोड़ दिया और अपने घर चला गया। फ़िलिस्ती भी अपने मुल्क में वापस चले गए।

साऊल की जंगें

47जब साऊल तख़्तनशीन हुआ तो वह मुल्क के इर्दगिर्द के तमाम दुश्मनों से लड़ा। इनमें मोआब, अम्मोन, अदोम, ज़ोबाह के बादशाह और फ़िलिस्ती शामिल थे। और जहाँ भी जंग छिड़ी वहाँ उसने फ़तह पाई। 48वह निहायत बहादुर था। उसने अमालीक़ियों को भी शिकस्त दी और यों इसराईल को उन तमाम दुश्मनों से बचा लिया जो बार बार मुल्क की लूट-मार करते थे।

साऊल का ख़ानदान

49साऊल के तीन बेटे थे, यूनतन, इसवी और मलकीशुअ। उस की बड़ी बेटी मीरब और छोटी बेटी मीकल थी। 50बीवी का नाम अख़ीनुअम बिंत अख़ीमाज़ था। साऊल की फ़ौज का कमाँडर अबिनैर था, जो साऊल के चचा नैर का बेटा था। 51साऊल का बाप क़ीस और अबिनैर का बाप नैर सगे भाई थे जिनका बाप अबियेल था।

52साऊल के जीते-जी फ़िलिस्तियों से सख़्त जंग जारी रही। इसलिए जब भी कोई बहादुर और लड़ने के क़ाबिल आदमी नज़र आया तो साऊल ने उसे अपनी फ़ौज में भरती कर लिया।

तमाम अमालीक़ियों को हलाक करने का हुक्म

15 एक दिन समुएल ने साऊल के पास आकर उससे बात की, “रब ही ने मुझे आपको मसह करके इसराईल पर मुक़र्रर करने का हुक्म दिया था। अब रब का पैग़ाम सुन लें! 2रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, ‘मैं अमालीक़ियों का मेरी क़ौम के साथ सुलूक नहीं भूल सकता। उस वक़्त जब इसराईली मिसर से निकलकर कनान की तरफ़ सफ़र कर रहे थे तो अमालीक़ियों ने रास्ता बंद कर दिया था। 3अब वक़्त आ गया है

कि तू उन पर हमला करे। सब कुछ तबाह करके
मेरे हवाले कर दे। कुछ भी बचने न दे, बल्कि
तमाम मर्दों, औरतों, बच्चों शीरख़ारों समेत, गाय-
बैलों, भेड़-बकरियों, ऊँटों और गधों को मौत के
घाट उतार दे।'"

4साऊल ने अपने फ़ौजियों को बुलाकर
तलायम में उनका जायज़ा लिया। कुल
2,00,000 प्यादे फ़ौजी थे, नीज़ यहूदाह के
10,000 अफ़राद। 5अमालीक़ियों के शहर के
पास पहुँचकर साऊल वादी में ताक में बैठ गया।
6लेकिन पहले उसने क़ीनियों को ख़बर भेजी,
"अमालीक़ियों से अलग होकर उनके पास से चले
जाएँ, वरना आप उनके साथ हलाक हो जाएंगे।
क्योंकि जब इसराईली मिसर से निकलकर
रेगिस्तान में सफ़र कर रहे थे तो आपने उन पर
मेहरबानी की थी।"

यह ख़बर मिलते ही क़ीनी अमालीक़ियों
से अलग होकर चले गए। 7तब साऊल ने
अमालीक़ियों पर हमला करके उन्हें हवीला से
लेकर मिसर की मशरिक़ी सरहद शूर तक
शिकस्त दी। 8पूरी क़ौम को तलवार से मारा
गया, सिर्फ़ उनका बादशाह अजाज ज़िंदा पकड़ा
गया। 9साऊल और उसके फ़ौजियों ने उसे ज़िंदा
छोड़ दिया। इसी तरह सबसे अच्छी भेड़-बकरियों,
गाय-बैलों, मोटे-ताज़े बछड़ों और चीदा भेड़ के
बच्चों को भी छोड़ दिया गया। जो भी अच्छा
था बच गया, क्योंकि इसराईलियों का दिल नहीं
करता था कि तनदुरुस्त और मोटे-ताज़े जानवरों
को हलाक करें। उन्होंने सिर्फ़ उन तमाम कमज़ोर
जानवरों को ख़त्म किया जिनकी क़दरो-क़ीमत न
थी।

फ़रमाँबरदारी क़ुरबानियों से अहम है

10फिर रब समुएल से हमकलाम हुआ,
11"मुझे दुख है कि मैंने साऊल को बादशाह बना
लिया है, क्योंकि उसने मुझसे दूर होकर मेरा हुक्म
नहीं माना।" समुएल को इतना ग़ुस्सा आया कि
वह पूरी रात बुलंद आवाज़ से रब से फ़रियाद
करता रहा। 12अगले दिन वह उठकर साऊल
से मिलने गया। किसी ने उसे बताया, "साऊल
करमिल चला गया। वहाँ अपने लिए यादगार
खड़ा करके वह आगे जिलजाल चला गया है।"
13जब समुएल जिलजाल पहुँचा तो साऊल ने
कहा, "मुबारक हो! मैंने रब का हुक्म पूरा कर
दिया है।" 14समुएल ने पूछा, "जानवरों का यह
शोर कहाँ से आ रहा है? भेड़-बकरियाँ ममया
रही और गाय-बैल डकरा रहे हैं।" 15साऊल ने
जवाब दिया, "यह अमालीक़ियों के हाँ से लाए
गए हैं। फ़ौजियों ने सबसे अच्छे गाय-बैलों और
भेड़-बकरियों को ज़िंदा छोड़ दिया ताकि उन्हें रब
आपके ख़ुदा के हुज़ूर क़ुरबान करें। लेकिन हमने
बाक़ी सबको रब के हवाले करके मार दिया।"

16समुएल बोला, "ख़ामोश! पहले वह बात
सुन लें जो रब ने मुझे पिछली रात फ़रमाई।"
साऊल ने जवाब दिया, "बताएँ।" 17समुएल ने
कहा, "जब आप तमाम क़ौम के राहनुमा बन गए
तो एहसासे-कमतरी का शिकार थे। तो भी रब ने
आपको मसह करके इसराईल का बादशाह बना
दिया। 18और उसने आपको भेजकर हुक्म दिया,
'जा और अमालीक़ियों को पूरे तौर पर हलाक
करके मेरे हवाले कर। उस वक़्त तक इन शरीर
लोगों से लड़ता रह जब तक वह सबके सब मिट
न जाएँ।' 19अब मुझे बताएँ कि आपने रब की
क्यों न सुनी? आप लूटे हुए माल पर क्यों टूट
पड़े? यह तो रब के नज़दीक गुनाह है।"

20साऊल ने एतराज़ किया, "लेकिन मैंने ज़रूर
रब की सुनी। जिस मक़सद के लिए रब ने
मुझे भेजा वह मैंने पूरा कर दिया है, क्योंकि
मैं अमालीक़ के बादशाह अजाज को गिरिफ़्तार
करके यहाँ ले आया और बाक़ी सबको मौत के
घाट उतारकर रब के हवाले कर दिया। 21मेरे
फ़ौजी लूटे हुए माल में से सिर्फ़ सबसे अच्छी भेड़-
बकरियाँ और गाय-बैल चुनकर ले आए, क्योंकि
वह उन्हें यहाँ जिलजाल में रब आपके ख़ुदा के
हुज़ूर क़ुरबान करना चाहते थे।"

22लेकिन समुएल ने जवाब दिया, “रब को
क्या बात ज़्यादा पसंद है, आपकी भस्म होनेवाली
और ज़बह की क़ुरबानियाँ या यह कि आप उस
की सुनते हैं? सुनना क़ुरबानी से कहीं बेहतर
और ध्यान देना मेंढे की चरबी से कहीं उम्दा है।
23सरकशी ग़ैबदानी के गुनाह के बराबर है और
ग़ुरूर बुतपरस्ती के गुनाह से कम नहीं होता।
आपने रब का हुक्म रद्द किया है, इसलिए उसने
आपको रद्द करके बादशाह का ओहदा आपसे
छीन लिया है।”

24तब साऊल ने इक़रार किया, “मुझसे गुनाह
हुआ है। मैंने आपकी हिदायत और रब के हुक्म
की ख़िलाफ़वरज़ी की है। मैंने लोगों से डरकर
उनकी बात मान ली। 25लेकिन अब मेहरबानी
करके मुझे मुआफ़ करें और मेरे साथ वापस आएँ
ताकि मैं आपकी मौजूदगी में रब की परस्तिश
कर सकूँ।” 26लेकिन समुएल ने जवाब दिया,
“मैं आपके साथ वापस नहीं चलूँगा। आपने रब
का कलाम रद्द किया है, इसलिए रब ने आपको
रद्द करके बादशाह का ओहदा आपसे छीन लिया
है।”

27समुएल मुड़कर वहाँ से चलने लगा, लेकिन
साऊल ने उसके चोग़े का दामन इतने ज़ोर
से पकड़ लिया कि वह फटकर उसके हाथ में
रह गया। 28समुएल बोला, “जिस तरह कपड़ा
फटकर आपके हाथ में रह गया बिलकुल उसी
तरह रब ने आज ही इसराईल पर आपका
इख़्तियार आपसे छीनकर किसी और को दे दिया
है, ऐसे शख़्स को जो आपसे कहीं बेहतर है। 29जो
इसराईल की शानो-शौकत है वह न झूट बोलता,
न कभी अपनी सोच को बदलता है, क्योंकि वह
इनसान नहीं कि एक बात कहकर बाद में उसे
बदले।”

30साऊल ने दुबारा मिन्नत की, “बेशक मैंने
गुनाह किया है। लेकिन बराहे-करम कम अज़ कम
मेरी क़ौम के बुज़ुर्गों और इसराईल के सामने तो
मेरी इज़्ज़त करें। मेरे साथ वापस आएँ ताकि मैं
आपकी मौजूदगी में रब आपके ख़ुदा की परस्तिश
कर सकूँ।”

31तब समुएल मान गया और साऊल के साथ
दूसरों के पास वापस आया। साऊल ने रब की
परस्तिश की, 32फिर समुएल ने एलान किया,
“अमालीक़ के बादशाह अजाज को मेरे पास ले
आओ!” अजाज इतमीनान से समुएल के पास
आया, क्योंकि उसने सोचा, “बेशक मौत का
ख़तरा टल गया है।” 33लेकिन समुएल बोला,
“तेरी तलवार से बेशुमार माएँ अपने बच्चों से
महरूम हो गई हैं। अब तेरी माँ भी बेऔलाद हो
जाएगी।” यह कहकर समुएल ने वहीं जिलजाल
में रब के हुज़ूर अजाज को तलवार से टुकड़े टुकड़े
कर दिया।

34फिर वह रामा वापस चला गया, और साऊल
अपने घर गया जो जिबिया में था। 35इसके
बाद समुएल जीते-जी साऊल से कभी न मिला,
क्योंकि वह साऊल का मातम करता रहा। लेकिन
रब को दुख था कि मैंने साऊल को इसराईल पर
क्यों मुक़र्रर किया।

नए बादशाह दाऊद को मुक़र्रर किया जाता है

16 एक दिन रब समुएल से हम-
कलाम हुआ, “तू कब तक साऊल
का मातम करेगा? मैंने तो उसे रद्द करके बादशाह
का ओहदा उससे ले लिया है। अब मेंढे का
सींग ज़ैतून के तेल से भरकर बैत-लहम चला
जा। वहाँ एक आदमी से मिल जिसका नाम
यस्सी है। क्योंकि मैंने उसके बेटों में से एक को
चुन लिया है कि वह नया बादशाह बन जाए।”
2लेकिन समुएल ने एतराज़ किया, “मैं किस तरह
जा सकता हूँ? साऊल यह सुनकर मुझे मार
डालेगा।” रब ने जवाब दिया, “एक जवान गाय
अपने साथ लेकर लोगों को बता दे कि मैं इसे रब
के हुज़ूर क़ुरबान करने के लिए आया हूँ। 3यस्सी
को दावत दे कि वह क़ुरबानी की ज़ियाफ़त में
शरीक हो जाए। आगे मैं तुझे बताऊँगा कि क्या

करना है। मैं तुझे दिखाऊँगा कि किस बेटे को मेरे
लिए मसह करके चुन लेना है।”
4समुएल मान गया। जब वह बैत-लहम पहुँच
गया तो लोग चौंक उठे। लरज़ते लरज़ते शहर के
बुज़ुर्ग उससे मिलने आए और पूछा, “ख़ैरियत तो
है कि आप हमारे पास आ गए हैं?” 5समुएल ने
उन्हें तसल्ली देकर कहा, “ख़ैरियत है। मैं रब के
हुज़ूर क़ुरबानी पेश करने के लिए आया हूँ। अपने
आपको रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करें और
फिर मेरे साथ क़ुरबानी की ज़ियाफ़त में शरीक
हो जाएँ।” समुएल ने यस्सी और उसके बेटों को
भी दावत दी और उन्हें अपने आपको मख़सूसो-
मुक़द्दस करने को कहा।
6जब यस्सी अपने बेटों समेत क़ुरबानी की
ज़ियाफ़त के लिए आया तो समुएल की नज़र
इलियाब पर पड़ी। उसने सोचा, “बेशक यह वह
है जिसे रब मसह करके बादशाह बनाना चाहता
है।” 7लेकिन रब ने फ़रमाया, “इसकी शक्लो-
सूरत और लंबे क़द से मुतअस्सिर न हो, क्योंकि
यह मुझे नामंज़ूर है। मैं इनसान की नज़र से नहीं
देखता। क्योंकि इनसान ज़ाहिरी सूरत पर ग़ौर
करके फ़ैसला करता है जबकि रब को हर एक
का दिल साफ़ साफ़ नज़र आता है।”
8फिर यस्सी ने अपने दूसरे बेटे अबीनदाब
को बुलाकर समुएल के सामने से गुज़रने दिया।
समुएल बोला, “नहीं, रब ने इसे भी नहीं चुना।”
9इसके बाद यस्सी ने तीसरे बेटे सम्मा को पेश
किया। लेकिन यह भी नहीं चुना गया था। 10यों
यस्सी ने अपने सात बेटों को एक एक करके
समुएल के सामने से गुज़रने दिया। इनमें से
कोई रब का चुना हुआ बादशाह न निकला।
11आख़िरकार समुएल ने पूछा, “इनके अलावा
कोई और बेटा तो नहीं है?” यस्सी ने जवाब
दिया, “सबसे छोटा बेटा अभी बाक़ी रह गया
है, लेकिन वह बाहर खेतों में भेड़-बकरियों की
निगरानी कर रहा है।” समुएल ने कहा, “उसे
फ़ौरन बुला लें। उसके आने तक हम खाने के लिए
नहीं बैठेंगे।”
12चुनाँचे यस्सी छोटे को बुलाकर अंदर ले
आया। यह बेटा गोरा था। उस की आँखें ख़ूबसूरत
और शक्लो-सूरत क़ाबिले-तारीफ़ थी। रब ने
समुएल को बताया, “यही है। उठकर इसे मसह
कर।” 13समुएल ने तेल से भरा हुआ मेंढे का
सींग लेकर उसे दाऊद के सर पर उंडेल दिया।
सब भाई मौजूद थे। उसी वक़्त रब का रूह दाऊद
पर नाज़िल हुआ और उस की सारी उम्र उस पर
ठहरा रहा। फिर समुएल रामा वापस चला गया।

दाऊद साऊल को बदरूह से आराम दिलाता है

14लेकिन रब के रूह ने साऊल को छोड़ दिया
था। इसके बजाए रब की तरफ़ से एक बुरी रूह
उसे दहशतज़दा करने लगी। 15एक दिन साऊल
के मुलाज़िमों ने उससे कहा, “अल्लाह की तरफ़
से एक बुरी रूह आपके दिल में दहशत पैदा कर
रही है। 16हमारा आक़ा अपने ख़ादिमों को हुक्म दे
कि वह किसी को ढूँड लाएँ जो सरोद बजा सके।
जब भी अल्लाह की तरफ़ से यह बुरी रूह आप पर
आए तो वह अपना साज़ बजाकर आपको सुकून
दिलाएगा।”
17साऊल ने जवाब दिया, “ठीक है, ऐसा ही
करो। किसी को बुला लाओ जो साज़ बजाने में
माहिर हो।” 18एक मुलाज़िम बोला, “मैंने एक
आदमी को देखा है जो ख़ूब बजा सकता है। वह
बैत-लहम के रहनेवाले यस्सी का बेटा है। वह न
सिर्फ़ महारत से सरोद बजा सकता है बल्कि बड़ा
जंगजू भी है। यह भी उस की एक ख़ूबी है कि वह
हर मौक़े पर समझदारी से बात कर सकता है।
और वह ख़ूबसूरत भी है। रब उसके साथ है।”
19साऊल ने फ़ौरन अपने क़ासिदों को यस्सी
के पास भेजकर उसे इत्तला दी, “अपने बेटे दाऊद
को जो भेड़-बकरियों को सँभालता है मेरे पास
भेज देना।” 20यह सुनकर यस्सी ने रोटी, मै का
मशकीज़ा और एक जवान बकरी गधे पर लादकर
दाऊद के हवाले कर दी और उसे साऊल के दरबार
में भेज दिया।

21इस तरह दाऊद साऊल की ख़िदमत में
हाज़िर हो गया। वह बादशाह को बहुत पसंद आया
बल्कि साऊल को इतना प्यारा लगा कि उसे
अपना सिलाहबरदार बना लिया। 22साऊल ने
यस्सी को इत्तला भेजी, “दाऊद मुझे बहुत पसंद
आया है, इसलिए उसे मुस्तक़िल तौर पर मेरी
ख़िदमत करने की इजाज़त दें।” 23और जब भी
बुरी रूह साऊल पर आती तो दाऊद अपना सरोद
बजाने लगता। तब साऊल को सुकून मिलता और
बुरी रूह उस पर से दूर हो जाती।

जाती जालूत

17 एक दिन फ़िलिस्तियों ने अपनी फ़ौज
को यहूदाह के शहर सोका के क़रीब
जमा किया। वह इफ़स-दम्मीम में ख़ैमाज़न हुए
जो सोका और अज़ीक़ा के दरमियान है। 2जवाब
में साऊल ने अपनी फ़ौज को बुलाकर वादीए-
ऐला में जमा किया। वहाँ इसराईल के मर्द जंग
के लिए तरतीब से खड़े हुए। 3यों फ़िलिस्ती एक
पहाड़ी पर खड़े थे और इसराईली दूसरी पहाड़ी
पर। उनके बीच में वादी थी।

4फिर फ़िलिस्ती सफ़ों से जात शहर का
पहलवान निकलकर इसराईलियों के सामने खड़ा
हुआ। उसका नाम जालूत था और वह 9 फ़ुट से
ज़्यादा लंबा था। 5उसने हिफ़ाज़त के लिए पीतल
की कई चीज़ें पहन रखी थीं : सर पर ख़ोद, धड़
पर ज़िरा-बकतर जो 57 किलोग्राम वज़नी था
6और पिंडलियों पर बकतर। कंधों पर पीतल की
शमशेर लटकी हुई थी। 7जो नेज़ा वह पकड़कर
चल रहा था उसका दस्ता खड्डी के शहतीर जैसा
मोटा और लंबा था, और उसके लोहे की नोक
का वज़न 7 किलोग्राम से ज़्यादा था। जालूत के
आगे आगे एक आदमी उस की ढाल उठाए चल
रहा था।

8जालूत इसराईली सफ़ों के सामने रुककर
गरजा, “तुम सब क्यों लड़ने के लिए सफ़आरा
हो गए हो? क्या मैं फ़िलिस्ती नहीं हूँ जबकि तुम
सिर्फ़ साऊल के नौकर-चाकर हो? चलो, एक
आदमी को चुनकर उसे यहाँ नीचे मेरे पास भेज
दो। 9अगर वह मुझसे लड़ सके और मुझे मार दे
तो हम तुम्हारे ग़ुलाम बन जाएंगे। लेकिन अगर मैं
उस पर ग़ालिब आकर उसे मार डालूँ तो तुम हमारे
ग़ुलाम बन जाओगे। 10आज मैं इसराईली सफ़ों
की बदनामी करके उन्हें चैलेंज करता हूँ कि मुझे
एक आदमी दो जो मेरे साथ लड़े।” 11जालूत की
यह बातें सुनकर साऊल और तमाम इसराईली
घबरा गए, और उन पर दहशत तारी हो गई।

दाऊद भाइयों से मिलने के लिए फ़ौज के पास जाता है

12उस वक़्त दाऊद का बाप यस्सी काफ़ी बूढ़ा
हो चुका था। उसके कुल 8 बेटे थे, और वह
इफ़राता के इलाक़े के बैत-लहम में रहता था।
13लेकिन उसके तीन सबसे बड़े बेटे फ़िलिस्तियों
से लड़ने के लिए साऊल की फ़ौज में भरती हो
गए थे। सबसे बड़े का नाम इलियाब, दूसरे का
अबीनदाब और तीसरे का सम्मा था। 14-15दाऊद
तो सबसे छोटा भाई था। वह दूसरों की तरह पूरा
वक़्त साऊल के पास न गुज़ार सका, क्योंकि उसे
बाप की भेड़-बकरियों को सँभालने की ज़िम्मेदारी
दी गई थी। इसलिए वह आता जाता रहा। चुनाँचे
वह मौजूद नहीं था 16जब जालूत 40 दिन सुबहो-
शाम इसराईलियों की सफ़ों के सामने खड़े होकर
उन्हें चैलेंज करता रहा।

17एक दिन यस्सी ने दाऊद से कहा, “बेटा,
अपने भाइयों के पास कैंप में जाकर उनका पता
करो। भुने हुए अनाज के यह 16 किलोग्राम और
यह दस रोटियाँ अपने साथ लेकर जल्दी जल्दी
उधर पहुँच जाओ। 18पनीर की यह दस टिक्कियाँ
उनके कप्तान को दे देना। भाइयों का हाल मालूम
करके उनकी कोई चीज़ वापस ले आओ ताकि
मुझे तसल्ली हो जाए कि वह ठीक हैं। 19वह
वादीए-ऐला में साऊल और इसराईली फ़ौज के
साथ फ़िलिस्तियों से लड़ रहे हैं।” 20अगले दिन
सुबह-सवेरे दाऊद ने रेवड़ को किसी और के सुपुर्द
करके सामान उठाया और यस्सी की हिदायत

के मुताबिक़ चला गया। जब वह कैंप के पास
पहुँच गया तो इसराईली फ़ौजी नारे लगा लगाकर
मैदाने-जंग के लिए निकल रहे थे। 21वह लड़ने के
लिए तरतीब से खड़े हो गए, और दूसरी तरफ़
फ़िलिस्ती सफ़ें भी तैयार हुईं। 22यह देखकर
दाऊद ने अपनी चीज़ें उस आदमी के पास छोड़
दीं जो लशकर के सामान की निगरानी कर रहा
था, फिर भागकर मैदाने-जंग में भाइयों से मिलने
चला गया।

वह अभी उनका हाल पूछ ही रहा था
23कि जाती जालूत मामूल के मुताबिक़
फ़िलिस्तियों की सफ़ों से निकलकर इस-
राईलियों के सामने वही तंज़ की बातें बकने लगा।
दाऊद ने भी उस की बातें सुनीं। 24जालूत को
देखते ही इसराईलियों के रोंगटे खड़े हो गए,
और वह भागकर 25आपस में कहने लगे, "क्या
आपने इस आदमी को हमारी तरफ़ बढ़ते हुए
देखा? सुनें कि वह किस तरह हमारी बदनामी
करके हमें चैलेंज कर रहा है। बादशाह ने एलान
किया है कि जो शख़्स इसे मार दे उसे बड़ा अज्र
मिलेगा। शहज़ादी से उस की शादी होगी, और
आइंदा उसके बाप के ख़ानदान को टैक्स नहीं देना
पड़ेगा।"

26दाऊद ने साथवाले फ़ौजियों से पूछा, "क्या
कह रहे हैं? उस आदमी को क्या इनाम मिलेगा
जो इस फ़िलिस्ती को मारकर हमारी क़ौम की
रुसवाई दूर करेगा? यह नामख़तून फ़िलिस्ती
कौन है कि ज़िंदा ख़ुदा की फ़ौज की बदनामी
करके उसे चैलेंज करे!" 27लोगों ने दुबारा दाऊद
को बताया कि बादशाह उस आदमी को क्या देगा
जो जालूत को मार डालेगा।

28जब दाऊद के बड़े भाई इलियाब ने दाऊद
की बातें सुनीं तो उसे ग़ुस्सा आया और वह उसे
झिड़कने लगा, "तू क्यों आया है? बयाबान में
अपनी चंद एक भेड़-बकरियों को किसके पास
छोड़ आया है? मैं तेरी शोख़ी और दिल की शरारत
ख़ूब जानता हूँ। तू सिर्फ़ जंग का तमाशा देखने
आया है!" 29दाऊद ने पूछा, "अब मुझसे क्या
ग़लती हुई? मैंने तो सिर्फ़ सवाल पूछा।" 30वह
उससे मुड़कर किसी और के पास गया और वही
बात पूछने लगा। वही जवाब मिला।

हथियार का चुनाव

31दाऊद की यह बातें सुनकर किसी ने साऊल
को इत्तला दी। साऊल ने उसे फ़ौरन बुलाया।
32दाऊद ने बादशाह से कहा, "किसी को इस
फ़िलिस्ती की वजह से हिम्मत नहीं हारना चाहिए।
मैं उससे लड़ूँगा।" 33साऊल बोला, "आप?
आप जैसा लड़का किस तरह उसका मुक़ाबला
कर सकता है? आप तो अभी बच्चे से हो जबकि
वह तजरबाकार जंगजू है जो जवानी से हथियार
इस्तेमाल करता आया है।"

34लेकिन दाऊद ने इसरार किया, "मैं अपने
बाप की भेड़-बकरियों की निगरानी करता हूँ।
जब कभी कोई शेरबबर या रीछ रेवड़ का जानवर
छीनकर भाग जाता 35तो मैं उसके पीछे जाता
और उसे मार मारकर भेड़ को उसके मुँह से
छुड़ा लेता था। अगर शेर या रीछ जवाब में मुझ
पर हमला करता तो मैं उसके सर के बालों को
पकड़कर उसे मार देता था। 36इस तरह आपके
ख़ादिम ने कई शेरों और रीछों को मार डाला है।
यह नामख़तून भी उनकी तरह हलाक हो जाएगा,
क्योंकि उसने ज़िंदा ख़ुदा की फ़ौज की बदनामी
करके उसे चैलेंज किया है। 37जिस रब ने मुझे
शेर और रीछ के पंजे से बचा लिया है वह मुझे
इस फ़िलिस्ती के हाथ से भी बचाएगा।"

साऊल बोला, "ठीक है, जाएँ और रब आपके
साथ हो।" 38उसने दाऊद को अपना ज़िरा-
बकतर और पीतल का ख़ोद पहनाया। 39फिर
दाऊद ने साऊल की तलवार बाँधकर चलने की
कोशिश की। लेकिन उसे बहुत मुश्किल लग रहा
था। उसने साऊल से कहा, "मैं यह चीज़ें पहनकर
नहीं लड़ सकता, क्योंकि मैं इनका आदी नहीं
हूँ।" उन्हें उतारकर 40उसने नदी से पाँच चिकने
चिकने पत्थर चुनकर उन्हें अपनी चरवाहे की थैली
में डाल लिया। फिर चरवाहे की अपनी लाठी और

फ़लाख़न पकड़कर वह फ़िलिस्ती से लड़ने के लिए इसराईली सफ़ों से निकला।

दाऊद की फ़तह

41जालूत दाऊद की जानिब बढ़ा। ढाल को उठानेवाला उसके आगे आगे चल रहा था।
42उसने हिक़ारतआमेज़ नज़रों से दाऊद का जायज़ा लिया, क्योंकि वह गोरा और ख़ूबसूरत नौजवान था।
43वह गरजा, "क्या मैं कुत्ता हूँ कि तू लाठी लेकर मेरा मुक़ाबला करने आया है?" अपने देवताओं के नाम लेकर वह दाऊद पर लानत भेजकर
44चिल्लाया, "इधर आ ताकि मैं तेरा गोश्त परिंदों और जंगली जानवरों को खिलाऊँ।"

45दाऊद ने जवाब दिया, "आप तलवार, नेज़ा और शमशेर लेकर मेरा मुक़ाबला करने आए हैं, लेकिन मैं रब्बुल-अफ़वाज का नाम लेकर आता हूँ, उसी का नाम जो इसराईली फ़ौज का ख़ुदा है। क्योंकि आपने उसी को चैलेंज किया है।
46आज ही रब आपको मेरे हाथ में कर देगा, और मैं आपका सर क़लम कर दूँगा। इसी दिन मैं फ़िलिस्ती फ़ौजियों की लाशें परिंदों और जंगली जानवरों को खिला दूँगा। तब तमाम दुनिया जान लेगी कि इसराईल का ख़ुदा है।
47सब जो यहाँ मौजूद हैं जान लेंगे कि रब को हमें बचाने के लिए तलवार या नेज़े की ज़रूरत नहीं होती। वह ख़ुद ही जंग कर रहा है, और वही आपको हमारे क़ब्ज़े में कर देगा।"

48जालूत दाऊद पर हमला करने के लिए आगे बढ़ा, और दाऊद भी उस की तरफ़ दौड़ा।
49चलते चलते उसने अपनी थैली से पत्थर निकाला और उसे फ़लाख़न में रखकर ज़ोर से चलाया। पत्थर उड़ता उड़ता फ़िलिस्ती के माथे पर जा लगा। वह खोपड़ी में धँस गया, और पहलवान मुँह के बल गिर गया।
50-51यों दाऊद फ़लाख़न और पत्थर से फ़िलिस्ती पर ग़ालिब आया। उसके हाथ में तलवार नहीं थी। तब उसने जालूत की तरफ़ दौड़कर उसी की तलवार मियान से खींचकर फ़िलिस्ती का सर काट डाला।

जब फ़िलिस्तियों ने देखा कि हमारा पहलवान हलाक हो गया है तो वह भाग निकले।
52इसराईल और यहूदाह के मर्द फ़तह के नारे लगा लगाकर फ़िलिस्तियों पर टूट पड़े। उनका ताक़्क़ुब करते करते वह जात और अक़रून के दरवाज़ों तक पहुँच गए। जो रास्ता शारैम से जात और अक़रून तक जाता है उस पर हर तरफ़ फ़िलिस्तियों की लाशें नज़र आईं।
53फिर इसराईलियों ने वापस आकर फ़िलिस्तियों की छोड़ी हुई लशकरगाह को लूट लिया।

54बाद में दाऊद जालूत का सर यरूशलम को ले आया। फ़िलिस्ती के हथियार उसने अपने ख़ैमे में रख लिए।

साऊल दाऊद के ख़ानदान का पता करता है

55जब दाऊद जालूत से लड़ने गया तो साऊल ने फ़ौज के कमाँडर अबिनैर से पूछा, "इस जवान आदमी का बाप कौन है?" अबिनैर ने जवाब दिया, "आपकी हयात की क़सम, मुझे मालूम नहीं।"
56बादशाह बोला, "फिर पता करें!"
57जब दाऊद फ़िलिस्ती का सर क़लम करके वापस आया तो अबिनैर उसे बादशाह के पास लाया। दाऊद अभी जालूत का सर उठाए फिर रहा था।
58साऊल ने पूछा, "आपका बाप कौन है?" दाऊद ने जवाब दिया, "मैं बैत-लहम के रहनेवाले आपके ख़ादिम यस्सी का बेटा हूँ।"

दाऊद और यूनतन की दोस्ती

18 इस गुफ़्तगू के बाद दाऊद की मुलाक़ात बादशाह के बेटे यूनतन से हुई। उनमें फ़ौरन गहरी दोस्ती पैदा हो गई, और यूनतन दाऊद को अपनी जान के बराबर अज़ीज़ रखने लगा।
2उस दिन से साऊल ने दाऊद को अपने दरबार में रख लिया और उसे बाप के घर वापस जाने न दिया।
3और यूनतन ने दाऊद से अहद बाँधा, क्योंकि वह दाऊद को अपनी जान के बराबर अज़ीज़ रखता था।
4अहद की तसदीक़ के लिए यूनतन ने अपना चोग़ा उतारकर उसे अपने

ज़िरा-बकतर, तलवार, कमान और पेटी समेत
दाऊद को दे दिया।
5जहाँ भी साऊल ने दाऊद को लड़ने के लिए
भेजा वहाँ वह कामयाब हुआ। यह देखकर साऊल
ने उसे फ़ौज का बड़ा अफ़सर बना दिया। यह बात
अवाम और साऊल के अफ़सरों को पसंद आई।

साऊल दाऊद से हसद करता है

6जब दाऊद फ़िलिस्तियों को शिकस्त देने से
वापस आया तो तमाम शहरों से औरतें निकलकर
साऊल बादशाह से मिलने आईं। दफ़ और साज़
बजाते हुए वह ख़ुशी के गीत गा गाकर नाचने
लगीं। 7और नाचते नाचते वह गाती रहीं, "साऊल
ने तो हज़ार हलाक किए जबकि दाऊद ने दस
हज़ार।"
8साऊल बड़े ग़ुस्से में आ गया, क्योंकि औरतों
का गीत उसे निहायत बुरा लगा। उसने सोचा,
"उनकी नज़र में दाऊद ने दस हज़ार हलाक किए
जबकि मैंने सिर्फ़ हज़ार। अब सिर्फ़ यह बात रह
गई है कि उसे बादशाह मुक़र्रर किया जाए।" 9उस
वक़्त से साऊल दाऊद को शक की नज़र से देखने
लगा। 10-11अगले दिन अल्लाह ने दुबारा साऊल
पर बुरी रूह आने दी, और वह घर के अंदर वज्द
की हालत में आ गया। दाऊद मामूल के मुताबिक़
साज़ बजाने लगा ताकि बादशाह को सुकून मिले।
साऊल के हाथ में नेज़ा था। अचानक उसने उसे
फेंककर दाऊद को दीवार के साथ छेद डालने की
कोशिश की। लेकिन दाऊद एक तरफ़ हटकर बच
निकला। एक और दफ़ा ऐसा हुआ, लेकिन दाऊद
फिर बच गया।
12यह देखकर साऊल दाऊद से डरने लगा,
क्योंकि उसने जान लिया कि रब मुझे छोड़कर
दाऊद का हामी बन गया है। 13आख़िरकार उसने
दाऊद को दरबार से दूर करके हज़ार फ़ौजियों पर
मुक़र्रर कर दिया। इन आदमियों के साथ दाऊद
मुख़्तलिफ़ जंगों के लिए निकलता रहा। 14और
जो कुछ भी वह करता उसमें कामयाब रहता,
क्योंकि रब उसके साथ था। 15जब साऊल ने
देखा कि दाऊद को कितनी ज़्यादा कामयाबी
हुई है तो वह उससे मज़ीद डर गया। 16लेकिन
इसराईल और यहूदाह के बाक़ी लोग दाऊद से
बहुत मुहब्बत रखते थे, क्योंकि वह हर जंग में
निकलते वक़्त से लेकर घर वापस आते वक़्त
तक उनके आगे आगे चलता था।

दाऊद साऊल का दामाद बन जाता है

17एक दिन साऊल ने दाऊद से बात की, "मैं
अपनी बड़ी बेटी मीरब का रिश्ता आपके साथ
बाँधना चाहता हूँ। लेकिन पहले साबित करें कि
आप अच्छे फ़ौजी हैं, जो रब की जंगों में ख़ूब
हिस्सा ले।" लेकिन दिल ही दिल में साऊल ने
सोचा, "ख़ुद तो मैं दाऊद पर हाथ नहीं उठाऊँगा,
बेहतर है कि वह फ़िलिस्तियों के हाथों मारा
जाए।" 18लेकिन दाऊद ने एतराज़ किया, "मैं
कौन हूँ कि बादशाह का दामाद बनूँ? इसराईल
में तो मेरे ख़ानदान और आबाई कुंबे की कोई
हैसियत नहीं।"
19तो भी शादी की तैयारियाँ की गईं। लेकिन
जब मुक़र्ररा वक़्त आ गया तो साऊल ने मीरब की
शादी एक और आदमी बनाम अदरियेल महूलाती
से करवा दी।
20इतने में साऊल की छोटी बेटी मीकल दाऊद
से मुहब्बत करने लगी। जब साऊल को इसकी
ख़बर मिली तो वह ख़ुश हुआ। 21उसने सोचा,
"अब मैं बेटी का रिश्ता उसके साथ बाँधकर
उसे यों फँसा दूँगा कि वह फ़िलिस्तियों से
लड़ते लड़ते मर जाएगा।" दाऊद से उसने कहा,
"आज आपको मेरा दामाद बनने का दुबारा मौक़ा
मिलेगा।"
22फिर उसने अपने मुलाज़िमों को हुक्म दिया
कि वह चुपके से दाऊद को बताएँ, "सुनें, आप
बादशाह को पसंद हैं, और उसके तमाम अफ़सर
भी आपको प्यार करते हैं। आप ज़रूर बादशाह
की पेशकश क़बूल करके उसका दामाद बन
जाएँ।" 23लेकिन दाऊद ने एतराज़ किया, "क्या
आपकी दानिस्त में बादशाह का दामाद बनना

छोटी-सी बात है? मैं तो ग़रीब आदमी हूँ, और मेरी कोई हैसियत नहीं।”

24मुलाज़िमों ने बादशाह के पास वापस जाकर उसे दाऊद के अलफ़ाज़ बताए। 25साऊल ने उन्हें फिर दाऊद के पास भेजकर उसे इत्तला दी, “बादशाह महर के लिए पैसे नहीं माँगता बल्कि यह कि आप उनके दुश्मनों से बदला लेकर 100 फ़िलिस्तियों को क़त्ल कर दें। सबूत के तौर पर आपको उनका ख़तना करके जिल्द का कटा हुआ हिस्सा बादशाह के पास लाना पड़ेगा।” शर्त का मक़सद यह था कि दाऊद फ़िलिस्तियों के हाथों मारा जाए।

26जब दाऊद को यह ख़बर मिली तो उसे साऊल की पेशकश पसंद आई। मुक़र्ररा वक़्त से पहले 27उसने अपने आदमियों के साथ निकलकर 200 फ़िलिस्तियों को मार दिया। लाशों का ख़तना करके वह जिल्द के कुल 200 टुकड़े बादशाह के पास लाया ताकि बादशाह का दामाद बने। यह देखकर साऊल ने उस की शादी मीकल से करवा दी।

28साऊल को मानना पड़ा कि रब दाऊद के साथ है और कि मेरी बेटी मीकल उसे बहुत प्यार करती है। 29तब वह दाऊद से और भी डरने लगा। इसके बाद वह जीते-जी दाऊद का दुश्मन बना रहा। 30उन दिनों में फ़िलिस्ती सरदार इसराईल से लड़ते रहे। लेकिन जब भी वह जंग के लिए निकले तो दाऊद साऊल के बाक़ी अफ़सरों की निसबत ज़्यादा कामयाब होता था। नतीजे में उस की शोहरत पूरे मुल्क में फैल गई।

यूनतन दाऊद की सिफ़ारिश करता है

19 अब साऊल ने अपने बेटे यूनतन और तमाम मुलाज़िमों को साफ़ बताया कि दाऊद को हलाक करना है। लेकिन दाऊद यूनतन को बहुत प्यारा था, 2इसलिए उसने उसे आगाह किया, “मेरा बाप आपको मार देने के मवाक़े ढूँड रहा है। कल सुबह ख़बरदार रहें। कहीं छुपकर मेरा इंतज़ार करें। 3फिर मैं अपने बाप के साथ शहर से निकलकर आपके क़रीब से गुज़रूँगा। वहाँ मैं उनसे आपका मामला छेड़कर मालूम करूँगा कि वह क्या इरादा रखते हैं। जो कुछ भी वह कहेंगे मैं आपको बता दूँगा।”

4अगली सुबह जब यूनतन ने अपने बाप से बात की तो उसने दाऊद की सिफ़ारिश करके कहा, “बादशाह अपने ख़ादिम दाऊद का गुनाह न करें, क्योंकि उसने आपका गुनाह नहीं किया बल्कि हमेशा आपके लिए फ़ायदामंद रहा है। 5उसी ने अपनी जान को ख़तरे में डालकर फ़िलिस्ती को मार डाला, और रब ने उसके वसीले से तमाम इसराईल को बड़ी नजात बख़्शी। उस वक़्त आप ख़ुद भी सब कुछ देखकर ख़ुश हुए। तो फिर आप गुनाह करके उस जैसे बेक़ुसूर आदमी को क्यों बिलावजह मरवाना चाहते हैं?”

6यूनतन की बातें सुनकर साऊल मान गया। उसने वादा किया, “रब की हयात की क़सम, दाऊद को मारा नहीं जाएगा।” 7बाद में यूनतन ने दाऊद को बुलाकर उसे सब कुछ बताया, फिर उसे साऊल के पास लाया। तब दाऊद पहले की तरह बादशाह की ख़िदमत करने लगा।

साऊल का दाऊद पर दूसरा हमला

8एक बार फिर जंग छिड़ गई, और दाऊद निकलकर फ़िलिस्तियों से लड़ा। इस दफ़ा भी उसने उन्हें यों शिकस्त दी कि वह फ़रार हो गए। 9लेकिन एक दिन जब साऊल अपना नेज़ा पकड़े घर में बैठा था तो अल्लाह की भेजी हुई बुरी रूह उस पर ग़ालिब आई। उस वक़्त दाऊद सरोद बजा रहा था। 10अचानक साऊल ने नेज़े को फेंककर दाऊद को दीवार के साथ छेद डालने की कोशिश की। लेकिन वह एक तरफ़ हट गया और नेज़ा उसके क़रीब से गुज़रकर दीवार में धँस गया। दाऊद भाग गया और उस रात साऊल के हाथ से बच गया।

11साऊल ने फ़ौरन अपने आदमियों को दाऊद के घर के पास भेज दिया ताकि वह मकान की पहरादारी करके दाऊद को सुबह के वक़्त क़त्ल

कर दें। लेकिन दाऊद की बीवी मीकल ने उसको
आगाह कर दिया, “आज रात को ही यहाँ से चले
जाएँ, वरना आप नहीं बचेंगे बल्कि कल सुबह
ही मार दिए जाएंगे।” 12चुनाँचे दाऊद घर की
खिड़की में से निकला, और मीकल ने उतरने में
उस की मदद की। तब दाऊद भागकर बच गया।
13मीकल ने दाऊद की चारपाई पर बुत रखकर
उसके सर पर बकरियों के बाल लगा दिए और
बाक़ी हिस्से पर कम्बल बिछा दिया। 14जब
साऊल के आदमी दाऊद को पकड़ने के लिए आए
तो मीकल ने कहा, “वह बीमार है।” 15फ़ौजियों
ने साऊल को इत्तला दी तो उसने उन्हें हुक्म दिया,
“उसे चारपाई समेत ही मेरे पास ले आओ ताकि
उसे मार दूँ।”
16जब वह दाऊद को ले जाने के लिए आए
तो क्या देखते हैं कि उस की चारपाई पर बुत
पड़ा है जिसके सर पर बकरियों के बाल लगे हैं।
17साऊल ने अपनी बेटी को बहुत झिड़का, “तूने
मुझे इस तरह धोका देकर मेरे दुश्मन की फ़रार
होने में मदद क्यों की? तेरी ही वजह से वह
बच गया।” मीकल ने जवाब दिया, “उसने मुझे
धमकी दी कि मैं तुझे क़त्ल कर दूँगा अगर तू फ़रार
होने में मेरी मदद न करे।”

दाऊद रामा में समुएल के पास

18इस तरह दाऊद बच निकला। वह रामा में
समुएल के पास फ़रार हुआ और उसे सब कुछ
सुनाया जो साऊल ने उसके साथ किया था। फिर
दोनों मिलकर नयोत चले गए। वहाँ वह ठहरे।
19साऊल को इत्तला दी गई, “दाऊद रामा के
नयोत में ठहरा हुआ है।” 20उसने फ़ौरन अपने
आदमियों को उसे पकड़ने के लिए भेज दिया।
जब वह पहुँचे तो देखा कि नबियों का पूरा गुरोह
वहाँ नबुव्वत कर रहा है, और समुएल ख़ुद उनकी
राहनुमाई कर रहा है। उन्हें देखते ही अल्लाह का
रूह साऊल के आदमियों पर नाज़िल हुआ, और
वह भी नबुव्वत करने लगे। 21साऊल को इस
बात की ख़बर मिली तो उसने मज़ीद आदमियों
को रामा भेज दिया। लेकिन वह भी वहाँ पहुँचते
ही नबुव्वत करने लगे। साऊल ने तीसरी बार
आदमियों को भेज दिया, लेकिन यही कुछ उनके
साथ भी हुआ।
22आख़िर में साऊल ख़ुद रामा के लिए रवाना
हुआ। चलते चलते वह सीकू के बड़े हौज़ पर
पहुँचा। वहाँ उसने लोगों से पूछा, “दाऊद और
समुएल कहाँ हैं?” उन्होंने जवाब दिया, “रामा
की आबादी नयोत में।”
23साऊल अभी नयोत नहीं पहुँचा था कि
अल्लाह का रूह उस पर भी नाज़िल हुआ, और
वह नबुव्वत करते करते नयोत पहुँच गया। 24वहाँ
वह अपने कपड़ों को उतारकर समुएल के सामने
नबुव्वत करता रहा। नबुव्वत करते करते वह
ज़मीन पर लेट गया और वहाँ पूरे दिन और पूरी
रात पड़ा रहा। इसी वजह से यह क़ौल मशहूर
हुआ, “क्या साऊल को भी नबियों में शुमार
किया जाता है?”

दाऊद और यूनतन अहद बाँधते हैं

20 अब दाऊद रामा के नयोत से भी भाग
गया। चुपके से वह यूनतन के पास
आया और पूछा, “मुझसे क्या ग़लती हुई है? मेरा
क्या क़ुसूर है? मुझसे आपके बाप के ख़िलाफ़
क्या जुर्म सरज़द हुआ है कि वह मुझे क़त्ल करना
चाहते हैं?”
2यूनतन ने एतराज़ किया, “यह कभी नहीं
हो सकता! आप नहीं मरेंगे। मेरा बाप तो मुझे
हमेशा सब कुछ बता देता है, ख़ाह बात बड़ी हो
या छोटी। तो फिर वह ऐसा कोई मनसूबा मुझसे
क्यों छुपाए? आपकी यह बात सरासर ग़लत
है।”
3लेकिन दाऊद ने क़सम खाकर इसरार किया,
“ज़ाहिर है कि आपको इसके बारे में इल्म नहीं।
आपके बाप को साफ़ मालूम है कि मैं आपको
पसंद हूँ। ‘वह तो सोचते होंगे, यूनतन को इस बात
का इल्म न हो, वरना वह दुख महसूस करेगा।’
लेकिन रब की और आपकी जान की क़सम, मैं

बड़े ख़तरे में हूँ, और मौत से बचना मुश्किल ही
है।”

4यूनतन ने कहा, “मुझे बताएँ कि मैं क्या करूँ
तो मैं उसे करूँगा।” 5तब दाऊद ने अपना मनसूबा
पेश किया। “कल नए चाँद की ईद है, और
बादशाह तवक़्क़ो करेंगे कि मैं उनकी ज़ियाफ़त
में शरीक हूँ। लेकिन इस मरतबा मुझे परसों शाम
तक बाहर खुले मैदान में छुपा रहने की इजाज़त
दें। 6अगर आपके बाप मेरा पता करें तो उन्हें कह
देना, ‘दाऊद ने बड़े ज़ोर से मुझसे अपने शहर बैत-
लहम को जाने की इजाज़त माँगी। उसे बड़ी जल्दी
थी, क्योंकि उसका पूरा ख़ानदान अपनी सालाना
क़ुरबानी चढ़ाना चाहता है।’ 7अगर आपके बाप
जवाब दें कि ठीक है तो फिर मालूम होगा कि
ख़तरा टल गया है। लेकिन अगर वह बड़े ग़ुस्से में
आ जाएँ तो यक़ीन जानें कि वह मुझे नुक़सान
पहुँचाने का इरादा रखते हैं। 8बराहे-करम मुझ
पर मेहरबानी करके याद रखें कि आपने रब के
सामने अपने ख़ादिम से अहद बाँधा है। अगर
मैं वाक़ई क़ुसूरवार ठहरूँ तो आप ख़ुद मुझे मार
डालें। लेकिन किसी सूरत में भी मुझे अपने बाप
के हवाले न करें।”

9यूनतन ने जवाब दिया, “फ़िकर न करें, मैं
कभी ऐसा नहीं करूँगा। जब भी मुझे इशारा मिल
जाए कि मेरा बाप आपको क़त्ल करने का इरादा
रखता है तो मैं ज़रूर आपको फ़ौरन इत्तला दूँगा।”
10दाऊद ने पूछा, “अगर आपके बाप ग़ुस्से में
जवाब दें तो कौन मुझे ख़बर पहुँचाएगा?”

11यूनतन ने जवाब में कहा, “आएँ हम
निकलकर खुले मैदान में जाएँ।” दोनों निकले
12तो यूनतन ने दाऊद से कहा, “रब इसराईल के
ख़ुदा की क़सम, परसों इस वक़्त तक मैं अपने
बाप से बात मालूम कर लूँगा। अगर वह आपके
बारे में अच्छी सोच रखे और मैं आपको इत्तला न
दूँ 13तो रब मुझे सख़्त सज़ा दे। लेकिन अगर मुझे
पता चले कि मेरा बाप आपको मार देने पर तुला
हुआ है तो मैं आपको इसकी इत्तला भी दूँगा। इस
सूरत में मैं आपको नहीं रोकूँगा बल्कि आपको
सलामती से जाने दूँगा। रब उसी तरह आपके
साथ हो जिस तरह वह पहले मेरे बाप के साथ
था। 14लेकिन दरख़ास्त है कि मेरे जीते-जी मुझ
पर रब की-सी मेहरबानी करें ताकि मैं मर न जाऊँ।
15मेरे ख़ानदान पर भी हमेशा तक मेहरबानी करें।
वह कभी भी आपकी मेहरबानी से महरूम न हो
जाए, उस वक़्त भी नहीं जब रब ने आपके तमाम
दुश्मनों को रूए-ज़मीन पर से मिटा दिया होगा।”

16चुनाँचे यूनतन ने दाऊद से अहद बाँध-
कर कहा, “रब दाऊद के दुश्मनों से बदला ले।”
17वह बोला, “क़सम खाएँ कि आप यह अहद
उतने पुख़्ता इरादे से क़ायम रखेंगे जितनी आप
मुझसे मुहब्बत रखते हैं।” क्योंकि यूनतन दाऊद
को अपनी जान के बराबर अज़ीज़ रखता था।

18फिर यूनतन ने अपना मनसूबा पेश किया।
“कल तो नए चाँद की ईद है। जल्दी से पता चलेगा
कि आप नहीं आए, क्योंकि आपकी कुरसी ख़ाली
रहेगी। 19इसलिए परसों शाम के वक़्त खुले
मैदान में वहाँ चले जाएँ जहाँ पहले छुप गए थे।
पत्थर के ढेर के क़रीब बैठ जाएँ। 20उस वक़्त
मैं घर से निकलकर तीन तीर पत्थर के ढेर की
तरफ़ चलाऊँगा गोया मैं किसी चीज़ को निशाना
बनाकर मशक़ कर रहा हूँ। 21फिर मैं लड़के को
तीरों को ले आने के लिए भेज दूँगा। अगर मैं उसे
बता दूँ, ‘तीर उरली तरफ़ पड़े हैं, उन्हें जाकर ले
आओ’ तो आप ख़ौफ़ खाए बग़ैर छुपने की जगह
से निकलकर मेरे पास आ सकेंगे। रब की हयात
की क़सम, इस सूरत में कोई ख़तरा नहीं होगा।
22लेकिन अगर मैं लड़के को बता दूँ, ‘तीर परली
तरफ़ पड़े हैं’ तो आपको फ़ौरन हिजरत करनी
पड़ेगी। इस सूरत में रब ख़ुद आपको यहाँ से भेज
रहा होगा। 23लेकिन जो बातें हमने आज आपस
में की हैं रब ख़ुद हमेशा तक इनका गवाह रहे।”

साऊल की दाऊद से अलानिया दुश्मनी

24चुनाँचे दाऊद खुले मैदान में छुप गया। नए
चाँद की ईद आई तो बादशाह ज़ियाफ़त के लिए
बैठ गया। 25मामूल के मुताबिक़ वह दीवार के

पास बैठ गया। अबिनैर उसके साथ बैठा था और
यूनतन उसके मुक़ाबिल। लेकिन दाऊद की जगह
ख़ाली रही।
26उस दिन साऊल ने बात न छेड़ी, क्योंकि
उसने सोचा, “दाऊद किसी वजह से नापाक हो
गया होगा, इसलिए नहीं आया।”
27लेकिन अगले दिन जब दाऊद की जगह
फिर ख़ाली रही तो साऊल ने यूनतन से पूछा,
“यस्सी का बेटा न तो कल, न आज ज़ियाफ़त
में शरीक हुआ है। क्या वजह है?” 28यूनतन ने
जवाब दिया, “दाऊद ने बड़े ज़ोर से मुझसे बैत-
लहम जाने की इजाज़त माँगी। 29उसने कहा,
‘मेहरबानी करके मुझे जाने दें, क्योंकि मेरा
ख़ानदान एक ख़ास क़ुरबानी चढ़ा रहा है, और मेरे
भाई ने मुझे आने का हुक्म दिया है। अगर आपको
मंज़ूर हो तो बराहे-करम मुझे अपने भाइयों के
पास जाने की इजाज़त दें।’ यही वजह है कि वह
बादशाह की ज़ियाफ़त में शरीक नहीं हुआ।”
30यह सुनकर साऊल आपे से बाहर हो गया।
वह गरजा, “हरामज़ादे! मुझे ख़ूब मालूम है कि
तूने दाऊद का साथ दिया है। शर्म की बात है, तेरे
लिए और तेरी माँ के लिए। 31जब तक यस्सी का
बेटा ज़िंदा है तब तक न तू और न तेरी बादशाहत
क़ायम रहेगी। अब जा, उसे ले आ, क्योंकि उसे
मरना ही है।”
32यूनतन ने कहा, “क्यों? उसने क्या किया
जो सज़ाए-मौत के लायक़ है?” 33जवाब में
साऊल ने अपना नेज़ा ज़ोर से यूनतन की तरफ़
फेंक दिया ताकि उसे मार डाले। यह देखकर
यूनतन ने जान लिया कि साऊल दाऊद को क़त्ल
करने का पुख़्ता इरादा रखता है। 34बड़े ग़ुस्से के
आलम में वह खड़ा हुआ और चला गया। उस दिन
उसने खाना खाने से इनकार किया। उसे बहुत दुख
था कि मेरा बाप दाऊद की इतनी बेइज़्ज़ती कर
रहा है।
35अगले दिन यूनतन सुबह के वक़्त घर से
निकलकर खुले मैदान में उस जगह आ गया जहाँ
दाऊद से मिलना था। एक लड़का उसके साथ था।
36उसने लड़के को हुक्म दिया, “चलो, उस तरफ़
भागना शुरू करो जिस तरफ़ मैं तीरों को चलाऊँगा
ताकि तुझे मालूम हो कि वह कहाँ हैं।” चुनाँचे
लड़का दौड़ने लगा, और यूनतन ने तीर इतने ज़ोर
से चलाया कि वह उससे आगे कहीं दूर जा गिरा।
37जब लड़का तीर के क़रीब पहुँच गया तो यूनतन
ने आवाज़ दी, “तीर परली तरफ़ है। 38जल्दी
करो, भागकर आगे निकलो और न रुको!” फिर
लड़का तीर को उठाकर अपने मालिक के पास
वापस आ गया। 39वह नहीं जानता था कि इसके
पीछे क्या मक़सद है। सिर्फ़ यूनतन और दाऊद
को इल्म था।
40फिर यूनतन ने कमान और तीरों को लड़के
के सुपुर्द करके उसे हुक्म दिया, “जाओ, सामान
लेकर शहर में वापस चले जाओ।” 41लड़का
चला गया तो दाऊद पत्थर के ढेर के जुनूब से
निकलकर यूनतन के पास आया। तीन मरतबा
वह यूनतन के सामने मुँह के बल झुक गया।
एक दूसरे को चूमकर दोनों ख़ूब रोए, ख़ासकर
दाऊद। 42फिर यूनतन बोला, “सलामती से
जाएँ! और कभी वह वादे न भूलें जो हमने रब
की क़सम खाकर एक दूसरे से किए हैं। यह अहद
आपके और मेरे और आपकी और मेरी औलाद के
दरमियान हमेशा क़ायम रहे। रब ख़ुद हमारा गवाह
है।”

फिर दाऊद रवाना हुआ, और यूनतन शहर को
वापस चला गया।

दाऊद नोब में अख़ीमलिक के पास ठहरता है

21 दाऊद नोब में अख़ीमलिक
इमाम के पास गया। अख़ी-
मलिक काँपते हुए उससे मिलने के लिए आया
और पूछा, “आप अकेले क्यों आए हैं? कोई
आपके साथ नहीं।” 2दाऊद ने जवाब दिया,
“बादशाह ने मुझे एक ख़ास ज़िम्मेदारी दी है
जिसका ज़िक्र तक करना मना है। किसी को
भी इसके बारे में जानना नहीं चाहिए। मैंने अपने
आदमियों को हुक्म दिया है कि फ़ुलाँ फ़ुलाँ जगह

पर मेरा इंतज़ार करें। 3अब मुझे ज़रा बताएँ कि
खाने के लिए क्या मिल सकता है? मुझे पाँच
रोटियाँ दे दें, या जो कुछ भी आपके पास है।”

4इमाम ने जवाब दिया, “मेरे पास आम रोटी
नहीं है। मैं आपको सिर्फ़ रब के लिए मख़सूसशुदा
रोटी दे सकता हूँ। शर्त यह है कि आपके आदमी
पिछले दिनों में औरतों से हमबिसतर न हुए हों।”
5दाऊद ने उसे तसल्ली देकर कहा, “फ़िकर न
करें। पहले की तरह हमें इस मुहिम के दौरान
भी औरतों से दूर रहना पड़ा है। मेरे फ़ौजी आम
मुहिमों के लिए भी अपने आपको पाक रखते हैं,
तो इस दफ़ा वह कहीं ज़्यादा पाक-साफ़ हैं।”

6फिर इमाम ने दाऊद को मख़सूसशुदा रोटियाँ
दीं यानी वह रोटियाँ जो मुलाक़ात के ख़ैमे में
रब के हुज़ूर रखी जाती थीं और उसी दिन ताज़ा
रोटियों से तबदील हुई थीं। 7उस वक़्त साऊल
के चरवाहों का अदोमी इंचार्ज दोएग वहाँ था। वह
किसी मजबूरी के बाइस रब के हुज़ूर ठहरा हुआ
था। उस की मौजूदगी में 8दाऊद ने अख़ीमलिक
से पूछा, “क्या आपके पास कोई नेज़ा या तलवार
है? मुझे बादशाह की मुहिम के लिए इतनी जल्दी
से निकलना पड़ा कि अपनी तलवार या कोई और
हथियार साथ लाने के लिए फ़ुरसत न मिली।”

9अख़ीमलिक ने जवाब दिया, “जी है। वादीए-
ऐला में आपके हाथों मारे गए फ़िलिस्ती मर्द
जालूत की तलवार मेरे पास है। वह एक कपड़े में
लिपटी मेरे बालापोश के पीछे पड़ी है। अगर आप
उसे अपने साथ ले जाना चाहें तो ले जाएँ। मेरे
पास कोई और हथियार नहीं है।” दाऊद ने कहा,
“इस क़िस्म की तलवार कहीं और नहीं मिलती।
मुझे दे दें।”

दाऊद फ़िलिस्ती बादशाह के पास

10उसी दिन दाऊद आगे निकला ताकि साऊल
से बच सके। इसराईल को छोड़कर वह फ़िलिस्ती
शहर जात के बादशाह अकीस के पास गया।
11लेकिन अकीस के मुलाज़िमों ने बादशाह को
आगाह किया, “क्या यह मुल्क का बादशाह
दाऊद नहीं है? इसी के बारे में इसराईली नाचकर
गीत गाते हैं, ‘साऊल ने हज़ार हलाक किए
जबकि दाऊद ने दस हज़ार’।”

12यह सुनकर दाऊद घबरा गया और जात के
बादशाह अकीस से बहुत डरने लगा। 13अचानक
वह पागल आदमी का रूप भरकर उनके दरमियान
अजीब अजीब हरकतें करने लगा। शहर के
दरवाज़े के पास जाकर उसने उस पर बेतुके-से
निशान लगाए और अपनी दाढ़ी पर राल टपकने
दी।

14यह देखकर अकीस ने अपने मुलाज़िमों को
झिड़का, “तुम इस आदमी को मेरे पास क्यों ले
आए हो? तुम ख़ुद देख सकते हो कि यह पागल
है। 15क्या मेरे पास पागलों की कमी है कि तुम
इसको मेरे सामने ले आए हो ताकि इस तरह की
हरकतें करे? क्या मुझे ऐसे मेहमान की ज़रूरत
है?”

अदुल्लाम के ग़ार और मोआब में

22 इस तरह दाऊद जात से बच निकला
और अदुल्लाम के ग़ार में छुप गया।
जब उसके भाइयों और बाप के घराने को इसकी
ख़बर मिली तो वह बैत-लहम से आकर वहाँ
उसके साथ जा मिले। 2और लोग भी जल्दी से
उसके गिर्द जमा हो गए, ऐसे जो किसी मुसीबत
में फँसे हुए थे या अपना क़र्ज़ अदा नहीं कर सकते
थे और ऐसे भी जिनका दिल तलख़ी से भरा हुआ
था। होते होते दाऊद तक़रीबन 400 अफ़राद का
राहनुमा बन गया।

3दाऊद अदुल्लाम से रवाना होकर मुल्के-
मोआब के शहर मिसफ़ाह चला गया। उसने
मोआबी बादशाह से गुज़ारिश की, “मेरे माँ-बाप
को उस वक़्त तक यहाँ पनाह दें जब तक मुझे
पता न हो कि अल्लाह मेरे लिए क्या इरादा रखता
है।” 4वह अपने माँ-बाप को बादशाह के पास ले
आया, और वह उतनी देर तक वहाँ ठहरे जितनी
देर दाऊद अपने पहाड़ी क़िले में रहा।

5एक दिन जाद नबी ने दाऊद से कहा, “यहाँ
पहाड़ी क़िले में मत रहें बल्कि दुबारा यहूदाह
के इलाक़े में वापस चले जाएँ।” दाऊद उस की
सुनकर हारत के जंगल में जा बसा।

साऊल नोब के इमामों से बदला लेता है

6साऊल को इत्तला दी गई कि दाऊद और
उसके आदमी दुबारा यहूदाह में पहुँच गए हैं। उस
वक़्त साऊल अपना नेज़ा पकड़े झाऊ के उस
दरख़्त के साये में बैठा था जो जिबिया की पहाड़ी
पर था। साऊल के इर्दगिर्द उसके मुलाज़िम खड़े
थे। 7वह पुकार उठा, “बिनयमीन के मर्दो! सुनें,
क्या यस्सी का बेटा आप सबको खेत और अंगूर
के बाग़ देगा? क्या वह फ़ौज में आपको हज़ार
हज़ार और सौ सौ अफ़राद पर मुक़र्रर करेगा?
8लगता है कि आप इसकी उम्मीद रखते हैं, वरना
आप यों मेरे ख़िलाफ़ साज़िश न करते। क्योंकि
आपमें से किसी ने भी मुझे यह नहीं बताया कि मेरे
अपने बेटे ने इस आदमी के साथ अहद बाँधा है।
आपको मेरी फ़िकर तक नहीं, वरना मुझे इत्तला
देते कि यूनतन ने मेरे मुलाज़िम दाऊद को उभारा
है कि वह मेरी ताक में बैठ जाए। क्योंकि आज
तो ऐसा ही हो रहा है।”

9दोएग अदोमी साऊल के अफ़सरों के साथ
वहाँ खड़ा था। अब वह बोल उठा, “मैंने यस्सी के
बेटे को देखा है। उस वक़्त वह नोब में अख़ीमलिक
बिन अख़ीतूब से मिलने आया। 10अख़ीमलिक
ने रब से दरियाफ़्त किया कि दाऊद का अगला
क़दम क्या हो। साथ साथ उसने उसे सफ़र के
लिए खाना और फ़िलिस्ती मर्द जालूत की तलवार
भी दी।”

11बादशाह ने फ़ौरन अख़ीमलिक बिन
अख़ीतूब और उसके बाप के पूरे ख़ानदान को
बुलाया। सब नोब में इमाम थे। 12जब पहुँचे
तो साऊल बोला, “अख़ीतूब के बेटे, सुनें।”
अख़ीमलिक ने जवाब दिया, “जी मेरे आक़ा,
हुक्म।” 13साऊल ने इलज़ाम लगाकर कहा,
“आपने यस्सी के बेटे दाऊद के साथ मेरे ख़िलाफ़
साज़िशें क्यों की हैं? बताएँ, आपने उसे रोटी और
तलवार क्यों दी? आपने अल्लाह से दरियाफ़्त
क्यों किया कि दाऊद आगे क्या करे? आप ही
की मदद से वह सरकश होकर मेरी ताक में बैठ
गया है, क्योंकि आज तो ऐसा ही हो रहा है।”

14अख़ीमलिक बोला, “लेकिन मेरे आक़ा,
क्या मुलाज़िमों में से कोई और आपके दामाद
दाऊद जैसा वफ़ादार साबित हुआ है? वह तो
आपके मुहाफ़िज़ दस्ते का कप्तान और आपके
घराने का मुअज़्ज़ज़ मेंबर है। 15और यह पहली
बार नहीं था कि मैंने उसके लिए अल्लाह से
हिदायत माँगी। इस मामले में बादशाह मुझ और
मेरे ख़ानदान पर इलज़ाम न लगाए। मैंने तो किसी
साज़िश का ज़िक्र तक नहीं सुना।”

16लेकिन बादशाह बोला, “अख़ीमलिक, तुझे
और तेरे बाप के पूरे ख़ानदान को मरना है।”
17उसने साथ खड़े अपने मुहाफ़िज़ों को हुक्म
दिया, “जाकर इमामों को मार दो, क्योंकि यह
भी दाऊद के इत्तहादी हैं। गो इनको मालूम था
कि दाऊद मुझसे भाग रहा है तो भी इन्होंने मुझे
इत्तला न दी।”

लेकिन मुहाफ़िज़ों ने रब के इमामों को मार
डालने से इनकार किया। 18तब बादशाह ने दोएग
अदोमी को हुक्म दिया, “फिर तुम ही इमामों को
मार दो।” दोएग ने उनके पास जाकर उन सबको
क़त्ल कर दिया। कतान का बालापोश पहननेवाले
कुल 85 आदमी उस दिन मारे गए। 19फिर उसने
जाकर इमामों के शहर नोब के तमाम बाशिंदों को
मार डाला। शहर के मर्द, औरतें, बच्चे शीरख़ारों
समेत, गाय-बैल, गधे और भेड़-बकरियाँ सब उस
दिन हलाक हुए।

20सिर्फ़ एक ही शख़्स बच गया, अबि-
यातर जो अख़ीमलिक बिन अख़ीतूब का बेटा था।
वह भागकर दाऊद के पास आया 21और उसे
इत्तला दी कि साऊल ने रब के इमामों को क़त्ल
कर दिया है। 22दाऊद ने कहा, “उस दिन जब मैंने
दोएग अदोमी को वहाँ देखा तो मुझे मालूम था कि
वह ज़रूर साऊल को ख़बर पहुँचाएगा। यह मेरा ही

क़ुसूर है कि आपके बाप का पूरा ख़ानदान हलाक
हो गया है। 23अब मेरे साथ रहें और मत डरें। जो
आदमी आपको क़त्ल करना चाहता है वह मुझे
भी क़त्ल करना चाहता है। आप मेरे साथ रहकर
महफ़ूज़ रहेंगे।”

दाऊद क़ईला को बचाता है

23 एक दिन दाऊद को ख़बर मिली कि
फ़िलिस्ती क़ईला शहर पर हमला
करके गाहने की जगहों से अनाज लूट रहे हैं।
2दाऊद ने रब से दरियाफ़्त किया, “क्या मैं जाकर
फ़िलिस्तियों पर हमला करूँ?” रब ने जवाब
दिया, “जा, फ़िलिस्तियों पर हमला करके क़ईला
को बचा।”

3लेकिन दाऊद के आदमी एतराज़ करने
लगे, “हम पहले से यहाँ यहूदाह में लोगों की
मुख़ालफ़त से डरते हैं। जब हम क़ईला जाकर
फ़िलिस्तियों पर हमला करेंगे तो फिर हमारा क्या
बनेगा?” 4तब दाऊद ने रब से दुबारा हिदायत
माँगी, और दुबारा उसे यही जवाब मिला, “क़ईला
को जा! मैं फ़िलिस्तियों को तेरे हवाले कर दूँगा।”

5चुनाँचे दाऊद अपने आदमियों के साथ क़ईला
चला गया। उसने फ़िलिस्तियों पर हमला करके
उन्हें बड़ी शिकस्त दी और उनकी भेड़-बकरियों
को छीनकर क़ईला के बाशिंदों को बचाया। 6वहाँ
क़ईला में अबियातर दाऊद के लोगों में शामिल
हुआ। उसके पास इमाम का बालापोश था।

7जब साऊल को ख़बर मिली कि दाऊद क़ईला
शहर में ठहरा हुआ है तो उसने सोचा, “अल्लाह
ने उसे मेरे हवाले कर दिया है, क्योंकि अब वह
फ़सीलदार शहर में जाकर फँस गया है।” 8वह
अपनी पूरी फ़ौज को जमा करके जंग के लिए
तैयारियाँ करने लगा ताकि उतरकर क़ईला का
मुहासरा करे जिसमें दाऊद अब तक ठहरा हुआ
था।

9लेकिन दाऊद को पता चला कि साऊल
उसके ख़िलाफ़ तैयारियाँ कर रहा है। उसने
अबियातर इमाम से कहा, “इमाम का बालापोश
ले आएँ ताकि हम रब से हिदायत माँगें।” 10फिर
उसने दुआ की, “ऐ रब इसराईल के ख़ुदा, मुझे
ख़बर मिली है कि साऊल मेरी वजह से क़ईला पर
हमला करके उसे बरबाद करना चाहता है। 11क्या
शहर के बाशिंदे मुझे साऊल के हवाले कर देंगे?
क्या साऊल वाक़ई आएगा? ऐ रब, इसराईल
के ख़ुदा, अपने ख़ादिम को बता!” रब ने जवाब
दिया, “हाँ, वह आएगा।” 12फिर दाऊद ने मज़ीद
दरियाफ़्त किया, “क्या शहर के बुज़ुर्ग मुझे और
मेरे लोगों को साऊल के हवाले कर देंगे?” रब ने
कहा, “हाँ, वह कर देंगे।”

13लिहाज़ा दाऊद अपने तक़रीबन 600
आदमियों के साथ क़ईला से चला गया और इधर-
उधर फिरने लगा। जब साऊल को इत्तला मिली
कि दाऊद क़ईला से निकलकर बच गया है तो
वहाँ जाने से बाज़ आया।

यूनतन दाऊद से मिलता है

14अब दाऊद बयाबान के पहाड़ी क़िलों और
दश्ते-ज़ीफ़ के पहाड़ी इलाक़े में रहने लगा।
साऊल तो मुसलसल उसका खोज लगाता रहा,
लेकिन अल्लाह हमेशा दाऊद को साऊल के हाथ
से बचाता रहा। 15एक दिन जब दाऊद होरिश
के क़रीब था तो उसे इत्तला मिली कि साऊल
आपको हलाक करने के लिए निकला है। 16उस
वक़्त यूनतन ने दाऊद के पास आकर उस की
हौसलाअफ़्ज़ाई की कि वह अल्लाह पर भरोसा
रखे। 17उसने कहा, “डरें मत। मेरे बाप का हाथ
आप तक नहीं पहुँचेगा। एक दिन आप ज़रूर
इसराईल के बादशाह बन जाएंगे, और मेरा रुतबा
आपके बाद ही आएगा। मेरा बाप भी इस हक़ीक़त
से ख़ूब वाक़िफ़ है।” 18दोनों ने रब के हुज़ूर अहद
बाँधा। फिर यूनतन अपने घर चला गया जबकि
दाऊद वहाँ होरिश में ठहरा रहा।

दाऊद ज़ीफ़ में बच जाता है

19दश्ते-ज़ीफ़ में आबाद कुछ लोग साऊल के
पास आ गए जो उस वक़्त जिबिया में था। उन्होंने

कहा, “हम जानते हैं कि दाऊद कहाँ छुप गया है। वह होरिश के पहाड़ी क़िलों में है, उस पहाड़ी पर जिसका नाम हकीला है और जो यशीमोन के जुनूब में है। 20ऐ बादशाह, जब भी आपका दिल चाहे आएँ तो हम उसे पकड़कर आपके हवाले कर देंगे।” 21साऊल ने जवाब दिया, “रब आपको बरकत बख़्शे कि आपको मुझ पर तरस आया है। 22अब वापस जाकर मज़ीद तैयारियाँ करें। पता करें कि वह कहाँ आता जाता है और किसने उसे वहाँ देखा है। क्योंकि मुझे बताया गया है कि वह बहुत चालाक है। 23हर जगह का खोज लगाएँ जहाँ वह छुप जाता है। जब आपको सारी तफ़सीलात मालूम हों तो मेरे पास आएँ। फिर मैं आपके साथ वहाँ पहुँचूँगा। अगर वह वाक़ई वहाँ कहीं हो तो मैं उसे ज़रूर ढूँड निकालूँगा, ख़ाह मुझे पूरे यहूदाह की छानबीन क्यों न करनी पड़े।”

24-25ज़ीफ़ के आदमी वापस चले गए। थोड़ी देर के बाद साऊल भी अपनी फ़ौज समेत वहाँ के लिए निकला। उस वक़्त दाऊद और उसके लोग दश्ते-मऊन में यशीमोन के जुनूब में थे। जब दाऊद को इत्तला मिली कि साऊल उसका ताक़्क़ुब कर रहा है तो वह रेगिस्तान के मज़ीद जुनूब में चला गया, वहाँ जहाँ बड़ी चट्टान नज़र आती है। लेकिन साऊल को पता चला और वह फ़ौरन रेगिस्तान में दाऊद के पीछे गया।

26चलते चलते साऊल दाऊद के क़रीब ही पहुँच गया। आख़िरकार सिर्फ़ एक पहाड़ी उनके दरमियान रह गई। साऊल पहाड़ी के एक दामन में था जबकि दाऊद अपने लोगों समेत दूसरे दामन में भागता हुआ बादशाह से बचने की कोशिश कर रहा था। साऊल अभी उन्हें घेरकर पकड़ने को था 27कि अचानक क़ासिद साऊल के पास पहुँचा जिसने कहा, “जल्दी आएँ! फ़िलिस्ती हमारे मुल्क में घुस आए हैं।” 28साऊल को दाऊद को छोड़ना पड़ा, और वह फ़िलिस्तियों से लड़ने गया। उस वक़्त से पहाड़ी का नाम “अलहदगी की चट्टान” पड़ गया।

29दाऊद वहाँ से चला गया और ऐन-जदी के पहाड़ी क़िलों में रहने लगा।

दाऊद साऊल को क़त्ल करने से इनकार करता है

24 जब साऊल फ़िलिस्तियों का ताक़्क़ुब करने से वापस आया तो उसे ख़बर मिली कि दाऊद ऐन-जदी के रेगिस्तान में है। 2वह तमाम इसराईल के 3,000 चीदा फ़ौजियों को लेकर पहाड़ी बकरियों की चट्टानों के लिए रवाना हुआ ताकि दाऊद को पकड़ ले।

3चलते चलते वह भेड़ों के कुछ बाड़ों से गुज़रने लगे। वहाँ एक ग़ार को देखकर साऊल अंदर गया ताकि अपनी हाजत रफ़ा करे। इत्तफ़ाक़ से दाऊद और उसके आदमी उसी ग़ार के पिछले हिस्से में छुपे बैठे थे। 4दाऊद के आदमियों ने आहिस्ता से उससे कहा, “रब ने तो आपसे वादा किया था, ‘मैं तेरे दुश्मन को तेरे हवाले कर दूँगा, और तू जो जी चाहे उसके साथ कर सकेगा।’ अब यह वक़्त आ गया है!” दाऊद रेंगते रेंगते आगे साऊल के क़रीब पहुँच गया। चुपके से उसने साऊल के लिबास के किनारे का टुकड़ा काट लिया और फिर वापस आ गया। 5लेकिन जब अपने लोगों के पास पहुँचा तो उसका ज़मीर उसे मलामत करने लगा। 6उसने अपने आदमियों से कहा, “रब न करे कि मैं अपने आक़ा के साथ ऐसा सुलूक करके रब के मसह किए हुए बादशाह को हाथ लगाऊँ। क्योंकि रब ने ख़ुद उसे मसह करके चुन लिया है।” 7यह कहकर दाऊद ने उनको समझाया और उन्हें साऊल पर हमला करने से रोक दिया।

थोड़ी देर के बाद साऊल ग़ार से निकलकर आगे चलने लगा। 8जब वह कुछ फ़ासले पर था तो दाऊद भी निकला और पुकार उठा, “ऐ बादशाह सलामत, ऐ मेरे आक़ा!” साऊल ने पीछे देखा तो दाऊद मुँह के बल झुककर 9बोला, “जब लोग आपको बताते हैं कि दाऊद आपको नुक़सान पहुँचाने पर तुला हुआ है तो आप क्यों ध्यान देते हैं? 10आज आप अपनी आँखों से देख सकते हैं

कि यह झूट ही झूट है। ग़ार में आप अल्लाह की
मरज़ी से मेरे क़ब्ज़े में आ गए थे। मेरे लोगों ने ज़ोर
दिया कि मैं आपको मार दूँ, लेकिन मैंने आपको न
छेड़ा। मैं बोला, 'मैं कभी भी बादशाह को नुक़सान
नहीं पहुँचाऊँगा, क्योंकि रब ने ख़ुद उसे मसह
करके चुन लिया है।' 11मेरे बाप, यह देखें जो मेरे
हाथ में है! आपके लिबास का यह टुकड़ा मैं काट
सका, और फिर भी मैंने आपको हलाक न किया।
अब जान लें कि न मैं आपको नुक़सान पहुँचाने का
इरादा रखता हूँ, न मैंने आपका गुनाह किया है।
फिर भी आप मेरा ताक़्क़ुब करते हुए मुझे मार
डालने के दरपै हैं। 12रब ख़ुद फ़ैसला करे कि
किससे ग़लती हो रही है, आपसे या मुझ से। वही
आपसे मेरा बदला ले। लेकिन ख़ुद मैं कभी आप
पर हाथ नहीं उठाऊँगा। 13क़दीम क़ौल यही बात
बयान करता है, 'बदकारों से बदकारी पैदा होती
है।' मेरी नीयत तो साफ़ है, इसलिए मैं कभी ऐसा
नहीं करूँगा। 14इसराईल का बादशाह किसके
ख़िलाफ़ निकल आया है? जिसका ताक़्क़ुब आप
कर रहे हैं उस की तो कोई हैसियत नहीं। वह मुरदा
कुत्ता या पिस्सू ही है। 15रब हमारा मुंसिफ़ हो।
वही हम दोनों का फ़ैसला करे। वह मेरे मामले पर
ध्यान दे, मेरे हक़ में बात करे और मुझे बेइलज़ाम
ठहराकर आपके हाथ से बचाए।"

16दाऊद ख़ामोश हुआ तो साऊल ने पूछा,
"दाऊद मेरे बेटे, क्या आपकी आवाज़ है?" और
वह फूट फूटकर रोने लगा। 17उसने कहा, "आप
मुझसे ज़्यादा रास्तबाज़ हैं। आपने मुझसे अच्छा
सुलूक किया जबकि मैं आपसे बुरा सुलूक करता
रहा हूँ। 18आज आपने मेरे साथ भलाई का सबूत
दिया, क्योंकि गो रब ने मुझे आपके हवाले कर
दिया था तो भी आपने मुझे हलाक न किया।
19जब किसी का दुश्मन उसके क़ब्ज़े में आ जाता
है तो वह उसे जाने नहीं देता। लेकिन आपने ऐसा
ही किया। रब आपको उस मेहरबानी का अज्र
दे जो आपने आज मुझ पर की है। 20अब मैं
जानता हूँ कि आप ज़रूर बादशाह बन जाएंगे,
और कि आपके ज़रीए इसराईल की बादशाही
क़ायम रहेगी। 21चुनाँचे रब की क़सम खाकर
मुझसे वादा करें कि न आप मेरी औलाद को
हलाक करेंगे, न मेरे आबाई घराने में से मेरा नाम
मिटा देंगे।"

22दाऊद ने क़सम खाकर साऊल से वादा
किया। फिर साऊल अपने घर चला गया जबकि
दाऊद ने अपने लोगों के साथ एक पहाड़ी क़िले
में पनाह ले ली।

समुएल की मौत

25 उन दिनों में समुएल फ़ौत हुआ।
तमाम इसराईल रामा में जनाज़े के
लिए जमा हुआ। उसका मातम करते हुए उन्होंने
उसे उस की ख़ानदानी क़ब्र में दफ़न किया।

नाबाल दाऊद की बेइज़्ज़ती करता है

उन दिनों में दाऊद दश्ते-फ़ारान में चला गया।
2-4मऊन में कालिब के ख़ानदान का एक
आदमी रहता था जिसका नाम नाबाल था।
वह निहायत अमीर था। करमिल के क़रीब उस
की 3,000 भेड़ें और 1,000 बकरियाँ थीं।
बीवी का नाम अबीजेल था। वह ज़हीन भी थी
और ख़ूबसूरत भी। उसके मुक़ाबले में नाबाल
सख़्तमिज़ाज और कमीना था। एक दिन नाबाल
अपनी भेड़ों के बाल कतरने के लिए करमिल
आया।

जब दाऊद को ख़बर मिली 5तो उसने 10
जवानों को भेजकर कहा, "करमिल जाकर
नाबाल से मिलें और उसे मेरा सलाम दें। 6उसे
बताना, 'अल्लाह आपको तवील ज़िंदगी अता
करे। आप की, आपके ख़ानदान की और आपकी
तमाम मिलकियत की सलामती हो। 7सुना है
कि भेड़ों के बाल कतरने का वक़्त आ गया है।
करमिल में आपके चरवाहे हमेशा हमारे साथ रहे।
उस पूरे अरसे में न उन्हें हमारी तरफ़ से कोई
नुक़सान पहुँचा, न कोई चीज़ चोरी हुई। 8अपने
लोगों से ख़ुद पूछ लें! वह इसकी तसदीक़ करेंगे।
आज आप ख़ुशी मना रहे हैं, इसलिए मेरे जवानों

पर मेहरबानी करें। जो कुछ आप ख़ुशी से दे सकते
हैं वह उन्हें और अपने बेटे दाऊद को दे दें'।"
9दाऊद के आदमी नाबाल के पास गए। उसे
दाऊद का सलाम देकर उन्होंने उसका पैग़ाम दिया
और फिर जवाब का इंतज़ार किया। 10लेकिन
नाबाल ने करख़्त लहजे में कहा, "यह दाऊद कौन
है? कौन है यस्सी का बेटा? आजकल बहुत-से
ऐसे ग़ुलाम हैं जो अपने मालिक से भागे हुए हैं।
11मैं अपनी रोटी, अपना पानी और कतरनेवालों
के लिए ज़बह किया गया गोश्त लेकर ऐसे आवारा
फिरनेवालों को क्यों दे दूँ? क्या पता है कि यह
कहाँ से आए हैं।"
12दाऊद के आदमी चले गए और दाऊद को
सब कुछ बता दिया। 13तब दाऊद ने हुक्म दिया,
"अपनी तलवारें बाँध लो!" सबने अपनी तलवारें
बाँध लीं। उसने भी ऐसा किया और फिर 400
अफ़राद के साथ करमिल के लिए रवाना हुआ।
बाक़ी 200 मर्द सामान के पास रहे।

अबीजेल दाऊद का ग़ुस्सा ठंडा करती है

14इतने में नाबाल के एक नौकर ने उस की
बीवी को इत्तला दी, "दाऊद ने रेगिस्तान में
से अपने क़ासिदों को नाबाल के पास भेजा
ताकि उसे मुबारकबाद दें। लेकिन उसने जवाब
में गरजकर उन्हें गालियाँ दी हैं, 15हालाँकि उन
लोगों का हमारे साथ सुलूक हमेशा अच्छा रहा
है। हम अकसर रेवड़ों को चराने के लिए उनके
क़रीब फिरते रहे, तो भी उन्होंने हमें कभी नुक़सान
न पहुँचाया, न कोई चीज़ चोरी की। 16जब भी
हम उनके क़रीब थे तो वह दिन-रात चारदीवारी
की तरह हमारी हिफ़ाज़त करते रहे। 17अब सोच
लें कि क्या किया जाए! क्योंकि हमारा मालिक
और उसके तमाम घरवाले बड़े ख़तरे में हैं। वह
ख़ुद इतना शरीर है कि उससे बात करने का कोई
फ़ायदा नहीं।"
18जितनी जल्दी हो सका अबीजेल ने कुछ
सामान इकट्ठा किया जिसमें 200 रोटियाँ, मै की
दो मशकें, खाने के लिए तैयार की गई पाँच भेड़ें,
भुने हुए अनाज के साढ़े 27 किलोग्राम, किशमिश
की 100 और अंजीर की 200 टिक्कियाँ शामिल
थीं। सब कुछ गधों पर लादकर 19उसने अपने
नौकरों को हुक्म दिया, "मेरे आगे निकल जाओ,
मैं तुम्हारे पीछे पीछे आऊँगी।" अपने शौहर को
उसने कुछ न बताया। 20जब अबीजेल पहाड़ की
आड़ में उतरने लगी तो दाऊद अपने आदमियों
समेत उस की तरफ़ बढ़ते हुए नज़र आया। फिर
उनकी मुलाक़ात हुई। 21दाऊद तो अभी तक बड़े
ग़ुस्से में था, क्योंकि वह सोच रहा था, "इस
आदमी की मदद करने का क्या फ़ायदा था! हम
रेगिस्तान में उसके रेवड़ों की हिफ़ाज़त करते रहे
और उस की कोई भी चीज़ गुम न होने दी। तो भी
उसने हमारी नेकी के जवाब में हमारी बेइज़्ज़ती
की है। 22अल्लाह मुझे सख़्त सज़ा दे अगर मैं
कल सुबह तक उसके एक आदमी को भी ज़िंदा
छोड़ दूँ!"
23-24दाऊद को देखकर अबीजेल जल्दी से गधे
पर से उतरकर उसके सामने मुँह के बल झुक
गई। उसने कहा, "मेरे आक़ा, मुझे ही क़ुसूरवार
ठहराएँ। मेहरबानी करके अपनी ख़ादिमा को
बोलने दें और उस की बात सुनें। 25मेरे मालिक
उस शरीर आदमी नाबाल पर ज़्यादा ध्यान न
दें। उसके नाम का मतलब अहमक़ है और वह
है ही अहमक़। अफ़सोस, मेरी उन आदमियों से
मुलाक़ात नहीं हुई जो आपने हमारे पास भेजे थे।
26लेकिन रब की और आपकी हयात की क़सम,
रब ने आपको अपने हाथों से बदला लेने और
क़ातिल बनने से बचाया है। और अल्लाह करे
कि जो भी आपसे दुश्मनी रखते और आपको
नुक़सान पहुँचाना चाहते हैं उन्हें नाबाल की-सी
सज़ा मिल जाए। 27अब गुज़ारिश है कि जो
बरकत हमें मिली है उसमें आप भी शरीक हों। जो
चीज़ें आपकी ख़ादिमा लाई है उन्हें क़बूल करके
उन जवानों में तक़सीम कर दें जो मेरे आक़ा के
पीछे हो लिए हैं। 28जो भी ग़लती हुई है अपनी
ख़ादिमा को मुआफ़ कीजिए। रब ज़रूर मेरे आक़ा
का घराना हमेशा तक क़ायम रखेगा, क्योंकि

आप रब के दुश्मनों से लड़ते हैं। वह आपको
जीते-जी ग़लतियाँ करने से बचाए रखे। 29जब
कोई आपका ताक़्क़ुब करके आपको मार देने
की कोशिश करे तो रब आपका ख़ुदा आपकी
जान जानदारों की थैली में महफ़ूज़ रखेगा। लेकिन
आपके दुश्मनों की जान वह फ़लाख़न के पत्थर
की तरह दूर फेंककर हलाक कर देगा। 30जब रब
अपने तमाम वादे पूरे करके आपको इसराईल का
बादशाह बना देगा 31तो कोई ऐसी बात सामने
नहीं आएगी जो ठोकर का बाइस हो। मेरे आक़ा
का ज़मीर साफ़ होगा, क्योंकि आप बदला लेकर
क़ातिल नहीं बने होंगे। गुज़ारिश है कि जब रब
आपको कामयाबी दे तो अपनी ख़ादिमा को भी
याद करें।"

32दाऊद बहुत ख़ुश हुआ। "रब इसराईल के
ख़ुदा की तारीफ़ हो जिसने आज आपको मुझसे
मिलने के लिए भेज दिया। 33आपकी बसीरत
मुबारक है! आप मुबारक हैं, क्योंकि आपने मुझे
इस दिन अपने हाथों से बदला लेकर क़ातिल बनने
से रोक दिया है। 34रब इसराईल के ख़ुदा की
क़सम जिसने मुझे आपको नुक़सान पहुँचाने से
रोक दिया, कल सुबह नाबाल के तमाम आदमी
हलाक होते अगर आप इतनी जल्दी से मुझसे
मिलने न आतीं।"

35दाऊद ने अबीजेल की पेशकरदा चीज़ें क़बूल
करके उसे रुख़सत किया और कहा, "सलामती
से जाएँ। मैंने आपकी सुनी और आपकी बात
मंज़ूर कर ली है।"

रब नाबाल को सज़ा देता है

36जब अबीजेल अपने घर पहुँची तो देखा कि
बहुत रौनक़ है, क्योंकि नाबाल बादशाह की-सी
ज़ियाफ़त करके ख़ुशियाँ मना रहा था। चूँकि वह
नशे में धुत था इसलिए अबीजेल ने उसे उस वक़्त
कुछ न बताया।

37अगली सुबह जब नाबाल होश में आ गया
तो अबीजेल ने उसे सब कुछ कह सुनाया। यह
सुनते ही नाबाल को दौरा पड़ गया, और वह
पत्थर-सा बन गया। 38दस दिन के बाद रब ने उसे
मरने दिया। 39जब दाऊद को नाबाल की मौत की
ख़बर मिल गई तो वह पुकारा, "रब की तारीफ़ हो
जिसने मेरे लिए नाबाल से लड़कर मेरी बेइज़्ज़ती
का बदला लिया है। उस की मेहरबानी है कि मैं
ग़लत काम करने से बच गया हूँ जबकि नाबाल
की बुराई उसके अपने सर पर आ गई है।"

अबीजेल की दाऊद से शादी

कुछ देर के बाद दाऊद ने अपने लोगों को
अबीजेल के पास भेजा ताकि वह दाऊद की उसके
साथ शादी की दरख़ास्त पेश करें। 40चुनाँचे
उसके मुलाज़िम करमिल में अबीजेल के पास
जाकर बोले, "दाऊद ने हमें शादी का पैग़ाम देकर
भेजा है।" 41अबीजेल खड़ी हुई, फिर मुँह के बल
झुककर बोली, "मैं उनकी ख़िदमत में हाज़िर हूँ।
मैं अपने मालिक के ख़ादिमों के पाँव धोने तक
तैयार हूँ।"

42वह जल्दी से तैयार हुई और गधे पर बैठकर
दाऊद के मुलाज़िमों के साथ रवाना हुई। पाँच
नौकरानियाँ उसके साथ चली गईं। यों अबीजेल
दाऊद की बीवी बन गई।

43अब दाऊद की दो बीवियाँ थीं, क्योंकि पहले
उस की शादी अख़ीनुअम से हुई थी जो यज्रएल
से थी। 44जहाँ तक साऊल की बेटी मीकल का
ताल्लुक़ था साऊल ने उसे दाऊद से लेकर उस
की दुबारा शादी फ़लतियेल बिन लैस से करवाई
थी जो जल्लीम का रहनेवाला था।

दाऊद साऊल को दूसरी बार बचने देता है

26 एक दिन दश्ते-ज़ीफ़ के कुछ बाशिंदे
दुबारा जिबिया में साऊल के पास आ
गए। उन्होंने बादशाह को बताया, "हम जानते
हैं कि दाऊद कहाँ छुप गया है। वह उस पहाड़ी
पर है जो हकीला कहलाती है और यशीमोन के
मुक़ाबिल है।" 2यह सुनकर साऊल इसराईल
के 3,000 चीदा फ़ौजियों को लेकर दश्ते-ज़ीफ़
में गया ताकि दाऊद को ढूँड निकाले। 3हकीला

पहाड़ी पर यशीमोन के मुक़ाबिल वह रुक गए। जो
रास्ता पहाड़ पर से गुज़रता है उसके पास उन्होंने
अपना कैंप लगाया। दाऊद उस वक़्त रेगिस्तान
में छुप गया था। जब उसे ख़बर मिली कि साऊल
मेरा ताक़्क़ुब कर रहा है 4तो उसने अपने लोगों को
मालूम करने के लिए भेजा। उन्होंने वापस आकर
उसे इत्तला दी कि बादशाह वाक़ई अपनी फ़ौज
समेत रेगिस्तान में पहुँच गया है। 5यह सुनकर
दाऊद ख़ुद निकलकर चुपके से उस जगह गया
जहाँ साऊल का कैंप था। उसको मालूम हुआ
कि साऊल और उसका कमाँडर अबिनैर बिन नैर
कैंप के ऐन बीच में सो रहे हैं जबकि बाक़ी आदमी
दायरा बनाकर उनके इर्दगिर्द सो रहे हैं।

6दो मर्द दाऊद के साथ थे, अख़ीमलिक हित्ती
और अबीशै बिन ज़रूयाह। ज़रूयाह योआब का
भाई था। दाऊद ने पूछा, “कौन मेरे साथ कैंप
में घुसकर साऊल के पास जाएगा?” अबीशै ने
जवाब दिया, “मैं साथ जाऊँगा।” 7चुनाँचे दोनों
रात के वक़्त कैंप में घुस आए। सोए हुए फ़ौजियों
और अबिनैर से गुज़रकर वह साऊल तक पहुँच
गए जो ज़मीन पर लेटा सो रहा था। उसका नेज़ा
सर के क़रीब ज़मीन में गड़ा हुआ था। 8अबीशै
ने आहिस्ता से दाऊद से कहा, “आज अल्लाह ने
आपके दुश्मन को आपके क़ब्ज़े में कर दिया है।
अगर इजाज़त हो तो मैं उसे उसके अपने नेज़े से
ज़मीन के साथ छेद दूँ। मैं उसे एक ही वार में मार
दूँगा। दूसरे वार की ज़रूरत ही नहीं होगी।”

9दाऊद बोला, “न करो! उसे मत मारना,
क्योंकि जो रब के मसह किए हुए ख़ादिम को हाथ
लगाए वह क़ुसूरवार ठहरेगा। 10रब की हयात की
क़सम, रब ख़ुद साऊल की मौत मुक़र्रर करेगा,
ख़ाह वह बूढ़ा होकर मर जाए, ख़ाह जंग में लड़ते
हुए। 11रब मुझे इससे महफ़ूज़ रखे कि मैं उसके
मसह किए हुए ख़ादिम को नुक़सान पहुँचाऊँ।
नहीं, हम कुछ और करेंगे। उसका नेज़ा और पानी
की सुराही पकड़ लो। आओ, हम यह चीज़ें अपने
साथ लेकर यहाँ से निकल जाते हैं।” 12चुनाँचे
वह दोनों चीज़ें अपने साथ लेकर चुपके से चले
गए। कैंप में किसी को भी पता न चला, कोई न
जागा। सब सोए रहे, क्योंकि रब ने उन्हें गहरी
नींद सुला दिया था।

13दाऊद वादी को पार करके पहाड़ी पर चढ़
गया। जब साऊल से फ़ासला काफ़ी था 14तो
दाऊद ने फ़ौज और अबिनैर को ऊँची आवाज़
से पुकारकर कहा, “ऐ अबिनैर, क्या आप मुझे
जवाब नहीं देंगे?” अबिनैर पुकारा, “आप कौन
हैं कि बादशाह को इस तरह की ऊँची आवाज़
दें?” 15दाऊद ने तंज़न जवाब दिया, “क्या आप
मर्द नहीं हैं? और इसराईल में कौन आप जैसा
है? तो फिर आपने अपने बादशाह की सहीह
हिफ़ाज़त क्यों न की जब कोई उसे क़त्ल करने के
लिए कैंप में घुस आया? 16जो आपने किया वह
ठीक नहीं है। रब की हयात की क़सम, आप और
आपके आदमी सज़ाए-मौत के लायक़ हैं, क्योंकि
आपने अपने मालिक की हिफ़ाज़त न की, गो वह
रब का मसह किया हुआ बादशाह है। ख़ुद देख लें,
जो नेज़ा और पानी की सुराही बादशाह के सर के
पास थे वह कहाँ हैं?”

17तब साऊल ने दाऊद की आवाज़ पहचान
ली। वह पुकारा, “मेरे बेटे दाऊद, क्या आपकी
आवाज़ है?” 18दाऊद ने जवाब दिया, “जी,
बादशाह सलामत। मेरे आक़ा, आप मेरा ताक़्क़ुब
क्यों कर रहे हैं? मैं तो आपका ख़ादिम हूँ। मैंने
क्या किया? मुझसे क्या जुर्म सरज़द हुआ है?
19गुज़ारिश है कि मेरा आक़ा और बादशाह अपने
ख़ादिम की बात सुने। अगर रब ने आपको मेरे
ख़िलाफ़ उकसाया हो तो वह मेरी ग़ल्ला की नज़र
क़बूल करे। लेकिन अगर इनसान इसके पीछे हैं
तो रब के सामने उन पर लानत! अपनी हरकतों से
उन्होंने मुझे मेरी मौरूसी ज़मीन से निकाल दिया है
और नतीजे में मैं रब की क़ौम में नहीं रह सकता।
हक़ीक़त में वह कह रहे हैं, ‘जाओ, दीगर माबूदों
की पूजा करो!’ 20ऐसा न हो कि मैं वतन से
और रब के हुज़ूर से दूर मर जाऊँ। इसराईल का
बादशाह पिस्सू को ढूँड निकालने के लिए क्यों

निकल आया है? वह तो पहाड़ों में मेरा शिकार
तीतर के शिकार की तरह कर रहे हैं।”
21तब साऊल ने इक़रार किया, “मैंने गुनाह
किया है। दाऊद मेरे बेटे, वापस आएँ। अब से
मैं आपको नुक़सान पहुँचाने की कोशिश नहीं
करूँगा, क्योंकि आज मेरी जान आपकी नज़र में
क़ीमती थी। मैं बड़ी बेवुक़ूफ़ी कर गया हूँ, और
मुझसे बड़ी ग़लती हुई है।”
22दाऊद ने जवाब में कहा, “बादशाह का नेज़ा
यहाँ मेरे पास है। आपका कोई जवान आकर उसे
ले जाए। 23रब हर उस शख़्स को अज्र देता है
जो इनसाफ़ करता और वफ़ादार रहता है। आज
रब ने आपको मेरे हवाले कर दिया, लेकिन मैंने
उसके मसह किए हुए बादशाह को हाथ लगाने से
इनकार किया। 24और मेरी दुआ है कि जितनी
क़ीमती आपकी जान आज मेरी नज़र में थी,
उतनी क़ीमती मेरी जान भी रब की नज़र में हो।
वही मुझे हर मुसीबत से बचाए रखे।” 25साऊल
ने जवाब दिया, “मेरे बेटे दाऊद, रब आपको
बरकत दे। आइंदा आपको बड़ी कामयाबी हासिल
होगी।”

इसके बाद दाऊद ने अपनी राह ली और साऊल
अपने घर चला गया।

दाऊद दुबारा अकीस के पास

27 इस तजरबे के बाद दाऊद सोचने
लगा, “अगर मैं यहीं ठहर जाऊँ तो
किसी दिन साऊल मुझे मार डालेगा। बेहतर है कि
अपनी हिफ़ाज़त के लिए फ़िलिस्तियों के मुल्क
में चला जाऊँ। तब साऊल पूरे इसराईल में मेरा
खोज लगाने से बाज़ आएगा, और मैं महफ़ूज़
रहूँगा।” 2चुनाँचे वह अपने 600 आदमियों को
लेकर जात के बादशाह अकीस बिन माओक के
पास चला गया। 3उनके ख़ानदान साथ थे। दाऊद
की दो बीवियाँ अख़ीनुअम यज्रएली और नाबाल
की बेवा अबीजेल करमिली भी साथ थीं। अकीस
ने उन्हें जात शहर में रहने की इजाज़त दी। 4जब
साऊल को ख़बर मिली कि दाऊद ने जात में पनाह
ली है तो वह उसका खोज लगाने से बाज़ आया।
5एक दिन दाऊद ने अकीस से बात की, “अगर
आपकी नज़रे-करम मुझ पर है तो मुझे देहात
की किसी आबादी में रहने की इजाज़त दें। क्या
ज़रूरत है कि मैं यहाँ आपके साथ दारुल-हुकूमत
में रहूँ?” 6अकीस मुत्तफ़िक़ हुआ। उस दिन उसने
उसे सिक़लाज शहर दे दिया। यह शहर उस वक़्त
से यहूदाह के बादशाहों की मिलकियत में रहा
है। 7दाऊद एक साल और चार महीने फ़िलिस्ती
मुल्क में ठहरा रहा।
8सिक़लाज से दाऊद अपने आदमियों के
साथ मुख़्तलिफ़ जगहों पर हमला करने के लिए
निकलता रहा। कभी वह जसूरियों पर धावा
बोलते, कभी जिरज़ियों या अमालीक़ियों पर। यह
क़बीले क़दीम ज़माने से यहूदाह के जुनूब में शूर
और मिसर की सरहद तक रहते थे। 9जब भी कोई
मक़ाम दाऊद के क़ब्ज़े में आ जाता तो वह किसी
भी मर्द या औरत को ज़िंदा न रहने देता लेकिन
भेड़-बकरियों, गाय-बैलों, गधों, ऊँटों और कपड़ों
को अपने साथ सिक़लाज ले जाता।
जब भी दाऊद किसी हमले से वापस आकर
बादशाह अकीस से मिलता 10तो वह पूछता,
“आज आपने किस पर छापा मारा?” फिर
दाऊद जवाब देता, “यहूदाह के जुनूबी इलाक़े
पर,” या “यरहमियेलियों के जुनूबी इलाक़े पर,”
या “क़ीनियों के जुनूबी इलाक़े पर।” 11जब भी
दाऊद किसी आबादी पर हमला करता तो वह
तमाम बाशिंदों को मौत के घाट उतार देता और
न मर्द, न औरत को ज़िंदा छोड़कर जात लाता।
क्योंकि उसने सोचा, “ऐसा न हो कि फ़िलिस्तियों
को पता चले कि मैं असल में इसराईली आबादियों
पर हमला नहीं कर रहा।”
जितना वक़्त दाऊद ने फ़िलिस्ती मुल्क में
गुज़ारा वह ऐसा ही करता रहा। 12अकीस ने
दाऊद पर पूरा भरोसा किया, क्योंकि उसने
सोचा, “अब दाऊद को हमेशा तक मेरी ख़िदमत

में रहना पड़ेगा, क्योंकि ऐसी हरकतों से उस की अपनी क़ौम उससे सख़्त मुतनफ़्फ़िर हो गई है।”

28 उन दिनों में फ़िलिस्ती इसराईल से लड़ने के लिए अपनी फ़ौजें जमा करने लगे। अकीस ने दाऊद से भी बात की, “तवक़्क़ो है कि आप अपने फ़ौजियों समेत मेरे साथ मिलकर जंग के लिए निकलेंगे।”

2दाऊद ने जवाब दिया, “ज़रूर। अब आप ख़ुद देखेंगे कि आपका ख़ादिम क्या करने के क़ाबिल है!” अकीस बोला, “ठीक है। पूरी जंग के दौरान आप मेरे मुहाफ़िज़ होंगे।”

साऊल जादूगरनी की तरफ़ रुजू करता है

3उस वक़्त समुएल इंतक़ाल कर चुका था, और पूरे इसराईल ने उसका मातम करके उसे उसके आबाई शहर रामा में दफ़नाया था।

उन दिनों में इसराईल में मुरदों से राबिता करनेवाले और ग़ैबदान नहीं थे, क्योंकि साऊल ने उन्हें पूरे मुल्क से निकाल दिया था।

4अब फ़िलिस्तियों ने अपनी लशकरगाह शूनीम के पास लगाई जबकि साऊल ने तमाम इसराईलियों को जमा करके जिलबुअ के पास अपना कैंप लगाया। 5फ़िलिस्तियों की बड़ी फ़ौज देखकर वह सख़्त दहशत खाने लगा। 6उसने रब से हिदायत हासिल करने की कोशिश की, लेकिन कोई जवाब न मिला, न ख़ाब, न मुक़द्दस क़ुरा डालने से और न नबियों की मारिफ़त।
7तब साऊल ने अपने मुलाज़िमों को हुक्म दिया, “मेरे लिए मुरदों से राबिता करनेवाली ढूँडो ताकि मैं जाकर उससे मालूमात हासिल कर लूँ।” मुलाज़िमों ने जवाब दिया, “ऐन-दोर में ऐसी औरत है।”

8साऊल भेस बदलकर दो आदमियों के साथ ऐन-दोर के लिए रवाना हुआ।

रात के वक़्त वह जादूगरनी के पास पहुँच गया और बोला, “मुरदों से राबिता करके उस रूह को पाताल से बुला दें जिसका नाम मैं आपको बताता हूँ।” 9जादूगरनी ने एतराज़ किया, “क्या आप मुझे मरवाना चाहते हैं? आपको पता है कि साऊल ने तमाम ग़ैबदानों और मुरदों से राबिता करनेवालों को मुल्क में से मिटा दिया है। आप मुझे क्यों फँसाना चाहते हैं?” 10तब साऊल ने कहा, “रब की हयात की क़सम, आपको यह करने के लिए सज़ा नहीं मिलेगी।” 11औरत ने पूछा, “मैं किस को बुलाऊँ?” साऊल ने जवाब दिया, “समुएल को बुला दें।”

12जब समुएल औरत को नज़र आया तो वह चीख़ उठी, “आपने मुझे क्यों धोका दिया? आप तो साऊल हैं!” 13साऊल ने उसे तसल्ली देकर कहा, “डरें मत। बताएँ तो सही, क्या देख रही हैं?” औरत ने जवाब दिया, “मुझे एक रूह नज़र आ रही है जो चढ़ती चढ़ती ज़मीन में से निकलकर आ रही है।” 14साऊल ने पूछा, “उस की शक्लो-सूरत कैसी है?” जादूगरनी ने कहा, “चोगे में लिपटा हुआ बूढ़ा आदमी है।”

यह सुनकर साऊल ने जान लिया कि समुएल ही है। वह मुँह के बल ज़मीन पर झुक गया।
15समुएल बोला, “तूने मुझे पाताल से बुलवाकर क्यों मुज़तरिब कर दिया है?” साऊल ने जवाब दिया, “मैं बड़ी मुसीबत में हूँ। फ़िलिस्ती मुझसे लड़ रहे हैं, और अल्लाह ने मुझे तर्क कर दिया है। न वह नबियों की मारिफ़त मुझे हिदायत देता है, न ख़ाब के ज़रीए। इसलिए मैंने आपको बुलवाया है ताकि आप मुझे बताएँ कि मैं क्या करूँ।”

16लेकिन समुएल ने कहा, “रब ख़ुद ही तुझे छोड़कर तेरा दुश्मन बन गया है तो फिर मुझसे दरियाफ़्त करने का क्या फ़ायदा है? 17रब इस वक़्त तेरे साथ वह कुछ कर रहा है जिसकी पेशगोई उसने मेरी मारिफ़त की थी। उसने तेरे हाथ से बादशाही छीनकर किसी और यानी दाऊद को दे दी है। 18जब रब ने तुझे अमालीक़ियों पर उसका सख़्त ग़ज़ब नाज़िल करने का हुक्म दिया था तो तूने उस की न सुनी। अब तुझे इसकी सज़ा भुगतनी पड़ेगी। 19रब तुझे इसराईल समेत फ़िलिस्तियों के हवाले कर देगा। कल ही तू और

तेरे बेटे यहाँ मेरे पास पहुँचेंगे। रब तेरी पूरी फ़ौज भी फ़िलिस्तियों के क़ब्ज़े में कर देगा।”

20यह सुनकर साऊल सख़्त घबरा गया, और वह गिरकर ज़मीन पर दराज़ हो गया। जिस्म की पूरी ताक़त ख़त्म हो गई थी, क्योंकि उसने पिछले पूरे दिन और रात रोज़ा रखा था।

21जब जादूगरनी ने साऊल के पास जाकर देखा कि उसके रोंगटे खड़े हो गए हैं तो उसने कहा, “जनाब, मैंने आपका हुक्म मानकर अपनी जान ख़तरे में डाल दी। 22अब ज़रा मेरी भी सुनें। मुझे इजाज़त दें कि मैं आपको कुछ खाना खिलाऊँ ताकि आप तक़वियत पाकर वापस जा सकें।” 23लेकिन साऊल ने इनकार किया, “मैं कुछ नहीं खाऊँगा।” तब उसके आदमियों ने औरत के साथ मिलकर उसे बहुत समझाया, और आख़िरकार उसने उनकी सुनी। वह ज़मीन से उठकर चारपाई पर बैठ गया। 24जादूगरनी के पास मोटा-ताज़ा बछड़ा था। उसे उसने जल्दी से ज़बह करवाकर तैयार किया। उसने कुछ आटा भी लेकर गूँधा और उससे बेख़मीरी रोटी बनाई। 25फिर उसने खाना साऊल और उसके मुलाज़िमों के सामने रख दिया, और उन्होंने खाया। फिर वह उसी रात दुबारा रवाना हो गए।

फ़िलिस्ती दाऊद पर शक करते हैं

29 फ़िलिस्तियों ने अपनी फ़ौजों को अफ़ीक़ के पास जमा किया, जबकि इसराईलियों की लशकरगाह यज्रएल के चश्मे के पास थी। 2फ़िलिस्ती सरदार जंग के लिए निकलने लगे। उनके पीछे सौ सौ और हज़ार हज़ार सिपाहियों के गुरोह हो लिए। आख़िर में दाऊद और उसके आदमी भी अकीस के साथ चलने लगे।

3यह देखकर फ़िलिस्ती कमाँडरों ने पूछा, “यह इसराईली क्यों साथ जा रहे हैं?” अकीस ने जवाब दिया, “यह दाऊद है, जो पहले इसराईली बादशाह साऊल का फ़ौजी अफ़सर था और अब काफ़ी देर से मेरे साथ है। जब से वह साऊल को छोड़कर मेरे पास आया है मैंने उसमें ऐब नहीं देखा।”

4लेकिन फ़िलिस्ती कमाँडर ग़ुस्से से बोले, “उसे उस शहर वापस भेज दें जो आपने उसके लिए मुक़र्रर किया है! कहीं ऐसा न हो कि वह हमारे साथ निकलकर अचानक हम पर ही हमला कर दे। क्या अपने मालिक से सुलह कराने का कोई बेहतर तरीक़ा है कि वह अपने मालिक को हमारे कटे हुए सर पेश करे? 5क्या यह वही दाऊद नहीं जिसके बारे में इसराईली नाचते हुए गाते थे, ‘साऊल ने हज़ार हलाक किए जबकि दाऊद ने दस हज़ार’?”

6चुनाँचे अकीस ने दाऊद को बुलाकर कहा, “रब की हयात की क़सम, आप दियानतदार हैं, और मेरी ख़ाहिश थी कि आप इसराईल से लड़ने के लिए मेरे साथ निकलें, क्योंकि जब से आप मेरी ख़िदमत करने लगे हैं मैंने आपमें ऐब नहीं देखा। लेकिन अफ़सोस, आप सरदारों को पसंद नहीं हैं। 7इसलिए मेहरबानी करके सलामती से लौट जाएँ और कुछ न करें जो उन्हें बुरा लगे।”

8दाऊद ने पूछा, “मुझसे क्या ग़लती हुई है? क्या आपने उस दिन से मुझमें नुक़्स पाया है जब से मैं आपकी ख़िदमत करने लगा हूँ? मैं अपने मालिक और बादशाह के दुश्मनों से लड़ने के लिए क्यों नहीं निकल सकता?”

9अकीस ने जवाब दिया, “मेरे नज़दीक तो आप अल्लाह के फ़रिश्ते जैसे अच्छे हैं। लेकिन फ़िलिस्ती कमाँडर इस बात पर बज़िद हैं कि आप इसराईल से लड़ने के लिए हमारे साथ न निकलें। 10चुनाँचे कल सुबह-सवेरे उठकर अपने आदमियों के साथ रवाना हो जाना। जब दिन चढ़े तो देर न करना बल्कि जल्दी से अपने घर चले जाना।”

11दाऊद और उसके आदमियों ने ऐसा ही किया। अगले दिन वह सुबह-सवेरे उठकर फ़िलिस्ती मुल्क में वापस चले गए जबकि फ़िलिस्ती यज्रएल के लिए रवाना हुए।

सिक़लाज की तबाही और दाऊद का बदला

30 तीसरे दिन जब दाऊद सिक़लाज
पहुँचा तो देखा कि शहर का
सत्यानास हो गया है। उनकी ग़ैरमौजूदगी में
अमालीक़ियों ने दश्ते-नजब में आकर सिक़लाज
पर भी हमला किया था। शहर को जलाकर 2वह
तमाम बाशिंदों को छोटों से लेकर बड़ों तक अपने
साथ ले गए थे। लेकिन कोई हलाक नहीं हुआ था
बल्कि वह सबको अपने साथ ले गए थे। 3चुनाँचे
जब दाऊद और उसके आदमी वापस आए तो
देखा कि शहर भस्म हो गया है और तमाम बाल-
बच्चे छिन गए हैं। 4वह फूट फूटकर रोने लगे,
इतने रोए कि आख़िरकार रोने की सकत ही न
रही। 5दाऊद की दो बीवियों अख़ीनुअम यज़्रएली
और अबीजेल करमिली को भी असीर कर लिया
गया था।

6दाऊद की जान बड़े ख़तरे में आ गई, क्योंकि
उसके मर्द ग़म के मारे आपस में उसे संगसार करने
की बातें करने लगे। क्योंकि बेटे-बेटियों के छिन
जाने के बाइस सब सख़्त रंजीदा थे। लेकिन दाऊद
ने रब अपने ख़ुदा में पनाह लेकर तक़वियत पाई।
7उसने अबियातर बिन अख़ीमलिक को हुक्म
दिया, "क़ुरा डालने के लिए इमाम का बालापोश
ले आएँ।" जब इमाम बालापोश ले आया 8तो
दाऊद ने रब से दरियाफ़्त किया, "क्या मैं लुटेरों
का ताक़्क़ुब करूँ? क्या मैं उनको जा लूँगा?"
रब ने जवाब दिया, "उनका ताक़्क़ुब कर! तू न
सिर्फ़ उन्हें जा लेगा बल्कि अपने लोगों को बचा
भी लेगा।" 9-10तब दाऊद अपने 600 मर्दों के
साथ रवाना हुआ। चलते चलते वह बसोर नदी के
पास पहुँच गए। 200 अफ़राद इतने निढाल हो
गए थे कि वह वहीं रुक गए। बाक़ी 400 मर्द नदी
को पार करके आगे बढ़े।

11रास्ते में उन्हें खुले मैदान में एक मिसरी
आदमी मिला और उसे दाऊद के पास लाकर
कुछ पानी पिलाया और कुछ रोटी, 12अंजीर
की टिक्की का टुकड़ा और किशमिश की दो
टिक्कियाँ खिलाईं। तब उस की जान में जान आ
गई। उसे तीन दिन और रात से न खाना, न पानी
मिला था। 13दाऊद ने पूछा, "तुम्हारा मालिक
कौन है, और तुम कहाँ के हो?" उसने जवाब
दिया, "मैं मिसरी ग़ुलाम हूँ, और एक अमालीक़ी
मेरा मालिक है। जब मैं सफ़र के दौरान बीमार हो
गया तो उसने मुझे यहाँ छोड़ दिया। अब मैं तीन
दिन से यहाँ पड़ा हूँ। 14पहले हमने करेतियों यानी
फ़िलिस्तियों के जुनूबी इलाक़े और फिर यहूदाह
के इलाक़े पर हमला किया था, ख़ासकर यहूदाह
के जुनूबी हिस्से पर जहाँ कालिब की औलाद
आबाद है। शहर सिक़लाज को हमने भस्म कर
दिया था।"

15दाऊद ने सवाल किया, "क्या तुम मुझे बता
सकते हो कि यह लुटेरे किस तरफ़ गए हैं?"
मिसरी ने जवाब दिया, "पहले अल्लाह की क़सम
खाकर वादा करें कि आप मुझे न हलाक करेंगे,
न मेरे मालिक के हवाले करेंगे। फिर मैं आपको
उनके पास ले जाऊँगा।" 16चुनाँचे वह दाऊद को
अमालीक़ी लुटेरों के पास ले गया। जब वहाँ पहुँचे
तो देखा कि अमालीक़ी इधर-उधर बिखरे हुए बड़ा
जशन मना रहे हैं। वह हर तरफ़ खाना खाते और मै
पीते हुए नज़र आ रहे थे, क्योंकि जो माल उन्होंने
फ़िलिस्तियों और यहूदाह के इलाक़े से लूट लिया
था वह बहुत ज़्यादा था।

17सुबह-सवेरे जब अभी थोड़ी रौशनी थी
दाऊद ने उन पर हमला किया। लड़ते लड़ते अगले
दिन की शाम हो गई। दुश्मन हार गया और सबके
सब हलाक हुए। सिर्फ़ 400 जवान बच गए जो
ऊँटों पर सवार होकर फ़रार हो गए। 18दाऊद
ने सब कुछ छुड़ा लिया जो अमालीक़ियों ने लूट
लिया था। उस की दो बीवियाँ भी सहीह-सलामत
मिल गईं। 19न बच्चा न बुज़ुर्ग, न बेटा न बेटी,
न माल या कोई और लूटी हुई चीज़ रही जो
दाऊद वापस न लाया। 20अमालीक़ियों के गाय-
बैल और भेड़-बकरियाँ दाऊद का हिस्सा बन गईं,
और उसके लोगों ने उन्हें अपने रेवड़ों के आगे आगे

हाँककर कहा, “यह लूटे हुए माल में से दाऊद का हिस्सा है।”

माले-ग़नीमत की तक़सीम

21जब दाऊद अपने आदमियों के साथ वापस आ रहा था तो जो 200 आदमी निढाल होने के बाइस बसोर नदी से आगे न जा सके वह भी उनसे आ मिले। दाऊद ने सलाम करके उनका हाल पूछा। 22लेकिन बाक़ी आदमियों में कुछ शरारती लोग बुड़बुड़ाने लगे, “यह हमारे साथ लड़ने के लिए आगे न निकले, इसलिए इन्हें लूटे हुए माल का हिस्सा पाने का हक़ नहीं। बस वह अपने बाल-बच्चों को लेकर चले जाएँ।”

23लेकिन दाऊद ने इनकार किया। “नहीं, मेरे भाइयो, ऐसा मत करना! यह सब कुछ रब की तरफ़ से है। उसी ने हमें महफ़ूज़ रखकर हमलाआवर लुटेरों पर फ़तह बख़्शी। 24तो फिर हम आपकी बात किस तरह मानें? जो पीछे रहकर सामान की हिफ़ाज़त कर रहा था उसे भी उतना ही मिलेगा जितना कि उसे जो दुश्मन से लड़ने गया था। हम यह सब कुछ बराबर बराबर तक़सीम करेंगे।”

25उस वक़्त से यह उसूल बन गया। दाऊद ने इसे इसराईली क़ानून का हिस्सा बना दिया जो आज तक जारी है। 26सिक़लाज वापस पहुँचने पर दाऊद ने लूटे हुए माल का एक हिस्सा यहूदाह के बुज़ुर्गों के पास भेज दिया जो उसके दोस्त थे। साथ साथ उसने पैग़ाम भेजा, “आपके लिए यह तोहफ़ा रब के दुश्मनों से लूट लिया गया है।” 27यह तोहफ़े उसने ज़ैल के शहरों में भेज दिए : बैतेल, रामात-नजब, यत्तीर, 28अरोईर, सिफ़मोत, इस्तिमुअ, 29-31रकल, हुरमा, बोर-असान, अताक़ और हबरून। इसके अलावा उसने तोहफ़े यरहमियेलियों, क़ीनियों और बाक़ी उन तमाम शहरों को भेज दिए जिनमें वह कभी ठहरा था।

साऊल और उसके बेटों का अंजाम

31 इतने में फ़िलिस्तियों और इसराईलियों के दरमियान जंग छिड़ गई थी। लड़ते लड़ते इसराईली फ़रार होने लगे, लेकिन बहुत-से लोग जिलबुअ के पहाड़ी सिलसिले पर शहीद हो गए।

2फिर फ़िलिस्ती साऊल और उसके बेटों यूनतन, अबीनदाब और मलकीशुअ के पास जा पहुँचे। तीनों बेटे हलाक हो गए 3जबकि लड़ाई साऊल के इर्दगिर्द उरूज तक पहुँच गई। फिर वह तीरअंदाज़ों का निशाना बनकर बुरी तरह ज़ख़मी हो गया। 4उसने अपने सिलाहबरदार को हुक्म दिया, “अपनी तलवार मियान से खींचकर मुझे मार डाल, वरना यह नामख़तून मुझे छेदकर बेइज़्ज़त करेंगे।” लेकिन सिलाहबरदार ने इनकार किया, क्योंकि वह बहुत डरा हुआ था। आख़िर में साऊल अपनी तलवार लेकर ख़ुद उस पर गिर गया।

5जब सिलाहबरदार ने देखा कि मेरा मालिक मर गया है तो वह भी अपनी तलवार पर गिरकर मर गया। 6यों उस दिन साऊल, उसके तीन बेटे, उसका सिलाहबरदार और उसके तमाम आदमी हलाक हो गए।

7जब मैदाने-यज्रएल के पार और दरियाए-यरदन के पार रहनेवाले इसराईलियों को ख़बर मिली कि इसराईली फ़ौज भाग गई और साऊल अपने बेटों समेत मारा गया है तो वह अपने शहरों को छोड़कर भाग निकले, और फ़िलिस्ती छोड़े हुए शहरों पर क़ब्ज़ा करके उनमें बसने लगे।

8अगले दिन फ़िलिस्ती लाशों को लूटने के लिए दुबारा मैदाने-जंग में आ गए। जब उन्हें जिलबुअ के पहाड़ी सिलसिले पर साऊल और उसके तीनों बेटे मुरदा मिले 9तो उन्होंने साऊल का सर काटकर उसका ज़िरा-बकतर उतार लिया और क़ासिदों को अपने पूरे मुल्क में भेजकर अपने बुतों के मंदिर में और अपनी क़ौम को फ़तह की इत्तला दी। 10साऊल का ज़िरा-बकतर उन्होंने

अस्तारात देवी के मंदिर में महफ़ूज़ कर लिया और
उस की लाश को बैत-शान की फ़सील से लटका
दिया।
11जब यबीस-जिलियाद के बाशिंदों को ख़बर
मिली कि फ़िलिस्तियों ने साऊल की लाश के
साथ क्या कुछ किया है 12तो शहर के तमाम
लड़ने के क़ाबिल आदमी बैत-शान के लिए रवाना
हुए। पूरी रात चलते हुए वह शहर के पास पहुँच
गए। साऊल और उसके बेटों की लाशों को
फ़सील से उतारकर वह उन्हें यबीस को ले गए।
वहाँ उन्होंने लाशों को भस्म कर दिया 13और बची
हुई हड्डियों को शहर में झाऊ के दरख़्त के साये
में दफ़नाया। उन्होंने रोज़ा रखकर पूरे हफ़ते तक
उनका मातम किया।

2 समुएल

दाऊद को साऊल और यूनतन की मौत की ख़बर मिलती है

1 जब दाऊद अमालीक़ियों को शिकस्त देने
से वापस आया तो साऊल बादशाह मर
चुका था। वह अभी दो ही दिन सिक़लाज में ठहरा
था 2कि एक आदमी साऊल की लशकरगाह से
पहुँचा। दुख के इज़हार के लिए उसने अपने कपड़ों
को फाड़कर अपने सर पर ख़ाक डाल रखी थी।
दाऊद के पास आकर वह बड़े एहतराम के साथ
उसके सामने झुक गया। 3दाऊद ने पूछा, "आप
कहाँ से आए हैं?" आदमी ने जवाब दिया, "मैं
बाल बाल बचकर इसराईली लशकरगाह से आया
हूँ।" 4दाऊद ने पूछा, "बताएँ, हालात कैसे हैं?"
उसने बताया, "हमारे बहुत-से आदमी मैदाने-जंग
में काम आए। बाक़ी भाग गए हैं। साऊल और
उसका बेटा यूनतन भी हलाक हो गए हैं।"
5दाऊद ने सवाल किया, "आपको कैसे मालूम
हुआ कि साऊल और यूनतन मर गए हैं?"
6जवान ने जवाब दिया, "इत्तफ़ाक़ से मैं जिलबुअ
के पहाड़ी सिलसिले पर से गुज़र रहा था। वहाँ
मुझे साऊल नज़र आया। वह नेज़े का सहारा
लेकर खड़ा था। दुश्मन के रथ और घुड़सवार
तक़रीबन उसे पकड़ने हीवाले थे 7कि उसने
मुड़कर मुझे देखा और अपने पास बुलाया। मैंने
कहा, 'जी, मैं हाज़िर हूँ।' 8उसने पूछा, 'तुम कौन
हो?' मैंने जवाब दिया, 'मैं अमालीक़ी हूँ।' 9फिर
उसने मुझे हुक्म दिया, 'आओ और मुझे मार
डालो! क्योंकि गो मैं ज़िंदा हूँ मेरी जान निकल
रही है।' 10चुनाँचे मैंने उसे मार दिया, क्योंकि मैं
जानता था कि बचने का कोई इमकान नहीं रहा
था। फिर मैं उसका ताज और बाज़ूबंद लेकर अपने
मालिक के पास यहाँ ले आया हूँ।"
11यह सब कुछ सुनकर दाऊद और उसके
तमाम लोगों ने ग़म के मारे अपने कपड़े फाड़
लिए। 12शाम तक उन्होंने रो रोकर और रोज़ा
रखकर साऊल, उसके बेटे यूनतन और रब के
उन बाक़ी लोगों का मातम किया जो मारे गए थे।
13दाऊद ने उस जवान से जो उनकी मौत की
ख़बर लाया था पूछा, "आप कहाँ के हैं?" उसने
जवाब दिया, "मैं अमालीक़ी हूँ जो अजनबी के
तौर पर आपके मुल्क में रहता हूँ।" 14दाऊद
बोला, "आपने रब के मसह किए हुए बादशाह को
क़त्ल करने की जुर्रत कैसे की?" 15उसने अपने
किसी जवान को बुलाकर हुक्म दिया, "इसे मार
डालो!" उसी वक़्त जवान ने अमालीक़ी को मार
डाला। 16दाऊद ने कहा, "आपने अपने आपको
ख़ुद मुजरिम ठहराया है, क्योंकि आपने अपने मुँह
से इक़रार किया है कि मैंने रब के मसह किए हुए
बादशाह को मार दिया है।"

साऊल और यूनतन पर मातम का गीत

17फिर दाऊद ने साऊल और यूनतन पर मातम
का गीत गाया। 18उसने हिदायत दी कि यहूदाह

के तमाम बाशिंदे यह गीत याद करें। गीत का नाम
‘कमान का गीत’ है और ‘याशर की किताब’ में
दर्ज है। गीत यह है,
19“हाय, ऐ इसराईल! तेरी शानो-शौकत तेरी
बुलंदियों पर मारी गई है। हाय, तेरे सूरमे किस
तरह गिर गए हैं!
20जात में जाकर यह ख़बर मत सुनाना।
अस्क़लून की गलियों में इसका एलान मत करना,
वरना फ़िलिस्तियों की बेटियाँ ख़ुशी मनाएँगी,
नामख़तूनों की बेटियाँ फ़तह के नारे लगाएँगी।
21ऐ जिलबुअ के पहाड़ो! ऐ पहाड़ी ढलानो!
आइंदा तुम पर न ओस पड़े, न बारिश बरसे।
क्योंकि सूरमाओं की ढाल नापाक हो गई है। अब
से साऊल की ढाल तेल मलकर इस्तेमाल नहीं
की जाएगी।

22यूनतन की कमान ज़बरदस्त थी, साऊल
की तलवार कभी ख़ाली हाथ न लौटी। उनके
हथियारों से हमेशा दुश्मन का ख़ून टपकता रहा,
वह सूरमाओं की चरबी से चमकते रहे।
23साऊल और यूनतन कितने प्यारे और
मेहरबान थे! जीते-जी वह एक दूसरे के क़रीब
रहे, और अब मौत भी उन्हें अलग न कर सकी।
वह उक़ाब से तेज़ और शेरबबर से ताक़तवर थे।
24ऐ इसराईल की ख़वातीन! साऊल के लिए
आँसू बहाएँ। क्योंकि उसी ने आपको क़िरमिज़ी
रंग के शानदार कपड़ों से मुलब्बस किया, उसी ने
आपको सोने के ज़ेवरात से आरास्ता किया।

25हाय, हमारे सूरमे लड़ते लड़ते शहीद हो गए
हैं। हाय ऐ इसराईल, यूनतन मुरदा हालत में तेरी
बुलंदियों पर पड़ा है।
26ऐ यूनतन मेरे भाई, मैं तेरे बारे में कितना
दुखी हूँ। तू मुझे कितना अज़ीज़ था। तेरी मुझसे
मुहब्बत अनोखी थी, वह औरतों की मुहब्बत से
भी अनोखी थी।
27हाय, हाय! हमारे सूरमे किस तरह गिरकर
शहीद हो गए हैं। जंग के हथियार तबाह हो गए
हैं।”

दाऊद यहूदाह का बादशाह बन जाता है

2 इसके बाद दाऊद ने रब से दरियाफ़्त
किया, “क्या मैं यहूदाह के किसी शहर
में वापस चला जाऊँ?” रब ने जवाब दिया, “हाँ,
वापस जा।” दाऊद ने सवाल किया, “मैं किस
शहर में जाऊँ?” रब ने जवाब दिया, “हबरून
में।” 2चुनाँचे दाऊद अपनी दो बीवियों अख़ीनुअम
यज़्रएली और नाबाल की बेवा अबीजेल करमिली
के साथ हबरून में जा बसा।
3दाऊद ने अपने आदमियों को भी उनके
ख़ानदानों समेत हबरून और गिर्दो-नवाह की
आबादियों में मुंतक़िल कर दिया। 4एक दिन
यहूदाह के आदमी हबरून में आए और दाऊद को
मसह करके अपना बादशाह बना लिया।
जब दाऊद को ख़बर मिल गई कि यबीस-
जिलियाद के मर्दों ने साऊल को दफ़ना दिया
है 5तो उसने उन्हें पैग़ाम भेजा, “रब आपको
इसके लिए बरकत दे कि आपने अपने मालिक
साऊल को दफ़न करके उस पर मेहरबानी की
है। 6जवाब में रब आप पर अपनी मेहरबानी और
वफ़ादारी का इज़हार करे। मैं भी इस नेक अमल
का अज्र दूँगा। 7अब मज़बूत और दिलेर हों।
आपका आक़ा साऊल तो फ़ौत हुआ है, लेकिन
यहूदाह के क़बीले ने मुझे उस की जगह चुन लिया
है।”

इशबोसत इसराईल का बादशाह बन जाता है

8इतने में साऊल की फ़ौज के कमाँडर अबिनैर
बिन नैर ने साऊल के बेटे इशबोसत को महनायम
शहर में ले जाकर 9बादशाह मुक़र्रर कर दिया।
जिलियाद, यज़्रएल, आशर, इफ़राईम, बिनयमीन
और तमाम इसराईल उसके क़ब्ज़े में रहे।
10सिर्फ़ यहूदाह का क़बीला दाऊद के साथ रहा।
इशबोसत 40 साल की उम्र में बादशाह बना, और

उस की हुकूमत दो साल क़ायम रही। 11दाऊद
हबरून में यहूदाह पर साढ़े सात साल हुकूमत
करता रहा।

इसराईल और यहूदाह के दरमियान जंग

12एक दिन अबिनैर इशबोसत बिन साऊल
के मुलाज़िमों के साथ महनायम से निकलकर
जिबऊन आया। 13यह देखकर दाऊद की फ़ौज
योआब बिन ज़रूयाह की राहनुमाई में उनसे लड़ने
के लिए निकली। दोनों फ़ौजों की मुलाक़ात
जिबऊन के तालाब पर हुई। अबिनैर की फ़ौज
तालाब की उरली तरफ़ रुक गई और योआब की
फ़ौज परली तरफ़। 14अबिनैर ने योआब से कहा,
"आओ, हमारे चंद जवान हमारे सामने एक दूसरे
का मुक़ाबला करें।" योआब बोला, "ठीक है।"
15चुनाँचे हर फ़ौज ने बारह जवानों को चुनकर
मुक़ाबले के लिए पेश किया। इशबोसत और
बिनयमीन के क़बीले के बारह जवान दाऊद के
बारह जवानों के मुक़ाबले में खड़े हो गए। 16जब
मुक़ाबला शुरू हुआ तो हर एक ने एक हाथ से
अपने मुख़ालिफ़ के बालों को पकड़कर दूसरे हाथ
से अपनी तलवार उसके पेट में घोंप दी। सबके
सब एक साथ मर गए। बाद में जिबऊन की इस
जगह का नाम ख़िलक़त-हज़्ज़ूरीम पड़ गया।

17फिर दोनों फ़ौजों के दरमियान निहायत
सख़्त लड़ाई छिड़ गई। लड़ते लड़ते अबिनैर और
उसके मर्द हार गए। 18योआब के दो भाई अबीशै
और असाहेल भी लड़ाई में हिस्सा ले रहे थे।
असाहेल ग़ज़ाल की तरह तेज़ दौड़ सकता था।
19जब अबिनैर शिकस्त खाकर भागने लगा तो
असाहेल सीधा उसके पीछे पड़ गया और न दाईं,
न बाईं तरफ़ हटा। 20अबिनैर ने पीछे देखकर
पूछा, "क्या आप ही हैं, असाहेल?" उसने जवाब
दिया, "जी, मैं ही हूँ।" 21अबिनैर बोला, "दाईं या
बाईं तरफ़ हटकर किसी और को पकड़ें! जवानों
में से किसी से लड़कर उसके हथियार और ज़िरा-
बकतर उतारें।"

लेकिन असाहेल उसका ताक़्क़ुब करने से
बाज़ न आया। 22अबिनैर ने उसे आगाह किया,
"ख़बरदार। मेरे पीछे से हट जाएँ, वरना आपको
मार देने पर मजबूर हो जाऊँगा। फिर आपके
भाई योआब को किस तरह मुँह दिखाऊँगा?"
23तो भी असाहेल ने पीछा न छोड़ा। यह देखकर
अबिनैर ने अपने नेज़े का दस्ता इतने ज़ोर से उसके
पेट में घोंप दिया कि उसका सिरा दूसरी तरफ़
निकल गया। असाहेल वहीं गिरकर जान-बहक़
हो गया। जिसने भी वहाँ से गुज़रकर यह देखा
वह वहीं रुक गया।

24लेकिन योआब और अबीशै अबिनैर का
ताक़्क़ुब करते रहे। जब सूरज ग़ुरूब होने लगा तो
वह एक पहाड़ी के पास पहुँच गए जिसका नाम
अम्मा था। यह जियाह के मुक़ाबिल उस रास्ते के
पास है जो मुसाफ़िर को जिबऊन से रेगिस्तान
में पहुँचाता है। 25बिनयमीन के क़बीले के लोग
वहाँ पहाड़ी पर अबिनैर के पीछे जमा होकर दुबारा
लड़ने के लिए तैयार हो गए। 26अबिनैर ने योआब
को आवाज़ दी, "क्या यह ज़रूरी है कि हम हमेशा
तक एक दूसरे को मौत के घाट उतारते जाएँ?
क्या आपको समझ नहीं आई कि ऐसी हरकतें
सिर्फ़ तलख़ी पैदा करती हैं? आप कब अपने मर्दों
को हुक्म देंगे कि वह अपने इसराईली भाइयों का
ताक़्क़ुब करने से बाज़ आएँ?"

27योआब ने जवाब दिया, "रब की हयात की
क़सम, अगर आप लड़ने का हुक्म न देते तो मेरे
लोग आज सुबह ही अपने भाइयों का ताक़्क़ुब
करने से बाज़ आ जाते।" 28उसने नरसिंगा बजा
दिया, और उसके आदमी रुककर दूसरों का
ताक़्क़ुब करने से बाज़ आए। यों लड़ाई ख़त्म हो
गई।

29उस पूरी रात के दौरान अबिनैर और उसके
आदमी चलते गए। दरियाए-यरदन की वादी में से
गुज़रकर उन्होंने दरिया को पार किया और फिर
गहरी घाटी में से होकर महनायम पहुँच गए।

30योआब भी अबिनैर और उसके लोगों को
छोड़कर वापस चला गया। जब उसने अपने

आदमियों को जमा करके गिना तो मालूम हुआ
कि असाहेल के अलावा दाऊद के 19 आदमी
मारे गए हैं। 31इसके मुक़ाबले में अबिनैर के 360
आदमी हलाक हुए थे। सब बिनयमीन के क़बीले
के थे। 32योआब और उसके साथियों ने असाहेल
की लाश उठाकर उसे बैत-लहम में उसके बाप की
क़ब्र में दफ़न किया। फिर उसी रात अपना सफ़र
जारी रखकर वह पौ फटते वक़्त हबरून पहुँच गए।

3 साऊल के बेटे इशबोसत और दाऊद के
दरमियान यह जंग बड़ी देर तक जारी रही।
लेकिन आहिस्ता आहिस्ता दाऊद ज़ोर पकड़ता
गया जबकि इशबोसत की ताक़त कम होती गई।

दाऊद का ख़ानदान हबरून में

2हबरून में दाऊद के बाज़ बेटे पैदा हुए। पहले
का नाम अमनोन था। उस की माँ अख़ीनुअम
यज़्रएली थी। 3फिर किलियाब पैदा हुआ जिसकी
माँ नाबाल की बेवा अबीजेल करमिली थी। तीसरा
बेटा अबीसलूम था। उस की माँ माका थी जो
जसूर के बादशाह तलमी की बेटी थी। 4चौथे
का नाम अदूनियाह था। उस की माँ हज्जीत थी।
पाँचवाँ बेटा सफ़तियाह था। उस की माँ अबीताल
थी। 5छटे का नाम इतरियाम था। उस की माँ
इजला थी। यह छः बेटे हबरून में पैदा हुए।

अबिनैर इशबोसत से झगड़ता है

6जितनी देर तक इशबोसत और दाऊद के
दरमियान जंग रही, उतनी देर तक अबिनैर साऊल
के घराने का वफ़ादार रहा।

7लेकिन एक दिन इशबोसत अबिनैर से नाराज़
हुआ, क्योंकि वह साऊल मरहूम की एक दाश्ता
से हमबिसतर हो गया था। औरत का नाम रिसफ़ा
बिंत ऐयाह था। इशबोसत ने शिकायत की,
"आपने मेरे बाप की दाश्ता से ऐसा सुलूक क्यों
किया?" 8अबिनैर बड़े ग़ुस्से में आकर गरजा,
"क्या मैं यहूदाह का कुत्ता[a] हूँ कि आप मुझे ऐसा
रवैया दिखाते हैं? आज तक मैं आपके बाप के
घराने और उसके रिश्तेदारों और दोस्तों के लिए
लड़ता रहा हूँ। मेरी ही वजह से आप अब तक
दाऊद के हाथ से बचे रहे हैं। क्या यह इसका
मुआवज़ा है? क्या एक ऐसी औरत के सबब से
आप मुझे मुजरिम ठहरा रहे हैं? 9-10अल्लाह
मुझे सख़्त सज़ा दे अगर अब से हर मुमकिन
कोशिश न करूँ कि दाऊद पूरे इसराईल और
यहूदाह पर बादशाह बन जाए, शिमाल में दान
से लेकर जुनूब में बैर-सबा तक। आख़िर रब ने
ख़ुद क़सम खाकर दाऊद से वादा किया है कि मैं
बादशाही साऊल के घराने से छीनकर तुझे दूँगा।"
11यह सुनकर इशबोसत अबिनैर से इतना डर
गया कि मज़ीद कुछ कहने की जुर्रत जाती रही।

अबिनैर के दाऊद से मुज़ाकरात

12अबिनैर ने दाऊद को पैग़ाम भेजा, "मुल्क
किसका है? मेरे साथ मुआहदा कर लें तो मैं पूरे
इसराईल को आपके साथ मिला दूँगा।"

13दाऊद ने जवाब दिया, "ठीक है, मैं आपके
साथ मुआहदा करता हूँ। लेकिन एक ही शर्त पर,
आप साऊल की बेटी मीकल को जो मेरी बीवी है
मेरे घर पहुँचाएँ, वरना मैं आपसे नहीं मिलूँगा।"
14दाऊद ने इशबोसत के पास भी क़ासिद
भेजकर तक़ाज़ा किया, "मुझे मेरी बीवी मीकल
जिससे शादी करने के लिए मैंने सौ फ़िलिस्तियों
को मारा वापस कर दें।" 15इशबोसत मान गया।
उसने हुक्म दिया कि मीकल को उसके मौजूदा
शौहर फ़लतियेल बिन लैस से लेकर दाऊद को
भेजा जाए। 16लेकिन फ़लतियेल उसे छोड़ना
नहीं चाहता था। वह रोते रोते बहूरीम तक अपनी
बीवी के पीछे चलता रहा। तब अबिनैर ने उससे
कहा, "अब जाओ! वापस चले जाओ!" तब वह
वापस चला।

17अबिनैर ने इसराईल के बुज़ुर्गों से भी बात
की, "आप तो काफ़ी देर से चाहते हैं कि दाऊद
आपका बादशाह बन जाए। 18अब क़दम उठाने
का वक़्त आ गया है! क्योंकि रब ने दाऊद

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : कुत्ते का सर

से वादा किया है, 'अपने ख़ादिम दाऊद से मैं अपनी क़ौम इसराईल को फ़िलिस्तियों और बाक़ी तमामदुश्मनों के हाथ से बचाऊँगा'।"
19यही बात अबिनैर ने बिनयमीन के बुज़ुर्गों के पास जाकर भी की। इसके बाद वह हबरून में दाऊद के पास आया ताकि उसके सामने इसराईल और बिनयमीन के बुज़ुर्गों का फ़ैसला पेश करे।

20बीस आदमी अबिनैर के साथ हबरून पहुँच गए। उनका इस्तक़बाल करके दाऊद ने ज़ियाफ़त की।
21फिर अबिनैर ने दाऊद से कहा, "अब मुझे इजाज़त दें। मैं अपने आक़ा और बादशाह के लिए तमाम इसराईल को जमा कर लूँगा ताकि वह आपके साथ अहद बाँधकर आपको अपना बादशाह बना लें। फिर आप उस पूरे मुल्क पर हुकूमत करेंगे जिस तरह आपका दिल चाहता है।" फिर दाऊद ने अबिनैर को सलामती से रुख़सत कर दिया।

अबिनैर को क़त्ल किया जाता है

22थोड़ी देर के बाद योआब दाऊद के आदमियों के साथ किसी लड़ाई से वापस आया। उनके पास बहुत-सा लूटा हुआ माल था। लेकिन अबिनैर हबरून में दाऊद के पास नहीं था, क्योंकि दाऊद ने उसे सलामती से रुख़सत कर दिया था।
23जब योआब अपने आदमियों के साथ शहर में दाख़िल हुआ तो उसे इत्तला दी गई, "अबिनैर बिन नैर बादशाह के पास था, और बादशाह ने उसे सलामती से रुख़सत कर दिया है।"
24योआब फ़ौरन बादशाह के पास गया और बोला, "आपने यह क्या किया है? जब अबिनैर आपके पास आया तो आपने उसे क्यों सलामती से रुख़सत किया? अब उसे पकड़ने का मौक़ा जाता रहा है।
25आप तो उसे जानते हैं। हक़ीक़त में वह इसलिए आया कि आपको मनवाकर आपके आने जाने और बाक़ी कामों के बारे में मालूमात हासिल करे।"

26योआब ने दरबार से निकलकर क़ासिदों को अबिनैर के पीछे भेज दिया। वह अभी सफ़र करते करते सीरा के हौज़ पर से गुज़र रहा था कि क़ासिद उसके पास पहुँच गए। उनकी दावत पर वह उनके साथ वापस गया। लेकिन बादशाह को इसका इल्म न था।
27जब अबिनैर दुबारा हबरून में दाख़िल होने लगा तो योआब शहर के दरवाज़े में उसका इस्तक़बाल करके उसे एक तरफ़ ले गया जैसे वह उसके साथ कोई ख़ुफ़िया बात करना चाहता हो। लेकिन अचानक उसने अपनी तलवार को मियान से खींचकर अबिनैर के पेट में घोंप दिया। इस तरह योआब ने अपने भाई असाहेल का बदला लेकर अबिनैर को मार डाला।

28जब दाऊद को इसकी इत्तला मिली तो उसने एलान किया, "मैं रब के सामने क़सम खाता हूँ कि बेक़ुसूर हूँ। मेरा अबिनैर की मौत में हाथ नहीं था। इस नाते से मुझ पर और मेरी बादशाही पर कभी भी इलज़ाम न लगाया जाए,
29क्योंकि योआब और उसके बाप का घराना क़ुसूरवार हैं। रब उसे और उसके बाप के घराने को मुनासिब सज़ा दे। अब से अबद तक उस की हर नसल में कोई न कोई हो जिसे ऐसे ज़ख़्म लग जाएँ जो भर न पाएँ, किसी को कोढ़ लग जाए, किसी को बैसाखियों की मदद से चलना पड़े, कोई ग़ैरतबई मौत मर जाए, या किसी को ख़ुराक की मुसलसल कमी रहे।"
30यों योआब और उसके भाई अबीशै ने अपने भाई असाहेल का बदला लिया। उन्होंने अबिनैर को इसलिए क़त्ल किया कि उसने असाहेल को जिबऊन के क़रीब लड़ते वक़्त मौत के घाट उतार दिया था।

दाऊद अबिनैर का मातम करता है

31-32दाऊद ने योआब और उसके साथियों को हुक्म दिया, "अपने कपड़े फाड़ दो और टाट ओढ़कर अबिनैर का मातम करो!" जनाज़े का बंदोबस्त हबरून में किया गया। दाऊद ख़ुद जनाज़े के ऐन पीछे चला। क़ब्र पर बादशाह ऊँची आवाज़ से रो पड़ा, और बाक़ी सब लोग भी रोने लगे।
33फिर दाऊद ने अबिनैर के बारे में मातमी गीत गाया,

34“हाय, अबिनैर क्यों बेदीन की तरह मारा
गया? तेरे हाथ बँधे हुए न थे, तेरे पाँव ज़ंजीरों में
जकड़े हुए न थे। जिस तरह कोई शरीरों के हाथ
में आकर मर जाता है उसी तरह तू हलाक हुआ।”

तब तमाम लोग मज़ीद रोए। 35दाऊद ने जनाज़े
के दिन रोज़ा रखा। सबने मिन्नत की कि वह
कुछ खाए, लेकिन उसने क़सम खाकर कहा,
“अल्लाह मुझे सख़्त सज़ा दे अगर मैं सूरज के
ग़ुरूब होने से पहले रोटी का एक टुकड़ा भी खा
लूँ।” 36बादशाह का यह रवैया लोगों को बहुत
पसंद आया। वैसे भी दाऊद का हर अमल लोगों
को पसंद आता था। 37यों तमाम हाज़िरीन बल्कि
तमाम इसराईलियों ने जान लिया कि बादशाह का
अबिनैर को क़त्ल करने में हाथ न था। 38दाऊद
ने अपने दरबारियों से कहा, “क्या आपको समझ
नहीं आई कि आज इसराईल का बड़ा सूरमा फ़ौत
हुआ है? 39मुझे अभी अभी मसह करके बादशाह
बनाया गया है, इसलिए मेरी इतनी ताक़त नहीं
कि ज़रूयाह के इन दो बेटों योआब और अबीशै
को कंट्रोल करूँ। रब उन्हें उनकी इस शरीर हरकत
की मुनासिब सज़ा दे!”

इशबोसत को क़त्ल किया जाता है

4 जब साऊल के बेटे इशबोसत को इत्तला
मिली कि अबिनैर को हबरून में क़त्ल
किया गया है तो वह हिम्मत हार गया, और तमाम
इसराईल सख़्त घबरा गया। 2इशबोसत के दो
आदमी थे जिनके नाम बाना और रैकाब थे। जब
कभी इशबोसत के फ़ौजी छापा मारने के लिए
निकलते तो यह दो भाई उन पर मुक़र्रर थे। उनका
बाप रिम्मोन बिनयमीन के क़बायली इलाक़े के
शहर बैरोत का रहनेवाला था। बैरोत भी बिनयमीन
में शुमार किया जाता है, 3अगरचे उसके बाशिंदों
को हिजरत करके जित्तैम में बसना पड़ा जहाँ वह
आज तक परदेसी की हैसियत से रहते हैं।

4यूनतन का एक बेटा ज़िंदा रह गया था
जिसका नाम मिफ़ीबोसत था। पाँच साल की उम्र
में यज्रएल से ख़बर आई थी कि साऊल और
यूनतन मारे गए हैं। तब उस की आया उसे लेकर
कहीं पनाह लेने के लिए भाग गई थी। लेकिन
जल्दी की वजह से मिफ़ीबोसत गिरकर लँगड़ा हो
गया था। उस वक़्त से उस की दोनों टाँगें मफ़लूज
थीं।

5एक दिन रिम्मोन बैरोती के बेटे रैकाब और
बाना दोपहर के वक़्त इशबोसत के घर गए। गरमी
उरूज पर थी, इसलिए इशबोसत आराम कर रहा
था। 6-7दोनों आदमी यह बहाना पेश करके घर के
अंदरूनी कमरे में गए कि हम कुछ अनाज ले जाने
के लिए आए हैं। जब इशबोसत के कमरे में पहुँचे
तो वह चारपाई पर लेटा सो रहा था। यह देखकर
उन्होंने उसके पेट में तलवार घोंप दी और फिर
उसका सर काटकर वहाँ से सलामती से निकल
आए।

पूरी रात सफ़र करते करते वह दरियाए-यरदन
की वादी में से गुज़रकर 8हबरून पहुँच गए। वहाँ
उन्होंने दाऊद को इशबोसत का सर दिखाकर
कहा, “यह देखें, साऊल के बेटे इशबोसत का
सर। आपका दुश्मन साऊल बार बार आपको मार
देने की कोशिश करता रहा, लेकिन आज रब ने
उससे और उस की औलाद से आपका बदला
लिया है।”

दाऊद क़ातिलों को सज़ा देता है

9लेकिन दाऊद ने जवाब दिया, “रब की हयात
की क़सम जिसने फ़िद्या देकर मुझे हर मुसीबत
से बचाया है, 10जिस आदमी ने मुझे उस वक़्त
सिक़लाज में साऊल की मौत की इत्तला दी वह
भी समझता था कि मैं दाऊद को अच्छी ख़बर
पहुँचा रहा हूँ। लेकिन मैंने उसे पकड़कर सज़ाए-
मौत दे दी। यही था वह अज्र जो उसे ऐसी ख़बर
पहुँचाने के एवज़ मिला! 11अब तुम शरीर लोगों
ने इससे बढ़कर किया। तुमने बेक़ुसूर आदमी को
उसके अपने घर में उस की अपनी चारपाई पर
क़त्ल कर दिया है। तो क्या मेरा फ़र्ज़ नहीं कि
तुमको इस क़त्ल की सज़ा देकर तुम्हें मुल्क में से
मिटा दूँ?”

12दाऊद ने दोनों को मार देने का हुक्म दिया। उसके मुलाज़िमों ने उन्हें मारकर उनके हाथों और पैरों को काट डाला और उनकी लाशों को हबरून के तालाब के क़रीब कहीं लटका दिया। इशबोसत के सर को उन्होंने अबिनैर की क़ब्र में दफ़नाया।

दाऊद पूरे इसराईल का बादशाह बन जाता है

5 उस वक़्त इसराईल के तमाम क़बीले हबरून में दाऊद के पास आए और कहा, “हम आप ही की क़ौम और आप ही के रिश्तेदार हैं। 2माज़ी में भी जब साऊल बादशाह था तो आप ही फ़ौजी मुहिमों में इसराईल की क़ियादत करते रहे। और रब ने आपसे वादा भी किया है कि तू मेरी क़ौम इसराईल का चरवाहा बनकर उस पर हुकूमत करेगा।” 3जब इसराईल के तमाम बुज़ुर्ग हबरून पहुँचे तो दाऊद बादशाह ने रब के हुज़ूर उनके साथ अहद बाँधा, और उन्होंने उसे मसह करके इसराईल का बादशाह बना दिया।

4दाऊद 30 साल की उम्र में बादशाह बन गया। उस की हुकूमत 40 साल तक जारी रही। 5पहले साढ़े सात साल वह सिर्फ़ यहूदाह का बादशाह था और उसका दारुल-हुकूमत हबरून रहा। बाक़ी 33 साल वह यरूशलम में रहकर यहूदाह और इसराईल दोनों पर हुकूमत करता रहा।

दाऊद यरूशलम पर क़ब्ज़ा करता है

6बादशाह बनने के बाद दाऊद अपने फ़ौजियों के साथ यरूशलम गया ताकि उस पर हमला करे। वहाँ अब तक यबूसी आबाद थे। दाऊद को देखकर यबूसियों ने उसका मज़ाक़ उड़ाया, “आप हमारे शहर में कभी दाख़िल नहीं हो पाएँगे! आपको रोकने के लिए हमारे लँगड़े और अंधे काफ़ी हैं।” उन्हें पूरा यक़ीन था कि दाऊद शहर में किसी भी तरीक़े से नहीं आ सकेगा।

7तो भी दाऊद ने सिय्यून के क़िले पर क़ब्ज़ा कर लिया जो आजकल ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है। 8जिस दिन उन्होंने शहर पर हमला किया उसने एलान किया, “जो भी यबूसियों पर फ़तह पाना चाहे उसे पानी की सुरंग में से गुज़रकर शहर में घुसना पड़ेगा ताकि उन लँगड़ों और अंधों को मारे जिनसे मेरी जान नफ़रत करती है।” इसलिए आज तक कहा जाता है, “लँगड़ों और अंधों को घर में जाने की इजाज़त नहीं।”

9यरूशलम पर फ़तह पाने के बाद दाऊद क़िले में रहने लगा। उसने उसे ‘दाऊद का शहर’ क़रार दिया और उसके इर्दगिर्द शहर को बढ़ाने लगा। यह तामीरी काम इर्दगिर्द के चबूतरों से शुरू हुआ और होते होते क़िले तक पहुँच गया।

10यों दाऊद ज़ोर पकड़ता गया, क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज उसके साथ था।

दाऊद की तरक़्क़ी

11एक दिन सूर के बादशाह हीराम ने दाऊद के पास वफ़द भेजा। बढ़ई और राज भी साथ थे। उनके पास देवदार की लकड़ी थी, और उन्होंने दाऊद के लिए महल बना दिया। 12यों दाऊद ने जान लिया कि रब ने मुझे इसराईल का बादशाह बनाकर मेरी बादशाही अपनी क़ौम इसराईल की ख़ातिर सरफ़राज़ कर दी है।

13हबरून से यरूशलम में मुंतक़िल होने के बाद दाऊद ने मज़ीद बीवियों और दाश्ताओं से शादी की। नतीजे में यरूशलम में उसके कई बेटे-बेटियाँ पैदा हुए। 14जो बेटे वहाँ पैदा हुए वह यह थे : सम्मुअ, सोबाब, नातन, सुलेमान, 15इबहार, इलीसुअ, नफ़ज, यफ़ीअ, 16इलीसमा, इलियदा और इलीफ़लत।

फ़िलिस्तियों पर फ़तह

17जब फ़िलिस्तियों को इत्तला मिली कि दाऊद को मसह करके इसराईल का बादशाह बनाया गया है तो उन्होंने अपने फ़ौजियों को इसराईल में भेज दिया ताकि उसे पकड़ लें। लेकिन दाऊद को पता चल गया, और उसने एक पहाड़ी क़िले में पनाह ले ली।

18जब फ़िलिस्ती इसराईल में पहुँचकर वादीए-
रफ़ाईम में फैल गए 19तो दाऊद ने रब से
दरियाफ़्त किया, “क्या मैं फ़िलिस्तियों पर हमला
करूँ? क्या तू मुझे उन पर फ़तह बख़्शेगा?” रब
ने जवाब दिया, “हाँ, उन पर हमला कर! मैं उन्हें
ज़रूर तेरे क़ब्ज़े में कर दूँगा।” 20चुनाँचे दाऊद
अपने फ़ौजियों को लेकर बाल-पराज़ीम गया।
वहाँ उसने फ़िलिस्तियों को शिकस्त दी। बाद में
उसने गवाही दी, “जितने ज़ोर से बंद के टूट जाने
पर पानी उससे फूट निकलता है उतने ज़ोर से
आज रब मेरे देखते देखते दुश्मन की सफ़ों में से
फूट निकला है।” चुनाँचे उस जगह का नाम बाल-
पराज़ीम यानी ‘फूट निकलने का मालिक’ पड़
गया। 21फ़िलिस्ती अपने बुत छोड़कर भाग गए,
और वह दाऊद और उसके आदमियों के क़ब्ज़े में
आ गए।

22एक बार फिर फ़िलिस्ती आकर वादीए-
रफ़ाईम में फैल गए। 23जब दाऊद ने रब से
दरियाफ़्त किया तो उसने जवाब दिया, “इस
मरतबा उनका सामना मत करना बल्कि उनके
पीछे जाकर बका के दरख़्तों के सामने उन पर
हमला कर। 24जब उन दरख़्तों की चोटियों से
क़दमों की चाप सुनाई दे तो ख़बरदार! यह इसका
इशारा होगा कि रब ख़ुद तेरे आगे आगे चलकर
फ़िलिस्तियों को मारने के लिए निकल आया है।”
25दाऊद ने ऐसा ही किया और नतीजे में
फ़िलिस्तियों को शिकस्त देकर जिबऊन से लेकर
जज़र तक उनका ताक़्क़ुब किया।

दाऊद अहद का संदूक़ यरूशलम में ले आता है

6 एक बार फिर दाऊद ने इसराईल के चुनीदा
आदमियों को जमा किया। 30,000
अफ़राद थे। 2उनके साथ मिलकर वह यहूदाह के
बाला पहुँच गया ताकि अल्लाह का संदूक़ उठाकर
यरूशलम ले जाएँ, वही संदूक़ जिस पर रब्बुल-
अफ़वाज के नाम का ठप्पा लगा है और जहाँ
वह संदूक़ के ऊपर करूबी फ़रिश्तों के दरमियान
तख़्तनशीन है। 3-4लोगों ने अल्लाह के संदूक़ को
पहाड़ी पर वाक़े अबीनदाब के घर से निकालकर
एक नई बैलगाड़ी पर रख दिया, और अबीनदाब
के दो बेटे उज़्ज़ा और अख़ियो उसे यरूशलम की
तरफ़ ले जाने लगे। अख़ियो गाड़ी के आगे आगे
5और दाऊद बाक़ी तमाम लोगों के साथ पीछे
चल रहा था। सब रब के हुज़ूर पूरे ज़ोर से ख़ुशी
मनाने और गीत गाने लगे। मुख़्तलिफ़ साज़ भी
बजाए जा रहे थे। फ़िज़ा सितारों, सरोदों, दफ़ों,
ख़ंजरियों[a] और झाँझों की आवाज़ों से गूँज उठी।

6वह गंदुम गाहने की एक जगह पर पहुँच
गए जिसके मालिक का नाम नकोन था। वहाँ
बैल अचानक बेकाबू हो गए। उज़्ज़ा ने जल्दी से
अल्लाह का संदूक़ पकड़ लिया ताकि वह गिर न
जाए। 7उसी लमहे रब का ग़ज़ब उस पर नाज़िल
हुआ, क्योंकि उसने अल्लाह के संदूक़ को छूने की
जुर्रत की थी। वहीं अल्लाह के संदूक़ के पास ही
उज़्ज़ा गिरकर हलाक हो गया। 8दाऊद को बड़ा
रंज हुआ कि रब का ग़ज़ब उज़्ज़ा पर यों टूट पड़ा
है। उस वक़्त से उस जगह का नाम परज़-उज़्ज़ा
यानी ‘उज़्ज़ा पर टूट पड़ना’ है।

9उस दिन दाऊद को रब से ख़ौफ़ आया। उसने
सोचा, “रब का संदूक़ किस तरह मेरे पास पहुँच
सकेगा?” 10चुनाँचे उसने फ़ैसला किया कि हम
रब का संदूक़ यरूशलम नहीं ले जाएंगे बल्कि
उसे ओबेद-अदोम जाती के घर में महफ़ूज़ रखेंगे।
11वहाँ वह तीन माह तक पड़ा रहा।

इन तीन महीनों के दौरान रब ने ओबेद-अदोम
और उसके पूरे घराने को बरकत दी। 12एक दिन
दाऊद को इत्तला दी गई, “जब से अल्लाह का
संदूक़ ओबेद-अदोम के घर में है उस वक़्त से रब
ने उसके घराने और उस की पूरी मिलकियत को
बरकत दी है।” यह सुनकर दाऊद ओबेद-अदोम
के घर गया और ख़ुशी मनाते हुए अल्लाह के
संदूक़ को दाऊद के शहर ले आया। 13छः क़दमों

[a]इबरानी में इससे मुराद झुनझुने जैसा कोई साज़ है।

के बाद दाऊद ने रब का संदूक़ उठानेवालों को
रोककर एक साँड और एक मोटा-ताज़ा बछड़ा
क़ुरबान किया। 14जब जुलूस आगे निकला तो
दाऊद पूरे ज़ोर के साथ रब के हुज़ूर नाचने
लगा। वह कतान का बालापोश पहने हुए था।
15ख़ुशी के नारे लगा लगाकर और नरसिंगे फूँक
फूँककर दाऊद और तमाम इसराईली रब का
संदूक़ यरूशलम ले आए।

16रब का संदूक़ दाऊद के शहर में दाख़िल हुआ
तो दाऊद की बीवी मीकल बिंत साऊल खिड़की
में से जुलूस को देख रही थी। जब बादशाह रब
के हुज़ूर कूदता और नाचता हुआ नज़र आया तो
मीकल ने दिल में उसे हक़ीर जाना।

17रब का संदूक़ उस तंबू के दरमियान में रखा
गया जो दाऊद ने उसके लिए लगवाया था।
फिर दाऊद ने रब के हुज़ूर भस्म होनेवाली और
सलामती की क़ुरबानियाँ पेश कीं। 18इसके बाद
उसने क़ौम को रब्बुल-अफ़वाज के नाम से बरकत
देकर 19हर इसराईली मर्द और औरत को एक
रोटी, खजूर की एक टिक्की और किशमिश की
एक टिक्की दे दी। फिर तमाम लोग अपने अपने
घरों को वापस चले गए।

20दाऊद भी अपने घर लौटा ताकि अपने
ख़ानदान को बरकत देकर सलाम करे। वह
अभी महल के अंदर नहीं पहुँचा था कि मीकल
निकलकर उससे मिलने आई। उसने तंज़न कहा,
"वाह जी वाह। आज इसराईल का बादशाह
कितनी शान के साथ लोगों को नज़र आया है!
अपने लोगों की लौंडियों के सामने ही उसने अपने
कपड़े उतार दिए, बिलकुल उसी तरह जिस तरह
गँवार करते हैं।" 21दाऊद ने जवाब दिया, "मैं रब
ही के हुज़ूर नाच रहा था, जिसने आपके बाप और
उसके ख़ानदान को तर्क करके मुझे चुन लिया
और इसराईल का बादशाह बना दिया है। उसी
की ताज़ीम में मैं आइंदा भी नाचूँगा। 22हाँ, मैं
इससे भी ज़्यादा ज़लील होने के लिए तैयार हूँ।
जहाँ तक लौंडियों का ताल्लुक़ है, वह ज़रूर मेरी
इज़्ज़त करेंगी।"

23जीते-जी मीकल बेऔलाद रही।

रब दाऊद से अबदी बादशाही का वादा करता है

7 दाऊद बादशाह सुकून से अपने महल में
रहने लगा, क्योंकि रब ने इर्दगिर्द के दुश्मनों
को उस पर हमला करने से रोक दिया था। 2एक
दिन दाऊद ने नातन नबी से बात की, "देखें, मैं
यहाँ देवदार के महल में रहता हूँ जबकि अल्लाह
का संदूक़ अब तक तंबू में पड़ा है। यह मुनासिब
नहीं है!"

3नातन ने बादशाह की हौसलाअफ़्ज़ाई की,
"जो कुछ भी आप करना चाहते हैं वह करें। रब
आपके साथ है।"

4लेकिन उसी रात रब नातन से हमकलाम
हुआ, 5"मेरे ख़ादिम दाऊद के पास जाकर उसे
बता दे कि रब फ़रमाता है, 'क्या तू मेरी रिहाइश
के लिए मकान तामीर करेगा? हरगिज़ नहीं!
6आज तक मैं किसी मकान में नहीं रहा। जब से
मैं इसराईलियों को मिसर से निकाल लाया उस
वक़्त से मैं ख़ैमे में रहकर जगह बजगह फिरता
रहा हूँ। 7जिस दौरान मैं तमाम इसराईलियों के
साथ इधर-उधर फिरता रहा क्या मैंने इसराईल
के उन राहनुमाओं से कभी इस नाते से शिकायत
की जिन्हें मैंने अपनी क़ौम की गल्लाबानी करने
का हुक्म दिया था? क्या मैंने उनमें से किसी से
कहा कि तुमने मेरे लिए देवदार का घर क्यों नहीं
बनाया?'

8चुनाँचे मेरे ख़ादिम दाऊद को बता दे, 'रब्बुल-
अफ़वाज फ़रमाता है कि मैं ही ने तुझे चरागाह में
भेड़ों की गल्लाबानी करने से फ़ारिग़ करके अपनी
क़ौम इसराईल का बादशाह बना दिया है। 9जहाँ
भी तूने क़दम रखा वहाँ मैं तेरे साथ रहा हूँ। तेरे
देखते देखते मैंने तेरे तमाम दुश्मनों को हलाक कर
दिया है। अब मैं तेरा नाम सरफ़राज़ कर दूँगा, वह
दुनिया के सबसे अज़ीम आदमियों के नामों के
बराबर ही होगा। 10और मैं अपनी क़ौम इसराईल
के लिए एक वतन मुहैया करूँगा, पौदे की तरह

उन्हें यों लगा दूँगा कि वह जड़ पकड़कर महफ़ूज़
रहेंगे और कभी बेचैन नहीं होंगे। बेदीन क़ौमें उन्हें
उस तरह नहीं दबाएँगी जिस तरह माज़ी में किया
करती थीं, 11उस वक़्त से जब मैं क़ौम पर क़ाज़ी
मुक़र्रर करता था। मैं तेरे दुश्मनों को तुझसे दूर
रखकर तुझे अमनो-अमान अता करूँगा। आज रब
फ़रमाता है कि मैं ही तेरे लिए घर बनाऊँगा।

12जब तू बूढ़ा होकर कूच कर जाएगा और
अपने बापदादा के साथ आराम करेगा तो मैं तेरी
जगह तेरे बेटों में से एक को तख़्त पर बिठा दूँगा।
उस की बादशाही को मैं मज़बूत बना दूँगा। 13वही
मेरे नाम के लिए घर तामीर करेगा, और मैं उस
की बादशाही का तख़्त अबद तक क़ायम रखूँगा।
14मैं उसका बाप हूँगा, और वह मेरा बेटा होगा।
जब कभी उससे ग़लती होगी तो मैं उसे यों छड़ी
से सज़ा दूँगा जिस तरह इनसानी बाप अपने बेटे
की तरबियत करता है। 15लेकिन मेरी नज़रे-करम
कभी उससे नहीं हटेगी। उसके साथ मैं वह सुलूक
नहीं करूँगा जो मैंने साऊल के साथ किया जब
उसे तेरे सामने से हटा दिया। 16तेरा घराना और
तेरी बादशाही हमेशा मेरे हुज़ूर क़ायम रहेगी, तेरा
तख़्त हमेशा मज़बूत रहेगा'।"

दाऊद की शुक्रगुज़ारी

17नातन ने दाऊद के पास जाकर उसे सब कुछ
सुनाया जो रब ने उसे रोया में बताया था। 18तब
दाऊद अहद के संदूक़ के पास गया और रब के
हुज़ूर बैठकर दुआ करने लगा,

"ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, मैं कौन हूँ और मेरा
ख़ानदान क्या हैसियत रखता है कि तूने मुझे यहाँ
तक पहुँचाया है? 19और अब ऐ रब क़ादिरे-
मुतलक़, तू मुझे और भी ज़्यादा अता करने
को है, क्योंकि तूने अपने ख़ादिम के घराने के
मुस्तक़बिल के बारे में भी वादा किया है। क्या तू
आम तौर पर इनसान के साथ ऐसा सुलूक करता
है? हरगिज़ नहीं! 20लेकिन मैं मज़ीद क्या कहूँ?
ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, तू तो अपने ख़ादिम को
जानता है। 21तूने अपने फ़रमान की ख़ातिर और
अपनी मरज़ी के मुताबिक़ यह अज़ीम काम करके
अपने ख़ादिम को इत्तला दी है।

22ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, तू कितना अज़ीम है!
तुझ जैसा कोई नहीं है। हमने अपने कानों से सुन
लिया है कि तेरे सिवा कोई और ख़ुदा नहीं है।
23दुनिया में कौन-सी क़ौम तेरी उम्मत इसराईल
की मानिंद है? तूने इसी एक क़ौम का फ़िद्या
देकर उसे ग़ुलामी से छुड़ाया और अपनी क़ौम बना
लिया। तूने इसराईल के वास्ते बड़े और हैबतनाक
काम करके अपने नाम की शोहरत फैला दी।
हमें मिसर से रिहा करके तूने क़ौमों और उनके
देवताओं को हमारे आगे से निकाल दिया। 24ऐ
रब, तू इसराईल को हमेशा के लिए अपनी क़ौम
बनाकर उनका ख़ुदा बन गया है। 25चुनाँचे ऐ रब
क़ादिरे-मुतलक़, जो बात तूने अपने ख़ादिम और
उसके घराने के बारे में की है उसे अबद तक क़ायम
रख और अपना वादा पूरा कर। 26तब तेरा नाम
अबद तक मशहूर रहेगा और लोग तसलीम करेंगे
कि रब्बुल-अफ़वाज इसराईल का ख़ुदा है। फिर
तेरे ख़ादिम दाऊद का घराना भी तेरे हुज़ूर क़ायम
रहेगा।

27ऐ रब्बुल-अफ़वाज, इसराईल के ख़ुदा, तूने
अपने ख़ादिम के कान को इस बात के लिए खोल
दिया है। तू ही ने फ़रमाया, 'मैं तेरे लिए घर तामीर
करूँगा।' सिर्फ़ इसी लिए तेरे ख़ादिम ने यों तुझसे
दुआ करने की जुर्रत की है। 28ऐ रब क़ादिरे-
मुतलक़, तू ही ख़ुदा है, और तेरी ही बातों पर
एतमाद किया जा सकता है। तूने अपने ख़ादिम
से इन अच्छी चीज़ों का वादा किया है। 29अब
अपने ख़ादिम के घराने को बरकत देने पर राज़ी
हो ताकि वह हमेशा तक तेरे हुज़ूर क़ायम रहे।
क्योंकि तू ही ने यह फ़रमाया है, और चूँकि तू ऐ
रब क़ादिरे-मुतलक़ ने बरकत दी है इसलिए तेरे
ख़ादिम का घराना अबद तक मुबारक रहेगा।"

दाऊद की जंगें

8 फिर ऐसा वक़्त आया कि दाऊद ने
फ़िलिस्तियों को शिकस्त देकर उन्हें अपने

ताबे कर लिया और हुकूमत की बागडोर उनके
हाथों से छीन ली।
2उसने मोआबियों पर भी फ़तह पाई। मोआबी
क़ैदियों की क़तार बनाकर उसने उन्हें ज़मीन पर
लिटा दिया। फिर रस्सी का टुकड़ा लेकर उसने
क़तार का नाप लिया। जितने लोग रस्सी की
लंबाई में आ गए वह एक गुरोह बन गए। यों दाऊद
ने लोगों को गुरोहों में तक़सीम किया। फिर उसने
गुरोहों के तीन हिस्से बनाकर दो हिस्सों के सर
क़लम किए और एक हिस्से को ज़िंदा छोड़ दिया।
लेकिन जितने क़ैदी छूट गए वह दाऊद के ताबे
रहकर उसे ख़राज देते रहे।
3दाऊद ने शिमाली शाम के शहर ज़ोबाह के
बादशाह हददअज़र बिन रहोब को भी हरा दिया
जब हददअज़र दरियाए-फ़ुरात पर दुबारा क़ाबू
पाने के लिए निकल आया था। 4दाऊद ने 1,700
घुड़सवारों और 20,000 प्यादा सिपाहियों को
गिरिफ़्तार कर लिया। रथों के 100 घोड़ों को
उसने अपने लिए महफ़ूज़ रखा, जबकि बाक़ियों
की उसने कोंचें काट दीं ताकि वह आइंदा जंग के
लिए इस्तेमाल न हो सकें।
5जब दमिश्क़ के अरामी बाशिंदे ज़ोबाह के
बादशाह हददअज़र की मदद करने आए तो दाऊद
ने उनके 22,000 अफ़राद हलाक कर दिए।
6फिर उसने दमिश्क़ के इलाक़े में अपनी फ़ौजी
चौकियाँ क़ायम कीं। अरामी उसके ताबे हो गए
और उसे ख़राज देते रहे। जहाँ भी दाऊद गया
वहाँ रब ने उसे कामयाबी बख़्शी। 7सोने की जो
ढालें हददअज़र के अफ़सरों के पास थीं उन्हें
दाऊद यरूशलम ले गया। 8हददअज़र के दो शहरों
बताह और बेरोती से उसने कसरत का पीतल छीन
लिया।
9जब हमात के बादशाह तूई को इत्तला मिली
कि दाऊद ने हददअज़र की पूरी फ़ौज पर फ़तह
पाई है 10तो उसने अपने बेटे यूराम को दाऊद के
पास भेजा ताकि उसे सलाम कहे। यूराम ने दाऊद
को हददअज़र पर फ़तह के लिए मुबारकबाद
दी, क्योंकि हददअज़र तूई का दुश्मन था, और
उनके दरमियान जंग रही थी। यूराम ने दाऊद को
सोने, चाँदी और पीतल के तोह्फ़े भी पेश किए।
11दाऊद ने यह चीज़ें रब के लिए मख़सूस कर दीं।
जहाँ भी वह दूसरी क़ौमों पर ग़ालिब आया वहाँ
की सोना-चाँदी उसने रब के लिए मख़सूस कर
दी। 12यों अदोम, मोआब, अम्मोन, फ़िलिस्तिया,
अमालीक़ और ज़ोबाह के बादशाह हददअज़र
बिन रहोब की सोना-चाँदी रब को पेश की गई।
13जब दाऊद ने नमक की वादी में अदोमियों
पर फ़तह पाई तो उस की शोहरत मज़ीद फैल गई।
उस जंग में दुश्मन के 18,000 अफ़राद हलाक
हुए। 14दाऊद ने अदोम के पूरे मुल्क में अपनी
फ़ौजी चौकियाँ क़ायम कीं, और तमाम अदोमी
दाऊद के ताबे हो गए। दाऊद जहाँ भी जाता रब
उस की मदद करके उसे फ़तह बख़्शता।

दाऊद के आला अफ़सर

15जितनी देर दाऊद पूरे इसराईल पर हुकूमत
करता रहा उतनी देर तक उसने ध्यान दिया कि
क़ौम के हर एक शख़्स को इनसाफ़ मिल जाए।
16योआब बिन ज़रूयाह फ़ौज पर मुक़र्रर था।
यहूसफ़त बिन अख़ीलूद बादशाह का मुशीरे-ख़ास
था। 17सदोक़ बिन अख़ीतूब और अख़ीमलिक
बिन अबियातर इमाम थे। सिरायाह मीरमुंशी था।
18बिनायाह बिन यहोयदा दाऊद के ख़ास दस्ते
बनाम करेती-ओ-फ़लेती का कप्तान था। दाऊद
के बेटे इमाम थे।

दाऊद यूनतन के बेटे पर मेहरबानी करता है

9 एक दिन दाऊद पूछने लगा, "क्या साऊल
के ख़ानदान का कोई फ़रद बच गया है?
मैं यूनतन की ख़ातिर उस पर अपनी मेहरबानी का
इज़हार करना चाहता हूँ।"
2एक आदमी को बुलाया गया जो साऊल के
घराने का मुलाज़िम था। उसका नाम ज़ीबा था।
दाऊद ने सवाल किया, "क्या आप ज़ीबा हैं?"
ज़ीबा ने जवाब दिया, "जी, आपका ख़ादिम
हाज़िर है।" 3बादशाह ने दरियाफ़्त किया, "क्या

साऊल के ख़ानदान का कोई फ़रद ज़िंदा रह गया
है? मैं उस पर अल्लाह की मेहरबानी का इज़हार
करना चाहता हूँ।” ज़ीबा ने कहा, “यूनतन का
एक बेटा अब तक ज़िंदा है। वह दोनों टाँगों से
मफ़लूज है।” 4दाऊद ने पूछा, “वह कहाँ है?”
ज़ीबा ने जवाब दिया, “वह लो-दिबार में मकीर
बिन अम्मियेल के हाँ रहता है।” 5दाऊद ने उसे
फ़ौरन दरबार में बुला लिया।

6यूनतन के जिस बेटे का ज़िक्र ज़ीबा ने किया
वह मिफ़ीबोसत था। जब उसे दाऊद के सामने
लाया गया तो उसने मुँह के बल झुककर उस
की इज़्ज़त की। दाऊद ने कहा, “मिफ़ीबोसत!”
उसने जवाब दिया, “जी, आपका ख़ादिम हाज़िर
है।” 7दाऊद बोला, “डरें मत। आज मैं आपके
बाप यूनतन के साथ किया हुआ वादा पूरा करके
आप पर अपनी मेहरबानी का इज़हार करना
चाहता हूँ। अब सुनें! मैं आपको आपके दादा
साऊल की तमाम ज़मीनें वापस कर देता हूँ।
इसके अलावा मैं चाहता हूँ कि आप रोज़ाना मेरे
साथ खाना खाया करें।”

8मिफ़ीबोसत ने दुबारा झुककर बादशाह की
ताज़ीम की, “मैं कौन हूँ कि आप मुझ जैसे मुरदा
कुत्ते पर ध्यान देकर ऐसी मेहरबानी फ़रमाएँ!”
9दाऊद ने साऊल के पुराने मुलाज़िम ज़ीबा को
बुलाकर उसे हिदायत दी, “मैंने आपके मालिक के
पोते को साऊल और उसके ख़ानदान की तमाम
मिलकियत दे दी है। 10अब आपकी ज़िम्मेदारी
यह है कि आप अपने बेटों और नौकरों के साथ
उसके खेतों को सँभालें ताकि उसका ख़ानदान
ज़मीनों की पैदावार से गुज़ारा कर सके। लेकिन
मिफ़ीबोसत ख़ुद यहाँ रहकर मेरे बेटों की तरह
मेरे साथ खाना खाया करेगा।” (ज़ीबा के 15
बेटे और 20 नौकर थे)।

11ज़ीबा ने जवाब दिया, “मैं आपकी
ख़िदमत में हाज़िर हूँ। जो भी हुक्म आप
देंगे मैं करने के लिए तैयार हूँ।” 12-13उस
दिन से ज़ीबा के घराने के तमाम अफ़-
राद मिफ़ीबोसत के मुलाज़िम हो गए।
मिफ़ीबोसत ख़ुद जो दोनों टाँगों से मफ़लूज था
यरूशलम में रिहाइशपज़ीर हुआ और रोज़ाना
दाऊद बादशाह के साथ खाना खाता रहा। उसका
एक छोटा बेटा था जिसका नाम मीका था।

अम्मोनी दाऊद की बेइज़्ज़ती करते हैं

10 कुछ देर के बाद अम्मोनियों का
बादशाह फ़ौत हुआ, और उसका बेटा
हनून तख़्तनशीन हुआ। 2दाऊद ने सोचा, “नाहस
ने हमेशा मुझ पर मेहरबानी की थी, इसलिए अब
मैं भी उसके बेटे हनून पर मेहरबानी करूँगा।”
उसने बाप की वफ़ात का अफ़सोस करने के लिए
हनून के पास वफ़द भेजा।

लेकिन जब दाऊद के सफ़ीर अम्मोनियों के
दरबार में पहुँच गए 3तो उस मुल्क के बुज़ुर्ग हनून
बादशाह के कान में मनफ़ी बातें भरने लगे, “क्या
दाऊद ने इन आदमियों को वाक़ई सिर्फ़ इसलिए
भेजा है कि वह अफ़सोस करके आपके बाप का
एहतराम करें? हरगिज़ नहीं! यह सिर्फ़ बहाना है।
असल में यह जासूस हैं जो हमारे दारुल-हुकूमत
के बारे में मालूमात हासिल करना चाहते हैं ताकि
उस पर क़ब्ज़ा कर सकें।” 4चुनाँचे हनून ने दाऊद
के आदमियों को पकड़वाकर उनकी दाढ़ियों का
आधा हिस्सा मुँडवा दिया और उनके लिबास को
कमर से लेकर पाँव तक काटकर उतरवाया। इसी
हालत में बादशाह ने उन्हें फ़ारिग़ कर दिया।

5जब दाऊद को इसकी ख़बर मिली तो उसने
अपने क़ासिदों को उनसे मिलने के लिए भेजा
ताकि उन्हें बताएँ, “यरीहू में उस वक़्त तक ठहरे
रहें जब तक आपकी दाढ़ियाँ दुबारा बहाल न हो
जाएँ।” क्योंकि वह अपनी दाढ़ियों की वजह से
बड़ी शरमिंदगी महसूस कर रहे थे।

अम्मोनियों से जंग

6अम्मोनियों को ख़ूब मालूम था कि इस हरकत
से हम दाऊद के दुश्मन बन गए हैं। इसलिए
उन्होंने किराए पर कई जगहों से फ़ौजी तलब
किए। बैत-रहोब और ज़ोबाह के 20,000 अरामी

प्यादा सिपाही, माका का बादशाह 1,000
फ़ौजियों समेत और मुल्के-तोब के 12,000
सिपाही उनकी मदद करने आए। 7जब दाऊद
को इसका इल्म हुआ तो उसने योआब को पूरी
फ़ौज के साथ उनका मुक़ाबला करने के लिए भेज
दिया। 8अम्मोनी अपने दारुल-हुकूमत रब्बा से
निकलकर शहर के दरवाज़े के सामने ही सफ़आरा
हुए जबकि उनके अरामी इत्तहादी ज़ोबाह और
रहोब मुल्के-तोब और माका के मर्दों समेत कुछ
फ़ासले पर खुले मैदान में खड़े हो गए।

9जब योआब ने जान लिया कि सामने और
पीछे दोनों तरफ़ से हमले का ख़तरा है तो उसने
अपनी फ़ौज को दो हिस्सों में तक़सीम कर दिया।
सबसे अच्छे फ़ौजियों के साथ वह ख़ुद शाम के
सिपाहियों से लड़ने के लिए तैयार हुआ। 10बाक़ी
आदमियों को उसने अपने भाई अबीशै के हवाले
कर दिया ताकि वह अम्मोनियों से लड़ें। 11एक
दूसरे से अलग होने से पहले योआब ने अबीशै से
कहा, “अगर शाम के फ़ौजी मुझ पर ग़ालिब आने
लगें तो मेरे पास आकर मेरी मदद करना। लेकिन
अगर आप अम्मोनियों पर क़ाबू न पा सकें तो मैं
आकर आपकी मदद करूँगा। 12हौसला रखें! हम
दिलेरी से अपनी क़ौम और अपने ख़ुदा के शहरों
के लिए लड़ें। और रब वह कुछ होने दे जो उस की
नज़र में ठीक है।”

13योआब ने अपनी फ़ौज के साथ शाम के
फ़ौजियों पर हमला किया तो वह उसके सामने
से भागने लगे। 14यह देखकर अम्मोनी अबीशै से
फ़रार होकर शहर में दाख़िल हुए। फिर योआब
अम्मोनियों से लड़ने से बाज़ आया और यरूशलम
वापस चला गया।

शाम के ख़िलाफ़ जंग

15जब शाम के फ़ौजियों को शिकस्त की
बेइज़्ज़ती का एहसास हुआ तो वह दुबारा जमा
हो गए। 16हददअज़र ने दरियाए-फ़ुरात के पार
मसोपुतामिया में आबाद अरामियों को बुलाया
ताकि वह उस की मदद करें। फिर सब हिलाम
पहुँच गए। हददअज़र की फ़ौज पर मुक़र्रर
अफ़सर सोबक उनकी राहनुमाई कर रहा था।
17जब दाऊद को ख़बर मिली तो उसने इसराईल
के तमाम लड़ने के क़ाबिल आदमियों को जमा
किया और दरियाए-यरदन को पार करके हिलाम
पहुँच गया। शाम के फ़ौजी सफ़आरा होकर
इसराईलियों का मुक़ाबला करने लगे। 18लेकिन
उन्हें दुबारा शिकस्त मानकर फ़रार होना पड़ा। इस
दफ़ा उनके 700 रथबानों के अलावा 40,000
प्यादा सिपाही हलाक हुए। दाऊद ने फ़ौज के
कमाँडर सोबक को इतना ज़ख़मी कर दिया कि
वह मैदाने-जंग में हलाक हो गया।

19जो अरामी बादशाह पहले हददअज़र के ताबे
थे उन्होंने अब हार मानकर इसराईलियों से सुलह
कर ली और उनके ताबे हो गए। उस वक़्त से
अरामियों ने अम्मोनियों की मदद करने की फिर
जुर्रत न की।

दाऊद और बत-सबा

11 बहार का मौसम आ गया, वह वक़्त
जब बादशाह जंग के लिए निकलते
हैं। दाऊद बादशाह ने भी अपने फ़ौजियों को
लड़ने के लिए भेज दिया। योआब की राहनुमाई
में उसके अफ़सर और पूरी फ़ौज अम्मोनियों से
लड़ने के लिए रवाना हुए। वह दुश्मन को तबाह
करके दारुल-हुकूमत रब्बा का मुहासरा करने
लगे। दाऊद ख़ुद यरूशलम में रहा।

2एक दिन वह दोपहर के वक़्त सो गया। जब
शाम के वक़्त जाग उठा तो महल की छत पर
टहलने लगा। अचानक उस की नज़र एक औरत
पर पड़ी जो अपने सहन में नहा रही थी। औरत
निहायत ख़ूबसूरत थी। 3दाऊद ने किसी को
उसके बारे में मालूमात हासिल करने के लिए भेज
दिया। वापस आकर उसने इत्तला दी, “औरत
का नाम बत-सबा है। वह इलियाम की बेटी और
ऊरियाह हित्ती की बीवी है।” 4तब दाऊद ने
क़ासिदों को बत-सबा के पास भेजा ताकि उसे
महल में ले आएँ। औरत आई तो दाऊद उससे

हमबिसतर हुआ। फिर बत-सबा अपने घर वापस
चली गई। (थोड़ी देर पहले उसने वह रस्म अदा
की थी जिसका तक़ाज़ा शरीअत माहवारी के
बाद करती है ताकि औरत दुबारा पाक-साफ़ हो
जाए)।
5कुछ देर के बाद उसे मालूम हुआ कि मेरा
पाँव भारी हो गया है। उसने दाऊद को इत्तला
दी, "मेरा पाँव भारी हो गया है।" 6यह सुनते ही
दाऊद ने योआब को पैग़ाम भेजा, "ऊरियाह हित्ती
को मेरे पास भेज दें!" योआब ने उसे भेज दिया।
7जब ऊरियाह दरबार में पहुँचा तो दाऊद ने उससे
योआब और फ़ौज का हाल मालूम किया और
पूछा कि जंग किस तरह चल रही है?
8फिर उसने ऊरियाह को बताया, "अब अपने
घर जाएँ और पाँव धोकर आराम करें।" ऊरियाह
अभी महल से दूर नहीं गया था कि एक मुलाज़िम
ने उसके पीछे भागकर उसे बादशाह की तरफ़
से तोह्फ़ा दिया। 9लेकिन ऊरियाह अपने घर न
गया बल्कि रात के लिए बादशाह के मुहाफ़िज़ों
के साथ ठहरा रहा जो महल के दरवाज़े के पास
सोते थे।
10दाऊद को इस बात का पता चला तो उसने
अगले दिन उसे दुबारा बुलाया। उसने पूछा, "क्या
बात है? आप तो बड़ी दूर से आए हैं। आप अपने
घर क्यों न गए?" 11ऊरियाह ने जवाब दिया,
"अहद का संदूक़ और इसराईल और यहूदाह
के फ़ौजी झोंपड़ियों में रह रहे हैं। योआब और
बादशाह के अफ़सर भी खुले मैदान में ठहरे हुए हैं
तो क्या मुनासिब है कि मैं अपने घर जाकर आराम
से खाऊँ पियूँ और अपनी बीवी से हमबिसतर हो
जाऊँ? हरगिज़ नहीं! आपकी हयात की क़सम,
मैं कभी ऐसा नहीं करूँगा।"
12दाऊद ने उसे कहा, "एक और दिन यहाँ
ठहरें। कल मैं आपको वापस जाने दूँगा।" चुनाँचे
ऊरियाह एक और दिन यरूशलम में ठहरा रहा।
13शाम के वक़्त दाऊद ने उसे खाने की दावत
दी। उसने उसे इतनी मै पिलाई कि ऊरियाह नशे
में धुत हो गया, लेकिन इस मरतबा भी वह अपने
घर न गया बल्कि दुबारा महल में मुहाफ़िज़ों के
साथ सो गया।

दाऊद ऊरियाह को क़त्ल करवाता है

14अगले दिन सुबह दाऊद ने योआब को ख़त
लिखकर ऊरियाह के हाथ भेज दिया। 15उसमें
लिखा था, "ऊरियाह को सबसे अगली सफ़ में
खड़ा करें, जहाँ लड़ाई सबसे सख़्त होती है। फिर
अचानक पीछे की तरफ़ हटकर उसे छोड़ दें ताकि
दुश्मन उसे मार दे।"
16यह पढ़कर योआब ने ऊरियाह को एक ऐसी
जगह पर खड़ा किया जिसके बारे में उसे इल्म था
कि दुश्मन के सबसे ज़बरदस्त फ़ौजी वहाँ लड़ते
हैं। 17जब अम्मोनियों ने शहर से निकलकर उन
पर हमला किया तो कुछ इसराईली शहीद हुए।
ऊरियाह हित्ती भी उनमें शामिल था।
18योआब ने लड़ाई की पूरी रिपोर्ट भेज दी।
19दाऊद को यह पैग़ाम पहुँचानेवाले को उसने
बताया, "जब आप बादशाह को तफ़सील से
लड़ाई का सारा सिलसिला सुनाएँगे 20तो हो
सकता है वह ग़ुस्से होकर कहे, 'आप शहर के
इतने क़रीब क्यों गए? क्या आपको मालूम न
था कि दुश्मन फ़सील से तीर चलाएँगे? 21क्या
आपको याद नहीं कि क़दीम ज़माने में जिदाऊन
के बेटे अबीमलिक के साथ क्या हुआ? तैबिज़
शहर में एक औरत ही ने उसे मार डाला। और
वजह यह थी कि वह क़िले के इतने क़रीब आ
गया था कि औरत दीवार पर से चक्की का ऊपर
का पाट उस पर फेंक सकी। शहर की फ़सील
के इस क़दर क़रीब लड़ने की क्या ज़रूरत थी?'
अगर बादशाह आप पर ऐसे इलज़ामात लगाएँ तो
जवाब में बस इतना ही कह देना, 'ऊरियाह हित्ती
भी मारा गया है'।"
22क़ासिद रवाना हुआ। जब यरूशलम पहुँचा
तो उसने दाऊद को योआब का पूरा पैग़ाम सुना
दिया, 23"दुश्मन हमसे ज़्यादा ताक़तवर थे। वह
शहर से निकलकर खुले मैदान में हम पर टूट पड़े।
लेकिन हमने उनका सामना यों किया कि वह

पीछे हट गए, बल्कि हमने उनका ताक़्क़ुब शहर के दरवाज़े तक किया। 24लेकिन अफ़सोस कि फिर कुछ तीरअंदाज़ हम पर फ़सील पर से तीर बरसाने लगे। आपके कुछ ख़ादिम खेत आए और ऊरियाह हित्ती भी उनमें शामिल है।” 25दाऊद ने जवाब दिया, “योआब को बता देना कि यह मामला आपको हिम्मत हारने न दे। जंग तो ऐसी ही होती है। कभी कोई यहाँ तलवार का लुक़्मा हो जाता है, कभी वहाँ। पूरे अज़म के साथ शहर से जंग जारी रखकर उसे तबाह कर दें। यह कहकर योआब की हौसलाअफ़्ज़ाई करें।”

26जब बत-सबा को इत्तला मिली कि ऊरियाह नहीं रहा तो उसने उसका मातम किया। 27मातम का वक़्त पूरा हुआ तो दाऊद ने उसे अपने घर बुलाकर उससे शादी कर ली। फिर उसके बेटा पैदा हुआ।

लेकिन दाऊद की यह हरकत रब को निहायत बुरी लगी।

नातन दाऊद को मुजरिम ठहराता है

12 रब ने नातन नबी को दाऊद के पास भेज दिया। बादशाह के पास पहुँचकर वह कहने लगा, “किसी शहर में दो आदमी रहते थे। एक अमीर था, दूसरा ग़रीब। 2अमीर की बहुत भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल थे, 3लेकिन ग़रीब के पास कुछ नहीं था, सिर्फ़ भेड़ की नन्ही-सी बच्ची जो उसने ख़रीद रखी थी। ग़रीब उस की परवरिश करता रहा, और वह घर में उसके बच्चों के साथ साथ बड़ी होती गई। वह उस की प्लेट से खाती, उसके प्याले से पीती और रात को उसके बाज़ुओं में सो जाती। ग़रज़ भेड़ ग़रीब के लिए बेटी की-सी हैसियत रखती थी। 4एक दिन अमीर के हाँ मेहमान आया। जब उसके लिए खाना पकाना था तो अमीर का दिल नहीं करता था कि अपने रेवड़ में से किसी जानवर को ज़बह करे, इसलिए उसने ग़रीब आदमी से उस की नन्ही-सी भेड़ लेकर उसे मेहमान के लिए तैयार किया।”

5यह सुनकर दाऊद को बड़ा ग़ुस्सा आया। वह पुकारा, “रब की हयात की क़सम, जिस आदमी ने यह किया वह सज़ाए-मौत के लायक़ है। 6लाज़िम है कि वह भेड़ की बच्ची के एवज़ ग़रीब को भेड़ के चार बच्चे दे। यही उस की मुनासिब सज़ा है, क्योंकि उसने ऐसी हरकत करके ग़रीब पर तरस न खाया।”

7नातन ने दाऊद से कहा, “आप ही वह आदमी हैं! रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है, ‘मैंने तुझे मसह करके इसराईल का बादशाह बना दिया, और मैं ही ने तुझे साऊल से महफ़ूज़ रखा। 8साऊल का घराना उस की बीवियों समेत मैंने तुझे दे दिया। हाँ, पूरा इसराईल और यहूदाह भी तेरे तहत आ गए हैं। और अगर यह तेरे लिए कम होता तो मैं तुझे मज़ीद देने के लिए भी तैयार होता। 9अब मुझे बता कि तूने मेरी मरज़ी को हक़ीर जानकर ऐसी हरकत क्यों की है जिससे मुझे नफ़रत है? तूने ऊरियाह हित्ती को क़त्ल करवा के उस की बीवी को छीन लिया है। हाँ, तू क़ातिल है, क्योंकि तूने हुक्म दिया कि ऊरियाह को अम्मोनियों से लड़ते लड़ते मरवाना है। 10चूँकि तूने मुझे हक़ीर जानकर ऊरियाह हित्ती की बीवी को उससे छीन लिया इसलिए आइंदा तलवार तेरे घराने से नहीं हटेगी।’

11रब फ़रमाता है, ‘मैं होने दूँगा कि तेरे अपने ख़ानदान में से मुसीबत तुझ पर आएगी। तेरे देखते देखते मैं तेरी बीवियों को तुझसे छीनकर तेरे क़रीब के आदमी के हवाले कर दूँगा, और वह अलानिया उनसे हमबिसतर होगा। 12तूने चुपके से गुनाह किया, लेकिन जो कुछ मैं जवाब में होने दूँगा वह अलानिया और पूरे इसराईल के देखते देखते होगा’।”

13तब दाऊद ने इक़रार किया, “मैंने रब का गुनाह किया है।” नातन ने जवाब दिया, “रब ने आपको मुआफ़ कर दिया है और आप नहीं मरेंगे। 14लेकिन इस हरकत से आपने रब के दुश्मनों को कुफ़र बकने का मौक़ा फ़राहम किया है, इसलिए बत-सबा से होनेवाला बेटा मर जाएगा।”

15तब नातन अपने घर चला गया।

दाऊद का बेटा मर जाता है

फिर रब ने बत-सबा के बेटे को छू दिया, और
वह सख़्त बीमार हो गया। 16दाऊद ने अल्लाह से
इलतमास की कि बच्चे को बचने दे। रोज़ा रखकर
वह रात के वक़्त नंगे फ़र्श पर सोने लगा। 17घर
के बुज़ुर्ग उसके इर्दगिर्द खड़े कोशिश करते रहे कि
वह फ़र्श से उठ जाए, लेकिन बेफ़ायदा। वह उनके
साथ खाने के लिए भी तैयार नहीं था।

18सातवें दिन बेटा फ़ौत हो गया। दाऊद के
मुलाज़िमों ने उसे ख़बर पहुँचाने की जुर्रत न की,
क्योंकि उन्होंने सोचा, "जब बच्चा अभी ज़िंदा था
तो हमने उसे समझाने की कोशिश की, लेकिन
उसने हमारी एक भी न सुनी। अब अगर बच्चे
की मौत की ख़बर दें तो ख़तरा है कि वह कोई
नुक़सानदेह क़दम उठाए।"

19लेकिन दाऊद ने देखा कि मुलाज़िम धीमी
आवाज़ में एक दूसरे से बात कर रहे हैं। उसने
पूछा, "क्या बेटा मर गया है?" उन्होंने जवाब
दिया, "जी, वह मर गया है।"

20यह सुनकर दाऊद फ़र्श पर से उठ गया। वह
नहाया और जिस्म को ख़ुशबूदार तेल से मलकर
साफ़ कपड़े पहन लिए। फिर उसने रब के घर
में जाकर उस की परस्तिश की। इसके बाद वह
महल में वापस गया और खाना मँगवाकर खाया।
21उसके मुलाज़िम हैरान हुए और बोले, "जब
बच्चा ज़िंदा था तो आप रोज़ा रखकर रोते रहे।
अब बच्चा जान-बहक़ हो गया है तो आप उठकर
दुबारा खाना खा रहे हैं। क्या वजह है?" 22दाऊद
ने जवाब दिया, "जब तक बच्चा ज़िंदा था तो
मैं रोज़ा रखकर रोता रहा। ख़याल यह था कि
शायद रब मुझ पर रहम करके उसे ज़िंदा छोड़ दे।
23लेकिन जब वह कूच कर गया है तो अब रोज़ा
रखने का क्या फ़ायदा? क्या मैं इससे उसे वापस
ला सकता हूँ? हरगिज़ नहीं! एक दिन मैं ख़ुद ही
उसके पास पहुँचूँगा। लेकिन उसका यहाँ मेरे पास
वापस आना नामुमकिन है।"

24फिर दाऊद ने अपनी बीवी बत-सबा के पास
जाकर उसे तसल्ली दी और उससे हमबिसतर
हुआ। तब उसके एक और बेटा पैदा हुआ। दाऊद
ने उसका नाम सुलेमान यानी अमनपसंद रखा।
यह बच्चा रब को प्यारा था, 25इसलिए उसने
नातन नबी की मारिफ़त इत्तला दी कि उसका नाम
यदीदियाह यानी 'रब को प्यारा' रखा जाए।

रब्बा शहर पर फ़तह

26अब तक योआब अम्मोनी दारुल-हुकूमत
रब्बा का मुहासरा किए हुए था। फिर वह शहर के
एक हिस्से बनाम 'शाही शहर' पर क़ब्ज़ा करने में
कामयाब हो गया। 27उसने दाऊद को इत्तला दी,
"मैंने रब्बा पर हमला करके उस जगह पर क़ब्ज़ा
कर लिया है जहाँ पानी दस्तयाब है। 28चुनाँचे अब
फ़ौज के बाक़ी अफ़राद को लाकर ख़ुद शहर पर
क़ब्ज़ा कर लें। वरना लोग समझेंगे कि मैं ही शहर
का फ़ातेह हूँ।"

29चुनाँचे दाऊद फ़ौज के बाक़ी अफ़राद को
लेकर रब्बा पहुँचा। जब शहर पर हमला किया तो
वह उसके क़ब्ज़े में आ गया। 30दाऊद ने हनून
बादशाह का ताज उसके सर से उतारकर अपने
सर पर रख लिया। सोने के इस ताज का वज़न
34 किलोग्राम था, और उसमें एक बेशक़ीमत
जौहर जड़ा हुआ था। दाऊद ने शहर से बहुत-
सा लूटा हुआ माल लेकर 31उसके बाशिंदों को
ग़ुलाम बना लिया। उन्हें पत्थर काटने की आरियाँ,
लोहे की कुदालें और कुल्हाड़ियाँ दी गईं ताकि
वह मज़दूरी करें और भट्टों पर काम करें। यही
सुलूक बाक़ी अम्मोनी शहरों के बाशिंदों के साथ
भी किया गया।

जंग के इख़्तिताम पर दाऊद पूरी फ़ौज के साथ
यरूशलम लौट आया।

तमर की इसमतदरी

13 दाऊद के बेटे अबीसलूम की ख़ूबसूरत
बहन थी जिसका नाम तमर था।
उसका सौतेला भाई अमनोन तमर से शदीद

मुहब्बत करने लगा। 2वह तमर को इतनी शिद्दत
से चाहने लगा कि रंजिश के बाइस बीमार हो गया,
क्योंकि तमर कुँवारी थी, और अमनोन को उसके
क़रीब आने का कोई रास्ता नज़र न आया।

3अमनोन का एक दोस्त था जिसका नाम
यूनदब था। वह दाऊद के भाई सिमआ का बेटा
था और बड़ा ज़हीन था। 4उसने अमनोन से पूछा,
“बादशाह के बेटे, क्या मसला है? रोज़ बरोज़
आप ज़्यादा बुझे हुए नज़र आ रहे हैं। क्या आप
मुझे नहीं बताएँगे कि बात क्या है?” अमनोन
बोला, “मैं अबीसलूम की बहन तमर से शदीद
मुहब्बत करता हूँ।” 5यूनदब ने अपने दोस्त को
मशवरा दिया, “बिस्तर पर लेट जाएँ और ऐसा
ज़ाहिर करें गोया बीमार हैं। जब आपके वालिद
आपका हाल पूछने आएँगे तो उनसे दरख़ास्त
करना, ‘मेरी बहन तमर आकर मुझे मरीज़ों
का खाना खिलाए। वह मेरे सामने खाना तैयार
करे ताकि मैं उसे देखकर उसके हाथ से खाना
खाऊँ’।”

6चुनाँचे अमनोन ने बिस्तर पर लेटकर बीमार
होने का बहाना किया। जब बादशाह उसका हाल
पूछने आया तो अमनोन ने गुज़ारिश की, “मेरी
बहन तमर मेरे पास आए और मेरे सामने मरीज़ों
का खाना बनाकर मुझे अपने हाथ से खिलाए।”

7दाऊद ने तमर को इत्तला दी, “आपका भाई
अमनोन बीमार है। उसके पास जाकर उसके लिए
मरीज़ों का खाना तैयार करें।” 8तमर ने अमनोन
के पास आकर उस की मौजूदगी में मैदा गूँधा और
खाना तैयार करके पकाया। अमनोन बिस्तर पर
लेटा उसे देखता रहा। 9जब खाना पक गया तो
तमर ने उसे अमनोन के पास लाकर पेश किया।
लेकिन उसने खाने से इनकार कर दिया। उसने
हुक्म दिया, “तमाम नौकर कमरे से बाहर निकल
जाएँ!” जब सब चले गए 10तो उसने तमर से
कहा, “खाने को मेरे सोने के कमरे में ले आएँ
ताकि मैं आपके हाथ से खा सकूँ।” तमर खाने
को लेकर सोने के कमरे में अपने भाई के पास
आई।

11जब वह उसे खाना खिलाने लगी तो अमनोन
ने उसे पकड़कर कहा, “आ मेरी बहन, मेरे साथ
हमबिसतर हो!” 12वह पुकारी, “नहीं, मेरे भाई!
मेरी इसमतदरी न करें। ऐसा अमल इसराईल में
मना है। ऐसी बेदीन हरकत मत करना! 13और
ऐसी बेहुरमती के बाद मैं कहाँ जाऊँ? जहाँ तक
आपका ताल्लुक़ है इसराईल में आपकी बुरी तरह
बदनामी हो जाएगी, और सब समझेंगे कि आप
निहायत शरीर आदमी हैं। आप बादशाह से बात
क्यों नहीं करते? यक़ीनन वह आपको मुझसे
शादी करने से नहीं रोकेंगे।” 14लेकिन अमनोन
ने उस की न सुनी बल्कि उसे पकड़कर उस की
इसमतदरी की।

15लेकिन फिर अचानक उस की मुहब्बत सख़्त
नफ़रत में बदल गई। पहले तो वह तमर से शदीद
मुहब्बत करता था, लेकिन अब वह इससे बढ़कर
उससे नफ़रत करने लगा। उसने हुक्म दिया,
“उठ, दफ़ा हो जा!” 16तमर ने इलतमास की,
“हाय, ऐसा मत करना। अगर आप मुझे निकालेंगे
तो यह पहले गुनाह से ज़्यादा संगीन जुर्म होगा।”
लेकिन अमनोन उस की सुनने के लिए तैयार
न था। 17उसने अपने नौकर को बुलाकर हुक्म
दिया, “इस औरत को यहाँ से निकाल दो और
इसके पीछे दरवाज़ा बंद करके कुंडी लगाओ!”
18नौकर तमर को बाहर ले गया और फिर उसके
पीछे दरवाज़ा बंद करके कुंडी लगा दी।

तमर एक लंबे बाज़ुओंवाला फ़्राक पहने हुए
थी। बादशाह की तमाम कुँवारी बेटियाँ यही
लिबास पहना करती थीं। 19बड़ी रंजिश के
आलम में उसने अपना यह लिबास फाड़कर अपने
सर पर राख डाल ली। फिर अपना हाथ सर पर
रखकर वह चीख़ती-चिल्लाती वहाँ से चली गई।
20जब घर पहुँच गई तो अबीसलूम ने उससे पूछा,
“मेरी बहन, क्या अमनोन ने आपसे ज़्यादती की
है? अब ख़ामोश हो जाएँ। वह तो आपका भाई
है। इस मामले को हद से ज़्यादा अहमियत मत
देना।” उस वक़्त से तमर अकेली ही अपने भाई
अबीसलूम के घर में रही।

21जब दाऊद को इस वाक़िये की ख़बर
मिली तो उसे सख़्त ग़ुस्सा आया। 22अबी-
सलूम ने अमनोन से एक भी बात न की। न उसने
उस पर कोई इलज़ाम लगाया, न कोई अच्छी बात
की, क्योंकि तमर की इसमतदरी की वजह से वह
अपने भाई से सख़्त नफ़रत करने लगा था।

अबीसलूम का इंतक़ाम

23दो साल गुज़र गए। अबीसलूम की भेड़ें
इफ़राईम के क़रीब के बाल-हसूर में लाई गईं
ताकि उनके बाल कतरे जाएँ। इस मौक़े पर
अबीसलूम ने बादशाह के तमाम बेटों को दावत दी
कि वह वहाँ ज़ियाफ़त में शरीक हों। 24वह दाऊद
बादशाह के पास भी गया और कहा, “इन दिनों
में मैं अपनी भेड़ों के बाल कतरा रहा हूँ। बादशाह
और उनके अफ़सरों को भी मेरे साथ ख़ुशी मनाने
की दावत है।”

25लेकिन दाऊद ने इनकार किया, “नहीं,
मेरे बेटे, हम सब तो नहीं आ सकते। इतने
लोग आपके लिए बोझ का बाइस बन जाएंगे।”
अबीसलूम बहुत इसरार करता रहा, लेकिन दाऊद
ने दावत को क़बूल न किया बल्कि उसे बरकत
देकर रुख़सत करना चाहता था।

26आख़िरकार अबीसलूम ने दरख़ास्त की,
“अगर आप हमारे साथ जा न सकें तो फिर
कम अज़ कम मेरे भाई अमनोन को आने दें।”
बादशाह ने पूछा, “ख़ासकर अमनोन को क्यों?”
27लेकिन अबीसलूम इतना ज़ोर देता रहा कि
दाऊद ने अमनोन को बाक़ी बेटों समेत बाल-हसूर
जाने की इजाज़त दे दी।

28ज़ियाफ़त से पहले अबीसलूम ने अपने
मुलाज़िमों को हुक्म दिया, “सुनें! जब अमनोन मै
पी पीकर ख़ुश हो जाएगा तो मैं आपको अमनोन
को मारने का हुक्म दूँगा। फिर आपको उसे मार
डालना है। डरें मत, क्योंकि मैं ही ने आपको यह
हुक्म दिया है। मज़बूत और दिलेर हों!”

29मुलाज़िमों ने ऐसा ही किया। उन्होंने
अमनोन को मार डाला। यह देखकर बाद-
शाह के दूसरे बेटे उठकर अपने ख़च्चरों पर सवार
हुए और भाग गए। 30वह अभी रास्ते में ही थे
कि अफ़वाह दाऊद तक पहुँची, “अबीसलूम ने
आपके तमाम बेटों को क़त्ल कर दिया है। एक
भी नहीं बचा।”

31बादशाह उठा और अपने कपड़े फाड़-
कर फ़र्श पर लेट गया। उसके दरबारी भी दुख
में अपने कपड़े फाड़ फाड़कर उसके पास खड़े
रहे। 32फिर दाऊद का भतीजा यूनदब बोल उठा,
“मेरे आक़ा, आप न सोचें कि उन्होंने तमाम
शहज़ादों को मार डाला है। सिर्फ़ अमनोन मर गया
होगा, क्योंकि जब से उसने तमर की इसमतदरी
की उस वक़्त से अबीसलूम का यही इरादा था।
33लिहाज़ा इस ख़बर को इतनी अहमियत न दें
कि तमाम बेटे हलाक हुए हैं। सिर्फ़ अमनोन मर
गया होगा।”

34इतने में अबीसलूम फ़रार हो गया था।
फिर यरूशलम की फ़सील पर खड़े पहरेदार ने
अचानक देखा कि मग़रिब से लोगों का बड़ा गुरोह
शहर की तरफ़ बढ़ रहा है। वह पहाड़ी के दामन
में चले आ रहे थे। 35तब यूनदब ने बादशाह से
कहा, “लो, बादशाह के बेटे आ रहे हैं, जिस तरह
आपके ख़ादिम ने कहा था।” 36वह अभी अपनी
बात ख़त्म कर ही रहा था कि शहज़ादे अंदर आए
और ख़ूब रो पड़े। बादशाह और उसके अफ़सर भी
रोने लगे।

37दाऊद बड़ी देर तक अमनोन का मातम
करता रहा। लेकिन अबीसलूम ने फ़रार
होकर जसूर के बादशाह तलमी बिन अम्मी-
हूद के पास पनाह ली जो उसका नाना था। 38वहाँ
वह तीन साल तक रहा। 39फिर एक वक़्त आ
गया कि दाऊद का अमनोन के लिए दुख दूर हो
गया, और उसका अबीसलूम पर ग़ुस्सा थम गया।

योआब अबीसलूम की सिफ़ारिश करता है

14 योआब बिन ज़रूयाह को मालूम हुआ
कि बादशाह अपने बेटे अबीसलूम
को चाहता है, 2इसलिए उसने तक़ुअ से एक

दानिशमंद औरत को बुलाया। योआब ने उसे
हिदायत दी, “मातम का रूप भरें जैसे आप देर
से किसी का मातम कर रही हों। मातम के कपड़े
पहनकर ख़ुशबूदार तेल मत लगाना। 3बादशाह
के पास जाकर उससे बात करें।” फिर योआब ने
औरत को लफ़्ज़ बलफ़्ज़ वह कुछ सिखाया जो
उसे बादशाह को बताना था।

4दाऊद के दरबार में आकर औरत ने औंधे मुँह
झुककर इलतमास की, “ऐ बादशाह, मेरी मदद
करें!” 5दाऊद ने दरियाफ़्त किया, “क्या मसला
है?” औरत ने जवाब दिया, “मैं बेवा हूँ, मेरा
शौहर फ़ौत हो गया है। 6और मेरे दो बेटे थे। एक
दिन वह बाहर खेत में एक दूसरे से उलझ पड़े।
और चूँकि कोई मौजूद नहीं था जो दोनों को अलग
करता इसलिए एक ने दूसरे को मार डाला। 7उस
वक़्त से पूरा कुंबा मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़ा हुआ है।
वह तक़ाज़ा करते हैं कि मैं अपने बेटे को उनके
हवाले करूँ। वह कहते हैं, ‘उसने अपने भाई को
मार दिया है, इसलिए हम बदले में उसे सज़ाए-
मौत देंगे। इस तरह वारिस भी नहीं रहेगा।’ यों वह
मेरी उम्मीद की आख़िरी किरण को ख़त्म करना
चाहते हैं। क्योंकि अगर मेरा यह बेटा भी मर जाए
तो मेरे शौहर का नाम क़ायम नहीं रहेगा, और
उसका ख़ानदान रूए-ज़मीन पर से मिट जाएगा।”
8बादशाह ने औरत से कहा, “अपने घर चली जाएँ
और फ़िकर न करें। मैं मामला हल कर दूँगा।”

9लेकिन औरत ने गुज़ारिश की, “ऐ बाद-
शाह, डर है कि लोग फिर भी मुझे मुजरिम
ठहराएँगे अगर मेरे बेटे को सज़ाए-मौत न दी
जाए। आप पर तो वह इलज़ाम नहीं लगाएँगे।”
10दाऊद ने इसरार किया, “अगर कोई आपको
तंग करे तो उसे मेरे पास ले आएँ। फिर वह आइंदा
आपको नहीं सताएगा!” 11औरत को तसल्ली
न हुई। उसने गुज़ारिश की, “ऐ बादशाह, बराहे-
करम रब अपने ख़ुदा की क़सम खाएँ कि आप
किसी को भी मौत का बदला नहीं लेने देंगे। वरना
नुक़सान में इज़ाफ़ा होगा और मेरा दूसरा बेटा भी
हलाक हो जाएगा।” दाऊद ने जवाब दिया, “रब
की हयात की क़सम, आपके बेटे का एक बाल
भी बीका नहीं होगा।”

12फिर औरत असल बात पर आ गई, “मेरे
आक़ा, बराहे-करम अपनी ख़ादिमा को एक और
बात करने की इजाज़त दें।” बादशाह बोला, “करें
बात।” 13तब औरत ने कहा, “आप ख़ुद क्यों
अल्लाह की क़ौम के ख़िलाफ़ ऐसा इरादा रखते
हैं जिसे आपने अभी अभी ग़लत क़रार दिया है?
आपने ख़ुद फ़रमाया है कि यह ठीक नहीं, और
यों आपने अपने आपको ही मुजरिम ठहराया है।
क्योंकि आपने अपने बेटे को रद्द करके उसे वापस
आने नहीं दिया। 14बेशक हम सबको किसी वक़्त
मरना है। हम सब ज़मीन पर उंडेले गए पानी की
मानिंद हैं जिसे ज़मीन जज़्ब कर लेती है और
जो दुबारा जमा नहीं किया जा सकता। लेकिन
अल्लाह हमारी ज़िंदगी को बिलावजह मिटा नहीं
देता बल्कि ऐसे मनसूबे तैयार रखता है जिनके
ज़रीए मरदूद शख़्स भी उसके पास वापस आ सके
और उससे दूर न रहे। 15ऐ बादशाह मेरे आक़ा,
मैं इस वक़्त इसलिए आपके हुज़ूर आई हूँ कि मेरे
लोग मुझे डराने की कोशिश कर रहे हैं। मैंने सोचा,
मैं बादशाह से बात करने की जुर्रत करूँगी, शायद
वह मेरी सुनें 16और मुझे उस आदमी से बचाएँ
जो मुझे और मेरे बेटे को उस मौरूसी ज़मीन से
महरूम रखना चाहता है जो अल्लाह ने हमें दे दी
है। 17ख़याल यह था कि अगर बादशाह मामला
हल कर दें तो फिर मुझे दुबारा सुकून मिलेगा,
क्योंकि आप अच्छी और बुरी बातों का इम्तियाज़
करने में अल्लाह के फ़रिश्ते जैसे हैं। रब आपका
ख़ुदा आपके साथ हो।”

18यह सब कुछ सुनकर दाऊद बोल उठा, “अब
मुझे एक बात बताएँ। इसका सहीह जवाब दें।”
औरत ने जवाब दिया, “जी मेरे आक़ा, बात
फ़रमाइए।” दाऊद ने पूछा, “क्या योआब ने
आपसे यह काम करवाया?” 19औरत पुकारी,
“बादशाह की हयात की क़सम, जो कुछ भी मेरे
आक़ा फ़रमाते हैं वह निशाने पर लग जाता है,
ख़ाह बंदा बाईं या दाईं तरफ़ हटने की कोशिश

क्यों न करे। जी हाँ, आपके ख़ादिम योआब ने मुझे आपके हुज़ूर भेज दिया। उसने मुझे लफ़्ज़ बलफ़्ज़ सब कुछ बताया जो मुझे आपको अर्ज़ करना था,
20क्योंकि वह आपको यह बात बराहे-रास्त नहीं पेश करना चाहता था। लेकिन मेरे आक़ा को अल्लाह के फ़रिश्ते की-सी हिकमत हासिल है। जो कुछ भी मुल्क में वुक़ू में आता है उसका आपको पता चल जाता है।"

अबीसलूम की वापसी

21दाऊद ने योआब को बुलाकर उससे कहा, "ठीक है, मैं आपकी दरख़ास्त पूरी करूँगा। जाएँ, मेरे बेटे अबीसलूम को वापस ले आएँ।"
22योआब औंधे मुँह झुक गया और बोला, "रब बादशाह को बरकत दे! मेरे आक़ा, आज मुझे मालूम हुआ है कि मैं आपको मंज़ूर हूँ, क्योंकि आपने अपने ख़ादिम की दरख़ास्त को पूरा किया है।"
23योआब रवाना होकर जसूर चला गया और वहाँ से अबीसलूम को वापस लाया।
24लेकिन जब वह यरूशलम पहुँचे तो बादशाह ने हुक्म दिया, "उसे अपने घर में रहने की इजाज़त है, लेकिन वह कभी मुझे नज़र न आए।" चुनाँचे अबीसलूम अपने घर में दुबारा रहने लगा, लेकिन बादशाह से कभी मुलाक़ात न हो सकी।

25पूरे इसराईल में अबीसलूम जैसा ख़ूबसूरत आदमी नहीं था। सब उस की ख़ास तारीफ़ करते थे, क्योंकि सर से लेकर पाँव तक उसमें कोई नुक़्स नज़र नहीं आता था।
26साल में वह एक ही मरतबा अपने बाल कटवाता था, क्योंकि इतने में उसके बाल हद से ज़्यादा वज़नी हो जाते थे। जब उन्हें तोला जाता तो उनका वज़न तक़रीबन सवा दो किलोग्राम होता था।
27अबीसलूम के तीन बेटे और एक बेटी थी। बेटी का नाम तमर था और वह निहायत ख़ूबसूरत थी।

28दो साल गुज़र गए, फिर भी अबीसलूम को बादशाह से मिलने की इजाज़त न मिली।
29फिर उसने योआब को इत्तला भेजी कि वह उस की सिफ़ारिश करे। लेकिन योआब ने आने से इनकार किया। अबीसलूम ने उसे दुबारा बुलाने की कोशिश की, लेकिन इस बार भी योआब उसके पास न आया।
30तब अबीसलूम ने अपने नौकरों को हुक्म दिया, "देखो, योआब का खेत मेरे खेत से मुलहिक़ है, और उसमें जौ की फ़सल पक रही है। जाओ, उसे आग लगा दो!" नौकर गए और ऐसा ही किया।

31जब खेत में आग लग गई तो योआब भागकर अबीसलूम के पास आया और शिकायत की, "आपके नौकरों ने मेरे खेत को आग क्यों लगाई है?"
32अबीसलूम ने जवाब दिया, "देखें, आप नहीं आए जब मैंने आपको बुलाया। क्योंकि मैं चाहता हूँ कि आप बादशाह के पास जाकर उनसे पूछें कि मुझे जसूर से क्यों लाया गया। बेहतर होता कि मैं वहीं रहता। अब बादशाह मुझसे मिलें या अगर वह अब तक मुझे क़ुसूरवार ठहराते हैं तो मुझे सज़ाए-मौत दें।"

33योआब ने बादशाह के पास जाकर उसे यह पैग़ाम पहुँचाया। फिर दाऊद ने अपने बेटे को बुलाया। अबीसलूम अंदर आया और बादशाह के सामने औंधे मुँह झुक गया। फिर बादशाह ने अबीसलूम को बोसा दिया।

अबीसलूम की साज़िश

15 कुछ देर के बाद अबीसलूम ने रथ और घोड़े ख़रीदे और साथ साथ 50 मुहाफ़िज़ भी रखे जो उसके आगे आगे दौड़ें।
2रोज़ाना वह सुबह-सवेरे उठकर शहर के दरवाज़े पर जाता। जब कभी कोई शख़्स इस मक़सद से शहर में दाख़िल होता कि बादशाह उसके किसी मुक़दमे का फ़ैसला करे तो अबीसलूम उससे मुख़ातिब होकर पूछता, "आप किस शहर से हैं?" अगर वह जवाब देता, "मैं इसराईल के फ़ुलाँ क़बीले से हूँ,"
3तो अबीसलूम कहता, "बेशक आप इस मुक़दमे को जीत सकते हैं, लेकिन अफ़सोस! बादशाह का कोई भी बंदा इस पर सहीह ध्यान नहीं देगा।"
4फिर वह बात जारी रखता, "काश मैं ही मुल्क पर आला क़ाज़ी

मुक़र्रर किया गया होता! फिर सब लोग अपने मुक़दमे मुझे पेश कर सकते और मैं उनका सहीह इनसाफ़ कर देता।” 5और अगर कोई क़रीब आकर अबीसलूम के सामने झुकने लगता तो वह उसे रोककर उसको गले लगाता और बोसा देता। 6यह उसका उन तमाम इसराईलियों के साथ सुलूक था जो अपने मुक़दमे बादशाह को पेश करने के लिए आते थे। यों उसने इसराईलियों के दिलों को अपनी तरफ़ मायल कर लिया।

7यह सिलसिला चार साल जारी रहा। एक दिन अबीसलूम ने दाऊद से बात की, “मुझे हबरून जाने की इजाज़त दीजिए, क्योंकि मैंने रब से ऐसी मन्नत मानी है जिसके लिए ज़रूरी है कि हबरून जाऊँ। 8क्योंकि जब मैं जसूर में था तो मैंने क़सम खाकर वादा किया था, ‘ऐ रब, अगर तू मुझे यरूशलम वापस लाए तो मैं हबरून में तेरी परस्तिश करूँगा’।” 9बादशाह ने जवाब दिया, “ठीक है। सलामती से जाएँ।”

10लेकिन हबरून पहुँचकर अबीसलूम ने ख़ुफ़िया तौर पर अपने क़ासिदों को इसराईल के तमाम क़बायली इलाक़ों में भेज दिया। जहाँ भी वह गए उन्होंने एलान किया, “ज्योंही नरसिंगे की आवाज़ सुनाई दे आप सबको कहना है, ‘अबीसलूम हबरून में बादशाह बन गया है’!” 11अबीसलूम के साथ 200 मेहमान यरूशलम से हबरून आए थे। वह बेलौस थे, और उन्हें इसके बारे में इल्म ही न था।

12जब हबरून में क़ुरबानियाँ चढ़ाई जा रही थीं तो अबीसलूम ने दाऊद के एक मुशीर को बुलाया जो जिलोह का रहनेवाला था। उसका नाम अख़ीतुफ़ल जिलोनी था। वह आया और अबीसलूम के साथ मिल गया। यों अबीसलूम के पैरोकारों में इज़ाफ़ा होता गया और उस की साज़िशें ज़ोर पकड़ने लगीं।

दाऊद यरूशलम से हिजरत करता है

13एक क़ासिद ने दाऊद के पास पहुँचकर उसे इत्तला दी, “अबीसलूम आपके ख़िलाफ़ उठ खड़ा हुआ है, और तमाम इसराईल उसके पीछे लग गया है।” 14दाऊद ने अपने मुलाज़िमों से कहा, “आओ, हम फ़ौरन हिजरत करें, वरना अबीसलूम के क़ब्ज़े में आ जाएंगे। जल्दी करें ताकि हम फ़ौरन रवाना हो सकें, क्योंकि वह कोशिश करेगा कि जितनी जल्दी हो सके यहाँ पहुँचे। अगर हम उस वक़्त शहर से निकले न हों तो वह हम पर आफ़त लाकर शहर के बाशिंदों को मार डालेगा।” 15बादशाह के मुलाज़िमों ने जवाब दिया, “जो भी फ़ैसला हमारे आक़ा और बादशाह करें हम हाज़िर हैं।”

16बादशाह अपने पूरे ख़ानदान के साथ रवाना हुआ। सिर्फ़ दस दाश्ताएँ महल को सँभालने के लिए पीछे रह गईं। 17जब दाऊद अपने तमाम लोगों के साथ शहर के आख़िरी घर तक पहुँचा तो वह रुक गया। 18उसने अपने तमाम पैरोकारों को आगे निकलने दिया, पहले शाही दस्ते करेती-ओ-फ़लेती को, फिर उन 600 जाती आदमियों को जो उसके साथ जात से यहाँ आए थे और आख़िर में बाक़ी तमाम लोगों को। 19जब फ़िलिस्ती शहर जात का आदमी इत्ती दाऊद के सामने से गुज़रने लगा तो बादशाह उससे मुख़ातिब हुआ, “आप हमारे साथ क्यों जाएँ? नहीं, वापस चले जाएँ और नए बादशाह के साथ रहें। आप तो ग़ैरमुल्की हैं और इसलिए इसराईल में रहते हैं कि आपको जिलावतन कर दिया गया है। 20आपको यहाँ आए थोड़ी देर हुई है, तो क्या मुनासिब है कि आपको दुबारा मेरी वजह से कभी इधर कभी इधर घूमना पड़े? क्या पता है कि मुझे कहाँ कहाँ जाना पड़े। इसलिए वापस चले जाएँ, और अपने हमवतनों को भी अपने साथ ले जाएँ। रब आप पर अपनी मेहरबानी और वफ़ादारी का इज़हार करे।”

21लेकिन इत्ती ने एतराज़ किया, “मेरे आक़ा, रब और बादशाह की हयात की क़सम, मैं आपको कभी नहीं छोड़ सकता, ख़ाह मुझे अपनी जान भी क़ुरबान करनी पड़े।” 22तब दाऊद मान गया। “चलो, फिर आगे निकलें!” चुनाँचे इत्ती

अपने लोगों और उनके ख़ानदानों के साथ आगे निकला। 23आख़िर में दाऊद ने वादीए-क़िदरोन को पार करके रेगिस्तान की तरफ़ रुख़ किया। गिर्दो-नवाह के तमाम लोग बादशाह को उसके पैरोकारों समेत रवाना होते हुए देखकर फूट फूटकर रोने लगे।

24सदोक़ इमाम और तमाम लावी भी दाऊद के साथ शहर से निकल आए थे। लावी अहद का संदूक़ उठाए चल रहे थे। अब उन्होंने उसे शहर से बाहर ज़मीन पर रख दिया, और अबियातर वहाँ क़ुरबानियाँ चढ़ाने लगा। लोगों के शहर से निकलने के पूरे अरसे के दौरान वह क़ुरबानियाँ चढ़ाता रहा। 25फिर दाऊद सदोक़ से मुख़ातिब हुआ, "अल्लाह का संदूक़ शहर में वापस ले जाएँ। अगर रब की नज़रे-करम मुझ पर हुई तो वह किसी दिन मुझे शहर में वापस लाकर अहद के संदूक़ और उस की सुकूनतगाह को दुबारा देखने की इजाज़त देगा। 26लेकिन अगर वह फ़रमाए कि तू मुझे पसंद नहीं है, तो मैं यह भी बरदाश्त करने के लिए तैयार हूँ। वह मेरे साथ वह कुछ करे जो उसे मुनासिब लगे।

27जहाँ तक आपका ताल्लुक़ है, अपने बेटे अख़ीमाज़ को साथ लेकर सहीह-सलामत शहर में वापस चले जाएँ। अबियातर और उसका बेटा यूनतन भी साथ जाएँ। 28मैं ख़ुद रेगिस्तान में दरियाए-यरदन की उस जगह रुक जाऊँगा जहाँ हम आसानी से दरिया को पार कर सकेंगे। वहाँ आप मुझे यरूशलम के हालात के बारे में पैग़ाम भेज सकते हैं। मैं आपके इंतज़ार में रहूँगा।"

29चुनाँचे सदोक़ और अबियातर अहद का संदूक़ शहर में वापस ले जाकर वहीं रहे। 30दाऊद रोते रोते ज़ैतून के पहाड़ पर चढ़ने लगा। उसका सर ढाँपा हुआ था, और वह नंगे पाँव चल रहा था। बाक़ी सबके सर भी ढाँपे हुए थे, सब रोते रोते चढ़ने लगे। 31रास्ते में दाऊद को इत्तला दी गई, "अख़ीतुफ़ल भी अबीसलूम के साथ मिल गया है।" यह सुनकर दाऊद ने दुआ की, "ऐ रब, बख़्श दे कि अख़ीतुफ़ल के मशवरे नाकाम हो जाएँ।"

32चलते चलते दाऊद पहाड़ की चोटी पर पहुँच गया जहाँ अल्लाह की परस्तिश की जाती थी। वहाँ हूसी अरकी उससे मिलने आया। उसके कपड़े फटे हुए थे, और सर पर ख़ाक थी। 33दाऊद ने उससे कहा, "अगर आप मेरे साथ जाएँ तो आप सिर्फ़ बोझ का बाइस बनेंगे। 34बेहतर है कि आप लौटकर शहर में जाएँ और अबीसलूम से कहें, 'ऐ बादशाह, मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हूँ। पहले मैं आपके बाप की ख़िदमत करता था, और अब आप ही की ख़िदमत करूँगा।' अगर आप ऐसा करें तो आप अख़ीतुफ़ल के मशवरे नाकाम बनाने में मेरी बड़ी मदद करेंगे। 35-36आप अकेले नहीं होंगे। दोनों इमाम सदोक़ और अबियातर भी यरूशलम में पीछे रह गए हैं। दरबार में जो भी मनसूबे बाँधे जाएंगे वह उन्हें बताएँ। सदोक़ का बेटा अख़ीमाज़ और अबियातर का बेटा यूनतन मुझे हर ख़बर पहुँचाएँगे, क्योंकि वह भी शहर में ठहरे हुए हैं।"

37तब दाऊद का दोस्त हूसी वापस चला गया। वह उस वक़्त पहुँच गया जब अबीसलूम यरूशलम में दाख़िल हो रहा था।

ज़ीबा मिफ़ीबोसत के बारे में झूट बोलता है

16 दाऊद अभी पहाड़ की चोटी से कुछ आगे निकल गया था कि मिफ़ीबोसत का मुलाज़िम ज़ीबा उससे मिलने आया। उसके पास दो गधे थे जिन पर ज़ीनें कसी हुई थीं। उन पर 200 रोटियाँ, किशमिश की 100 टिक्कियाँ, 100 ताज़ा फल और मै की एक मशक लदी हुई थी। 2बादशाह ने पूछा, "आप इन चीज़ों के साथ क्या करना चाहते हैं?" ज़ीबा ने जवाब दिया, "गधे बादशाह के ख़ानदान के लिए हैं, वह इन पर बैठकर सफ़र करें। रोटी और फल जवानों के लिए हैं, और मै उनके लिए जो रेगिस्तान में चलते चलते थक जाएँ।" 3बादशाह ने सवाल किया, "आपके पुराने मालिक का पोता मिफ़ीबोसत

कहाँ है?” ज़ीबा ने कहा, “वह यरूशलम में
ठहरा हुआ है। वह सोचता है कि आज इसराईली
मुझे बादशाह बना देंगे, क्योंकि मैं साऊल का
पोता हूँ।” 4यह सुनकर दाऊद बोला, “आज ही
मिफ़ीबोसत की तमाम मिलकियत आपके नाम
मुंतक़िल की जाती है!” ज़ीबा ने कहा, “मैं
आपके सामने अपने घुटने टेकता हूँ। रब करे कि मैं
अपने आक़ा और बादशाह का मंज़ूरे-नज़र रहूँ।”

सिमई दाऊद को लान-तान करता है

5जब दाऊद बादशाह बहूरीम के क़रीब पहुँचा
तो एक आदमी वहाँ से निकलकर उस पर लानतें
भेजने लगा। आदमी का नाम सिमई बिन जीरा
था, और वह साऊल का रिश्तेदार था। 6वह
दाऊद और उसके अफ़सरों पर पत्थर भी फेंकने
लगा, अगरचे दाऊद के बाएँ और दाएँ हाथ
उसके मुहाफ़िज़ और बेहतरीन फ़ौजी चल रहे थे।
7लानत करते करते सिमई चीख़ रहा था, “चल,
दफ़ा हो जा! क़ातिल! बदमाश! 8यह तेरा
ही क़ुसूर था कि साऊल और उसका ख़ानदान
तबाह हुए। अब रब तुझे जो साऊल की जगह
तख़्तनशीन हो गया है इसकी मुनासिब सज़ा
दे रहा है। उसने तेरे बेटे अबीसलूम को तेरी
जगह तख़्तनशीन करके तुझे तबाह कर दिया है।
क़ातिल को सहीह मुआवज़ा मिल गया है!”

9अबीशै बिन ज़रूयाह बादशाह से कहने लगा,
“यह कैसा मुरदा कुत्ता है जो मेरे आक़ा बादशाह
पर लानत करे? मुझे इजाज़त दें, तो मैं जाकर
उसका सर क़लम कर दूँ।” 10लेकिन बादशाह
ने उसे रोक दिया, “मेरा आप और आपके भाई
योआब से क्या वास्ता? नहीं, उसे लानत करने
दें। हो सकता है रब ने उसे यह करने का हुक्म
दिया है। तो फिर हम कौन हैं कि उसे रोकें।”
11फिर दाऊद तमाम अफ़सरों से भी मुख़ातिब
हुआ, “जबकि मेरा अपना बेटा मुझे क़त्ल करने
की कोशिश कर रहा है तो साऊल का यह
रिश्तेदार ऐसा क्यों न करे? इसे छोड़ दो, क्योंकि
रब ने इसे यह करने का हुक्म दिया है। 12शायद
रब मेरी मुसीबत का लिहाज़ करके सिमई की
लानतें बरकत में बदल दे।”

13दाऊद और उसके लोगों ने सफ़र जारी
रखा। सिमई क़रीब की पहाड़ी ढलान पर उसके
बराबर चलते चलते उस पर लानतें भेजता और
पत्थर और मिट्टी के ढेले फेंकता रहा। 14सब
थकेमाँदे दरियाए-यरदन को पहुँच गए। वहाँ
दाऊद ताज़ादम हो गया।

अबीसलूम यरूशलम में

15इतने में अबीसलूम अपने पैरोकारों के साथ
यरूशलम में दाख़िल हुआ था। अख़ीतुफ़ल भी
उनके साथ मिल गया था। 16थोड़ी देर के बाद
दाऊद का दोस्त हूसी अरकी अबीसलूम के दरबार
में हाज़िर होकर पुकारा, “बादशाह ज़िंदाबाद!
बादशाह ज़िंदाबाद!” 17यह सुनकर अबीसलूम
ने उससे तंज़न कहा, “यह कैसी वफ़ादारी है जो
आप अपने दोस्त दाऊद को दिखा रहे हैं? आप
अपने दोस्त के साथ रवाना क्यों न हुए?” 18हूसी
ने जवाब दिया, “नहीं, जिस आदमी को रब और
तमाम इसराईलियों ने मुक़र्रर किया है, वही मेरा
मालिक है, और उसी की ख़िदमत में मैं हाज़िर
रहूँगा। 19दूसरे, अगर किसी की ख़िदमत करनी है
तो क्या दाऊद के बेटे की ख़िदमत करना मुनासिब
नहीं है? जिस तरह मैं आपके बाप की ख़िदमत
करता रहा हूँ उसी तरह अब आपकी ख़िदमत
करूँगा।”

20फिर अबीसलूम अख़ीतुफ़ल से मुख़ा-
तिब हुआ, “आगे क्या करना चाहिए? मुझे
अपना मशवरा पेश करें।” 21अख़ीतुफ़ल ने
जवाब दिया, “आपके बाप ने अपनी कुछ
दाश्ताओं को महल सँभालने के लिए यहाँ छोड़
दिया है। उनके साथ हमबिसतर हो जाएँ। फिर
तमाम इसराईल को मालूम हो जाएगा कि आपने
अपने बाप की ऐसी बेइज़्ज़ती की है कि सुलह का
रास्ता बंद हो गया है। यह देखकर सब जो आपके
साथ हैं मज़बूत हो जाएंगे।” 22अबीसलूम मान
गया, और महल की छत पर उसके लिए ख़ैमा

लगाया गया। उसमें वह पूरे इसराईल के देखते देखते अपने बाप की दाश्ताओं से हमबिसतर हुआ।

23उस वक़्त अख़ीतुफ़ल का हर मशवरा अल्लाह के फ़रमान जैसा माना जाता था। दाऊद और अबीसलूम दोनों यों ही उसके मशवरों की क़दर करते थे।

हूसी और अख़ीतुफ़ल

17 अख़ीतुफ़ल ने अबीसलूम को एक और मशवरा भी दिया। "मुझे इजाज़त दें तो मैं 12,000 फ़ौजियों के साथ
इसी रात दाऊद का ताक़्क़ुब करूँ। 2मैं उस पर
हमला करूँगा जब वह थकामाँदा और बेदिल है। तब वह घबरा जाएगा, और उसके तमाम फ़ौजी भाग जाएंगे। नतीजतन मैं सिर्फ़ बादशाह ही को
मार दूँगा 3और बाक़ी तमाम लोगों को आपके
पास वापस लाऊँगा। जो आदमी आप पकड़ना चाहते हैं उस की मौत पर सब वापस आ जाएंगे। और क़ौम में अमनो-अमान क़ायम हो जाएगा।"

4यह मशवरा अबीसलूम और इसराईल के
तमाम बुज़ुर्गों को पसंद आया। 5ताहम अबीसलूम
ने कहा, "पहले हम हूसी अरकी से भी मशवरा
लें। कोई उसे बुला लाए।" 6हूसी आया तो
अबीसलूम ने उसके सामने अख़ीतुफ़ल का मनसूबा बयान करके पूछा, "आपका क्या ख़याल है? क्या हमें ऐसा करना चाहिए, या आपकी कोई और राय है?"

7हूसी ने जवाब दिया, "जो मशवरा अख़ी-
तुफ़ल ने दिया है वह इस दफ़ा ठीक नहीं। 8आप
तो अपने वालिद और उनके आदमियों से वाक़िफ़ हैं। वह सब माहिर फ़ौजी हैं। वह उस रीछनी की-सी शिद्दत से लड़ेंगे जिससे उसके बच्चे छीन लिए गए हैं। यह भी ज़हन में रखना चाहिए कि आपका बाप तजरबाकार फ़ौजी है। इमकान नहीं कि वह रात को अपने फ़ौजियों के दरमियान
गुज़ारेगा। 9ग़ालिबन वह इस वक़्त भी गहरी खाई
या कहीं और छुप गया है। हो सकता है वह वहाँ से निकलकर आपके दस्तों पर हमला करे और इब्तिदा ही में आपके थोड़े-बहुत अफ़राद मर जाएँ। फिर अफ़वाह फैल जाएगी कि अबीसलूम
के दस्तों में क़त्ले-आम शुरू हो गया है। 10यह
सुनकर आपके तमाम अफ़राद डर के मारे बेदिल हो जाएंगे, ख़ाह वह शेरबबर जैसे बहादुर क्यों न हों। क्योंकि तमाम इसराईल जानता है कि आपका बाप बेहतरीन फ़ौजी है और कि उसके साथी भी दिलेर हैं।

11यह पेशे-नज़र रखकर मैं आपको एक और
मशवरा देता हूँ। शिमाल में दान से लेकर जुनूब में बैर-सबा तक लड़ने के क़ाबिल तमाम इसराईलियों को बुलाएँ। इतने जमा करें कि वह साहिल की रेत की मानिंद होंगे, और आप ख़ुद उनके आगे चलकर लड़ने के लिए निकलें।
12फिर हम दाऊद का खोज लगाकर उस पर
हमला करेंगे। हम उस तरह उस पर टूट पड़ेंगे जिस तरह ओस ज़मीन पर गिरती है। सबके सब हलाक हो जाएंगे, और न वह और न उसके आदमी बच
पाएँगे। 13अगर दाऊद किसी शहर में पनाह ले तो
तमाम इसराईली फ़सील के साथ रस्से लगाकर पूरे शहर को वादी में घसीट ले जाएंगे। पत्थर पर पत्थर बाक़ी नहीं रहेगा!"

14अबीसलूम और तमाम इसराईलियों ने
कहा, "हूसी का मशवरा अख़ीतुफ़ल के मशवरे से बेहतर है।" हक़ीक़त में अख़ीतुफ़ल का मशवरा कहीं बेहतर था, लेकिन रब ने उसे नाकाम होने दिया ताकि अबीसलूम को मुसीबत में डाले।

दाऊद को अबीसलूम का मनसूबा बताया जाता है

15हूसी ने दोनों इमामों सदोक़ और अबियातर
को वह मनसूबा बताया जो अख़ीतुफ़ल ने अबीसलूम और इसराईल के बुज़ुर्गों को पेश किया था। साथ साथ उसने उन्हें अपने मशवरे के बारे
में भी आगाह किया। 16उसने कहा, "अब फ़ौरन
दाऊद को इत्तला दें कि किसी सूरत में भी इस

रात को दरियाए-यरदन की उस जगह पर न गुज़ारें
जहाँ लोग दरिया को पार करते हैं। लाज़िम है कि
आप आज ही दरिया को उबूर कर लें, वरना आप
तमाम साथियों समेत बरबाद हो जाएंगे।”

17यूनतन और अख़ीमाज़ यरूशलम से बाहर
के चश्मे ऐन-राजिल के पास इंतज़ार कर रहे थे,
क्योंकि वह शहर में दाख़िल होकर किसी को
नज़र आने का ख़तरा मोल नहीं ले सकते थे।
एक नौकरानी शहर से निकल आई और उन्हें
हूसी का पैग़ाम दे दिया ताकि वह आगे निकलकर
उसे दाऊद तक पहुँचाएँ। 18लेकिन एक जवान
ने उन्हें देखा और भागकर अबीसलूम को इत्तला
दी। दोनों जल्दी जल्दी वहाँ से चले गए और एक
आदमी के घर में छुप गए जो बहूरीम में रहता
था। उसके सहन में कुआँ था। उसमें वह उतर
गए। 19आदमी की बीवी ने कुएँ के मुँह पर कपड़ा
बिछाकर उस पर अनाज के दाने बिखेर दिए ताकि
किसी को मालूम न हो कि वहाँ कुआँ है।

20अबीसलूम के सिपाही उस घर में पहुँचे और
औरत से पूछने लगे, “अख़ीमाज़ और यूनतन
कहाँ हैं?” औरत ने जवाब दिया, “वह आगे
निकल चुके हैं, क्योंकि वह नदी को पार करना
चाहते थे।” सिपाही दोनों आदमियों का खोज
लगाते लगाते थक गए। आख़िरकार वह ख़ाली
हाथ यरूशलम लौट गए।

21जब चले गए तो अख़ीमाज़ और यूनतन
कुएँ से निकलकर सीधे दाऊद बादशाह के पास
चले गए ताकि उसे पैग़ाम सुनाएँ। उन्होंने कहा,
“लाज़िम है कि आप दरिया को फ़ौरन पार
करें!” फिर उन्होंने दाऊद को अख़ीतुफ़ल का
पूरा मनसूबा बताया। 22दाऊद और उसके तमाम
साथी जल्द ही रवाना हुए और उसी रात दरियाए-
यरदन को उबूर किया। पौ फटते वक़्त एक भी
पीछे नहीं रह गया था।

23जब अख़ीतुफ़ल ने देखा कि मेरा मशवरा रद्द
किया गया है तो वह अपने गधे पर ज़ीन कसकर
अपने वतनी शहर वापस चला गया। वहाँ उसने
घर के तमाम मामलात का बंदोबस्त किया, फिर
जाकर फाँसी ले ली। उसे उसके बाप की क़ब्र में
दफ़नाया गया।

24जब दाऊद महनायम पहुँच गया तो
अबीसलूम इसराईली फ़ौज के साथ दरि-
याए-यरदन को पार करने लगा। 25उसने अमासा
को फ़ौज पर मुक़र्रर किया था, क्योंकि योआब
तो दाऊद के साथ था। अमासा एक इसमाईली
बनाम इतरा का बेटा था। उस की माँ अबीजेल
बिंत नाहस थी, और वह योआब की माँ ज़रूयाह
की बहन थी। 26अबीसलूम और उसके साथियों
ने मुल्के-जिलियाद में पड़ाव डाला।

27जब दाऊद महनायम पहुँचा तो तीन
आदमियों ने उसका इस्तक़बाल किया। सोबी
बिन नाहस अम्मोनियों के दारुल-हुकूमत रब्बा
से, मकीर बिन अम्मियेल लो-दिबार से और
बरज़िल्ली जिलियादी राजिलीम से आए।
28तीनों ने दाऊद और उसके लोगों को बिस्तर,
बासन, मिट्टी के बरतन, गंदुम, जौ, मैदा, अनाज
के भुने हुए दाने, लोबिया, मसूर, 29शहद,
दही, भेड़-बकरियाँ और गाय के दूध का पनीर
मुहैया किया। क्योंकि उन्होंने सोचा, “यह लोग
रेगिस्तान में चलते चलते ज़रूर भूके, प्यासे और
थकेमाँदे हो गए होंगे।”

जंग के लिए तैयारियाँ

18 दाऊद ने अपने फ़ौजियों का मुआयना
करके हज़ार हज़ार और सौ सौ
अफ़राद पर आदमी मुक़र्रर किए। 2फिर उसने
उन्हें तीन हिस्सों में तक़सीम करके एक हिस्से
पर योआब को, दूसरे पर उसके भाई अबीशै बिन
ज़रूयाह को और तीसरे पर इत्ती जाती को मुक़र्रर
किया।

उसने फ़ौजियों को बताया, “मैं ख़ुद भी आपके
साथ लड़ने के लिए निकलूँगा।” 3लेकिन उन्होंने
एतराज़ किया, “ऐसा न करें! अगर हमें भागना
भी पड़े या हमारा आधा हिस्सा मारा भी जाए तो
अबीसलूम के फ़ौजियों के लिए इतना कोई फ़रक़
नहीं पड़ेगा। वह आप ही को पकड़ना चाहते हैं,

क्योंकि आप उनके नज़दीक हममें से 10,000
अफ़राद से ज़्यादा अहम हैं। चुनाँचे बेहतर है कि
आप शहर ही में रहें और वहाँ से हमारी हिमायत
करें।”

4बादशाह ने जवाब दिया, “ठीक है, जो कुछ
आपको माक़ूल लगता है वही करूँगा।” वह शहर
के दरवाज़े पर खड़ा हुआ, और तमाम मर्द सौ
सौ और हज़ार हज़ार के गुरोहों में उसके सामने
से गुज़रकर बाहर निकले। 5योआब, अबीशै और
इत्ती को उसने हुक्म दिया, “मेरी ख़ातिर जवान
अबीसलूम से नरमी से पेश आना!” तमाम
फ़ौजियों ने तीनों कमाँडरों से यह बात सुनी।

अबीसलूम की शिकस्त

6दाऊद के लोग खुले मैदान में इसराई-
लियों से लड़ने गए। इफ़राईम के जंगल में
उनकी टक्कर हुई, 7और दाऊद के फ़ौजियों
ने मुख़ालिफ़ों को शिकस्ते-फ़ाश दी। उनके
20,000 अफ़राद हलाक हुए। 8लड़ाई पूरे जंगल
में फैलती गई। यह जंगल इतना ख़तरनाक था कि
उस दिन तलवार की निसबत ज़्यादा लोग उस की
ज़द में आकर हलाक हो गए।

9अचानक दाऊद के कुछ फ़ौजियों को
अबीसलूम नज़र आया। वह ख़च्चर पर सवार
बलूत के एक बड़े दरख़्त के साये में से गुज़रने
लगा तो उसके बाल दरख़्त की शाख़ों में उलझ
गए। उसका ख़च्चर आगे निकल गया जबकि
अबीसलूम वहीं आसमानो-ज़मीन के दरमियान
लटका रहा। 10जिन आदमियों ने यह देखा उनमें
से एक योआब के पास गया और इत्तला दी, “मैंने
अबीसलूम को देखा है। वह बलूत के एक दरख़्त
में लटका हुआ है।”

11योआब पुकारा, “क्या आपने उसे देखा?
तो उसे वहीं क्यों न मार दिया? फिर मैं आपको
इनाम के तौर पर चाँदी के दस सिक्के और एक
कमरबंद दे देता।” 12लेकिन आदमी ने एतराज़
किया, “अगर आप मुझे चाँदी के हज़ार सिक्के
भी देते तो भी मैं बादशाह के बेटे को हाथ न
लगाता। हमारे सुनते सुनते बादशाह ने आप,
अबीशै और इत्ती को हुक्म दिया, ‘मेरी ख़ातिर
अबीसलूम को नुक़सान न पहुँचाएँ।’ 13और
अगर मैं चुपके से भी उसे क़त्ल करता तो भी
इसकी ख़बर किसी न किसी वक़्त बादशाह
के कानों तक पहुँचती। क्योंकि कोई भी बात
बादशाह से पोशीदा नहीं रहती। अगर मुझे इस
सूरत में पकड़ा जाता तो आप मेरी हिमायत न
करते।”

14योआब बोला, “मेरा वक़्त मज़ीद ज़ाया
मत करो।” उसने तीन नेज़े लेकर अबीसलूम के
दिल में घोंप दिए जब वह अभी ज़िंदा हालत में
दरख़्त से लटका हुआ था। 15फिर योआब के
दस सिलाहबरदारों ने अबीसलूम को घेरकर उसे
हलाक कर दिया।

16तब योआब ने नरसिंगा बजा दिया, और
उसके फ़ौजी दूसरों का ताक़्क़ुब करने से बाज़
आकर वापस आ गए। 17बाक़ी इसराईली अपने
अपने घर भाग गए। योआब के आदमियों ने
अबीसलूम की लाश को एक गहरे गढ़े में फेंककर
उस पर पत्थरों का बड़ा ढेर लगा दिया।

18कुछ देर पहले अबीसलूम इस ख़याल से
बादशाह की वादी में अपनी याद में एक सतून
खड़ा कर चुका था कि मेरा कोई बेटा नहीं है जो
मेरा नाम क़ायम रखे। आज तक यह ‘अबीसलूम
की यादगार’ कहलाता है।

दाऊद को अबीसलूम की मौत की ख़बर मिलती है

19अख़ीमाज़ बिन सदोक़ ने योआब से
दरख़ास्त की, “मुझे दौड़कर बादशाह को
ख़ुशख़बरी सुनाने दें कि रब ने उसे दुश्मनों से
बचा लिया है।” 20लेकिन योआब ने इनकार
किया, “जो पैग़ाम आपको बादशाह तक पहुँचाना
है वह उसके लिए ख़ुशख़बरी नहीं है, क्योंकि
उसका बेटा मर गया है। किसी और वक़्त मैं
ज़रूर आपको उसके पास भेज दूँगा, लेकिन आज
नहीं।” 21उसने एथोपिया के एक आदमी को

हुक्म दिया, “जाएँ और बादशाह को बताएँ।”
आदमी योआब के सामने औंधे मुँह झुक गया और
फिर दौड़कर चला गया।

22लेकिन अख़ीमाज़ ख़ुश नहीं था। वह इसरार
करता रहा, “कुछ भी हो जाए, मेहरबानी करके
मुझे उसके पीछे दौड़ने दें!” एक और बार योआब
ने उसे रोकने की कोशिश की, “बेटे, आप जाने के
लिए क्यों तड़पते हैं? जो ख़बर पहुँचानी है उसके
लिए आपको इनाम नहीं मिलेगा।” 23अख़ीमाज़
ने जवाब दिया, “कोई बात नहीं। कुछ भी हो
जाए, मैं हर सूरत में दौड़कर बादशाह के पास
जाना चाहता हूँ।” तब योआब ने उसे जाने दिया।
अख़ीमाज़ ने दरियाए-यरदन के खुले मैदान का
रास्ता लिया, इसलिए वह एथोपिया के आदमी
से पहले बादशाह के पास पहुँच गया।

24उस वक़्त दाऊद शहर के बाहर और
अंदरवाले दरवाज़ों के दरमियान बैठा इंतज़ार कर
रहा था। जब पहरेदार दरवाज़े के ऊपर की फ़सील
पर चढ़ा तो उसे एक तनहा आदमी नज़र आया जो
दौड़ता हुआ उनकी तरफ़ आ रहा था। 25पहरेदार
ने आवाज़ देकर बादशाह को इत्तला दी। दाऊद
बोला, “अगर अकेला हो तो ज़रूर ख़ुशख़बरी
लेकर आ रहा होगा।” यह आदमी भागता भागता
क़रीब आ गया, 26लेकिन इतने में पहरेदार को
एक और आदमी नज़र आया जो शहर की तरफ़
दौड़ता हुआ आ रहा था। उसने शहर के दरवाज़े के
दरबान को आवाज़ दी, “एक और आदमी दौड़ता
हुआ दिखाई दे रहा है। वह भी अकेला ही आ रहा
है।” दाऊद ने कहा, “वह भी अच्छी ख़बर लेकर
आ रहा है।” 27फिर पहरेदार पुकारा, “लगता
है कि पहला आदमी अख़ीमाज़ बिन सदोक़ है,
क्योंकि वही यों चलता है।” दाऊद को तसल्ली
हुई, “अख़ीमाज़ अच्छा बंदा है। वह ज़रूर अच्छी
ख़बर लेकर आ रहा होगा।”

28दूर से अख़ीमाज़ ने बादशाह को आवाज़
दी, “बादशाह की सलामती हो!” वह औंधे मुँह
बादशाह के सामने झुककर बोला, “रब आपके
ख़ुदा की तमजीद हो! उसने आपको उन लोगों
से बचा लिया है जो मेरे आक़ा और बादशाह के
ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए थे।” 29दाऊद ने पूछा,
“और मेरा बेटा अबीसलूम? क्या वह महफ़ूज़
है?” अख़ीमाज़ ने जवाब दिया, “जब योआब
ने मुझे और बादशाह के दूसरे ख़ादिम को आपके
पास रुख़सत किया तो उस वक़्त बड़ी अफ़रा-
तफ़री थी। मुझे तफ़सील से मालूम न हुआ कि
क्या हो रहा है।” 30बादशाह ने हुक्म दिया, “एक
तरफ़ होकर मेरे पास खड़े हो जाएँ!” अख़ीमाज़
ने ऐसा ही किया।

31फिर एथोपिया का आदमी पहुँच गया। उसने
कहा, “मेरे बादशाह, मेरी ख़ुशख़बरी सुनें! आज
रब ने आपको उन सब लोगों से नजात दिलाई है
जो आपके ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए थे।” 32बादशाह
ने सवाल किया, “और मेरा बेटा अबीसलूम?
क्या वह महफ़ूज़ है?” एथोपिया के आदमी ने
जवाब दिया, “मेरे आक़ा, जिस तरह उसके साथ
हुआ है, उस तरह आपके तमाम दुश्मनों के साथ
हो जाए, उन सबके साथ जो आपको नुक़सान
पहुँचाना चाहते हैं!”

33यह सुनकर बादशाह लरज़ उठा। शहर
के दरवाज़े के ऊपर की फ़सील पर एक
कमरा था। अब बादशाह रोते रोते सीढ़ियों
पर चढ़ने लगा और चीख़ते-चिल्लाते उस
कमरे में चला गया, “हाय मेरे बेटे अबी-
सलूम! मेरे बेटे, मेरे बेटे अबीसलूम! काश मैं ही
तेरी जगह मर जाता। हाय अबीसलूम, मेरे बेटे,
मेरे बेटे!”

योआब दाऊद को समझाता है

19 योआब को इत्तला दी गई, “बाद-
शाह रोते रोते अबीसलूम का मातम
कर रहा है।” 2जब फ़ौजियों को ख़बर मिली कि
बादशाह अपने बेटे का मातम कर रहा है तो फ़तह
पाने पर उनकी सारी ख़ुशी काफ़ूर हो गई। हर
तरफ़ मातम और ग़म का समाँ था। 3उस दिन
दाऊद के आदमी चोरी चोरी शहर में घुस आए,

ऐसे लोगों की तरह जो मैदाने-जंग से फ़रार होने
पर शरमाते हुए चुपके से शहर में आ जाते हैं।
4बादशाह अभी कमरे में बैठा था। अपने मुँह को
ढाँपकर वह चीख़ता-चिल्लाता रहा, “हाय मेरे बेटे
अबीसलूम! हाय अबीसलूम, मेरे बेटे, मेरे बेटे!”
5तब योआब उसके पास जाकर उसे समझाने
लगा, “आज आपके ख़ादिमों ने न सिर्फ़ आपकी
जान बचाई है बल्कि आपके बेटों, बेटियों, बीवियों
और दाश्ताओं की जान भी। तो भी आपने उनका
मुँह काला कर दिया है। 6जो आपसे नफ़रत
करते हैं उनसे आप मुहब्बत रखते हैं जबकि जो
आपसे प्यार करते हैं उनसे आप नफ़रत करते हैं।
आज आपने साफ़ ज़ाहिर कर दिया है कि आपके
कमाँडर और दस्ते आपकी नज़र में कोई हैसियत
नहीं रखते। हाँ, आज मैंने जान लिया है कि अगर
अबीसलूम ज़िंदा होता तो आप ख़ुश होते, ख़ाह
हम बाक़ी तमाम लोग हलाक क्यों न हो जाते।
7अब उठकर बाहर जाएँ और अपने ख़ादिमों की
हौसलाअफ़्ज़ाई करें। रब की क़सम, अगर आप
बाहर न निकलेंगे तो रात तक एक भी आपके
साथ नहीं रहेगा। फिर आप पर ऐसी मुसीबत
आएगी जो आपकी जवानी से लेकर आज तक
आप पर नहीं आई है।”
8तब दाऊद उठा और शहर के दरवाज़े के पास
उतर आया। जब फ़ौजियों को बताया गया कि
बादशाह शहर के दरवाज़े में बैठा है तो वह सब
उसके सामने जमा हुए।

दाऊद यरूशलम वापस आता है

इतने में इसराईली अपने घर भाग गए थे।
9इसराईल के तमाम क़बीलों में लोग आपस में
बहस-मुबाहसा करने लगे, “दाऊद बादशाह ने
हमें हमारे दुश्मनों से बचाया, और उसी ने हमें
फ़िलिस्तियों के हाथ से आज़ाद कर दिया। लेकिन
अबीसलूम की वजह से वह मुल्क से हिजरत कर
गया है। 10अब जब अबीसलूम जिसे हमने मसह
करके बादशाह बनाया था मर गया है तो आप
बादशाह को वापस लाने से क्यों झिजकते हैं?”
11दाऊद ने सदोक़ और अबियातर इमामों की
मारिफ़त यहूदाह के बुज़ुर्गों को इत्तला दी, “यह
बात मुझ तक पहुँच गई है कि तमाम इसराईल
अपने बादशाह का इस्तक़बाल करके उसे महल
में वापस लाना चाहता है। तो फिर आप क्यों देर
कर रहे हैं? क्या आप मुझे वापस लाने में सबसे
आख़िर में आना चाहते हैं? 12आप मेरे भाई,
मेरे क़रीबी रिश्तेदार हैं। तो फिर आप बादशाह
को वापस लाने में आख़िर में क्यों आ रहे हैं?”
13और अबीसलूम के कमाँडर अमासा को दोनों
इमामों ने दाऊद का यह पैग़ाम पहुँचाया, “सुनें,
आप मेरे भतीजे हैं, इसलिए अब से आप ही
योआब की जगह मेरी फ़ौज के कमाँडर होंगे।
अल्लाह मुझे सख़्त सज़ा दे अगर मैं अपना यह
वादा पूरा न करूँ।”
14इस तरह दाऊद यहूदाह के तमाम दिलों को
जीत सका, और सबके सब उसके पीछे लग
गए। उन्होंने उसे पैग़ाम भेजा, “वापस आएँ, आप
भी और आपके तमाम लोग भी।” 15तब दाऊद
यरूशलम वापस चलने लगा। जब वह दरियाए-
यरदन तक पहुँचा तो यहूदाह के लोग जिलजाल
में आए ताकि उससे मिलें और उसे दरिया के दूसरे
किनारे तक पहुँचाएँ।

दाऊद सिमई को मुआफ़ कर देता है

16बिनयमीनी शहर बहूरीम का सिमई बिन
जीरा भी भागकर यहूदाह के आदमियों के साथ
दाऊद से मिलने आया। 17बिनयमीन के क़बीले
के हज़ार आदमी उसके साथ थे। साऊल का
पुराना नौकर ज़ीबा भी अपने 15 बेटों और 20
नौकरों समेत उनमें शामिल था। बादशाह के
यरदन के किनारे तक पहुँचने से पहले पहले 18वह
जल्दी से दरिया को उबूर करके उसके पास आए
ताकि बादशाह के घराने को दरिया के दूसरे किनारे
तक पहुँचाएँ और हर तरह से बादशाह को ख़ुश
रखें।
दाऊद दरिया को पार करने को था कि सिमई
औंधे मुँह उसके सामने गिर गया। 19उसने

इलतमास की, "मेरे आक़ा, मुझे मुआफ़ करें।
जो ज़्यादती मैंने उस दिन आपसे की जब आपको
यरूशलम को छोड़ना पड़ा वह याद न करें। बराहे-
करम यह बात अपने ज़हन से निकाल दें। 20मैंने
जान लिया है कि मुझसे बड़ा जुर्म सरज़द हुआ
है, इसलिए आज मैं यूसुफ़ के घराने के तमाम
अफ़राद से पहले ही अपने आक़ा और बादशाह
के हुज़ूर आ गया हूँ।"
21अबीशै बिन ज़रूयाह बोला, "सिमई सज़ाए-
मौत के लायक़ है! उसने रब के मसह किए हुए
बादशाह पर लानत की है।" 22लेकिन दाऊद ने
उसे डाँटा, "मेरा आप और आपके भाई योआब
के साथ क्या वास्ता? ऐसी बातों से आप इस दिन
मेरे मुख़ालिफ़ बन गए हैं! आज तो इसराईल में
किसी को सज़ाए-मौत देने का नहीं बल्कि ख़ुशी
का दिन है। देखें, इस दिन मैं दुबारा इसराईल का
बादशाह बन गया हूँ!" 23फिर बादशाह सिमई
से मुख़ातिब हुआ, "रब की क़सम, आप नहीं
मरेंगे।"

मिफ़ीबोसत दाऊद से मिलने आता है

24साऊल का पोता मिफ़ीबोसत भी बाद-
शाह से मिलने आया। उस दिन से जब दाऊद
को यरूशलम को छोड़ना पड़ा आज तक जब
वह सलामती से वापस पहुँचा मिफ़ीबोसत मातम
की हालत में रहा था। न उसने अपने पाँव न
अपने कपड़े धोए थे, न अपनी मूँछों की काँट-
छाँट की थी। 25जब वह बादशाह से मिलने के
लिए यरूशलम से निकला तो बादशाह ने उससे
सवाल किया, "मिफ़ीबोसत, आप मेरे साथ क्यों
नहीं गए थे?"
26उसने जवाब दिया, "मेरे आक़ा और
बादशाह, मैं जाने के लिए तैयार था, लेकिन मेरा
नौकर ज़ीबा मुझे धोका देकर अकेला ही चला
गया। मैंने तो उसे बताया था, 'मेरे गधे पर ज़ीन
कसो ताकि मैं बादशाह के साथ रवाना हो सकूँ।'
और मेरा जाने का कोई और वसीला था नहीं,
क्योंकि मैं दोनों टाँगों से माज़ूर हूँ। 27ज़ीबा ने
मुझ पर तोहमत लगाई है। लेकिन मेरे आक़ा और
बादशाह अल्लाह के फ़रिश्ते जैसे हैं। मेरे साथ
वही कुछ करें जो आपको मुनासिब लगे। 28मेरे
दादा के पूरे घराने को आप हलाक कर सकते
थे, लेकिन फिर भी आपने मेरी इज़्ज़त करके उन
मेहमानों में शामिल कर लिया जो रोज़ाना आपकी
मेज़ पर खाना खाते हैं। चुनाँचे मेरा क्या हक़ है
कि मैं बादशाह से मज़ीद अपील करूँ।"
29बादशाह बोला, "अब बस करें। मैंने फ़ैसला
कर लिया है कि आपकी ज़मीनें आप और ज़ीबा
में बराबर तक़सीम की जाएँ।" 30मिफ़ीबोसत
ने जवाब दिया, "वह सब कुछ ले ले। मेरे लिए
यही काफ़ी है कि आज मेरे आक़ा और बादशाह
सलामती से अपने महल में वापस आ पहुँचे हैं।"

दाऊद और बरज़िल्ली

31बरज़िल्ली जिलियादी राजिलीम से आ-
या था ताकि बादशाह के साथ दरियाए-यरदन
को पार करके उसे रुख़सत करे। 32बरज़िल्ली
80 साल का था। महनायम में रहते वक़्त उसी
ने दाऊद की मेहमान-नवाज़ी की थी, क्योंकि वह
बहुत अमीर था। 33अब दाऊद ने बरज़िल्ली को
दावत दी, "मेरे साथ यरूशलम जाकर वहाँ रहें!
मैं आपका हर तरह से ख़याल रखूँगा।"
34लेकिन बरज़िल्ली ने इनकार किया, "मेरी
ज़िंदगी के थोड़े दिन बाक़ी हैं, मैं क्यों यरूशलम
में जा बसूँ? 35मेरी उम्र 80 साल है। न मैं
अच्छी और बुरी चीज़ों में इम्तियाज़ कर सकता,
न मुझे खाने-पीने की चीज़ों का मज़ा आता है।
गीत गानेवालों की आवाज़ें भी मुझसे सुनी नहीं
जातीं। नहीं मेरे आक़ा और बादशाह, अगर मैं
आपके साथ जाऊँ तो आपके लिए सिर्फ़ बोझ का
बाइस हूँगा। 36इसकी ज़रूरत नहीं कि आप मुझे
इस क़िस्म का मुआवज़ा दें। मैं बस आपके साथ
दरियाए-यरदन को पार करूँगा 37और फिर अगर
इजाज़त हो तो वापस चला जाऊँगा। मैं अपने ही
शहर में मरना चाहता हूँ, जहाँ मेरे माँ-बाप की क़ब्र
है। लेकिन मेरा बेटा किमहाम आप की ख़िदमत

में हाज़िर है। वह आपके साथ चला जाए तो आप
उसके लिए वह कुछ करें जो आपको मुनासिब
लगे।”
38दाऊद ने जवाब दिया, “ठीक है, किमहाम
मेरे साथ जाए। और जो कुछ भी आप चाहेंगे मैं
उसके लिए करूँगा। अगर कोई काम है जो मैं
आपके लिए कर सकता हूँ तो मैं हाज़िर हूँ।”
39फिर दाऊद ने अपने साथियों समेत दरिया
को उबूर किया। बरज़िल्ली को बोसा देकर उसने
उसे बरकत दी। बरज़िल्ली अपने शहर वापस चल
पड़ा 40जबकि दाऊद जिलजाल की तरफ़ बढ़
गया। किमहाम भी साथ गया। इसके अलावा
यहूदाह के सब और इसराईल के आधे लोग उसके
साथ चले।

इसराईल और यहूदाह आपस में झगड़ते हैं

41रास्ते में इसराईल के मर्द बादशाह के पास
आकर शिकायत करने लगे, “हमारे भाइयों
यहूदाह के लोगों ने आपको आपके घराने और
फ़ौजियों समेत चोरी चोरी क्यों दरियाए-यरदन
के मग़रिबी किनारे तक पहुँचाया? यह ठीक नहीं
है।”
42यहूदाह के मर्दों ने जवाब दिया, “बात यह है
कि हम बादशाह के क़रीबी रिश्तेदार हैं। आपको
यह देखकर ग़ुस्सा क्यों आ गया है? न हमने
बादशाह का खाना खाया, न उससे कोई तोह्फ़ा
पाया है।”
43तो भी इसराईल के मर्दों ने एतराज़ किया,
“हमारे दस क़बीले हैं, इसलिए हमारा बादशाह
की ख़िदमत करने का दस गुना ज़्यादा हक़ है।
तो फिर आप हमें हक़ीर क्यों जानते हैं? हमने
तो पहले अपने बादशाह को वापस लाने की बात
की थी।” यों बहस-मुबाहसा जारी रहा, लेकिन
यहूदाह के मर्दों की बातें ज़्यादा सख़्त थीं।

सबा दाऊद के ख़िलाफ़ उठ खड़ा होता है

20 झगड़नेवालों में से एक बदमाश था
जिसका नाम सबा बिन बिक्री था।
वह बिनयमीनी था। अब उसने नरसिंगा बजाकर
एलान किया, “न हमें दाऊद से मीरास में कुछ
मिलेगा, न यस्सी के बेटे से कुछ मिलने की
उम्मीद है। ऐ इसराईल, हर एक अपने घर वापस
चला जाए!” 2तब तमाम इसराईली दाऊद को
छोड़कर सबा बिन बिक्री के पीछे लग गए। सिर्फ़
यहूदाह के मर्द अपने बादशाह के साथ लिपटे रहे
और उसे यरदन से लेकर यरूशलम तक पहुँचाया।
3जब दाऊद अपने महल में दाख़िल हुआ तो
उसने उन दस दाश्ताओं का बंदोबस्त कराया
जिनको उसने महल को सँभालने के लिए पीछे
छोड़ दिया था। वह उन्हें एक ख़ास घर में अलग
रखकर उनकी तमाम ज़रूरियात पूरी करता रहा
लेकिन उनसे कभी हमबिसतर न हुआ। वह कहीं
जा न सकीं, और उन्हें ज़िंदगी के आख़िरी लमहे
तक बेवा की-सी ज़िंदगी गुज़ारनी पड़ी।
4फिर दाऊद ने अमासा को हुक्म दिया,
“यहूदाह के तमाम फ़ौजियों को मेरे पास बुला
लाएँ। तीन दिन के अंदर अंदर उनके साथ हाज़िर
हो जाएँ।” 5अमासा रवाना हुआ। लेकिन जब
तीन दिन के बाद लौट न आया 6तो दाऊद
अबीशै से मुख़ातिब हुआ, “आख़िर में सबा बिन
बिक्री हमें अबीसलूम की निसबत ज़्यादा नुक़सान
पहुँचाएगा। जल्दी करें, मेरे दस्तों को लेकर
उसका ताक़्क़ुब करें। ऐसा न हो कि वह क़िलाबंद
शहरों को क़ब्ज़े में ले ले और यों हमारा बड़ा
नुक़सान हो जाए।” 7तब योआब के सिपाही,
बादशाह का दस्ता करेती-ओ-फ़लेती और तमाम
माहिर फ़ौजी यरूशलम से निकलकर सबा बिन
बिक्री का ताक़्क़ुब करने लगे।
8जब वह जिबऊन की बड़ी चट्टान के पास पहुँचे
तो उनकी मुलाक़ात अमासा से हुई जो थोड़ी देर
पहले वहाँ पहुँच गया था। योआब अपना फ़ौजी
लिबास पहने हुए था, और उस पर उसने कमर
में अपनी तलवार की पेटी बाँधी हुई थी। अब जब
वह अमासा से मिलने गया तो उसने अपने बाएँ
हाथ से तलवार को चोरी चोरी मियान से निकाल
लिया। 9उसने सलाम करके कहा, “भाई, क्या

सब ठीक है?” और फिर अपने दहने हाथ से
अमासा की दाढ़ी को यों पकड़ लिया जैसे उसे
बोसा देना चाहता हो। 10अमासा ने योआब के
दूसरे हाथ में तलवार पर ध्यान न दिया, और
अचानक योआब ने उसे इतने ज़ोर से पेट में घोंप
दिया कि उस की अंतड़ियाँ फूटकर ज़मीन पर
गिर गईं। तलवार को दुबारा इस्तेमाल करने की
ज़रूरत ही नहीं थी, क्योंकि अमासा फ़ौरन मर
गया।

फिर योआब और अबीशै सबा का ताक़्क़ुब
करने के लिए आगे बढ़े। 11योआब का एक
फ़ौजी अमासा की लाश के पास खड़ा रहा और
गुज़रनेवाले फ़ौजियों को आवाज़ देता रहा, “जो
योआब और दाऊद के साथ है वह योआब के
पीछे हो ले!” 12लेकिन जितने वहाँ से गुज़रे
वह अमासा का ख़ूनआलूदा और तड़पता हुआ
जिस्म देखकर रुक गए। जब आदमी ने देखा कि
लाश रुकावट का बाइस बन गई है तो उसने उसे
रास्ते से हटाकर खेत में घसीट लिया और उस पर
कपड़ा डाल दिया। 13लाश के ग़ायब हो जाने पर
सब लोग योआब के पीछे चले गए और सबा का
ताक़्क़ुब करने लगे।

14इतने में सबा पूरे इसराईल से गुज़रते गुज़रते
शिमाल के शहर अबील-बैत-माका तक पहुँच गया
था। बिक्री के ख़ानदान के तमाम मर्द भी उसके
पीछे लगकर वहाँ पहुँच गए थे। 15तब योआब
और उसके फ़ौजी वहाँ पहुँचकर शहर का मुहासरा
करने लगे। उन्होंने शहर की बाहरवाली दीवार के
साथ साथ मिट्टी का बड़ा तोदा लगाया और उस
पर से गुज़रकर अंदरवाली बड़ी दीवार तक पहुँच
गए। वहाँ वह दीवार की तोड़-फोड़ करने लगे
ताकि वह गिर जाए।

16तब शहर की एक दानिशमंद औरत ने
फ़सील से योआब के लोगों को आवाज़ दी,
“सुनें! योआब को यहाँ बुला लें ताकि मैं उससे
बात कर सकूँ।” 17जब योआब दीवार के पास
आया तो औरत ने सवाल किया, “क्या आप
योआब हैं?” योआब ने जवाब दिया, “मैं ही
हूँ।” औरत ने दरख़ास्त की, “ज़रा मेरी बातों
पर ध्यान दें।” योआब बोला, “ठीक है, मैं सुन
रहा हूँ।” 18फिर औरत ने अपनी बात पेश की,
“पुराने ज़माने में कहा जाता था कि अबील शहर
से मशवरा लो तो बात बनेगी। 19देखें, हमारा
शहर इसराईल का सबसे ज़्यादा अमनपसंद और
वफ़ादार शहर है। आप एक ऐसा शहर तबाह करने
की कोशिश कर रहे हैं जो ‘इसराईल की माँ’
कहलाता है। आप रब की मीरास को क्यों हड़प
कर लेना चाहते हैं?”

20योआब ने जवाब दिया, “अल्लाह न करे
कि मैं आपके शहर को हड़प या तबाह करूँ।
21मेरे आने का एक और मक़सद है। इफ़राईम
के पहाड़ी इलाक़े का एक आदमी दाऊद बादशाह
के ख़िलाफ़ उठ खड़ा हुआ है जिसका नाम सबा
बिन बिक्री है। उसे ढूँड रहे हैं। उसे हमारे हवाले
करें तो हम शहर को छोड़कर चले जाएंगे।”

औरत ने कहा, “ठीक है, हम दीवार पर से
उसका सर आपके पास फेंक देंगे।” 22उसने
अबील-बैत-माका के बाशिंदों से बात की और
अपनी हिकमत से उन्हें क़ायल किया कि ऐसा
ही करना चाहिए। उन्होंने सबा का सर क़लम
करके योआब के पास फेंक दिया। तब योआब ने
नरसिंगा बजाकर शहर को छोड़ने का हुक्म दिया,
और तमाम फ़ौजी अपने अपने घर वापस चले
गए। योआब ख़ुद यरूशलम में दाऊद बादशाह के
पास लौट गया।

दाऊद के आला अफ़सर

23योआब पूरी इसराईली फ़ौज पर, बिना-
याह बिन यहोयदा शाही दस्ते करेती-ओ-
फ़लेती पर 24और अदोराम बेगारियों पर
मुक़र्रर था। यहूसफ़त बिन अख़ीलूद बाद-
शाह का मुशीरे-ख़ास था। 25सिवा मीरमुंशी था
और सदोक़ और अबियातर इमाम थे। 26ईरा
याईरी दाऊद का ज़ाती इमाम था।

साऊल के जुर्म का कफ़्फ़ारा

21 दाऊद की हुकूमत के दौरान काल पड़ गया जो तीन साल तक जारी रहा। जब दाऊद ने इसकी वजह दरियाफ़्त की तो रब ने जवाब दिया, "काल इसलिए ख़त्म नहीं हो रहा कि साऊल ने जिबऊनियों को क़त्ल किया था।"
2तब बादशाह ने जिबऊनियों को बुला लिया ताकि उनसे बात करे। असल में वह इसराईली नहीं बल्कि अमोरियों का बचा-खुचा हिस्सा थे। मुल्के-कनान पर क़ब्ज़ा करते वक़्त इसराईलियों ने क़सम खाकर वादा किया था कि हम आपको हलाक नहीं करेंगे। लेकिन साऊल ने इसराईल और यहूदाह के लिए जोश में आकर उन्हें हलाक करने की कोशिश की थी।
3दाऊद ने जिबऊनियों से पूछा, "मैं उस ज़्यादती का कफ़्फ़ारा किस तरह दे सकता हूँ जो आपसे हुई है? मैं आपके लिए क्या करूँ ताकि आप दुबारा उस ज़मीन को बरकत दें जो रब ने हमें मीरास में दी है?"
4उन्होंने जवाब दिया, "जो साऊल ने हमारे और हमारे ख़ानदानों के साथ किया है उसका इज़ाला सोने-चाँदी से नहीं किया जा सकता। यह भी मुनासिब नहीं कि हम इसके एवज़ किसी इसराईली को मार दें।" दाऊद ने सवाल किया, "तो फिर मैं आपके लिए क्या करूँ?"
5जिबऊनियों ने कहा, "साऊल ही ने हमें हलाक करने का मनसूबा बनाया था, वही हमें तबाह करना चाहता था ताकि हम इसराईल की किसी भी जगह क़ायम न रह सकें।
6इसलिए साऊल की औलाद में से सात मर्दों को हमारे हवाले कर दें। हम उन्हें रब के चुने हुए बादशाह साऊल के वतनी शहर जिबिया में रब के पहाड़ पर मौत के घाट उतारकर उसके हुज़ूर लटका दें।"
बादशाह ने जवाब दिया, "मैं उन्हें आपके हवाले कर दूँगा।"
7यूनतन का बेटा मिफ़ीबोसत साऊल का पोता तो था, लेकिन बादशाह ने उसे न छेड़ा, क्योंकि उसने रब की क़सम खाकर यूनतन से वादा किया था कि मैं आपकी औलाद को कभी नुक़सान नहीं पहुँचाऊँगा।
8चुनाँचे उसने साऊल की दाश्ता रिसफ़ा बिंत ऐयाह के दो बेटों अरमोनी और मिफ़ीबोसत को और इसके अलावा साऊल की बेटी मीरब के पाँच बेटों को चुन लिया। मीरब बरज़िल्ली महूलाती के बेटे अदरियेल की बीवी थी।
9इन सात आदमियों को दाऊद ने जिबऊनियों के हवाले कर दिया।
सातों आदमियों को मज़कूरा पहाड़ पर लाया गया। वहाँ जिबऊनियों ने उन्हें क़त्ल करके रब के हुज़ूर लटका दिया। वह सब एक ही दिन मर गए। उस वक़्त जौ की फ़सल की कटाई शुरू हुई थी।
10तब रिसफ़ा बिंत ऐयाह सातों लाशों के पास गई और पत्थर पर अपने लिए टाट का कपड़ा बिछाकर लाशों की हिफ़ाज़त करने लगी। दिन के वक़्त वह परिंदों को भगाती और रात के वक़्त जंगली जानवरों को लाशों से दूर रखती रही। वह बहार के मौसम में फ़सल की कटाई के पहले दिनों से लेकर उस वक़्त तक वहाँ ठहरी रही जब तक बारिश न हुई।
11जब दाऊद को मालूम हुआ कि साऊल की दाश्ता रिसफ़ा ने क्या किया है
12-14तो वह यबीस-जिलियाद के बाशिंदों के पास गया और उनसे साऊल और उसके बेटे यूनतन की हड्डियों को लेकर साऊल के बाप क़ीस की क़ब्र में दफ़नाया। (जब फ़िलिस्तियों ने जिलबुअ के पहाड़ी इलाक़े में इसराईलियों को शिकस्त दी थी तो उन्होंने साऊल और यूनतन की लाशों को बैत-शान के चौक में लटका दिया था। तब यबीस-जिलियाद के आदमी चोरी चोरी वहाँ आकर लाशों को अपने पास ले गए थे।) दाऊद ने जिबिया में अब तक लटकी सात लाशों को भी उतारकर ज़िला में क़ीस की क़ब्र में दफ़नाया। ज़िला बिनयमीन के क़बीले की आबादी है।
जब सब कुछ दाऊद के हुक्म के मुताबिक़ किया गया था तो रब ने मुल्क के लिए दुआएँ सुन लीं।

फ़िलिस्तियों से जंगें

15एक और बार फ़िलिस्तियों और इसराई-
लियों के दरमियान जंग छिड़ गई। दाऊद अपनी
फ़ौज समेत फ़िलिस्तियों से लड़ने के लिए
निकला। जब वह लड़ता लड़ता निढाल हो गया
था 16तो एक फ़िलिस्ती ने उस पर हमला
किया जिसका नाम इशबी-बनोब था। यह आदमी
देवक़ामत मर्द रफ़ा की नसल से था। उसके पास
नई तलवार और इतना लंबा नेज़ा था कि सिर्फ़
उस की पीतल की नोक का वज़न तक़रीबन
साढ़े 3 किलोग्राम था। 17लेकिन अबीशै बिन
ज़रूयाह दौड़कर दाऊद की मदद करने आया और
फ़िलिस्ती को मार डाला। इसके बाद दाऊद के
फ़ौजियों ने क़सम खाई, “आइंदा आप लड़ने के
लिए हमारे साथ नहीं निकलेंगे। ऐसा न हो कि
इसराईल का चराग़ बुझ जाए।”

18इसके बाद इसराईलियों को जूब के क़रीब
भी फ़िलिस्तियों से लड़ना पड़ा। वहाँ सिब्बकी
हूसाती ने देवक़ामत म्रद रफ़ा की औलाद में से
एक आदमी को मार डाला जिसका नाम सफ़ था।

19जूब के क़रीब एक और लड़ाई छिड़ गई।
इसके दौरान बैत-लहम के इल्हनान बिन यारे-
उरजीम ने जाती जालूत को मौत के घाट उतार
दिया। जालूत का नेज़ा खड्डी के शहतीर जैसा बड़ा
था। 20एक और दफ़ा जात के पास लड़ाई हुई।
फ़िलिस्तियों का एक फ़ौजी जो रफ़ा की नसल
का था बहुत लंबा था। उसके हाथों और पैरों की
छः छः उँगलियाँ यानी मिलकर 24 उँगलियाँ थीं।
21जब वह इसराईलियों का मज़ाक़ उड़ाने लगा
तो दाऊद के भाई सिमआ के बेटे यूनतन ने उसे
मार डाला। 22जात के यह देवक़ामत मर्द रफ़ा की
औलाद थे, और वह दाऊद और उसके फ़ौजियों
के हाथों हलाक हुए।

दाऊद का गीत

22 जिस दिन रब ने दाऊद को तमाम
दुश्मनों और साऊल के हाथ से बचाया
उस दिन बादशाह ने गीत गाया,

2“रब मेरी चट्टान, मेरा क़िला और मेरा
नजातदहिंदा है।

3मेरा ख़ुदा मेरी चट्टान है जिसमें मैं पनाह लेता
हूँ। वह मेरी ढाल, मेरी नजात का पहाड़, मेरा बुलंद
हिसार और मेरी पनाहगाह है। तू मेरा नजातदहिंदा
है जो मुझे ज़ुल्मो-तशद्दुद से बचाता है।

4मैं रब को पुकारता हूँ, उस की तमजीद हो!
तब वह मुझे दुश्मनों से छुटकारा देता है।

5मौत की मौजों ने मुझे घेर लिया, हलाकत के
सैलाब ने मेरे दिल पर दहशत तारी की।

6पाताल के रस्सों ने मुझे जकड़ लिया, मौत ने
मेरे रास्ते में अपने फंदे डाल दिए।

7जब मैं मुसीबत में फँस गया तो मैंने रब को
पुकारा। मैंने मदद के लिए अपने ख़ुदा से फ़रियाद
की तो उसने अपनी सुकूनतगाह से मेरी आवाज़
सुनी, मेरी चीख़ें उसके कान तक पहुँच गईं।

8तब ज़मीन लरज़ उठी और थरथराने लगी,
आसमान की बुनियादें रब के ग़ज़ब के सामने
काँपने और झूलने लगीं।

9उस की नाक से धुआँ निकल आया, उसके
मुँह से भस्म करनेवाले शोले और दहकते कोयले
भड़क उठे।

10आसमान को झुकाकर वह नाज़िल हुआ।
जब उतर आया तो उसके पाँवों के नीचे अंधेरा ही
अंधेरा था।

11वह करूबी फ़रिश्ते पर सवार हुआ और
उड़कर हवा के परों पर मँडलाने लगा।

12उसने अंधेरे को अपनी छुपने की जगह
बनाया, बारिश के काले और घने बादल ख़ैमे की
तरह अपने इर्दगिर्द लगाए।

13उसके हुज़ूर की तेज़ रौशनी से शोलाज़न
कोयले फूट निकले।

14रब आसमान से कड़कने लगा, अल्लाह
तआला की आवाज़ गूँज उठी।

15उसने अपने तीर चला दिए तो दुश्मन तित्तर-बित्तर हो गए। उस की बिजली इधर-उधर गिरती गई तो उनमें हलचल मच गई।
16रब ने डाँटा तो समुंदर की वादियाँ ज़ाहिर हुईं, जब वह ग़ुस्से में गरजा तो उसके दम के झोंकों से ज़मीन की बुनियादें नज़र आईं।

17बुलंदियों पर से अपना हाथ बढ़ाकर उसने मुझे पकड़ लिया, गहरे पानी में से खींचकर मुझे निकाल लाया।
18उसने मुझे मेरे ज़बरदस्त दुश्मन से बचाया, उनसे जो मुझसे नफ़रत करते हैं, जिन पर मैं ग़ालिब न आ सका।
19जिस दिन मैं मुसीबत में फँस गया उस दिन उन्होंने मुझ पर हमला किया, लेकिन रब मेरा सहारा बना रहा।
20उसने मुझे तंग जगह से निकालकर छुटकारा दिया, क्योंकि वह मुझसे ख़ुश था।

21रब मुझे मेरी रास्तबाज़ी का अज्र देता है। मेरे हाथ साफ़ हैं, इसलिए वह मुझे बरकत देता है।
22क्योंकि मैं रब की राहों पर चलता रहा हूँ, मैं बदी करने से अपने ख़ुदा से दूर नहीं हुआ।
23उसके तमाम अहकाम मेरे सामने रहे हैं, मैं उसके फ़रमानों से नहीं हटा।
24उसके सामने ही मैं बेइलज़ाम रहा, गुनाह करने से बाज़ रहा हूँ।
25इसलिए रब ने मुझे मेरी रास्तबाज़ी का अज्र दिया, क्योंकि उस की आँखों के सामने ही मैं पाक-साफ़ साबित हुआ।

26ऐ अल्लाह, जो वफ़ादार है उसके साथ तेरा सुलूक वफ़ादारी का है, जो बेइलज़ाम है उसके साथ तेरा सुलूक बेइलज़ाम है।
27जो पाक है उसके साथ तेरा सुलूक पाक है। लेकिन जो कजरौ है उसके साथ तेरा सुलूक भी कजरवी का है।
28तू पस्तहालों को नजात देता है, और तेरी आँखें मग़रूरों पर लगी रहती हैं ताकि उन्हें पस्त करें।

29ऐ रब, तू ही मेरा चराग़ है, रब ही मेरे अंधेरे को रौशन करता है।
30क्योंकि तेरे साथ मैं फ़ौजी दस्ते पर हमला कर सकता, अपने ख़ुदा के साथ दीवार को फलाँग सकता हूँ।

31अल्लाह की राह कामिल है, रब का फ़रमान ख़ालिस है। जो भी उसमें पनाह ले उस की वह ढाल है।
32क्योंकि रब के सिवा कौन ख़ुदा है? हमारे ख़ुदा के सिवा कौन चट्टान है?
33अल्लाह मुझे क़ुव्वत से कमरबस्ता करता, वह मेरी राह को कामिल कर देता है।
34वह मेरे पाँवों को हिरन की-सी फुरती अता करता, मुझे मज़बूती से मेरी बुलंदियों पर खड़ा करता है।
35वह मेरे हाथों को जंग करने की तरबियत देता है। अब मेरे बाज़ू पीतल की कमान को भी तान लेते हैं।

36ऐ रब, तूने मुझे अपनी नजात की ढाल बख़्श दी है, तेरी नरमी ने मुझे बड़ा बना दिया है।
37तू मेरे क़दमों के लिए रास्ता बना देता है, इसलिए मेरे टख़ने नहीं डगमगाते।
38मैंने अपने दुश्मनों का ताक़्क़ुब करके उन्हें कुचल दिया, मैं बाज़ न आया जब तक वह ख़त्म न हो गए।
39मैंने उन्हें तबाह करके यों पाश पाश कर दिया कि दुबारा उठ न सके बल्कि गिरकर मेरे पाँवों तले पड़े रहे।
40क्योंकि तूने मुझे जंग करने के लिए क़ुव्वत से कमरबस्ता कर दिया, तूने मेरे मुख़ालिफ़ों को मेरे सामने झुका दिया।

41तूने मेरे दुश्मनों को मेरे सामने से भगा दिया, और मैंने नफ़रत करनेवालों को तबाह कर दिया।
42वह मदद के लिए चीख़ते-चिल्लाते रहे, लेकिन बचानेवाला कोई नहीं था। वह रब को पुकारते रहे, लेकिन उसने जवाब न दिया।
43मैंने उन्हें चूर चूर करके गर्द की तरह हवा में उड़ा दिया। मैंने उन्हें गली में मिट्टी की तरह पाँवों तले रौंदकर रेज़ा रेज़ा कर दिया।

44तूने मुझे मेरी क़ौम के झगड़ों से बचाकर अक़्वाम पर मेरी हुकूमत क़ायम रखी है। जिस क़ौम से मैं नावाक़िफ़ था वह मेरी ख़िदमत करती है।
45परदेसी दबककर मेरी ख़ुशामद करते हैं। ज्योंही मैं बात करता हूँ तो वह मेरी सुनते हैं।
46वह हिम्मत हारकर काँपते हुए अपने क़िलों से निकल आते हैं।

47रब ज़िंदा है! मेरी चट्टान की तमजीद हो! मेरे ख़ुदा की ताज़ीम हो जो मेरी नजात की चट्टान है।
48वही ख़ुदा है जो मेरा इंतक़ाम लेता, अक़्वाम को मेरे ताबे कर देता
49और मुझे मेरे दुश्मनों से छुटकारा देता है। यक़ीनन तू मुझे मेरे मुख़ालिफ़ों पर सरफ़राज़ करता, मुझे ज़ालिमों से बचाए रखता है।

50ऐ रब, इसलिए मैं अक़्वाम में तेरी हम्दो-सना करूँगा, तेरे नाम की तारीफ़ में गीत गाऊँगा।
51क्योंकि रब अपने बादशाह को बड़ी नजात देता है, वह अपने मसह किए हुए बादशाह दाऊद और उस की औलाद पर हमेशा तक मेहरबान रहेगा।”

दाऊद के आख़िरी अलफ़ाज़

23 दर्जे-ज़ैल दाऊद के आख़िरी अलफ़ाज़ हैं :

“दाऊद बिन यस्सी का फ़रमान जिसे अल्लाह ने सरफ़राज़ किया, जिसे याक़ूब के ख़ुदा ने मसह करके बादशाह बना दिया था, और जिसकी तारीफ़ इसराईल के गीत करते हैं,
2रब के रूह ने मेरी मारिफ़त बात की, उसका फ़रमान मेरी ज़बान पर था।
3इसराईल के ख़ुदा ने फ़रमाया, इसराईल की चट्टान मुझसे हमकलाम हुई, ‘जो इनसाफ़ से हुकूमत करता है, जो अल्लाह का ख़ौफ़ मानकर हुक्मरानी करता है,
4वह सुबह की रौशनी की मानिंद है, उस तुलूए-आफ़ताब की मानिंद जब बादल छाए नहीं होते। जब उस की किरणें बारिश के बाद ज़मीन पर पड़ती हैं तो पौदे फूट निकलते हैं।’
5यक़ीनन मेरा घराना मज़बूती से अल्लाह के साथ है, क्योंकि उसने मेरे साथ अबदी अहद बाँधा है, ऐसा अहद जिसका हर पहलू मुनज़्ज़म और महफ़ूज़ है। वह मेरी नजात तकमील तक पहुँचाएगा और मेरी हर आरज़ू पूरी करेगा।
6लेकिन बेदीन ख़ारदार झाड़ियों की मानिंद हैं जो हवा के झोंकों से इधर-उधर बिखर गई हैं। काँटों की वजह से कोई भी हाथ नहीं लगाता।
7लोग उन्हें लोहे के औज़ार या नेज़े के दस्ते से जमा करके वहीं के वहीं जला देते हैं।”

दाऊद के सूरमा

8दर्जे-ज़ैल दाऊद के सूरमाओं की फ़ह-रिस्त है। जो तीन अफ़सर योआब के भाई अबीशै के ऐन बाद आते थे उनमें योशेब-बशेबत तह्कमूनी पहले नंबर पर आता था। एक बार उसने अपने नेज़े से 800 आदमियों को मार दिया।

9इन तीन अफ़सरों में से दूसरी जगह पर इलियज़र बिन दोदो बिन अख़ूही आता था। एक जंग में जब उन्होंने फ़िलिस्तियों को चैलेंज दिया था और इसराईली बाद में पीछे हट गए तो
इलियज़र दाऊद के साथ 10फ़िलिस्तियों का
मुक़ाबला करता रहा। उस दिन वह फ़िलिस्तियों

को मारते मारते इतना थक गया कि आख़िरकार
तलवार उठा न सका बल्कि हाथ तलवार के साथ
जम गया। रब ने उस की मारिफ़त बड़ी फ़तह
बख़्शी। बाक़ी दस्ते सिर्फ़ लाशों को लूटने के लिए
लौट आए।

11उसके बाद तीसरी जगह पर सम्मा बिन
अजी-हरारी आता था। एक मरतबा फ़िलिस्ती
लही के क़रीब मसूर के खेत में इसराईल के
ख़िलाफ़ लड़ रहे थे। इसराईली फ़ौजी उनके
सामने भागने लगे, 12लेकिन सम्मा खेत के
दरमियान तक बढ़ गया और वहाँ लड़ते लड़ते
फ़िलिस्तियों को शिकस्त दी। रब ने उस की
मारिफ़त बड़ी फ़तह बख़्शी।

13-14एक और जंग के दौरान दाऊद अदुल्लाम
के ग़ार के पहाड़ी क़िले में था जबकि फ़िलिस्ती
फ़ौज ने वादीए-रफ़ाईम में अपनी लशकरगाह
लगाई थी। उनके दस्तों ने बैत-लहम पर भी
क़ब्ज़ा कर लिया था। फ़सल का मौसम था।
दाऊद के तीस आला अफ़सरों में से तीन उससे
मिलने आए। 15दाऊद को शदीद प्यास लगी,
और वह कहने लगा, “कौन मेरे लिए बैत-लहम
के दरवाज़े पर के हौज़ से कुछ पानी लाएगा?”
16यह सुनकर तीनों अफ़सर फ़िलिस्तियों की
लशकरगाह पर हमला करके उसमें घुस गए और
लड़ते लड़ते बैत-लहम के हौज़ तक पहुँच गए।
उससे कुछ पानी भरकर वह उसे दाऊद के पास
ले आए। लेकिन उसने पीने से इनकार कर दिया
बल्कि उसे क़ुरबानी के तौर पर उंडेलकर रब को
पेश किया 17और बोला, “रब न करे कि मैं यह
पानी पियूँ। अगर ऐसा करता तो उन आदमियों
का ख़ून पीता जो अपनी जान पर खेलकर पानी
लाए हैं।” इसलिए वह उसे पीना नहीं चाहता था।
यह इन तीन सूरमाओं के ज़बरदस्त कामों की एक
मिसाल है।

18-19योआब बिन ज़रूयाह का भाई अबीशै
मज़कूरा तीन सूरमाओं पर मुक़र्रर था। एक दफ़ा
उसने अपने नेज़े से 300 आदमियों को मार
डाला। तीनों की निसबत उस की दुगनी इज़्ज़त
की जाती थी, लेकिन वह ख़ुद उनमें गिना नहीं
जाता था।

20बिनायाह बिन यहोयदा भी ज़बरदस्त फ़ौजी
था। वह क़बज़ियेल का रहनेवाला था, और उसने
बहुत दफ़ा अपनी मरदानगी दिखाई। मोआब के
दो बड़े सूरमा उसके हाथों हलाक हुए। एक बार
जब बहुत बर्फ़ पड़ गई तो उसने एक हौज़ में
उतरकर एक शेरबबर को मार डाला जो उसमें गिर
गया था। 21एक और मौक़े पर उसका वास्ता एक
देवक़ामत मिसरी से पड़ा। मिसरी के हाथ में नेज़ा
था जबकि उसके पास सिर्फ़ लाठी थी। लेकिन
बिनायाह ने उस पर हमला करके उसके हाथ से
नेज़ा छीन लिया और उसे उसके अपने हथियार से
मार डाला। 22ऐसी बहादुरी दिखाने की बिना पर
बिनायाह बिन यहोयदा मज़कूरा तीन आदमियों
के बराबर मशहूर हुआ। 23तीस अफ़सरों के दीगर
मर्दों की निसबत उस की ज़्यादा इज़्ज़त की जाती
थी, लेकिन वह मज़कूरा तीन आदमियों में गिना
नहीं जाता था। दाऊद ने उसे अपने मुहाफ़िज़ों पर
मुक़र्रर किया।

24ज़ैल के आदमी बादशाह के 30 सूर-
माओं में शामिल थे।

योआब का भाई असाहेल, बैत-लहम का
इल्हनान बिन दोदो, 25सम्मा हरोदी, इलीक़ा
हरोदी, 26ख़लिस फ़लती, तक़ुअ का ईरा
बिन अक़्क़ीस, 27अनतोत का अबियज़र,
मबून्नी हूसाती, 28ज़लमोन अख़ूही, महरी
नतूफ़ाती, 29हलिब बिन बाना नतूफ़ाती,
बिनयमीनी शहर जिबिया का इत्ती बिन रीबी,
30बिनायाह फ़िरआतोनी, नहले-जास का
हिद्दी, 31अबियलबोन अरबाती, अज़मावत
बरहूमी, 32-33इलियहबा सालबूनी, बनी
यसीन, यूनतन बिन सम्मा हरारी, अख़ियाम
बिन सरार-हरारी, 34इलीफ़लत बिन अहस्बी
माकाती, इलियाम बिन अख़ीतुफ़ल जिलो-
नी, 35हसरो करमिली, फ़ारी अरबी, 36ज़ो-
बाह का इजाल बिन नातन, बानी जादी,
37सिलक़ अम्मोनी, योआब बिन ज़रूयाह का

सिलाहबरदार नहरी बैरोती, 38ईरा इतरी, जरीब इतरी 39और ऊरियाह हित्ती। आदमियों की कुल तादाद 37 थी।

दाऊद की मर्दुमशुमारी

24 एक बार फिर रब को इसराईल पर ग़ुस्सा आया, और उसने दाऊद को उन्हें मुसीबत में डालने पर उकसाकर उसके ज़हन में मर्दुमशुमारी करने का ख़याल डाल दिया।

2चुनाँचे दाऊद ने फ़ौज के कमाँडर योआब को हुक्म दिया, "दान से लेकर बैर-सबा तक इसराईल के तमाम क़बीलों में से गुज़रते हुए जंग करने के क़ाबिल मर्दों को गिन लें ताकि मालूम हो जाए कि उनकी कुल तादाद क्या है।" 3लेकिन योआब ने एतराज़ किया, "ऐ बादशाह मेरे आक़ा, काश रब आपका ख़ुदा आपके देखते देखते फ़ौजियों की तादाद सौ गुना बढ़ाए। लेकिन मेरे आक़ा और बादशाह उनकी मर्दुमशुमारी क्यों करना चाहते हैं?" 4लेकिन बादशाह योआब और फ़ौज के बड़े अफ़सरों के एतराज़ात के बावुजूद अपनी बात पर डटा रहा। चुनाँचे वह दरबार से रवाना होकर इसराईल के मर्दों की फ़हरिस्त तैयार करने लगे।

5दरियाए-यरदन को उबूर करके उन्होंने अरोईर और वादीए-अरनोन के बीच के शहर में शुरू किया। वहाँ से वह जद और याज़ेर से होकर 6जिलियाद और हित्तियों के मुल्क के शहर क़ादिस तक पहुँचे। फिर आगे बढ़ते बढ़ते वह दान और सैदा के गिर्दो-नवाह के इलाक़े 7और क़िलाबंद शहर सूर और हिव्वियों और कनानियों के तमाम शहरों तक पहुँच गए। आख़िरकार उन्होंने यहूदाह के जुनूब की मर्दुमशुमारी बैर-सबा तक की।

8यों पूरे मुल्क में सफ़र करते करते वह 9 महीनों और 20 दिनों के बाद यरूशलम वापस आए। 9योआब ने बादशाह को मर्दुमशुमारी की पूरी रिपोर्ट पेश की। इसराईल में तलवार चलाने के क़ाबिल 8 लाख अफ़राद थे जबकि यहूदाह के 5 लाख मर्द थे।

10लेकिन अब दाऊद का ज़मीर उसको मलामत करने लगा। उसने रब से दुआ की, "मुझसे संगीन गुनाह सरज़द हुआ है। ऐ रब, अब अपने ख़ादिम का क़ुसूर मुआफ़ कर। मुझसे बड़ी हमाक़त हुई है।"

11अगले दिन जब दाऊद सुबह के वक़्त उठा तो उसके ग़ैबबीन जाद नबी को रब की तरफ़ से पैग़ाम मिल गया, 12"दाऊद के पास जाकर उसे बता देना, 'रब तुझे तीन सज़ाएँ पेश करता है। इनमें से एक चुन ले'।" 13जाद दाऊद के पास गया और उसे रब का पैग़ाम सुना दिया। उसने सवाल किया, "आप किस सज़ा को तरजीह देते हैं? अपने मुल्क में सात साल के दौरान काल? या यह कि आपके दुश्मन आपको भगाकर तीन माह तक आपका ताक़्क़ुब करते रहें? या यह कि आपके मुल्क में तीन दिन तक वबा फैल जाए? ध्यान से इसके बारे में सोचें ताकि मैं उसे आपका जवाब पहुँचा सकूँ जिसने मुझे भेजा है।"

14दाऊद ने जवाब दिया, "हाय, मैं क्या कहूँ? मैं बहुत परेशान हूँ। लेकिन आदमियों के हाथ में पड़ने की निसबत बेहतर है कि मैं रब ही के हाथ में पड़ जाऊँ, क्योंकि उसका रहम अज़ीम है।"

15तब रब ने इसराईल में वबा फैलने दी। वह उसी सुबह शुरू हुई और तीन दिन तक लोगों को मौत के घाट उतारती गई। शिमाल में दान से लेकर जुनूब में बैर-सबा तक कुल 70,000 अफ़राद हलाक हुए। 16लेकिन जब वबा का फ़रिश्ता चलते चलते यरूशलम तक पहुँच गया और उस पर हाथ उठाने लगा तो रब ने लोगों की मुसीबत को देखकर तरस खाया और तबाह करनेवाले फ़रिश्ते को हुक्म दिया, "बस कर! अब बाज़ आ।" उस वक़्त रब का फ़रिश्ता वहाँ खड़ा था जहाँ अरौनाह यबूसी अपना अनाज गाहता था।

17जब दाऊद ने फ़रिश्ते को लोगों को मारते हुए देखा तो उसने रब से इलतमास की, "मैं ही ने गुनाह किया है, यह मेरा ही क़ुसूर है। इन भेड़ों से

क्या ग़लती हुई है? बराहे-करम इनको छोड़कर मुझे और मेरे ख़ानदान को सज़ा दे।”

18उसी दिन जाद दाऊद के पास आया और उससे कहा, “अरौनाह यबूसी की गाहने की जगह के पास जाकर उस पर रब की क़ुरबानगाह बना
ले।” 19चुनाँचे दाऊद चढ़कर गाहने की जगह के पास आया जिस तरह रब ने जाद की मारिफ़त फ़रमाया था।

20जब अरौनाह ने बादशाह और उसके दरबारियों को अपनी तरफ़ चढ़ता हुआ देखा तो वह निकलकर बादशाह के सामने औंधे मुँह झुक
गया। 21उसने पूछा, “मेरे आक़ा और बादशाह मेरे पास क्यों आ गए?” दाऊद ने जवाब दिया, “मैं आपकी गाहने की जगह ख़रीदना चाहता हूँ ताकि रब के लिए क़ुरबानगाह तामीर करूँ। क्योंकि यह करने से वबा रुक जाएगी।”

22अरौनाह ने कहा, “मेरे आक़ा और बादशाह, जो कुछ आपको अच्छा लगे उसे लेकर चढ़ाएँ। यह बैल भस्म होनेवाली क़ुरबानी के लिए हाज़िर हैं। और अनाज को गाहने और बैलों को जोतने का सामान क़ुरबानगाह पर रखकर जला दें।
23बादशाह सलामत, मैं ख़ुशी से आपको यह सब कुछ दे देता हूँ। दुआ है कि आप रब अपने ख़ुदा को पसंद आएँ।”

24लेकिन बादशाह ने इनकार किया, “नहीं, मैं ज़रूर हर चीज़ की पूरी क़ीमत अदा करूँगा। मैं रब अपने ख़ुदा को ऐसी कोई भस्म होनेवाली क़ुरबानी पेश नहीं करूँगा जो मुझे मुफ़्त में मिल जाए।”

चुनाँचे दाऊद ने बैलों समेत गाहने की जगह चाँदी के 50 सिक्कों के एवज़ ख़रीद ली।
25उसने वहाँ रब की ताज़ीम में क़ुरबानगाह तामीर करके उस पर भस्म होनेवाली और सलामती की क़ुरबानियाँ चढ़ाईं। तब रब ने मुल्क के लिए दुआ सुनकर वबा को रोक दिया।

1 सलातीन

अदूनियाह की साज़िश

1 दाऊद बादशाह बहुत बूढ़ा हो चुका था। उसे
हमेशा सर्दी लगती थी, और उस पर मज़ीद
बिस्तर डालने से कोई फ़ायदा न होता था। 2यह
देखकर मुलाज़िमों ने बादशाह से कहा, "अगर
इजाज़त हो तो हम बादशाह के लिए एक नौजवान
कुँवारी ढूँड लें जो आपकी ख़िदमत में हाज़िर
रहे और आपकी देख-भाल करे। लड़की आपके
साथ लेटकर आपको गरम रखे।" 3चुनाँचे वह पूरे
मुल्क में किसी ख़ूबसूरत लड़की की तलाश करने
लगे। ढूँडते ढूँडते अबीशाग शूनीमी को चुनकर
बादशाह के पास लाया गया। 4अब से वह उस
की ख़िदमत में हाज़िर होती और उस की देख-
भाल करती रही। लड़की निहायत ख़ूबसूरत थी,
लेकिन बादशाह ने कभी उससे सोहबत न की।

5-6उन दिनों में अदूनियाह बादशाह बनने की
साज़िश करने लगा। वह दाऊद की बीवी हज्जीत
का बेटा था। यों वह अबीसलूम का सौतेला भाई
और उसके मरने पर दाऊद का सबसे बड़ा बेटा
था। शक्लो-सूरत के लिहाज़ से लोग उस की बड़ी
तारीफ़ किया करते थे, और बचपन से उसके बाप
ने उसे कभी नहीं डाँटा था कि तू क्या कर रहा
है। अब अदूनियाह अपने आपको लोगों के सामने
पेश करके एलान करने लगा, "मैं ही बादशाह
बनूँगा।" इस मक़सद के तहत उसने अपने लिए
रथ और घोड़े ख़रीदकर 50 आदमियों को रख
लिया ताकि वह जहाँ भी जाए उसके आगे आगे
चलते रहें। 7उसने योआब बिन ज़रूयाह और
अबियातर इमाम से बात की तो वह उसके साथी
बनकर उस की हिमायत करने के लिए तैयार हुए।
8लेकिन सदोक़ इमाम, बिनायाह बिन यहोयदा
और नातन नबी उसके साथ नहीं थे, न सिमई,
रेई या दाऊद के मुहाफ़िज़।

9एक दिन अदूनियाह ने ऐन-राजिल चश्मे के
क़रीब की चट्टान ज़ुहलत के पास ज़ियाफ़त की।
काफ़ी भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और मोटे-ताज़े
बछड़े ज़बह किए गए। अदूनियाह ने बादशाह के
तमाम बेटों और यहूदाह के तमाम शाही अफ़सरों
को दावत दी थी। 10कुछ लोगों को जान-बूझकर
इसमें शामिल नहीं किया गया था। उनमें उसका
भाई सुलेमान, नातन नबी, बिनायाह और दाऊद
के मुहाफ़िज़ शामिल थे।

दाऊद सुलेमान को बादशाह क़रार देता है

11तब नातन सुलेमान की माँ बत-सबा से मिला
और बोला, "क्या यह ख़बर आप तक नहीं पहुँची
कि हज्जीत के बेटे अदूनियाह ने अपने आपको
बादशाह बना लिया है? और हमारे आक़ा दाऊद
को इसका इल्म तक नहीं! 12आपकी और
आपके बेटे सुलेमान की ज़िंदगी बड़े ख़तरे में
है। इसलिए लाज़िम है कि आप मेरे मशवरे पर
फ़ौरन अमल करें। 13दाऊद बादशाह के पास
जाकर उसे बता देना, 'ऐ मेरे आक़ा और बादशाह,
क्या आपने क़सम खाकर मुझसे वादा नहीं किया

था कि तेरा बेटा सुलेमान मेरे बाद तख़्तनशीन होगा? तो फिर अदूनियाह क्यों बादशाह बन गया है?’ 14आपकी बादशाह से गुफ़्तगू अभी ख़त्म नहीं होगी कि मैं दाख़िल होकर आपकी बात की तसदीक़ करूँगा।”

15बत-सबा फ़ौरन बादशाह के पास गई जो सोने के कमरे में लेटा हुआ था। उस वक़्त तो वह बहुत उम्ररसीदा हो चुका था, और अबीशाग उस की देख-भाल कर रही थी। 16बत-सबा कमरे में दाख़िल होकर बादशाह के सामने मुँह के बल झुक गई। दाऊद ने पूछा, “क्या बात है?” 17बत-सबा ने कहा, “मेरे आक़ा, आपने तो रब अपने ख़ुदा की क़सम खाकर मुझसे वादा किया था कि तेरा बेटा सुलेमान मेरे बाद तख़्तनशीन होगा। 18लेकिन अब अदूनियाह बादशाह बन बैठा है और मेरे आक़ा और बादशाह को इसका इल्म तक नहीं। 19उसने ज़ियाफ़त के लिए बहुत-से गाय-बैल, मोटे-ताज़े बछड़े और भेड़-बकरियाँ ज़बह करके तमाम शहज़ादों को दावत दी है। अबियातर इमाम और फ़ौज का कमाँडर योआब भी इनमें शामिल हैं, लेकिन आपके ख़ादिम सुलेमान को दावत नहीं मिली। 20ऐ बादशाह मेरे आक़ा, इस वक़्त तमाम इसराईल की आँखें आप पर लगी हैं। सब आपसे यह जानने के लिए तड़पते हैं कि आपके बाद कौन तख़्तनशीन होगा। 21अगर आपने जल्द ही क़दम न उठाया तो आपके कूच कर जाने के फ़ौरन बाद मैं और मेरा बेटा अदूनियाह का निशाना बनकर मुजरिम ठहरेंगे।”

22-23बत-सबा अभी बादशाह से बात कर ही रही थी कि दाऊद को इत्तला दी गई कि नातन नबी आपसे मिलने आया है। नबी कमरे में दाख़िल होकर बादशाह के सामने औंधे मुँह झुक गया। 24फिर उसने कहा, “मेरे आक़ा, लगता है कि आप इस हक़ में हैं कि अदूनियाह आपके बाद तख़्तनशीन हो। 25क्योंकि आज उसने ऐन-राजिल जाकर बहुत-से गाय-बैल, मोटे-ताज़े बछड़े और भेड़-बकरियों को ज़बह किया है। ज़ियाफ़त के लिए उसने तमाम शहज़ादों, तमाम फ़ौजी अफ़सरों और अबियातर इमाम को दावत दी है। इस वक़्त वह उसके साथ खाना खा खाकर और मै पी पीकर नारा लगा रहे हैं, ‘अदूनियाह बादशाह ज़िंदाबाद!’ 26कुछ लोगों को जान-बूझकर दावत नहीं दी। उनमें मैं आपका ख़ादिम, सदोक़ इमाम, बिनायाह बिन यहोयदा और आपका ख़ादिम सुलेमान भी शामिल हैं। 27मेरे आक़ा, क्या आपने वाक़ई इसका हुक्म दिया है? क्या आपने अपने ख़ादिमों को इत्तला दिए बग़ैर फ़ैसला किया है कि यह शख़्स बादशाह बनेगा?”

28जवाब में दाऊद ने कहा, “बत-सबा को बुलाएँ!” वह वापस आई और बादशाह के सामने खड़ी हो गई। 29बादशाह बोला, “रब की हयात की क़सम जिसने फ़िद्या देकर मुझे हर मुसीबत से बचाया है, 30आपका बेटा सुलेमान मेरे बाद बादशाह होगा बल्कि आज ही मेरे तख़्त पर बैठ जाएगा। हाँ, आज ही मैं वह वादा पूरा करूँगा जो मैंने रब इसराईल के ख़ुदा की क़सम खाकर आपसे किया था।” 31यह सुनकर बत-सबा औंधे मुँह झुक गई और कहा, “मेरा मालिक दाऊद बादशाह ज़िंदाबाद!”

32फिर दाऊद ने हुक्म दिया, “सदोक़ इमाम, नातन नबी और बिनायाह बिन यहोयदा को बुला लाएँ।” तीनों आए 33तो बादशाह उनसे मुख़ातिब हुआ, “मेरे बेटे सुलेमान को मेरे ख़च्चर पर बिठाएँ। फिर मेरे अफ़सरों को साथ लेकर उसे जैहून चश्मे तक पहुँचा दें। 34वहाँ सदोक़ और नातन उसे मसह करके इसराईल का बादशाह बना दें। नरसिंगे को बजा बजाकर नारा लगाना, ‘सुलेमान बादशाह ज़िंदाबाद!’ 35इसके बाद मेरे बेटे के साथ यहाँ वापस आ जाना। वह महल में दाख़िल होकर मेरे तख़्त पर बैठ जाए और मेरी जगह हुकूमत करे, क्योंकि मैंने उसे इसराईल और यहूदाह का हुक्मरान मुक़र्रर किया है।”

36बिनायाह बिन यहोयदा ने जवाब दिया, “आमीन, ऐसा ही हो! रब मेरे आक़ा का ख़ुदा इस फ़ैसले पर अपनी बरकत दे। 37और जिस

तरह रब आपके साथ रहा उसी तरह वह सुलेमान
के साथ भी हो, बल्कि वह उसके तख़्त को
आपके तख़्त से कहीं ज़्यादा सरबुलंद करे!”
38फिर सदोक़ इमाम, नातन नबी, बिनायाह बिन
यहोयदा और बादशाह के मुहाफ़िज़ करेतियों और
फ़लेतियों ने सुलेमान को बादशाह के ख़च्चर
पर बिठाकर उसे जैहून चश्मे तक पहुँचा दिया।
39सदोक़ के पास तेल से भरा मेंढे का वह सींग
था जो मुक़द्दस ख़ैमे में पड़ा रहता था। अब
उसने यह तेल लेकर सुलेमान को मसह किया।
फिर नरसिंगा बजाया गया और लोग मिलकर
नारा लगाने लगे, “सुलेमान बादशाह ज़िंदाबाद!
सुलेमान बादशाह ज़िंदाबाद!” 40तमाम लोग
बाँसरी बजाते और ख़ुशी मनाते हुए सुलेमान के
पीछे चलने लगे। जब वह दुबारा यरूशलम में
दाख़िल हुआ तो इतना शोर था कि ज़मीन लरज़
उठी।

अदूनियाह की शिकस्त

41लोगों की यह आवाज़ें अदूनियाह और उसके
मेहमानों तक भी पहुँच गईं। थोड़ी देर पहले वह
खाने से फ़ारिग़ हुए थे। नरसिंगे की आवाज़
सुनकर योआब चौंक उठा और पूछा, “यह क्या
है? शहर से इतना शोर क्यों सुनाई दे रहा है?”
42वह अभी यह बात कर ही रहा था कि अबियातर
का बेटा यूनतन पहुँच गया। योआब बोला, “हमारे
पास आएँ। आप जैसे लायक़ आदमी अच्छी ख़बर
लेकर आ रहे होंगे।”

43यूनतन ने जवाब दिया, “अफ़सोस, ऐसा
नहीं है। हमारे आक़ा दाऊद बादशाह ने सुलेमान
को बादशाह बना दिया है। 44उसने उसे सदोक़
इमाम, नातन नबी, बिनायाह बिन यहोयदा और
बादशाह के मुहाफ़िज़ करेतियों और फ़लेतियों के
साथ जैहून चश्मे के पास भेज दिया है। सुलेमान
बादशाह के ख़च्चर पर सवार था। 45जैहून चश्मे
के पास सदोक़ इमाम और नातन नबी ने उसे
मसह करके बादशाह बना दिया। फिर वह ख़ुशी
मनाते हुए शहर में वापस चले गए। पूरे शहर में
हलचल मच गई। यही वह शोर है जो आपको
सुनाई दे रहा है। 46अब सुलेमान तख़्त पर बैठ
चुका है, 47और दरबारी हमारे आक़ा दाऊद
बादशाह को मुबारकबाद देने के लिए उसके पास
पहुँच गए हैं। वह कह रहे हैं, ‘आपका ख़ुदा
करे कि सुलेमान का नाम आपके नाम से भी
ज़्यादा मशहूर हो जाए। उसका तख़्त आपके तख़्त
से कहीं ज़्यादा सरबुलंद हो।’ बादशाह ने अपने
बिस्तर पर झुककर अल्लाह की परस्तिश की
48और कहा, ‘रब इसराईल के ख़ुदा की तमजीद
हो जिसने मेरे बेटों में से एक को मेरी जगह तख़्त
पर बिठा दिया है। उसका शुक्र है कि मैं अपनी
आँखों से यह देख सका’।”

49यूनतन के मुँह से यह ख़बर सुनकर
अदूनियाह के तमाम मेहमान घबरा गए। सब
उठकर चारों तरफ़ मुंतशिर हो गए। 50अदूनियाह
सुलेमान से ख़ौफ़ खाकर मुक़द्दस ख़ैमे के पास
गया और क़ुरबानगाह के सींगों से लिपट गया।
51किसी ने सुलेमान के पास जाकर उसे इत्तला
दी, “अदूनियाह को सुलेमान बादशाह से ख़ौफ़
है, इसलिए वह क़ुरबानगाह के सींगों से लिपटे
हुए कह रहा है, ‘सुलेमान बादशाह पहले क़सम
खाए कि वह मुझे मौत के घाट नहीं उतारेगा’।”
52सुलेमान ने वादा किया, “अगर वह लायक़
साबित हो तो उसका एक बाल भी बीका नहीं
होगा। लेकिन जब भी उसमें बदी पाई जाए वह
ज़रूर मरेगा।”

53सुलेमान ने अपने लोगों को अदूनियाह के
पास भेज दिया ताकि वह उसे बादशाह के
पास पहुँचाएँ। अदूनियाह आया और सुलेमान
के सामने औंधे मुँह झुक गया। सुलेमान बोला,
“अपने घर चले जाओ!”

दाऊद की आख़िरी हिदायात

2 जब दाऊद को महसूस हुआ कि कूच कर
जाने का वक़्त क़रीब है तो उसने अपने
बेटे सुलेमान को हिदायत की, 2“अब मैं वहाँ जा
रहा हूँ जहाँ दुनिया के हर शख़्स को जाना होता

है। चुनाँचे मज़बूत हों और मरदानगी दिखाएँ।
3जो कुछ रब आपका ख़ुदा आपसे चाहता है वह
करें और उस की राहों पर चलते रहें। अल्लाह
की शरीअत में दर्ज हर हुक्म और हिदायत पर
पूरे तौर पर अमल करें। फिर जो कुछ भी करेंगे
और जहाँ भी जाएंगे आपको कामयाबी नसीब
होगी। 4फिर रब मेरे साथ अपना वादा पूरा करेगा।
क्योंकि उसने फ़रमाया है, ‘अगर तेरी औलाद
अपने चाल-चलन पर ध्यान देकर पूरे दिलो-जान
से मेरी वफ़ादार रहे तो इसराईल पर उस की
हुकूमत हमेशा तक क़ायम रहेगी।’

5दो एक और बातें भी हैं। आपको ख़ूब मालूम
है कि योआब बिन ज़रूयाह ने मेरे साथ कैसा
सुलूक किया है। इसराईल के दो कमाँडरों अबिनैर
बिन नैर और अमासा बिन यतर को उसने क़त्ल
किया। जब जंग नहीं थी उसने जंग का ख़ून
बहाकर अपनी पेटी और जूतों को बेक़ुसूर ख़ून
से आलूदा कर लिया है। 6उसके साथ वह कुछ
करें जो आपको मुनासिब लगे। योआब बूढ़ा
तो है, लेकिन ध्यान दें कि वह तबई मौत न
मरे। 7ताहम बरज़िल्ली जिलियादी के बेटों पर
मेहरबानी करें। वह आपकी मेज़ के मुस्तक़िल
मेहमान रहें, क्योंकि उन्होंने मेरे साथ भी ऐसा
ही सुलूक किया जब मैंने आपके भाई अबीसलूम
की वजह से यरूशलम से हिजरत की। 8बहूरीम
के बिनयमीनी सिमई बिन जीरा पर भी ध्यान दें।
जिस दिन मैं हिजरत करते हुए महनायम से गुज़र
रहा था तो उसने मुझ पर लानतें भेजीं। लेकिन
मेरी वापसी पर वह दरियाए-यरदन पर मुझसे
मिलने आया और मैंने रब की क़सम खाकर उससे
वादा किया कि उसे मौत के घाट नहीं उतारूँगा।
9लेकिन आप उसका जुर्म नज़रंदाज़ न करें बल्कि
उस की मुनासिब सज़ा दें। आप दानिशमंद हैं,
इसलिए आप ज़रूर सज़ा देने का कोई न कोई
तरीक़ा ढूँड निकालेंगे। वह बूढ़ा तो है, लेकिन
ध्यान दें कि वह तबई मौत न मरे।”

10फिर दाऊद मरकर अपने बापदादा से जा
मिला। उसे यरूशलम के उस हिस्से में दफ़न किया
गया जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है। 11वह
कुल 40 साल तक इसराईल का बादशाह रहा,
सात साल हबरून में और 33 साल यरूशलम में।
12सुलेमान अपने बाप दाऊद के बाद तख़्तनशीन
हुआ। उस की हुकूमत मज़बूती से क़ायम हुई।

अदूनियाह की मौत

13एक दिन दाऊद की बीवी हज्जीत का बेटा
अदूनियाह सुलेमान की माँ बत-सबा के पास
आया। बत-सबा ने पूछा, “क्या आप अमनपसंद
इरादा रखकर आए हैं?” अदूनियाह बोला, “जी,
14बल्कि मेरी आपसे गुज़ारिश है।”

बत-सबा ने जवाब दिया, “तो फिर बताएँ!”
15अदूनियाह ने कहा, “आप तो जानती हैं कि
असल में बादशाह बनने का हक़ मेरा था। और
यह तमाम इसराईल की तवक़्क़ो भी थी। लेकिन
अब तो हालात बदल गए हैं। मेरा भाई बादशाह
बन गया है, क्योंकि यही रब की मरज़ी थी। 16अब
मेरी आपसे दरख़ास्त है। इससे इनकार न करें।”
बत-सबा बोली, “बताएँ।” 17अदूनियाह ने कहा,
“मैं अबीशाग शूनीमी से शादी करना चाहता
हूँ। बराहे-करम सुलेमान बादशाह के सामने मेरी
सिफ़ारिश करें ताकि बात बन जाए। अगर आप
बात करें तो वह इनकार नहीं करेगा।” 18बत-
सबा राज़ी हुई, “चलें, ठीक है। मैं आपका यह
मामला बादशाह को पेश करूँगी।”

19चुनाँचे बत-सबा सुलेमान बादशाह के पास
गई ताकि उसे अदूनियाह का मामला पेश करे।
जब दरबार में पहुँची तो बादशाह उठकर उससे
मिलने आया और उसके सामने झुक गया। फिर
वह दुबारा तख़्त पर बैठ गया और हुक्म दिया
कि माँ के लिए भी तख़्त रखा जाए। बादशाह
के दहने हाथ बैठकर 20उसने अपना मामला
पेश किया, “मेरी आपसे एक छोटी-सी गुज़ारिश
है। इससे इनकार न करें।” बादशाह ने जवाब
दिया, “अम्मी, बताएँ अपनी बात, मैं इनकार
नहीं करूँगा।” 21बत-सबा बोली, “अपने भाई

अदूनियाह को अबीशाग शूनीमी से शादी करने
दें।”
22यह सुनकर सुलेमान भड़क उठा, “अदू-
नियाह की अबीशाग से शादी!! यह कैसी बात है
जो आप पेश कर रही हैं? अगर आप यह चाहती हैं
तो क्यों न बराहे-रास्त तक़ाज़ा करें कि अदूनियाह
मेरी जगह तख़्त पर बैठ जाए। आख़िर वह मेरा
बड़ा भाई है, और अबियातर इमाम और योआब
बिन ज़रूयाह भी उसका साथ दे रहे हैं।” 23फिर
सुलेमान बादशाह ने रब की क़सम खाकर कहा,
“इस दरख़ास्त से अदूनियाह ने अपनी मौत पर
मुहर लगाई है। अल्लाह मुझे सख़्त सज़ा दे अगर
मैं उसे मौत के घाट न उतारूँ। 24रब की क़सम
जिसने मेरी तसदीक़ करके मुझे मेरे बाप दाऊद के
तख़्त पर बिठा दिया और अपने वादे के मुताबिक़
मेरे लिए घर तामीर किया है, अदूनियाह को आज
ही मरना है!”
25फिर सुलेमान बादशाह ने बिनायाह बिन
यहोयदा को हुक्म दिया कि वह अदूनियाह को
मौत के घाट उतार दे। चुनाँचे वह निकला और
उसे मार डाला।

योआब और अबियातर की सज़ा

26अबियातर इमाम से बादशाह ने कहा, “अब
यहाँ से चले जाएँ। अनतोत में अपने घर में रहें
और वहाँ अपनी ज़मीनें सँभालें। गो आप सज़ाए-
मौत के लायक़ हैं तो भी मैं इस वक़्त आपको नहीं
मार दूँगा, क्योंकि आप मेरे बाप दाऊद के सामने
रब क़ादिरे-मुतलक़ के अहद का संदूक़ उठाए हर
जगह उनके साथ गए। आप मेरे बाप के तमाम
तकलीफ़देह और मुश्किलतरीन लमहात में शरीक
रहे हैं।” 27यह कहकर सुलेमान ने अबियातर का
रब के हुज़ूर इमाम की ख़िदमत सरंजाम देने का
हक़ मनसूख़ कर दिया। यों रब की वह पेशगोई
पूरी हुई जो उसने सैला में एली के घराने के बारे
में की थी।
28योआब को जल्द ही पता चला कि
अदूनियाह और अबियातर से क्या कुछ हुआ है।
वह अबीसलूम की साज़िशों में तो शरीक नहीं
हुआ था लेकिन बाद में अदूनियाह का साथी बन
गया था। इसलिए अब वह भागकर रब के मुक़द्दस
ख़ैमे में दाख़िल हुआ और क़ुरबानगाह के सींगों को
पकड़ लिया। 29सुलेमान बादशाह को इत्तला दी
गई, “योआब भागकर रब के मुक़द्दस ख़ैमे में गया
है। अब वह वहाँ क़ुरबानगाह के पास खड़ा है।”
यह सुनकर सुलेमान ने बिनायाह बिन यहोयदा
को हुक्म दिया, “जाओ, योआब को मार दो!”
30बिनायाह रब के ख़ैमे में जाकर योआब से
मुख़ातिब हुआ, “बादशाह फ़रमाता है कि ख़ैमे से
निकल आओ!” लेकिन योआब ने जवाब दिया,
“नहीं, अगर मरना है तो यहीं मरूँगा।” बिनायाह
बादशाह के पास वापस आया और उसे योआब
का जवाब सुनाया। 31तब बादशाह ने हुक्म दिया,
“चलो, उस की मरज़ी! उसे वहीं मारकर दफ़न
कर दो ताकि मैं और मेरे बाप का घराना उन क़त्लों
के जवाबदेह न ठहरें जो उसने बिलावजह किए हैं।
32रब उसे उन दो आदमियों के क़त्ल की सज़ा
दे जो उससे कहीं ज़्यादा शरीफ़ और अच्छे थे
यानी इसराईली फ़ौज का कमाँडर अबिनैर बिन
नैर और यहूदाह की फ़ौज का कमाँडर अमासा
बिन यतर। योआब ने दोनों को तलवार से मार
डाला, हालाँकि मेरे बाप को इसका इल्म नहीं
था। 33योआब और उस की औलाद हमेशा तक
इन क़त्लों के क़ुसूरवार ठहरें। लेकिन रब दाऊद,
उस की औलाद, घराने और तख़्त को हमेशा तक
सलामती अता करे।”
34तब बिनायाह ने मुक़द्दस ख़ैमे में जाकर
योआब को मार दिया। उसे यहूदाह के बयाबान
में उस की अपनी ज़मीन में दफ़ना दिया गया।
35योआब की जगह बादशाह ने बिनायाह बिन
यहोयदा को फ़ौज का कमाँडर बना दिया।
अबियातर का ओहदा उसने सदोक़ इमाम को दे
दिया।

सिमई की मौत

36इसके बाद बादशाह ने सिमई को बुलाकर
उसे हुक्म दिया, “यहाँ यरूशलम में अपना घर
बनाकर रहना। आइंदा आपको शहर से निकलने
की इजाज़त नहीं है, ख़ाह आप कहीं भी जाना
चाहें। 37यक़ीन जानें कि ज्योंही आप शहर के
दरवाज़े से निकलकर वादीए-क़िदरोन को पार
करेंगे तो आपको मार दिया जाएगा। तब आप
ख़ुद अपनी मौत के ज़िम्मेदार ठहरेंगे।” 38सिमई
ने जवाब दिया, “ठीक है, जो कुछ मेरे आक़ा ने
फ़रमाया है मैं करूँगा।”

सिमई देर तक बादशाह के हुक्म के मुताबिक़
यरूशलम में रहा। 39तीन साल यों ही गुज़र गए।
लेकिन एक दिन उसके दो ग़ुलाम भाग गए। चलते
चलते वह जात के बादशाह अकीस बिन माका
के पास पहुँच गए। किसी ने सिमई को इत्तला
दी, “आपके ग़ुलाम जात में ठहरे हुए हैं।” 40वह
फ़ौरन अपने गधे पर ज़ीन कसकर ग़ुलामों को
ढूँडने के लिए जात में अकीस के पास चला गया।
दोनों ग़ुलाम अब तक वहीं थे तो सिमई उन्हें
पकड़कर यरूशलम वापस ले आया।

41सुलेमान को ख़बर मिली कि सिमई जात
जाकर लौट आया है। 42तब उसने उसे बुलाकर
पूछा, “क्या मैंने आपको आगाह करके नहीं कहा
था कि यक़ीन जानें कि ज्योंही आप यरूशलम से
निकलेंगे आपको मार दिया जाएगा, ख़ाह आप
कहीं भी जाना चाहें। और क्या आपने जवाब में रब
की क़सम खाकर नहीं कहा था, ‘ठीक है, मैं ऐसा
ही करूँगा?’ 43लेकिन अब आपने अपनी क़सम
तोड़कर मेरे हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी की है। यह
आपने क्यों किया है?” 44फिर बादशाह ने कहा,
“आप ख़ूब जानते हैं कि आपने मेरे बाप दाऊद के
साथ कितना बुरा सुलूक किया। अब रब आपको
इसकी सज़ा देगा। 45लेकिन सुलेमान बादशाह
को वह बरकत देता रहेगा, और दाऊद का तख़्त
रब के हुज़ूर अबद तक क़ायम रहेगा।”

46फिर बादशाह ने बिनायाह बिन यहोयदा को
हुक्म दिया कि वह सिमई को मार दे। बिनायाह
ने उसे बाहर ले जाकर तलवार से मार दिया। यों
सुलेमान की इसराईल पर हुकूमत मज़बूत हो गई।

सुलेमान रब से हिकमत माँगता है

3 सुलेमान फ़िरौन की बेटी से शादी करके
मिसरी बादशाह का दामाद बन गया। शुरू
में उस की बीवी शहर के उस हिस्से में रहती थी
जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता था। क्योंकि उस
वक़्त नया महल, रब का घर और शहर की फ़सील
ज़ेरे-तामीर थे।

2उन दिनों में रब के नाम का घर तामीर नहीं
हुआ था, इसलिए इसराईली अपनी क़ुरबानियाँ
मुख़्तलिफ़ ऊँची जगहों पर चढ़ाते थे। 3सुलेमान
रब से प्यार करता था और इसलिए अपने बाप
दाऊद की तमाम हिदायात के मुताबिक़ ज़िंदगी
गुज़ारता था। लेकिन वह भी जानवरों की अपनी
क़ुरबानियाँ और बख़ूर ऐसे ही मक़ामों पर रब को
पेश करता था।

4एक दिन बादशाह जिबऊन गया और वहाँ
भस्म होनेवाली 1,000 क़ुरबानियाँ चढ़ाईं,
क्योंकि उस शहर की ऊँची जगह क़ुरबानियाँ
चढ़ाने का सबसे अहम मरकज़ थी। 5जब वह वहाँ
ठहरा हुआ था तो रब ख़ाब में उस पर ज़ाहिर हुआ
और फ़रमाया, “तेरा दिल क्या चाहता है? मुझे
बता दे तो मैं तेरी ख़ाहिश पूरी करूँगा।”

6सुलेमान ने जवाब दिया, “तू मेरे बाप दाऊद
पर बड़ी मेहरबानी कर चुका है। वजह यह थी कि
तेरा ख़ादिम वफ़ादारी, इनसाफ़ और ख़ुलूसदिली
से तेरे हुज़ूर चलता रहा। तेरी उस पर मेहरबानी
आज तक जारी रही है, क्योंकि तूने उसका बेटा
उस की जगह तख़्तनशीन कर दिया है। 7ऐ रब
मेरे ख़ुदा, तूने अपने ख़ादिम को मेरे बाप दाऊद
की जगह तख़्त पर बिठा दिया है। लेकिन मैं अभी
छोटा बच्चा हूँ जिसे अपनी ज़िम्मेदारियाँ सहीह
तौर पर सँभालने का तजरबा नहीं हुआ। 8तो
भी तेरे ख़ादिम को तेरी चुनी हुई क़ौम के बीच

में खड़ा किया गया है, इतनी अज़ीम क़ौम के
दरमियान कि उसे गिना नहीं जा सकता। 9चुनाँचे
मुझे सुननेवाला दिल अता फ़रमा ताकि मैं तेरी
क़ौम का इनसाफ़ करूँ और सहीह और ग़लत
बातों में इम्तियाज़ कर सकूँ। क्योंकि कौन तेरी
इस अज़ीम क़ौम का इनसाफ़ कर सकता है?”
10सुलेमान की यह दरख़ास्त रब को पसंद
आई, 11इसलिए उसने जवाब दिया, “मैं ख़ुश
हूँ कि तूने न उम्र की दराज़ी, न दौलत और न
अपने दुश्मनों की हलाकत बल्कि इम्तियाज़ करने
की सलाहियत माँगी है ताकि सुनकर इनसाफ़
कर सके। 12इसलिए मैं तेरी दरख़ास्त पूरी करके
तुझे इतना दानिशमंद और समझदार बना दूँगा
कि उतना न माज़ी में कोई था, न मुस्तक़बिल
में कभी कोई होगा। 13बल्कि तुझे वह कुछ भी दे
दूँगा जो तूने नहीं माँगा, यानी दौलत और इज़्ज़त।
तेरे जीते-जी कोई और बादशाह तेरे बराबर नहीं
पाया जाएगा। 14अगर तू मेरी राहों पर चलता रहे
और अपने बाप दाऊद की तरह मेरे अहकाम के
मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारे तो फिर मैं तेरी उम्र दराज़
करूँगा।”
15सुलेमान जाग उठा तो मालूम हुआ कि मैंने
ख़ाब देखा है। वह यरूशलम को वापस चला
गया और रब के अहद के संदूक़ के सामने खड़ा
हुआ। वहाँ उसने भस्म होनेवाली और सलामती
की क़ुरबानियाँ पेश कीं, फिर बड़ी ज़ियाफ़त की
जिसमें तमाम दरबारी शरीक हुए।

दो कसबियों के बच्चे के बारे में सुलेमान का फ़ैसला

16एक दिन दो कसबियाँ बादशाह के पास
आईं। 17एक बात करने लगी, “मेरे आक़ा, हम
दोनों एक ही घर में बसती हैं। कुछ देर पहले
इसकी मौजूदगी में घर में मेरे बच्चा पैदा हुआ।
18दो दिन के बाद इसके भी बचा हुआ। हम
अकेली ही थीं, हमारे सिवा घर में कोई और नहीं
था। 19एक रात को मेरी साथी का बच्चा मर गया।
माँ ने सोते में करवटें बदलते बदलते अपने बच्चे
को दबा दिया था। 20रातों रात इसे मालूम हुआ
कि बेटा मर गया है। मैं अभी गहरी नींद सो रही
थी। यह देखकर इसने मेरे बच्चे को उठाया और
अपने मुरदे बेटे को मेरी गोद में रख दिया। फिर
वह मेरे बेटे के साथ सो गई। 21सुबह के वक़्त
जब मैं अपने बेटे को दूध पिलाने के लिए उठी तो
देखा कि उससे जान निकल गई है। लेकिन जब
दिन मज़ीद चढ़ा और मैं ग़ौर से उसे देख सकी तो
क्या देखती हूँ कि यह वह बच्चा नहीं है जिसे मैंने
जन्म दिया है!”
22दूसरी औरत ने उस की बात काटकर कहा,
“हरगिज़ नहीं! यह झूट है। मेरा बेटा ज़िंदा है
और तेरा तो मर गया है।” पहली औरत चीख़
उठी, “कभी भी नहीं! ज़िंदा बच्चा मेरा और
मुरदा बच्चा तेरा है।” ऐसी बातें करते करते दोनों
बादशाह के सामने झगड़ती रहीं।
23फिर बादशाह बोला, “सीधी-सी बात यह है
कि दोनों ही दावा करती हैं कि ज़िंदा बच्चा मेरा
है और मुरदा बच्चा दूसरी का है। 24ठीक है, फिर
मेरे पास तलवार ले आएँ!” उसके पास तलवार
लाई गई। 25तब उसने हुक्म दिया, “ज़िंदा बच्चे
को बराबर के दो हिस्सों में काटकर हर औरत को
एक एक हिस्सा दे दें।” 26यह सुनकर बच्चे की
हक़ीक़ी माँ ने जिसका दिल अपने बेटे के लिए
तड़पता था बादशाह से इलतमास की, “नहीं मेरे
आक़ा, उसे मत मारें! बराहे-करम उसे इसी को
दे दीजिए।”
लेकिन दूसरी औरत बोली, “ठीक है, उसे काट
दें। अगर यह मेरा नहीं होगा तो कम अज़ कम तेरा
भी नहीं होगा।”
27यह देखकर बादशाह ने हुक्म दिया, “रुकें!
बच्चे पर तलवार मत चलाएँ बल्कि उसे पहली
औरत को दे दें जो चाहती है कि ज़िंदा रहे। वही
उस की माँ है।” 28जल्द ही सुलेमान के इस
फ़ैसले की ख़बर पूरे मुल्क में फैल गई, और लोगों
पर बादशाह का ख़ौफ़ छा गया, क्योंकि उन्होंने
जान लिया कि अल्लाह ने उसे इनसाफ़ करने की
ख़ास हिकमत अता की है।

सुलेमान के सरकारी अफ़सरों की फ़हरिस्त

4 अब सुलेमान पूरे इसराईल पर हुकूमत करता था। 2यह उसके आला अफ़सर थे :
इमामे-आज़म : अज़रियाह बिन सदोक़,
3मीरमुंशी : सीसा के बेटे इलीहूरिफ़ और अख़ियाह,
बादशाह का मुशीरे-ख़ास : यहूसफ़त बिन अख़ीलूद,
4फ़ौज का कमाँडर : बिनायाह बिन यहोयदा,
इमाम : सदोक़ और अबियातर,
5ज़िलों पर मुक़र्रर अफ़सरों का सरदार : अज़रियाह बिन नातन,
बादशाह का क़रीबी मुशीर : इमाम ज़बूद बिन नातन,
6महल का इंचार्ज : अख़ीसर,
बेगारियों का इंचार्ज : अदूनीराम बिन अबदा
7सुलेमान ने मुल्के-इसराईल को बारह ज़िलों में तक़सीम करके हर ज़िले पर एक अफ़सर मुक़र्रर किया था। इन अफ़सरों की एक ज़िम्मेदारी यह थी कि दरबार की ज़रूरियात पूरी करें। हर अफ़सर को साल में एक माह की ज़रूरियात पूरी करनी थीं। 8दर्जे-ज़ैल इन अफ़सरों और उनके इलाक़ों की फ़हरिस्त है। बिन-हूर : इफ़राईम का पहाड़ी इलाक़ा,
9बिन-दिक़र : मक़स, सालबीम, बैत-शम्स और ऐलोन-बैत-हनान,
10बिन-हसद : अरुब्बोत, सोका और हिफ़र का इलाक़ा,
11सुलेमान की बेटी ताफ़त का शौहर बिन-अबीनदाब : साहिली शहर दोर का पहाड़ी इलाक़ा,
12बाना बिन अख़ीलूद : तानक, मजिद्दो और उस बैत-शान का पूरा इलाक़ा जो ज़रतान के पड़ोस में यज़्रएल के नीचे वाक़े है, नीज़ बैत-शान से लेकर अबील-महूला तक का पूरा इलाक़ा बशमूल युक़मियाम,
13बिन-जबर : जिलियाद में रामात का इलाक़ा बशमूल याईर बिन मनस्सी की बस्तियाँ, फिर बसन में अरजूब का इलाक़ा। इसमें 60 ऐसे फ़सीलदार शहर शामिल थे जिनके दरवाज़ों पर पीतल के कुंडे लगे थे,
14अख़ी-नदाब बिन इद्दू : महनायम,
15सुलेमान की बेटी बासमत का शौहर अख़ीमाज़ : नफ़ताली का क़बायली इलाक़ा,
16बाना बिन हूसी : आशर का क़बायली इलाक़ा और बालोत,
17यहूसफ़त बिन फ़रूह : इशकार का क़बायली इलाक़ा,
18सिमई बिन ऐला : बिनयमीन का क़बायली इलाक़ा,
19जबर बिन ऊरी जिलियाद का वह इलाक़ा जिस पर पहले अमोरी बादशाह सीहोन और बसन के बादशाह ओज की हुकूमत थी। इस पूरे इलाक़े पर सिर्फ़ यही एक अफ़सर मुक़र्रर था।

सुलेमान की हुकूमत की अज़मत

20उस ज़माने में इसराईल और यहूदाह के लोग साहिल की रेत की मानिंद बेशुमार थे। लोगों को खाने और पीने की सब चीज़ें दस्तयाब थीं, और वह ख़ुश थे।
21सुलेमान दरियाए-फ़ुरात से लेकर फ़िलिस्तियों के इलाक़े और मिसरी सरहद तक तमाम ममालिक पर हुकूमत करता था। उसके जीते-जी यह ममालिक उसके ताबे रहे और उसे ख़राज देते थे।
22सुलेमान के दरबार की रोज़ाना ज़रूरियात यह थीं : तक़रीबन 5,000 किलोग्राम बारीक मैदा, तक़रीबन 10,000 किलोग्राम आम मैदा, 2310 मोटे-ताज़े बैल, चरागाहों में पले हुए 20 आम बैल, 100 भेड़-बकरियाँ, और इसके अलावा हिरन, ग़ज़ाल, मृग और मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मोटे-ताज़े मुरग़।

24जितने ममालिक दरियाए-फ़ुरात के मग़रिब
में थे उन सब पर सुलेमान की हुकूमत थी, यानी
तिफ़सह से लेकर ग़ज़्ज़ा तक। किसी भी पड़ोसी
मुल्क से उसका झगड़ा नहीं था, बल्कि सबके
साथ सुलह थी। 25उसके जीते-जी पूरे यहूदाह
और इसराईल में सुलह-सलामती रही। शिमाल
में दान से लेकर जुनूब में बैर-सबा तक हर एक
सलामती से अंगूर की अपनी बेल और अंजीर के
अपने दरख़्त के साये में बैठ सकता था।

26अपने रथों के घोड़ों के लिए सुलेमान ने
4,000 थान बनवाए। उसके 12,000 घोड़े थे।
27बारह ज़िलों पर मुक़र्रर अफ़सर बाक़ायदगी
से सुलेमान बादशाह और उसके दरबार की
ज़रूरियात पूरी करते रहे। हर एक को साल में एक
माह के लिए सब कुछ मुहैया करना था। उनकी
मेहनत की वजह से दरबार में कोई कमी न हुई।
28बादशाह की हिदायत के मुताबिक़ वह रथों के
घोड़ों और दूसरे घोड़ों के लिए दरकार जौ और
भूसा बराहे-रास्त उनके थानों तक पहुँचाते थे।

29अल्लाह ने सुलेमान को बहुत ज़्यादा
हिकमत और समझ अता की। उसे साहिल की रेत
जैसा वसी इल्म हासिल हुआ। 30उस की हिकमत
इसराईल के मशरिक़ में रहनेवाले और मिसर
के आलिमों से कहीं ज़्यादा थी। 31इस लिहाज़
से कोई भी उसके बराबर नहीं था। वह ऐतान
इज़राही और महोल के बेटों हैमान, कलकूल और
दरदा पर भी सबक़त ले गया था। उस की शोहरत
इर्दगिर्द के तमाम ममालिक में फैल गई। 32उसने
3,000 कहावतें और 1,005 गीत लिख दिए।
33वह तफ़सील से मुख़्तलिफ़ क़िस्म के पौदों के
बारे में बात कर सकता था, लुबनान में देवदार के
बड़े दरख़्त से लेकर छोटे पौदे ज़ूफ़ा तक जो दीवार
की दराड़ों में उगता है। वह महारत से चौपाइयों,
परिंदों, रेंगनेवाले जानवरों और मछलियों की
तफ़सीलात भी बयान कर सकता था। 34चुनाँचे
तमाम ममालिक के बादशाहों ने अपने सफ़ीरों
को सुलेमान के पास भेज दिया ताकि उस की
हिकमत सुनें।

हीराम बादशाह के साथ सुलेमान का मुआहदा

5 सूर का बादशाह हीराम हमेशा दाऊद का
अच्छा दोस्त रहा था। जब उसे ख़बर मिली
कि दाऊद के बाद सुलेमान को मसह करके
बादशाह बनाया गया है तो उसने अपने सफ़ीरों
को उसे मुबारकबाद देने के लिए भेज दिया।
2तब सुलेमान ने हीराम को पैग़ाम भेजा, 3“आप
जानते हैं कि मेरे बाप दाऊद रब अपने ख़ुदा के
नाम के लिए घर तामीर करना चाहते थे। लेकिन
यह उनके बस की बात नहीं थी, क्योंकि उनके
जीते-जी इर्दगिर्द के ममालिक उनसे जंग करते
रहे। गो रब ने दाऊद को तमाम दुश्मनों पर फ़तह
बख़्शी थी, लेकिन लड़ते लड़ते वह रब का घर न
बना सके। 4अब हालात फ़रक़ हैं : रब मेरे ख़ुदा
ने मुझे पूरा सुकून अता किया है। चारों तरफ़ न
कोई मुख़ालिफ़ नज़र आता है, न कोई ख़तरा।
5इसलिए मैं रब अपने ख़ुदा के नाम के लिए घर
तामीर करना चाहता हूँ। क्योंकि मेरे बाप दाऊद के
जीते-जी रब ने उनसे वादा किया था, ‘तेरे जिस
बेटे को मैं तेरे बाद तख़्त पर बिठाऊँगा वही मेरे
नाम के लिए घर बनाएगा।’ 6अब गुज़ारिश है
कि आपके लकड़हारे लुबनान में मेरे लिए देवदार
के दरख़्त काट दें। मेरे लोग उनके साथ मिलकर
काम करेंगे। आपके लोगों की मज़दूरी मैं ही अदा
करूँगा। जो कुछ भी आप कहेंगे मैं उन्हें दूँगा। आप
तो ख़ूब जानते हैं कि हमारे हाँ सैदा के लकड़हारों
जैसे माहिर नहीं हैं।”

7जब हीराम को सुलेमान का पैग़ाम मिला तो
वह बहुत ख़ुश होकर बोल उठा, “आज रब की
हम्द हो जिसने दाऊद को इस बड़ी क़ौम पर
हुकूमत करने के लिए इतना दानिशमंद बेटा अता
किया है!” 8सुलेमान को हीराम ने जवाब भेजा,
“मुझे आपका पैग़ाम मिल गया है, और मैं आपकी
ज़रूर मदद करूँगा। देवदार और जूनीपर की
जितनी लकड़ी आपको चाहिए वह मैं आपके पास
पहुँचा दूँगा। 9मेरे लोग दरख़्तों के तने लुबनान के

पहाड़ी इलाक़े से नीचे साहिल तक लाएँगे जहाँ हम उनके बेड़े बाँधकर समुंदर पर उस जगह पहुँचा देंगे जो आप मुक़र्रर करेंगे। वहाँ हम तनों के रस्से खोल देंगे, और आप उन्हें ले जा सकेंगे। मुआवज़े में आप मुझे इतनी ख़ुराक मुहैया करें कि मेरे दरबार की ज़रूरियात पूरी हो जाएँ।”

10चुनाँचे हीराम ने सुलेमान को देवदार और जूनीपर की उतनी लकड़ी मुहैया की जितनी उसे ज़रूरत थी। 11मुआवज़े में सुलेमान उसे सालाना तक़रीबन 32,50,000 किलोग्राम गंदुम और तक़रीबन 4,40,000 लिटर ज़ैतून का तेल भेजता रहा। 12इसके अलावा सुलेमान और हीराम ने आपस में सुलह का मुआहदा किया। यों रब ने सुलेमान को हिकमत अता की जिस तरह उसने उससे वादा किया था।

रब का घर बनाने की पहली तैयारियाँ

13-14सुलेमान बादशाह ने लुबनान में यह काम करने के लिए इसराईल में से 30,000 आदमियों की बेगार पर भरती की। उसने अदूनीराम को उन पर मुक़र्रर किया। हर माह वह बारी बारी 10,000 अफ़राद को लुबनान में भेजता रहा। यों हर मज़दूर एक माह लुबनान में और दो माह घर में रहता। 15सुलेमान ने 80,000 आदमियों को कानों में लगाया ताकि वह पत्थर निकालें। 70,000 अफ़राद यह पत्थर यरूशलम लाते थे। 16उन लोगों पर 3,300 निगरान मुक़र्रर थे। 17बादशाह के हुक्म पर वह कानों से बेहतरीन पत्थर के बड़े बड़े टुकड़े निकाल लाए और उन्हें तराशकर रब के घर की बुनियाद के लिए तैयार किया। 18जबल के कारीगरों ने सुलेमान और हीराम के कारीगरों की मदद की। उन्होंने मिलकर पत्थर के बड़े बड़े टुकड़े और लकड़ी को तराशकर रब के घर की तामीर के लिए तैयार किया।

रब के घर की तामीर

6 सुलेमान ने अपनी हुकूमत के चौथे साल के दूसरे महीने ज़ीब में रब के घर की तामीर शुरू की। इसराईल को मिसर से निकले 480 साल गुज़र चुके थे।

2इमारत की लंबाई 90 फ़ुट, चौड़ाई 30 फ़ुट और ऊँचाई 45 फ़ुट थी। 3सामने एक बरामदा बनाया गया जो इमारत जितना चौड़ा यानी 30 फ़ुट और आगे की तरफ़ 15 फ़ुट लंबा था। 4इमारत की दीवारों में खिड़कियाँ थीं जिन पर जंगले लगे थे। 5इमारत से बाहर आकर सुलेमान ने दाएँ-बाएँ की दीवारों और पिछली दीवार के साथ एक ढाँचा खड़ा किया जिसकी तीन मनज़िलें थीं और जिसमें मुख़्तलिफ़ कमरे थे। 6निचली मनज़िल की अंदर की चौड़ाई साढ़े 7 फ़ुट, दरमियानी मनज़िल की 9 फ़ुट और ऊपर की मनज़िल की साढ़े 10 फ़ुट थी। वजह यह थी कि रब के घर की बैरूनी दीवार की मोटाई मनज़िल बमनज़िल कम होती गई। इस तरीक़े से बैरूनी ढाँचे की दूसरी और तीसरी मनज़िल के शहतीरों के लिए रब के घर की दीवार में सूराख़ बनाने की ज़रूरत नहीं थी बल्कि उन्हें दीवार पर ही रखा गया। यानी दरमियानी मनज़िल की इमारतवाली दीवार निचली की दीवार की निसबत कम मोटी और ऊपरवाली मनज़िल की इमारतवाली दीवार दरमियानी मनज़िल की दीवार की निसबत कम मोटी थी। यों इस ढाँचे की छतों के शहतीरों को इमारत की दीवार तोड़कर उसमें लगाने की ज़रूरत नहीं थी बल्कि उन्हें इमारत की दीवार पर ही रखा गया।

7जो पत्थर रब के घर की तामीर के लिए इस्तेमाल हुए उन्हें पत्थर की कान के अंदर ही तराशकर तैयार किया गया। इसलिए जब उन्हें ज़ेरे-तामीर इमारत के पास लाकर जोड़ा गया तो न हथौड़ों, न छैनी न लोहे के किसी और औज़ार की आवाज़ सुनाई दी।

8इस ढाँचे में दाख़िल होने के लिए इमारत की दहनी दीवार में दरवाज़ा बनाया गया। वहाँ से एक सीढ़ी परस्तार को दरमियानी और ऊपर की मनज़िल तक पहुँचाती थी। 9यों सुलेमान ने इमारत को तकमील तक पहुँचाया। छत को देवदार के शहतीरों और तख़्तों से बनाया गया। 10जो ढाँचा इमारत के तीनों तरफ़ खड़ा किया गया उसे देवदार के शहतीरों से इमारत की बाहरवाली दीवार के साथ जोड़ा गया। उस की तीनों मनज़िलों की ऊँचाई साढ़े सात सात फ़ुट थी।

11एक दिन रब सुलेमान से हमकलाम हुआ, 12"जहाँ तक मेरी सुकूनतगाह का ताल्लुक़ है जो तू मेरे लिए बना रहा है, अगर तू मेरे तमाम अहकाम और हिदायात के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारे तो मैं तेरे लिए वह कुछ करूँगा जिसका वादा मैंने तेरे बाप दाऊद से किया है। 13तब मैं इसराईल के दरमियान रहूँगा और अपनी क़ौम को कभी तर्क नहीं करूँगा।"

रब के घर का अंदरूनी हिस्सा

14जब इमारत की दीवारें और छत मुकम्मल हुईं 15तो अंदरूनी दीवारों पर फ़र्श से लेकर छत तक देवदार के तख़्ते लगाए गए। फ़र्श पर जूनीपर के तख़्ते लगाए गए। 16अब तक इमारत का एक ही कमरा था, लेकिन अब उसने देवदार के तख़्तों से फ़र्श से लेकर छत तक दीवार खड़ी करके पिछले हिस्से में अलग कमरा बना दिया जिसकी लंबाई 30 फ़ुट थी। यह मुक़द्दसतरीन कमरा बन गया। 17जो हिस्सा सामने रह गया उसे मुक़द्दस कमरा मुक़र्रर किया गया। उस की लंबाई 60 फ़ुट थी। 18इमारत की तमाम अंदरूनी दीवारों पर देवदार के तख़्ते यों लगे थे कि कहीं भी पत्थर नज़र न आया। तख़्तों पर तूँबे और फूल कंदा किए गए थे।

19पिछले कमरे में रब के अहद का संदूक़ रखना था। 20इस कमरे की लंबाई 30 फ़ुट, चौड़ाई 30 फ़ुट और ऊँचाई 30 फ़ुट थी। सुलेमान ने इसकी तमाम दीवारों और फ़र्श पर ख़ालिस सोना चढ़ाया। मुक़द्दसतरीन कमरे के सामने देवदार की क़ुरबानगाह थी। उस पर भी सोना मँढा गया 21बल्कि इमारत के सामनेवाले कमरे की दीवारों, छत और फ़र्श पर भी सोना मँढा गया। मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े पर सोने की ज़ंजीरें लगाई गईं। 22चुनाँचे इमारत की तमाम अंदरूनी दीवारों, छत और फ़र्श पर सोना मँढा गया, और इसी तरह मुक़द्दसतरीन कमरे के सामने की क़ुरबानगाह पर भी।

23फिर सुलेमान ने ज़ैतून की लकड़ी से दो करूबी फ़रिश्ते बनवाए जिन्हें मुक़द्दसतरीन कमरे में रखा गया। इन मुजस्समों का क़द 15 फ़ुट था। 24-25दोनों शक्लो-सूरत में एक जैसे थे। हर एक के दो पर थे, और हर पर की लंबाई साढ़े सात सात फ़ुट थी। चुनाँचे एक पर के सिरे से दूसरे पर के सिरे तक का फ़ासला 15 फ़ुट था। 26हर एक का क़द 15 फ़ुट था। 27उन्हें मुक़द्दसतरीन कमरे में यों एक दूसरे के साथ खड़ा किया गया कि हर फ़रिश्ते का एक पर दूसरे के पर से लगता जबकि दाईं और बाईं तरफ़ हर एक का दूसरा पर दीवार के साथ लगता था। 28इन फ़रिश्तों पर भी सोना मँढा गया।

29मुक़द्दस और मुक़द्दसतरीन कमरों की दीवारों पर करूबी फ़रिश्ते, खजूर के दरख़्त और फूल कंदा किए गए। 30दोनों कमरों के फ़र्श पर भी सोना मँढा गया। 31सुलेमान ने मुक़द्दसतरीन कमरे का दरवाज़ा ज़ैतून की लकड़ी से बनवाया। उसके दो किवाड़ थे, और चौखट की लकड़ी के पाँच कोने थे। 32दरवाज़े के किवाड़ों पर करूबी फ़रिश्ते, खजूर के दरख़्त और फूल कंदा किए गए। इन किवाड़ों पर भी फ़रिश्तों और खजूर के दरख़्तों समेत सोना मँढा गया। 33सुलेमान ने इमारत में दाख़िल होनेवाले दरवाज़े के लिए भी ज़ैतून की लकड़ी से चौखट बनवाई, लेकिन उस की लकड़ी के चार कोने थे। 34इस दरवाज़े के दो किवाड़ जूनीपर की लकड़ी के बने हुए थे। दोनों किवाड़ दीवार तक घूम सकते थे। 35इन किवाड़ों

पर भी करूबी फ़रिश्ते, खजूर के दरख़्त और फूल कंदा किए गए थे। फिर उन पर सोना यों मँढा गया कि वह अच्छी तरह इन बेल-बूटों के साथ लग गया।

36इमारत के सामने एक अंदरूनी सहन बनाया गया जिसकी चारदीवारी यों तामीर हुई कि पत्थर के हर तीन रद्दों के बाद देवदार के शहतीरों का एक रद्दा लगाया गया।

37रब के घर की बुनियाद सुलेमान की हुकूमत के चौथे साल के दूसरे महीने ज़ीब[a] में डाली
गई, 38और उस की हुकूमत के ग्यारहवें साल के आठवें महीने बूल[b] में इमारत मुकम्मल हुई। सब कुछ नक़्शे के ऐन मुताबिक़ बना। इस काम पर कुल सात साल लग गए।

सुलेमान का महल

7 जो महल सुलेमान ने बनवाया वह 13 साल के बाद मुकम्मल हुआ।

2-3उस की एक इमारत का नाम 'लुबनान का जंगल' था। इमारत की लंबाई 150 फ़ुट, चौड़ाई 75 फ़ुट और ऊँचाई 45 फ़ुट थी। निचली मनज़िल एक बड़ा हाल था जिसके देवदार की लकड़ी के 45 सतून थे। पंद्रह पंद्रह सतूनों को तीन क़तारों में खड़ा किया गया था। सतूनों पर शहतीर थे जिन पर दूसरी मनज़िल के फ़र्श के लिए देवदार के तख़्ते लगाए गए थे। दूसरी मनज़िल के मुख़्तलिफ़ कमरे थे, और छत भी
देवदार की लकड़ी से बनाई गई थी। 4हाल की दोनों लंबी दीवारों में तीन तीन खिड़कियाँ थीं, और एक दीवार की खिड़कियाँ दूसरी दीवार
की खिड़कियों के बिलकुल मुक़ाबिल थीं। 5इन दीवारों के तीन तीन दरवाज़े भी एक दूसरे के मुक़ाबिल थे। उनकी चौखटों की लकड़ी के चार चार कोने थे।

6इसके अलावा सुलेमान ने सतूनों का हाल बनवाया जिसकी लंबाई 75 फ़ुट और चौड़ाई 45 फ़ुट थी। हाल के सामने सतूनों का बरामदा था।
7उसने दीवान भी तामीर किया जो दीवाने-अदल कहलाता था। उसमें उसका तख़्त था, और वहाँ वह लोगों की अदालत करता था। दीवान की चारों दीवारों पर फ़र्श से लेकर छत तक देवदार के तख़्ते लगे हुए थे।

8दीवान के पीछे सहन था जिसमें बादशाह का रिहाइशी महल था। महल का डिज़ायन दीवान जैसा था। उस की मिसरी बीवी फ़िरौन की बेटी का महल भी डिज़ायन में दीवान से मुताबिक़त रखता था।

9यह तमाम इमारतें बुनियादों से लेकर छत तक और बाहर से लेकर बड़े सहन तक आला क़िस्म के पत्थरों से बनी हुई थीं, ऐसे पत्थरों से जो चारों तरफ़ आरी से नाप के ऐन मुताबिक़ काटे गए
थे। 10बुनियादों के लिए उम्दा क़िस्म के बड़े बड़े पत्थर इस्तेमाल हुए। बाज़ की लंबाई 12 और
बाज़ की 15 फ़ुट थी। 11इन पर आला क़िस्म के पत्थरों की दीवारें खड़ी की गईं। दीवारों में
देवदार के शहतीर भी लगाए गए। 12बड़े सहन की चारदीवारी यों बनाई गई कि पत्थरों के हर तीन रद्दों के बाद देवदार के शहतीरों का एक रद्दा लगाया गया था। जो अंदरूनी सहन रब के घर के इर्दगिर्द था उस की चारदीवारी भी इसी तरह ही बनाई गई, और इसी तरह रब के घर के बरामदे की दीवारें भी।

रब के घर के सामने के दो ख़ास सतून

13फिर सुलेमान बादशाह ने सूर के एक आदमी
को बुलाया जिसका नाम हीराम था। 14उस की माँ इसराईली क़बीले नफ़ताली की बेवा थी जबकि उसका बाप सूर का रहनेवाला और पीतल का कारीगर था। हीराम बड़ी हिकमत, समझदारी और महारत से पीतल की हर चीज़ बना सकता था। इस क़िस्म का काम करने के लिए वह सुलेमान बादशाह के पास आया।

15पहले उसने पीतल के दो सतून ढाल दिए। हर सतून की ऊँचाई 27 फ़ुट और घेरा 18 फ़ुट

[a]अप्रैल ता मई।

[b]अक्तूबर ता नवंबर।

था। 16फिर उसने हर सतून के लिए पीतल का
बालाई हिस्सा ढाल दिया जिसकी ऊँचाई साढ़े
7 फ़ुट थी। 17हर बालाई हिस्से को एक दूसरे
के साथ ख़ूबसूरती से मिलाई गई सात ज़ंजीरों
से आरास्ता किया गया। 18-20इन ज़ंजीरों के
ऊपर हीराम ने हर बालाई हिस्से को पीतल के
200 अनारों से सजाया जो दो क़तारों में लगाए
गए। फिर बालाई हिस्से सतूनों पर लगाए गए।
बालाई हिस्सों की सोसन के फूल की-सी शक्ल
थी, और यह फूल 6 फ़ुट ऊँचे थे। 21हीराम ने
दोनों सतून रब के घर के बरामदे के सामने खड़े
किए। दहने हाथ के सतून का नाम उसने ‘यकीन’
और बाएँ हाथ के सतून का नाम ‘बोअज़’ रखा।
22बालाई हिस्से सोसन-नुमा थे। चुनाँचे काम
मुकम्मल हुआ।

पीतल का हौज़

23इसके बाद हीराम ने पीतल का बड़ा गोल
हौज़ ढाल दिया जिसका नाम ‘समुंदर’ रखा गया।
उस की ऊँचाई साढ़े 7 फ़ुट, उसका मुँह 15 फ़ुट
चौड़ा और उसका घेरा तक़रीबन 45 फ़ुट था।
24हौज़ के किनारे के नीचे तूँबों की दो क़तारें
थीं। फ़ी फ़ुट तक़रीबन 6 तूँबे थे। तूँबे और हौज़
मिलकर ढाले गए थे। 25हौज़ को बैलों के 12
मुजस्समों पर रखा गया। तीन बैलों का रुख़
शिमाल की तरफ़, तीन का रुख़ मग़रिब की तरफ़,
तीन का रुख़ जुनूब की तरफ़ और तीन का रुख़
मशरिक़ की तरफ़ था। उनके पिछले हिस्से हौज़
की तरफ़ थे, और हौज़ उनके कंधों पर पड़ा था।
26हौज़ का किनारा प्याले बल्कि सोसन के फूल
की तरह बाहर की तरफ़ मुड़ा हुआ था। उस की
दीवार तक़रीबन तीन इंच मोटी थी, और हौज़ में
पानी के तक़रीबन 44,000 लिटर समा जाते थे।

पानी के बासन उठाने की हथगाड़ियाँ

27फिर हीराम ने पानी के बासन उठाने के लिए
पीतल की हथगाड़ियाँ बनाईं। हर गाड़ी की लंबाई
6 फ़ुट, चौड़ाई 6 फ़ुट और ऊँचाई साढ़े 4 फ़ुट
थी। 28हर गाड़ी का ऊपर का हिस्सा सरियों से
मज़बूत किया गया फ़्रेम था। 29फ़्रेम के बैरूनी
पहलू शेरबबरों, बैलों और करूबी फ़रिश्तों से सजे
हुए थे। शेरों और बैलों के ऊपर और नीचे पीतल
के सेहरे लगे हुए थे। 30हर गाड़ी के चार पहिये
और दो धुरे थे। यह भी पीतल के थे। चारों कोनों
पर पीतल के ऐसे टुकड़े लगे थे जिन पर बासन
रखे जाते थे। यह टुकड़े भी सेहरों से सजे हुए थे।
31फ़्रेम के अंदर जिस जगह बासन को रखा जाता
था वह गोल थी। उस की ऊँचाई डेढ़ फ़ुट थी, और
उसका मुँह सवा दो फ़ुट चौड़ा था। उसके बैरूनी
पहलू पर चीज़ें कंदा की गई थीं। गाड़ी का फ़्रेम
गोल नहीं बल्कि चौरस था। 32गाड़ी के फ़्रेम के
नीचे मज़कूरा चार पहिये थे जो धुरों से जुड़े थे। धुरे
फ़्रेम के साथ ही ढल गए थे। हर पहिया सवा दो
फ़ुट चौड़ा था। 33पहिये रथों के पहियों की मानिंद
थे। उनके धुरे, किनारे, तार और नाभें सबके सब
पीतल से ढाले गए थे। 34गाड़ियों के चार कोनों
पर दस्ते लगे थे जो फ़्रेम के साथ मिलकर ढाले
गए थे। 35-36हर गाड़ी के ऊपर का किनारा नौ
इंच ऊँचा था। कोनों पर लगे दस्ते और फ़्रेम के
पहलू हर जगह करूबी फ़रिश्तों, शेरबबरों और
खजूर के दरख़्तों से सजे हुए थे। चारों तरफ़ सेहरे
भी कंदा किए गए। 37हीराम ने दसों गाड़ियों को
एक ही साँचे में ढाला, इसलिए सब एक जैसी
थीं।

38हीराम ने हर गाड़ी के लिए पीतल का बासन
ढाल दिया। हर बासन 6 फ़ुट चौड़ा था, और उसमें
880 लिटर पानी समा जाता था। 39उसने पाँच
गाड़ियाँ रब के घर के दाएँ हाथ और पाँच उसके
बाएँ हाथ खड़ी कीं। हौज़ बनाम समुंदर को उसने
रब के घर के जुनूब-मशरिक़ में रख दिया।

उस सामान की फ़हरिस्त जो हीराम ने बनाया

40हीराम ने बासन, बेलचे और छिड़काव के
कटोरे भी बनाए। यों उसने रब के घर में वह
सारा काम मुकम्मल किया जिसके लिए सुलेमान

बादशाह ने उसे बुलाया था। उसने ज़ैल की चीज़ें बनाईं :
41दो सतून,
सतूनों पर लगे प्यालानुमा बालाई हिस्से,
बालाई हिस्सों पर लगी ज़ंजीरों का डिज़ायन,
42ज़ंजीरों के ऊपर लगे अनार (फ़ी बालाई हिस्सा 200 अदद),
4310 हथगाड़ियाँ,
इन पर के पानी के 10 बासन,
44हौज़ बनाम समुंदर,
इसे उठानेवाले बैल के 12 मुजस्समे,
45बालटियाँ, बेलचे और छिड़काव के कटोरे।
यह तमाम सामान जो हीराम ने सुलेमान के हुक्म पर रब के घर के लिए बनाया पीतल से ढालकर पालिश किया गया था।
46बादशाह ने उसे वादीए-यरदन में सुक्कात और ज़रतान के दरमियान ढलवाया। वहाँ एक फ़ौंडरी थी जहाँ हीराम ने गारे के साँचे बनाकर हर चीज़ ढाल दी।
47इस सामान के लिए सुलेमान बादशाह ने इतना ज़्यादा पीतल इस्तेमाल किया कि उसका कुल वज़न मालूम न हो सका।

रब के घर के अंदर सोने का सामान

48रब के घर के अंदर के लिए सुलेमान ने दर्जे-ज़ैल सामान बनवाया :
सोने की क़ुरबानगाह,
सोने की वह मेज़ जिस पर रब के लिए मख़सूस रोटियाँ पड़ी रहती थीं,
49ख़ालिस सोने के 10 शमादान जो मुक़द्दसतरीन कमरे के सामने रखे गए, पाँच दरवाज़े के दहने हाथ और पाँच उसके बाएँ हाथ,
सोने के वह फूल जिनसे शमादान आरास्ता थे,
सोने के चराग़ और बत्ती को बुझाने के औज़ार,
50ख़ालिस सोने के बासन, चराग़ को कतरने के औज़ार, छिड़काव के कटोरे और प्याले,
जलते हुए कोयले के लिए ख़ालिस सोने के बरतन,
मुक़द्दसतरीन कमरे और बड़े हाल के दरवाज़ों के क़ब्ज़े।
51रब के घर की तकमील पर सुलेमान बादशाह ने वह सोना-चाँदी और बाक़ी तमाम क़ीमती चीज़ें रब के घर के ख़ज़ानों में रखवा दीं जो उसके बाप दाऊद ने रब के लिए मख़सूस की थीं।

अहद का संदूक़ रब के घर में लाया जाता है

8 फिर सुलेमान ने इसराईल के तमाम बुज़ुर्गों और क़बीलों और कुंबों के तमाम सरपरस्तों को अपने पास यरूशलम में बुलाया, क्योंकि रब के अहद का संदूक़ अब तक यरूशलम के उस हिस्से में था जो 'दाऊद का शहर' या सिय्यून कहलाता है। सुलेमान चाहता था कि क़ौम के नुमाइंदे हाज़िर हों जब संदूक़ को वहाँ से रब के घर में पहुँचाया जाए।
2चुनाँचे इसराईल के तमाम मर्द साल के सातवें महीने इतानीम[a] में सुलेमान बादशाह के पास यरूशलम में जमा हुए। इसी महीने में झोंपड़ियों की ईद मनाई जाती थी।
3जब सब जमा हुए तो इमाम रब के संदूक़ को उठाकर
4रब के घर में लाए। लावियों के साथ मिलकर उन्होंने मुलाक़ात के ख़ैमे को भी उसके तमाम मुक़द्दस सामान समेत रब के घर में पहुँचाया।
5वहाँ संदूक़ के सामने सुलेमान बादशाह और बाक़ी तमाम जमा हुए इसराईलियों ने इतनी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल क़ुरबान किए कि उनकी तादाद गिनी नहीं जा सकती थी।
6इमामों ने रब के अहद का संदूक़ पिछले यानी मुक़द्दसतरीन कमरे में लाकर करूबी फ़रिश्तों के परों के नीचे रख दिया।
7फ़रिश्तों के पर पूरे संदूक़ पर उस की उठाने की लकड़ियों समेत फैले रहे।
8तो भी उठाने की यह लकड़ियाँ इतनी लंबी थीं कि उनके सिरे सामनेवाले यानी मुक़द्दस कमरे से नज़र आते थे। लेकिन वह बाहर से देखे नहीं जा सकते थे। आज तक वह वहीं मौजूद हैं।
9संदूक़ में सिर्फ़ पत्थर की वह दो तख़्तियाँ थीं जिनको मूसा ने होरिब यानी कोहे-सीना के दामन में उसमें रख

[a]सितंबर ता अक्तूबर

दिया था, उस वक़्त जब रब ने मिसर से निकले
हुए इसराईलियों के साथ अहद बाँधा था।
10-11जब इमाम मुक़द्दस कमरे से निकल-
कर सहन में आए तो रब का घर एक बादल
से भर गया। इमाम अपनी ख़िदमत अंजाम न दे
सके, क्योंकि रब का घर उसके जलाल के बादल
से मामूर हो गया था। 12यह देखकर सुलेमान ने
दुआ की, "रब ने फ़रमाया है कि मैं घने बादल के
अंधेरे में रहूँगा। 13यक़ीनन मैंने तेरे लिए अज़ीम
सुकूनतगाह बनाई है, एक मक़ाम जो तेरी अबदी
सुकूनत के लायक़ है।"

रब के घर की मख़सूसियत पर सुलेमान की तक़रीर

14फिर बादशाह ने मुड़कर रब के घर के सामने
खड़ी इसराईल की पूरी जमात की तरफ़ रुख़
किया। उसने उन्हें बरकत देकर कहा,
15"रब इसराईल के ख़ुदा की तारीफ़ हो जिसने
वह वादा पूरा किया है जो उसने मेरे बाप दाऊद से
किया था। क्योंकि उसने फ़रमाया, 16'जिस दिन
मैं अपनी क़ौम इसराईल को मिसर से निकाल
लाया उस दिन से लेकर आज तक मैंने कभी न
फ़रमाया कि इसराईली क़बीलों के किसी शहर में
मेरे नाम की ताज़ीम में घर बनाया जाए। लेकिन
मैंने दाऊद को अपनी क़ौम इसराईल का बादशाह
बनाया है।'
17मेरे बाप दाऊद की बड़ी ख़ाहिश थी कि रब
इसराईल के ख़ुदा के नाम की ताज़ीम में घर
बनाए। 18लेकिन रब ने एतराज़ किया, 'मैं ख़ुश
हूँ कि तू मेरे नाम की ताज़ीम में घर तामीर करना
चाहता है, 19लेकिन तू नहीं बल्कि तेरा बेटा ही
उसे बनाएगा।'
20और वाक़ई, रब ने अपना वादा पूरा किया है।
मैं रब के वादे के ऐन मुताबिक़ अपने बाप दाऊद
की जगह इसराईल का बादशाह बनकर तख़्त पर
बैठ गया हूँ। और अब मैंने रब इसराईल के ख़ुदा
के नाम की ताज़ीम में घर भी बनाया है। 21उसमें
मैंने उस संदूक़ के लिए मक़ाम तैयार कर रखा है
जिसमें शरीअत की तख़्तियाँ पड़ी हैं, उस अहद
की तख़्तियाँ जो रब ने हमारे बापदादा से मिसर
से निकालते वक़्त बाँधा था।"

रब के घर की मख़सूसियत पर सुलेमान की दुआ

22फिर सुलेमान इसराईल की पूरी जमात
के देखते देखते रब की क़ुरबानगाह के सामने
खड़ा हुआ। उसने अपने हाथ आसमान की तरफ़
उठाकर 23दुआ की,
"ऐ रब इसराईल के ख़ुदा, तुझ जैसा कोई ख़ुदा
नहीं है, न आसमान और न ज़मीन पर। तू अपना
वह अहद क़ायम रखता है जिसे तूने अपनी क़ौम
के साथ बाँधा है और अपनी मेहरबानी उन सब पर
ज़ाहिर करता है जो पूरे दिल से तेरी राह पर चलते
हैं। 24तूने अपने ख़ादिम दाऊद से किया हुआ
वादा पूरा किया है। जो बात तूने अपने मुँह से मेरे
बाप से की वह तूने अपने हाथ से आज ही पूरी की
है। 25ऐ रब इसराईल के ख़ुदा, अब अपनी दूसरी
बात भी पूरी कर जो तूने अपने ख़ादिम दाऊद से
की थी। क्योंकि तूने मेरे बाप से वादा किया था,
'अगर तेरी औलाद तेरी तरह अपने चाल-चलन
पर ध्यान देकर मेरे हुज़ूर चलती रहे तो इसराईल
पर उस की हुकूमत हमेशा तक क़ायम रहेगी।'
26ऐ इसराईल के ख़ुदा, अब बराहे-करम अपना
यह वादा पूरा कर जो तूने अपने ख़ादिम मेरे बाप
दाऊद से किया है।
27लेकिन क्या अल्लाह वाक़ई ज़मीन पर
सुकूनत करेगा? नहीं, तू तो बुलंदतरीन आसमान
में भी समा नहीं सकता! तो फिर यह मकान
जो मैंने बनाया है किस तरह तेरी सुकूनतगाह
बन सकता है? 28ऐ रब मेरे ख़ुदा, तो भी अपने
ख़ादिम की दुआ और इल्तिजा सुन जब मैं आज
तेरे हुज़ूर पुकारते हुए इलतमास करता हूँ 29कि
बराहे-करम दिन-रात इस इमारत की निगरानी
कर! क्योंकि यह वह जगह है जिसके बारे में तूने
ख़ुद फ़रमाया, 'यहाँ मेरा नाम सुकूनत करेगा।'
चुनाँचे अपने ख़ादिम की गुज़ारिश सुन जो मैं इस

मक़ाम की तरफ़ रुख़ किए हुए करता हूँ। 30जब
हम इस मक़ाम की तरफ़ रुख़ करके दुआ करें तो
अपने ख़ादिम और अपनी क़ौम की इल्तिजा सुन।
आसमान पर अपने तख़्त से हमारी सुन। और जब
सुनेगा तो हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर!

31अगर किसी पर इलज़ाम लगाया जाए और
उसे यहाँ तेरी क़ुरबानगाह के सामने लाया जाए
ताकि हलफ़ उठाकर वादा करे कि मैं बेक़ुसूर हूँ
32तो बराहे-करम आसमान पर से सुनकर अपने
ख़ादिमों का इनसाफ़ कर। क़ुसूरवार को मुजरिम
ठहराकर उसके अपने सर पर वह कुछ आने दे जो
उससे सरज़द हुआ है, और बेक़ुसूर को बेइलज़ाम
क़रार देकर उस की रास्तबाज़ी का बदला दे।

33हो सकता है किसी वक़्त तेरी क़ौम इसराईल
तेरा गुनाह करे और नतीजे में दुश्मन के सामने
शिकस्त खाए। अगर इसराईली आख़िरकार तेरे
पास लौट आएँ और तेरे नाम की तमजीद करके
यहाँ इस घर में तुझसे दुआ और इलतमास करें
34तो आसमान पर से उनकी फ़रियाद सुन लेना।
अपनी क़ौम इसराईल का गुनाह मुआफ़ करके
उन्हें दुबारा उस मुल्क में वापस लाना जो तूने
उनके बापदादा को दे दिया था।

35हो सकता है इसराईली तेरा इतना संगीन
गुनाह करें कि काल पड़े और बड़ी देर तक बारिश
न बरसे। अगर वह आख़िरकार इस घर की तरफ़
रुख़ करके तेरे नाम की तमजीद करें और तेरी
सज़ा के बाइस अपना गुनाह छोड़कर लौट आएँ
36तो आसमान पर से उनकी फ़रियाद सुन लेना।
अपने ख़ादिमों और अपनी क़ौम इसराईल को
मुआफ़ कर, क्योंकि तू ही उन्हें अच्छी राह की
तालीम देता है। तब उस मुल्क पर दुबारा बारिश
बरसा दे जो तूने अपनी क़ौम को मीरास में दे दिया
है।

37हो सकता है इसराईल में काल पड़ जाए,
अनाज की फ़सल किसी बीमारी, फफूँदी, टिड्डियों
या कीड़ों से मुतअस्सिर हो जाए, या दुश्मन किसी
शहर का मुहासरा करे। जो भी मुसीबत या बीमारी
हो, 38अगर कोई इसराईली या तेरी पूरी क़ौम
उसका सबब जानकर अपने हाथों को इस घर
की तरफ़ बढ़ाए और तुझसे इलतमास करे 39तो
आसमान पर अपने तख़्त से उनकी फ़रियाद सुन
लेना। उन्हें मुआफ़ करके वह कुछ कर जो ज़रूरी
है। हर एक को उस की तमाम हरकतों का बदला
दे, क्योंकि सिर्फ़ तू ही हर इनसान के दिल को
जानता है। 40फिर जितनी देर वह उस मुल्क में
ज़िंदगी गुज़ारेंगे जो तूने हमारे बापदादा को दिया
था उतनी देर वह तेरा ख़ौफ़ मानेंगे।

41आइंदा परदेसी भी तेरे नाम के सबब से दूर-
दराज़ ममालिक से आएँगे। अगरचे वह तेरी क़ौम
इसराईल के नहीं होंगे 42तो भी वह तेरे अज़ीम
नाम, तेरी बड़ी क़ुदरत और तेरे ज़बरदस्त कामों
के बारे में सुनकर आएँगे और इस घर की तरफ़
रुख़ करके दुआ करेंगे। 43तब आसमान पर से
उनकी फ़रियाद सुन लेना। जो भी दरख़ास्त वह
पेश करें वह पूरी करना ताकि दुनिया की तमाम
अक़वाम तेरा नाम जानकर तेरी क़ौम इसराईल
की तरह ही तेरा ख़ौफ़ मानें और जान लें कि जो
इमारत मैंने तामीर की है उस पर तेरे ही नाम का
ठप्पा लगा है।

44हो सकता है तेरी क़ौम के मर्द तेरी हिदायत
के मुताबिक़ अपने दुश्मन से लड़ने के लिए
निकलें। अगर वह तेरे चुने हुए शहर और उस
इमारत की तरफ़ रुख़ करके दुआ करें जो मैंने
तेरे नाम के लिए तामीर की है 45तो आसमान पर
से उनकी दुआ और इलतमास सुनकर उनके हक़
में इनसाफ़ क़ायम रखना।

46हो सकता है वह तेरा गुनाह करें, ऐसी हरकतें
तो हम सबसे सरज़द होती रहती हैं, और नतीजे
में तू नाराज़ होकर उन्हें दुश्मन के हवाले कर दे जो
उन्हें क़ैद करके अपने किसी दूर-दराज़ या क़रीबी
मुल्क में ले जाए। 47शायद वह जिलावतनी में
तौबा करके दुबारा तेरी तरफ़ रुजू करें और तुझसे
इलतमास करें, 'हमने गुनाह किया है, हमसे
ग़लती हुई है, हमने बेदीन हरकतें की हैं।' 48अगर
वह ऐसा करके दुश्मन के मुल्क में अपने पूरे
दिलो-जान से दुबारा तेरी तरफ़ रुजू करें और तेरी

तरफ़ से बापदादा को दिए गए मुल्क, तेरे चुने
हुए शहर और उस इमारत की तरफ़ रुख़ करके
दुआ करें जो मैंने तेरे नाम के लिए तामीर की है
49तो आसमान पर अपने तख़्त से उनकी दुआ
और इलतमास सुन लेना। उनके हक़ में इनसाफ़
क़ायम करना, 50और अपनी क़ौम के गुनाहों को
मुआफ़ कर देना। जिस भी जुर्म से उन्होंने तेरा
गुनाह किया है वह मुआफ़ कर देना। बख़्श दे
कि उन्हें गिरिफ़्तार करनेवाले उन पर रहम करें।
51क्योंकि यह तेरी ही क़ौम के अफ़राद हैं, तेरी ही
मीरास जिसे तू मिसर के भड़कते भट्टे से निकाल
लाया।

52ऐ अल्लाह, तेरी आँखें मेरी इल्तिजाओं और
तेरी क़ौम इसराईल की फ़रियादों के लिए खुली
रहें। जब भी वह मदद के लिए तुझे पुकारें तो
उनकी सुन लेना! 53क्योंकि तू, ऐ रब क़ादिरे-
मुतलक़ ने इसराईल को दुनिया की तमाम क़ौमों
से अलग करके अपनी ख़ास मिलकियत बना
लिया है। हमारे बापदादा को मिसर से निकालते
वक़्त तूने मूसा की मारिफ़त इस हक़ीक़त का
एलान किया।”

आख़िरी दुआ और बरकत

54इस दुआ के बाद सुलेमान खड़ा हुआ,
क्योंकि दुआ के दौरान उसने रब की क़ुरबानगाह
के सामने अपने घुटने टेके और अपने हाथ
आसमान की तरफ़ उठाए हुए थे। 55अब वह
इसराईल की पूरी जमात के सामने खड़ा हुआ
और बुलंद आवाज़ से उसे बरकत दी,

56“रब की तमजीद हो जिसने अपने वादे के
ऐन मुताबिक़ अपनी क़ौम इसराईल को आरामो-
सुकून फ़राहम किया है। जितने भी ख़ूबसूरत वादे
उसने अपने ख़ादिम मूसा की मारिफ़त किए हैं
वह सबके सब पूरे हो गए हैं। 57जिस तरह रब
हमारा ख़ुदा हमारे बापदादा के साथ था उसी तरह
वह हमारे साथ भी रहे। न वह हमें छोड़े, न तर्क
करे 58बल्कि हमारे दिलों को अपनी तरफ़ मायल
करे ताकि हम उस की तमाम राहों पर चलें और
उन तमाम अहकाम और हिदायात के ताबे रहें जो
उसने हमारे बापदादा को दी हैं।

59रब के हुज़ूर मेरी यह फ़रियाद दिन-रात रब
हमारे ख़ुदा के क़रीब रहे ताकि वह मेरा और अपनी
क़ौम का इनसाफ़ क़ायम रखे और हमारी रोज़ाना
ज़रूरियात पूरी करे। 60तब तमाम अक़वाम जान
लेंगी कि रब ही ख़ुदा है और कि उसके सिवा कोई
और माबूद नहीं है।

61लेकिन लाज़िम है कि आप रब हमारे ख़ुदा
के पूरे दिल से वफ़ादार रहें। हमेशा उस की
हिदायात और अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी
गुज़ारें, बिलकुल उसी तरह जिस तरह आप आज
कर रहे हैं।”

रब के घर की मख़सूसियत पर जशन

62-63फिर बादशाह और तमाम इसराईल ने
रब के हुज़ूर क़ुरबानियाँ पेश करके रब के घर
को मख़सूस किया। इस सिलसिले में सुलेमान
ने 22,000 गाय-बैलों और 1,20,000 भेड़-
बकरियों को सलामती की क़ुरबानियों के तौर
पर ज़बह किया। 64उसी दिन बादशाह ने सहन
का दरमियानी हिस्सा क़ुरबानियाँ चढ़ाने के लिए
मख़सूस किया। वजह यह थी कि पीतल की
क़ुरबानगाह इतनी क़ुरबानियाँ पेश करने के लिए
छोटी थी, क्योंकि भस्म होनेवाली क़ुरबानियों और
ग़ल्ला की नज़रों की तादाद बहुत ज़्यादा थी।
इसके अलावा सलामती की बेशुमार क़ुरबानियों
की चरबी को भी जलाना था।

65ईद 14 दिन तक मनाई गई। पहले हफ़्ते में
सुलेमान और तमाम इसराईल ने रब के घर की
मख़सूसियत मनाई और दूसरे हफ़्ते में झोंपड़ियों
की ईद। बहुत ज़्यादा लोग शरीक हुए। वह दूर-
दराज़ इलाक़ों से यरूशलम आए थे, शिमाल में
लबो-हमात से लेकर जुनूब में उस वादी तक
जो मिसर की सरहद थी। 66दो हफ़्तों के बाद
सुलेमान ने इसराईलियों को रुख़सत किया।
बादशाह को बरकत देकर वह अपने अपने घर चले
गए। सब शादमान और दिल से ख़ुश थे कि रब ने

अपने ख़ादिम दाऊद और अपनी क़ौम इसराईल पर इतनी मेहरबानी की है।

रब सुलेमान से हमकलाम होता है

9 चुनाँचे सुलेमान ने रब के घर और शाही महल को तकमील तक पहुँचा-
या। जो कुछ भी उसने ठान लिया था वह पूरा
हुआ। 2उस वक़्त रब दुबारा उस पर ज़ाहिर हुआ,
उस तरह जिस तरह वह जिबऊन में उस पर ज़ाहिर
हुआ था। 3उसने सुलेमान से कहा,

"जो दुआ और इल्तिजा तूने मेरे हुज़ूर की उसे मैंने सुनकर इस इमारत को जो तूने बनाई है अपने लिए मख़सूसो-मुक़द्दस कर लिया है। उसमें मैं अपना नाम अबद तक क़ायम रखूँगा। मेरी आँखें और दिल अबद तक वहाँ हाज़िर रहेंगे। 4जहाँ
तक तेरा ताल्लुक़ है, अपने बाप दाऊद की तरह दियानतदारी और रास्ती से मेरे हुज़ूर चलता रह। क्योंकि अगर तू मेरे तमाम अहकाम और हिदायात की पैरवी करता रहे 5तो मैं तेरी इसराईल पर
हुकूमत हमेशा तक क़ायम रखूँगा। फिर मेरा वह वादा क़ायम रहेगा जो मैंने तेरे बाप दाऊद से किया था कि इसराईल पर तेरी औलाद की हुकूमत हमेशा तक क़ायम रहेगी।

6लेकिन ख़बरदार! अगर तू या तेरी औलाद
मुझसे दूर होकर मेरे दिए गए अहकाम और हिदायात के ताबे न रहे बल्कि दीगर माबूदों की तरफ़ रुजू करके उनकी ख़िदमत और परस्तिश
करे 7तो मैं इसराईल को उस मुल्क में से मिटा
दूँगा जो मैंने उनको दे दिया था। न सिर्फ़ यह बल्कि मैं इस घर को भी रद्द कर दूँगा जो मैंने अपने नाम के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस कर लिया है। उस वक़्त इसराईल तमाम अक़वाम में मज़ाक़ और लान-तान का निशाना बन जाएगा। 8इस शानदार घर
की बुरी हालत देखकर यहाँ से गुज़रनेवाले तमाम लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, और वह अपनी हिक़ारत का इज़हार करके पूछेंगे, 'रब ने इस मुल्क और इस घर से ऐसा सुलूक क्यों किया?'
9तब लोग जवाब देंगे, 'इसलिए कि गो रब उनका
ख़ुदा उनके बापदादा को मिसर से निकालकर यहाँ लाया तो भी यह लोग उसे तर्क करके दीगर माबूदों से चिमट गए हैं। चूँकि वह उनकी परस्तिश और ख़िदमत करने से बाज़ न आए इसलिए रब ने उन्हें इस सारी मुसीबत में डाल दिया है'।"

हीराम की मदद का सिला

10रब के घर और शाही महल को तामीर करने
में 20 साल सर्फ़ हुए थे। 11उस दौरान सूर का
बादशाह हीराम सुलेमान को देवदार और जूनीपर की उतनी लकड़ी और उतना सोना भेजता रहा जितना सुलेमान चाहता था। जब इमारतें तकमील तक पहुँच गईं तो सुलेमान ने हीराम को मुआवज़े में गलील के 20 शहर दे दिए। 12लेकिन जब
हीराम उनका मुआयना करने के लिए सूर से गलील आया तो वह उसे पसंद न आए। 13उसने
सवाल किया, "मेरे भाई, यह कैसे शहर हैं जो आपने मुझे दिए हैं?" और उसने उस इलाक़े का नाम काबूल यानी 'कुछ भी नहीं' रखा। यह नाम आज तक रायज है। 14बात यह थी कि हीराम
ने इसराईल के बादशाह को तक़रीबन 4,000 किलोग्राम सोना भेजा था।

सुलेमान की मुख़्तलिफ़ मुहिमात

15सुलेमान ने अपने तामीरी काम के लिए
बेगारी लगाए। ऐसे ही लोगों की मदद से उसने न सिर्फ़ रब का घर, अपना महल, इर्दगिर्द के चबूतरे और यरूशलम की फ़सील बनवाई बल्कि तीनों शहर हसूर, मजिद्दो और जज़र को भी।

16जज़र शहर पर मिसर के बादशाह फ़िरौन ने
हमला करके क़ब्ज़ा कर लिया था। उसके कनानी बाशिंदों को क़त्ल करके उसने पूरे शहर को जला दिया था। जब सुलेमान की फ़िरौन की बेटी से शादी हुई तो मिसरी बादशाह ने जहेज़ के तौर पर उसे यह इलाक़ा दे दिया। 17अब सुलेमान
ने जज़र का शहर दुबारा तामीर किया। इसके अलावा उसने नशेबी बैत-हौरून, 18बालात और

रेगिस्तान के शहर तदमूर में बहुत-सा तामीरी काम
कराया।
19सुलेमान ने अपने गोदामों के लिए और
अपने रथों और घोड़ों को रखने के लिए भी शहर
बनवाए। जो कुछ भी वह यरूशलम, लुबनान या
अपनी सलतनत की किसी और जगह बनवाना
चाहता था वह उसने बनवाया।
20-21जिन आदमियों की सुलेमान ने बेगार पर
भरती की वह इसराईली नहीं थे बल्कि अमोरी,
हित्ती, फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी और यबूसी यानी कनान
के पहले बाशिंदों की वह औलाद थे जो बाक़ी रह
गए थे। मुल्क पर क़ब्ज़ा करते वक़्त इसराईली
इन क़ौमों को पूरे तौर पर मिटा न सके, और
आज तक इनकी औलाद को इसराईल के लिए
बेगार में काम करना पड़ता है। 22लेकिन सुलेमान
ने इसराईलियों में से किसी को भी ऐसे काम
करने पर मजबूर न किया बल्कि वह उसके फ़ौजी,
सरकारी अफ़सर, फ़ौज के अफ़सर और रथों के
फ़ौजी बन गए, और उन्हें उसके रथों और घोड़ों पर
मुक़र्रर किया गया। 23सुलेमान के तामीरी काम
पर भी 550 इसराईली मुक़र्रर थे जो ज़िलों पर
मुक़र्रर अफ़सरों के ताबे थे। यह लोग तामीरी काम
करनेवालों की निगरानी करते थे।
24जब फ़िरौन की बेटी यरूशलम के पुराने
हिस्से बनाम 'दाऊद का शहर' से उस महल में
मुंतक़िल हुई जो सुलेमान ने उसके लिए तामीर
किया था तो वह इर्दगिर्द के चबूतरे बनवाने
लगा। 25सुलेमान साल में तीन बार रब को
भस्म होनेवाली और सलामती की क़ुरबानियाँ पेश
करता था। वह उन्हें रब के घर की उस क़ुरबानगाह
पर चढ़ाता था जो उसने रब के लिए बनवाई थी।
साथ साथ वह बख़ूर भी जलाता था। यों उसने रब
के घर को तकमील तक पहुँचाया।
26इसके अलावा सुलेमान बादशाह ने बह-
री जहाज़ों का बेड़ा भी बनवाया। इस काम
का मरकज़ ऐलात के क़रीब शहर अस्यून-
जाबर था। यह बंदरगाह मुल्के-अदोम में
बहरे-क़ुलज़ुम के साहिल पर है। 27हीराम
बादशाह ने उसे तजरबाकार मल्लाह भेजे
ताकि वह सुलेमान के आदमियों के साथ
मिलकर जहाज़ों को चलाएँ। 28उन्होंने ओ-
फ़ीर तक सफ़र किया और वहाँ से तक़रीबन
14,000 किलोग्राम सोना सुलेमान के पास ले
आए।

सबा की मलिका सुलेमान से मिलती है

10 सुलेमान की शोहरत सबा की मलिका
तक पहुँच गई। जब उसने उसके बारे
में सुना और यह भी कि उसने रब के नाम के लिए
क्या कुछ किया है तो वह सुलेमान से मिलने के
लिए रवाना हुई ताकि उसे मुश्किल पहेलियाँ पेश
करके उस की दानिशमंदी जाँच ले। 2वह निहायत
बड़े क़ाफ़िले के साथ यरूशलम पहुँची जिसके ऊँट
बलसान, कसरत के सोने और क़ीमती जवाहिर
से लदे हुए थे।
मलिका की सुलेमान से मुलाक़ात हुई तो उसने
उससे वह तमाम मुश्किल सवालात पूछे जो उसके
ज़हन में थे। 3सुलेमान उसके हर सवाल का
जवाब दे सका। कोई भी बात इतनी पेचीदा
नहीं थी कि बादशाह उसका मतलब मलिका को
बता न सकता। 4सबा की मलिका सुलेमान की
वसी हिकमत और उसके नए महल से बहुत
मुतअस्सिर हुई। 5उसने बादशाह की मेज़ों पर के
मुख़्तलिफ़ खाने देखे और यह कि उसके अफ़सर
किस तरतीब से उस पर बिठाए जाते थे। उसने
बैरों की ख़िदमत, उनकी शानदार वरदियों और
साक़ियों पर भी ग़ौर किया। जब उसने इन बातों
के अलावा भस्म होनेवाली वह क़ुरबानियाँ भी
देखीं जो सुलेमान रब के घर में चढ़ाता था तो
मलिका हक्का-बक्का रह गई।
6वह बोल उठी, "वाक़ई, जो कुछ मैंने अपने
मुल्क में आपके शाहकारों और हिकमत के बारे
में सुना था वह दुरुस्त है। 7जब तक मैंने ख़ुद
आकर यह सब कुछ अपनी आँखों से न देखा
मुझे यक़ीन नहीं आता था। बल्कि हक़ीक़त में
मुझे आपके बारे में आधा भी नहीं बताया गया

था। आपकी हिकमत और दौलत उन रिपोर्टों से कहीं ज़्यादा है जो मुझ तक पहुँची थीं। 8आपके लोग कितने मुबारक हैं! आपके अफ़सर कितने मुबारक हैं जो मुसलसल आपके सामने खड़े रहते और आपकी दानिश भरी बातें सुनते हैं!
9रब आपके ख़ुदा की तमजीद हो जिसने आपको पसंद करके इसराईल के तख़्त पर बिठाया है। रब इसराईल से अबदी मुहब्बत रखता है, इसी लिए उसने आपको बादशाह बना दिया है ताकि इनसाफ़ और रास्तबाज़ी क़ायम रखें।"

10फिर मलिका ने सुलेमान को तक़रीबन 4,000 किलोग्राम सोना, बहुत ज़्यादा बलसान और जवाहिर दिए। बाद में कभी भी उतना बलसान इसराईल में नहीं लाया गया जितना उस वक़्त सबा की मलिका लाई।

11हीराम के जहाज़ ओफ़ीर से न सिर्फ़ सोना लाए बल्कि उन्होंने क़ीमती लकड़ी और जवाहिर भी बड़ी मिक़दार में इसराईल तक पहुँचाए।
12जितनी क़ीमती लकड़ी उन दिनों में दरामद हुई उतनी आज तक कभी यहूदाह में नहीं लाई गई। इस लकड़ी से बादशाह ने रब के घर और अपने महल के लिए कटहरे बनवाए। यह मौसीक़ारों के सरोद और सितार बनाने के लिए भी इस्तेमाल हुई।

13सुलेमान बादशाह ने अपनी तरफ़ से सबा की मलिका को बहुत-से तोह्फ़े दिए। नीज़, जो कुछ भी मलिका चाहती थी या उसने माँगा वह उसे दिया गया। फिर वह अपने नौकर-चाकरों और अफ़सरों के हमराह अपने वतन वापस चली गई।

सुलेमान की दौलत और शोहरत

14जो सोना सुलेमान को सालाना मिलता था उसका वज़न तक़रीबन 23,000 किलो-
ग्राम था। 15इसमें वह टैक्स शामिल नहीं थे जो उसे सौदागरों, ताजिरों, अरब बादशाहों और ज़िलों के अफ़सरों से मिलते थे।

16-17सुलेमान बादशाह ने 200 बड़ी और 300 छोटी ढालें बनवाईं। उन पर सोना मँढा गया। हर बड़ी ढाल के लिए तक़रीबन 7 किलोग्राम सोना इस्तेमाल हुआ और हर छोटी ढाल के लिए तक़रीबन साढ़े 3 किलोग्राम। सुलेमान ने उन्हें 'लुबनान का जंगल' नामी महल में महफ़ूज़ रखा।

18इनके अलावा बादशाह ने हाथीदाँत से आरास्ता एक बड़ा तख़्त बनवाया जिस पर ख़ालिस सोना चढ़ाया गया। 19-20तख़्त की पुश्त
का ऊपर का हिस्सा गोल था, और उसके हर बाज़ू के साथ शेरबबर का मुजस्समा था। तख़्त कुछ ऊँचा था, और बादशाह छः पाएवाली सीढ़ी पर चढ़कर उस पर बैठता था। दाईं और बाईं तरफ़ हर पाए पर शेरबबर का मुजस्समा था। इस क़िस्म का तख़्त किसी और सलतनत में नहीं पाया जाता था।

21सुलेमान के तमाम प्याले सोने के थे, बल्कि 'लुबनान का जंगल' नामी महल में तमाम बरतन ख़ालिस सोने के थे। कोई भी चीज़ चाँदी की नहीं थी, क्योंकि सुलेमान के ज़माने में चाँदी की कोई क़दर नहीं थी। 22बादशाह के अपने बहरी
जहाज़ थे जो हीराम के जहाज़ों के साथ मिलकर मुख़्तलिफ़ जगहों पर जाते थे। हर तीन साल के बाद वह सोने-चाँदी, हाथीदाँत, बंदरों और मोरों से लदे हुए वापस आते थे।

23सुलेमान की दौलत और हिकमत दुनिया के तमाम बादशाहों से कहीं ज़्यादा थी। 24पूरी दुनिया
उससे मिलने की कोशिश करती रही ताकि वह हिकमत सुन ले जो अल्लाह ने उसके दिल में डाल दी थी। 25साल बसाल जो भी सुलेमान के दरबार
में आता वह कोई न कोई तोह्फ़ा लाता। यों उसे सोने-चाँदी के बरतन, क़ीमती लिबास, हथियार, बलसान, घोड़े और ख़च्चर मिलते रहे।

26सुलेमान के 1,400 रथ और 12,000 घोड़े थे। कुछ उसने रथों के लिए मख़सूस किए गए शहरों में और कुछ यरूशलम में अपने पास रखे। 27बादशाह की सरगरमियों के बाइस चाँदी
पत्थर जैसी आम हो गई और देवदार की क़ीमती लकड़ी यहूदाह के मग़रिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े की अंजीर-तूत की सस्ती लकड़ी जैसी आम

हो गई। 28बादशाह अपने घोड़े मिसर और क़ुए
यानी किलिकिया से दरामद करता था। उसके
ताजिर इन जगहों पर जाकर उन्हें ख़रीद लाते थे।
29बादशाह के रथ मिसर से दरामद होते थे। हर
रथ की क़ीमत चाँदी के 600 सिक्के और हर घोड़े
की क़ीमत चाँदी के 150 सिक्के थी। सुलेमान
के ताजिर यह घोड़े बरामद करते हुए तमाम हित्ती
और अरामी बादशाहों तक भी पहुँचाते थे।

सुलेमान रब से दूर हो जाता है

11 लेकिन सुलेमान बहुत-सी ग़ैर-
मुल्की ख़वातीन से मुहब्बत कर-
ता था। फ़िरौन की बेटी के अलावा उस की
शादी मोआबी, अम्मोनी, अदोमी, सैदानी और
हित्ती औरतों से हुई। 2इन क़ौमों के बारे में रब ने
इसराईलियों को हुक्म दिया था, “न तुम इनके
घरों में जाओ और न यह तुम्हारे घरों में आएँ,
वरना यह तुम्हारे दिल अपने देवताओं की तरफ़
मायल कर देंगे।” तो भी सुलेमान बड़े प्यार से
अपनी इन बीवियों से लिपटा रहा। 3उस की शाही
ख़ानदानों से ताल्लुक़ रखनेवाली 700 बीवियाँ
और 300 दाश्ताएँ थीं। इन औरतों ने आख़िरकार
उसका दिल रब से दूर कर दिया। 4जब वह बूढ़ा
हो गया तो उन्होंने उसका दिल दीगर माबूदों की
तरफ़ मायल कर दिया। यों वह बुढ़ापे में अपने
बाप दाऊद की तरह पूरे दिल से रब का वफ़ादार
न रहा 5बल्कि सैदानियों की देवी अस्तारात और
अम्मोनियों के देवता मिलकूम की पूजा करने
लगा। 6ग़रज़ उसने ऐसा काम किया जो रब को
नापसंद था। वह वफ़ादारी न रही जिससे उसके
बाप दाऊद ने रब की ख़िदमत की थी।

7यरूशलम के मशरिक़ में सुलेमान ने एक
पहाड़ी पर दो मंदिर बनाए, एक मोआब के घिनौने
देवता कमोस के लिए और एक अम्मोन के घिनौने
देवता मलिक यानी मिलकूम के लिए। 8ऐसे मंदिर
उसने अपनी तमाम ग़ैरमुल्की बीवियों के लिए
तामीर किए ताकि वह अपने देवताओं को बख़ूर
और ज़बह की क़ुरबानियाँ पेश कर सकें।

9रब को सुलेमान पर बड़ा ग़ुस्सा आया,
क्योंकि वह इसराईल के ख़ुदा से दूर हो गया था,
हालाँकि रब उस पर दो बार ज़ाहिर हुआ था। 10गो
उसने उसे दीगर माबूदों की पूजा करने से साफ़
मना किया था तो भी सुलेमान ने उसका हुक्म न
माना। 11इसलिए रब ने उससे कहा, “चूँकि तू
मेरे अहद और अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी नहीं
गुज़ारता, इसलिए मैं बादशाही को तुझसे छीनकर
तेरे किसी अफ़सर को दूँगा। यह बात यक़ीनी है।
12लेकिन तेरे बाप दाऊद की ख़ातिर मैं यह तेरे
जीते-जी नहीं करूँगा बल्कि बादशाही को तेरे बेटे
ही से छीनूँगा। 13और मैं पूरी ममलकत उसके
हाथ से नहीं लूँगा बल्कि अपने ख़ादिम दाऊद और
अपने चुने हुए शहर यरूशलम की ख़ातिर उसके
लिए एक क़बीला छोड़ दूँगा।”

सुलेमान के दुश्मन हदद और रज़ून

14फिर रब ने अदोम के शाही ख़ानदान में से
एक आदमी बनाम हदद को बरपा किया जो
सुलेमान का सख़्त मुख़ालिफ़ बन गया। 15वह यों
सुलेमान का दुश्मन बन गया कि चंद साल पहले
जब दाऊद ने अदोम को शिकस्त दी तो उसका
फ़ौजी कमाँडर योआब मैदाने-जंग में पड़ी तमाम
इसराईली लाशों को दफ़नाने के लिए अदोम
आया। जहाँ भी गया वहाँ उसने हर अदोमी मर्द
को मार डाला। 16वह छः माह तक अपने फ़ौजियों
के साथ हर जगह फिरा और तमाम अदोमी मर्दों
को मारता गया। 17हदद उस वक़्त बच गया और
अपने बाप के चंद एक सरकारी अफ़सरों के साथ
फ़रार होकर मिसर में पनाह ले सका।

18रास्ते में उन्हें दश्ते-फ़ारान के मुल्के-
मिदियान से गुज़रना पड़ा। वहाँ वह मज़ीद कुछ
आदमियों को जमा कर सके और सफ़र करते
करते मिसर पहुँच गए। हदद मिसर के बादशाह
फ़िरौन के पास गया तो उसने उसे घर, कुछ
ज़मीन और ख़ुराक मुहैया की। 19हदद फ़िरौन
को इतना पसंद आया कि उसने उस की शादी
अपनी बीवी मलिका तहफ़नीस की बहन के साथ

कराई। 20इस बहन के बेटा पैदा हुआ जिसका नाम जनूबत रखा गया। तह्फ़नीस ने उसे शाही महल में पाला जहाँ वह फ़िरौन के बेटों के साथ परवान चढ़ा।

21एक दिन हदद को ख़बर मिली कि दाऊद और उसका कमाँडर योआब फ़ौत हो गए हैं। तब उसने फ़िरौन से इजाज़त माँगी, "मैं अपने मुल्क लौट जाना चाहता हूँ, बराहे-करम मुझे जाने दें।" 22फ़िरौन ने एतराज़ किया, "यहाँ क्या कमी है कि तुम अपने मुल्क वापस जाना चाहते हो?" हदद ने जवाब दिया, "मैं किसी भी चीज़ से महरूम नहीं रहा, लेकिन फिर भी मुझे जाने दीजिए।"

23अल्लाह ने एक और आदमी को भी सुलेमान के ख़िलाफ़ बरपा किया। उसका नाम रज़ून बिन इलियदा था। पहले वह ज़ोबाह के बादशाह हददअज़र की ख़िदमत अंजाम देता था, लेकिन एक दिन उसने अपने मालिक से भागकर 24कुछ आदमियों को अपने गिर्द जमा किया और डाकुओं के जत्थे का सरग़ना बन गया। जब दाऊद ने ज़ोबाह को शिकस्त दे दी तो रज़ून अपने आदमियों के साथ दमिश्क़ गया और वहाँ आबाद होकर अपनी हुकूमत क़ायम कर ली। 25होते होते वह पूरे शाम का हुक्मरान बन गया। वह इसराईलियों से नफ़रत करता था और सुलेमान के जीते-जी इसराईल का ख़ास दुश्मन बना रहा। हदद की तरह वह भी इसराईल को तंग करता रहा।

यरुबियाम और अख़ियाह नबी

26सुलेमान का एक सरकारी अफ़सर भी उसके ख़िलाफ़ उठ खड़ा हुआ। उसका नाम यरुबियाम बिन नबात था, और वह इफ़राईम के शहर सरीदा का था। उस की माँ सरुआ बेवा थी। 27जब यरुबियाम बाग़ी हुआ तो उन दिनों में सुलेमान इर्दगिर्द के चबूतरे और फ़सील का आख़िरी हिस्सा तामीर कर रहा था। 28उसने देखा कि यरुबियाम माहिर और मेहनती जवान है, इसलिए उसने उसे इफ़राईम और मनस्सी के क़बीलों के तमाम बेगार में काम करनेवालों पर मुक़र्रर किया।

29एक दिन यरुबियाम शहर से निकल रहा था तो उस की मुलाक़ात सैला के नबी अख़ियाह से हुई। अख़ियाह नई चादर ओढ़े फिर रहा था। खुले मैदान में जहाँ कोई और नज़र न आया 30अख़ियाह ने अपनी चादर को पकड़कर बारह टुकड़ों में फाड़ लिया 31और यरुबियाम से कहा,

"चादर के दस टुकड़े अपने पास रखें! क्योंकि रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है, 'इस वक़्त मैं इसराईल की बादशाही को सुलेमान से छीननेवाला हूँ। जब ऐसा होगा तो मैं उसके दस क़बीले तेरे हवाले कर दूँगा। 32एक ही क़बीला उसके पास रहेगा, और यह भी सिर्फ़ उसके बाप दाऊद और उस शहर की ख़ातिर जिसे मैंने तमाम क़बीलों में से चुन लिया है। 33इस तरह मैं सुलेमान को सज़ा दूँगा, क्योंकि वह और उसके लोग मुझे तर्क करके सैदानियों की देवी अस्तारात की, मोआबियों के देवता कमोस की और अम्मोनियों के देवता मिलकूम की पूजा करने लगे हैं। वह मेरी राहों पर नहीं चलते बल्कि वही कुछ करते हैं जो मुझे बिलकुल नापसंद है। जिस तरह दाऊद मेरे अहकाम और हिदायात की पैरवी करता था उस तरह उसका बेटा नहीं करता।

34लेकिन मैं इस वक़्त पूरी बादशाही सुलेमान के हाथ से नहीं छीनूँगा। अपने ख़ादिम दाऊद की ख़ातिर जिसे मैंने चुन लिया और जो मेरे अहकाम और हिदायात के ताबे रहा मैं सुलेमान के जीते-जी यह नहीं करूँगा। वह ख़ुद बादशाह रहेगा, 35लेकिन उसके बेटे से मैं बादशाही छीनकर दस क़बीले तेरे हवाले कर दूँगा। 36सिर्फ़ एक क़बीला सुलेमान के बेटे के सुपुर्द रहेगा ताकि मेरे ख़ादिम दाऊद का चराग़ हमेशा मेरे हुज़ूर यरूशलम में जलता रहे, उस शहर में जो मैंने अपने नाम की सुकूनत के लिए चुन लिया है। 37लेकिन तुझे, ऐ यरुबियाम, मैं इसराईल पर बादशाह बना दूँगा। जो कुछ भी तेरा जी चाहता है उस पर तू हुकूमत

करेगा। 38उस वक़्त अगर तू मेरे ख़ादिम दाऊद
की तरह मेरी हर बात मानेगा, मेरी राहों पर चलेगा
और मेरे अहकाम और हिदायात के ताबे रहकर
वह कुछ करेगा जो मुझे पसंद है तो फिर मैं तेरे
साथ रहूँगा। फिर मैं तेरा शाही ख़ानदान उतना
ही क़ायमो-दायम कर दूँगा जितना मैंने दाऊद का
किया है, और इसराईल तेरे ही हवाले रहेगा।
39यों मैं सुलेमान के गुनाह के बाइस दाऊद की
औलाद को सज़ा दूँगा, अगरचे यह अबदी सज़ा
नहीं होगी'।"
40इसके बाद सुलेमान ने यरुबियाम को
मरवाने की कोशिश की, लेकिन यरुबियाम ने
फ़रार होकर मिसर के बादशाह सीसक़ के पास
पनाह ली। वहाँ वह सुलेमान की मौत तक रहा।

सुलेमान की मौत

41सुलेमान की ज़िंदगी और हिकमत के बारे
में मज़ीद बातें 'सुलेमान के आमाल' की किताब
में बयान की गई हैं। 42सुलेमान 40 साल पूरे
इसराईल पर हुकूमत करता रहा। उसका दारुल-
हुकूमत यरूशलम था। 43जब वह मरकर अपने
बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के
उस हिस्से में दफ़न किया गया जो 'दाऊद का
शहर' कहलाता है। फिर उसका बेटा रहुबियाम
तख़्तनशीन हुआ।

शिमाली क़बीले अलग हो जाते हैं

12 रहुबियाम सिकम गया, क्योंकि
वहाँ तमाम इसराईली उसे बाद-
शाह मुक़र्रर करने के लिए जमा हो गए थे।
2यरुबियाम बिन नबात यह ख़बर सुनते ही मिसर
से जहाँ उसने सुलेमान बादशाह से भागकर पनाह
ली थी इसराईल वापस आया। 3इसराईलियों ने
उसे बुलाया ताकि उसके साथ सिकम जाएँ। जब
पहुँचा तो इसराईल की पूरी जमात यरुबियाम के
साथ मिलकर रहुबियाम से मिलने गई। उन्होंने
बादशाह से कहा, 4"जो जुआ आपके बाप ने
हम पर डाल दिया था उसे उठाना मुश्किल था,
और जो वक़्त और पैसे हमें बादशाह की ख़िदमत
में सर्फ़ करने थे वह नाक़ाबिले-बरदाश्त थे। अब
दोनों को कम कर दें। फिर हम ख़ुशी से आपकी
ख़िदमत करेंगे।"
5रहुबियाम ने जवाब दिया, "मुझे तीन दिन की
मोहलत दें, फिर दुबारा मेरे पास आएँ।" चुनाँचे
लोग चले गए।
6फिर रहुबियाम बादशाह ने उन बुज़ुर्गों से
मशवरा किया जो सुलेमान के जीते-जी बादशाह
की ख़िदमत करते रहे थे। उसने पूछा, "आपका
क्या ख़याल है? मैं इन लोगों को क्या जवाब
दूँ?" 7बुज़ुर्गों ने जवाब दिया, "हमारा मशवरा
है कि इस वक़्त उनका ख़ादिम बनकर उनकी
ख़िदमत करें और उन्हें नरम जवाब दें। अगर आप
ऐसा करें तो वह हमेशा आपके वफ़ादार ख़ादिम
बने रहेंगे।"
8लेकिन रहुबियाम ने बुज़ुर्गों का मशवरा रद्द
करके उस की ख़िदमत में हाज़िर उन जवानों से
मशवरा किया जो उसके साथ परवान चढ़े थे।
9उसने पूछा, "मैं इस क़ौम को क्या जवाब दूँ?
यह तक़ाज़ा कर रहे हैं कि मैं वह जुआ हलका
कर दूँ जो मेरे बाप ने उन पर डाल दिया।" 10जो
जवान उसके साथ परवान चढ़े थे उन्होंने कहा,
"अच्छा, यह लोग तक़ाज़ा कर रहे हैं कि आपके
बाप का जुआ हलका किया जाए? उन्हें बता
देना, 'मेरी छोटी उँगली मेरे बाप की कमर से
ज़्यादा मोटी है! 11बेशक जो जुआ उसने आप
पर डाल दिया उसे उठाना मुश्किल था, लेकिन
मेरा जुआ और भी भारी होगा। जहाँ मेरे बाप ने
आपको कोड़े लगाए वहाँ मैं आपकी बिच्छुओं से
तादीब करूँगा'!"
12तीन दिन के बाद जब यरुबियाम तमाम
इसराईलियों के साथ रहुबियाम का फ़ैसला सुनने
के लिए वापस आया 13तो बादशाह ने उन्हें
सख़्त जवाब दिया। बुज़ुर्गों का मशवरा रद्द करके
14उसने उन्हें जवानों का जवाब दिया, "बेशक जो
जुआ मेरे बाप ने आप पर डाल दिया उसे उठाना
मुश्किल था, लेकिन मेरा जुआ और भी भारी

होगा। जहाँ मेरे बाप ने आपको कोड़े लगाए वहाँ
मैं आपकी बिच्छुओं से तादीब करूँगा!” 15यों रब
की मरज़ी पूरी हुई कि रहुबियाम लोगों की बात
नहीं मानेगा। क्योंकि अब रब की वह पेशगोई पूरी
हुई जो सैला के नबी अख़ियाह ने यरुबियाम बिन
नबात को बताई थी।

16जब इसराईलियों ने देखा कि बादशाह हमारी
बात सुनने के लिए तैयार नहीं है तो उन्होंने उससे
कहा, “न हमें दाऊद से मीरास में कुछ मिलेगा,
न यस्सी के बेटे से कुछ मिलने की उम्मीद है। ऐ
इसराईल, सब अपने अपने घर वापस चलें! ऐ
दाऊद, अब अपना घर ख़ुद सँभाल लो!” यह
कहकर वह सब चले गए।

17सिर्फ़ यहूदाह के क़बीले के शहरों में
रहनेवाले इसराईली रहुबियाम के तहत रहे।
18फिर रहुबियाम बादशाह ने बेगारियों पर मुक़र्रर
अफ़सर अदूनीराम को शिमाली क़बीलों के पास
भेज दिया, लेकिन उसे देखकर तमाम लोगों ने
उसे संगसार किया। तब रहुबियाम जल्दी से अपने
रथ पर सवार हुआ और भागकर यरूशलम पहुँच
गया। 19यों इसराईल के शिमाली क़बीले दाऊद
के शाही घराने से अलग हो गए और आज तक
उस की हुकूमत नहीं मानते।

20जब ख़बर शिमाली इसराईल में फैली कि
यरुबियाम मिसर से वापस आ गया है तो लोगों
ने क़ौमी इजलास मुनअक़िद करके उसे बुलाया
और वहाँ उसे अपना बादशाह बना लिया। सिर्फ़
यहूदाह का क़बीला रहुबियाम और उसके घराने
का वफ़ादार रहा।

रहुबियाम को इसराईल से जंग करने की इजाज़त नहीं मिलती

21जब रहुबियाम यरूशलम पहुँचा तो उसने
यहूदाह और बिनयमीन के क़बीलों के चीदा
चीदा फ़ौजियों को इसराईल से जंग करने के
लिए बुलाया। 1,80,000 मर्द जमा हुए ताकि
रहुबियाम बिन सुलेमान के लिए इसराईल पर
दुबारा क़ाबू पाएँ। 22लेकिन ऐन उस वक़्त
मर्दे-ख़ुदा समायाह को अल्लाह की तरफ़ से
पैग़ाम मिला, 23“यहूदाह के बादशाह रहुबियाम
बिन सुलेमान, यहूदाह और बिनयमीन के तमाम
अफ़राद और बाक़ी लोगों को इत्तला दे, 24‘रब
फ़रमाता है कि अपने इसराईली भाइयों से जंग
मत करना। हर एक अपने अपने घर वापस चला
जाए, क्योंकि जो कुछ हुआ है वह मेरे हुक्म पर
हुआ है’।”

तब वह रब की सुनकर अपने अपने घर वापस
चले गए।

यरुबियाम के सोने के बछड़े

25यरुबियाम इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े के
शहर सिकम को मज़बूत करके वहाँ आबाद हुआ।
बाद में उसने फ़नुएल शहर की भी क़िलाबंदी की
और वहाँ मुंतक़िल हुआ। 26लेकिन दिल में अंदेशा
रहा कि कहीं इसराईल दुबारा दाऊद के घराने
के हाथ में न आ जाए। 27उसने सोचा, “लोग
बाक़ायदगी से यरूशलम आते-जाते हैं ताकि वहाँ
रब के घर में अपनी क़ुरबानियाँ पेश करें। अगर यह
सिलसिला तोड़ा न जाए तो आहिस्ता आहिस्ता
उनके दिल दुबारा यहूदाह के बादशाह रहुबियाम
की तरफ़ मायल हो जाएंगे। आख़िरकार वह मुझे
क़त्ल करके रहुबियाम को अपना बादशाह बना
लेंगे।”

28अपने अफ़सरों के मशवरे पर उसने सोने के
दो बछड़े बनवाए। लोगों के सामने उसने एलान
किया, “हर क़ुरबानी के लिए यरूशलम जाना
मुश्किल है! ऐ इसराईल देख, यह तेरे देवता
हैं जो तुझे मिसर से निकाल लाए।” 29एक
बुत उसने जुनूबी शहर बैतेल में खड़ा किया और
दूसरा शिमाली शहर दान में। 30यों यरुबियाम ने
इसराईलियों को गुनाह करने पर उकसाया। लोग
दान तक सफ़र किया करते थे ताकि वहाँ के बुत
की पूजा करें।

31इसके अलावा यरुबियाम ने बहुत-सी ऊँची
जगहों पर मंदिर बनवाए। उन्हें सँभालने के लिए
उसने ऐसे लोग मुक़र्रर किए जो लावी के क़बीले

के नहीं बल्कि आम लोग थे। 32उसने एक नई ईद
भी रायज की जो यहूदाह में मनानेवाली झोंपड़ियों
की ईद की मानिंद थी। यह ईद आठवें माह[a] के
पंद्रहवें दिन मनाई जाती थी। बैतेल में उसने ख़ुद
क़ुरबानगाह पर जाकर अपने बनवाए हुए बछड़ों
को क़ुरबानियाँ पेश कीं, और वहीं उसने अपने उन
मंदिरों के इमामों को मुक़र्रर किया जो उसने ऊँची
जगहों पर तामीर किए थे।

नबी यरुबियाम को बुरी ख़बर पहुँचाता है

33चुनाँचे यरुबियाम के मुक़र्ररकरदा दिन
यानी आठवें महीने के पंद्रहवें दिन इसराई-
लियों ने बैतेल में ईद मनाई। तमाम मेहमानों के
सामने यरुबियाम क़ुरबानगाह पर चढ़ गया ताकि
क़ुरबानियाँ पेश करे।

13 वह अभी क़ुरबानगाह के पास खड़ा
अपनी क़ुरबानियाँ पेश करना ही
चाहता था कि एक मर्दे-ख़ुदा आन पहुँचा। रब
ने उसे यहूदाह से बैतेल भेज दिया था। 2बुलंद
आवाज़ से वह क़ुरबानगाह से मुख़ातिब हुआ,
“ऐ क़ुरबानगाह! ऐ क़ुरबानगाह! रब फ़रमाता
है, ‘दाऊद के घराने से बेटा पैदा होगा जिसका
नाम यूसियाह होगा। तुझ पर वह उन इमामों को
क़ुरबान कर देगा जो ऊँची जगहों के मंदिरों में
ख़िदमत करते और यहाँ क़ुरबानियाँ पेश करने के
लिए आते हैं। तुझ पर इनसानों की हड्डियाँ जलाई
जाएँगी’।” 3फिर मर्दे-ख़ुदा ने इलाही निशान भी
पेश किया। उसने एलान किया, “एक निशान
साबित करेगा कि रब मेरी मारिफ़त बात कर
रहा है! यह क़ुरबानगाह फट जाएगी, और इस
पर मौजूद चरबी मिली राख ज़मीन पर बिखर
जाएगी।”

4यरुबियाम बादशाह अब तक क़ुरबान-
गाह के पास खड़ा था। जब उसने बैतेल की
क़ुरबानगाह के ख़िलाफ़ मर्दे-ख़ुदा की बात सुनी
तो वह हाथ से उस की तरफ़ इशारा करके गरजा,
“उसे पकड़ो!” लेकिन ज्योंही बादशाह ने अपना
हाथ बढ़ाया वह सूख गया, और वह उसे वापस
न खींच सका। 5उसी लमहे क़ुरबानगाह फट गई
और उस पर मौजूद राख ज़मीन पर बिखर गई।
बिलकुल वही कुछ हुआ जिसका एलान मर्दे-ख़ुदा
ने रब की तरफ़ से किया था।

6तब बादशाह इलतमास करने लगा, “रब
अपने ख़ुदा का ग़ुस्सा ठंडा करके मेरे लिए दुआ
करें ताकि मेरा हाथ बहाल हो जाए।” मर्दे-ख़ुदा
ने उस की शफ़ाअत की तो यरुबियाम का हाथ
फ़ौरन बहाल हो गया।

7तब यरुबियाम बादशाह ने मर्दे-ख़ुदा को दावत
दी, “आएँ, मेरे घर में खाना खाकर ताज़ादम
हो जाएँ। मैं आपको तोहफ़ा भी दूँगा।” 8लेकिन
उसने इनकार किया, “मैं आपके पास नहीं
आऊँगा, चाहे आप मुझे अपनी मिलकियत का
आधा हिस्सा क्यों न दें। मैं यहाँ न रोटी खाऊँगा,
न कुछ पियूँगा। 9क्योंकि रब ने मुझे हुक्म दिया
है, ‘रास्ते में न कुछ खा और न कुछ पी। और
वापस जाते वक़्त वह रास्ता न ले जिस पर से तू
बैतेल पहुँचा है’।”

10यह कहकर वह फ़रक़ रास्ता इख़्तियार
करके अपने घर के लिए रवाना हुआ।

नबी की नाफ़रमानी

11बैतेल में एक बूढ़ा नबी रहता था। जब उसके
बेटे उस दिन घर वापस आए तो उन्होंने उसे सब
कुछ कह सुनाया जो मर्दे-ख़ुदा ने बैतेल में किया
और यरुबियाम बादशाह को बताया था। 12बाप
ने पूछा, “वह किस तरफ़ गया?” बेटों ने उसे वह
रास्ता बताया जो यहूदाह के मर्दे-ख़ुदा ने लिया
था। 13बाप ने हुक्म दिया, “मेरे गधे पर जल्दी से
ज़ीन कसो!” बेटों ने ऐसा किया तो वह उस पर
बैठकर 14मर्दे-ख़ुदा को ढूँडने गया।

चलते चलते मर्दे-ख़ुदा बलूत के दरख़्त के साये
में बैठा नज़र आया। बुज़ुर्ग ने पूछा, “क्या आप
वही मर्दे-ख़ुदा हैं जो यहूदाह से बैतेल आए थे?”
उसने जवाब दिया, “जी, मैं वही हूँ।” 15बुज़ुर्ग

[a]अक्तूबर ता नवंबर

नबी ने उसे दावत दी, “आएँ, मेरे साथ। मैं घर में
आपको कुछ खाना खिलाता हूँ।”
16लेकिन मर्दे-ख़ुदा ने इनकार किया, “नहीं, न
मैं आपके साथ वापस जा सकता हूँ, न मुझे यहाँ
खाने-पीने की इजाज़त है। 17क्योंकि रब ने मुझे
हुक्म दिया, ‘रास्ते में न कुछ खा और न कुछ पी।
और वापस जाते वक़्त वह रास्ता न ले जिस पर
से तू बैतेल पहुँचा है’।”
18बुज़ुर्ग नबी ने एतराज़ किया, “मैं भी आप
जैसा नबी हूँ! एक फ़रिश्ते ने मुझे रब का नया
पैग़ाम पहुँचाकर कहा, ‘उसे अपने साथ घर ले
जाकर रोटी खिला और पानी पिला’।” बुज़ुर्ग झूट
बोल रहा था, 19लेकिन मर्दे-ख़ुदा उसके साथ
वापस गया और उसके घर में कुछ खाया और
पिया।
20वह अभी वहाँ बैठे खाना खा रहे थे कि बुज़ुर्ग
पर रब का कलाम नाज़िल हुआ। 21उसने बुलंद
आवाज़ से यहूदाह के मर्दे-ख़ुदा से कहा, “रब
फ़रमाता है, ‘तूने रब के कलाम की ख़िलाफ़वरज़ी
की है! जो हुक्म रब तेरे ख़ुदा ने तुझे दिया था वह
तूने नज़रंदाज़ किया है। 22गो उसने फ़रमाया था
कि यहाँ न कुछ खा और न कुछ पी तो भी तूने
वापस आकर यहाँ रोटी खाई और पानी पिया है।
इसलिए मरते वक़्त तुझे तेरे बापदादा की क़ब्र में
दफ़नाया नहीं जाएगा’।”
23खाने के बाद बुज़ुर्ग के गधे पर ज़ीन कसा
गया और मर्दे-ख़ुदा को उस पर बिठाया गया।
24वह दुबारा रवाना हुआ तो रास्ते में एक शेरबबर
ने उस पर हमला करके उसे मार डाला। लेकिन
उसने लाश को न छेड़ा बल्कि वह वहीं रास्ते में
पड़ी रही जबकि गधा और शेर दोनों ही उसके
पास खड़े रहे।
25कुछ लोग वहाँ से गुज़रे। जब उन्होंने लाश
को रास्ते में पड़े और शेरबबर को उसके पास
खड़े देखा तो उन्होंने बैतेल जहाँ बुज़ुर्ग नबी रहता
था आकर लोगों को इत्तला दी। 26जब बुज़ुर्ग को
ख़बर मिली तो उसने कहा, “वही मर्दे-ख़ुदा है
जिसने रब के फ़रमान की ख़िलाफ़वरज़ी की। अब
वह कुछ हुआ है जो रब ने उसे फ़रमाया था यानी
उसने उसे शेरबबर के हवाले कर दिया ताकि वह
उसे फाड़कर मार डाले।” 27बुज़ुर्ग ने अपने बेटों
को गधे पर ज़ीन कसने का हुक्म दिया, 28और
वह उस पर बैठकर रवाना हुआ। जब वहाँ पहुँचा
तो देखा कि लाश अब तक रास्ते में पड़ी है और
गधा और शेर दोनों ही उसके पास खड़े हैं। शेरबबर
ने न लाश को छेड़ा और न गधे को फाड़ा था।
29बुज़ुर्ग नबी ने लाश को उठाकर अपने गधे
पर रखा और उसे बैतेल लाया ताकि उसका मातम
करके उसे वहाँ दफ़नाए। 30उसने लाश को अपनी
ख़ानदानी क़ब्र में दफ़न किया, और लोगों ने
“हाय, मेरे भाई” कहकर उसका मातम किया।
31जनाज़े के बाद बुज़ुर्ग नबी ने अपने बेटों से कहा,
“जब मैं कूच कर जाऊँगा तो मुझे मर्दे-ख़ुदा की
क़ब्र में दफ़नाना। मेरी हड्डियों को उस की हड्डियों
के पास ही रखें। 32क्योंकि जो बातें उसने रब के
हुक्म पर बैतेल की क़ुरबानगाह और सामरिया के
शहरों की ऊँची जगहों के मंदिरों के बारे में की हैं
वह यक़ीनन पूरी हो जाएँगी।”

यरुबियाम फिर भी नाफ़रमान रहता है

33इन वाक़ियात के बावुजूद यरुबियाम अपनी
शरीर हरकतों से बाज़ न आया। आम लोगों को
इमाम बनाने का सिलसिला जारी रहा। जो कोई
भी इमाम बनना चाहता उसे वह ऊँची जगहों के
मंदिरों में ख़िदमत करने के लिए मख़सूस करता
था। 34यरुबियाम के घराने के इस संगीन गुनाह
की वजह से वह आख़िरकार तबाह हुआ और रूए-
ज़मीन पर से मिट गया।

यरुबियाम को इलाही सज़ा मिलती है

14 एक दिन यरुबियाम का बेटा अबियाह
बहुत बीमार हुआ। 2तब यरुबियाम ने
अपनी बीवी से कहा, “जाकर अपना भेस बदलें
ताकि कोई न पहचाने कि आप मेरी बीवी हैं। फिर
सैला जाएँ। वहाँ अख़ियाह नबी रहता है जिसने
मुझे इत्तला दी थी कि मैं इस क़ौम का बादशाह बन

जाऊँगा। 3उसके पास दस रोटियाँ, कुछ बिस्कुट
और शहद का मरतबान ले जाएँ। वह आदमी
आपको ज़रूर बता देगा कि लड़के के साथ क्या
हो जाएगा।”

4चुनाँचे यरुबियाम की बीवी अपना भेस
बदलकर रवाना हुई और चलते चलते सैला में
अख़ियाह के घर पहुँच गई। अख़ियाह उम्ररसीदा
होने के बाइस देख नहीं सकता था। 5लेकिन
रब ने उसे आगाह कर दिया, “यरुबियाम की
बीवी तुझसे मिलने आ रही है ताकि अपने बीमार
बेटे के बारे में मालूमात हासिल करे। लेकिन वह
अपना भेस बदलकर आएगी ताकि उसे पहचाना
न जाए।” फिर रब ने नबी को बताया कि उसे
क्या जवाब देना है।

6जब अख़ियाह ने औरत के क़दमों की आहट
सुनी तो बोला, “यरुबियाम की बीवी, अंदर आएँ!
रूप भरने की क्या ज़रूरत? मुझे आपको बुरी
ख़बर पहुँचानी है। 7जाएँ, यरुबियाम को रब
इसराईल के ख़ुदा की तरफ़ से पैग़ाम दें, ‘मैंने
तुझे लोगों में से चुनकर खड़ा किया और अपनी
क़ौम इसराईल पर बादशाह बना दिया। 8मैंने
बादशाही को दाऊद के घराने से छीनकर तुझे
दे दिया। लेकिन अफ़सोस, तू मेरे ख़ादिम दाऊद
की तरह ज़िंदगी नहीं गुज़ारता जो मेरे अहकाम
के ताबे रहकर पूरे दिल से मेरी पैरवी करता रहा
और हमेशा वह कुछ करता था जो मुझे पसंद
था। 9जो तुझसे पहले थे उनकी निसबत तूने
कहीं ज़्यादा बदी की, क्योंकि तूने बुत ढालकर
अपने लिए दीगर माबूद बनाए हैं और यों मुझे तैश
दिलाया। चूँकि तूने अपना मुँह मुझसे फेर लिया
10इसलिए मैं तेरे ख़ानदान को मुसीबत में डाल
दूँगा। इसराईल में मैं यरुबियाम के तमाम मर्दों को
हलाक कर दूँगा, ख़ाह वह बच्चे हों या बालिग़।
जिस तरह गोबर को झाड़ू देकर दूर किया जाता
है उसी तरह यरुबियाम के घराने का नामो-निशान
मिट जाएगा। 11तुममें से जो शहर में मरेंगे उन्हें
कुत्ते खा जाएंगे, और जो खुले मैदान में मरेंगे उन्हें
परिंदे चट कर जाएंगे। क्योंकि यह रब का फ़रमान
है’।”

12फिर अख़ियाह ने यरुबियाम की बीवी से
कहा, “आप अपने घर वापस चली जाएँ। ज्योंही
आप शहर में दाख़िल होंगी लड़का फ़ौत हो
जाएगा। 13पूरा इसराईल उसका मातम करके
उसे दफ़न करेगा। वह आपके ख़ानदान का वाहिद
फ़रद होगा जिसे सहीह तौर से दफ़नाया जाएगा।
क्योंकि रब इसराईल के ख़ुदा ने सिर्फ़ उसी में कुछ
पाया जो उसे पसंद था। 14रब इसराईल पर एक
बादशाह मुक़र्रर करेगा जो यरुबियाम के ख़ानदान
को हलाक करेगा। आज ही से यह सिलसिला शुरू
हो जाएगा। 15रब इसराईल को भी सज़ा देगा,
क्योंकि वह यसीरत देवी के खंबे बनाकर उनकी
पूजा करते हैं। चूँकि वह रब को तैश दिलाते रहे हैं,
इसलिए वह उन्हें मारेगा, और वह पानी में सरकंडे
की तरह हिल जाएंगे। रब उन्हें इस अच्छे मुल्क
से उखाड़कर दरियाए-फ़ुरात के पार मुंतशिर कर
देगा। 16यों वह इसराईल को उन गुनाहों के बाइस
तर्क करेगा जो यरुबियाम ने किए और इसराईल
को करने पर उकसाया है।”

17यरुबियाम की बीवी तिरज़ा में अपने घर
वापस चली गई। और घर के दरवाज़े में दाख़िल
होते ही उसका बेटा मर गया। 18तमाम इसराईल
ने उसे दफ़नाकर उसका मातम किया। सब कुछ
वैसे हुआ जैसे रब ने अपने ख़ादिम अख़ियाह नबी
की मारिफ़त फ़रमाया था।

यरुबियाम की मौत

19बाक़ी जो कुछ यरुबियाम की ज़िंदगी के बारे
में लिखा है वह ‘शाहाने-इसराईल की तारीख़’ की
किताब में दर्ज है। उस किताब में पढ़ा जा सकता
है कि वह किस तरह हुकूमत करता था और उसने
कौन कौन-सी जंगें कीं। 20यरुबियाम 22 साल
बादशाह रहा। जब वह मरकर अपने बापदादा से
जा मिला तो उसका बेटा नदब तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह रहुबियाम

21यहूदाह में रहुबियाम बिन सुलेमान हुकूमत
करता था। उस की माँ नामा अम्मोनी थी।
41 साल की उम्र में वह तख़्तनशीन हुआ और
17 साल बादशाह रहा। उसका दारुल-हुकूमत
यरूशलम था, वह शहर जिसे रब ने तमाम
इसराईली क़बीलों में से चुन लिया ताकि उसमें
अपना नाम क़ायम करे।

22लेकिन यहूदाह के बाशिंदे भी ऐसी हरकतें
करते थे जो रब को नापसंद थीं। अपने गुनाहों से
वह उसे तैश दिलाते रहे, क्योंकि उनके यह गुनाह
उनके बापदादा के गुनाहों से कहीं ज़्यादा संगीन
थे। 23उन्होंने भी ऊँची जगहों पर मंदिर बनाए।
हर ऊँची पहाड़ी पर और हर घने दरख़्त के साये
में उन्होंने मख़सूस पत्थर या यसीरत देवी के खंबे
खड़े किए, 24यहाँ तक कि मंदिरों में जिस्मफ़रोश
मर्द और औरतें थे। ग़रज़, उन्होंने उन क़ौमों के
तमाम घिनौने रस्मो-रिवाज अपना लिए जिनको
रब ने इसराईलियों के आगे आगे निकाल दिया
था।

25रहुबियाम बादशाह की हुकूमत के पाँचवें
साल में मिसर के बादशाह सीसक़ ने यरूशलम
पर हमला करके 26रब के घर और शाही महल के
तमाम ख़ज़ाने लूट लिए। सोने की वह ढालें भी
छीन ली गईं जो सुलेमान ने बनवाई थीं। 27इनकी
जगह रहुबियाम ने पीतल की ढालें बनवाईं और
उन्हें उन मुहाफ़िज़ों के अफ़सरों के सुपुर्द किया
जो शाही महल के दरवाज़े की पहरादारी करते
थे। 28जब भी बादशाह रब के घर में जाता तब
मुहाफ़िज़ यह ढालें उठाकर साथ ले जाते। इसके
बाद वह उन्हें पहरेदारों के कमरे में वापस ले जाते
थे।

29बाक़ी जो कुछ रहुबियाम बादशाह की
हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया
वह 'शाहाने-यहूदाह की तारीख़' की किताब
में दर्ज है। 30दोनों बादशाहों रहुबियाम और
यरुबियाम के जीते-जी उनके दरमियान जंग जारी
रही। 31जब रहुबियाम मरकर अपने बापदादा
से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से
में जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है ख़ानदानी
क़ब्र में दफ़नाया गया। उस की माँ नामा अम्मोनी
थी। फिर रहुबियाम का बेटा अबियाह तख़्तनशीन
हुआ।

यहूदाह का बादशाह अबियाह

15 अबियाह इसराईल के बादशाह
यरुबियाम बिन नबात की हुकू-
मत के 18वें साल में यहूदाह का बादशाह बना।
2वह तीन साल बादशाह रहा, और उसका दारुल-
हुकूमत यरूशलम था। उस की माँ माका बिंत
अबीसलूम थी। 3अबियाह से वही गुनाह सरज़द
हुए जो उसके बाप ने किए थे, और वह पूरे दिल
से रब अपने ख़ुदा का वफ़ादार न रहा। गो वह
इसमें अपने परदादा दाऊद से फ़रक़ था 4तो
भी रब उसके ख़ुदा ने अबियाह का यरूशलम में
चराग़ जलने दिया। दाऊद की ख़ातिर उसने उसे
जा-नशीन अता किया और यरूशलम को क़ायम
रखा, 5क्योंकि दाऊद ने वह कुछ किया था जो
रब को पसंद था। जीते-जी वह रब के अहकाम के
ताबे रहा, सिवाए उस जुर्म के जब उसने ऊरियाह
हित्ती के सिलसिले में ग़लत क़दम उठाए थे।

6रहुबियाम और यरुबियाम के दरमियान की
जंग अबियाह की हुकूमत के दौरान भी जारी रही।
7बाक़ी जो कुछ अबियाह की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-
यहूदाह की तारीख़' की किताब में दर्ज है। 8जब
वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे
यरूशलम के उस हिस्से में दफ़न किया गया जो
'दाऊद का शहर' कहलाता है। फिर उसका बेटा
आसा तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह आसा

9आसा इसराईल के बादशाह यरुबियाम के
20वें साल में यहूदाह का बादशाह बन गया।
10उस की हुकूमत का दौरानिया 41 साल था,

और उसका दारुल-हुकूमत यरूशलम था। माँ का
नाम माका था, और वह अबीसलूम की बेटी थी।
11अपने परदादा दाऊद की तरह आसा भी वह
कुछ करता रहा जो रब को पसंद था। 12उसने उन
जिस्मफ़रोश मर्दों और औरतों को निकाल दिया
जो मंदिरों में नाम-निहाद ख़िदमत करते थे और
उन तमाम बुतों को तबाह कर दिया जो उसके
बापदादा ने बनाए थे। 13और गो उस की माँ
बादशाह की माँ होने के बाइस बहुत असरो-रसूख़
रखती थी, ताहम आसा ने यह ओहदा ख़त्म कर
दिया जब माँ ने यसीरत देवी का घिनौना खंबा
बनवा लिया। आसा ने यह बुत कटवाकर वादीए-
क़िदरोन में जला दिया। 14अफ़सोस कि उसने
ऊँची जगहों के मंदिरों को दूर न किया। तो भी
आसा जीते-जी पूरे दिल से रब का वफ़ादार रहा।
15सोना-चाँदी और बाक़ी जितनी चीज़ें उसके
बाप और उसने रब के लिए मख़सूस की थीं उन
सबको वह रब के घर में लाया।

16यहूदाह के बादशाह आसा और इस-
राईल के बादशाह बाशा के दरमियान ज़िंदगी-
भर जंग जारी रही। 17एक दिन बाशा बादशाह ने
यहूदाह पर हमला करके रामा शहर की क़िलाबंदी
की। मक़सद यह था कि न कोई यहूदाह के मुल्क
में दाख़िल हो सके, न कोई वहाँ से निकल सके।
18जवाब में आसा ने शाम के बादशाह बिन-
हदद के पास वफ़द भेजा। बिन-हदद का बाप
ताबरिम्मोन बिन हज़्यून था, और उसका दारुल-
हुकूमत दमिश्क़ था। आसा ने रब के घर और शाही
महल के ख़ज़ानों का तमाम बचा हुआ सोना और
चाँदी वफ़द के सुपुर्द करके दमिश्क़ के बादशाह
को पैग़ाम भेजा, 19"मेरा आपके साथ अहद है
जिस तरह मेरे बाप का आपके बाप के साथ
अहद था। गुज़ारिश है कि आप सोने-चाँदी का यह
तोहफ़ा क़बूल करके इसराईल के बादशाह बाशा
के साथ अपना अहद मनसूख़ कर दें ताकि वह
मेरे मुल्क से निकल जाए।"

20बिन-हदद मुत्तफ़िक़ हुआ। उसने अपने
फ़ौजी अफ़सरों को इसराईल के शहरों पर हमला
करने के लिए भेज दिया तो उन्होंने ऐय्यून,
दान, अबील-बैत-माका, तमाम किन्नरत और
नफ़ताली पर क़ब्ज़ा कर लिया। 21जब बाशा को
इसकी ख़बर मिली तो वह रामा की क़िलाबंदी
करने से बाज़ आया और तिरज़ा वापस चला
गया।

22फिर आसा बादशाह ने यहूदाह के तमाम मर्दों
की भरती करके उन्हें रामा भेज दिया ताकि वह
उन तमाम पत्थरों और शहतीरों को उठाकर ले
जाएँ जिनसे बाशा बादशाह रामा की क़िलाबंदी
करना चाहता था। तमाम मर्दों को वहाँ जाना पड़ा,
एक को भी छुट्टी न मिली। इस सामान से आसा
ने बिनयमीन के शहर जिबा और मिसफ़ाह की
क़िलाबंदी की।

23बाक़ी जो कुछ आसा की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-
यहूदाह की तारीख़' की किताब में दर्ज है। उसमें
उस की कामयाबियों और उसके तामीर किए
गए शहरों का ज़िक्र है। बुढ़ापे में उसके पाँवों
को बीमारी लग गई। 24जब वह मरकर अपने
बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के
उस हिस्से में जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है
ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया गया। फिर उसका बेटा
यहूसफ़त उस की जगह तख़्तनशीन हुआ।

इसराईल का बादशाह नदब

25नदब बिन यरुबियाम यहूदाह के बाद-
शाह आसा की हुकूमत के दूसरे साल में इसराईल
का बादशाह बना। उस की हुकूमत का दौरानिया
दो साल था। 26उसका तर्ज़े-ज़िंदगी रब को पसंद
नहीं था, क्योंकि वह अपने बाप के नमूने पर
चलता रहा। जो बदी यरुबियाम ने इसराईल को
करने पर उकसाया था उससे नदब भी दूर न हुआ।

27-28एक दिन जब नदब इसराईली फ़ौज के
साथ फ़िलिस्ती शहर जिब्बतून का मुहासरा किए
हुए था तो इशकार के क़बीले के बाशा बिन
अख़ियाह ने उसके ख़िलाफ़ साज़िश करके उसे
मार डाला और ख़ुद इसराईल का बादशाह बन

गया। यह यहूदाह के बादशाह आसा की हुकूमत
के तीसरे साल में हुआ।
29तख़्त पर बैठते ही बाशा ने यरुबियाम के पूरे
ख़ानदान को मरवा दिया। उसने एक को भी ज़िंदा
न छोड़ा। यों वह बात पूरी हुई जो रब ने सैला के
रहनेवाले अपने ख़ादिम अख़ियाह की मारिफ़त
फ़रमाई थी। 30क्योंकि जो गुनाह यरुबियाम ने
किए और इसराईल को करने पर उकसाया था
उनसे उसने रब इसराईल के ख़ुदा को तैश दिलाया
था।
31बाक़ी जो कुछ नदब की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-
इसराईल की तारीख़' की किताब में दर्ज है।

इसराईल का बादशाह बाशा

32-33बाशा बिन अख़ियाह यहूदाह के बादशाह
आसा की हुकूमत के तीसरे साल में इसराईल
का बादशाह बना। उस की हुकूमत का दौरानिया
24 साल था, और उसका दारुल-हुकूमत तिरज़ा
रहा। उसके और यहूदाह के बादशाह आसा के
दरमियान ज़िंदगी-भर जंग जारी रही। 34लेकिन
वह भी ऐसा काम करता था जो रब को नापसंद
था, क्योंकि उसने यरुबियाम के नमूने पर चलकर
वह गुनाह जारी रखे जो करने पर यरुबियाम ने
इसराईल को उकसाया था।

16 एक दिन रब ने याहू बिन हना-
नी को बाशा के पास भेजकर
फ़रमाया, 2"पहले तू कुछ नहीं था, लेकिन मैंने
तुझे ख़ाक में से उठाकर अपनी क़ौम इसराईल
का हुक्मरान बना दिया। तो भी तूने यरुबियाम के
नमूने पर चलकर मेरी क़ौम इसराईल को गुनाह
करने पर उकसाया और मुझे तैश दिलाया है।
3इसलिए मैं तेरे घराने के साथ वही कुछ करूँगा
जो यरुबियाम बिन नबात के घराने के साथ किया
था। बाशा की पूरी नसल हलाक हो जाएगी।
4ख़ानदान के जो अफ़राद शहर में मरेंगे उन्हें कुत्ते
खा जाएंगे, और जो खुले मैदान में मरेंगे उन्हें परिंदे
चट कर जाएंगे।"
5बाक़ी जो कुछ बाशा की हुकूमत के दौरान
हुआ, जो कुछ उसने किया और जो कामयाबियाँ
उसे हासिल हुईं वह 'शाहाने-इसराईल की
तारीख़' की किताब में दर्ज हैं। 6जब वह मरकर
अपने बापदादा से जा मिला तो उसे तिरज़ा
में दफ़न किया गया। फिर उसका बेटा ऐला
तख़्तनशीन हुआ। 7रब की सज़ा का जो पैग़ाम
हनानी के बेटे याहू नबी ने बाशा और उसके
ख़ानदान को सुनाया उस की दो वुजूहात थीं।
पहले, बाशा ने यरुबियाम के ख़ानदान की तरह
वह कुछ किया जो रब को नापसंद था और
उसे तैश दिलाया। दूसरे, उसने यरुबियाम के पूरे
ख़ानदान को हलाक कर दिया था।

इसराईल का बादशाह ऐला

8ऐला बिन बाशा यहूदाह के बादशाह आसा की
हुकूमत के 26वें साल में इसराईल का बादशाह
बना। उस की हुकूमत के दो साल के दौरान
उसका दारुल-हुकूमत तिरज़ा रहा। 9ऐला का
एक अफ़सर बनाम ज़िमरी था। ज़िमरी रथों के
आधे हिस्से पर मुक़र्रर था। अब वह बादशाह
के ख़िलाफ़ साज़िशें करने लगा। एक दिन ऐला
तिरज़ा में महल के इंचार्ज अरज़ा के घर में बैठा मै
पी रहा था। जब नशे में धुत हुआ 10तो ज़िमरी ने
अंदर जाकर उसे मार डाला। फिर वह ख़ुद तख़्त
पर बैठ गया। यह यहूदाह के बादशाह आसा की
हुकूमत के 27वें साल में हुआ।
11तख़्त पर बैठते ही ज़िमरी ने बाशा के पूरे
ख़ानदान को हलाक कर दिया। उसने किसी भी
मर्द को ज़िंदा न छोड़ा, ख़ाह वह दूर का रिश्तेदार
था, ख़ाह दोस्त। 12यों वही कुछ हुआ जो रब ने
याहू नबी की मारिफ़त बाशा को फ़रमाया था।
13क्योंकि बाशा और उसके बेटे ऐला से संगीन
गुनाह सरज़द हुए थे, और साथ साथ उन्होंने
इसराईल को भी यह करने पर उकसाया था।
अपने बातिल देवताओं से उन्होंने रब इसराईल
के ख़ुदा को तैश दिलाया था।

14बाक़ी जो कुछ ऐला की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख़' की किताब में दर्ज है।

इसराईल का बादशाह ज़िमरी

15ज़िमरी यहूदाह के बादशाह आसा की हुकूमत के 27वें साल में इसराईल का बादशाह बना। लेकिन तिरज़ा में उस की हुकूमत सिर्फ़ सात दिन तक क़ायम रही। उस वक़्त इसराईली फ़ौज फ़िलिस्ती शहर जिब्बतून का मुहासरा कर रही थी। 16जब फ़ौज में ख़बर फैल गई कि ज़िमरी ने बादशाह के ख़िलाफ़ साज़िश करके उसे क़त्ल किया है तो तमाम इसराईलियों ने लशकरगाह में आकर उसी दिन अपने कमाँडर उमरी को बादशाह बना दिया। 17तब उमरी तमाम फ़ौजियों के साथ जिब्बतून को छोड़कर तिरज़ा का मुहासरा करने लगा। 18जब ज़िमरी को पता चला कि शहर दूसरों के क़ब्ज़े में आ गया है तो उसने महल के बुर्ज में जाकर उसे आग लगाई। यों वह जलकर मर गया।

19इस तरह उसे भी मुनासिब सज़ा मिल गई, क्योंकि उसने भी वह कुछ किया था जो रब को नापसंद था। यरुबियाम के नमूने पर चलकर उसने वह तमाम गुनाह किए जो यरुबियाम ने किए और इसराईल को करने पर उकसाया था। 20जो कुछ ज़िमरी की हुकूमत के दौरान हुआ और जो साज़िशें उसने कीं वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख़' की किताब में दर्ज हैं।

इसराईल का बादशाह उमरी

21ज़िमरी की मौत के बाद इसराईली दो फ़िरक़ों में बट गए। एक फ़िरक़ा तिबनी बिन जीनत को बादशाह बनाना चाहता था, दूसरा उमरी को। 22लेकिन उमरी का फ़िरक़ा तिबनी के फ़िरक़े की निसबत ज़्यादा ताक़तवर निकला। चुनाँचे तिबनी मर गया और उमरी पूरी क़ौम पर बादशाह बन गया।

23उमरी यहूदाह के बादशाह आसा की हुकूमत के 31वें साल में इसराईल का बादशाह बना। उस की हुकूमत का दौरानिया 12 साल था। पहले छः साल दारुल-हुकूमत तिरज़ा रहा। 24इसके बाद उसने एक आदमी बनाम समर को चाँदी के 6,000 सिक्के देकर उससे सामरिया पहाड़ी ख़रीद ली और वहाँ अपना नया दारुल-हुकूमत तामीर किया। पहले मालिक समर की याद में उसने शहर का नाम सामरिया रखा।

25लेकिन उमरी ने भी वही कुछ किया जो रब को नापसंद था, बल्कि उसने माज़ी के बादशाहों की निसबत ज़्यादा बदी की। 26उसने यरुबियाम बिन नबात के नमूने पर चलकर वह तमाम गुनाह किए जो यरुबियाम ने किए और इसराईल को करने पर उकसाया था। नतीजे में इसराईली रब अपने ख़ुदा को अपने बातिल देवताओं से तैश दिलाते रहे। 27बाक़ी जो कुछ उमरी की हुकूमत के दौरान हुआ, जो कुछ उसने किया और जो कामयाबियाँ उसे हासिल हुईं वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख़' की किताब में बयान की गई हैं। 28जब उमरी मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे सामरिया में दफ़नाया गया। फिर उसका बेटा अख़ियब तख़्तनशीन हुआ।

इसराईल का बादशाह अख़ियब

29अख़ियब बिन उमरी यहूदाह के बादशाह आसा के 38वें साल में इसराईल का बादशाह बना। उस की हुकूमत का दौरानिया 22 साल था, और उसका दारुल-हुकूमत सामरिया रहा। 30अख़ियब ने भी ऐसे काम किए जो रब को नापसंद थे, बल्कि माज़ी के बादशाहों की निसबत उसके गुनाह ज़्यादा संगीन थे। 31यरुबियाम के नमूने पर चलना उसके लिए काफ़ी नहीं था बल्कि उसने इससे बढ़कर सैदा के बादशाह इतबाल की बेटी ईज़बिल से शादी भी की। नतीजे में वह उसके देवता बाल के सामने झुककर उस की पूजा करने लगा। 32सामरिया में उसने बाल का मंदिर तामीर किया और देवता के लिए क़ुरबानगाह बनाकर

उसमें रख दिया। 33अख़ियब ने यसीरत देवी
का बुत भी बनवा दिया। यों उसने अपने घिनौने
कामों से माज़ी के तमाम इसराईली बादशाहों की
निसबत कहीं ज़्यादा रब इसराईल के ख़ुदा को
तैश दिलाया।

34अख़ियब की हुकूमत के दौरान बैतेल के
रहनेवाले हियेल ने यरीहू शहर को नए सिरे से
तामीर किया। जब उस की बुनियाद रखी गई तो
उसका सबसे बड़ा बेटा अबीराम मर गया, और
जब उसने शहर के दरवाज़े लगा दिए तो उसके
सबसे छोटे बेटे सजूब को अपनी जान देनी पड़ी।
यों रब की वह बात पूरी हुई जो उसने यशुअ बिन
नून की मारिफ़त फ़रमाई थी।

कौवे इलियास नबी को खाना खिलाते हैं

17 एक दिन इलियास नबी ने जो
जिलियाद के शहर तिशबी का
था अख़ियब बादशाह से कहा, “रब इस-
राईल के ख़ुदा की क़सम जिसकी ख़िदमत मैं
करता हूँ, आनेवाले सालों में न ओस, न बारिश
पड़ेगी जब तक मैं न कहूँ।”

2फिर रब ने इलियास से कहा, 3“यहाँ से चला
जा! मशरिक़ की तरफ़ सफ़र करके वादीए-
करीत में छुप जा जिसकी नदी दरियाए-यरदन में
बहती है। 4पानी तू नदी से पी सकता है, और मैंने
कौवों को तुझे वहाँ खाना खिलाने का हुक्म दिया
है।” 5इलियास रब की सुनकर रवाना हुआ और
वादीए-करीत में रहने लगा जिसकी नदी दरियाए-
यरदन में बहती है। 6सुबहो-शाम कौवे उसे रोटी
और गोश्त पहुँचाते रहे, और पानी वह नदी से
पीता था।

इलियास सारपत की बेवा के पास

7इस पूरे अरसे में बारिश न हुई, इसलिए नदी
आहिस्ता आहिस्ता सूख गई। जब उसका पानी
बिलकुल ख़त्म हो गया 8तो रब दुबारा इलियास
से हमकलाम हुआ, 9“यहाँ से रवाना होकर सैदा
के शहर सारपत में जा बस। मैंने वहाँ की एक
बेवा को तुझे खाना खिलाने का हुक्म दिया है।”
10चुनाँचे इलियास सारपत के लिए रवाना हुआ।

सफ़र करते करते वह शहर के दरवाज़े के
पास पहुँच गया। वहाँ एक बेवा जलाने के लिए
लकड़ियाँ चुनकर जमा कर रही थी। उसे बुलाकर
इलियास ने कहा, “ज़रा किसी बरतन में पानी
भरकर मुझे थोड़ा-सा पिलाएँ।”

11वह अभी पानी लाने जा रही थी कि इलियास
ने उसके पीछे आवाज़ देकर कहा, “मेरे लिए रोटी
का टुकड़ा भी लाना!” 12यह सुनकर बेवा रुक
गई और बोली, “रब आपके ख़ुदा की क़सम, मेरे
पास कुछ नहीं है। बस, एक बरतन में मुट्ठी-भर
मैदा और दूसरे में थोड़ा-सा तेल रह गया है। अब
मैं जलाने के लिए चंद एक लकड़ियाँ चुन रही
हूँ ताकि अपने और अपने बेटे के लिए आख़िरी
खाना पकाऊँ। इसके बाद हमारी मौत यक़ीनी
है।”

13इलियास ने उसे तसल्ली दी, “डरें मत!
बेशक वह कुछ करें जो आपने कहा है। लेकिन
पहले मेरे लिए छोटी-सी रोटी बनाकर मेरे पास
ले आएँ। फिर जो बाक़ी रह गया हो उससे अपने
और अपने बेटे के लिए रोटी बनाएँ। 14क्योंकि
रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है, ‘जब तक रब
बारिश बरसने न दे तब तक मैदे और तेल के बरतन
ख़ाली नहीं होंगे’।”

15-16औरत ने जाकर वैसा ही किया जैसा
इलियास ने उसे कहा था। वाक़ई मैदा और तेल
कभी ख़त्म न हुआ। रोज़ बरोज़ इलियास, बेवा
और उसके बेटे के लिए खाना दस्तयाब रहा।
सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा रब ने इलियास की
मारिफ़त फ़रमाया था।

17एक दिन बेवा का बेटा बीमार हो गया। उस
की तबियत बहुत ख़राब हुई, और होते होते उस
की जान निकल गई। 18तब बेवा इलियास से
शिकायत करने लगी, “मर्दे-ख़ुदा, मेरा आपके
साथ क्या वास्ता? आप तो सिर्फ़ इस मक़सद
से यहाँ आए हैं कि रब को मेरे गुनाह की याद
दिलाकर मेरे बेटे को मार डालें!”

19इलियास ने जवाब में कहा, “अपने बेटे को
मुझे दे दें।” वह लड़के को औरत की गोद में से
उठाकर छत पर अपने कमरे में ले गया और वहाँ
उसे चारपाई पर रखकर 20दुआ करने लगा, “ऐ
रब मेरे ख़ुदा, तूने इस बेवा को जिसका मेहमान मैं
हूँ ऐसी मुसीबत में क्यों डाल दिया है? तूने उसके
बेटे को मरने क्यों दिया?” 21वह तीन बार लाश
पर दराज़ हुआ और साथ साथ रब से इलतमास
करता रहा, “ऐ रब मेरे ख़ुदा, बराहे-करम बच्चे
की जान को उसमें वापस आने दे!”

22रब ने इलियास की सुनी, और लड़के की
जान उसमें वापस आई। 23इलियास उसे उठाकर
नीचे ले आया और उसे उस की माँ को वापस देकर
बोला, “देखें, आपका बेटा ज़िंदा है!” 24औरत
ने जवाब दिया, “अब मैंने जान लिया है कि आप
अल्लाह के पैग़ंबर हैं और कि जो कुछ आप रब
की तरफ़ से बोलते हैं वह सच है।”

इलियास इसराईल वापस जाता है

18 बहुत दिन गुज़र गए। फिर काल
के तीसरे साल में रब इलियास से
हमकलाम हुआ, “अब जाकर अपने आपको
अख़ियब के सामने पेश कर। मैं बारिश का
सिलसिला दुबारा शुरू कर दूँगा।”

2चुनाँचे इलियास अख़ियब से मिलने के लिए
इसराईल चला गया। उस वक़्त सामरिया काल
की सख़्त गिरिफ़्त में था, 3इसलिए अख़ियब
ने महल के इंचार्ज अबदियाह को बुलाया।
(अबदियाह रब का ख़ौफ़ मानता था। 4जब
ईज़बिल ने रब के तमाम नबियों को क़त्ल करने
की कोशिश की थी तो अबदियाह ने 100 नबियों
को दो ग़ारों में छुपा दिया था। हर ग़ार में 50 नबी
रहते थे, और अबदियाह उन्हें खाने-पीने की चीज़ें
पहुँचाता रहता था।) 5अब अख़ियब ने अबदियाह
को हुक्म दिया, “पूरे मुल्क में से गुज़रकर तमाम
चश्मों और वादियों का मुआयना करें। शायद कहीं
कुछ घास मिल जाए जो हम अपने घोड़ों और
ख़च्चरों को खिलाकर उन्हें बचा सकें। ऐसा न हो
कि हमें खाने की क़िल्लत के बाइस कुछ जानवरों
को ज़बह करना पड़े।”

6उन्होंने मुक़र्रर किया कि अख़ियब कहाँ
जाएगा और अबदियाह कहाँ, फिर दोनों एक दूसरे
से अलग हो गए। 7चलते चलते अबदियाह को
अचानक इलियास उस की तरफ़ आते हुए नज़र
आया। जब अबदियाह ने उसे पहचाना तो वह
मुँह के बल झुककर बोला, “मेरे आक़ा इलियास,
क्या आप ही हैं?”

8इलियास ने जवाब दिया, “जी, मैं ही हूँ।
जाएँ, अपने मालिक को इत्तला दें कि इलियास
आ गया है।”

9अबदियाह ने एतराज़ किया, “मुझसे क्या
ग़लती हुई है कि आप मुझे अख़ियब से मरवाना
चाहते हैं? 10रब आपके ख़ुदा की क़सम,
बादशाह ने अपने बंदों को हर क़ौम और मुल्क
में भेज दिया है ताकि आपको ढूँड निकालें। और
जहाँ जवाब मिला कि इलियास यहाँ नहीं है वहाँ
लोगों को क़सम खानी पड़ी कि हम इलियास का
खोज लगाने में नाकाम रहे हैं। 11और अब आप
चाहते हैं कि मैं बादशाह के पास जाकर उसे बताऊँ
कि इलियास यहाँ है? 12ऐन मुमकिन है कि जब
मैं आपको छोड़कर चला जाऊँ तो रब का रूह
आपको उठाकर किसी नामालूम जगह ले जाए।
अगर बादशाह मेरी यह इत्तला सुनकर यहाँ आए
और आपको न पाए तो मुझे मार डालेगा। याद रहे
कि मैं जवानी से लेकर आज तक रब का ख़ौफ़
मानता आया हूँ। 13क्या मेरे आक़ा तक यह ख़बर
नहीं पहुँची कि जब ईज़बिल रब के नबियों को
क़त्ल कर रही थी तो मैंने क्या किया? मैं दो
ग़ारों में पचास पचास नबियों को छुपाकर उन्हें
खाने-पीने की चीज़ें पहुँचाता रहा। 14और अब
आप चाहते हैं कि मैं अख़ियब के पास जाकर उसे
इत्तला दूँ कि इलियास यहाँ आ गया है? वह मुझे
ज़रूर मार डालेगा।”

15इलियास ने कहा, “रब्बुल-अफ़वाज की
हयात की क़सम जिसकी ख़िदमत मैं करता हूँ,

आज मैं अपने आपको ज़रूर बादशाह को पेश
करूँगा।”
16तब अबदियाह चला गया और बादशाह को
इलियास की ख़बर पहुँचाई। यह सुनकर अख़ियब
इलियास से मिलने के लिए आया।

क्या बाल हक़ीक़ी माबूद है या रब?

17इलियास को देखते ही अख़ियब बोला, “ऐ
इसराईल को मुसीबत में डालनेवाले, क्या आप
वापस आ गए हैं?” 18इलियास ने एतराज़
किया, “मैं तो इसराईल के लिए मुसीबत का
बाइस नहीं बना बल्कि आप और आपके बाप
का घराना। आप रब के अहकाम छोड़कर बाल के
बुतों के पीछे लग गए हैं। 19अब मैं आपको चैलेंज
देता हूँ, तमाम इसराईल को बुलाकर करमिल
पहाड़ पर जमा करें। साथ साथ बाल देवता के
450 नबियों को और ईज़बिल की मेज़ पर शरीक
होनेवाले यसीरत देवी के 400 नबियों को भी
बुलाएँ।”
20अख़ियब मान गया। उसने तमाम इस-
राईलियों और नबियों को बुलाया। जब वह
करमिल पहाड़ पर जमा हो गए 21तो इलियास
उनके सामने जा खड़ा हुआ और कहा, “आप कब
तक कभी इस तरफ़, कभी उस तरफ़ लँगड़ाते
रहेंगे?[a] अगर रब ख़ुदा है तो सिर्फ़ उसी की पैरवी
करें, लेकिन अगर बाल वाहिद ख़ुदा है तो उसी के
पीछे लग जाएँ।”
लोग ख़ामोश रहे। 22इलियास ने बात जारी
रखी, “रब के नबियों में से सिर्फ़ मैं ही बाक़ी रह
गया हूँ। दूसरी तरफ़ बाल देवता के यह 450 नबी
खड़े हैं। 23अब दो बैल ले आएँ। बाल के नबी
एक को पसंद करें और फिर उसे टुकड़े टुकड़े
करके अपनी क़ुरबानगाह की लकड़ियों पर रख
दें। लेकिन वह लकड़ियों को आग न लगाएँ। मैं
दूसरे बैल को तैयार करके अपनी क़ुरबानगाह की
लकड़ियों पर रख दूँगा। लेकिन मैं भी उन्हें आग
नहीं लगाऊँगा। 24फिर आप अपने देवता का नाम
पुकारें जबकि मैं रब का नाम पुकारूँगा। जो माबूद
क़ुरबानी को जलाकर जवाब देगा वही ख़ुदा है।”
तमाम लोग बोले, “आप ठीक कहते हैं।”
25फिर इलियास ने बाल के नबियों से कहा,
“शुरू करें, क्योंकि आप बहुत हैं। एक बैल को
चुनकर उसे तैयार करें। लेकिन उसे आग मत
लगाना बल्कि अपने देवता का नाम पुकारें ताकि
वह आग भेज दे।” 26उन्होंने बैलों में से एक
को चुनकर उसे तैयार किया, फिर बाल का नाम
पुकारने लगे। सुबह से लेकर दोपहर तक वह
मुसलसल चीख़ते-चिल्लाते रहे, “ऐ बाल, हमारी
सुन!” साथ साथ वह उस क़ुरबानगाह के इर्दगिर्द
नाचते रहे[b] जो उन्होंने बनाई थी। लेकिन न कोई
आवाज़ सुनाई दी, न किसी ने जवाब दिया।
27दोपहर के वक़्त इलियास उनका मज़ाक़
उड़ाने लगा, “ज़्यादा ऊँची आवाज़ से बोलें!
शायद वह सोचों में ग़रक़ हो या अपनी हाजत
रफ़ा करने के लिए एक तरफ़ गया हो। यह भी
हो सकता है कि वह कहीं सफ़र कर रहा हो। या
शायद वह गहरी नींद सो गया हो और उसे जगाने
की ज़रूरत है।”
28तब वह मज़ीद ऊँची आवाज़ से चीख़ने-
चिल्लाने लगे। मामूल के मुताबिक़ वह छुरियों
और नेज़ों से अपने आपको ज़ख़मी करने लगे,
यहाँ तक कि ख़ून बहने लगा। 29दोपहर गुज़र गई,
और वह शाम के उस वक़्त तक वज्द में रहे जब
ग़ल्ला की नज़र पेश की जाती है। लेकिन कोई
आवाज़ न सुनाई दी। न किसी ने जवाब दिया, न
उनके तमाशे पर तवज्जुह दी।
30फिर इलियास इसराईलियों से मुख़ातिब
हुआ, “आएँ, सब यहाँ मेरे पास आएँ!” सब

[a]देखिए आयत 26।

[b]लफ़्ज़ी तरजुमा : लँगड़ाते हुए नाचते रहे। ग़ालिबन बाल की ताज़ीम में एक ख़ास क़िस्म का रक़्स। लिहाज़ा आयत 21 में इलियास का सवाल, “आप कब तक …लँगड़ाते रहेंगे?”

क़रीब आए। वहाँ रब की एक क़ुरबानगाह थी जो
गिराई गई थी। अब इलियास ने वह दुबारा खड़ी
की। 31उसने याक़ूब से निकले हर क़बीले के लिए
एक एक पत्थर चुन लिया। (बाद में रब ने याक़ूब
का नाम इसराईल रखा था)। 32इन बारह पत्थरों
को लेकर इलियास ने रब के नाम की ताज़ीम
में क़ुरबानगाह बनाई। इसके इर्दगिर्द उसने इतना
चौड़ा गढ़ा खोदा कि उसमें तक़रीबन 15 लिटर
पानी समा सकता था। 33फिर उसने क़ुरबानगाह
पर लकड़ियों का ढेर लगाया और बैल को टुकड़े
टुकड़े करके लकड़ियों पर रख दिया। इसके बाद
उसने हुक्म दिया, “चार घड़े पानी से भरकर
क़ुरबानी और लकड़ियों पर उंडेल दें!” 34जब
उन्होंने ऐसा किया तो उसने दुबारा ऐसा करने
का हुक्म दिया, फिर तीसरी बार। 35आख़िरकार
इतना पानी था कि उसने चारों तरफ़ क़ुरबानगाह
से टपककर गढ़े को भर दिया।

36शाम के वक़्त जब ग़ल्ला की नज़र पेश की
जाती है इलियास ने क़ुरबानगाह के पास जाकर
बुलंद आवाज़ से दुआ की, “ऐ रब, ऐ इब्राहीम,
इसहाक़ और इसराईल के ख़ुदा, आज लोगों पर
ज़ाहिर कर कि इसराईल में तू ही ख़ुदा है और कि
मैं तेरा ख़ादिम हूँ। साबित कर कि मैंने यह सब
कुछ तेरे हुक्म के मुताबिक़ किया है। 37ऐ रब,
मेरी दुआ सुन! मेरी सुन ताकि यह लोग जान लें
कि तू, ऐ रब, ख़ुदा है और कि तू ही उनके दिलों
को दुबारा अपनी तरफ़ मायल कर रहा है।”

38अचानक आसमान से रब की आग नाज़िल
हुई। आग ने न सिर्फ़ क़ुरबानी और लकड़ी को
भस्म कर दिया बल्कि क़ुरबानगाह के पत्थरों और
उसके नीचे की मिट्टी को भी। गढ़े में पानी भी
एकदम सूख गया।

39यह देखकर इसराईली औंधे मुँह गिरकर
पुकारने लगे, “रब ही ख़ुदा है! रब ही ख़ुदा है!”
40फिर इलियास ने उन्हें हुक्म दिया, “बाल के
नबियों को पकड़ लें। एक भी बचने न पाए!”
लोगों ने उन्हें पकड़ लिया तो इलियास उन्हें नीचे
वादीए-क़ैसोन में ले गया और वहाँ सबको मौत
के घाट उतार दिया।

बारिश होती है

41फिर इलियास ने अख़ियब से कहा, “अब
जाकर कुछ खाएँ और पिएँ, क्योंकि मूसलाधार
बारिश का शोर सुनाई दे रहा है।” 42चुनाँचे
अख़ियब खाने-पीने के लिए चला गया जबकि
इलियास करमिल पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया।
वहाँ उसने झुककर अपने सर को दोनों घुटनों के
बीच में छुपा लिया। 43अपने नौकर को उसने
हुक्म दिया, “जाओ, समुंदर की तरफ़ देखो।”

नौकर गया और समुंदर की तरफ़ देखा, फिर
वापस आकर इलियास को इत्तला दी, “कुछ
भी नज़र नहीं आता।” लेकिन इलियास ने उसे
दुबारा देखने के लिए भेज दिया। इस दफ़ा भी
कुछ मालूम न हो सका। सात बार इलियास ने
नौकर को देखने के लिए भेजा। 44आख़िरकार
जब नौकर सातवीं दफ़ा गया तो उसने वापस
आकर इत्तला दी, “एक छोटा-सा बादल समुंदर
में से निकलकर ऊपर चढ़ रहा है। वह आदमी के
हाथ के बराबर है।”

तब इलियास ने हुक्म दिया, “जाओ, अख़ियब
को इत्तला दो, ‘घोड़ों को फ़ौरन रथ में जोतकर
घर चले जाएँ, वरना बारिश आपको रोक लेगी’।”
45नौकर इत्तला देने चला गया तो जल्द ही आँधी
आई, आसमान पर काले काले बादल छा गए और
मूसलाधार बारिश बरसने लगी। अख़ियब जल्दी
से रथ पर सवार होकर यज्रएल के लिए रवाना
हो गया। 46उस वक़्त रब ने इलियास को ख़ास
ताक़त दी। सफ़र के लिए कमरबस्ता होकर वह
अख़ियब के रथ के आगे आगे दौड़कर उससे पहले
यज्रएल पहुँच गया।

इलियास भाग जाता है

19 अख़ियब ने ईज़बिल को सब कुछ
सुनाया जो इलियास ने कहा था, यह
भी कि उसने बाल के नबियों को किस तरह

तलवार से मार दिया था। 2तब ईज़बिल ने क़ासिद
को इलियास के पास भेजकर उसे इत्तला दी,
“देवता मुझे सख़्त सज़ा दें अगर मैं कल इस वक़्त
तक आपको उन नबियों की-सी सज़ा न दूँ।”
3इलियास सख़्त डर गया और अपनी जान
बचाने के लिए भाग गया। चलते चलते वह
यहूदाह के शहर बैर-सबा तक पहुँच गया। वहाँ
वह अपने नौकर को छोड़कर 4आगे रेगिस्तान में
जा निकला। एक दिन के सफ़र के बाद वह सींक
की झाड़ी के पास पहुँच गया और उसके साये
में बैठकर दुआ करने लगा, “ऐ रब, मुझे मरने
दे। बस अब काफ़ी है। मेरी जान ले ले, क्योंकि
मैं अपने बापदादा से बेहतर नहीं हूँ।” 5फिर वह
झाड़ी के साये में लेटकर सो गया।

अचानक एक फ़रिश्ते ने उसे छूकर कहा, “उठ,
खाना खा ले!” 6जब उसने अपनी आँखें खोलीं
तो देखा कि सिरहाने के क़रीब कोयलों पर बनाई
गई रोटी और पानी की सुराही पड़ी है। उसने रोटी
खाई, पानी पिया और दुबारा सो गया। 7लेकिन
रब का फ़रिश्ता एक बार फिर आया और उसे हाथ
लगाकर कहा, “उठ, खाना खा ले, वरना आगे का
लंबा सफ़र तेरे बस की बात नहीं होगी।”

8तब इलियास ने उठकर दुबारा खाना खाया
और पानी पिया। इस ख़ुराक ने उसे इतनी
तक़वियत दी कि वह चालीस दिन और चालीस
रात सफ़र करते करते अल्लाह के पहाड़ होरिब
यानी सीना तक पहुँच गया। 9वहाँ वह रात
गुज़ारने के लिए एक ग़ार में चला गया।

रब इलियास की हौसलाअफ़्ज़ाई करता है

ग़ार में रब उससे हमकलाम हुआ। उसने
पूछा, “इलियास, तू यहाँ क्या कर रहा है?”
10इलियास ने जवाब दिया, “मैंने रब, आसमानी
लशकरों के ख़ुदा की ख़िदमत करने की सिर-तोड़
कोशिश की है, क्योंकि इसराईलियों ने तेरे अहद
को तर्क कर दिया है। उन्होंने तेरी क़ुरबानगाहों को
गिराकर तेरे नबियों को तलवार से क़त्ल कर दिया
है। मैं अकेला ही बचा हूँ, और वह मुझे भी मार
डालने के दरपै हैं।”

11जवाब में रब ने फ़रमाया, “ग़ार से
निकलकर पहाड़ पर रब के सामने खड़ा हो जा!”
फिर रब वहाँ से गुज़रा। उसके आगे आगे बड़ी और
ज़बरदस्त आँधी आई जिसने पहाड़ों को चीरकर
चट्टानों को टुकड़े टुकड़े कर दिया। लेकिन रब
आँधी में नहीं था। 12इसके बाद ज़लज़ला आया,
लेकिन रब ज़लज़ले में नहीं था। 13ज़लज़ले के
बाद भड़कती हुई आग वहाँ से गुज़री, लेकिन रब
आग में भी नहीं था। फिर नरम हवा की धीमी
धीमी आवाज़ सुनाई दी। यह आवाज़ सुनकर
इलियास ने अपने चेहरे को चादर से ढाँप लिया
और निकलकर ग़ार के मुँह पर खड़ा हो गया।
एक आवाज़ उससे मुख़ातिब हुई, “इलियास, तू
यहाँ क्या कर रहा है?” 14इलियास ने जवाब
दिया, “मैंने रब, आसमानी लशकरों के ख़ुदा
की ख़िदमत करने की सिर-तोड़ कोशिश की है,
क्योंकि इसराईलियों ने तेरे अहद को तर्क कर
दिया है। उन्होंने तेरी क़ुरबानगाहों को गिराकर
तेरे नबियों को तलवार से क़त्ल कर दिया है। मैं
अकेला ही बचा हूँ, और वह मुझे भी मार डालने
के दरपै हैं।”

15रब ने जवाब में कहा, “रेगिस्तान में उस
रास्ते से होकर वापस जा जिसने तुझे यहाँ
पहुँचाया है। फिर दमिश्क़ चला जा। वहाँ हज़ाएल
को तेल से मसह करके शाम का बादशाह क़रार
दे। 16इसी तरह याहू बिन निमसी को मसह करके
इसराईल का बादशाह क़रार दे और अबील-महूला
के रहनेवाले इलीशा बिन साफ़त को मसह करके
अपना जा-नशीन मुक़र्रर कर। 17जो हज़ाएल की
तलवार से बच जाएगा उसे याहू मार देगा, और
जो याहू की तलवार से बच जाएगा उसे इलीशा
मार देगा। 18लेकिन मैंने अपने लिए इसराईल में
7,000 अफ़राद को बचा लिया है, उन तमाम
लोगों को जो अब तक न बाल देवता के सामने
झुके, न उसके बुत को बोसा दिया है।”

इलियास इलीशा को अपना जा-नशीन मुक़र्रर करता है

19इलियास वहाँ से चला गया। इसराईल में
वापस आकर उसे इलीशा बिन साफ़त मिला जो
बैलों की बारह जोड़ियों की मदद से हल चला
रहा था। ख़ुद वह बारहवीं जोड़ी के साथ चल
रहा था। इलियास ने उसके पास आकर अपनी
चादर उसके कंधों पर डाल दी और रुके बग़ैर आगे
निकल गया।

20इलीशा फ़ौरन अपने बैलों को छोड़कर
इलियास के पीछे भागा। उसने कहा, “पहले
मुझे अपने माँ-बाप को बोसा देकर ख़ैरबाद कहने
दीजिए। फिर मैं आपके पीछे हो लूँगा।” इलियास
ने जवाब दिया, “चलें, वापस जाएँ। लेकिन वह
कुछ याद रहे जो मैंने आपके साथ किया है।”
21तब इलीशा वापस चला गया। बैलों की एक
जोड़ी को लेकर उसने दोनों को ज़बह किया। हल
चलाने का सामान उसने गोश्त पकाने के लिए
जला दिया। जब गोश्त तैयार था तो उसने उसे
लोगों में तक़सीम करके उन्हें खिला दिया। इसके
बाद इलीशा इलियास के पीछे होकर उस की
ख़िदमत करने लगा।

शाम की फ़ौज सामरिया का मुहासरा करती है

20 एक दिन शाम के बादशाह बिन-
हदद ने अपनी पूरी फ़ौज को जमा
किया। 32 इत्तहादी बादशाह भी अपने रथों
और घोड़ों को लेकर आए। इस बड़ी फ़ौज के
साथ बिन-हदद ने सामरिया का मुहासरा करके
इसराईल से जंग का एलान किया। 2उसने
अपने क़ासिदों को शहर में भेजकर इसराईल
के बादशाह अख़ियब को इत्तला दी, 3“अब से
आपका सोना, चाँदी, ख़वातीन और बेटे मेरे ही
हैं।” 4इसराईल के बादशाह ने जवाब दिया, “मेरे
आक़ा और बादशाह, आपकी मरज़ी। मैं और जो
कुछ मेरा है आपकी मिलकियत है।”

5थोड़ी देर के बाद क़ासिद बिन-हदद की नई
ख़बर लेकर आए, “मैंने आपसे सोने, चाँदी,
ख़वातीन और बेटों का तक़ाज़ा किया है। 6अब
ग़ौर करें! कल इस वक़्त मैं अपने मुलाज़िमों को
आपके पास भेज दूँगा, और वह आपके महल और
आपके अफ़सरों के घरों की तलाशी लेंगे। जो कुछ
भी आपको प्यारा है उसे वह ले जाएंगे।”

7तब अख़ियब बादशाह ने मुल्क के तमाम
बुज़ुर्गों को बुलाकर उनसे बात की, “देखें यह
आदमी कितना बुरा इरादा रखता है। जब उसने
मेरी ख़वातीन, बेटों, सोने और चाँदी का तक़ाज़ा
किया तो मैंने इनकार न किया।” 8बुज़ुर्गों और
बाक़ी लोगों ने मिलकर मशवरा दिया, “उस की
न सुनें, और जो कुछ वह माँगता है उस पर राज़ी न
हो जाएँ।” 9चुनाँचे बादशाह ने क़ासिदों से कहा,
“मेरे आक़ा बादशाह को जवाब देना, जो कुछ
आपने पहली मरतबा माँग लिया वह मैं आपको
देने के लिए तैयार हूँ, लेकिन यह आख़िरी तक़ाज़ा
मैं पूरा नहीं कर सकता।”

जब क़ासिदों ने बिन-हदद को यह ख़बर पहुँचाई
10तो उसने अख़ियब को फ़ौरन ख़बर भेज दी,
“देवता मुझे सख़्त सज़ा दें अगर मैं सामरिया
को नेस्तो-नाबूद न कर दूँ। इतना भी नहीं रहेगा
कि मेरा हर फ़ौजी मुट्ठी-भर ख़ाक अपने साथ
वापस ले जा सके!” 11इसराईल के बादशाह
ने क़ासिदों को जवाब दिया, “उसे बता देना कि
जो अभी जंग की तैयारियाँ कर रहा है वह फ़तह
के नारे न लगाए।”

12जब बिन-हदद को यह इत्तला मिली तो वह
लशकरगाह में अपने इत्तहादी बादशाहों के साथ मै
पी रहा था। उसने अपने अफ़सरों को हुक्म दिया,
“हमला करने के लिए तैयारियाँ करो!” चुनाँचे
वह शहर पर हमला करने की तैयारियाँ करने लगे।

शाम की फ़ौज से पहली जंग

13इस दौरान एक नबी अख़ियब बादशाह के
पास आया और कहा, “रब फ़रमाता है, ‘क्या
तुझे दुश्मन की यह बड़ी फ़ौज नज़र आ रही है?

तो भी मैं इसे आज ही तेरे हवाले कर दूँगा। तब
तू जान लेगा कि मैं ही रब हूँ’।”
14अख़ियब ने सवाल किया, “रब यह किसके
वसीले से करेगा?” नबी ने जवाब दिया, “रब
फ़रमाता है कि ज़िलों पर मुक़र्रर अफ़सरों के
जवान यह फ़तह पाएँगे।” बादशाह ने मज़ीद
पूछा, “लड़ाई में कौन पहला क़दम उठाए?” नबी
ने कहा, “तू ही।”
15चुनाँचे अख़ियब ने ज़िलों पर मुक़र्रर
अफ़सरों के जवानों को बुलाया। 232 अफ़राद
थे। फिर उसने बाक़ी इसराईलियों को जमा
किया। 7,000 अफ़राद थे। 16-17दोपहर को वह
लड़ने के लिए निकले। ज़िलों पर मुक़र्रर अफ़सरों
के जवान सबसे आगे थे। बिन-हदद और 32
इत्तहादी बादशाह लशकरगाह में बैठे नशे में धुत
मै पी रहे थे कि अचानक शहर का जायज़ा लेने
के लिए बिन-हदद के भेजे गए सिपाही अंदर आए
और कहने लगे, “सामरिया से आदमी निकल रहे
हैं।” 18बिन-हदद ने हुक्म दिया, “हर सूरत में उन्हें
ज़िंदा पकड़ें, ख़ाह वह अमनपसंद इरादा रखते हों
या न।”
19लेकिन उन्हें यह करने का मौक़ा न मिला,
क्योंकि इसराईल के ज़िलों पर मुक़र्रर अफ़सरों
और बाक़ी फ़ौजियों ने शहर से निकल कर
20फ़ौरन उन पर हमला कर दिया। और जिस
भी दुश्मन का मुक़ाबला हुआ उसे मारा गया।
तब शाम की पूरी फ़ौज भाग गई। इसराईलियों
ने उनका ताक़्क़ुब किया, लेकिन शाम का
बादशाह बिन-हदद घोड़े पर सवार होकर चंद एक
घुड़सवारों के साथ बच निकला। 21उस वक़्त
इसराईल का बादशाह जंग के लिए निकला और
घोड़ों और रथों को तबाह करके अरामियों को
ज़बरदस्त शिकस्त दी।

शाम की फ़ौज से दूसरी जंग

22बाद में मज़कूरा नबी दुबारा इसराईल के
बादशाह के पास आया। वह बोला, “अब मज़बूत
होकर बड़े ध्यान से सोचें कि आनेवाले दिनों में
क्या क्या तैयारियाँ करनी चाहिएँ, क्योंकि अगले
बहार के मौसम में शाम का बादशाह दुबारा आप
पर हमला करेगा।”
23शाम के बादशाह को भी मशवरा दिया
गया। उसके बड़े अफ़सरों ने ख़याल पेश किया,
“इसराईलियों के देवता पहाड़ी देवता हैं, इसलिए
वह हम पर ग़ालिब आ गए हैं। लेकिन अगर हम
मैदानी इलाक़े में उनसे लड़ें तो हर सूरत में जीतेंगे।
24लेकिन हमारा एक और मशवरा भी है। 32
बादशाहों को हटाकर उनकी जगह अपने अफ़सरों
को मुक़र्रर करें। 25फिर एक नई फ़ौज तैयार करें
जो तबाहशुदा पुरानी फ़ौज जैसी ताक़तवर हो।
उसके उतने ही रथ और घोड़े हों जितने पहले थे।
फिर जब हम मैदानी इलाक़े में उनसे लड़ेंगे तो उन
पर ज़रूर ग़ालिब आएँगे।”
बादशाह उनकी बात मानकर तैयारियाँ करने
लगा। 26जब बहार का मौसम आया तो वह शाम
के फ़ौजियों को जमा करके इसराईल से लड़ने
के लिए अफ़ीक़ शहर गया। 27इसराईली फ़ौज
भी लड़ने के लिए जमा हुई। खाने-पीने की अशया
का बंदोबस्त किया गया, और वह दुश्मन से लड़ने
के लिए निकले। जब वहाँ पहुँचे तो उन्होंने अपने
ख़ैमों को दो जगहों पर लगाया। यह दो गुरोह शाम
की वसी फ़ौज के मुक़ाबले में बकरियों के दो छोटे
रेवड़ों जैसे लग रहे थे, क्योंकि पूरा मैदान शाम के
फ़ौजियों से भरा था।
28फिर मर्दे-ख़ुदा ने अख़ियब के पास आकर
कहा, “रब फ़रमाता है, ‘शाम के लोग ख़याल
करते हैं कि रब पहाड़ी देवता है इसलिए
मैदानी इलाक़े में नाकाम रहेगा। चुनाँचे मैं उनकी
ज़बरदस्त फ़ौज को तेरे हवाले कर दूँगा। तब तू
जान लेगा कि मैं ही रब हूँ’।”
29सात दिन तक दोनों फ़ौजें एक दूसरे के
मुक़ाबिल सफ़आरा रहीं। सातवें दिन लड़ाई का
आग़ाज़ हुआ। इसराईली इस मरतबा भी शाम
की फ़ौज पर ग़ालिब आए। उस दिन उन्होंने उनके
एक लाख प्यादा फ़ौजियों को मार दिया। 30बाक़ी
फ़रार होकर अफ़ीक़ शहर में घुस गए। तक़रीबन

27,000 आदमी थे। लेकिन अचानक शहर की
फ़सील उन पर गिर गई, तो वह भी हलाक हो
गए।

अख़ियब शाम के बादशाह पर रहम करता है

बिन-हदद बादशाह भी अफ़ीक़ में फ़रार हुआ
था। अब वह कभी इस कमरे में, कभी उसमें
खिसककर छुपने की कोशिश कर रहा था।
31फिर उसके अफ़सरों ने उसे मशवरा दिया,
"सुना है कि इसराईल के बादशाह नरमदिल होते
हैं। क्यों न हम टाट ओढ़कर और अपनी गरदनों
में रस्से डालकर इसराईल के बादशाह के पास
जाएँ? शायद वह आपको ज़िंदा छोड़ दे।"
32चुनाँचे बिन-हदद के अफ़सर टाट ओढ़-
कर और अपनी गरदनों में रस्से डालकर इसराईल
के बादशाह के पास आए। उन्होंने कहा, "आपका
ख़ादिम बिन-हदद गुज़ारिश करता है कि मुझे
ज़िंदा छोड़ दें।" अख़ियब ने सवाल किया, "क्या
वह अब तक ज़िंदा है? वह तो मेरा भाई है!"
33जब बिन-हदद के अफ़सरों ने जान लिया कि
अख़ियब का रुझान किस तरफ़ है तो उन्होंने
जल्दी से इसकी तसदीक़ की, "जी, बिन-हदद
आपका भाई है!" अख़ियब ने हुक्म दिया,
"जाकर उसे बुला लाएँ।"
तब बिन-हदद निकल आया, और अख़ि-
यब ने उसे अपने रथ पर सवार होने की दावत दी।
34बिन-हदद ने अख़ियब से कहा, "मैं आपको
वह तमाम शहर वापस कर देता हूँ जो मेरे बाप
ने आपके बाप से छीन लिए थे। आप हमारे
दारुल-हुकूमत दमिश्क़ में तिजारती मराकिज़ भी
क़ायम कर सकते हैं, जिस तरह मेरे बाप ने पहले
सामरिया में किया था।" अख़ियब बोला, "ठीक
है। इसके बदले में मैं आपको रिहा कर दूँगा।"
उन्होंने मुआहदा किया, फिर अख़ियब ने शाम के
बादशाह को रिहा कर दिया।

नबी अख़ियब को मलामत करता है

35उस वक़्त रब ने नबियों में से एक को
हिदायत की, "जाकर अपने साथी को कह दे
कि वह तुझे मारे।" नबी ने ऐसा किया, लेकिन
साथी ने इनकार किया। 36फिर नबी बोला,
"चूँकि आपने रब की नहीं सुनी, इसलिए ज्योंही
आप मुझसे चले जाएंगे शेरबबर आपको फाड़
डालेगा।" और ऐसा ही हुआ। जब साथी वहाँ से
निकला तो शेरबबर ने उस पर हमला करके उसे
फाड़ डाला।
37नबी की मुलाक़ात किसी और से हुई तो
उसने उससे भी कहा, "मेहरबानी करके मुझे
मारें!" उस आदमी ने नबी को मार मारकर
ज़ख़मी कर दिया। 38तब नबी ने अपनी आँखों
पर पट्टी बाँधी ताकि उसे पहचाना न जाए, फिर
रास्ते के किनारे पर अख़ियब बादशाह के इंतज़ार
में खड़ा हो गया।
39जब बादशाह वहाँ से गुज़रा तो नबी
चिल्लाकर उससे मुख़ातिब हुआ, "जनाब, मैं
मैदाने-जंग में लड़ रहा था कि अचानक किसी
आदमी ने मेरे पास आकर अपने क़ैदी को मेरे
हवाले कर दिया। उसने कहा, 'इसकी निगरानी
करना। अगर यह किसी भी वजह से भाग जाए
तो आपको उस की जान के एवज़ अपनी जान
देनी पड़ेगी या आपको एक मन चाँदी अदा करनी
पड़ेगी।' 40लेकिन मैं इधर-उधर मसरूफ़ रहा,
और इतने में क़ैदी ग़ायब हो गया।" अख़ियब
बादशाह ने जवाब दिया, "आपने ख़ुद अपने बारे
में फ़ैसला दिया है। अब आपको इसका नतीजा
भुगतना पड़ेगा।"
41फिर नबी ने जल्दी से पट्टी को अपनी आँखों
पर से उतार दिया, और बादशाह ने पहचान लिया
कि यह नबियों में से एक है। 42नबी ने कहा,
"रब फ़रमाता है, 'मैंने मुक़र्रर किया था कि बिन-
हदद को मेरे लिए मख़सूस करके हलाक करना
है, लेकिन तूने उसे रिहा कर दिया है। अब उस की

जगह तू ही मरेगा, और उस की क़ौम की जगह
तेरी क़ौम को नुक़सान पहुँचेगा'।"
43इसराईल का बादशाह बड़े ग़ुस्से और
बदमिज़ाजी के आलम में सामरिया में अपने महल
में चला गया।

ईज़बिल के हाथों नबोत का क़त्ल

21 इसके बाद एक और क़ाबिले-
ज़िक्र बात हुई। यज्रएल में सा-
मरिया के बादशाह अख़ियब का एक महल था।
महल की ज़मीन के साथ साथ अंगूर का बाग़ था।
मालिक का नाम नबोत था। 2एक दिन अख़ियब
ने नबोत से बात की, "अंगूर का आपका बाग़
मेरे महल के क़रीब ही है। उसे मुझे दे दें, क्योंकि
मैं उसमें सब्ज़ियाँ लगाना चाहता हूँ। मुआवज़े में
मैं आपको उससे अच्छा अंगूर का बाग़ दे दूँगा।
लेकिन अगर आप पैसे को तरजीह दें तो आपको
उस की पूरी रक़म अदा कर दूँगा।"
3लेकिन नबोत ने जवाब दिया, "अल्लाह न
करे कि मैं आपको वह मौरूसी ज़मीन दूँ जो मेरे
बापदादा ने मेरे सुपुर्द की है!"
4अख़ियब बड़े ग़ुस्से में अपने घर वापस चला
गया। वह बेज़ार था कि नबोत अपने बापदादा की
मौरूसी ज़मीन बेचना नहीं चाहता। वह पलंग पर
लेट गया और अपना मुँह दीवार की तरफ़ करके
खाना खाने से इनकार किया। 5उस की बीवी
ईज़बिल उसके पास आई और पूछने लगी, "क्या
बात है? आप क्यों इतने बेज़ार हैं कि खाना भी
नहीं खाना चाहते?" 6अख़ियब ने जवाब दिया,
"यज्रएल का रहनेवाला नबोत मुझे अंगूर का बाग़
नहीं देना चाहता। गो मैं उसे पैसे देना चाहता था
बल्कि उसे इसकी जगह कोई और बाग़ देने के
लिए तैयार था तो भी वह बज़िद रहा।"
7ईज़बिल बोली, "क्या आप इसराईल के
बादशाह हैं कि नहीं? अब उठें! खाएँ, पिएँ
और अपना दिल बहलाएँ। मैं ही आपको नबोत
यज्रएली का अंगूर का बाग़ दिला दूँगी।" 8उसने
अख़ियब के नाम से ख़ुतूत लिखकर उन पर
बादशाह की मुहर लगाई और उन्हें नबोत के शहर
के बुज़ुर्गों और शुरफ़ा को भेज दिया। 9ख़तों में
ज़ैल की ख़बर लिखी थी,
"शहर में एलान करें कि एक दिन का रोज़ा रखा
जाए। जब लोग उस दिन जमा हो जाएंगे तो नबोत
को लोगों के सामने इज़्ज़त की कुरसी पर बिठा
दें। 10लेकिन उसके मुक़ाबिल दो बदमाशों को
बिठा देना। इजतिमा के दौरान यह आदमी सबके
सामने नबोत पर इलज़ाम लगाएँ, 'इस शख़्स ने
अल्लाह और बादशाह पर लानत भेजी है! हम
इसके गवाह हैं।' फिर उसे शहर से बाहर ले जाकर
संगसार करें।"
11यज्रएल के बुज़ुर्गों और शुरफ़ा ने ऐसा ही
किया। 12उन्होंने रोज़े के दिन का एलान किया।
जब लोग मुक़र्ररा दिन जमा हुए तो नबोत को
लोगों के सामने इज़्ज़त की कुरसी पर बिठा
दिया गया। 13फिर दो बदमाश आए और उसके
मुक़ाबिल बैठ गए। इजतिमा के दौरान यह आदमी
सबके सामने नबोत पर इलज़ाम लगाने लगे,
"इस शख़्स ने अल्लाह और बादशाह पर लानत
भेजी है! हम इसके गवाह हैं।" तब नबोत को
शहर से बाहर ले जाकर संगसार कर दिया गया।
14फिर शहर के बुज़ुर्गों ने ईज़बिल को इत्तला दी,
"नबोत मर गया है, उसे संगसार किया गया है।"
15यह ख़बर मिलते ही ईज़बिल ने अख़ि-
यब से बात की, "जाएँ, नबोत यज्रएली के उस
बाग़ पर क़ब्ज़ा करें जो वह आपको बेचने से
इनकार कर रहा था। अब वह आदमी ज़िंदा नहीं
रहा बल्कि मर गया है।"
16यह सुनकर अख़ियब फ़ौरन नबोत के अंगूर
के बाग़ पर क़ब्ज़ा करने के लिए रवाना हुआ।

इलियास अख़ियब को सज़ा सुनाता है

17तब रब इलियास तिशबी से हमकलाम
हुआ, 18"इसराईल के बादशाह अख़ियब से जो
सामरिया में रहता है मिलने जा। इस वक़्त वह
नबोत के अंगूर के बाग़ में है, क्योंकि वह उस
पर क़ब्ज़ा करने के लिए वहाँ पहुँचा है। 19उसे

बता देना, ‘रब फ़रमाता है कि तूने एक आदमी
को बिलावजह क़त्ल करके उस की मिलकियत
पर क़ब्ज़ा कर लिया है। रब फ़रमाता है कि जहाँ
कुत्तों ने नबोत का ख़ून चाटा है वहाँ वह तेरा ख़ून
भी चाटेंगे’।”
20जब इलियास अख़ियब के पास पहुँचा तो
बादशाह बोला, “मेरे दुश्मन, क्या आपने मुझे ढूँड
निकाला है?” इलियास ने जवाब दिया, “जी,
मैंने आपको ढूँड निकाला है, क्योंकि आपने अपने
आपको बदी के हाथ में बेचकर ऐसा काम किया
है जो रब को नापसंद है। 21अब सुनें रब का
फ़रमान, ‘मैं तुझे यों मुसीबत में डाल दूँगा कि
तेरा नामो-निशान तक नहीं रहेगा। मैं इसराईल में
से तेरे ख़ानदान के हर मर्द को मिटा दूँगा, ख़ाह वह
बालिग़ हो या बच्चा। 22तूने मुझे बड़ा तैश दिलाया
और इसराईल को गुनाह करने पर उकसाया है।
इसलिए मेरा तेरे घराने के साथ वही सुलूक होगा
जो मैंने यरुबियाम बिन नबात और बाशा बिन
अख़ियाह के साथ किया है।’ 23ईज़बिल पर भी
रब की सज़ा आएगी। रब फ़रमाता है, ‘कुत्ते
यज़्रएल की फ़सील के पास ईज़बिल को खा
जाएंगे। 24अख़ियब के ख़ानदान में से जो शहर
में मरेंगे उन्हें कुत्ते खा जाएंगे, और जो खुले मैदान
में मरेंगे उन्हें परिंदे चट कर जाएंगे’।”
25और यह हक़ीक़त है कि अख़ियब जैसा
ख़राब शख़्स कोई नहीं था। क्योंकि ईज़बिल के
उकसाने पर उसने अपने आपको बदी के हाथ में
बेचकर ऐसा काम किया जो रब को नापसंद था।
26सबसे घिनौनी बात यह थी कि वह बुतों के पीछे
लगा रहा, बिलकुल उन अमोरियों की तरह जिन्हें
रब ने इसराईल से निकाल दिया था।
27जब अख़ियब ने इलियास की यह बातें
सुनीं तो उसने अपने कपड़े फाड़कर टाट ओढ़
लिया। रोज़ा रखकर वह ग़मगीन हालत में फिरता
रहा। टाट उसने सोते वक़्त भी न उतारा। 28तब
रब दुबारा इलियास तिशबी से हमकलाम हुआ,
29“क्या तूने ग़ौर किया है कि अख़ियब ने अपने
आपको मेरे सामने कितना पस्त कर दिया है?
चूँकि उसने अपनी आजिज़ी का इज़हार किया है
इसलिए मैं उसके जीते-जी उसके ख़ानदान को
मज़कूरा मुसीबत में नहीं डालूँगा बल्कि उस वक़्त
जब उसका बेटा तख़्त पर बैठेगा।”

झूटे नबियों और मीकायाह का मुक़ाबला

22 तीन साल तक शाम और इस-
राईल के दरमियान सुलह रही।
2तीसरे साल यहूदाह का बादशाह यहूसफ़त
इसराईल के बादशाह अख़ियब से मिलने गया।
3उस वक़्त इसराईल के बादशाह ने अपने
अफ़सरों से बात की, “देखें, रामात-जिलियाद
हमारा ही शहर है। तो फिर हम क्यों कुछ नहीं
कर रहे? हमें उसे शाम के बादशाह के क़ब्ज़े से
छुड़वाना चाहिए।” 4उसने यहूसफ़त से सवाल
किया, “क्या आप मेरे साथ रामात-जिलियाद
जाएंगे ताकि उस पर क़ब्ज़ा करें?” यहूसफ़त
ने जवाब दिया, “जी ज़रूर। हम तो भाई हैं। मेरी
क़ौम को अपनी क़ौम और मेरे घोड़ों को अपने
घोड़े समझें! 5लेकिन मेहरबानी करके पहले रब
की मरज़ी मालूम कर लें।”
6इसराईल के बादशाह ने तक़रीबन 400
नबियों को बुलाकर उनसे पूछा, “क्या मैं रामात-
जिलियाद पर हमला करूँ या इस इरादे से बाज़
रहूँ?” नबियों ने जवाब दिया, “जी करें, क्योंकि
रब उसे बादशाह के हवाले कर देगा।”
7लेकिन यहूसफ़त मुतमइन न हुआ। उसने
पूछा, “क्या यहाँ रब का कोई नबी नहीं जिससे
हम दरियाफ़्त कर सकें?” 8इसराईल का
बादशाह बोला, “हाँ, एक तो है जिसके ज़रीए
हम रब की मरज़ी मालूम कर सकते हैं। लेकिन
मैं उससे नफ़रत करता हूँ, क्योंकि वह मेरे बारे में
कभी भी अच्छी पेशगोई नहीं करता। वह हमेशा
बुरी पेशगोइयाँ सुनाता है। उसका नाम मीकायाह
बिन इमला है।” यहूसफ़त ने एतराज़ किया,
“बादशाह ऐसी बात न कहे!” 9तब इसराईल
के बादशाह ने किसी मुलाज़िम को बुलाकर हुक्म

दिया, “मीकायाह बिन इमला को फ़ौरन हमारे
पास पहुँचा देना!”
10अख़ियब और यहूसफ़त अपने शाही लिबास
पहने हुए सामरिया के दरवाज़े के क़रीब अपने
अपने तख़्त पर बैठे थे। यह ऐसी खुली जगह
थी जहाँ अनाज गाहा जाता था। तमाम 400
नबी वहाँ उनके सामने अपनी पेशगोइयाँ पेश
कर रहे थे। 11एक नबी बनाम सिदक़ियाह बिन
कनाना ने अपने लिए लोहे के सींग बनाकर एलान
किया, “रब फ़रमाता है कि इन सींगों से तू शाम
के फ़ौजियों को मार मारकर हलाक कर देगा।”
12दूसरे नबी भी इस क़िस्म की पेशगोइयाँ कर रहे
थे, “रामात-जिलियाद पर हमला करें, क्योंकि
आप ज़रूर कामयाब हो जाएंगे। रब शहर को
आपके हवाले कर देगा।”
13जिस मुलाज़िम को मीकायाह को बुलाने के
लिए भेजा गया था उसने रास्ते में उसे समझाया,
“देखें, बाक़ी तमाम नबी मिलकर कह रहे हैं कि
बादशाह को कामयाबी हासिल होगी। आप भी
ऐसी ही बातें करें, आप भी फ़तह की पेशगोई
करें!” 14लेकिन मीकायाह ने एतराज़ किया,
“रब की हयात की क़सम, मैं बादशाह को सिर्फ़
वही कुछ बताऊँगा जो रब मुझे फ़रमाएगा।”
15जब मीकायाह अख़ियब के सामने खड़ा
हुआ तो बादशाह ने पूछा, “मीकायाह, क्या हम
रामात-जिलियाद पर हमला करें या मैं इस इरादे
से बाज़ रहूँ?” मीकायाह ने जवाब दिया, “उस
पर हमला करें, क्योंकि रब शहर को आपके
हवाले करके आपको कामयाबी बख़्शेगा।”
16बादशाह नाराज़ हुआ, “मुझे कितनी दफ़ा
आपको समझाना पड़ेगा कि आप क़सम खाकर
मुझे रब के नाम में सिर्फ़ वह कुछ सुनाएँ जो
हक़ीक़त है।”
17तब मीकायाह ने जवाब में कहा, “मुझे
तमाम इसराईल गल्लाबान से महरूम भेड़-
बकरियों की तरह पहाड़ों पर बिखरा हुआ नज़र
आया। फिर रब मुझसे हमकलाम हुआ, ‘इनका
कोई मालिक नहीं है। हर एक सलामती से अपने
घर वापस चला जाए’।”
18इसराईल के बादशाह ने यहूसफ़त से कहा,
“लो, क्या मैंने आपको नहीं बताया था कि यह
शख़्स हमेशा मेरे बारे में बुरी पेशगोइयाँ करता
है?”
19लेकिन मीकायाह ने अपनी बात जारी रखी,
“रब का फ़रमान सुनें! मैंने रब को उसके तख़्त
पर बैठे देखा। आसमान की पूरी फ़ौज उसके
दाएँ और बाएँ हाथ खड़ी थी। 20रब ने पूछा,
‘कौन अख़ियब को रामात-जिलियाद पर हमला
करने पर उकसाएगा ताकि वह वहाँ जाकर मर
जाए?’ एक ने यह मशवरा दिया, दूसरे ने वह।
21आख़िरकार एक रूह रब के सामने खड़ी हुई
और कहने लगी, ‘मैं उसे उकसाऊँगी।’ 22रब ने
सवाल किया, ‘किस तरह?’ रूह ने जवाब दिया,
‘मैं निकलकर उसके तमाम नबियों पर यों क़ाबू
पाऊँगी कि वह झूट ही बोलेंगे।’ रब ने फ़रमाया,
‘तू कामयाब होगी। जा और यों ही कर!’ 23ऐ
बादशाह, रब ने आप पर आफ़त लाने का फ़ैसला
कर लिया है, इसलिए उसने झूटी रूह को आपके
इन तमाम नबियों के मुँह में डाल दिया है।”
24तब सिदक़ियाह बिन कनाना ने आगे बढ़कर
मीकायाह के मुँह पर थप्पड़ मारा और बोला,
“रब का रूह किस तरह मुझसे निकल गया ताकि
तुझसे बात करे?” 25मीकायाह ने जवाब दिया,
“जिस दिन आप कभी इस कमरे में, कभी उसमें
खिसककर छुपने की कोशिश करेंगे उस दिन
आपको पता चलेगा।”
26तब अख़ियब बादशाह ने हुक्म दिया,
“मीकायाह को शहर पर मुक़र्रर अफ़सर अमून
और मेरे बेटे युआस के पास वापस भेज दो!
27उन्हें बता देना, ‘इस आदमी को जेल में
डालकर मेरे सहीह-सलामत वापस आने तक कम
से कम रोटी और पानी दिया करें’।” 28मीकायाह
बोला, “अगर आप सहीह-सलामत वापस आएँ
तो मतलब होगा कि रब ने मेरी मारिफ़त बात नहीं

की।” फिर वह साथ खड़े लोगों से मुख़ातिब हुआ,
“तमाम लोग ध्यान दें!”

अख़ियब रामात के क़रीब मर जाता है

29इसके बाद इसराईल का बादशाह
अख़ियब और यहूदाह का बादशाह यहू-
सफ़त मिलकर रामात-जिलियाद पर हमला करने
के लिए रवाना हुए। 30जंग से पहले अख़ियब ने
यहूसफ़त से कहा, “मैं अपना भेस बदलकर
मैदाने-जंग में जाऊँगा। लेकिन आप अपना
शाही लिबास न उतारें।” चुनाँचे इसराईल का
बादशाह अपना भेस बदलकर मैदाने-जंग में
आया। 31शाम के बादशाह ने रथों पर मुक़र्रर
अपने 32 अफ़सरों को हुक्म दिया था, “सिर्फ़
और सिर्फ़ बादशाह पर हमला करें। किसी और
से मत लड़ना, ख़ाह वह छोटा हो या बड़ा।”

32जब लड़ाई छिड़ गई तो रथों के अफ़सर
यहूसफ़त पर टूट पड़े, क्योंकि उन्होंने कहा,
“यक़ीनन यही इसराईल का बादशाह है!”
लेकिन जब यहूसफ़त मदद के लिए चिल्ला उठा
33तो दुश्मनों को मालूम हुआ कि यह अख़ियब
बादशाह नहीं है, और वह उसका ताक़्क़ुब करने
से बाज़ आए। 34लेकिन किसी ने ख़ास निशाना
बाँधे बग़ैर अपना तीर चलाया तो वह अख़ियब को
ऐसी जगह जा लगा जहाँ ज़िरा-बकतर का जोड़
था। बादशाह ने अपने रथबान को हुक्म दिया,
“रथ को मोड़कर मुझे मैदाने-जंग से बाहर ले
जाओ! मुझे चोट लग गई है।” 35लेकिन चूँकि
उस पूरे दिन शदीद क़िस्म की लड़ाई जारी रही,
इसलिए बादशाह अपने रथ में टेक लगाकर दुश्मन
के मुक़ाबिल खड़ा रहा। ख़ून ज़ख़्म से रथ के फ़र्श
पर टपकता रहा, और शाम के वक़्त अख़ियब मर
गया। 36जब सूरज ग़ुरूब होने लगा तो इसराईली
फ़ौज में बुलंद आवाज़ से एलान किया गया, “हर
एक अपने शहर और अपने इलाक़े में वापस चला
जाए!”

37बादशाह की मौत के बाद उस की लाश को
सामरिया लाकर दफ़नाया गया। 38शाही रथ को
सामरिया के एक तालाब के पास लाया गया जहाँ
कसबियों की नहाने की जगह थी। वहाँ उसे धोया
गया। कुत्ते भी आकर ख़ून को चाटने लगे। यों रब
का फ़रमान पूरा हुआ।

39बाक़ी जो कुछ अख़ियब की हुकूमत के
दौरान हुआ वह ‘शाहाने-इसराईल की तारीख़’ की
किताब में दर्ज है। उसमें बादशाह का तामीरकरदा
हाथीदाँत का महल और वह शहर बयान किए
गए हैं जिनकी क़िलाबंदी उसने की। 40जब वह
मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसका बेटा
अख़ज़ियाह तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह यहूसफ़त

41आसा का बेटा यहूसफ़त इसराईल के
बादशाह अख़ियब की हुकूमत के चौथे साल
में यहूदाह का बादशाह बना। 42उस वक़्त उस
की उम्र 35 साल थी। उसका दारुल-हुकूमत
यरूशलम रहा, और उस की हुकूमत का दौरानिया
25 साल था। माँ का नाम अज़ूबा बिंत सिलही
था। 43वह हर काम में अपने बाप आसा के नमूने
पर चलता और वह कुछ करता रहा जो रब को
पसंद था। लेकिन उसने भी ऊँचे मक़ामों के मंदिरों
को ख़त्म न किया। ऐसी जगहों पर जानवरों को
क़ुरबान करने और बख़ूर जलाने का इंतज़ाम जारी
रहा। 44यहूसफ़त और इसराईल के बादशाह के
दरमियान सुलह क़ायम रही।

45बाक़ी जो कुछ यहूसफ़त की हुकूमत के
दौरान हुआ वह ‘शाहाने-यहूदाह की तारीख़’ की
किताब में दर्ज है। उस की कामयाबियाँ और जंगें
सब उसमें बयान की गई हैं। 46जो जिस्मफ़रोश
मर्द और औरतें आसा के ज़माने में बच गए थे उन्हें
यहूसफ़त ने मुल्क में से मिटा दिया। 47उस वक़्त
मुल्के-अदोम का बादशाह न था बल्कि यहूदाह
का एक अफ़सर उस पर हुक्मरानी करता था।

48यहूसफ़त ने बहरी जहाज़ों का बेड़ा बनवाया
ताकि वह तिजारत करके ओफ़ीर से सोना लाएँ।
लेकिन वह कभी इस्तेमाल न हुए बल्कि अपनी ही
बंदरगाह अस्यून-जाबर में तबाह हो गए। 49तबाह

होने से पहले इसराईल के बादशाह अख़ज़ियाह
बिन अख़ियब ने यहूसफ़त से दरख़ास्त की थी
कि इसराईल के कुछ लोग जहाज़ों पर साथ चलें।
लेकिन यहूसफ़त ने इनकार किया था।
50जब यहूसफ़त मरकर अपने बापदादा से जा
मिला तो उसे यरूशलम के हिस्से में जो 'दाऊद
का शहर' कहलाता है ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया
गया। फिर उसका बेटा यहूराम तख़्तनशीन हुआ।

इसराईल का बादशाह अख़ज़ियाह

51अख़ियब का बेटा अख़ज़ियाह यहूदाह के
बादशाह यहूसफ़त की हुकूमत के 17वें साल में
इसराईल का बादशाह बना। वह दो साल तक
इसराईल पर हुक्मरान रहा। सामरिया उसका
दारुल-हुकूमत था। **52**जो कुछ उसने किया वह
रब को नापसंद था, क्योंकि वह अपने माँ-
बाप और यरुबियाम बिन नबात के नमूने पर
चलता रहा, उसी यरुबियाम के नमूने पर जिसने
इसराईल को गुनाह करने पर उकसाया था।
53अपने बाप की तरह बाल देवता की ख़िदमत
और पूजा करने से उसने रब, इसराईल के ख़ुदा
को तैश दिलाया।

2 सलातीन

अख़ज़ियाह के लिए इलियास का पैग़ाम

1 अख़ियब की मौत के बाद मोआब का
मुल्क बाग़ी होकर इसराईल के ताबे न
रहा।
2सामरिया के शाही महल के बालाख़ाने की
एक दीवार में जंगला लगा था। एक दिन
अख़ज़ियाह बादशाह जंगले के साथ लग गया तो
वह टूट गया और बादशाह ज़मीन पर गिरकर बहुत
ज़ख़मी हुआ। उसने क़ासिदों को फ़िलिस्ती शहर
अक़रून भेजकर कहा, "जाकर अक़रून के देवता
बाल-ज़बूब से पता करें कि मेरी सेहत बहाल
हो जाएगी कि नहीं।" 3तब रब के फ़रिश्ते ने
इलियास तिशबी को हुक्म दिया, "उठ, सामरिया
के बादशाह के क़ासिदों से मिलने जा। उनसे
पूछ, 'आप दरियाफ़्त करने के लिए अक़रून के
देवता बाल-ज़बूब के पास क्यों जा रहे हैं? क्या
इसराईल में कोई ख़ुदा नहीं है? 4चुनाँचे रब
फ़रमाता है कि ऐ अख़ज़ियाह, जिस बिस्तर पर तू
पड़ा है उससे तू कभी नहीं उठने का। तू यक़ीनन
मर जाएगा'।"
इलियास जाकर क़ासिदों से मिला। 5उस-
का पैग़ाम सुनकर क़ासिद बादशाह के पास वापस
गए। उसने पूछा, "आप इतनी जल्दी वापस क्यों
आए?" 6उन्होंने जवाब दिया, "एक आदमी
हमसे मिलने आया जिसने हमें आपके पास वापस
भेजकर आपको यह ख़बर पहुँचाने को कहा, 'रब
फ़रमाता है कि तू अपने बारे में दरियाफ़्त करने के
लिए अपने बंदों को अक़रून के देवता बाल-ज़बूब
के पास क्यों भेज रहा है? क्या इसराईल में कोई
ख़ुदा नहीं है? चूँकि तूने यह किया है इसलिए
जिस बिस्तर पर तू पड़ा है उससे तू कभी नहीं
उठने का। तू यक़ीनन मर जाएगा'।"
7अख़ज़ियाह ने पूछा, "यह किस क़िस्म का
आदमी था जिसने आपसे मिलकर आपको यह
बात बताई?" 8उन्होंने जवाब दिया, "उसके
लंबे बाल थे, और कमर में चमड़े की पेटी बँधी
हुई थी।" बादशाह बोल उठा, "यह तो इलियास
तिशबी था!"

आसमान से आग

9फ़ौरन उसने एक अफ़सर को 50 फ़ौजियों
समेत इलियास के पास भेज दिया। जब फ़ौजी
इलियास के पास पहुँचे तो वह एक पहाड़ी की
चोटी पर बैठा था। अफ़सर बोला, "ऐ मर्दे-
ख़ुदा, बादशाह कहते हैं कि नीचे उतर आएँ!"
10इलियास ने जवाब दिया, "अगर मैं मर्दे-ख़ुदा
हूँ तो आसमान से आग नाज़िल होकर आप और
आपके 50 फ़ौजियों को भस्म कर दे।" फ़ौरन
आसमान से आग नाज़िल हुई और अफ़सर को
उसके लोगों समेत भस्म कर दिया। 11बादशाह
ने एक और अफ़सर को इलियास के पास भेज
दिया। उसके साथ भी 50 फ़ौजी थे। उसके पास
पहुँचकर अफ़सर बोला, "ऐ मर्दे-ख़ुदा, बादशाह
कहते हैं कि फ़ौरन उतर आएँ।" 12इलियास ने

दुबारा पुकारा, “अगर मैं मर्दे-ख़ुदा हूँ तो आसमान
से आग नाज़िल होकर आप और आपके 50
फ़ौजियों को भस्म कर दे।” फ़ौरन आसमान से
अल्लाह की आग नाज़िल हुई और अफ़सर को
उसके 50 फ़ौजियों समेत भस्म कर दिया।
13फिर बादशाह ने तीसरी बार एक अफ़सर
को 50 फ़ौजियों के साथ इलियास के पास भेज
दिया। लेकिन यह अफ़सर इलियास के पास
ऊपर चढ़ आया और उसके सामने घुटने टेककर
इलतमास करने लगा, “ऐ मर्दे-ख़ुदा, मेरी और
अपने इन 50 ख़ादिमों की जानों की क़दर करें।
14देखें, आग ने आसमान से नाज़िल होकर पहले
दो अफ़सरों को उनके आदमियों समेत भस्म कर
दिया है। लेकिन बराहे-करम हमारे साथ ऐसा न
करें। मेरी जान की क़दर करें।”
15तब रब के फ़रिश्ते ने इलियास से कहा,
“इससे मत डरना बल्कि इसके साथ उतर जा!”
चुनाँचे इलियास उठा और अफ़सर के साथ
उतरकर बादशाह के पास गया। 16उसने बादशाह
से कहा, “रब फ़रमाता है, ‘तूने अपने क़ासिदों को
अक़रून के देवता बाल-ज़बूब से दरियाफ़्त करने
के लिए क्यों भेजा? क्या इसराईल में कोई ख़ुदा
नहीं है? चूँकि तूने यह किया है इसलिए जिस
बिस्तर पर तू पड़ा है उससे तू कभी नहीं उठने
का। तू यक़ीनन मर जाएगा’।”

अख़ज़ियाह की मौत

17वैसा ही हुआ जैसा रब ने इलियास की
मारिफ़त फ़रमाया था, अख़ज़ियाह मर गया।
चूँकि उसका बेटा नहीं था इसलिए उसका भाई
यहूराम यहूदाह के बादशाह यूराम बिन यहूसफ़त
की हुकूमत के दूसरे साल में तख़्तनशीन हुआ।
18बाक़ी जो कुछ अख़ज़ियाह की हुकूमत के
दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह
‘शाहाने-इसराईल की तारीख़’ की किताब में
बयान किया गया है।

इलियास को आसमान पर उठा लिया जाता है

2 फिर वह दिन आया जब रब ने इलियास
को आँधी में आसमान पर उठा लिया। उस
दिन इलियास और इलीशा जिलजाल शहर से
रवाना होकर सफ़र कर रहे थे। 2रास्ते में इलियास
इलीशा से कहने लगा, “यहीं ठहर जाएँ, क्योंकि
रब ने मुझे बैतेल भेजा है।” लेकिन इलीशा ने
इनकार किया, “रब और आपकी हयात की
क़सम, मैं आपको नहीं छोड़ूँगा।”
चुनाँचे दोनों चलते चलते बैतेल पहुँच गए।
3नबियों का जो गुरोह वहाँ रहता था वह शहर
से निकलकर उनसे मिलने आया। इलीशा से
मुख़ातिब होकर उन्होंने पूछा, “क्या आपको
मालूम है कि आज रब आपके आक़ा को आपके
पास से उठा ले जाएगा?” इलीशा ने जवाब
दिया, “जी, मुझे पता है। ख़ामोश!” 4दुबारा
इलियास अपने साथी से कहने लगा, “इलीशा,
यहीं ठहर जाएँ, क्योंकि रब ने मुझे यरीहू भेजा
है।” इलीशा ने जवाब दिया, “रब और आपकी
हयात की क़सम, मैं आपको नहीं छोड़ूँगा।”
चुनाँचे दोनों चलते चलते यरीहू पहुँच गए।
5नबियों का जो गुरोह वहाँ रहता था उसने
भी इलीशा के पास आकर उससे पूछा, “क्या
आपको मालूम है कि आज रब आपके आक़ा को
आपके पास से उठा ले जाएगा?” इलीशा ने
जवाब दिया, “जी, मुझे पता है। ख़ामोश!”
6इलियास तीसरी बार इलीशा से कहने लगा,
“यहीं ठहर जाएँ, क्योंकि रब ने मुझे दरियाए-
यरदन के पास भेजा है।” इलीशा ने जवाब दिया,
“रब और आपकी हयात की क़सम, मैं आपको
नहीं छोड़ूँगा।”
चुनाँचे दोनों आगे बढ़े। 7पचास नबी भी उनके
साथ चल पड़े। जब इलियास और इलीशा
दरियाए-यरदन के किनारे पर पहुँचे तो दूसरे उनसे
कुछ दूर खड़े हो गए। 8इलियास ने अपनी चादर
उतारकर उसे लपेट लिया और उसके साथ पानी

पर मारा। पानी तक़सीम हुआ, और दोनों आदमी
ख़ुश्क ज़मीन पर चलते हुए दरिया में से गुज़र गए।
9दूसरे किनारे पर पहुँचकर इलियास ने इलीशा
से कहा, "मेरे आपके पास से उठा लिए जाने से
पहले मुझे बताएँ कि आपके लिए क्या करूँ?"
इलीशा ने जवाब दिया, "मुझे आपकी रूह का
दुगना हिस्सा मीरास में मिले।"[a] 10इलियास
बोला, "जो दरख़ास्त आपने की है उसे पूरा करना
मुश्किल है। अगर आप मुझे उस वक़्त देख सकेंगे
जब मुझे आपके पास से उठा लिया जाएगा तो
मतलब होगा कि आपकी दरख़ास्त पूरी हो गई
है, वरना नहीं।" 11दोनों आपस में बातें करते हुए
चल रहे थे कि अचानक एक आतिशीं रथ नज़र
आया जिसे आतिशीं घोड़े खींच रहे थे। रथ ने दोनों
को अलग कर दिया, और इलियास को आँधी
में आसमान पर उठा लिया गया। 12यह देखकर
इलीशा चिल्ला उठा, "हाय मेरे बाप, मेरे बाप!
इसराईल के रथ और उसके घोड़े!"

इलियास इलीशा की नज़रों से ओझल हुआ
तो इलीशा ने ग़म के मारे अपने कपड़ों को फाड़
डाला। 13इलियास की चादर ज़मीन पर गिर गई
थी। इलीशा उसे उठाकर दरियाए-यरदन के पास
वापस चला। 14चादर को पानी पर मारकर वह
बोला, "रब और इलियास का ख़ुदा कहाँ है?"
पानी तक़सीम हुआ और वह बीच में से गुज़र
गया।

15यरीहू से आए नबी अब तक दरिया के
मग़रिबी किनारे पर खड़े थे। जब उन्होंने इलीशा
को अपने पास आते हुए देखा तो पुकार उठे,
"इलियास की रूह इलीशा पर ठहरी हुई है!" वह
उससे मिलने गए और औंधे मुँह उसके सामने
झुककर 16बोले, "हमारे 50 ताक़तवर आदमी
ख़िदमत के लिए हाज़िर हैं। अगर इजाज़त हो तो
हम उन्हें भेज देंगे ताकि वह आपके आक़ा को
तलाश करें। हो सकता है रब के रूह ने उसे उठाकर
किसी पहाड़ या वादी में रख छोड़ा हो।"

इलीशा ने मना करने की कोशिश की, "नहीं,
उन्हें मत भेजना।" 17लेकिन उन्होंने यहाँ तक
इसरार किया कि आख़िरकार वह मान गया और
कहा, "चलो, उन्हें भेज दें।" उन्होंने 50 आदमियों
को भेज दिया जो तीन दिन तक इलियास का
खोज लगाते रहे। लेकिन वह कहीं नज़र न आया।
18हिम्मत हारकर वह यरीहू वापस आए जहाँ
इलीशा ठहरा हुआ था। उसने कहा, "क्या मैंने
नहीं कहा था कि न जाएँ?"

इलीशा के मोजिज़े

19एक दिन यरीहू के आदमी इलीशा के पास
आकर शिकायत करने लगे, "हमारे आक़ा, आप
ख़ुद देख सकते हैं कि इस शहर में अच्छा गुज़ारा
होता है। लेकिन पानी ख़राब है, और नतीजे में
बहुत दफ़ा बच्चे माँ के पेट में ही मर जाते हैं।"

20इलीशा ने हुक्म दिया, "एक ग़ैरइस्ते-
मालशुदा बरतन में नमक डालकर उसे मेरे पास ले
आएँ।" जब बरतन उसके पास लाया गया 21तो
वह उसे लेकर शहर से निकला और चश्मे के पास
गया। वहाँ उसने नमक को पानी में डाल दिया
और साथ साथ कहा, "रब फ़रमाता है कि मैंने
इस पानी को बहाल कर दिया है। अब से यह
कभी मौत या बच्चों के ज़ाया होने का बाइस नहीं
बनेगा।"

22उसी लमहे पानी बहाल हो गया। इलीशा के
कहने के मुताबिक़ यह आज तक ठीक रहा है।

23यरीहू से इलीशा बैतेल को वापस चला गया।
जब वह रास्ते पर चलते हुए शहर से गुज़र रहा था
तो कुछ लड़के शहर से निकल आए और उसका
मज़ाक़ उड़ाकर चिल्लाने लगे, "ओए गंजे, इधर
आ! ओए गंजे, इधर आ!" 24इलीशा मुड़
गया और उन पर नज़र डालकर रब के नाम में
उन पर लानत भेजी। तब दो रीछनियाँ जंगल से
निकलकर लड़कों पर टूट पड़ीं और कुल 42
लड़कों को फाड़ डाला।

---

[a]इलीशा पहलौठे का हिस्सा माँग रहा है जो दूसरे वारिसों
की निसबत दुगना होता है।

25इलियास आगे निकला और चलते चलते
करमिल पहाड़ के पास आया। वहाँ से वापस
आकर सामरिया पहुँच गया।

इसराईल का बादशाह यूराम

3 अख़ियब का बेटा यूराम यहूदाह के
बादशाह यहूसफ़त के 18वें साल
में इसराईल का बादशाह बना। उस की
हुकूमत का दौरानिया 12 साल था और
उसका दारुल-हुकूमत सामरिया रहा। 2उस-
का चाल-चलन रब को नापसंद था, अगरचे
वह अपने माँ-बाप की निसबत कुछ बेहतर था।
क्योंकि उसने बाल देवता का वह सतून दूर कर
दिया जो उसके बाप ने बनवाया था। 3तो भी
वह यरुबियाम बिन नबात के उन गुनाहों के साथ
लिपटा रहा जो करने पर यरुबियाम ने इसराईल
को उकसाया था। वह कभी उनसे दूर न हुआ।

मोआब के ख़िलाफ़ जंग

4मोआब का बादशाह मेसा भेड़ें रखता था,
और सालाना उसे भेड़ के एक लाख बच्चे और
एक लाख मेंढे उनकी ऊन समेत इसराईल के
बादशाह को ख़राज के तौर पर अदा करने पड़ते
थे। 5लेकिन जब अख़ियब फ़ौत हुआ तो मोआब
का बादशाह ताबे न रहा।

6तब यूराम बादशाह ने सामरिया से निकलकर
तमाम इसराईलियों की भरती की। 7साथ साथ
उसने यहूदाह के बादशाह यहूसफ़त को इत्तला दी,
“मोआब का बादशाह सरकश हो गया है। क्या
आप मेरे साथ उससे लड़ने जाएंगे?” यहूसफ़त
ने जवाब भेजा, “जी, मैं आपके साथ जाऊँगा।
हम तो भाई हैं। मेरी क़ौम को अपनी क़ौम और
मेरे घोड़ों को अपने घोड़े समझें। 8हम किस रास्ते
से जाएँ?” यूराम ने जवाब दिया, “हम अदोम के
रेगिस्तान से होकर जाएंगे।”

9चुनाँचे इसराईल का बादशाह यहूदाह के
बादशाह के साथ मिलकर रवाना हुआ। मुल्के-
अदोम का बादशाह भी साथ था। अपने मनसूबे
के मुताबिक़ उन्होंने रेगिस्तान का रास्ता इख़्तियार
किया। लेकिन चूँकि वह सीधे नहीं बल्कि
मुतबादिल रास्ते से होकर गए इसलिए सात दिन
के सफ़र के बाद उनके पास पानी न रहा, न उनके
लिए, न जानवरों के लिए।

10इसराईल का बादशाह बोला, “हाय, रब हमें
इसलिए यहाँ बुला लाया है कि हम तीनों बादशाहों
को मोआब के हवाले करे।”

11लेकिन यहूसफ़त ने सवाल किया, “क्या
यहाँ रब का कोई नबी नहीं है जिसकी मारिफ़त
हम रब की मरज़ी जान सकें?” इसराईल के
बादशाह के किसी अफ़सर ने जवाब दिया, “एक
तो है, इलीशा बिन साफ़त जो इलियास का
क़रीबी शागिर्द था, वह उसके हाथों पर पानी
डालने की ख़िदमत अंजाम दिया करता था।”
12यहूसफ़त बोला, “रब का कलाम उसके पास
है।” तीनों बादशाह इलीशा के पास गए।

13लेकिन इलीशा ने इसराईल के बादशाह से
कहा, “मेरा आपके साथ क्या वास्ता? अगर
कोई बात हो तो अपने माँ-बाप के नबियों के पास
जाएँ।” इसराईल के बादशाह ने जवाब दिया,
“नहीं, हम इसलिए यहाँ आए हैं कि रब ही हम
तीनों को यहाँ बुला लाया है ताकि हमें मोआब
के हवाले करे।” 14इलीशा ने कहा, “रब्बुल-
अफ़वाज की हयात की क़सम जिसकी ख़िदमत
मैं करता हूँ, अगर यहूदाह का बादशाह यहाँ मौजूद
न होता तो फिर मैं आपका लिहाज़ न करता
बल्कि आपकी तरफ़ देखता भी न। लेकिन मैं
यहूसफ़त का ख़याल करता हूँ, 15इसलिए किसी
को बुलाएँ जो सरोद बजा सके।”

कोई सरोद बजाने लगा तो रब का हाथ इलीशा
पर आ ठहरा, 16और उसने एलान किया, “रब
फ़रमाता है कि इस वादी में हर तरफ़ गढ़ों की
खुदाई करो। 17गो तुम न हवा और न बारिश
देखोगे तो भी वादी पानी से भर जाएगी। पानी
इतना होगा कि तुम, तुम्हारे रेवड़ और बाक़ी तमाम
जानवर पी सकेंगे। 18लेकिन यह रब के नज़दीक
कुछ नहीं है, वह मोआब को भी तुम्हारे हवाले

कर देगा। 19तुम तमाम क़िलाबंद और मरकज़ी
शहरों पर फ़तह पाओगे। तुम मुल्क के तमाम
अच्छे दरख़्तों को काटकर तमाम चश्मों को बंद
करोगे और तमाम अच्छे खेतों को पत्थरों से ख़राब
करोगे।”

20अगली सुबह तक़रीबन उस वक़्त जब ग़ल्ला
की नज़र पेश की जाती है मुल्के-अदोम की तरफ़
से सैलाब आया, और नतीजे में वादी के तमाम
गढ़े पानी से भर गए।

मोआब पर फ़तह

21इतने में तमाम मोआबियों को पता चल गया
था कि तीनों बादशाह हमसे लड़ने आ रहे हैं। छोटों
से लेकर बड़ों तक जो भी अपनी तलवार चला
सकता था उसे बुलाकर सरहद की तरफ़ भेजा
गया। 22सुबह-सवेरे जब मोआबी लड़ने के लिए
तैयार हुए तो तुलूए-आफ़ताब की सुर्ख़ रौशनी में
वादी का पानी ख़ून की तरह सुर्ख़ नज़र आया।
23मोआबी चिल्लाने लगे, “यह तो ख़ून है! तीनों
बादशाहों ने आपस में लड़कर एक दूसरे को मार
दिया होगा। आओ, हम उनको लूट लें!”

24लेकिन जब वह इसराईली लशकरगाह के
क़रीब पहुँचे तो इसराईली उन पर टूट पड़े और उन्हें
मारकर भगा दिया। फिर उन्होंने उनके मुल्क में
दाख़िल होकर मोआब को शिकस्त दी। 25चलते
चलते उन्होंने तमाम शहरों को बरबाद किया। जब
भी वह किसी अच्छे खेत से गुज़रे तो हर सिपाही
ने एक पत्थर उस पर फेंक दिया। यों तमाम खेत
पत्थरों से भर गए। इसराईलियों ने तमाम चश्मों
को भी बंद कर दिया और हर अच्छे दरख़्त को
काट डाला।

आख़िर में सिर्फ़ क़ीर-हरासत क़ायम रहा।
लेकिन फ़लाख़न चलानेवाले उसका मुहासरा
करके उस पर हमला करने लगे। 26जब मोआब
के बादशाह ने जान लिया कि मैं शिकस्त खा
रहा हूँ तो उसने तलवारों से लैस 700 आदमियों
को अपने साथ लिया और अदोम के बादशाह
के क़रीब दुश्मन का मुहासरा तोड़कर निकलने
की कोशिश की, लेकिन बेफ़ायदा। 27फिर उसने
अपने पहलौठे को जिसे उसके बाद बादशाह
बनना था लेकर फ़सील पर अपने देवता के लिए
क़ुरबान करके जला दिया। तब इसराईलियों पर
बड़ा ग़ज़ब नाज़िल हुआ, और वह शहर को
छोड़कर अपने मुल्क वापस चले गए।

इलीशा और बेवा का तेल

4 एक दिन एक बेवा इलीशा के पास आई
जिसका शौहर जब ज़िंदा था नबियों के
गुरोह में शामिल था। बेवा चीख़ती-चिल्लाती
इलीशा से मुख़ातिब हुई, “आप जानते हैं कि मेरा
शौहर जो आपकी ख़िदमत करता था अल्लाह का
ख़ौफ़ मानता था। अब जब वह फ़ौत हो गया है
तो उसका एक साहूकार आकर धमकी दे रहा है
कि अगर क़र्ज़ अदा न किया गया तो मैं तेरे दो
बेटों को ग़ुलाम बनाकर ले जाऊँगा।”

2इलीशा ने पूछा, “मैं किस तरह आपकी मदद
करूँ? बताएँ, घर में आपके पास क्या है?” बेवा
ने जवाब दिया, “कुछ नहीं, सिर्फ़ ज़ैतून के तेल
का छोटा-सा बरतन।” 3इलीशा बोला, “जाएँ,
अपनी तमाम पड़ोसनों से ख़ाली बरतन माँगें।
लेकिन ध्यान रखें कि थोड़े बरतन न हों! 4फिर
अपने बेटों के साथ घर में जाकर दरवाज़े पर कुंडी
लगाएँ। तेल का अपना बरतन लेकर तमाम ख़ाली
बरतनों में तेल उंडेलती जाएँ। जब एक भर जाए
तो उसे एक तरफ़ रखकर दूसरे को भरना शुरू
करें।”

5बेवा ने जाकर ऐसा ही किया। वह अपने बेटों
के साथ घर में गई और दरवाज़े पर कुंडी लगाई।
बेटे उसे ख़ाली बरतन देते गए और माँ उनमें तेल
उंडेलती गई। 6बरतनों में तेल डलते डलते सब
लबालब भर गए। माँ बोली, “मुझे एक और
बरतन दे दो” तो एक लड़के ने जवाब दिया, “और
कोई नहीं है।” तब तेल का सिलसिला रुक गया।

7जब बेवा ने मर्दे-ख़ुदा के पास जाकर उसे
इत्तला दी तो इलीशा ने कहा, “अब जाकर तेल
को बेच दें और कर्ज़े के पैसे अदा करें। जो बच

जाए उसे आप और आपके बेटे अपनी ज़रूरियात
पूरी करने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं।

इलीशा शूनीम में लड़के को ज़िंदा कर देता है

8एक दिन इलीशा शूनीम गया। वहाँ एक अमीर
औरत रहती थी जिसने ज़बरदस्ती उसे अपने
घर बिठाकर खाना खिलाया। बाद में जब कभी
इलीशा वहाँ से गुज़रता तो वह खाने के लिए उस
औरत के घर ठहर जाता। 9एक दिन औरत ने
अपने शौहर से बात की, “मैंने जान लिया है कि
जो आदमी हमारे हाँ आता रहता है वह अल्लाह
का मुक़द्दस पैग़ंबर है। 10क्यों न हम उसके लिए
छत पर छोटा-सा कमरा बनाकर उसमें चारपाई,
मेज़, कुरसी और शमादान रखें। फिर जब भी वह
हमारे पास आए तो वह उसमें ठहर सकता है।”

11एक दिन जब इलीशा आया तो वह अपने
कमरे में जाकर बिस्तर पर लेट गया। 12उसने
अपने नौकर जैहाज़ी से कहा, “शूनीमी मेज़बान
को बुला लाओ।” जब वह आकर उसके सामने
खड़ी हुई 13तो इलीशा ने जैहाज़ी से कहा, “उसे
बता देना कि आपने हमारे लिए बहुत तकलीफ़
उठाई है। अब हम आपके लिए क्या कुछ करें?
क्या हम बादशाह या फ़ौज के कमाँडर से बात
करके आपकी सिफ़ारिश करें?” औरत ने जवाब
दिया, “नहीं, इसकी ज़रूरत नहीं। मैं अपने ही
लोगों के दरमियान रहती हूँ।”

14बाद में इलीशा ने जैहाज़ी से बात की, “हम
उसके लिए क्या करें?” जैहाज़ी ने जवाब दिया,
“एक बात तो है। उसका कोई बेटा नहीं, और
उसका शौहर काफ़ी बूढ़ा है।” 15इलीशा बोला,
“उसे वापस बुलाओ।” औरत वापस आकर
दरवाज़े में खड़ी हो गई। इलीशा ने उससे कहा,
16“अगले साल इसी वक़्त आपका अपना बेटा
आपकी गोद में होगा।” शूनीमी औरत ने एतराज़
किया, “नहीं नहीं, मेरे आक़ा। मर्दे-ख़ुदा ऐसी बातें
करके अपनी ख़ादिमा को झूटी तसल्ली मत दें।”

17लेकिन ऐसा ही हुआ। कुछ देर के बाद औरत
का पाँव भारी हो गया, और ऐन एक साल के बाद
उसके हाँ बेटा पैदा हुआ। सब कुछ वैसा ही हुआ
जैसा इलीशा ने कहा था। 18बच्चा परवान चढ़ा,
और एक दिन वह घर से निकलकर खेत में अपने
बाप के पास गया जो फ़सल की कटाई करनेवालों
के साथ काम कर रहा था। 19अचानक लड़का
चीख़ने लगा, “हाय मेरा सर, हाय मेरा सर!”
बाप ने किसी मुलाज़िम को बताया, “लड़के को
उठाकर माँ के पास ले जाओ।” 20नौकर उसे
उठाकर ले गया, और वह अपनी माँ की गोद में
बैठा रहा। लेकिन दोपहर को वह मर गया।

21माँ लड़के की लाश को लेकर छत पर चढ़
गई। मर्दे-ख़ुदा के कमरे में जाकर उसने उसे
उसके बिस्तर पर लिटा दिया। फिर दरवाज़े को
बंद करके वह बाहर निकली 22और अपने शौहर
को बुलवाकर कहा, “ज़रा एक नौकर और एक
गधी मेरे पास भेज दें। मुझे फ़ौरन मर्दे-ख़ुदा के
पास जाना है। मैं जल्द ही वापस आ जाऊँगी।”
23शौहर ने हैरान होकर पूछा, “आज उसके पास
क्यों जाना है? न तो नए चाँद की ईद है, न
सबत का दिन।” बीवी ने कहा, “सब ख़ैरियत
है।” 24गधी पर ज़ीन कसकर उसने नौकर को
हुक्म दिया, “गधी को तेज़ चला ताकि हम जल्दी
पहुँच जाएँ। जब मैं कहूँगी तब ही रुकना है, वरना
नहीं।”

25चलते चलते वह करमिल पहाड़ के पास
पहुँच गए जहाँ मर्दे-ख़ुदा इलीशा था। उसे दूर से
देखकर इलीशा जैहाज़ी से कहने लगा, “देखो,
शूनीम की औरत आ रही है! 26भागकर उसके
पास जाओ और पूछो कि क्या आप, आपका
शौहर और बच्चा ठीक हैं?” जैहाज़ी ने जाकर
उसका हाल पूछा तो औरत ने जवाब दिया, “जी,
सब ठीक है।” 27लेकिन ज्योंही वह पहाड़ के पास
पहुँच गई तो इलीशा के सामने गिरकर उसके पाँवों
से चिमट गई। यह देखकर जैहाज़ी उसे हटाने के
लिए क़रीब आया, लेकिन मर्दे-ख़ुदा बोला, “छोड़
दो! कोई बात इसे बहुत तकलीफ़ दे रही है,
लेकिन रब ने वजह मुझसे छुपाए रखी है। उसने
मुझे इसके बारे में कुछ नहीं बताया।”

28फिर शूनीमी औरत बोल उठी, “मेरे आक़ा,
क्या मैंने आपसे बेटे की दरख़ास्त की थी? क्या
मैंने नहीं कहा था कि मुझे ग़लत उम्मीद न
दिलाएँ?” 29तब इलीशा ने नौकर को हुक्म
दिया, “जैहाज़ी, सफ़र के लिए कमरबस्ता होकर
मेरी लाठी को ले लो और भागकर शूनीम पहुँचो।
अगर रास्ते में किसी से मिलो तो उसे सलाम तक
न करना, और अगर कोई सलाम कहे तो उसे
जवाब मत देना। जब वहाँ पहुँचोगे तो मेरी लाठी
लड़के के चेहरे पर रख देना।” 30लेकिन माँ ने
एतराज़ किया, “रब की और आपकी हयात की
क़सम, आपके बग़ैर मैं घर वापस नहीं जाऊँगी।”
चुनाँचे इलीशा भी उठा और औरत के पीछे पीछे
चल पड़ा। 31जैहाज़ी भाग भागकर उनसे पहले
पहुँच गया और लाठी को लड़के के चेहरे पर रख
दिया। लेकिन कुछ न हुआ। न कोई आवाज़ सुनाई
दी, न कोई हरकत हुई। वह इलीशा के पास वापस
आया और बोला, “लड़का अभी तक मुरदा ही
है।”

32जब इलीशा पहुँच गया तो लड़का अब तक
मुरदा हालत में उसके बिस्तर पर पड़ा था। 33वह
अकेला ही अंदर गया और दरवाज़े पर कुंडी
लगाकर रब से दुआ करने लगा। 34फिर वह
लड़के पर लेट गया, यों कि उसका मुँह बच्चे
के मुँह से, उस की आँखें बच्चे की आँखों से
और उसके हाथ बच्चे के हाथों से लग गए। और
ज्योंही वह लड़के पर झुक गया तो उसका जिस्म
गरम होने लगा। 35इलीशा खड़ा हुआ और घर में
इधर-उधर फिरने लगा। फिर वह एक और मरतबा
लड़के पर लेट गया। इस दफ़ा लड़के ने सात बार
छींकें मारकर अपनी आँखें खोल दीं।

36इलीशा ने जैहाज़ी को आवाज़ देकर कहा,
“शूनीमी औरत को बुला लाओ।” वह कमरे में
दाख़िल हुई तो इलीशा बोला, “आएँ, अपने बेटे
को उठाकर ले जाएँ।” 37वह आई और इलीशा
के सामने औंधे मुँह झुक गई, फिर अपने बेटे को
उठाकर कमरे से बाहर चली गई।

इलीशा ज़हरीले सालन को खाने के क़ाबिल बना देता है

38इलीशा जिलजाल को लौट आया। उन दिनों
में मुल्क काल की गिरिफ़्त में था। एक दिन जब
नबियों का गुरोह उसके सामने बैठा था तो उसने
अपने नौकर को हुक्म दिया, “बड़ी देग लेकर
नबियों के लिए कुछ पका लो।”

39एक आदमी बाहर निकलकर खुले मैदान में
कद्दू ढूँडने गया। कहीं एक बेल नज़र आई जिस
पर कद्दू जैसी कोई सब्ज़ी लगी थी। इन कद्दुओं
से अपनी चादर भरकर वह वापस आया और उन्हें
काट काटकर देग में डाल दिया, हालाँकि किसी
को भी मालूम नहीं था कि क्या चीज़ है।

40सालन पककर नबियों में तक़सीम हुआ।
लेकिन उसे चखते ही वह चीख़ने लगे, “मर्दे-ख़ुदा,
सालन में ज़हर है! इसे खाकर बंदा मर जाएगा।”
वह उसे बिलकुल न खा सके। 41इलीशा ने हुक्म
दिया, “मुझे कुछ मैदा लाकर दें।” फिर उसे देग
में डालकर बोला, “अब इसे लोगों को खिला दें।”
अब खाना खाने के क़ाबिल था और उन्हें नुक़सान
न पहुँचा सका।

100 आदमियों के लिए खाना

42एक और मौक़े पर किसी आदमी ने बाल-
सलीसा से आकर मर्दे-ख़ुदा को नई फ़सल के जौ
की 20 रोटियाँ और कुछ अनाज दे दिया। इलीशा
ने जैहाज़ी को हुक्म दिया, “इसे लोगों को खिला
दो।”

43जैहाज़ी हैरान होकर बोला, “यह कैसे
मुमकिन है? यह तो 100 आदमियों के लिए
काफ़ी नहीं है।” लेकिन इलीशा ने इसरार किया,
“इसे लोगों में तक़सीम कर दो, क्योंकि रब
फ़रमाता है कि वह जी भरकर खाएँगे बल्कि कुछ
बच भी जाएगा।”

44और ऐसा ही हुआ। जब नौकर ने आदमियों
में खाना तक़सीम किया तो उन्होंने जी भरकर
खाया, बल्कि कुछ खाना बच भी गया। वैसा ही
हुआ जैसा रब ने फ़रमाया था।

नामान की शफ़ा

5 उस वक़्त शाम की फ़ौज का कमाँडर
नामान था। बादशाह उस की बहुत क़दर
करता था, और दूसरे भी उस की ख़ास इज़्ज़त
करते थे, क्योंकि रब ने उस की मारिफ़त शाम
के दुश्मनों पर फ़तह बख़्शी थी। लेकिन ज़बरदस्त
फ़ौजी होने के बावुजूद वह संगीन जिल्दी बीमारी
का मरीज़ था। 2नामान के घर में एक इसराईली
लड़की रहती थी। किसी वक़्त जब शाम के
फ़ौजियों ने इसराईल पर छापा मारा था तो वह
उसे गिरिफ़्तार करके यहाँ ले आए थे। अब लड़की
नामान की बीवी की ख़िदमत करती थी। 3एक
दिन उसने अपनी मालिकन से बात की, “काश
मेरा आक़ा उस नबी से मिलने जाता जो सामरिया
में रहता है। वह उसे ज़रूर शफ़ा देता।”

4यह सुनकर नामान ने बादशाह के पास जाकर
लड़की की बात दोहराई। 5बादशाह बोला, “ज़रूर
जाएँ और उस नबी से मिलें। मैं आपके हाथ
इसराईल के बादशाह को सिफ़ारिशी ख़त भेज
दूँगा।” चुनाँचे नामान रवाना हुआ। उसके पास
तक़रीबन 340 किलोग्राम चाँदी, 68 किलोग्राम
सोना और 10 क़ीमती सूट थे। 6जो ख़त वह साथ
लेकर गया उसमें लिखा था, “जो आदमी आपको
यह ख़त पहुँचा रहा है वह मेरा ख़ादिम नामान है।
मैंने उसे आपके पास भेजा है ताकि आप उसे उस
की जिल्दी बीमारी से शफ़ा दें।”

7ख़त पढ़कर यूराम ने रंजिश के मारे अपने
कपड़े फाड़े और पुकारा, “इस आदमी ने मरीज़
को मेरे पास भेज दिया है ताकि मैं उसे शफ़ा दूँ!
क्या मैं अल्लाह हूँ कि किसी को जान से मारूँ या
उसे ज़िंदा करूँ? अब ग़ौर करें और देखें कि वह
किस तरह मेरे साथ झगड़ने का मौक़ा ढूँड रहा
है।”

8जब इलीशा को ख़बर मिली कि बादशाह ने
घबराकर अपने कपड़े फाड़ लिए हैं तो उसने यूराम
को पैग़ाम भेजा, “आपने अपने कपड़े क्यों फाड़
लिए? आदमी को मेरे पास भेज दें तो वह जान
लेगा कि इसराईल में नबी है।”

9तब नामान अपने रथ पर सवार इलीशा के
घर के दरवाज़े पर पहुँच गया। 10इलीशा ख़ुद न
निकला बल्कि किसी को बाहर भेजकर इत्तला
दी, “जाकर सात बार दरियाए-यरदन में नहा लें।
फिर आपके जिस्म को शफ़ा मिलेगी और आप
पाक-साफ़ हो जाएंगे।”

11यह सुनकर नामान को ग़ुस्सा आया और वह
यह कहकर चला गया, “मैंने सोचा कि वह कम
अज़ कम बाहर आकर मुझसे मिलेगा। होना यह
चाहिए था कि वह मेरे सामने खड़े होकर रब अपने
ख़ुदा का नाम पुकारता और अपना हाथ बीमार
जगह के ऊपर हिला हिलाकर मुझे शफ़ा देता।
12क्या दमिश्क़ के दरिया अबाना और फ़रफ़र
तमाम इसराईली दरियाओं से बेहतर नहीं हैं?
अगर नहाने की ज़रूरत है तो मैं क्यों न उनमें
नहाकर पाक-साफ़ हो जाऊँ?”

यों बुड़बुड़ाते हुए वह बड़े ग़ुस्से में चला गया।
13लेकिन उसके मुलाज़िमों ने उसे समझाने की
कोशिश की। “हमारे आक़ा, अगर नबी आपसे
किसी मुश्किल काम का तक़ाज़ा करता तो क्या
आप वह करने के लिए तैयार न होते? अब जबकि
उसने सिर्फ़ यह कहा है कि नहाकर पाक-साफ़
हो जाएँ तो आपको यह ज़रूर करना चाहिए।”
14आख़िरकार नामान मान गया और यरदन की
वादी में उतर गया। दरिया पर पहुँचकर उसने सात
बार उसमें डुबकी लगाई और वाक़ई उसका जिस्म
लड़के के जिस्म जैसा सेहतमंद और पाक-साफ़
हो गया।

15तब नामान अपने तमाम मुलाज़िमों के साथ
मर्दे-ख़ुदा के पास वापस गया। उसके सामने खड़े
होकर उसने कहा, “अब मैं जान गया हूँ कि
इसराईल के ख़ुदा के सिवा पूरी दुनिया में ख़ुदा
नहीं है। ज़रा अपने ख़ादिम से तोहफ़ा क़बूल
करें।” 16लेकिन इलीशा ने इनकार किया, “रब
की हयात की क़सम जिसकी ख़िदमत मैं करता

हूँ, मैं कुछ नहीं लूँगा।” नामान इसरार करता रहा, तो भी वह कुछ लेने के लिए तैयार न हुआ।

17आख़िरकार नामान मान गया। उसने कहा, “ठीक है, लेकिन मुझे ज़रा एक काम करने की इजाज़त दें। मैं यहाँ से इतनी मिट्टी अपने घर ले जाना चाहता हूँ जितनी दो ख़च्चर उठाकर ले जा सकते हैं। क्योंकि आइंदा मैं उस पर रब को भस्म होनेवाली और ज़बह की क़ुरबानियाँ चढ़ाना चाहता हूँ। अब से मैं किसी और माबूद को क़ुरबानियाँ पेश नहीं करूँगा। 18लेकिन रब मुझे एक बात के लिए मुआफ़ करे। जब मेरा बादशाह पूजा करने के लिए रिम्मोन के मंदिर में जाता है तो मेरे बाज़ू का सहारा लेता है। यों मुझे भी उसके साथ झुक जाना पड़ता है जब वह बुत के सामने औंधे मुँह झुक जाता है। रब मेरी यह हरकत मुआफ़ कर दे।”

19इलीशा ने जवाब दिया, “सलामती से जाएँ।”

जैहाज़ी का लालच

नामान रवाना हुआ 20तो कुछ देर के बाद इलीशा का नौकर जैहाज़ी सोचने लगा, “मेरे आक़ा ने शाम के इस बंदे नामान पर हद से ज़्यादा नरमदिली का इज़हार किया है। चाहिए तो था कि वह उसके तोहफ़े क़बूल कर लेता। रब की हयात की क़सम, मैं उसके पीछे दौड़कर कुछ न कुछ उससे ले लूँगा।”

21चुनाँचे जैहाज़ी नामान के पीछे भागा। जब नामान ने उसे देखा तो वह रथ से उतरकर जैहाज़ी से मिलने गया और पूछा, “क्या सब ख़ैरियत है?” 22जैहाज़ी ने जवाब दिया, “जी, सब ख़ैरियत है। मेरे आक़ा ने मुझे आपको इत्तला देने भेजा है कि अभी अभी नबियों के गुरोह के दो जवान इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े से मेरे पास आए हैं। मेहरबानी करके उन्हें 34 किलोग्राम चाँदी और दो क़ीमती सूट दे दें।” 23नामान बोला, “ज़रूर, बल्कि 68 किलोग्राम चाँदी ले लें।” इस बात पर वह बज़िद रहा। उसने 68 किलोग्राम चाँदी बोरियों में लपेट ली, दो सूट चुन लिए और सब कुछ अपने दो नौकरों को दे दिया ताकि वह सामान जैहाज़ी के आगे आगे ले चलें।

24जब वह उस पहाड़ के दामन में पहुँचे जहाँ इलीशा रहता था तो जैहाज़ी ने सामान नौकरों से लेकर अपने घर में रख छोड़ा, फिर दोनों को रुख़सत कर दिया। 25फिर वह जाकर इलीशा के सामने खड़ा हो गया। इलीशा ने पूछा, “जैहाज़ी, तुम कहाँ से आए हो?” उसने जवाब दिया, “मैं कहीं नहीं गया था।”

26लेकिन इलीशा ने एतराज़ किया, “क्या मेरी रूह तुम्हारे साथ नहीं थी जब नामान अपने रथ से उतरकर तुमसे मिलने आया? क्या आज चाँदी, कपड़े, ज़ैतून और अंगूर के बाग़, भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल, नौकर और नौकरानियाँ हासिल करने का वक़्त था? 27अब नामान की जिल्दी बीमारी हमेशा तक तुम्हें और तुम्हारी औलाद को लगी रहेगी।”

जब जैहाज़ी कमरे से निकला तो जिल्दी बीमारी उसे लग चुकी थी। वह बर्फ़ की तरह सफ़ेद हो गया था।

कुल्हाड़ी का लोहा पानी की सतह पर तैरता है

6 एक दिन कुछ नबी इलीशा के पास आकर शिकायत करने लगे, “जिस तंग जगह पर हम आपके पास आकर ठहरे हैं उसमें हमारे लिए रहना मुश्किल है। 2क्यों न हम दरियाए-यरदन पर जाएँ और हर आदमी वहाँ से शहतीर ले आए ताकि हम रहने की नई जगह बना सकें।” इलीशा बोला, “ठीक है, जाएँ।” 3किसी ने गुज़ारिश की, “बराहे-करम हमारे साथ चलें।” नबी राज़ी होकर 4उनके साथ रवाना हुआ।

दरियाए-यरदन के पास पहुँचते ही वह दरख़्त काटने लगे। 5काटते काटते अचानक किसी की कुल्हाड़ी का लोहा पानी में गिर गया। वह चिल्ला उठा, “हाय मेरे आक़ा! यह मेरा नहीं था, मैंने तो उसे किसी से उधार लिया था।”

6इलीशा ने सवाल किया, “लोहा कहाँ पानी में
गिरा?” आदमी ने उसे जगह दिखाई तो नबी ने
किसी दरख़्त से शाख़ काटकर पानी में फेंक दी।
अचानक लोहा पानी की सतह पर आकर तैरने
लगा। 7इलीशा बोला, “इसे पानी से निकाल
लो!” आदमी ने अपना हाथ बढ़ाकर लोहे को
पकड़ लिया।

शाम के जंगी मनसूबे इलीशा के बाइस नाकाम रहते हैं

8शाम और इसराईल के दरमियान जंग थी।
जब कभी बादशाह अपने अफ़सरों से मशवरा
करके कहता, “हम फ़ुलाँ फ़ुलाँ जगह अपनी
लशकरगाह लगा लेंगे” 9तो फ़ौरन मर्दे-ख़ुदा
इसराईल के बादशाह को आगाह करता, “फ़ुलाँ
जगह से मत गुज़रना, क्योंकि शाम के फ़ौजी वहाँ
घात में बैठे हैं।” 10तब इसराईल का बादशाह
अपने लोगों को मज़कूरा जगह पर भेजता और
वहाँ से गुज़रने से मुहतात रहता था। ऐसा न सिर्फ़
एक या दो दफ़ा बल्कि कई मरतबा हुआ।

11आख़िरकार शाम के बादशाह ने बहुत रंजीदा
होकर अपने अफ़सरों को बुलाया और पूछा,
“क्या कोई मुझे बता सकता है कि हममें से
कौन इसराईल के बादशाह का साथ देता है?”
12किसी अफ़सर ने जवाब दिया, “मेरे आक़ा
और बादशाह, हममें से कोई नहीं है। मसला
यह है कि इसराईल का नबी इलीशा इसराईल
के बादशाह को वह बातें भी बता देता है जो
आप अपने सोने के कमरे में बयान करते हैं।”
13बादशाह ने हुक्म दिया, “जाएँ, उसका पता
करें ताकि हम अपने फ़ौजियों को भेजकर उसे
पकड़ लें।”

बादशाह को इत्तला दी गई कि इलीशा दूतैन
नामी शहर में है। 14उसने फ़ौरन एक बड़ी फ़ौज
रथों और घोड़ों समेत वहाँ भेज दी। उन्होंने रात
के वक़्त पहुँचकर शहर को घेर लिया। 15जब
इलीशा का नौकर सुबह-सवेरे जाग उठा और घर
से निकला तो क्या देखता है कि पूरा शहर एक
बड़ी फ़ौज से घिरा हुआ है जिसमें रथ और घोड़े
भी शामिल हैं। उसने इलीशा से कहा, “हाय मेरे
आक़ा, हम क्या करें?” 16लेकिन इलीशा ने उसे
तसल्ली दी, “डरो मत! जो हमारे साथ हैं वह
उनकी निसबत कहीं ज़्यादा हैं जो दुश्मन के साथ
हैं।” 17फिर उसने दुआ की, “ऐ रब, नौकर की
आँखें खोल ताकि वह देख सके।” रब ने इलीशा
के नौकर की आँखें खोल दीं तो उसने देखा कि
पहाड़ पर इलीशा के इर्दगिर्द आतिशीं घोड़े और
रथ फैले हुए हैं।

18जब दुश्मन इलीशा की तरफ़ बढ़ने लगा तो
उसने दुआ की, “ऐ रब, इनको अंधा कर दे!”
रब ने इलीशा की सुनी और उन्हें अंधा कर दिया।
19फिर इलीशा उनके पास गया और कहा, “यह
रास्ता सहीह नहीं। आप ग़लत शहर के पास पहुँच
गए हैं। मेरे पीछे हो लें तो मैं आपको उस आदमी
के पास पहुँचा दूँगा जिसे आप ढूँड रहे हैं।” यह
कहकर वह उन्हें सामरिया ले गया।

20जब वह शहर में दाख़िल हुए तो इलीशा ने
दुआ की, “ऐ रब, फ़ौजियों की आँखें खोल दे
ताकि वह देख सकें।” तब रब ने उनकी आँखें
खोल दीं, और उन्हें मालूम हुआ कि हम सामरिया
में फँस गए हैं।

21जब इसराईल के बादशाह ने अपने दुश्मनों
को देखा तो उसने इलीशा से पूछा, “मेरे बाप,
क्या मैं उन्हें मार दूँ? क्या मैं उन्हें मार दूँ?”
22लेकिन इलीशा ने मना किया, “ऐसा मत करें।
क्या आप अपने जंगी क़ैदियों को मार देते हैं?
नहीं, उन्हें खाना खिलाएँ, पानी पिलाएँ और फिर
उनके मालिक के पास वापस भेज दें।”

23चुनाँचे बादशाह ने उनके लिए बड़ी ज़ियाफ़त
का एहतमाम किया और खाने-पीने से फ़ारिग़ होने
पर उन्हें उनके मालिक के पास वापस भेज दिया।
इसके बाद इसराईल पर शाम की तरफ़ से लूट-
मार के छापे बंद हो गए।

सामरिया का मुहासरा

24कुछ देर के बाद शाम का बादशाह बिन-
हदद अपनी पूरी फ़ौज जमा करके इसराईल पर
चढ़ आया और सामरिया का मुहासरा किया।
25नतीजे में शहर में शदीद काल पड़ा। आख़िर में
गधे का सर चाँदी के 80 सिक्कों में और कबूतर
की मुट्ठी-भर बीट चाँदी के 5 सिक्कों में मिलती
थी।

26एक दिन इसराईल का बादशाह यूराम शहर
की फ़सील पर सैर कर रहा था तो एक औरत
ने उससे इलतमास की, “ऐ मेरे आक़ा और
बादशाह, मेरी मदद कीजिए।” 27बादशाह ने
जवाब दिया, “अगर रब आपकी मदद नहीं करता
तो मैं किस तरह आपकी मदद करूँ? न मैं गाहने
की जगह जाकर आपको अनाज दे सकता हूँ, न
अंगूर का रस निकालने की जगह जाकर आपको
रस पहुँचा सकता हूँ। 28फिर भी मुझे बताएँ,
मसला क्या है?” औरत बोली, “इस औरत ने
मुझसे कहा था, ‘आएँ, आज आप अपने बेटे को
क़ुरबान करें ताकि हम उसे खा लें, तो फिर कल
हम मेरे बेटे को खा लेंगे।’ 29चुनाँचे हमने मेरे बेटे
को पकाकर खा लिया। अगले दिन मैंने उससे
कहा, ‘अब अपने बेटे को दे दें ताकि उसे भी खा
लें।’ लेकिन उसने उसे छुपाए रखा।”

30यह सुनकर बादशाह ने रंजिश के मारे अपने
कपड़े फाड़ डाले। चूँकि वह अभी तक फ़सील पर
खड़ा था इसलिए सब लोगों को नज़र आया कि
कपड़ों के नीचे वह टाट पहने हुए था। 31उसने
पुकारा, “अल्लाह मुझे सख़्त सज़ा दे अगर मैं
इलीशा बिन साफ़त का आज ही सर क़लम न
करूँ!”

32उसने एक आदमी को इलीशा के पास भेजा
और ख़ुद भी उसके पीछे चल पड़ा। इलीशा उस
वक़्त घर में था, और शहर के बुज़ुर्ग उसके पास
बैठे थे। बादशाह का क़ासिद अभी रास्ते में था कि
इलीशा बुज़ुर्गों से कहने लगा, “अब ध्यान करें,
इस क़ातिल बादशाह ने किसी को मेरा सर क़लम
करने के लिए भेज दिया है। उसे अंदर आने न दें
बल्कि दरवाज़े पर कुंडी लगाएँ। उसके पीछे पीछे
उसके मालिक के क़दमों की आहट भी सुनाई दे
रही है।”

33इलीशा अभी बात कर ही रहा था कि क़ासिद
पहुँच गया और उसके पीछे बादशाह भी। बादशाह
बोला, “रब ही ने हमें इस मुसीबत में फँसा दिया
है। मैं मज़ीद उस की मदद के इंतज़ार में क्यों
रहूँ?”

7 तब इलीशा बोला, “रब का फ़रमान सुनें!
रब फ़रमाता है कि कल इसी वक़्त शहर के
दरवाज़े पर साढ़े 5 किलोग्राम बेहतरीन मैदा और
11 किलोग्राम जौ चाँदी के एक सिक्के के लिए
बिकेगा।” 2जिस अफ़सर के बाज़ू का सहारा
बादशाह लेता था वह मर्दे-ख़ुदा की बात सुनकर
बोल उठा, “यह नामुमकिन है, ख़ाह रब आसमान
के दरीचे क्यों न खोल दे।” इलीशा ने जवाब
दिया, “आप अपनी आँखों से इसका मुशाहदा
करेंगे, लेकिन ख़ुद उसमें से कुछ न खाएँगे।”

शाम के फ़ौजी फ़रार हो जाते हैं

3शहर से बाहर दरवाज़े के क़रीब कोढ़ के चार
मरीज़ बैठे थे। अब यह आदमी एक दूसरे से कहने
लगे, “हम यहाँ बैठकर मौत का इंतज़ार क्यों
करें? 4शहर में काल है। अगर उसमें जाएँ तो भूके
मर जाएंगे, लेकिन यहाँ रहने से भी कोई फ़रक़
नहीं पड़ता। तो क्यों न हम शाम की लशकरगाह में
जाकर अपने आपको उनके हवाले करें। अगर वह
हमें ज़िंदा रहने दें तो अच्छा रहेगा, और अगर वह
हमें क़त्ल भी कर दें तो कोई फ़रक़ नहीं पड़ेगा।
यहाँ रहकर भी हमें मरना ही है।”

5शाम के धुँधलके में वह रवाना हुए। लेकिन
जब लशकरगाह के किनारे तक पहुँचे तो एक
भी आदमी नज़र न आया। 6क्योंकि रब ने शाम
के फ़ौजियों को रथों, घोड़ों और एक बड़ी फ़ौज
का शोर सुना दिया था। वह एक दूसरे से कहने
लगे, “इसराईल के बादशाह ने हित्ती और मिसरी
बादशाहों को उजरत पर बुलाया ताकि वह हम पर

हमला करें!” 7डर के मारे वह शाम के धुँधलके में फ़रार हो गए थे। उनके ख़ैमे, घोड़े, गधे बल्कि पूरी लशकरगाह पीछे रह गई थी जबकि वह अपनी जान बचाने के लिए भाग गए थे।

8जब कोढ़ी लशकरगाह में दाख़िल हुए तो उन्होंने एक ख़ैमे में जाकर जी भरकर खाना खाया और मै पी। फिर उन्होंने सोना, चाँदी और कपड़े उठाकर कहीं छुपा दिए। वह वापस आकर किसी और ख़ैमे में गए और उसका सामान जमा करके
उसे भी छुपा दिया। 9लेकिन फिर वह आपस में कहने लगे, “जो कुछ हम कर रहे हैं ठीक नहीं। आज ख़ुशी का दिन है, और हम यह ख़ुशख़बरी दूसरों तक नहीं पहुँचा रहे। अगर हम सुबह तक इंतज़ार करें तो क़ुसूरवार ठहरेंगे। आएँ, हम फ़ौरन वापस जाकर बादशाह के घराने को इत्तला दें।”

10चुनाँचे वह शहर के दरवाज़े के पास गए और पहरेदारों को आवाज़ देकर उन्हें सब कुछ सुनाया, “हम शाम की लशकरगाह में गए तो वहाँ न कोई दिखाई दिया, न किसी की आवाज़ सुनाई दी। घोड़े और गधे बँधे हुए थे और ख़ैमे तरतीब से खड़े थे, लेकिन आदमी एक भी मौजूद नहीं था!”

11दरवाज़े के पहरेदारों ने आवाज़ देकर दूसरों को ख़बर पहुँचाई तो शहर के अंदर बादशाह के
घराने को इत्तला दी गई। 12गो रात का वक़्त
था तो भी बादशाह ने उठकर अपने अफ़सरों को बुलाया और कहा, “मैं आपको बताता हूँ कि शाम के फ़ौजी क्या कर रहे हैं। वह तो ख़ूब जानते हैं कि हम भूके मर रहे हैं। अब वह अपनी लशकरगाह को छोड़कर खुले मैदान में छुप गए हैं, क्योंकि वह समझते हैं कि इसराईली ख़ाली लशकरगाह को देखकर शहर से ज़रूर निकलेंगे और फिर हम उन्हें ज़िंदा पकड़कर शहर में दाख़िल हो जाएंगे।”

13लेकिन एक अफ़सर ने मशवरा दिया, “बेहतर है कि हम चंद एक आदमियों को पाँच बचे हुए घोड़ों के साथ लशकरगाह में भेजें। अगर वह पकड़े जाएँ तो कोई बात नहीं। क्योंकि अगर वह यहाँ रहें तो फिर भी उन्हें हमारे साथ मरना ही है।”

14चुनाँचे दो रथों को घोड़ों समेत तैयार किया गया, और बादशाह ने उन्हें शाम की लशकरगाह में भेज दिया। रथबानों को उसने हुक्म दिया, “जाएँ
और पता करें कि क्या हुआ है।” 15वह रवाना
हुए और शाम के फ़ौजियों के पीछे पीछे चलने लगे। रास्ते में हर तरफ़ कपड़े और सामान बिखरा पड़ा था, क्योंकि फ़ौजियों ने भागते भागते सब कुछ फेंककर रास्ते में छोड़ दिया था। इसराईली रथसवार दरियाए-यरदन तक पहुँचे और फिर बादशाह के पास वापस आकर सब कुछ कह सुनाया।

16तब सामरिया के बाशिंदे शहर से निकल आए और शाम की लशकरगाह में जाकर सब कुछ लूट लिया। यों वह कुछ पूरा हुआ जो रब ने फ़रमाया था कि साढ़े 5 किलोग्राम बेहतरीन मैदा और 11 किलोग्राम जौ चाँदी के एक सिक्के के लिए बिकेगा।

17जिस अफ़सर के बाज़ू का सहारा बादशाह लेता था उसे उसने दरवाज़े की निगरानी करने के लिए भेज दिया था। लेकिन जब लोग बाहर निकले तो अफ़सर उनकी ज़द में आकर उनके पैरों तले कुचला गया। यों वैसा ही हुआ जैसा मर्दे-ख़ुदा ने उस वक़्त कहा था जब बादशाह उसके
घर आया था। 18क्योंकि इलीशा ने बादशाह को बताया था, “कल इसी वक़्त शहर के दरवाज़े पर साढ़े 5 किलोग्राम बेहतरीन मैदा और 11 किलोग्राम जौ चाँदी के एक सिक्के के लिए
बिकेगा।” 19अफ़सर ने एतराज़ किया था, “यह नामुमकिन है, ख़ाह रब आसमान के दरीचे क्यों न खोल दे।” और मर्दे-ख़ुदा ने जवाब दिया था, “आप अपनी आँखों से इसका मुशाहदा करेंगे, लेकिन ख़ुद उसमें से कुछ नहीं खाएँगे।”

20अब यह पेशगोई पूरी हुई, क्योंकि बेकाबू लोगों ने उसे शहर के दरवाज़े पर पाँवों तले कुचल दिया, और वह मर गया।

यूराम बादशाह शूनीमी औरत की ज़मीन वापस कर देता है

8 एक दिन इलीशा ने उस औरत को जिसका बेटा उसने ज़िंदा किया था मशवरा दिया, “अपने ख़ानदान को लेकर आरिज़ी तौर पर बैरूने-मुल्क चली जाएँ, क्योंकि रब ने हुक्म दिया है कि मुल्क में सात साल तक काल होगा।”
2शूनीम की औरत ने मर्दे-ख़ुदा की बात मान ली। अपने ख़ानदान को लेकर वह चली गई और सात साल फ़िलिस्ती मुल्क में रही। 3सात साल गुज़र
गए तो वह उस मुल्क से वापस आई। लेकिन किसी और ने उसके घर और ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर रखा था, इसलिए वह मदद के लिए बादशाह के पास गई।

4ऐन उस वक़्त जब वह दरबार में पहुँची तो बादशाह मर्दे-ख़ुदा इलीशा के नौकर जैहाज़ी से गुफ़्तगू कर रहा था। बादशाह ने उससे दरख़ास्त की थी, “मुझे वह तमाम बड़े काम सुना दो जो
इलीशा ने किए हैं।” 5और अब जब जैहाज़ी
सुना रहा था कि इलीशा ने मुरदा लड़के को किस तरह ज़िंदा कर दिया तो उस की माँ अंदर आकर बादशाह से इलतमास करने लगी, “घर और ज़मीन वापस मिलने में मेरी मदद कीजिए।” उसे देखकर जैहाज़ी ने बादशाह से कहा, “मेरे आक़ा और बादशाह, यह वही औरत है और यह उसका वही बेटा है जिसे इलीशा ने ज़िंदा कर दिया
था।” 6बादशाह ने औरत से सवाल किया, “क्या
यह सहीह है?” औरत ने तसदीक़ में उसे दुबारा सब कुछ सुनाया। तब उसने औरत का मामला किसी दरबारी अफ़सर के सुपुर्द करके हुक्म दिया, “ध्यान दें कि इसे पूरी मिलकियत वापस मिल जाए! और जितने पैसे क़ब्ज़ा करनेवाला औरत की ग़ैरमौजूदगी में ज़मीन की फ़सलों से कमा सका वह भी औरत को दे दिए जाएँ।”

बिन-हदद की मौत की पेशगोई

7एक दिन इलीशा दमिश्क़ आया। उस वक़्त शाम का बादशाह बिन-हदद बीमार था। जब उसे इत्तला मिली कि मर्दे-ख़ुदा आया है
8तो उसने अपने अफ़सर हज़ाएल को हुक्म दिया, “मर्दे-ख़ुदा के लिए तोहफ़ा लेकर उसे मिलने जाएँ। वह रब से दरियाफ़्त करे कि क्या मैं बीमारी से शफ़ा पाऊँगा या नहीं?”

9हज़ाएल 40 ऊँटों पर दमिश्क़ की बेहतरीन पैदावार लादकर इलीशा से मिलने गया। उसके पास पहुँचकर वह उसके सामने खड़ा हुआ और कहा, “आपके बेटे शाम के बादशाह बिन-हदद ने मुझे आपके पास भेजा है। वह यह जानना चाहता है कि क्या मैं अपनी बीमारी से शफ़ा पाऊँगा या नहीं?”

10इलीशा ने जवाब दिया, “जाएँ और उसे इत्तला दें, ‘आप ज़रूर शफ़ा पाएँगे।’ लेकिन रब ने मुझ पर ज़ाहिर किया है कि वह हक़ीक़त
में मर जाएगा।” 11इलीशा ख़ामोश हो गया
और टिकटिकी बाँधकर बड़ी देर तक उसे घूरता
रहा, फिर रोने लगा। 12हज़ाएल ने पूछा, “मेरे
आक़ा, आप क्यों रो रहे हैं?” इलीशा ने जवाब दिया, “मुझे मालूम है कि आप इसराईलियों को कितना नुक़सान पहुँचाएँगे। आप उनकी क़िलाबंद आबादियों को आग लगाकर उनके जवानों को तलवार से क़त्ल कर देंगे, उनके छोटे बच्चों को ज़मीन पर पटख़ देंगे और उनकी हामिला औरतों
के पेट चीर डालेंगे।” 13हज़ाएल बोला, “मुझ
जैसे कुत्ते की क्या हैसियत है कि इतना बड़ा काम करूँ?” इलीशा ने कहा, “रब ने मुझे दिखा दिया है कि आप शाम के बादशाह बन जाएंगे।”

14इसके बाद हज़ाएल चला गया और अपने मालिक के पास वापस आया। बादशाह ने पूछा, “इलीशा ने आपको क्या बताया?” हज़ाएल ने जवाब दिया, “उसने मुझे यक़ीन दिलाया कि आप
शफ़ा पाएँगे।” 15लेकिन अगले दिन हज़ाएल
ने कम्बल लेकर पानी में भिगो दिया और उसे बादशाह के मुँह पर रख दिया। बादशाह का साँस रुक गया और वह मर गया। फिर हज़ाएल तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह यहूराम

16यहूराम बिन यहूसफ़त इसराईल के बादशाह
यूराम की हुकूमत के पाँचवें साल में यहूदाह का
बादशाह बना। शुरू में वह अपने बाप के साथ
हुकूमत करता था। 17यहूराम 32 साल की उम्र
में बादशाह बना, और वह यरूशलम में रहकर 8
साल तक हुकूमत करता रहा। 18उस की शादी
इसराईल के बादशाह अख़ियब की बेटी से हुई
थी, और वह इसराईल के बादशाहों और ख़ासकर
अख़ियब के ख़ानदान के बुरे नमूने पर चलता रहा।
उसका चाल-चलन रब को नापसंद था। 19तो भी
वह अपने ख़ादिम दाऊद की ख़ातिर यहूदाह को
तबाह नहीं करना चाहता था, क्योंकि उसने दाऊद
से वादा किया था कि तेरा और तेरी औलाद का
चराग़ हमेशा तक जलता रहेगा।

20यहूराम की हुकूमत के दौरान अदोमियों ने
बग़ावत की और यहूदाह की हुकूमत को रद्द करके
अपना बादशाह मुक़र्रर किया। 21तब यहूराम
अपने तमाम रथों को लेकर सईर के क़रीब आया।
जब जंग छिड़ गई तो अदोमियों ने उसे और
उसके रथों पर मुक़र्रर अफ़सरों को घेर लिया।
रात को बादशाह घेरनेवालों की सफ़ों को तोड़ने
में कामयाब हो गया, लेकिन उसके फ़ौजी उसे
छोड़कर अपने अपने घर भाग गए। 22इस वजह
से मुल्के-अदोम आज तक दुबारा यहूदाह की
हुकूमत के तहत नहीं आया। उसी वक़्त लिबना
शहर भी सरकश होकर ख़ुदमुख़तार हो गया।

23बाक़ी जो कुछ यहूराम की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उसने किया वह ‘शाहाने-यहूदा
की तारीख़’ की किताब में बयान किया गया है।
24जब यहूराम मरकर अपने बापदादा से जा मिला
तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में जो ‘दाऊद
का शहर’ कहलाता है ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया
गया। फिर उसका बेटा अख़ज़ियाह तख़्तनशीन
हुआ।

यहूदाह का बादशाह अख़ज़ियाह

25अख़ज़ियाह बिन यहूराम इसराईल के
बादशाह यूराम बिन अख़ियब की हुकूमत के 12वें
साल में यहूदाह का बादशाह बना। 26वह 22
साल की उम्र में तख़्तनशीन हुआ और यरूशलम
में रहकर एक साल बादशाह रहा। उस की माँ
अतलियाह इसराईल के बादशाह उमरी की पोती
थी। 27अख़ज़ियाह भी अख़ियब के ख़ानदान के
बुरे नमूने पर चल पड़ा। अख़ियब के घराने की
तरह उसका चाल-चलन रब को नापसंद था।
वजह यह थी कि उसका रिश्ता अख़ियब के
ख़ानदान के साथ बँध गया था।

28एक दिन अख़ज़ियाह बादशाह यूराम बिन
अख़ियब के साथ मिलकर रामात-जिलियाद गया
ताकि शाम के बादशाह हज़ाएल से लड़े। जब
जंग छिड़ गई तो यूराम शाम के फ़ौजियों के
हाथों ज़ख़मी हुआ 29और मैदाने-जंग को छोड़कर
यज्रएल वापस आया ताकि ज़ख़्म भर जाएँ। जब
वह वहाँ ठहरा हुआ था तो यहूदाह का बादशाह
अख़ज़ियाह बिन यहूराम उसका हाल पूछने के
लिए यज्रएल आया।

इलीशा याहू को मसह करता है

9 एक दिन इलीशा नबी ने नबियों के गुरोह
में से एक को बुलाकर कहा, “सफ़र के
लिए कमरबस्ता होकर रामात-जिलियाद के लिए
रवाना हो जाएँ। ज़ैतून के तेल की यह कुप्पी अपने
साथ ले जाएँ। 2वहाँ पहुँचकर याहू बिन यहूसफ़त
बिन निमसी को तलाश करें। जब उससे मुलाक़ात
हो तो उसे उसके साथियों से अलग करके किसी
अंदरूनी कमरे में ले जाएँ। 3वहाँ कुप्पी लेकर याहू
के सर पर तेल उंडेल दें और कहें, ‘रब फ़रमाता
है कि मैं तुझे तेल से मसह करके इसराईल का
बादशाह बना देता हूँ।’ इसके बाद देर न करें बल्कि
फ़ौरन दरवाज़े को खोलकर भाग जाएँ!”

4चुनाँचे जवान नबी रामात-जिलियाद के लिए
रवाना हुआ। 5जब वहाँ पहुँचा तो फ़ौजी अफ़सर
मिलकर बैठे हुए थे। वह उनके क़रीब गया और

बोला, "मेरे पास कमाँडर के लिए पैग़ाम है।"
याहू ने सवाल किया, "हममें से किसके लिए?"
नबी ने जवाब दिया, "आप ही के लिए।"

6याहू खड़ा हुआ और उसके साथ घर में गया।
वहाँ नबी ने याहू के सर पर तेल उंडेलकर कहा,
"रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है, 'मैंने तुझे
मसह करके अपनी क़ौम का बादशाह बना दिया
है। 7तुझे अपने मालिक अख़ियब के पूरे ख़ानदान
को हलाक करना है। यों मैं उन नबियों का इंतक़ाम
लूँगा जो मेरी ख़िदमत करते हुए शहीद हो गए हैं।
हाँ, मैं रब के उन तमाम ख़ादिमों का बदला लूँगा
जिन्हें ईज़बिल ने क़त्ल किया है। 8अख़ियब का
पूरा घराना तबाह हो जाएगा। मैं उसके ख़ानदान
के हर मर्द को हलाक कर दूँगा, ख़ाह वह बालिग़
हो या बच्चा। 9मेरा अख़ियब के ख़ानदान के साथ
वही सुलूक होगा जो मैंने यरुबियाम बिन नबात
और बाशा बिन अख़ियाह के ख़ानदानों के साथ
किया। 10जहाँ तक ईज़बिल का ताल्लुक़ है उसे
दफ़नाया नहीं जाएगा बल्कि कुत्ते उसे यज्रएल
की ज़मीन पर खा जाएंगे'।" यह कहकर नबी
दरवाज़ा खोलकर भाग गया।

11जब याहू निकलकर अपने साथी अफ़-
सरों के पास वापस आया तो उन्होंने पूछा, "क्या
सब ख़ैरियत है? यह दीवाना आपसे क्या चाहता
था?" याहू बोला, "ख़ैर, आप तो इस क़िस्म
के लोगों को जानते हैं कि किस तरह की गप्पें
हाँकते हैं।" 12लेकिन उसके साथी इस जवाब
से मुतमइन न हुए, "झूट! सहीह बात बताएँ।"
फिर याहू ने उन्हें खुलकर बात बताई, "आदमी ने
कहा, 'रब फ़रमाता है कि मैंने तुझे मसह करके
इसराईल का बादशाह बना दिया है'।"

13यह सुनकर अफ़सरों ने जल्दी जल्दी अपनी
चादरों को उतारकर उसके सामने सीढ़ियों पर
बिछा दिया। फिर वह नरसिंगा बजा बजाकर नारा
लगाने लगे, "याहू बादशाह ज़िंदाबाद!"

यूराम और अख़ज़ियाह का अंजाम

14याहू बिन यहूसफ़त बिन निमसी फ़ौरन
यूराम बादशाह को तख़्त से उतारने के मनसूबे
बाँधने लगा। यूराम उस वक़्त पूरी इसराईली फ़ौज
समेत रामात-जिलियाद के क़रीब दमिश्क़ के
बादशाह हज़ाएल से लड़ रहा था। लेकिन शहर का
दिफ़ा करते करते 15बादशाह शाम के फ़ौजियों
के हाथों ज़ख़मी हो गया था और मैदाने-जंग को
छोड़कर यज्रएल वापस आया था ताकि ज़ख़म
भर जाएँ। अब याहू ने अपने साथी अफ़सरों से
कहा, "अगर आप वाक़ई मेरे साथ हैं तो किसी
को भी शहर से निकलने न दें, वरना ख़तरा है कि
कोई यज्रएल जाकर बादशाह को इत्तला दे दे।"
16फिर वह रथ पर सवार होकर यज्रएल चला गया
जहाँ यूराम आराम कर रहा था। उस वक़्त यहूदाह
का बादशाह अख़ज़ियाह भी यूराम से मिलने के
लिए यज्रएल आया हुआ था।

17जब यज्रएल के बुर्ज पर खड़े पहरेदार ने
याहू के ग़ोल को शहर की तरफ़ आते हुए देखा
तो उसने बादशाह को इत्तला दी। यूराम ने हुक्म
दिया, "एक घुड़सवार को उनकी तरफ़ भेजकर
उनसे मालूम करें कि सब ख़ैरियत है या नहीं।"
18घुड़सवार शहर से निकला और याहू के पास
आकर कहा, "बादशाह पूछते हैं कि क्या सब
ख़ैरियत है?" याहू ने जवाब दिया, "इससे
आपका क्या वास्ता? आएँ, मेरे पीछे हो लें।"
बुर्ज पर के पहरेदार ने बादशाह को इत्तला दी,
"क़ासिद उन तक पहुँच गया है, लेकिन वह वापस
नहीं आ रहा।"

19तब बादशाह ने एक और घुड़सवार को
भेज दिया। याहू के पास पहुँचकर उसने भी
कहा, "बादशाह पूछते हैं कि क्या सब ख़ैरियत
है?" याहू ने जवाब दिया, "इससे आपका क्या
वास्ता? मेरे पीछे हो लें।" 20बुर्ज पर के पहरेदार
ने यह देखकर बादशाह को इत्तला दी, "हमारा
क़ासिद उन तक पहुँच गया है, लेकिन यह भी
वापस नहीं आ रहा। ऐसा लगता है कि उनका

राहनुमा याहू बिन निमसी है, क्योंकि वह अपने
रथ को दीवाने की तरह चला रहा है।”
21यूराम ने हुक्म दिया, “मेरे रथ को तैयार
करो!” फिर वह और यहूदाह का बादशाह अपने
अपने रथ में सवार होकर याहू से मिलने के लिए
शहर से निकले। उनकी मुलाक़ात उस बाग़ के
पास हुई जो नबोत यज्रएली से छीन लिया गया
था। 22याहू को पहचानकर यूराम ने पूछा, “याहू,
क्या सब ख़ैरियत है?” याहू बोला, “ख़ैरियत
कैसे हो सकती है जब तेरी माँ ईज़बिल की
बुतपरस्ती और जादूगरी हर तरफ़ फैली हुई है?”
23यूराम बादशाह चिल्ला उठा, “ऐ अख़ज़ियाह,
ग़द्दारी!” और मुड़कर भागने लगा।
24याहू ने फ़ौरन अपनी कमान खींचकर तीर
चलाया जो सीधा यूराम के कंधों के दरमियान यों
लगा कि दिल में से गुज़र गया। बादशाह एकदम
अपने रथ में गिर पड़ा। 25याहू ने अपने साथवाले
अफ़सर बिदक़र से कहा, “इसकी लाश उठाकर
उस बाग़ में फेंक दें जो नबोत यज्रएली से छीन
लिया गया था। क्योंकि वह दिन याद करें जब
हम दोनों अपने रथों को इसके बाप अख़ियब के
पीछे चला रहे थे और रब ने अख़ियब के बारे में
एलान किया, 26‘यक़ीन जान कि कल नबोत
और उसके बेटों का क़त्ल मुझसे छुपा न रहा।
इसका मुआवज़ा मैं तुझे नबोत की इसी ज़मीन पर
दूँगा।’ चुनाँचे अब यूराम को उठाकर उस ज़मीन
पर फेंक दें ताकि रब की बात पूरी हो जाए।”
27जब यहूदाह के बादशाह अख़ज़ियाह ने यह
देखा तो वह बैत-गान का रास्ता लेकर फ़रार हो
गया। याहू उसका ताक़्क़ुब करते हुए चिल्लाया,
“उसे भी मार दो!” इबलियाम के क़रीब
जहाँ रास्ता जूर की तरफ़ चढ़ता है अख़ज़ियाह
अपने रथ में चलते चलते ज़ख़मी हुआ। वह बच
तो निकला लेकिन मजिद्दो पहुँचकर मर गया।
28उसके मुलाज़िम लाश को रथ पर रखकर
यरूशलम लाए। वहाँ उसे यरूशलम के उस हिस्से
में जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है ख़ानदानी
क़ब्र में दफ़नाया गया। 29अख़ज़ियाह यूराम बिन
अख़ियब की हुकूमत के 11वें साल में यहूदाह का
बादशाह बन गया था।

ईज़बिल का अंजाम

30इसके बाद याहू यज्रएल चला गया। जब
ईज़बिल को इत्तला मिली तो उसने अपनी आँखों
में सुरमा लगाकर अपने बालों को ख़ूबसूरती
से सँवारा और फिर खिड़की से बाहर झाँकने
लगी। 31जब याहू महल के गेट में दाख़िल हुआ
तो ईज़बिल चिल्लाई, “ऐ ज़िमरी जिसने अपने
मालिक को क़त्ल कर दिया है, क्या सब ख़ैरियत
है?” 32याहू ने ऊपर देखकर आवाज़ दी, “कौन
मेरे साथ है, कौन?” दो या तीन ख़्वाजासराओं
ने खिड़की से बाहर देखकर उस पर नज़र डाली
33तो याहू ने उन्हें हुक्म दिया, “उसे नीचे फेंक
दो!”
तब उन्होंने मलिका को नीचे फेंक दिया। वह
इतने ज़ोर से ज़मीन पर गिरी कि ख़ून के छींटे
दीवार और घोड़ों पर पड़ गए। याहू और उसके
लोगों ने अपने रथों को उसके ऊपर से गुज़रने
दिया। 34फिर याहू महल में दाख़िल हुआ और
खाया और पिया। इसके बाद उसने हुक्म दिया,
“कोई जाए और उस लानती औरत को दफ़न
करे, क्योंकि वह बादशाह की बेटी थी।”
35लेकिन जब मुलाज़िम उसे दफ़न करने के
लिए बाहर निकले तो देखा कि सिर्फ़ उस की
खोपड़ी, हाथ और पाँव बाक़ी रह गए हैं। 36याहू
के पास वापस जाकर उन्होंने उसे आगाह किया।
तब उसने कहा, “अब सब कुछ पूरा हुआ है
जो रब ने अपने ख़ादिम इलियास तिशबी की
मारिफ़त फ़रमाया था, ‘यज्रएल की ज़मीन पर
कुत्ते ईज़बिल की लाश खा जाएंगे। 37उस की
लाश यज्रएल की ज़मीन पर गोबर की तरह पड़ी
रहेगी ताकि कोई यक़ीन से न कह सके कि वह
कहाँ है’।”

याहू अख़ियब की औलाद को हलाक करता है

10 सामरिया में अख़ियब के 70 बेटे थे।
अब याहू ने ख़त लिखकर सामरिया
भेज दिए। यज़्रएल के अफ़सरों, शहर के बुज़ुर्गों
और अख़ियब के बेटों के सरपरस्तों को यह ख़त
मिल गए, और उनमें ज़ैल की ख़बर लिखी थी,
2“आपके मालिक के बेटे आपके पास हैं।
आप क़िलाबंद शहर में रहते हैं, और आपके
पास हथियार, रथ और घोड़े भी हैं। इसलिए
मैं आपको चैलेंज देता हूँ कि यह ख़त पढ़ते ही
3अपने मालिक के सबसे अच्छे और लायक़ बेटे
को चुनकर उसे उसके बाप के तख़्त पर बिठा दें।
फिर अपने मालिक के ख़ानदान के लिए लड़ें!”
4लेकिन सामरिया के बुज़ुर्ग बेहद सहम गए
और आपस में कहने लगे, “अगर दो बादशाह
उसका मुक़ाबला न कर सके तो हम क्या कर
सकते हैं?” 5इसलिए महल के इंचार्ज, सामरिया
पर मुक़र्रर अफ़सर, शहर के बुज़ुर्गों और अख़ियब
के बेटों के सरपरस्तों ने याहू को पैग़ाम भेजा,
“हम आपके ख़ादिम हैं और जो कुछ आप
कहेंगे हम करने के लिए तैयार हैं। हम किसी
को बादशाह मुक़र्रर नहीं करेंगे। जो कुछ आप
मुनासिब समझते हैं वह करें।”
6यह पढ़कर याहू ने एक और ख़त लिख-
कर सामरिया भेजा। उसमें लिखा था, “अगर
आप वाक़ई मेरे साथ हैं और मेरे ताबे रहना चाहते
हैं तो अपने मालिक के बेटों के सरों को काटकर
कल इस वक़्त तक यज़्रएल में मेरे पास ले आएँ।”
क्योंकि अख़ियब के 70 बेटे सामरिया के बड़ों के
पास रहकर परवरिश पा रहे थे। 7जब ख़त उनके
पास पहुँच गया तो इन आदमियों ने 70 के 70
शहज़ादों को ज़बह कर दिया और उनके सरों को
टोकरों में रखकर यज़्रएल में याहू के पास भेज
दिया।
8एक क़ासिद ने याहू के पास आकर इत्तला
दी, “वह बादशाह के बेटों के सर लेकर आए
हैं।” तब याहू ने हुक्म दिया, “शहर के दरवाज़े
पर उनके दो ढेर लगा दो और उन्हें सुबह तक
वहीं रहने दो।” 9अगले दिन याहू सुबह के वक़्त
निकला और दरवाज़े के पास खड़े होकर लोगों
से मुख़ातिब हुआ, “यूराम की मौत के नाते से
आप बेइलज़ाम हैं। मैं ही ने अपने मालिक के
ख़िलाफ़ मनसूबे बाँधकर उसे मार डाला। लेकिन
किसने इन तमाम बेटों का सर क़लम कर दिया?
10चुनाँचे आज जान लें कि जो कुछ भी रब ने
अख़ियब और उसके ख़ानदान के बारे में फ़रमाया
है वह पूरा हो जाएगा। जिसका एलान रब ने अपने
ख़ादिम इलियास की मारिफ़त किया है वह उसने
कर लिया है।” 11इसके बाद याहू ने यज़्रएल में
रहनेवाले अख़ियब के बाक़ी तमाम रिश्तेदारों, बड़े
अफ़सरों, क़रीबी दोस्तों और पुजारियों को हलाक
कर दिया। एक भी न बचा।
12फिर वह सामरिया के लिए रवाना हुआ।
रास्ते में जब बैत-इक़द-रोईम के क़रीब पहुँच
गया 13तो उस की मुलाक़ात यहूदाह के बादशाह
अख़ज़ियाह के चंद एक रिश्तेदारों से हुई। याहू
ने पूछा, “आप कौन हैं?” उन्होंने जवाब दिया,
“हम अख़ज़ियाह के रिश्तेदार हैं और सामरिया
का सफ़र कर रहे हैं। वहाँ हम बादशाह और
मलिका के बेटों से मिलना चाहते हैं।” 14तब याहू
ने हुक्म दिया, “उन्हें ज़िंदा पकड़ो!” उन्होंने उन्हें
ज़िंदा पकड़कर बैत-इक़द के हौज़ के पास मार
डाला। 42 आदमियों में से एक भी न बचा।
15उस जगह को छोड़कर याहू आगे निकला।
चलते चलते उस की मुलाक़ात यूनदब बिन रैकाब
से हुई जो उससे मिलने आ रहा था। याहू ने
सलाम करके कहा, “क्या आपका दिल मेरे बारे
में मुख़लिस है जैसा कि मेरा दिल आपके बारे
में है?” यूनदब ने जवाब दिया, “जी हाँ।” याहू
बोला, “अगर ऐसा है, तो मेरे साथ हाथ मिलाएँ।”
यूनदब ने उसके साथ हाथ मिलाया तो याहू ने
उसे अपने रथ पर सवार होने दिया। 16फिर याहू
ने कहा, “आएँ मेरे साथ और मेरी रब के लिए

जिद्दो-जहद देखें।" चुनाँचे यूनदब याहू के साथ
सामरिया चला गया।
17सामरिया पहुँचकर याहू ने अख़ियब के
ख़ानदान के जितने अफ़राद अब तक बच गए थे
हलाक कर दिए। जिस तरह रब ने इलियास को
फ़रमाया था उसी तरह अख़ियब का पूरा घराना
मिट गया।

याहू बाल के तमाम पुजारियों को क़त्ल करता है

18इसके बाद याहू ने तमाम लोगों को जमा
करके एलान किया, "अख़ियब ने बाल देवता
की परस्तिश थोड़ी की है। मैं कहीं ज़्यादा उस
की पूजा करूँगा! 19अब जाकर बाल के तमाम
नबियों, ख़िदमतगुज़ारों और पुजारियों को बुला
लाएँ। ख़याल करें कि एक भी दूर न रहे, क्योंकि
मैं बाल को बड़ी क़ुरबानी पेश करूँगा। जो भी आने
से इनकार करे उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी।"
इस तरह याहू ने बाल के ख़िदमतगुज़ारों के
लिए जाल बिछा दिया ताकि वह उसमें फँसकर
हलाक हो जाएँ। 20-21उसने पूरे इसराईल में
क़ासिद भेजकर एलान किया, "बाल देवता के
लिए मुक़द्दस ईद मनाएँ!" चुनाँचे बाल के तमाम
पुजारी आए, और एक भी इजतिमा से दूर न रहा।
इतने जमा हुए कि बाल का मंदिर एक सिरे से
दूसरे सिरे तक भर गया।
22याहू ने ईद के कपड़ों के इंचार्ज को हुक्म
दिया, "बाल के तमाम पुजारियों को ईद के
लिबास दे देना।" चुनाँचे सबको लिबास दिए
गए। 23फिर याहू और यूनदब बिन रैकाब बाल
के मंदिर में दाख़िल हुए, और याहू ने बाल
के ख़िदमतगुज़ारों से कहा, "ध्यान दें कि यहाँ
आपके साथ रब का कोई ख़ादिम मौजूद न हो।
सिर्फ़ बाल के पुजारी होने चाहिएँ।"
24दोनों आदमी सामने गए ताकि ज़बह की और
भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ पेश करें। इतने में याहू
के 80 आदमी बाहर मंदिर के इर्दगिर्द खड़े हो
गए। याहू ने उन्हें हुक्म देकर कहा था, "ख़बरदार!
जो पूजा करनेवालों में से किसी को बचने दे उसे
सज़ाए-मौत दी जाएगी।"
25ज्योंही याहू भस्म होनेवाली क़ुरबानी को
चढ़ाने से फ़ारिग़ हुआ तो उसने अपने मुहाफ़िज़ों
और अफ़सरों को हुक्म दिया, "अंदर जाकर
सबको मार देना। एक भी बचने न पाए।" वह
दाख़िल हुए और अपनी तलवारों को खींचकर
सबको मार डाला। लाशों को उन्होंने बाहर फेंक
दिया। फिर वह मंदिर के सबसे अंदरवाले कमरे में
गए 26जहाँ बुत था। उसे उन्होंने निकालकर जला
दिया 27और बाल का सतून भी टुकड़े टुकड़े कर
दिया। बाल का पूरा मंदिर ढा दिया गया, और वह
जगह बैतुल-ख़ला बन गई। आज तक वह इसके
लिए इस्तेमाल होता है।

याहू की हुकूमत

28इस तरह याहू ने इसराईल में बाल देवता की
पूजा ख़त्म कर दी। 29तो भी वह यरुबियाम बिन
नबात के उन गुनाहों से बाज़ न आया जो करने पर
यरुबियाम ने इसराईल को उकसाया था। बैतेल
और दान में क़ायम सोने के बछड़ों की पूजा ख़त्म
न हुई।
30एक दिन रब ने याहू से कहा, "जो कुछ मुझे
पसंद है उसे तूने अच्छी तरह सरंजाम दिया है,
क्योंकि तूने अख़ियब के घराने के साथ सब कुछ
किया है जो मेरी मरज़ी थी। इस वजह से तेरी
औलाद चौथी पुश्त तक इसराईल पर हुकूमत
करती रहेगी।" 31लेकिन याहू ने पूरे दिल से
रब इसराईल के ख़ुदा की शरीअत के मुताबिक़
ज़िंदगी न गुज़ारी। वह उन गुनाहों से बाज़ आने
के लिए तैयार नहीं था जो करने पर यरुबियाम ने
इसराईल को उकसाया था।
32याहू की हुकूमत के दौरान रब इसराईल
का इलाक़ा छोटा करने लगा। शाम के बादशाह
हज़ाएल ने इसराईल के उस पूरे इलाक़े पर क़ब्ज़ा
कर लिया 33जो दरियाए-यरदन के मशरिक़
में था। जद, रूबिन और मनस्सी का इलाक़ा
जिलियाद बसन से लेकर दरियाए-अरनोन पर

वाक़े अरोईर तक शाम के बादशाह के हाथ में आ गया।

34बाक़ी जो कुछ याहू की हुकूमत के दौरान हुआ, जो उसने किया और जो कामयाबियाँ उसे हासिल हुईं वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख़' की किताब में बयान किया गया है। 35-36वह 28 साल सामरिया में बादशाह रहा। वहाँ वह दफ़न भी हुआ। जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसका बेटा यहुआख़ज़ तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह में अतलियाह की ज़ालिमाना हुकूमत

11 जब अख़ज़ियाह की माँ अतलियाह को मालूम हुआ कि मेरा बेटा मर गया है तो वह अख़ज़ियाह की तमाम औलाद को क़त्ल करने लगी। 2लेकिन अख़ज़ियाह की सगी बहन यहूसबा ने अख़ज़ियाह के छोटे बेटे युआस को चुपके से उन शहज़ादों में से निकाल लिया जिन्हें क़त्ल करना था और उसे उस की दाया के साथ एक स्टोर में छुपा दिया जिसमें बिस्तर वग़ैरा महफ़ूज़ रखे जाते थे। इस तरह वह बच गया। 3बाद में युआस को रब के घर में मुंतक़िल किया गया जहाँ वह उसके साथ उन छः सालों के दौरान छुपा रहा जब अतलियाह मलिका थी।

अतलियाह का अंजाम और युआस बादशाह बन जाता है

4अतलियाह की हुकूमत के सातवें साल में यहोयदा इमाम ने सौ सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सरों, कारी नामी दस्तों और शाही मुहाफ़िज़ों को रब के घर में बुला लिया। वहाँ उसने क़सम खिलाकर उनसे अहद बाँधा। फिर उसने बादशाह के बेटे युआस को पेश करके 5उन्हें हिदायत की, "अगले सबत के दिन आपमें से जितने ड्यूटी पर आएँगे वह तीन हिस्सों में तक़सीम हो जाएँ। एक हिस्सा शाही महल पर पहरा दे, 6दूसरा सूर नामी दरवाज़े पर और तीसरा शाही मुहाफ़िज़ों के पीछे के दरवाज़े पर। यों आप रब के घर की हिफ़ाज़त करेंगे। 7दूसरे दो गुरोह जो सबत के दिन ड्यूटी नहीं करते उन्हें रब के घर में आकर युआस बादशाह की पहरादारी करनी है। 8वह उसके इर्दगिर्द दायरा बनाकर अपने हथियारों को पकड़े रखें और जहाँ भी वह जाए उसे घेरे रखें। जो भी इस दायरे में घुसने की कोशिश करे उसे मार डालना।"

9सौ सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सरों ने ऐसा ही किया। अगले सबत के दिन वह सब अपने फ़ौजियों समेत यहोयदा इमाम के पास आए। वह भी आए जो ड्यूटी पर थे और वह भी जिनकी अब छुट्टी थी। 10इमाम ने अफ़सरों को दाऊद बादशाह के वह नेज़े और ढालें दीं जो अब तक रब के घर में महफ़ूज़ रखी हुई थीं। 11फिर मुहाफ़िज़ हथियारों को हाथ में पकड़े बादशाह के गिर्द खड़े हो गए। क़ुरबानगाह और रब के घर के दरमियान उनका दायरा रब के घर की जुनूबी दीवार से लेकर उस की शिमाली दीवार तक फैला हुआ था। 12फिर यहोयदा बादशाह के बेटे युआस को बाहर लाया और उसके सर पर ताज रखकर उसे क़वानीन की किताब दे दी। यों युआस को बादशाह बना दिया गया। उन्होंने उसे मसह करके तालियाँ बजाईं और बुलंद आवाज़ से नारा लगाने लगे, "बादशाह ज़िंदाबाद!"

13जब मुहाफ़िज़ों और बाक़ी लोगों का शोर अतलियाह तक पहुँचा तो वह रब के घर के सहन में उनके पास आई। 14वहाँ पहुँचकर वह क्या देखती है कि नया बादशाह उस सतून के पास खड़ा है जहाँ बादशाह रिवाज के मुताबिक़ खड़ा होता है, और वह अफ़सरों और तुरम बजानेवालों से घिरा हुआ है। तमाम उम्मत भी साथ खड़ी तुरम बजा बजाकर ख़ुशी मना रही है। अतलियाह रंजिश के मारे अपने कपड़े फाड़कर चीख़ उठी, "ग़द्दारी, ग़द्दारी!"

15यहोयदा इमाम ने सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर उन अफ़सरों को बुलाया जिनके सुपुर्द फ़ौज की गई थी और उन्हें हुक्म दिया, "उसे बाहर ले जाएँ, क्योंकि मुनासिब नहीं कि उसे रब के घर के पास

मारा जाए। और जो भी उसके पीछे आए उसे
तलवार से मार देना।”

16वह अतलियाह को पकड़कर उस रास्ते पर
ले गए जिस पर चलते हुए घोड़े महल के पास
पहुँचते हैं। वहाँ उसे मार दिया गया। 17फिर
यहोयदा ने बादशाह और क़ौम के साथ मिलकर
रब से अहद बाँधकर वादा किया कि हम रब की
क़ौम रहेंगे। इसके अलावा बादशाह ने यहोयदा
की मारिफ़त क़ौम से भी अहद बाँधा। 18इसके
बाद उम्मत के तमाम लोग बाल के मंदिर पर टूट
पड़े और उसे ढा दिया। उस की क़ुरबानगाहों और
बुतों को टुकड़े टुकड़े करके उन्होंने बाल के पुजारी
मत्तान को क़ुरबानगाहों के सामने ही मार डाला।

रब के घर पर पहरेदार खड़े करने के बाद
19यहोयदा सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर अफ़सरों,
कारी नामी दस्तों, महल के मुहाफ़िज़ों और बाक़ी
पूरी उम्मत के हमराह जुलूस निकालकर बादशाह
को रब के घर से महल में ले गया। वह मुहाफ़िज़ों
के दरवाज़े से होकर दाख़िल हुए। बादशाह शाही
तख़्त पर बैठ गया, 20और तमाम उम्मत ख़ुशी
मनाती रही। यों यरूशलम शहर को सुकून मिला,
क्योंकि अतलियाह को महल के पास तलवार से
मार दिया गया था।

यहूदाह का बादशाह युआस

21युआस सात साल का था जब तख़्त-
12 नशीन हुआ। 1वह इसराईल के
बादशाह याहू की हुकूमत के सातवें
साल में यहूदाह का बादशाह बना, और यरूशलम
में उस की हुकूमत का दौरानिया 40 साल था।
उस की माँ ज़िबियाह बैर-सबा की रहनेवाली थी।
2जब तक यहोयदा उस की राहनुमाई करता था
युआस वह कुछ करता रहा जो रब को पसंद था।
3तो भी ऊँची जगहों के मंदिर दूर न किए गए।
अवाम मामूल के मुताबिक़ वहाँ अपनी क़ुरबानियाँ
पेश करते और बख़ूर जलाते रहे।

युआस रब के घर की मरम्मत करवाता है

4एक दिन युआस ने इमामों को हुक्म दिया,
“रब के लिए मख़सूस जितने भी पैसे रब के घर
में लाए जाते हैं उन सबको जमा करें, चाहे वह
मर्दुमशुमारी के टैक्स[a] या किसी मन्नत के ज़िम्न
में दिए गए हों, चाहे रज़ाकाराना तौर पर अदा
किए गए हों। 5यह तमाम पैसे इमामों के सुपुर्द
किए जाएँ। इनसे आपको जहाँ भी ज़रूरत है
रब के घर की दराड़ों की मरम्मत करवानी है।”
6लेकिन युआस की हुकूमत के 23वें साल में
उसने देखा कि अब तक रब के घर की दराड़ों
की मरम्मत नहीं हुई। 7तब उसने यहोयदा और
बाक़ी इमामों को बुलाकर पूछा, “आप रब के घर
की मरम्मत क्यों नहीं करा रहे? अब से आपको
इन पैसों से आपकी अपनी ज़रूरियात पूरी करने
की इजाज़त नहीं बल्कि तमाम पैसे रब के घर की
मरम्मत के लिए इस्तेमाल करने हैं।”

8इमाम मान गए कि अब से हम लोगों से हदिया
नहीं लेंगे और कि इसके बदले हमें रब के घर
की मरम्मत नहीं करवानी पड़ेगी। 9फिर यहोयदा
इमाम ने एक संदूक़ लेकर उसके ढकने में सूराख़
बना दिया। इस संदूक़ को उसने क़ुरबानगाह के
पास रख दिया, उस दरवाज़े के दहनी तरफ़
जिसमें से परस्तार रब के घर के सहन में दाख़िल
होते थे। जब लोग अपने हदियाजात रब के घर
में पेश करते तो दरवाज़े की पहरादारी करनेवाले
इमाम तमाम पैसों को संदूक़ में डाल देते। 10जब
कभी पता चलता कि संदूक़ भर गया है तो
बादशाह का मीरमुंशी और इमामे-आज़म आते
और तमाम पैसे गिनकर थैलियों में डाल देते थे।
11फिर यह गिने हुए पैसे उन ठेकेदारों को दिए
जाते जिनके सुपुर्द रब के घर की मरम्मत का काम
किया गया था। इन पैसों से वह मरम्मत करनेवाले
कारीगरों की उजरत अदा करते थे। इनमें बढ़ई,
इमारत पर काम करनेवाले, 12राज और पत्थर
तराशनेवाले शामिल थे। इसके अलावा उन्होंने यह

[a]देखिए ख़ुरूज 30:11-16

पैसे दराड़ों की मरम्मत के लिए दरकार लकड़ी
और तराशे हुए पत्थरों के लिए भी इस्तेमाल
किए। बाक़ी जितने अख़राजात रब के घर को
बहाल करने के लिए ज़रूरी थे वह सब इन पैसों
से पूरे किए गए। 13लेकिन इन हदियाजात से
सोने या चाँदी की चीज़ें न बनवाई गईं, न चाँदी
के बासन, बत्ती कतरने के औज़ार, छिड़काव के
कटोरे या तुरम। 14यह सिर्फ़ और सिर्फ़ ठेकेदारों
को दिए गए ताकि वह रब के घर की मरम्मत
कर सकें। 15ठेकेदारों से हिसाब न लिया गया
जब उन्हें कारीगरों को पैसे देने थे, क्योंकि वह
क़ाबिले-एतमाद थे।

16महज़ वह पैसे जो क़ुसूर और गुनाह की
क़ुरबानियों के लिए मिलते थे रब के घर की
मरम्मत के लिए इस्तेमाल न हुए। वह इमामों का
हिस्सा रहे।

ख़राज मिलने पर हज़ाएल यरूशलम को छोड़ता है

17उन दिनों में शाम के बादशाह हज़ाएल
ने जात पर हमला करके उस पर क़ब्ज़ा कर
लिया। इसके बाद वह मुड़कर यरूशलम की तरफ़
बढ़ने लगा ताकि उस पर भी हमला करे। 18यह
देखकर यहूदाह के बादशाह युआस ने उन तमाम
हदियाजात को इकट्ठा किया जो उसके बापदादा
यहूसफ़त, यहूराम और अख़ज़ियाह ने रब के घर
के लिए मख़सूस किए थे। उसने वह भी जमा किए
जो उसने ख़ुद रब के घर के लिए मख़सूस किए थे।
यह चीज़ें उस सारे सोने के साथ मिलाकर जो रब
के घर और शाही महल के ख़ज़ानों में था उसने
सब कुछ हज़ाएल को भेज दिया। तब हज़ाएल
यरूशलम को छोड़कर चला गया।

युआस की मौत

19बाक़ी जो कुछ युआस की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उसने किया उसका ज़िक्र
'शाहाने-यहूदाह' की किताब में किया गया है।
20एक दिन उसके अफ़सरों ने उसके ख़िलाफ़
साज़िश करके उसे क़त्ल कर दिया जब वह बैत-
मिल्लो के पास उस रास्ते पर था जो सिल्ला
की तरफ़ उतर जाता था। 21क़ातिलों के नाम
यूज़बद बिन सिमआत और यहूज़बद बिन शूमीर
थे। युआस को यरूशलम के उस हिस्से में जो
'दाऊद का शहर' कहलाता है ख़ानदानी क़ब्र
में दफ़नाया गया। फिर उसका बेटा अमसियाह
तख़्तनशीन हुआ।

इसराईल का बादशाह यहुआख़ज़

13 यहुआख़ज़ बिन याहू यहूदाह
के बादशाह युआस बिन अख़-
ज़ियाह की हुकूमत के 23वें साल में इस-
राईल का बादशाह बना। उस की हुकूमत का
दौरानिया 17 साल था, और उसका दारुल-
हुकूमत सामरिया रहा। 2उसका चाल-चलन रब
को नापसंद था, क्योंकि वह भी यरुबियाम बिन
नबात के बुरे नमूने पर चलता रहा। उसने वह
गुनाह जारी रखे जो करने पर यरुबियाम ने
इसराईल को उकसाया था। उस बुतपरस्ती से वह
कभी बाज़ न आया। 3इस वजह से रब इसराईल
से बहुत नाराज़ हुआ, और वह शाम के बादशाह
हज़ाएल और उसके बेटे बिन-हदद के वसीले से
उन्हें बार बार दबाता रहा।

4लेकिन फिर यहुआख़ज़ ने रब का ग़ज़ब ठंडा
किया, और रब ने उस की मिन्नतें सुनीं, क्योंकि
उसे मालूम था कि शाम का बादशाह इसराईल
पर कितना ज़ुल्म कर रहा है। 5रब ने किसी को
भेज दिया जिसने उन्हें शाम के ज़ुल्म से आज़ाद
करवाया। इसके बाद वह पहले की तरह सुकून के
साथ अपने घरों में रह सकते थे। 6तो भी वह उन
गुनाहों से बाज़ न आए जो करने पर यरुबियाम
ने उन्हें उकसाया था बल्कि उनकी यह बुतपरस्ती
जारी रही। यसीरत देवी का बुत भी सामरिया से
हटाया न गया।

7आख़िर में यहुआख़ज़ के सिर्फ़ 50 घुड़सवार,
10 रथ और 10,000 प्यादा सिपाही रह गए।
फ़ौज का बाक़ी हिस्सा शाम के बादशाह ने तबाह

कर दिया था। उसने इसराईली फ़ौजियों को कुचलकर यों उड़ा दिया था जिस तरह धूल अनाज को गाहते वक़्त उड़ जाती है।

8बाक़ी जो कुछ यहुआख़ज़ की हुकूमत के दौरान हुआ, जो कुछ उसने किया और जो कामयाबियाँ उसे हासिल हुईं वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख़' की किताब में बयान की
गई हैं। 9जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे सामरिया में दफ़नाया गया। फिर उसका बेटा यहुआस तख़्तनशीन हुआ।

इसराईल का बादशाह यहुआस

10यहुआस बिन यहुआख़ज़ यहूदाह के बादशाह युआस की हुकूमत के 37वें साल में इसराईल का बादशाह बना।
11यहुआस का चाल-चलन रब को नापसंद था। वह उन गुनाहों से बाज़ न आया जो करने पर यरुबियाम बिन नबात ने इसराईल को उकसाया था बल्कि यह
बुतपरस्ती जारी रही। 12बाक़ी जो कुछ यहुआस की हुकूमत के दौरान हुआ, जो कुछ उसने किया और जो कामयाबियाँ उसे हासिल हुईं वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख़' की किताब में दर्ज हैं। उसमें उस की यहूदाह के बादशाह अमसियाह के साथ जंग का ज़िक्र भी है।

13जब यहुआस मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे सामरिया में शाही क़ब्र में दफ़नाया गया। फिर यरुबियाम दुवुम तख़्त पर बैठ गया।

बिस्तरे-मर्ग पर यहुआस की इलीशा से मुलाक़ात

14यहुआस के दौरे-हुकूमत में इलीशा शदीद बीमार हो गया। जब वह मरने को था तो इसराईल का बादशाह यहुआस उससे मिलने गया। उसके ऊपर झुककर वह ख़ूब रो पड़ा और चिल्लाया, "हाय, मेरे बाप, मेरे बाप। इसराईल के रथ और उसके घोड़े!"
15इलीशा ने उसे हुक्म दिया, "एक कमान और कुछ तीर ले आएँ।" बादशाह कमान और तीर इलीशा के पास ले आया।
16फिर इलीशा बोला, "कमान को पकड़ें।" जब बादशाह ने कमान को पकड़ लिया तो इलीशा ने अपने हाथ उसके हाथों पर रख दिए।
17फिर उसने हुक्म दिया, "मशरिक़ी खिड़की को खोल दें।" बादशाह ने उसे खोल दिया। इलीशा ने कहा, "तीर चलाएँ!" बादशाह ने तीर चलाया। इलीशा पुकारा, "यह रब का फ़तह दिलानेवाला तीर है, शाम पर फ़तह का तीर! आप अफ़ीक़ के पास शाम की फ़ौज को मुकम्मल तौर पर तबाह कर देंगे।"

18फिर उसने बादशाह को हुक्म दिया, "अब बाक़ी तीरों को पकड़ें।" बादशाह ने उन्हें पकड़ लिया। फिर इलीशा बोला, "इनको ज़मीन पर पटख़ दें।" बादशाह ने तीन मरतबा तीरों को ज़मीन पर पटख़ दिया और फिर रुक गया।
19यह देखकर मर्दे-ख़ुदा ग़ुस्से हो गया और बोला, "आपको तीरों को पाँच या छः मरतबा ज़मीन पर पटख़ना चाहिए था। अगर ऐसा करते तो शाम की फ़ौज को शिकस्त देकर मुकम्मल तौर पर तबाह कर देते। लेकिन अब आप उसे सिर्फ़ तीन मरतबा शिकस्त देंगे।"

20थोड़ी देर के बाद इलीशा फ़ौत हुआ और उसे दफ़न किया गया। उन दिनों में मोआबी लुटेरे हर साल मौसमे-बहार के दौरान मुल्क में घुस आते
थे। 21एक दिन किसी का जनाज़ा हो रहा था तो अचानक यह लुटेरे नज़र आए। मातम करनेवाले लाश को क़रीब की इलीशा की क़ब्र में फेंककर भाग गए। लेकिन ज्योंही लाश इलीशा की हड्डियों से टकराई उसमें जान आ गई और वह आदमी खड़ा हो गया।

इलीशा के आख़िरी अलफ़ाज़ पूरे हो जाते हैं

22यहुआख़ज़ के जीते-जी शाम का बादशाह हज़ाएल इसराईल को दबाता रहा।
23तो भी रब को अपनी क़ौम पर तरस आया। उसने उन पर रहम किया, क्योंकि उसे वह अहद याद रहा जो उसने इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब से बाँधा था।

आज तक वह उन्हें तबाह करने या अपने हुज़ूर से
ख़ारिज करने के लिए तैयार नहीं हुआ।
24जब शाम का बादशाह हज़ाएल फ़ौत हुआ
तो उसका बेटा बिन-हदद तख़्तनशीन हुआ।
25तब यहुआस बिन यहुआख़ज़ ने बिन-हदद से
वह इसराईली शहर दुबारा छीन लिए जिन पर
बिन-हदद के बाप हज़ाएल ने क़ब्ज़ा कर लिया
था। तीन बार यहुआस ने बिन-हदद को शिकस्त
देकर इसराईली शहर वापस ले लिए।

यहूदाह का बादशाह अमसियाह

14 अमसियाह बिन युआस इस-
राईल के बादशाह यहुआस बिन
यहुआख़ज़ के दूसरे साल में यहूदाह का बादशाह
बना। 2उस वक़्त वह 25 साल का था। वह
यरूशलम में रहकर 29 साल हुकूमत करता रहा।
उस की माँ यहुअद्दान यरूशलम की रहनेवाली
थी। 3जो कुछ अमसियाह ने किया वह रब को
पसंद था, अगरचे वह उतनी वफ़ादारी से रब की
पैरवी नहीं करता था जितनी उसके बाप दाऊद
ने की थी। हर काम में वह अपने बाप युआस के
नमूने पर चला, 4लेकिन उसने भी ऊँची जगहों
के मंदिरों को दूर न किया। आम लोग अब तक
वहाँ क़ुरबानियाँ चढ़ाते और बख़ूर जलाते रहे।
5ज्योंही अमसियाह के पाँव मज़बूती से जम
गए उसने उन अफ़सरों को सज़ाए-मौत दी
जिन्होंने बाप को क़त्ल कर दिया था। 6लेकिन
उनके बेटों को उसने ज़िंदा रहने दिया और यों
मूसवी शरीअत के ताबे रहा जिसमें रब फ़रमाता
है, "वालिदैन को उनके बच्चों के जरायम के सबब
से सज़ाए-मौत न दी जाए, न बच्चों को उनके
वालिदैन के जरायम के सबब से। अगर किसी
को सज़ाए-मौत देनी हो तो उस गुनाह के सबब
से जो उसने ख़ुद किया है।"
7अमसियाह ने अदोमियों को नमक की वादी
में शिकस्त दी। उस वक़्त उनके 10,000 फ़ौजी
उससे लड़ने आए थे। जंग के दौरान उसने सिला
शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया और उसका नाम
युक़तियेल रखा। यह नाम आज तक रायज है।

अमसियाह इसराईल के बादशाह यहुआस से लड़ता है

8इस फ़तह के बाद अमसियाह ने इसराईल
के बादशाह यहुआस बिन यहुआख़ज़ को पैग़ाम
भेजा, "आएँ, हम एक दूसरे का मुक़ाबला करें!"
9लेकिन इसराईल के बादशाह यहुआस ने जवाब
दिया, "लुबनान में एक काँटेदार झाड़ी ने देवदार
के एक दरख़्त से बात की, 'मेरे बेटे के साथ अपनी
बेटी का रिश्ता बान्धो।' लेकिन उसी वक़्त लुबनान
के जंगली जानवरों ने उसके ऊपर से गुज़रकर
उसे पाँवों तले कुचल डाला। 10मुल्के-अदोम पर
फ़तह पाने के सबब से आपका दिल मग़रूर हो
गया है। लेकिन मेरा मशवरा है कि आप अपने
घर में रहकर फ़तह में हासिल हुई शोहरत का
मज़ा लेने पर इकतिफ़ा करें। आप ऐसी मुसीबत
को क्यों दावत देते हैं जो आप और यहूदाह की
तबाही का बाइस बन जाए?"
11लेकिन अमसियाह मानने के लिए तैयार
नहीं था, इसलिए यहुआस अपनी फ़ौज लेकर
यहूदाह पर चढ़ आया। बैत-शम्स के पास उसका
यहूदाह के बादशाह के साथ मुक़ाबला हुआ।
12इसराईल की फ़ौज ने यहूदाह की फ़ौज को
शिकस्त दी, और हर एक अपने अपने घर
भाग गया। 13इसराईल के बादशाह यहुआस ने
यहूदाह के बादशाह अमसियाह बिन युआस बिन
अख़ज़ियाह को वहीं बैत-शम्स में गिरिफ़्तार कर
लिया। फिर वह यरूशलम गया और शहर की
फ़सील इफ़राईम नामी दरवाज़े से कोने के दरवाज़े
तक गिरा दी। इस हिस्से की लंबाई तक़रीबन
600 फ़ुट थी। 14जितना भी सोना, चाँदी और
क़ीमती सामान रब के घर और शाही महल के
ख़ज़ानों में था उसे उसने पूरे का पूरा छीन लिया।
लूटा हुआ माल और बाज़ यरग़मालों को लेकर
वह सामरिया वापस चला गया।

इसराईल के बादशाह यहुआस की मौत

15बाक़ी जो कुछ यहुआस की हुकूमत के
दौरान हुआ, जो कुछ उसने किया और जो
कामयाबियाँ उसे हासिल हुईं वह ‘शाहाने-
इसराईल की तारीख़’ की किताब में दर्ज हैं। उसमें
उस की यहूदाह के बादशाह अमसियाह के साथ
जंग का ज़िक्र भी है। 16जब यहुआस मरकर
अपने बापदादा से जा मिला तो उसे सामरिया में
इसराईल के बादशाहों की क़ब्र में दफ़नाया गया।
फिर उसका बेटा यरुबियाम दुवुम तख़्तनशीन
हुआ।

यहूदाह के बादशाह अमसियाह की मौत

17इसराईल के बादशाह यहुआस बिन
यहुआख़ज़ की मौत के बाद यहूदाह का बादशाह
अमसियाह बिन युआस मज़ीद 15 साल जीता
रहा। 18बाक़ी जो कुछ अमसियाह की हुकूमत के
दौरान हुआ वह ‘शाहाने-यहूदाह की तारीख़’ की
किताब में दर्ज है। 19एक दिन लोग यरूशलम में
उसके ख़िलाफ़ साज़िश करने लगे। आख़िरकार
उसने फ़रार होकर लकीस में पनाह ली, लेकिन
साज़िश करनेवालों ने अपने लोगों को उसके
पीछे भेजा, और वह वहाँ उसे क़त्ल करने में
कामयाब हो गए। 20उस की लाश घोड़े पर
उठाकर यरूशलम लाई गई जहाँ उसे शहर के
उस हिस्से में जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है
ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया गया।

21यहूदाह के तमाम लोगों ने अमसियाह के बेटे
उज़्ज़ियाह[a] को बाप के तख़्त पर बिठा दिया। उस
की उम्र 16 साल थी 22जब उसका बाप मरकर
अपने बापदादा से जा मिला। बादशाह बनने के
बाद उज़्ज़ियाह ने ऐलात शहर पर क़ब्ज़ा करके
उसे दुबारा यहूदाह का हिस्सा बना लिया। उसने
शहर में बहुत तामीरी काम करवाया।

[a]यहाँ कई जगहों पर इबरानी में उज़्ज़ियाह का दूसरा नाम अज़रियाह मुस्तामल है।

इसराईल का बादशाह यरुबियाम दुवुम

23यहूदाह के बादशाह अमसियाह बिन युआस
के 15वें साल में यरुबियाम बिन यहुआस
इसराईल का बादशाह बना। उस की हुकूमत
का दौरानिया 41 साल था, और उसका दारुल-
हुकूमत सामरिया रहा। 24उसका चाल-चलन रब
को नापसंद था। वह उन गुनाहों से बाज़ न आया
जो करने पर नबात के बेटे यरुबियाम अव्वल ने
इसराईल को उकसाया था। 25यरुबियाम दुवुम
लबो-हमात से लेकर बहीराए-मुरदार तक उन
तमाम इलाक़ों पर दुबारा क़ब्ज़ा कर सका जो
पहले इसराईल के थे। यों वह वादा पूरा हुआ जो
रब इसराईल के ख़ुदा ने अपने ख़ादिम जात-हिफ़र
के रहनेवाले नबी यूनुस बिन अमित्ती की मारिफ़त
किया था। 26क्योंकि रब ने इसराईल की निहायत
बुरी हालत पर ध्यान दिया था। उसे मालूम था
कि छोटे बड़े सब हलाक होनेवाले हैं और कि उन्हें
छुड़ानेवाला कोई नहीं है। 27रब ने कभी नहीं कहा
था कि मैं इसराईल क़ौम का नामो-निशान मिटा
दूँगा, इसलिए उसने उन्हें यरुबियाम बिन यहुआस
के वसीले से नजात दिलाई।

28बाक़ी जो कुछ यरुबियाम दुवुम की हुकूमत
के दौरान हुआ, जो कुछ उसने किया और जो
जंगी कामयाबियाँ उसे हासिल हुईं उनका ज़िक्र
‘शाहाने-इसराईल की तारीख़’ की किताब में
हुआ है। उसमें यह भी बयान किया गया है कि
उसने किस तरह दमिश्क़ और हमात पर दुबारा
क़ब्ज़ा कर लिया। 29जब यरुबियाम मरकर
अपने बापदादा से जा मिला तो उसे सामरिया में
बादशाहों की क़ब्र में दफ़नाया गया। फिर उसका
बेटा ज़करियाह तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह उज़्ज़ियाह

15 उज़्ज़ियाह बिन अमसियाह इस-
राईल के बादशाह यरुबियाम दुवुम
की हुकूमत के 27वें साल में यहूदाह का बादशाह

बना। 2उस वक़्त उस की उम्र 16 साल थी,
और वह यरूशलम में रहकर 52 साल हुकूमत
करता रहा। उस की माँ यकूलियाह यरूशलम की
रहनेवाली थी। 3अपने बाप अमसियाह की तरह
उसका चाल-चलन रब को पसंद था, 4लेकिन
ऊँची जगहों को दूर न किया गया, और आम लोग
वहाँ अपनी क़ुरबानियाँ चढ़ाते और बख़ूर जलाते
रहे।
5एक दिन रब ने बादशाह को सज़ा दी कि उसे
कोढ़ लग गया। उज़्ज़ियाह जीते-जी इस बीमारी
से शफ़ा न पा सका, और उसे अलहदा घर में रहना
पड़ा। उसके बेटे यूताम को महल पर मुक़र्रर किया
गया, और वही उम्मत पर हुकूमत करने लगा।
6बाक़ी जो कुछ उज़्ज़ियाह की हुकूमत के
दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह
‘शाहाने-यहूदाह की तारीख़’ की किताब में दर्ज
है। 7जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला
तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में जो ‘दाऊद
का शहर’ कहलाता है ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया
गया। फिर उसका बेटा यूताम तख़्तनशीन हुआ।

इसराईल का बादशाह ज़करियाह

8ज़करियाह बिन यरुबियाम यहूदाह के
बादशाह उज़्ज़ियाह की हुकूमत के 38वें साल
में इसराईल का बादशाह बना। उसका दारुल-
हुकूमत भी सामरिया था, लेकिन छः माह के बाद
उस की हुकूमत ख़त्म हो गई। 9अपने बापदादा
की तरह ज़करियाह का चाल-चलन भी रब को
नापसंद था। वह उन गुनाहों से बाज़ न आया जो
करने पर यरुबियाम बिन नबात ने इसराईल को
उकसाया था। 10सल्लूम बिन यबीस ने उसके
ख़िलाफ़ साज़िश करके उसे सबके सामने क़त्ल
किया। फिर वह उस की जगह बादशाह बन गया।
11बाक़ी जो कुछ ज़करियाह की हुकूमत के
दौरान हुआ उसका ज़िक्र ‘शाहाने-इसराईल की
तारीख़’ की किताब में किया गया है।
12यों रब का वह वादा पूरा हुआ जो उसने
याहू से किया था, “तेरी औलाद चौथी पुश्त तक
इसराईल पर हुकूमत करती रहेगी।”

इसराईल का बादशाह सल्लूम

13सल्लूम बिन यबीस यहूदाह के बादशाह
उज़्ज़ियाह के 39वें साल में इसराईल का बादशाह
बना। वह सामरिया में रहकर सिर्फ़ एक माह तक
तख़्त पर बैठ सका। 14फिर मनाहिम बिन जादी
ने तिरज़ा से आकर सल्लूम को सामरिया में क़त्ल
कर दिया। इसके बाद वह ख़ुद तख़्त पर बैठ गया।
15बाक़ी जो कुछ सल्लूम की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो साज़िशें उसने कीं वह ‘शाहाने-
इसराईल की तारीख़’ की किताब में बयान किया
गया है।
16उस वक़्त मनाहिम ने तिरज़ा से आकर शहर
तिफ़सह को उसके तमाम बाशिंदों और गिर्दो-
नवाह के इलाक़े समेत तबाह किया। वजह यह
थी कि उसके बाशिंदे अपने दरवाज़ों को खोलकर
उसके ताबे हो जाने के लिए तैयार नहीं थे। जवाब
में मनाहिम ने उनको मारा और तमाम हामिला
औरतों के पेट चीर डाले।

इसराईल का बादशाह मनाहिम

17मनाहिम बिन जादी यहूदाह के बाद-
शाह उज़्ज़ियाह की हुकूमत के 39वें साल
में इसराईल का बादशाह बना। सामरिया
उसका दारुल-हुकूमत था, और उस की हुकू-
मत का दौरानिया 10 साल था। 18उसका चाल-
चलन रब को नापसंद था, और वह ज़िंदगी-
भर उन गुनाहों से बाज़ न आया जो करने पर
यरुबियाम बिन नबात ने इसराईल को उकसाया
था।
19-20मनाहिम के दौरे-हुकूमत में असूर का
बादशाह पूल यानी तिग्लत-पिलेसर मुल्क
से लड़ने आया। मनाहिम ने उसे 34,000
किलोग्राम चाँदी दे दी ताकि वह उस की हुकूमत
मज़बूत करने में मदद करे। तब असूर का बादशाह

इसराईल को छोड़कर अपने मुल्क वापस चला
गया। चाँदी के यह पैसे मनाहिम ने अमीर
इसराईलियों से जमा किए। हर एक को चाँदी के
50 सिक्के अदा करने पड़े।
21बाक़ी जो कुछ मनाहिम की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-
इसराईल की तारीख़' की किताब में दर्ज है।
22जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला
तो उसका बेटा फ़िक़हियाह तख़्त पर बैठ गया।

इसराईल का बादशाह फ़िक़हियाह

23फ़िक़हियाह बिन मनाहिम यहूदाह के
बादशाह उज़्ज़ियाह के 50वें साल में इस-
राईल का बादशाह बना। सामरिया में रहकर
उस की हुकूमत का दौरानिया दो साल था।
24फ़िक़हियाह का चाल-चलन रब को नापसंद
था। वह उन गुनाहों से बाज़ न आया जो करने पर
यरुबियाम बिन नबात ने इसराईल को उकसाया
था।
25एक दिन फ़ौज के आला अफ़सर फ़िक़ह
बिन रमलियाह ने उसके ख़िलाफ़ साज़िश की।
जिलियाद के 50 आदमियों को अपने साथ लेकर
उसने फ़िक़हियाह को सामरिया के महल के बुर्ज
में मार डाला। उस वक़्त दो और अफ़सर बनाम
अरजूब और अरिया भी उस की ज़द में आकर मर
गए। इसके बाद फ़िक़ह तख़्त पर बैठ गया।
26बाक़ी जो कुछ फ़िक़हियाह की हुकूमत
के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह
'शाहाने-इसराईल की तारीख़' की किताब में
बयान किया गया है।

इसराईल का बादशाह फ़िक़ह

27फ़िक़ह बिन रमलियाह यहूदाह के बाद-
शाह उज़्ज़ियाह की हुकूमत के 52वें साल में
इसराईल का बादशाह बना। सामरिया में रहकर
वह 20 साल तक हुकूमत करता रहा। 28फ़िक़ह
का चाल-चलन रब को नापसंद था। वह उन
गुनाहों से बाज़ न आया जो करने पर यरुबियाम
बिन नबात ने इसराईल को उकसाया था।
29फ़िक़ह के दौरे-हुकूमत में असूर के बादशाह
तिग्लत-पिलेसर ने इसराईल पर हमला किया।
ज़ैल के तमाम शहर उसके क़ब्ज़े में आ गए :
ऐय्यून, अबील-बैत-माका, यानूह, क़ादिस और
हसूर। जिलियाद और गलील के इलाक़े भी
नफ़ताली के पूरे क़बायली इलाक़े समेत उस की
गिरिफ़्त में आ गए। असूर का बादशाह इन तमाम
जगहों में आबाद लोगों को गिरिफ़्तार करके अपने
मुल्क असूर ले गया।
30एक दिन होसेअ बिन ऐला ने फ़िक़ह के
ख़िलाफ़ साज़िश करके उसे मौत के घाट उतार
दिया। फिर वह ख़ुद तख़्त पर बैठ गया। यह
यहूदाह के बादशाह यूताम बिन उज़्ज़ियाह की
हुकूमत के 20वें साल में हुआ।
31बाक़ी जो कुछ फ़िक़ह की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-
इसराईल की तारीख़' की किताब में दर्ज है।

यहूदाह का बादशाह यूताम

32उज़्ज़ियाह का बेटा यूताम इसराईल के
बादशाह फ़िक़ह की हुकूमत के दूसरे साल में
यहूदाह का बादशाह बना। 33वह 25 साल की
उम्र में बादशाह बना और यरूशलम में रहकर 16
साल हुकूमत करता रहा। उस की माँ यरूसा बिंत
सदोक़ थी। 34वह अपने बाप उज़्ज़ियाह की तरह
वह कुछ करता रहा जो रब को पसंद था। 35तो
भी ऊँची जगहों के मंदिर हटाए न गए। लोग वहाँ
अपनी क़ुरबानियाँ चढ़ाने और बख़ूर जलाने से
बाज़ न आए। यूताम ने रब के घर का बालाई
दरवाज़ा तामीर किया।
36बाक़ी जो कुछ यूताम की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-
यहूदाह की तारीख़' की किताब में क़लमबंद है।
37उन दिनों में रब शाम के बादशाह रज़ीन और
फ़िक़ह बिन रमलियाह को यहूदाह के ख़िलाफ़
भेजने लगा ताकि उससे लड़ें। 38जब यूताम

मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया गया। फिर उसका बेटा आख़ज़ तख़्त पर बैठ गया।

यहूदाह का बादशाह आख़ज़

16 आख़ज़ बिन यूताम इसराईल के
बादशाह फ़िक़ह बिन रमलियाह की हुकूमत के 17वें साल में यहूदाह का बादशाह
बना। 2उस वक़्त आख़ज़ 20 साल का था, और वह यरूशलम में रहकर 16 साल हुकूमत करता रहा। वह अपने बाप दाऊद के नमूने पर न चला बल्कि वह कुछ करता रहा जो रब को नापसंद था।
3क्योंकि उसने इसराईल के बादशाहों का चाल-चलन अपनाया, यहाँ तक कि उसने अपने बेटे को क़ुरबानी के तौर पर जला दिया। यों वह उन क़ौमों के घिनौने रस्मो-रिवाज अदा करने लगा जिन्हें रब ने इसराईलियों के आगे मुल्क से निकाल दिया
था। 4आख़ज़ बख़ूर जलाकर अपनी क़ुरबानियाँ ऊँचे मक़ामों, पहाड़ियों की चोटियों और हर घने दरख़्त के साये में चढ़ाता था।

आख़ज़ असूर के बादशाह से मदद लेता है

5एक दिन शाम का बादशाह रज़ीन और इसराईल का बादशाह फ़िक़ह बिन रमलियाह यरूशलम पर हमला करने के लिए यहूदाह में घुस आए। उन्होंने शहर का मुहासरा तो किया लेकिन
उस पर क़ब्ज़ा करने में नाकाम रहे। 6उन्हीं दिनों में
रज़ीन ने ऐलात पर दुबारा क़ब्ज़ा करके शाम का हिस्सा बना लिया। यहूदाह के लोगों को वहाँ से निकालकर उसने वहाँ अदोमियों को बसा दिया। यह अदोमी आज तक वहाँ आबाद हैं।
7आख़ज़ ने अपने क़ासिदों को असूर के बादशाह तिग्लत-पिलेसर के पास भेजकर उसे इत्तला दी, "मैं आपका ख़ादिम और बेटा हूँ। मेहरबानी करके आएँ और मुझे शाम और इसराईल के बादशाहों से बचाएँ जो मुझ पर
हमला कर रहे हैं।" 8साथ साथ आख़ज़ ने वह चाँदी और सोना जमा किया जो रब के घर और शाही महल के ख़ज़ानों में था और उसे तोह्फ़े के तौर पर असूर के बादशाह को भेज दिया।
9तिग्लत-पिलेसर राज़ी हो गया। उसने दमिश्क़ पर हमला करके शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया और उसके बाशिंदों को गिरिफ़्तार करके क़ीर को ले गया। रज़ीन को उसने क़त्ल कर दिया।

आख़ज़ रब के घर की बेहुरमती करता है

10आख़ज़ बादशाह असूर के बादशाह तिग्लत-पिलेसर से मिलने के लिए दमिश्क़ गया। वहाँ एक क़ुरबानगाह थी जिसका नमूना आख़ज़ ने बनाकर ऊरियाह इमाम को भेज दिया। साथ साथ उसने डिज़ायन की तमाम तफ़सीलात भी
यरूशलम भेज दीं। 11जब ऊरियाह को हिदायात मिलीं तो उसने उन्हीं के मुताबिक़ यरूशलम में एक क़ुरबानगाह बनाई। आख़ज़ के दमिश्क़ से वापस आने से पहले पहले उसे तैयार कर लिया गया।

12जब बादशाह वापस आया तो उसने नई क़ुरबानगाह का मुआयना किया। फिर उस की
सीढ़ी पर चढ़कर 13उसने ख़ुद क़ुरबानियाँ उस पर पेश कीं। भस्म होनेवाली क़ुरबानी और ग़ल्ला की नज़र जलाकर उसने मै की नज़र क़ुरबानगाह पर उंडेल दी और सलामती की क़ुरबानियों का ख़ून उस पर छिड़क दिया।
14रब के घर और नई क़ुरबानगाह के दरमियान अब तक पीतल की पुरानी क़ुर-बानगाह थी। अब आख़ज़ ने उसे उठाकर रब के घर के सामने से मुंतक़िल करके नई क़ुरबानगाह के पीछे यानी शिमाल की तरफ़ रखवा दिया।
15ऊरियाह इमाम को उसने हुक्म दिया, "अब से आपको तमाम क़ुरबानियों को नई क़ुरबानगाह पर पेश करना है। इनमें सुबहो-शाम की रोज़ाना क़ुरबानियाँ भी शामिल हैं और बादशाह और उम्मत की मुख़्तलिफ़ क़ुरबानियाँ भी, मसलन भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ और ग़ल्ला और मै की नज़रें। क़ुरबानियों के तमाम ख़ून को भी सिर्फ़

नई क़ुरबानगाह पर छिड़कना है। आइंदा पीतल
की पुरानी क़ुरबानगाह सिर्फ़ मेरे ज़ाती इस्तेमाल
के लिए होगी जब मुझे अल्लाह से कुछ दरियाफ़्त
करना होगा।” 16ऊरियाह इमाम ने वैसा ही किया
जैसा बादशाह ने उसे हुक्म दिया।

17लेकिन आख़ज़ बादशाह रब के घर में मज़ीद
तबदीलियाँ भी लाया। हथगाड़ियों के जिन फ़्रेमों
पर बासन रखे जाते थे उन्हें तोड़कर उसने बासनों
को दूर कर दिया। इसके अलावा उसने ‘समुंदर’
नामी बड़े हौज़ को पीतल के उन बैलों से उतार
दिया जिन पर वह शुरू से पड़ा था और उसे पत्थर
के एक चबूतरे पर रखवा दिया। 18उसने असूर के
बादशाह को ख़ुश रखने के लिए एक और काम
भी किया। उसने रब के घर से वह चबूतरा दूर कर
दिया जिस पर बादशाह का तख़्त रखा जाता था
और वह दरवाज़ा बंद कर दिया जो बादशाह रब
के घर में दाख़िल होने के लिए इस्तेमाल करता
था।

19बाक़ी जो कुछ आख़ज़ की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उसने किया वह ‘शाहाने-
यहूदाह की तारीख़’ की किताब में दर्ज है। 20जब
वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे
यरूशलम के उस हिस्से में जो ‘दाऊद का शहर’
कहलाता है ख़ानदानी क़ब्र में दफ़नाया गया। फिर
उसका बेटा हिज़क़ियाह तख़्तनशीन हुआ।

इसराईल का आख़िरी बादशाह होसेअ

17 होसेअ बिन ऐला यहूदाह के बादशाह
आख़ज़ की हुकूमत के 12वें साल
में इसराईल का बादशाह बना। सामरिया उसका
दारुल-हुकूमत रहा, और उस की हुकूमत का
दौरानिया 9 साल था। 2होसेअ का चाल-चलन
रब को नापसंद था, लेकिन इसराईल के उन
बादशाहों की निसबत जो उससे पहले थे वह कुछ
बेहतर था।

3एक दिन असूर के बादशाह सल्मनसर ने
इसराईल पर हमला किया। तब होसेअ शिकस्त
मानकर उसके ताबे हो गया। उसे असूर को ख़राज
अदा करना पड़ा। 4लेकिन चंद साल के बाद
वह सरकश हो गया। उसने ख़राज का सालाना
सिलसिला बंद करके अपने सफ़ीरों को मिसर
के बादशाह सो के पास भेजा ताकि उससे मदद
हासिल करे। जब असूर के बादशाह को पता चला
तो उसने उसे पकड़कर जेल में डाल दिया।

सामरिया का अंजाम

5सल्मनसर पूरे मुल्क में से गुज़रकर सामरिया
तक पहुँच गया। तीन साल तक उसे शहर का
मुहासरा करना पड़ा, 6लेकिन आख़िरकार वह
होसेअ की हुकूमत के नवें साल में कामयाब
हुआ और शहर पर क़ब्ज़ा करके इसराईलियों
को जिलावतन कर दिया। उन्हें असूर लाकर
उसने कुछ ख़लह के इलाक़े में, कुछ जौज़ान के
दरियाए-ख़ाबूर के किनारे पर और कुछ मादियों
के शहरों में बसाए।

7यह सब कुछ इसलिए हुआ कि इसराई-
लियों ने रब अपने ख़ुदा का गुनाह किया था,
हालाँकि वह उन्हें मिसरी बादशाह फ़िरौन के क़ब्ज़े
से रिहा करके मिसर से निकाल लाया था। वह
दीगर माबूदों की पूजा करते 8और उन क़ौमों के
रस्मो-रिवाज की पैरवी करते जिनको रब ने उनके
आगे से निकाल दिया था। साथ साथ वह उन
रस्मों से भी लिपटे रहे जो इसराईल के बादशाहों
ने शुरू की थीं। 9इसराईलियों को रब अपने ख़ुदा
के ख़िलाफ़ बहुत तरकीबें सूझीं जो ठीक नहीं थीं।
सबसे छोटी चौकी से लेकर बड़े से बड़े क़िलाबंद
शहर तक उन्होंने अपने तमाम शहरों की ऊँची
जगहों पर मंदिर बनाए। 10हर पहाड़ी की चोटी
पर और हर घने दरख़्त के साये में उन्होंने पत्थर
के अपने देवताओं के सतून और यसीरत देवी के
खंबे खड़े किए। 11हर ऊँची जगह पर वह बख़ूर
जला देते थे, बिलकुल उन अक़वाम की तरह
जिन्हें रब ने उनके आगे से निकाल दिया था।
ग़रज़ इसराईलियों से बहुत-सी ऐसी शरीर हरकतें
सरज़द हुईं जिनको देखकर रब को ग़ुस्सा आया।

12वह बुतों की परस्तिश करते रहे अगरचे रब ने
इससे मना किया था।
13बार बार रब ने अपने नबियों और ग़ैबबीनों
को इसराईल और यहूदाह के पास भेजा था
ताकि उन्हें आगाह करें, "अपनी शरीर राहों से
बाज़ आओ। मेरे अहकाम और क़वायद के ताबे
रहो। उस पूरी शरीअत की पैरवी करो जो मैंने
तुम्हारे बापदादा को अपने ख़ादिमों यानी नबियों
के वसीले से दे दी थी।"
14लेकिन वह सुनने के लिए तैयार नहीं थे
बल्कि अपने बापदादा की तरह अड़ गए, क्योंकि
वह भी रब अपने ख़ुदा पर भरोसा नहीं करते थे।
15उन्होंने उसके अहकाम और उस अहद को रद्द
किया जो उसने उनके बापदादा से बाँधा था। जब
भी उसने उन्हें किसी बात से आगाह किया तो
उन्होंने उसे हक़ीर जाना। बेकार बुतों की पैरवी
करते करते वह ख़ुद बेकार हो गए। वह गिर्दो-
नवाह की क़ौमों के नमूने पर चल पड़े हालाँकि
रब ने इससे मना किया था। 16रब अपने ख़ुदा
के तमाम अहकाम को मुस्तरद करके उन्होंने
अपने लिए बछड़ों के दो मुजस्समे ढाल लिए और
यसीरत देवी का खंबा खड़ा कर दिया। वह सूरज,
चाँद बल्कि आसमान के पूरे लशकर के सामने
झुक गए और बाल देवता की परस्तिश करने लगे।
17अपने बेटे-बेटियों को उन्होंने अपने बुतों के लिए
क़ुरबान करके जला दिया। नुजूमियों से मशवरा
लेना और जादूगरी करना आम हो गया। ग़रज़
उन्होंने अपने आपको बदी के हाथ में बेचकर ऐसा
काम किया जो रब को नापसंद था और जो उसे
ग़ुस्सा दिलाता रहा।
18तब रब का ग़ज़ब इसराईल पर नाज़िल हुआ,
और उसने उन्हें अपने हुज़ूर से ख़ारिज कर दिया।
सिर्फ़ यहूदाह का क़बीला मुल्क में बाक़ी रह गया।
19लेकिन यहूदाह के अफ़राद भी रब अपने
ख़ुदा के अहकाम के ताबे रहने के लिए तैयार नहीं
थे। वह भी उन बुरे रस्मो-रिवाज की पैरवी करते
रहे जो इसराईल ने शुरू किए थे। 20फिर रब ने
पूरी की पूरी क़ौम को रद्द कर दिया। उन्हें तंग
करके वह उन्हें लुटेरों के हवाले करता रहा, और
एक दिन उसने उन्हें भी अपने हुज़ूर से ख़ारिज
कर दिया।
21रब ने ख़ुद इसराईल के शिमाली क़बीलों
को दाऊद के घराने से अलग कर दिया था, और
उन्होंने यरुबियाम बिन नबात को अपना बादशाह
बना लिया था। लेकिन यरुबियाम ने इसराईल
को एक संगीन गुनाह करने पर उकसाकर रब
की पैरवी करने से दूर किए रखा। 22इसराईली
यरुबियाम के बुरे नमूने पर चलते रहे और कभी
इससे बाज़ न आए।
23यही वजह है कि जो कुछ रब ने अपने
ख़ादिमों यानी नबियों की मारिफ़त फ़रमाया था
वह पूरा हुआ। उसने उन्हें अपने हुज़ूर से ख़ारिज
कर दिया, और दुश्मन उन्हें क़ैदी बनाकर असूर ले
गया जहाँ वह आज तक ज़िंदगी गुज़ारते हैं।

सामरिया में अजनबी क़ौमों को आबाद किया जाता है

24असूर के बादशाह ने बाबल, कूता, अव्वा,
हमात और सिफ़रवायम से लोगों को इसराईल
में लाकर सामरिया के इसराईलियों से ख़ाली
किए गए शहरों में बसा दिया। यह लोग सामरिया
पर क़ब्ज़ा करके उसके शहरों में बसने लगे।
25लेकिन आते वक़्त वह रब की परस्तिश नहीं
करते थे, इसलिए रब ने उनके दरमियान शेरबबर
भेज दिए जिन्होंने कई एक को फाड़ डाला।
26असूर के बादशाह को इत्तला दी गई, "जिन
लोगों को आपने जिलावतन करके सामरिया के
शहरों में बसा दिया है वह नहीं जानते कि उस
मुल्क का देवता किन किन बातों का तक़ाज़ा
करता है। नतीजे में उसने उनके दरमियान शेरबबर
भेज दिए हैं जो उन्हें फाड़ रहे हैं। और वजह यही
है कि वह उस की सहीह पूजा करने से वाक़िफ़
नहीं हैं।" 27यह सुनकर असूर के बादशाह ने हुक्म
दिया, "सामरिया से यहाँ लाए गए इमामों में से
एक को चुन लो जो अपने वतन लौटकर वहाँ
दुबारा आबाद हो जाए और लोगों को सिखाए कि

उस मुल्क का देवता अपनी पूजा के लिए किन
किन बातों का तक़ाज़ा करता है।”
28तब एक इमाम जिलावतनी से वापस आया।
बैतेल में आबाद होकर उसने नए बाशिंदों को
सिखाया कि रब की मुनासिब इबादत किस तरह
की जाती है। 29लेकिन साथ साथ वह अपने
ज़ाती देवताओं की पूजा भी करते रहे। शहर
बशहर हर क़ौम ने अपने अपने बुत बनाकर उन
तमाम ऊँची जगहों के मंदिरों में खड़े किए जो
सामरिया के लोगों ने बना छोड़े थे। 30बाबल
के बाशिंदों ने सुक्कात-बनात के बुत, कूता
के लोगों ने नैरगल के मुजस्समे, हमातवालों
ने असीमा के बुत 31और अव्वा के लोगों ने
निबहाज़ और तरताक़ के मुजस्समे खड़े किए।
सिफ़रवायम के बाशिंदे अपने बच्चों को अपने
देवताओं अद्रम्मलिक और अनम्मलिक के लिए
क़ुरबान करके जला देते थे। 32ग़रज़ सब रब की
परस्तिश के साथ साथ अपने देवताओं की पूजा
भी करते और अपने लोगों में से मुख़्तलिफ़ क़िस्म
के अफ़राद को चुनकर पुजारी मुक़र्रर करते थे
ताकि वह ऊँची जगहों के मंदिरों को सँभालें।
33वह रब की इबादत भी करते और साथ साथ
अपने देवताओं की उन क़ौमों के रिवाजों के
मुताबिक़ इबादत भी करते थे जिनमें से उन्हें यहाँ
लाया गया था।
34यह सिलसिला आज तक जारी है। सामरिया
के बाशिंदे अपने उन पुराने रिवाजों के मुताबिक़
ज़िंदगी गुज़ारते हैं और सिर्फ़ रब की परस्तिश
करने के लिए तैयार नहीं होते। वह उस की
हिदायात और अहकाम की परवा नहीं करते और
उस शरीअत की पैरवी नहीं करते जो रब ने याक़ूब
की औलाद को दी थी। (रब ने याक़ूब का नाम
इसराईल में बदल दिया था।) 35क्योंकि रब ने
इसराईल की क़ौम के साथ अहद बाँधकर उसे
हुक्म दिया था,
“दूसरे किसी भी माबूद की इबादत मत करना!
उनके सामने झुककर उनकी ख़िदमत मत करना,
न उन्हें क़ुरबानियाँ पेश करना। 36सिर्फ़ रब की
परस्तिश करो जो बड़ी क़ुदरत और अज़ीम काम
दिखाकर तुम्हें मिसर से निकाल लाया। सिर्फ़
उसी के सामने झुक जाओ, सिर्फ़ उसी को अपनी
क़ुरबानियाँ पेश करो। 37लाज़िम है कि तुम ध्यान
से उन तमाम हिदायात, अहकाम और क़वायद
की पैरवी करो जो मैंने तुम्हारे लिए क़लमबंद कर
दिए हैं। किसी और देवता की पूजा मत करना।
38वह अहद मत भूलना जो मैंने तुम्हारे साथ बाँध
लिया है, और दीगर माबूदों की परस्तिश न करो।
39सिर्फ़ और सिर्फ़ रब अपने ख़ुदा की इबादत
करो। वही तुम्हें तुम्हारे तमाम दुश्मनों के हाथ से
बचा लेगा।”
40लेकिन लोग यह सुनने के लिए तैयार नहीं
थे बल्कि अपने पुराने रस्मो-रिवाज के साथ लिपटे
रहे। 41चुनाँचे रब की इबादत के साथ ही सामरिया
के नए बाशिंदे अपने बुतों की पूजा करते रहे।
आज तक उनकी औलाद यही कुछ करती आई
है।

यहूदाह का बादशाह हिज़क़ियाह

18 इसराईल के बादशाह होसेअ बिन
ऐला की हुकूमत के तीसरे साल में
हिज़क़ियाह बिन आख़ज़ यहूदाह का बादशाह
बना। 2उस वक़्त उस की उम्र 25 साल थी, और
वह यरूशलम में रहकर 29 साल हुकूमत करता
रहा। उस की माँ अबी बिंत ज़करियाह थी। 3अपने
बाप दाऊद की तरह उसने ऐसा काम किया जो
रब को पसंद था। 4उसने ऊँची जगहों के मंदिरों
को गिरा दिया, पत्थर के उन सतूनों को टुकड़े
टुकड़े कर दिया जिनकी पूजा की जाती थी और
यसीरत देवी के खंबों को काट डाला। पीतल का
जो साँप मूसा ने बनाया था उसे भी बादशाह ने
टुकड़े टुकड़े कर दिया, क्योंकि इसराईली उन
ऐयाम तक उसके सामने बख़ूर जलाने आते थे।
(साँप नख़ुश्तान कहलाता था।)
5हिज़क़ियाह रब इसराईल के ख़ुदा पर भरोसा
रखता था। यहूदाह में न इससे पहले और न इसके
बाद ऐसा बादशाह हुआ। 6वह रब के साथ लिपटा

रहा और उस की पैरवी करने से कभी भी बाज़ न
आया। वह उन अहकाम पर अमल करता रहा जो
रब ने मूसा को दिए थे। 7इसलिए रब उसके साथ
रहा। जब भी वह किसी मक़सद के लिए निकला
तो उसे कामयाबी हासिल हुई।

चुनाँचे वह असूर की हुकूमत से आज़ाद हो
गया और उसके ताबे न रहा। 8फ़िलिस्तियों को
उसने सबसे छोटी चौकी से लेकर बड़े से बड़े
क़िलाबंद शहर तक शिकस्त दी और उन्हें मारते
मारते ग़ज़्ज़ा शहर और उसके इलाक़े तक पहुँच
गया।

असूरी इसराईल पर क़ब्ज़ा करते हैं

9हिज़क़ियाह की हुकूमत के चौथे साल में
और इसराईल के बादशाह होसेअ की हुकूमत के
सातवें साल में असूर के बादशाह सल्मनसर ने
इसराईल पर हमला किया। सामरिया शहर का
मुहासरा करके 10वह तीन साल के बाद उस पर
क़ब्ज़ा करने में कामयाब हुआ। यह हिज़क़ियाह
की हुकूमत के छटे साल और इसराईल के
बादशाह होसेअ की हुकूमत के नवें साल में
हुआ। 11असूर के बादशाह ने इसराईलियों को
जिलावतन करके कुछ ख़लह के इलाक़े में, कुछ
जौज़ान के दरियाए-ख़ाबूर के किनारे पर और कुछ
मादियों के शहरों में बसाए।

12यह सब कुछ इसलिए हुआ कि वह रब अपने
ख़ुदा के ताबे न रहे बल्कि उसके उनके साथ बँधे
हुए अहद को तोड़कर उन तमाम अहकाम के
फ़रमाँबरदार न रहे जो रब के ख़ादिम मूसा ने उन्हें
दिए थे। न वह उनकी सुनते और न उन पर अमल
करते थे।

असूरी यरूशलम का मुहासरा करते हैं

13हिज़क़ियाह बादशाह की हुकूमत के 14वें
साल में असूर के बादशाह सनहेरिब ने यहूदाह
के तमाम क़िलाबंद शहरों पर धावा बोलकर
उन पर क़ब्ज़ा कर लिया। 14जब असूर का
बादशाह लकीस के आस-पास पहुँचा तो यहूदाह
के बादशाह हिज़क़ियाह ने उसे इत्तला दी, "मुझसे
ग़लती हुई है। मुझे छोड़ दें तो जो कुछ भी आप
मुझसे तलब करेंगे मैं आपको अदा करूँगा।"

तब सनहेरिब ने हिज़क़ियाह से चाँदी के
तक़रीबन 10,000 किलोग्राम और सोने के
तक़रीबन 1,000 किलोग्राम माँग लिया।
15हिज़क़ियाह ने उसे वह तमाम चाँदी दे दी जो
रब के घर और शाही महल के ख़ज़ानों में पड़ी
थी। 16सोने का तक़ाज़ा पूरा करने के लिए उसने
रब के घर के दरवाज़ों और चौखटों पर लगा सोना
उतरवाकर उसे असूर के बादशाह को भेज दिया।
यह सोना उसने ख़ुद दरवाज़ों और चौखटों पर
चढ़वाया था।

17फिर भी असूर का बादशाह मुतमइन न
हुआ। उसने अपने सबसे आला अफ़सरों को बड़ी
फ़ौज के साथ लकीस से यरूशलम को भेजा
(उनकी अपनी ज़बान में अफ़सरों के ओहदों
के नाम तरतान, रब-सारिस और रबशाक़ी थे)।
यरूशलम पहुँचकर वह उस नाले के पास रुक
गए जो पानी को ऊपरवाले तालाब तक पहुँचाता
है (यह तालाब उस रास्ते पर है जो धोबियों
के घाट तक ले जाता है)। 18इन तीन असूरी
अफ़सरों ने इत्तला दी कि बादशाह हमसे मिलने
आए, लेकिन हिज़क़ियाह ने महल के इंचार्ज
इलियाक़ीम बिन ख़िलक़ियाह, मीरमुंशी शिबनाह
और मुशीरे-ख़ास युआख़ बिन आसफ़ को उनके
पास भेजा। 19रबशाक़ी ने उनके हाथ हिज़क़ियाह
को पैग़ाम भेजा,

"असूर के अज़ीम बादशाह फ़रमाते हैं, तुम्हारा
भरोसा किस चीज़ पर है? 20तुम समझते हो
कि ख़ाली बातें करना फ़ौजी हिकमते-अमली और
ताक़त के बराबर है। यह कैसी बात है? तुम
किस पर एतमाद कर रहे हो कि मुझसे सरकश
हो गए हो? 21क्या तुम मिसर पर भरोसा करते
हो? वह तो टूटा हुआ सरकंडा ही है। जो भी उस
पर टेक लगाए उसका हाथ वह चीरकर ज़ख़मी
कर देगा। यही कुछ उन सबके साथ हो जाएगा
जो मिसर के बादशाह फ़िरौन पर भरोसा करें!

22शायद तुम कहो, ‘हम रब अपने ख़ुदा पर
तवक्कुल करते हैं।’ लेकिन यह किस तरह हो
सकता है? हिज़क़ियाह ने तो उस की बेहुरमती
की है। क्योंकि उसने ऊँची जगहों के मंदिरों और
क़ुरबानगाहों को ढाकर यहूदाह और यरूशलम से
कहा है कि सिर्फ़ यरूशलम की क़ुरबानगाह के
सामने परस्तिश करें।

23आओ, मेरे आक़ा असूर के बादशाह से
सौदा करो। मैं तुम्हें 2,000 घोड़े दूँगा बशर्तेकि
तुम उनके लिए सवार मुहैया कर सको। लेकिन
अफ़सोस, तुम्हारे पास इतने घुड़सवार हैं ही नहीं!
24तुम मेरे आक़ा असूर के बादशाह के सबसे
छोटे अफ़सर का भी मुक़ाबला नहीं कर सकते।
लिहाज़ा मिसर के रथों पर भरोसा रखने का क्या
फ़ायदा? 25शायद तुम समझते हो कि मैं रब
की मरज़ी के बग़ैर ही इस जगह पर हमला करने
आया हूँ ताकि सब कुछ बरबाद करूँ। लेकिन ऐसा
हरगिज़ नहीं है! रब ने ख़ुद मुझे कहा कि इस
मुल्क पर धावा बोलकर इसे तबाह कर दे।”

26यह सुनकर इलियाक़ीम बिन ख़िल-
क़ियाह, शिबनाह और युआख़ ने रबशाक़ी की
तक़रीर में दख़ल देकर कहा, “बराहे-करम अरामी
ज़बान में अपने ख़ादिमों के साथ गुफ़्तगू कीजिए,
क्योंकि हम यह अच्छी तरह बोल लेते हैं। इबरानी
ज़बान इस्तेमाल न करें, वरना शहर की फ़सील
पर खड़े लोग आपकी बातें सुन लेंगे।” 27लेकिन
रबशाक़ी ने जवाब दिया, “क्या तुम समझते हो
कि मेरे मालिक ने यह पैग़ाम सिर्फ़ तुम्हें और
तुम्हारे मालिक को भेजा है? हरगिज़ नहीं! वह
चाहते हैं कि तमाम लोग यह बातें सुन लें। क्योंकि
वह भी तुम्हारी तरह अपना फ़ुज़्ला खाने और
अपना पेशाब पीने पर मजबूर हो जाएंगे।”

28फिर वह फ़सील की तरफ़ मुड़कर बुलंद
आवाज़ से इबरानी ज़बान में अवाम से मुख़ातिब
हुआ, “सुनो, शहनशाह, असूर के बादशाह के
फ़रमान पर ध्यान दो! 29बादशाह फ़रमाते हैं
कि हिज़क़ियाह तुम्हें धोका न दे। वह तुम्हें मेरे
हाथ से बचा नहीं सकता। 30बेशक वह तुम्हें
तसल्ली दिलाने की कोशिश करके कहता है,
‘रब हमें ज़रूर छुटकारा देगा, यह शहर कभी
भी असूरी बादशाह के क़ब्ज़े में नहीं आएगा।’
लेकिन इस क़िस्म की बातों से तसल्ली पाकर रब
पर भरोसा मत करना। 31हिज़क़ियाह की बातें
न मानो बल्कि असूर के बादशाह की। क्योंकि
वह फ़रमाते हैं, मेरे साथ सुलह करो और शहर
से निकलकर मेरे पास आ जाओ। फिर तुममें
से हर एक अंगूर की अपनी बेल और अंजीर के
अपने दरख़्त का फल खाएगा और अपने हौज़
का पानी पिएगा। 32फिर कुछ देर के बाद मैं तुम्हें
एक ऐसे मुल्क में ले जाऊँगा जो तुम्हारे अपने
मुल्क की मानिंद होगा। उसमें भी अनाज, नई
मै, रोटी और अंगूर के बाग़, ज़ैतून के दरख़्त
और शहद है। ग़रज़, मौत की राह इख़्तियार न
करना बल्कि ज़िंदगी की राह। हिज़क़ियाह की मत
सुनना। जब वह कहता है, ‘रब हमें बचाएगा’ तो
वह तुम्हें धोका दे रहा है। 33क्या दीगर अक़वाम
के देवता अपने मुल्कों को शाहे-असूर से बचाने
के क़ाबिल रहे हैं? 34हमात और अरफ़ाद के
देवता कहाँ रह गए हैं? सिफ़रवायम, हेना और
इव्वा के देवता क्या कर सके? और क्या किसी
देवता ने सामरिया को मेरी गिरिफ़्त से बचाया?
35नहीं, कोई भी देवता अपना मुल्क मुझसे बचा
न सका। तो फिर रब यरूशलम को किस तरह
मुझसे बचाएगा?”

36फ़सील पर खड़े लोग ख़ामोश रहे। उन्होंने
कोई जवाब न दिया, क्योंकि बादशाह ने हुक्म
दिया था कि जवाब में एक लफ़्ज़ भी न
कहें। 37फिर महल का इंचार्ज इलियाक़ीम बिन
ख़िलक़ियाह, मीरमुंशी शिबनाह और मुशीरे-ख़ास
युआख़ बिन आसफ़ रंजिश के मारे अपने लिबास
फाड़कर हिज़क़ियाह के पास वापस गए। दरबार
में पहुँचकर उन्होंने बादशाह को सब कुछ कह
सुनाया जो रबशाक़ी ने उन्हें कहा था।

रब हिज़क़ियाह को तसल्ली देता है

19 यह बातें सुनकर हिज़क़ियाह ने अपने
कपड़े फाड़े और टाट का मातमी
लिबास पहनकर रब के घर में गया। 2साथ
साथ उसने महल के इंचार्ज इलियाक़ीम, मीरमुंशी
शिबनाह और इमामों के बुज़ुर्गों को आमूस के बेटे
यसायाह नबी के पास भेजा। सब टाट के मातमी
लिबास पहने हुए थे। 3नबी के पास पहुँचकर
उन्होंने हिज़क़ियाह का पैग़ाम सुनाया, "आज हम
बड़ी मुसीबत में हैं। सज़ा के इस दिन असूरियों ने
हमारी सख़्त बेइज़्ज़ती की है। हमारा हाल दर्दे-
ज़ह में मुब्तला उस औरत का-सा है जिसके पेट
से बच्चा निकलने को है, लेकिन जो इसलिए नहीं
निकल सकता कि माँ की ताक़त जाती रही है।
4लेकिन शायद रब आपके ख़ुदा ने रबशाक़ी की
वह तमाम बातें सुनी हों जो उसके आक़ा असूर के
बादशाह ने ज़िंदा ख़ुदा की तौहीन में भेजी हैं। हो
सकता है रब आपका ख़ुदा उस की बातें सुनकर
उसे सज़ा दे। बराहे-करम हमारे लिए जो अब तक
बचे हुए हैं दुआ करें।"

5जब हिज़क़ियाह के अफ़सरों ने यसायाह
को बादशाह का पैग़ाम पहुँचाया 6तो नबी ने
जवाब दिया, "अपने आक़ा को बता देना कि
रब फ़रमाता है, 'उन धमकियों से ख़ौफ़ मत खा
जो असूरी बादशाह के मुलाज़िमों ने मेरी इहानत
करके दी हैं। 7देख, मैं उसका इरादा बदल दूँगा।
वह अफ़वाह सुनकर इतना मुज़तरिब हो जाएगा
कि अपने ही मुल्क वापस चला जाएगा। वहाँ मैं
उसे तलवार से मरवा दूँगा'।"

सनहेरिब की धमकियाँ और हिज़क़ियाह की दुआ

8रबशाक़ी यरूशलम को छोड़कर असूर के
बादशाह के पास वापस चला गया जो उस वक़्त
लकीस से रवाना होकर लिबना पर चढ़ाई कर रहा
था।

9फिर सनहेरिब को इत्तला मिली, "एथो-
पिया का बादशाह तिरहाक़ा आपसे लड़ने आ
रहा है।" तब उसने अपने क़ासिदों को दुबारा
यरूशलम भेज दिया ताकि हिज़क़ियाह को पैग़ाम
पहुँचाएँ, 10"जिस देवता पर तुम भरोसा रखते
हो उससे फ़रेब न खाओ जब वह कहता है कि
यरूशलम कभी असूरी बादशाह के क़ब्ज़े में नहीं
आएगा। 11तुम तो सुन चुके हो कि असूर के
बादशाहों ने जहाँ भी गए क्या कुछ किया है।
हर मुल्क को उन्होंने मुकम्मल तौर पर तबाह कर
दिया है। तो फिर तुम किस तरह बच जाओगे?
12क्या जौज़ान, हारान और रसफ़ के देवता
उनकी हिफ़ाज़त कर पाए? क्या मुल्के-अदन में
तिलस्सार के बाशिंदे बच सके? नहीं, कोई भी
देवता उनकी मदद न कर सका जब मेरे बापदादा
ने उन्हें तबाह किया। 13ध्यान दो, अब हमात,
अरफ़ाद, सिफ़रवायम शहर, हेना और इव्वा के
बादशाह कहाँ हैं?"

14ख़त मिलने पर हिज़क़ियाह ने उसे पढ़ लिया
और फिर रब के घर के सहन में गया। ख़त को
रब के सामने बिछाकर 15उसने रब से दुआ की,

"ऐ रब इसराईल के ख़ुदा जो करूबी फ़रिश्तों
के दरमियान तख़्तनशीन है, तू अकेला ही दुनिया
के तमाम ममालिक का ख़ुदा है। तू ही ने
आसमानो-ज़मीन को ख़लक़ किया है। 16ऐ रब,
मेरी सुन! अपनी आँखें खोलकर देख! सनहेरिब
की उन बातों पर ध्यान दे जो उसने इस मक़सद
से हम तक पहुँचाई हैं कि ज़िंदा ख़ुदा की इहानत
करे। 17ऐ रब, यह बात सच है कि असूरी
बादशाहों ने इन क़ौमों को उनके मुल्कों समेत
तबाह कर दिया है। 18वह तो उनके बुतों को आग
में फेंककर भस्म कर सकते थे, क्योंकि वह ज़िंदा
नहीं बल्कि सिर्फ़ इनसान के हाथों से बने हुए
लकड़ी और पत्थर के बुत थे। 19ऐ रब हमारे ख़ुदा,
अब मैं तुझसे इलतमास करता हूँ कि हमें असूरी
बादशाह के हाथ से बचा ताकि दुनिया के तमाम
ममालिक जान लें कि तू ऐ रब, वाहिद ख़ुदा है।"

असूरी की लान-तान पर अल्लाह का जवाब

20फिर यसायाह बिन आमूस ने हिज़-
क़ियाह को पैग़ाम भेजा, “रब इसराईल का ख़ुदा
फ़रमाता है कि मैंने असूरी बादशाह सनहेरिब के
बारे में तेरी दुआ सुनी है। 21अब रब का उसके
ख़िलाफ़ फ़रमान सुन,

कुँवारी सिय्यून बेटी तुझे हक़ीर जानती है,
हाँ यरूशलम बेटी अपना सर हिला हिलाकर
हिक़ारतआमेज़ नज़र से तेरे पीछे देखती है।
22क्या तू नहीं जानता कि किस को गालियाँ दीं
और किसकी इहानत की है? क्या तुझे नहीं
मालूम कि तूने किसके ख़िलाफ़ आवाज़ बुलंद
की है? जिसकी तरफ़ तू ग़ुरूर की नज़र से देख
रहा है वह इसराईल का क़ुद्दूस है!

23अपने क़ासिदों के ज़रीए तूने रब की इहानत
की है। तू डींगें मारकर कहता है, ‘मैं अपने बेशुमार
रथों से पहाड़ों की चोटियों और लुबनान की
इंतहा तक चढ़ गया हूँ। मैं देवदार के बड़े बड़े
और जूनीपर के बेहतरीन दरख़्तों को काटकर
लुबनान के दूरतरीन कोनों तक, उसके सबसे घने
जंगल तक पहुँच गया हूँ। 24मैंने ग़ैरमुल्कों में कुएँ
खुदवाकर उनका पानी पी लिया है। मेरे तल्वों तले
मिसर की तमाम नदियाँ ख़ुश्क हो गईं।’

25ऐ असूरी बादशाह, क्या तूने नहीं सुना कि
बड़ी देर से मैंने यह सब कुछ मुक़र्रर किया?
क़दीम ज़माने में ही मैंने इसका मनसूबा बाँध
लिया, और अब मैं इसे वुजूद में लाया। मेरी मरज़ी
थी कि तू क़िलाबंद शहरों को ख़ाक में मिलाकर
पत्थर के ढेरों में बदल दे। 26इसी लिए उनके
बाशिंदों की ताक़त जाती रही, वह घबराए और
शरमिंदा हुए। वह घास की तरह कमज़ोर थे, छत
पर उगनेवाली उस हरियाली की मानिंद जो थोड़ी
देर के लिए फलती-फूलती तो है, लेकिन लू चलते
वक़्त एकदम मुरझा जाती है। 27मैं तो तुझसे
ख़ूब वाक़िफ़ हूँ। मुझे मालूम है कि तू कहाँ ठहरा
हुआ है, और तेरा आना जाना मुझसे पोशीदा नहीं
रहता। मुझे पता है कि तू मेरे ख़िलाफ़ कितने तैश
में आ गया है। 28तेरा तैश और ग़ुरूर देखकर मैं
तेरी नाक में नकेल और तेरे मुँह में लगाम डालकर
तुझे उस रास्ते पर से वापस घसीट ले जाऊँगा
जिस पर से तू यहाँ आ पहुँचा है।

29ऐ हिज़क़ियाह, मैं इस निशान से तुझे
तसल्ली दिलाऊँगा कि इस साल और आने-
वाले साल तुम वह कुछ खाओगे जो खेतों में ख़ुद
बख़ुद उगेगा। लेकिन तीसरे साल तुम बीज बोकर
फ़सलें काटोगे और अंगूर के बाग़ लगाकर उनका
फल खाओगे। 30यहूदाह के बचे हुए बाशिंदे एक
बार फिर जड़ पकड़कर फल लाएँगे। 31क्योंकि
यरूशलम से क़ौम का बक़िया निकल आएगा,
और कोहे-सिय्यून का बचा-खुचा हिस्सा दुबारा
मुल्क में फैल जाएगा। रब्बुल-अफ़वाज की ग़ैरत
यह कुछ सरंजाम देगी।

32जहाँ तक असूरी बादशाह का ताल्लुक़ है रब
फ़रमाता है कि वह इस शहर में दाख़िल नहीं होगा।
वह एक तीर तक उसमें नहीं चलाएगा। न वह ढाल
लेकर उस पर हमला करेगा, न शहर की फ़सील
के साथ मिट्टी का ढेर लगाएगा। 33जिस रास्ते से
बादशाह यहाँ आया उसी रास्ते पर से वह अपने
मुल्क वापस चला जाएगा। इस शहर में वह घुसने
नहीं पाएगा। यह रब का फ़रमान है। 34क्योंकि मैं
अपनी और अपने ख़ादिम दाऊद की ख़ातिर इस
शहर का दिफ़ा करके इसे बचाऊँगा।”

35उसी रात रब का फ़रिश्ता निकल आया और
असूरी लशकरगाह में से गुज़रकर 1,85,000
फ़ौजियों को मार डाला। जब लोग सुबह-सवेरे
उठे तो चारों तरफ़ लाशें ही लाशें नज़र आईं।

36यह देखकर सनहेरिब अपने ख़ैमे उ-
खाड़कर अपने मुल्क वापस चला गया। नीनवा
शहर पहुँचकर वह वहाँ ठहर गया। 37एक दिन
जब वह अपने देवता निसरूक के मंदिर में पूजा
कर रहा था तो उसके बेटों अद्रम्मलिक और
शराज़र ने उसे तलवार से क़त्ल कर दिया और
फ़रार होकर मुल्के-अरारात में पनाह ली। फिर
उसका बेटा असर्हद्दून तख़्तनशीन हुआ।

अल्लाह हिज़क़ियाह को शफ़ा देता है

20 उन दिनों में हिज़क़ियाह इतना बीमार हुआ कि मरने की नौबत आ पहुँची। आमूस का बेटा यसायाह नबी उससे मिलने आया और कहा, "रब फ़रमाता है कि अपने घर का बंदोबस्त कर ले, क्योंकि तुझे मरना है। तू इस बीमारी से शफ़ा नहीं पाएगा।"

2यह सुनकर हिज़क़ियाह ने अपना मुँह दीवार
की तरफ़ फेरकर दुआ की, 3"ऐ रब, याद कर
कि मैं वफ़ादारी और ख़ुलूसदिली से तेरे सामने चलता रहा हूँ, कि मैं वह कुछ करता आया हूँ जो तुझे पसंद है।" फिर वह फूट फूटकर रोने लगा।

4इतने में यसायाह चला गया था। लेकिन वह
अभी अंदरूनी सहन से निकला नहीं था कि उसे
रब का कलाम मिला, 5"मेरी क़ौम के राहनुमा
हिज़क़ियाह के पास वापस जाकर उसे बता देना कि रब तेरे बाप दाऊद का ख़ुदा फ़रमाता है, 'मैंने तेरी दुआ सुन ली और तेरे आँसू देखे हैं। मैं तुझे शफ़ा दूँगा। परसों तू दुबारा रब के घर में
जाएगा। 6मैं तेरी ज़िंदगी में 15 साल का इज़ाफ़ा
करूँगा। साथ साथ मैं तुझे और इस शहर को असूर के बादशाह से बचा लूँगा। मैं अपनी और अपने ख़ादिम दाऊद की ख़ातिर शहर का दिफ़ा करूँगा'।"

7फिर यसायाह ने हुक्म दिया, "अंजीर की
टिक्की लाकर बादशाह के नासूर पर बाँध दो!" जब ऐसा किया गया तो हिज़क़ियाह को शफ़ा
मिली। 8पहले हिज़क़ियाह ने यसायाह से पूछा
था, "रब मुझे कौन-सा निशान देगा जिससे मुझे यक़ीन आए कि वह मुझे शफ़ा देगा और कि मैं परसों दुबारा रब के घर की इबादत में शरीक
हूँगा?" 9यसायाह ने जवाब दिया, "रब धूपघड़ी
का साया दस दर्जे आगे करेगा या दस दर्जे पीछे। इससे आप जान लेंगे कि वह अपना वादा पूरा करेगा। आप क्या चाहते हैं, क्या साया दस दर्जे
आगे चले या दस दर्जे पीछे?" 10हिज़क़ियाह
ने जवाब दिया, "यह करवाना कि साया दस दर्जे आगे चले आसान काम है। नहीं, वह दस दर्जे पीछे जाए।"

11तब यसायाह नबी ने रब से दुआ की, और
रब ने आख़ज़ की बनाई हुई धूपघड़ी का साया दस दर्जे पीछे कर दिया।

हिज़क़ियाह से संगीन ग़लती होती है

12थोड़ी देर के बाद बाबल के बादशाह
मरूदक-बलदान बिन बलदान ने हिज़क़ियाह की बीमारी की ख़बर सुनकर वफ़्द के हाथ
ख़त और तोहफ़े भेजे। 13हिज़क़ियाह ने वफ़्द का
इस्तक़बाल करके उसे वह तमाम ख़ज़ाने दिखाए जो ज़ख़ीराख़ाने में महफ़ूज़ रखे गए थे यानी तमाम सोना-चाँदी, बलसान का तेल और बाक़ी क़ीमती तेल। उसने असलिहाख़ाना और बाक़ी सब कुछ भी दिखाया जो उसके ख़ज़ानों में था। पूरे महल और पूरे मुल्क में कोई ख़ास चीज़ न रही
जो उसने उन्हें न दिखाई। 14तब यसायाह नबी
हिज़क़ियाह बादशाह के पास आया और पूछा, "इन आदमियों ने क्या कहा? कहाँ से आए हैं?" हिज़क़ियाह ने जवाब दिया, "दूर-दराज़
मुल्क बाबल से आए हैं।" 15यसायाह बोला,
"उन्होंने महल में क्या कुछ देखा?" हिज़क़ियाह ने कहा, "उन्होंने महल में सब कुछ देख लिया है। मेरे ख़ज़ानों में कोई चीज़ न रही जो मैंने उन्हें नहीं दिखाई।"

16तब यसायाह ने कहा, "रब का फ़रमान सुनें!
17एक दिन आनेवाला है कि तेरे महल का तमाम
माल छीन लिया जाएगा। जितने भी ख़ज़ाने तू और तेरे बापदादा ने आज तक जमा किए हैं उन सबको दुश्मन बाबल ले जाएगा। रब फ़रमाता है
कि एक भी चीज़ पीछे नहीं रहेगी। 18तेरे बेटों में
से भी बाज़ छीन लिए जाएंगे, ऐसे जो अब तक पैदा नहीं हुए। तब वह ख़्वाजासरा बनकर शाहे-बाबल के महल में ख़िदमत करेंगे।"

19हिज़क़ियाह बोला, "रब का जो पैग़ाम
आपने मुझे दिया है वह ठीक है।" क्योंकि उसने

सोचा, “बड़ी बात यह है कि मेरे जीते-जी अमनो-अमान होगा।”

हिज़क़ियाह की मौत

20बाक़ी जो कुछ हिज़क़ियाह की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कामयाबियाँ उसे हासिल हुईं वह ‘शाहाने-यहूदाह की तारीख़’ की किताब में दर्ज हैं। वहाँ यह भी बयान किया गया है कि उसने किस तरह तालाब बनवाकर वह सुरंग खुदवाई जिसके ज़रीए चश्मे का पानी शहर तक पहुँचता
है। 21जब हिज़क़ियाह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसका बेटा मनस्सी तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह मनस्सी

21 मनस्सी 12 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया 55 साल था। उस की
माँ हिफ़सीबाह थी। 2मनस्सी का चाल-चलन रब को नापसंद था। उसने उन क़ौमों के क़ाबिले-घिन रस्मो-रिवाज अपना लिए जिन्हें रब ने इसराईलियों के आगे से निकाल दिया था।
3ऊँची जगहों के जिन मंदिरों को उसके बाप हिज़क़ियाह ने ढा दिया था उन्हें उसने नए सिरे से तामीर किया। उसने बाल देवता की क़ुरबानगाहें बनवाईं और यसीरत देवी का खंबा खड़ा किया, बिलकुल उसी तरह जिस तरह इसराईल के बादशाह अख़ियब ने किया था। इनके अलावा वह सूरज, चाँद बल्कि आसमान के पूरे लशकर को
सिजदा करके उनकी ख़िदमत करता था। 4उसने रब के घर में भी अपनी क़ुरबानगाहें खड़ी कीं, हालाँकि रब ने इस मक़ाम के बारे में फ़रमाया था, “मैं यरूशलम में अपना नाम क़ायम करूँगा।”
5लेकिन मनस्सी ने परवा न की बल्कि रब के घर के दोनों सहनों में आसमान के पूरे लशकर के लिए
क़ुरबानगाहें बनवाईं। 6यहाँ तक कि उसने अपने बेटे को भी क़ुरबान करके जला दिया। जादूगरी और ग़ैबदानी करने के अलावा वह मुरदों की रूहों से राबिता करनेवालों और रम्मालों से भी मशवरा करता था।

ग़रज़ उसने बहुत कुछ किया जो रब को नापसंद
था और उसे तैश दिलाया। 7यसीरत देवी का खंबा बनवाकर उसने उसे रब के घर में खड़ा किया, हालाँकि रब ने दाऊद और उसके बेटे सुलेमान से कहा था, “इस घर और इस शहर यरूशलम में जो मैंने तमाम इसराईली क़बीलों में से चुन लिया है
मैं अपना नाम अबद तक क़ायम रखूँगा। 8अगर इसराईली एहतियात से मेरे उन तमाम अहकाम की पैरवी करें जो मूसा ने शरीअत में उन्हें दिए तो मैं कभी नहीं होने दूँगा कि इसराईलियों को उस मुल्क से जिलावतन कर दिया जाए जो मैंने उनके
बापदादा को अता किया था।” 9लेकिन लोग रब के ताबे न रहे, और मनस्सी ने उन्हें ऐसे ग़लत काम करने पर उकसाया जो उन क़ौमों से भी सरज़द नहीं हुए थे जिन्हें रब ने मुल्क में दाख़िल होते वक़्त उनके आगे से तबाह कर दिया था।
10आख़िरकार रब ने अपने ख़ादिमों यानी
नबियों की मारिफ़त एलान किया, 11“यहूदाह के बादशाह मनस्सी से क़ाबिले-घिन गुनाह सरज़द हुए हैं। उस की हरकतें मुल्क में इसराईल से पहले रहनेवाले अमोरियों की निसबत कहीं ज़्यादा शरीर हैं। अपने बुतों से उसने यहूदाह के बाशिंदों को गुनाह करने पर उकसाया है।
12चुनाँचे रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है, ‘मैं यरूशलम और यहूदाह पर ऐसी आफ़त नाज़िल करूँगा कि जिसे भी इसकी ख़बर मिलेगी उसके
कान बजने लगेंगे। 13मैं यरूशलम को उसी नाप से नापूँगा जिससे सामरिया को नाप चुका हूँ। मैं उसे उस तराज़ू में रखकर तोलूँगा जिसमें अख़ियब का घराना तोल चुका हूँ। जिस तरह बरतन सफ़ाई करते वक़्त पोंछकर उलटे रखे जाते हैं उसी तरह
मैं यरूशलम का सफ़ाया कर दूँगा। 14उस वक़्त मैं अपनी मीरास का बचा-खुचा हिस्सा भी तर्क कर दूँगा। मैं उन्हें उनके दुश्मनों के हवाले कर
दूँगा जो उनकी लूट-मार करेंगे। 15और वजह यही होगी कि उनसे ऐसी हरकतें सरज़द हुई हैं जो मुझे

नापसंद हैं। उस दिन से लेकर जब उनके बापदादा
मिसर से निकल आए आज तक वह मुझे तैश
दिलाते रहे हैं’।”

16लेकिन मनस्सी ने न सिर्फ़ यहूदाह के
बाशिंदों को बुतपरस्ती और ऐसे काम करने पर
उकसाया जो रब को नापसंद थे बल्कि उसने
बेशुमार बेक़ुसूर लोगों को क़त्ल भी किया। उनके
ख़ून से यरूशलम एक सिरे से दूसरे सिरे तक भर
गया।

17बाक़ी जो कुछ मनस्सी की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उसने किया वह ‘शाहाने-
यहूदाह की तारीख़’ की किताब में दर्ज है। उसमें
उसके गुनाहों का ज़िक्र भी किया गया है। 18जब
वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे
उसके महल के बाग़ में दफ़नाया गया जो उज़्ज़ा
का बाग़ कहलाता है। फिर उसका बेटा अमून
तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह अमून

19अमून 22 साल की उम्र में बादशाह बना
और दो साल तक यरूशलम में हुकूमत करता
रहा। उस की माँ मसुल्लिमत बिंत हरूस युतबा
की रहनेवाली थी। 20अपने बाप मनस्सी की तरह
अमून ऐसा ग़लत काम करता रहा जो रब को
नापसंद था। 21वह हर तरह से अपने बाप के बुरे
नमूने पर चलकर उन बुतों की ख़िदमत और पूजा
करता रहा जिनकी पूजा उसका बाप करता आया
था। 22रब अपने बापदादा के ख़ुदा को उसने तर्क
किया, और वह उस की राहों पर नहीं चलता था।

23एक दिन अमून के कुछ अफ़सरों ने उसके
ख़िलाफ़ साज़िश करके उसे महल में क़त्ल
कर दिया। 24लेकिन उम्मत ने तमाम साज़िश
करनेवालों को मार डाला और अमून के बेटे
यूसियाह को बादशाह बना दिया।

25बाक़ी जो कुछ अमून की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उसने किया वह ‘शाहाने-
यहूदाह की तारीख़’ की किताब में बयान किया
गया है। 26उसे उज़्ज़ा के बाग़ में उस की अपनी
क़ब्र में दफ़न किया गया। फिर उसका बेटा
यूसियाह तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह यूसियाह

22 यूसियाह 8 साल की उम्र में बादशाह
बना, और यरूशलम में रहकर उस की
हुकूमत का दौरानिया 31 साल था। उस की माँ
यदीदा बिंत अदायाह बुसक़त की रहनेवाली थी।
2यूसियाह वह कुछ करता रहा जो रब को पसंद
था। वह हर बात में अपने बाप दाऊद के अच्छे
नमूने पर चलता रहा और उससे न दाईं, न बाईं
तरफ़ हटा।

3अपनी हुकूमत के 18वें साल में यूसियाह
बादशाह ने अपने मीरमुंशी साफ़न बिन
असलियाह बिन मसुल्लाम को रब के घर के पास
भेजकर कहा, 4“इमामे-आज़म ख़िलक़ियाह के
पास जाकर उसे बता देना कि उन तमाम पैसों
को गिन लें जो दरबानों ने लोगों से जमा किए
हैं। 5-6फिर पैसे उन ठेकेदारों को दे दें जो रब के
घर की मरम्मत करवा रहे हैं ताकि वह कारीगरों,
तामीर करनेवालों और राजों की उजरत अदा कर
सकें। इन पैसों से वह दराड़ों को ठीक करने के
लिए दरकार लकड़ी और तराशे हुए पत्थर भी
ख़रीदें। 7ठेकेदारों को अख़राजात का हिसाब-
किताब देने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि वह
क़ाबिले-एतमाद हैं।”

रब के घर से शरीअत की किताब मिल जाती है

8जब मीरमुंशी साफ़न ख़िलक़ियाह के पास
पहुँचा तो इमामे-आज़म ने उसे एक किताब
दिखाकर कहा, “मुझे रब के घर में शरीअत की
किताब मिली है।” उसने उसे साफ़न को दे दिया
जिसने उसे पढ़ लिया। 9तब साफ़न बादशाह के
पास गया और उसे इत्तला दी, “हमने रब के घर
में जमाशुदा पैसे मरम्मत पर मुक़र्रर ठेकेदारों और
बाक़ी काम करनेवालों को दे दिए हैं।” 10फिर
साफ़न ने बादशाह को बताया, “ख़िलक़ियाह ने

मुझे एक किताब दी है।” किताब को खोलकर वह बादशाह की मौजूदगी में उस की तिलावत करने लगा।

11किताब की बातें सुनकर बादशाह ने रंजीदा होकर अपने कपड़े फाड़ लिए। 12उसने ख़िलक़ियाह इमाम, अख़ीक़ाम बिन साफ़न, अकबोर बिन मीकायाह, मीरमुंशी साफ़न और अपने ख़ास ख़ादिम असायाह को बुलाकर उन्हें हुक्म दिया, 13“जाकर मेरी और क़ौम बल्कि तमाम यहूदाह की ख़ातिर रब से इस किताब में दर्ज बातों के बारे में दरियाफ़्त करें। रब का जो ग़ज़ब हम पर नाज़िल होनेवाला है वह निहायत सख़्त है, क्योंकि हमारे बापदादा न किताब के फ़रमानों के ताबे रहे, न उन हिदायात के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी है जो उसमें हमारे लिए दर्ज की गई हैं।”

14चुनाँचे ख़िलक़ियाह इमाम, अख़ीक़ाम, अकबोर, साफ़न और असायाह ख़ुलदा नबिया को मिलने गए। ख़ुलदा का शौहर सल्लूम बिन तिक़्वा बिन ख़र्ख़स रब के घर के कपड़े सँभालता था। वह यरूशलम के नए इलाक़े में रहते थे।
15-16ख़ुलदा ने उन्हें जवाब दिया,

“रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि जिस आदमी ने तुम्हें भेजा है उसे बता देना, ‘रब फ़रमाता है कि मैं इस शहर और उसके बाशिंदों पर आफ़त नाज़िल करूँगा। वह तमाम बातें पूरी हो जाएँगी जो यहूदाह के बादशाह ने किताब में पढ़ी
हैं। 17क्योंकि मेरी क़ौम ने मुझे तर्क करके दीगर माबूदों को क़ुरबानियाँ पेश की हैं और अपने हाथों से बुत बनाकर मुझे तैश दिलाया है। मेरा ग़ज़ब इस मक़ाम पर नाज़िल हो जाएगा और कभी ख़त्म नहीं होगा।’

18लेकिन यहूदाह के बादशाह के पास जाएँ जिसने आपको रब से दरियाफ़्त करने के लिए भेजा है और उसे बता दें कि रब इसराईल का
ख़ुदा फ़रमाता है, ‘मेरी बातें सुनकर 19तेरा दिल
नरम हो गया है। जब तुझे पता चला कि मैंने इस मक़ाम और इसके बाशिंदों के बारे में फ़रमाया है कि वह लानती और तबाह हो जाएंगे तो तूने अपने आपको रब के सामने पस्त कर दिया। तूने रंजीदा होकर अपने कपड़े फाड़ लिए और मेरे हुज़ूर फूट फूटकर रोया। रब फ़रमाता है कि यह देखकर मैंने
तेरी सुनी है। 20जब तू मेरे कहने पर मरकर अपने बापदादा से जा मिलेगा तो सलामती से दफ़न होगा। जो आफ़त मैं शहर पर नाज़िल करूँगा वह तू ख़ुद नहीं देखेगा’।”

अफ़सर बादशाह के पास वापस गए और उसे ख़ुलदा का जवाब सुना दिया।

यूसियाह रब से अहद बाँधता है

23 तब बादशाह यहूदाह और यरूशलम के तमाम बुज़ुर्गों को बुलाकर
2रब के घर में गया। सब लोग छोटे से लेकर बड़े तक उसके साथ गए यानी यहूदाह के आदमी, यरूशलम के बाशिंदे, इमाम और नबी। वहाँ पहुँचकर जमात के सामने अहद की उस पूरी किताब की तिलावत की गई जो रब के घर में मिली थी।

3फिर बादशाह ने सतून के पास खड़े होकर रब के हुज़ूर अहद बाँधा और वादा किया, “हम रब की पैरवी करेंगे, हम पूरे दिलो-जान से उसके अहकाम और हिदायात पूरी करके इस किताब में दर्ज अहद की बातें क़ायम रखेंगे।” पूरी क़ौम अहद में शरीक हुई।

यूसियाह बुतपरस्ती को ख़त्म करता है

4अब बादशाह ने इमामे-आज़म ख़िलक़ियाह, दूसरे दर्जे पर मुक़र्रर इमामों और दरबानों को हुक्म दिया, “रब के घर में से वह तमाम चीज़ें निकाल दें जो बाल देवता, यसीरत देवी और आसमान के पूरे लशकर की पूजा के लिए इस्तेमाल हुई हैं।” फिर उसने यह सारा सामान यरूशलम के बाहर वादीए-क़िदरोन के खुले मैदान में जला दिया और उस की राख उठाकर बैतेल
ले गया। 5उसने उन बुतपरस्त पुजारियों को भी हटा दिया जिन्हें यहूदाह के बादशाहों ने यहूदाह के

शहरों और यरूशलम के गिर्दो-नवाह के मंदिरों में
क़ुरबानियाँ पेश करने के लिए मुक़र्रर किया था।
यह पुजारी न सिर्फ़ बाल देवता को अपने नज़राने
पेश करते थे बल्कि सूरज, चाँद, झुरमुटों और
आसमान के पूरे लशकर को भी। 6यसीरत देवी
का खंबा यूसियाह ने रब के घर से निकालकर
शहर के बाहर वादीए-क़िदरोन में जला दिया।
फिर उसने उसे पीसकर उस की राख ग़रीब लोगों
की क़ब्रों पर बिखेर दी। 7रब के घर के पास ऐसे
मकान थे जो जिस्मफ़रोश मर्दों और औरतों के
लिए बनाए गए थे। उनमें औरतें यसीरत देवी के
लिए कपड़े भी बुनती थीं। अब बादशाह ने उनको
भी गिरा दिया।

8फिर यूसियाह तमाम इमामों को यरू-
शलम वापस लाया। साथ साथ उसने यहूदाह के
शिमाल में जिबा से लेकर जुनूब में बैर-सबा तक
ऊँची जगहों के उन तमाम मंदिरों की बेहुरमती
की जहाँ इमाम पहले क़ुरबानियाँ पेश करते थे।
यरूशलम के उस दरवाज़े के पास भी दो मंदिर
थे जो शहर के सरदार यशुअ के नाम से मशहूर
था। इनको भी यूसियाह ने ढा दिया। (शहर में
दाख़िल होते वक़्त यह मंदिर बाईं तरफ़ नज़र आते
थे।) 9जिन इमामों ने ऊँची जगहों पर ख़िदमत
की थी उन्हें यरूशलम में रब के हुज़ूर क़ुरबानियाँ
पेश करने की इजाज़त नहीं थी। लेकिन वह बाक़ी
इमामों की तरह बेख़मीरी रोटी के लिए मख़सूस
रोटी खा सकते थे। 10बिन-हिन्नूम की वादी की
क़ुरबानगाह बनाम तूफ़त को भी बादशाह ने ढा
दिया ताकि आइंदा कोई भी अपने बेटे या बेटी को
जलाकर मलिक देवता को क़ुरबान न कर सके।
11घोड़े के जो मुजस्समे यहूदाह के बादशाहों ने
सूरज देवता की ताज़ीम में खड़े किए थे उन्हें भी
यूसियाह ने गिरा दिया और उनके रथों को जला
दिया। यह घोड़े रब के घर के सहन में दरवाज़े के
साथ खड़े थे, वहाँ जहाँ दरबारी अफ़सर बनाम
नातन-मलिक का कमरा था। 12आख़ज़ बादशाह
ने अपनी छत पर एक कमरा बनाया था जिसकी
छत पर भी मुख़्तलिफ़ बादशाहों की बनी हुई
क़ुरबानगाहें थीं। अब यूसियाह ने इनको भी ढा
दिया और उन दो क़ुरबानगाहों को भी जो मनस्सी
ने रब के घर के दो सहनों में खड़ी की थीं। इनको
टुकड़े टुकड़े करके उसने मलबा वादीए-क़िदरोन
में फेंक दिया। 13नीज़, बादशाह ने यरूशलम के
मशरिक़ में ऊँची जगहों के मंदिरों की बेहुरमती
की। यह मंदिर हलाकत के पहाड़ के जुनूब में
थे, और सुलेमान बादशाह ने उन्हें तामीर किया
था। उसने उन्हें सैदा की शर्मनाक देवी अस्तारात,
मोआब के मकरूह देवता कमोस और अम्मोन के
क़ाबिले-घिन देवता मिलकूम के लिए बनाया था।
14यूसियाह ने देवताओं के लिए मख़सूस किए
गए सतूनों को टुकड़े टुकड़े करके यसीरत देवी
के खंबे कटवा दिए और मक़ामात पर इनसानी
हड्डियाँ बिखेरकर उनकी बेहुरमती की।

यूसियाह बैतेल और सामरिया के मंदिरों को गिरा देता है

15-16बैतेल में अब तक ऊँची जगह पर वह
मंदिर और क़ुरबानगाह पड़ी थी जो यरुबियाम
बिन नबात ने तामीर की थी। यरुबियाम ही ने
इसराईल को गुनाह करने पर उकसाया था। जब
यूसियाह ने देखा कि जिस पहाड़ पर क़ुरबानगाह
है उस की ढलानों पर बहुत-सी क़ब्रें हैं तो
उसने हुक्म दिया कि उनकी हड्डियाँ निकालकर
क़ुरबानगाह पर जला दी जाएँ। यों क़ुरबानगाह की
बेहुरमती बिलकुल उसी तरह हुई जिस तरह रब ने
मर्दे-ख़ुदा की मारिफ़त फ़रमाया था। इसके बाद
यूसियाह ने मंदिर और क़ुरबानगाह को गिरा दिया।
उसने यसीरत देवी का मुजस्समा कूट कूटकर
आख़िर में सब कुछ जला दिया।

17फिर यूसियाह को एक और क़ब्र नज़र आई।
उसने शहर के बाशिंदों से पूछा, "यह किसकी क़ब्र
है?" उन्होंने जवाब दिया, "यह यहूदाह के उस
मर्दे-ख़ुदा की क़ब्र है जिसने बैतेल की क़ुरबानगाह
के बारे में ऐन वह पेशगोई की थी जो आज आपके
वसीले से पूरी हुई है।" 18यह सुनकर बादशाह
ने हुक्म दिया, "इसे छोड़ दो! कोई भी इसकी

हड्डियों को न छेड़े।" चुनाँचे उस की और उस नबी की हड्डियाँ बच गईं जो सामरिया से उससे मिलने आया और बाद में उस की क़ब्र में दफ़नाया गया था।

19जिस तरह यूसियाह ने बैतेल के मंदिर को तबाह किया उसी तरह उसने सामरिया के तमाम शहरों के मंदिरों के साथ किया। उन्हें ऊँची जगहों पर बनाकर इसराईल के बादशाहों ने रब को तैश दिलाया था।
20इन मंदिरों के पुजारियों को उसने उनकी अपनी अपनी क़ुरबानगाहों पर सज़ाए-मौत दी और फिर इनसानी हड्डियाँ उन पर जलाकर उनकी बेहुरमती की। इसके बाद वह यरूशलम लौट गया।

फ़सह की ईद मनाई जाती है

21यरूशलम में आकर बादशाह ने हुक्म दिया, "पूरी क़ौम रब अपने ख़ुदा की ताज़ीम में फ़सह की ईद मनाए, जिस तरह अहद की किताब में फ़रमाया गया है।"
22उस ज़माने से लेकर जब क़ाज़ी इसराईल की राहनुमाई करते थे यूसियाह के दिनों तक फ़सह की ईद इस तरह नहीं मनाई गई थी। इसराईल और यहूदाह के बादशाहों के ऐयाम में भी ऐसी ईद नहीं मनाई गई थी।
23यूसियाह की हुकूमत के 18वें साल में पहली दफ़ा रब की ताज़ीम में ऐसी ईद यरूशलम में मनाई गई।

यूसियाह की फ़रमाँबरदारी

24यूसियाह उन तमाम हिदायात के ताबे रहा जो शरीअत की उस किताब में दर्ज थीं जो ख़िलक़ियाह इमाम को रब के घर में मिली थी। चुनाँचे उसने मुरदों की रूहों से राबिता करनेवालों, रम्मालों, घरेलू बुतों, दूसरे बुतों और बाक़ी तमाम मकरूह चीज़ों को ख़त्म कर दिया।
25न यूसियाह से पहले, न उसके बाद उस जैसा कोई बादशाह हुआ जिसने उस तरह पूरे दिल, पूरी जान और पूरी ताक़त के साथ रब के पास वापस आकर मूसवी शरीअत के हर फ़रमान के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी हो।
26तो भी रब यहूदाह पर अपने ग़ुस्से से बाज़ न आया, क्योंकि मनस्सी ने अपनी ग़लत हरकतों से उसे हद से ज़्यादा तैश दिलाया था।
27इसी लिए रब ने फ़रमाया, "जो कुछ मैंने इसराईल के साथ किया वही कुछ यहूदाह के साथ भी करूँगा। मैं उसे अपने हुज़ूर से ख़ारिज कर दूँगा। अपने चुने हुए शहर यरूशलम को मैं रद्द करूँगा और साथ साथ उस घर को भी जिसके बारे में मैंने कहा, 'वहाँ मेरा नाम होगा'।"

28बाक़ी जो कुछ यूसियाह की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-यहूदाह की तारीख़' की किताब में बयान किया गया है।

29यूसियाह की हुकूमत के दौरान मिसर का बादशाह निकोह फ़िरौन दरियाए-फ़ुरात के लिए रवाना हुआ ताकि असूर के बादशाह से लड़े। रास्ते में यूसियाह उससे लड़ने के लिए निकला। लेकिन जब मजिद्दो के क़रीब उनका एक दूसरे के साथ मुक़ाबला हुआ तो निकोह ने उसे मार दिया।
30यूसियाह के मुलाज़िम उस की लाश रथ पर रखकर मजिद्दो से यरूशलम ले आए जहाँ उसे उस की अपनी क़ब्र में दफ़न किया गया। फिर उम्मत ने उसके बेटे यहुआख़ज़ को मसह करके बाप के तख़्त पर बिठा दिया।

यहूदाह का बादशाह यहुआख़ज़

31यहुआख़ज़ 23 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया तीन माह था। उस की माँ हमूतल बिंत यरमियाह लिबना की रहनेवाली थी।
32अपने बापदादा की तरह वह भी ऐसा काम करता रहा जो रब को नापसंद था।
33निकोह फ़िरौन ने मुल्के-हमात के शहर रिबला में उसे गिरिफ़्तार कर लिया, और उस की हुकूमत ख़त्म हुई। मुल्के-यहूदाह को ख़राज के तौर पर तक़रीबन 3,400 किलोग्राम चाँदी और 34 किलोग्राम सोना अदा करना पड़ा।
34यहुआख़ज़ की जगह फ़िरौन ने यूसियाह के एक और बेटे को तख़्त पर बिठाया।

उसके नाम इलियाक़ीम को उसने यहूयक़ीम में बदल दिया। यहुआख़ज़ को वह अपने साथ मिसर ले गया जहाँ वह बाद में मरा भी।

35मतलूबा चाँदी और सोने की रक़म अदा करने के लिए यहूयक़ीम ने लोगों से ख़ास टैक्स लिया। उम्मत को अपनी दौलत के मुताबिक़ पैसे देने पड़े। इस तरीक़े से यहूयक़ीम फ़िरौन को ख़राज अदा कर सका।

यहूदाह का बादशाह यहूयक़ीम

36यहूयक़ीम 25 साल की उम्र में बादशाह बना, और वह यरूशलम में रहकर 11 साल हुकूमत करता रहा। उस की माँ ज़बूदा बिंत फ़िदायाह रूमाह की रहनेवाली थी। 37बापदादा की तरह उसका चाल-चलन भी रब को नापसंद था।

24 यहूयक़ीम की हुकूमत के दौरान बाबल के बादशाह नबूकदनज़्ज़र ने यहूदाह पर हमला किया। नतीजे में यहूयक़ीम उसके ताबे हो गया। लेकिन तीन साल के बाद वह सरकश हो गया। 2तब रब ने बाबल, शाम, मोआब और अम्मोन से डाकुओं के जत्थे भेज दिए ताकि उसे तबाह करें। वैसा ही हुआ जिस तरह रब ने अपने ख़ादिमों यानी नबियों की मारिफ़त फ़रमाया था। 3यह आफ़तें इसलिए यहूदाह पर आईं कि रब ने इनका हुक्म दिया था। वह मनस्सी के संगीन गुनाहों की वजह से यहूदाह को अपने हुज़ूर से ख़ारिज करना चाहता था। 4वह यह हक़ीक़त भी नज़रंदाज़ न कर सका कि मनस्सी ने यरूशलम को बेक़ुसूर लोगों के ख़ून से भर दिया था। रब यह मुआफ़ करने के लिए तैयार नहीं था।

5बाक़ी जो कुछ यहूयक़ीम की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-यहूदाह की तारीख़' की किताब में दर्ज है। 6जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसका बेटा यहूयाकीन तख़्तनशीन हुआ। 7उस वक़्त मिसर का बादशाह दुबारा अपने मुल्क से निकल न सका, क्योंकि बाबल के बादशाह ने मिसर की सरहद बनाम वादीए-मिसर से लेकर दरियाए-फ़ुरात तक का सारा इलाक़ा मिसर के क़ब्ज़े से छीन लिया था।

यहूयाकीन की हुकूमत और यरूशलम पर बाबल का क़ब्ज़ा

8यहूयाकीन 18 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया तीन माह था। उस की माँ नहुश्ता बिंत इलनातन यरूशलम की रहनेवाली थी। 9अपने बाप की तरह यहूयाकीन भी ऐसा काम करता रहा जो रब को नापसंद था।

10उस की हुकूमत के दौरान बाबल के बादशाह नबूकदनज़्ज़र की फ़ौज यरूशलम तक बढ़कर उसका मुहासरा करने लगी। 11नबूकदनज़्ज़र ख़ुद शहर के मुहासरे के दौरान पहुँच गया। 12तब यहूयाकीन ने शिकस्त मानकर अपने आपको अपनी माँ, मुलाज़िमों, अफ़सरों और दरबारियों समेत बाबल के बादशाह के हवाले कर दिया। बादशाह ने उसे गिरिफ़्तार कर लिया।

यह नबूकदनज़्ज़र की हुकूमत के आठवें साल में हुआ। 13जिसका एलान रब ने पहले किया था वह अब पूरा हुआ, नबूकदनज़्ज़र ने रब के घर और शाही महल के तमाम ख़ज़ाने छीन लिए। उसने सोने का वह सारा सामान भी लूट लिया जो सुलेमान ने रब के घर के लिए बनवाया था। 14और जितने खाते-पीते लोग यरूशलम में थे उन सबको बादशाह ने जिलावतन कर दिया। उनमें तमाम अफ़सर, फ़ौजी, दस्तकार और धातों का काम करनेवाले शामिल थे, कुल 10,000 अफ़राद। उम्मत के सिर्फ़ ग़रीब लोग पीछे रह गए। 15नबूकदनज़्ज़र यहूयाकीन को भी क़ैदी बनाकर बाबल ले गया और उस की माँ, बीवियों, दरबारियों और मुल्क के तमाम असरो-रसूख़ रखनेवालों को भी। 16उसने फ़ौजियों के 7,000 अफ़राद और 1,000

दस्तकारों और धातों का काम करनेवालों को
जिलावतन करके बाबल में बसा दिया। यह सब
माहिर और जंग करने के क़ाबिल आदमी थे।
17यरूशलम में बाबल के बादशाह ने यहूयाकीन
की जगह उसके चचा मत्तनियाह को तख़्त पर
बिठाकर उसका नाम सिदक़ियाह में बदल दिया।

यहूदाह का बादशाह सिदक़ियाह

18सिदक़ियाह 21 साल की उम्र में बाद-
शाह बना, और यरूशलम में उस की हुकू-
मत का दौरानिया 11 साल था। उस की माँ
हमूतल बिंत यरमियाह लिबना शहर की रहनेवाली
थी। 19यहूयक़ीम की तरह सिदक़ियाह ऐसा
काम करता रहा जो रब को नापसंद था। 20रब
यरूशलम और यहूदाह के बाशिंदों से इतना नाराज़
हुआ कि आख़िर में उसने उन्हें अपने हुज़ूर से
ख़ारिज कर दिया।

सिदक़ियाह का फ़रार और गिरिफ़्तारी

एक दिन सिदक़ियाह बाबल के बादशाह
25 से सरकश हुआ, 1इसलिए शाहे-
बाबल नबूकदनज़्ज़र तमाम फ़ौज को
अपने साथ लेकर दुबारा यरूशलम पहुँचा ताकि
उस पर हमला करे।

सिदक़ियाह की हुकूमत के नवें साल में बाबल
की फ़ौज यरूशलम का मुहासरा करने लगी।
यह काम दसवें महीने के दसवें दिन[a] शुरू हुआ।
पूरे शहर के इर्दगिर्द बादशाह ने पुश्ते बनवाए।
2सिदक़ियाह की हुकूमत के 11वें साल तक
यरूशलम क़ायम रहा। 3लेकिन फिर काल ने
शहर में ज़ोर पकड़ा, और अवाम के लिए खाने
की चीज़ें न रहीं।

चौथे महीने के नवें दिन[b] 4बाबल के फ़ौजियों
ने फ़सील में रख़ना डाल दिया। उसी रात
सिदक़ियाह अपने तमाम फ़ौजियों समेत फ़रार
होने में कामयाब हुआ, अगरचे शहर दुश्मन से
घिरा हुआ था। वह फ़सील के उस दरवाज़े से
निकले जो शाही बाग़ के साथ मुलहिक़ दो दीवारों
के बीच में था। वह वादीए-यरदन की तरफ़ भागने
लगे, 5लेकिन बाबल की फ़ौज ने बादशाह का
ताक़्क़ुब करके उसे यरीहू के मैदान में पकड़
लिया। उसके फ़ौजी उससे अलग होकर चारों
तरफ़ मुंतशिर हो गए, 6और वह ख़ुद गिरिफ़्तार
हो गया।

फिर उसे रिबला में शाहे-बाबल के पास लाया
गया, और वहीं सिदक़ियाह पर फ़ैसला सादिर
किया गया। 7सिदक़ियाह के देखते देखते उसके
बेटों को क़त्ल किया गया। इसके बाद फ़ौजियों ने
उस की आँखें निकालकर उसे पीतल की ज़ंजीरों
में जकड़ लिया और बाबल ले गए।

यरूशलम और रब के घर की तबाही

8शाहे-बाबल नबूकदनज़्ज़र की हुकूमत के
19वें साल में बादशाह का ख़ास अफ़सर
नबूज़रादान यरूशलम पहुँचा। वह शाही
मुहाफ़िज़ों पर मुक़र्रर था। पाँचवें महीने के सातवें
दिन[c] उसने आकर 9रब के घर, शाही महल और
यरूशलम के तमाम मकानों को जला दिया। हर
बड़ी इमारत भस्म हो गई। 10उसने अपने तमाम
फ़ौजियों से शहर की फ़सील को भी गिरा दिया।
11फिर नबूज़रादान ने सबको जिलावतन कर
दिया जो यरूशलम और यहूदाह में पीछे रह गए
थे। वह भी उनमें शामिल थे जो जंग के दौरान
ग़द्दारी करके शाहे-बाबल के पीछे लग गए थे।
12लेकिन नबूज़रादान ने सबसे निचले तबक़े के
बाज़ लोगों को मुल्के-यहूदाह में छोड़ दिया ताकि
वह अंगूर के बाग़ों और खेतों को सँभालें।

13बाबल के फ़ौजियों ने रब के घर में जा-
कर पीतल के दोनों सतूनों, पानी के बासनों को
उठानेवाली हथगाड़ियों और समुंदर नामी पीतल
के हौज़ को तोड़ दिया और सारा पीतल उठाकर
बाबल ले गए। 14वह रब के घर की ख़िदमत

[a]यानी 15 जनवरी
[b]यानी 18 जुलाई
[c]यानी 14 अगस्त

सरंजाम देने के लिए दरकार सामान भी ले गए
यानी बालटियाँ, बेलचे, बत्ती कतरने के औज़ार,
बरतन और पीतल का बाक़ी सारा सामान।
15ख़ालिस सोने और चाँदी के बरतन भी इसमें
शामिल थे यानी जलते हुए कोयले के बरतन और
छिड़काव के कटोरे। शाही मुहाफ़िज़ों का अफ़सर
सारा सामान उठाकर बाबल ले गया। 16जब
दोनों सतूनों, समुंदर नामी हौज़ और बासनों को
उठानेवाली हथगाड़ियों का पीतल तुड़वाया गया
तो वह इतना वज़नी था कि उसे तोला न जा सका।
सुलेमान बादशाह ने यह चीज़ें रब के घर के लिए
बनवाई थीं। 17हर सतून की ऊँचाई 27 फ़ुट थी।
उनके बालाई हिस्सों की ऊँचाई साढ़े चार फ़ुट थी,
और वह पीतल की जाली और अनारों से सजे हुए
थे।

18शाही मुहाफ़िज़ों के अफ़सर नबूज़रा-
दान ने ज़ैल के क़ैदियों को अलग कर दिया :
इमामे-आज़म सिरायाह, उसके बाद आनेवाला
इमाम सफ़नियाह, रब के घर के तीन दरबानों,
19शहर के बचे हुओं में से उस अफ़सर को जो
शहर के फ़ौजियों पर मुक़र्रर था, सिदक़ियाह
बादशाह के पाँच मुशीरों, उम्मत की भरती
करनेवाले अफ़सर और शहर में मौजूद उसके 60
मर्दों को। 20नबूज़रादान इन सबको अलग करके
सूबा हमात के शहर रिबला ले गया जहाँ बाबल
का बादशाह था। 21वहाँ नबूकदनज़्ज़र ने उन्हें
सज़ाए-मौत दी।

यों यहूदाह के बाशिंदों को जिलावतन कर दिया
गया।

जिदलियाह की हुकूमत

22जिन लोगों को बाबल के बादशाह
नबूकदनज़्ज़र ने यहूदाह में पीछे छोड़ दिया था,
उन पर उसने जिदलियाह बिन अख़ीक़ाम बिन
साफ़न मुक़र्रर किया। 23जब फ़ौज के बचे हुए
अफ़सरों और उनके दस्तों को ख़बर मिली कि
जिदलियाह को गवर्नर मुक़र्रर किया गया है तो वह
मिसफ़ाह में उसके पास आए। अफ़सरों के नाम
इसमाईल बिन नतनियाह, यूहनान बिन क़रीह,
सिरायाह बिन तनहूमत नतूफ़ाती और याज़नियाह
बिन माकाती थे। उनके फ़ौजी भी साथ आए।

24जिदलियाह ने क़सम खाकर उनसे वादा
किया, "बाबल के अफ़सरों से मत डरना! मुल्क
में रहकर बाबल के बादशाह की ख़िदमत करें तो
आपकी सलामती होगी।"

25लेकिन उस साल के सातवें महीने में
इसमाईल बिन नतनियाह बिन इलीसमा ने दस
साथियों के साथ मिसफ़ाह आकर धोके से
जिदलियाह को क़त्ल किया। इसमाईल शाही
नसल का था। जिदलियाह के अलावा उन्होंने
उसके साथ रहनेवाले यहूदाह और बाबल के
तमाम लोगों को भी क़त्ल किया। 26यह देखकर
यहूदाह के तमाम बाशिंदे छोटे से लेकर बड़े तक
फ़ौजी अफ़सरों समेत हिजरत करके मिसर चले
गए, क्योंकि वह बाबल के इंतक़ाम से डरते थे।

यहूयाकीन को आज़ाद किया जाता है

27यहूदाह के बादशाह यहूयाकीन की
जिलावतनी के 37वें साल में अवील-मरूदक
बाबल का बादशाह बना। उसी साल के 12वें
महीने के 27वें दिन उसने यहूयाकीन को क़ैदख़ाने
से आज़ाद कर दिया। 28उसने उससे नरम बातें
करके उसे इज़्ज़त की ऐसी कुरसी पर बिठाया
जो बाबल में जिलावतन किए गए बाक़ी बादशाहों
की निसबत ज़्यादा अहम थी। 29यहूयाकीन को
क़ैदियों के कपड़े उतारने की इजाज़त मिली, और
उसे ज़िंदगी-भर बादशाह की मेज़ पर बाक़ायदगी
से शरीक होने का शरफ़ हासिल रहा। 30बादशाह
ने मुक़र्रर किया कि यहूयाकीन को उम्र-भर
इतना वज़ीफ़ा मिलता रहे कि उस की रोज़मर्रा
ज़रूरियात पूरी होती रहें।

1 तवारीख़

आदम से इब्राहीम तक का नसबनामा

1 नूह तक आदम की औलाद सेत, अनूस, 2क़ीनान, महललेल, यारिद, 3हनूक, मतूसिलह, लमक, 4और नूह थी।

नूह के तीन बेटे सिम, हाम और याफ़त थे।

5याफ़त के बेटे जुमर, माजूज, मादी, यावान, तूबल, मसक और तीरास थे। 6जुमर के बेटे अश्कनाज़, रीफ़त और तुजरमा थे। 7यावान के बेटे इलीसा और तरसीस थे। कित्ती और रोदानी भी उस की औलाद हैं।

8हाम के बेटे कूश, मिसर, फ़ूत और कनान थे। 9कूश के बेटे सिबा, हवीला, सबता, रामा और सब्तका थे। रामा के बेटे सबा और ददान थे। 10नमरूद भी कूश का बेटा था। वह ज़मीन पर पहला सूरमा था। 11मिसर ज़ैल की क़ौमों का बाप था : लूदी, अनामी, लिहाबी, नफ़तूही, 12फ़तरूसी, कसलूही (जिनसे फ़िलिस्ती निकले) और कफ़तूरी। 13कनान का पहलौठा सैदा था। कनान इन क़ौमों का बाप भी था : हित्ती 14यबूसी, अमोरी, जिरजासी, 15हिव्वी, अरक़ी, सीनी, 16अरवादी, समारी और हमाती।

17सिम के बेटे ऐलाम, असूर, अरफ़क्सद, लूद और अराम थे। अराम के बेटे ऊज़, हूल, जतर और मसक थे। 18अरफ़क्सद का बेटा सिलह और सिलह का बेटा इबर था। 19इबर के दो बेटे पैदा हुए। एक का नाम फ़लज यानी तक़सीम था, क्योंकि उन ऐयाम में दुनिया तक़सीम हुई। फ़लज के भाई का नाम युक़तान था। 20युक़तान के बेटे अलमूदाद, सलफ़, हसरमावत, इराख़, 21हदूराम, ऊज़ाल, दिक़ला, 22ऊबाल, अबीमाएल, सबा, 23ओफ़ीर, हवीला और यूबाब थे। यह सब उसके बेटे थे।

24सिम का यह नसबनामा है : सिम, अरफ़क्सद, सिलह, 25इबर, फ़लज, रऊ, 26सरूज, नहूर, तारह 27और अब्राम यानी इब्राहीम।

इब्राहीम का नसबनामा

28इब्राहीम के बेटे इसहाक़ और इसमाईल थे। 29उनकी दर्जे-ज़ैल औलाद थी :

इसमाईल का पहलौठा नबायोत था। उसके बाक़ी बेटे क़ीदार, अदबियेल, मिबसाम, 30मिशमा, दूमा, मस्सा, हदद, तैमा, 31यतूर, नफ़ीस और क़िदमा थे। सब इसमाईल के हाँ पैदा हुए।

32इब्राहीम की दाश्ता क़तूरा के बेटे ज़िमरान, युक़सान, मिदान, मिदियान, इसबाक़ और सूख़ थे। युक़सान के दो बेटे सबा और ददान पैदा हुए 33जबकि मिदियान के बेटे ऐफ़ा, इफ़र, हनूक, अबीदा और इल्दआ थे। सब क़तूरा की औलाद थे।

34इब्राहीम के बेटे इसहाक़ के दो बेटे पैदा हुए, एसौ और इसराईल। 35एसौ के बेटे इलीफ़ज़, रऊएल, यऊस, यालाम और क़ोरह थे। 36इलीफ़ज़ के बेटे तेमान, ओमर, सफ़ी, जाताम, क़नज़ और अमालीक़ थे। अमालीक़ की माँ तिमना थी। 37रऊएल के बेटे नहत, ज़ारह, सम्मा और मिज़्ज़ा थे।

सईर यानी अदोम का नसबनामा

38सईर के बेटे लोतान, सोबल, सिबोन, अना, दीसोन, एसर और दीसान थे। 39लोतान के दो बेटे होरी और होमाम थे। (तिमना लोतान की बहन थी।) 40सोबल के बेटे अलियान, मानहत, ऐबाल, सफ़ी और ओनाम थे। सिबोन के बेटे ऐयाह और अना थे। 41अना के एक बेटा दीसोन पैदा हुआ। दीसोन के चार बेटे हमरान, इशबान, यितरान और किरान थे। 42एसर के तीन बेटे बिलहान, ज़ावान और अक़ान थे। दीसान के दो बेटे ऊज़ और अरान थे।

अदोम के बादशाह

43इससे पहले कि इसराईलियों का कोई बादशाह था ज़ैल के बादशाह यके बाद दीगरे मुल्के-अदोम में हुकूमत करते थे :

बाला बिन बओर जो दिनहाबा शहर का था।

44उस की मौत पर यूबाब बिन ज़ारह जो बुसरा शहर का था।

45उस की मौत पर हुशाम जो तेमानियों के मुल्क का था।

46उस की मौत पर हदद बिन बिदद जिसने मुल्के-मोआब में मिदियानियों को शिकस्त दी। वह अवीत शहर का था।

47उस की मौत पर समला जो मसरिक़ा शहर का था।

48उस की मौत पर साऊल जो दरियाए-फ़ुरात पर रहोबोत शहर का था।

49उस की मौत पर बाल-हनान बिन अकबोर।

50उस की मौत पर हदद जो फ़ाऊ शहर का था। (बीवी का नाम महेतबेल बिंत मतरिद बिंत मेज़ाहाब था।) 51फिर हदद मर गया।

अदोमी क़बीलों के सरदार तिमना, अलिया, यतेत, 52उहलीबामा, ऐला, फ़ीनोन, 53क़नज़, तेमान, मिबसार, 54मज्दियेल और इराम थे। यही अदोम के सरदार थे।

याक़ूब यानी इसराईल के बेटे

2 इसराईल के बारह बेटे रूबिन, शमाऊन, लावी, यहूदाह, इशकार, ज़बूलून, 2दान, यूसुफ़, बिनयमीन, नफ़ताली, जद और आशर थे।

यहूदाह का नसबनामा

3यहूदाह की शादी कनानी औरत से हुई जो सुअ की बेटी थी। उनके तीन बेटे एर, ओनान और सेला पैदा हुए। यहूदाह का पहलौठा एर रब के नज़दीक शरीर था, इसलिए उसने उसे मरने दिया। 4यहूदाह के मज़ीद दो बेटे उस की बहू तमर से पैदा हुए। उनके नाम फ़ारस और ज़ारह थे। यों यहूदाह के कुल पाँच बेटे थे।

5फ़ारस के दो बेटे हसरोन और हमूल थे।

6ज़ारह के पाँच बेटे ज़िमरी, ऐतान, हैमान, कलकूल और दारा थे। 7करमी बिन ज़िमरी का बेटा वही अकर यानी अकन था जिसने उस लूटे हुए माल में से कुछ लिया जो रब के लिए मख़सूस था। 8ऐतान के बेटे का नाम अज़रियाह था।

9हसरोन के तीन बेटे यरहमियेल, राम और कलूबी यानी कालिब थे।

राम की औलाद

10राम के हाँ अम्मीनदाब और अम्मीनदाब के हाँ यहूदाह के क़बीले का सरदार नहसोन पैदा हुआ। 11नहसोन सलमोन का और सलमोन बोअज़ का बाप था। 12बोअज़ ओबेद का और ओबेद यस्सी का बाप था। 13बड़े से लेकर छोटे तक यस्सी के बेटे इलियाब, अबीनदाब, सिमआ,

14नतनियेल, रद्दी, 15ओज़म और दाऊद थे।
कुल सात भाई थे। 16उनकी दो बहनें ज़रूयाह
और अबीजेल थीं। ज़रूयाह के तीन बेटे अबीशै,
योआब और असाहेल थे। 17अबीजेल के एक
बेटा अमासा पैदा हुआ। बाप यतर इसमाईली था।

कालिब की औलाद

18कालिब बिन हसरोन की बीवी अज़ूबा के
हाँ बेटी बनाम यरीओत पैदा हुई। यरीओत के
बेटे यशर, सोबाब और अरदून थे। 19अज़ूबा के
वफ़ात पाने पर कालिब ने इफ़रात से शादी की।
उनके बेटा हूर पैदा हुआ। 20हूर ऊरी का और ऊरी
बज़लियेल का बाप था।

21 60 साल की उम्र में कालिब के बाप हसरोन
ने दुबारा शादी की। बीवी जिलियाद के बाप
मकीर की बेटी थी। इस रिश्ते से बेटा सजूब
पैदा हुआ। 22-23सजूब का बेटा वह याईर था
जिसकी जिलियाद के इलाक़े में 23 बस्तियाँ
बनाम 'याईर की बस्तियाँ' थीं। लेकिन बाद में
जसूर और शाम के फ़ौजियों ने उन पर क़ब्ज़ा
कर लिया। उस वक़्त उन्हें क़नात भी गिर्दो-नवाह
के इलाक़े समेत हासिल हुआ। उन दिनों में कुल
60 आबादियाँ उनके हाथ में आ गईं। इनके तमाम
बाशिंदे जिलियाद के बाप मकीर की औलाद थे।
24हसरोन जिसकी बीवी अबियाह थी फ़ौत हुआ
तो कालिब और इफ़राता के हाँ बेटा अशहूर पैदा
हुआ। बाद में अशहूर तक़ुअ शहर का बानी बन
गया।

यरहमियेल की औलाद

25हसरोन के पहलौठे यरहमियेल के बेटे बड़े
से लेकर छोटे तक राम, बूना, ओरन, ओज़म
और अख़ियाह थे। 26यरहमियेल की दूसरी बीवी
अतारा का एक बेटा ओनाम था।

27यरहमियेल के पहलौठे राम के बेटे माज़,
यमीन और एक़र थे। 28ओनाम के दो बेटे
सम्मी और यदा थे। सम्मी के दो बेटे नदब और
अबीसूर थे। 29अबीसूर की बीवी अबीख़ैल के
दो बेटे अख़बान और मोलिद पैदा हुए। 30नदब
के दो बेटे सिलद और अफ़्फ़ायम थे। सिलद
बेऔलाद मर गया, 31लेकिन अफ़्फ़ायम के हाँ
बेटा यिसई पैदा हुआ। यिसई सीसान का और
सीसान अख़ली का बाप था। 32सम्मी के भाई
यदा के दो बेटे यतर और यूनतन थे। यतर
बेऔलाद मर गया, 33लेकिन यूनतन के दो बेटे
फ़लत और ज़ाज़ा पैदा हुए। सब यरहमियेल की
औलाद थे। 34-35सीसान के बेटे नहीं थे बल्कि
बेटियाँ। एक बेटी की शादी उसने अपने मिसरी
ग़ुलाम यरख़ा से करवाई। उनके बेटा अत्ती पैदा
हुआ। 36अत्ती के हाँ नातन पैदा हुआ और नातन
के ज़बद, 37ज़बद के इफ़लाल, इफ़लाल के
ओबेद, 38ओबेद के याहू, याहू के अज़रियाह,
39अज़रियाह के ख़लिस, ख़लिस के इलियासा,
40इलियासा के सिसमी, सिसमी के सल्लूम,
41सल्लूम के यक़मियाह और यक़मियाह के
इलीसमा।

कालिब की औलाद का एक और नसबनामा

42ज़ैल में यरहमियेल के भाई कालिब की
औलाद है : उसका पहलौठा मेसा ज़ीफ़ का
बाप था और दूसरा बेटा मरेसा हबरून का बाप।
43हबरून के चार बेटे क़ोरह, तफ़्फ़ुअह, रक़म
और समा थे। 44समा के बेटे रख़म के हाँ
युरक़ियाम पैदा हुआ। रक़म सम्मी का बाप था,
45सम्मी मऊन का और मऊन बैत-सूर का।

46कालिब की दाश्ता ऐफ़ा के बेटे हारान,
मौज़ा और जाज़िज़ पैदा हुए। हारान के बेटे का
नाम जाज़िज़ था। 47यहदी के बेटे रजम, यूताम,
जेसान, फ़लत, ऐफ़ा और शाफ़ थे।

48कालिब की दूसरी दाश्ता माका के बेटे
शिबर, तिर्हना, 49शाफ़ (मदमन्ना का बाप) और
सिवा (मकबेना और जिबिया का बाप) पैदा हुए।
कालिब की एक बेटी भी थी जिसका नाम अकसा
था। 50सब कालिब की औलाद थे।

इफ़राता के पहलौठे हूर के बेटे क़िरियत-यारीम
का बाप सोबल, 51बैत-लहम का बाप सलमा

और बैत-जादिर का बाप ख़ारिफ़ थे। 52क़िरियत-
यारीम के बाप सोबल से यह घराने निकले :
हराई, मानहत का आधा हिस्सा 53और क़िरियत-
यारीम के ख़ानदान उत्तरी, फ़ूती, सुमाती और
मिसराई। इनसे सुरआती और इस्ताली निकले हैं।

54सलमा से ज़ैल के घराने निकले : बैत-
लहम के बाशिंदे, नतूफ़ाती, अतरात-बैत-योआब,
मानहत का आधा हिस्सा, सुरई 55और याबीज़
में आबाद मुन्शियों के ख़ानदान तिरआती,
सिमआती और सूकाती। यह सब क़ीनी थे जो
रैकाबियों के बाप हम्मत से निकले थे।

दाऊद बादशाह की औलाद

3 हबरून में दाऊद बादशाह के दर्जे-ज़ैल बेटे
पैदा हुए :

पहलौठा अमनोन था जिसकी माँ अख़ी-
नुअम यज़्रएली थी। दूसरा दानियाल था जिसकी
माँ अबीजेल करमिली थी। 2तीसरा अबीसलूम
था। उस की माँ माका थी जो जसूर के बादशाह
तलमी की बेटी थी। चौथा अदूनियाह था जिसकी
माँ हज्जीत थी। 3पाँचवाँ सफ़तियाह था जिसकी
माँ अबीताल थी। छटा इतरियाम था जिसकी
माँ इजला थी। 4दाऊद के यह छः बेटे उन साढ़े
सात सालों के दौरान पैदा हुए जब हबरून उसका
दारुल-हुकूमत था।

इसके बाद वह यरूशलम में मुंतक़िल हुआ और
वहाँ मज़ीद 33 साल हुकूमत करता रहा। 5उस
दौरान उस की बीवी बत-सबा बिंत अम्मियेल के
चार बेटे सिमआ, सोबाब, नातन और सुलेमान
पैदा हुए। 6मज़ीद बेटे भी पैदा हुए, इबहार,
इलीसुअ, इलीफ़लत, 7नौजा, नफ़ज, यफ़ीअ,
8इलीसमा, इलियदा और इलीफ़लत। कुल नौ
बेटे थे। 9तमर उनकी बहन थी। इनके अलावा
दाऊद की दाश्ताओं के बेटे भी थे।

10सुलेमान के हाँ रहुबियाम पैदा हुआ, रहु-
बियाम के अबियाह, अबियाह के आसा,
आसा के यहूसफ़त, 11यहूसफ़त के यहूराम,
यहूराम के अख़ज़ियाह, अख़ज़ियाह के
युआस, 12युआस के अमसियाह, अमसि-
याह के अज़रियाह यानी उज़्ज़ियाह, उज़्ज़ि-
याह के यूताम, 13यूताम के आख़ज़, आख़ज़ के
हिज़क़ियाह, हिज़क़ियाह के मनस्सी, 14मनस्सी
के अमून और अमून के यूसियाह।

15यूसियाह के चार बेटे बड़े से लेकर छोटे तक
यूहनान, यहूयक़ीम, सिदक़ियाह और सल्लूम थे।

16यहूयक़ीम यहूयाकीन[a] का और यहू-
याकीन सिदक़ियाह का बाप था। 17यहू-
याकीन को बाबल में जिलावतन कर दिया
गया। उसके सात बेटे सियालतियेल, 18मल-
किराम, फ़िदायाह, शेनाज़्ज़र, यक़मियाह, हूसमा
और नदबियाह थे। 19फ़िदायाह के दो बेटे
ज़रुब्बाबल और सिमई थे।

ज़रुब्बाबल के दो बेटे मसुल्लाम और हननियाह
थे। एक बेटी बनाम सलूमीत भी पैदा हुई।
20बाक़ी पाँच बेटों के नाम हसूबा, ओहल,
बरकियाह, हसदियाह और यूसब-हसद थे।

21हननियाह के दो बेटे फ़लतियाह और
यसायाह थे। यसायाह रिफ़ायाह का बाप था,
रिफ़ायाह अरनान का, अरनान अबदियाह का
और अबदियाह सकनियाह का।

22सकनियाह के बेटे का नाम समायाह
था। समायाह के छः बेटे हत्तूश, इजाल,
बरीह, नअरियाह और साफ़त थे। 23नअरि-
याह के तीन बेटे इलियूऐनी, हिज़क़ियाह और
अज़रीक़ाम पैदा हुए।

24इलियूऐनी के सात बेटे हूदावियाह,
इलियासिब, फ़िलायाह, अक़्क़ूब, यूहनान,
दिलायाह और अनानी थे।

यहूदाह की औलाद

4 फ़ारस, हसरोन, करमी, हूर और सोबल
यहूदाह की औलाद थे।

[a]इबरानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह
मुस्तामल है।

2रियायाह बिन सोबल के हाँ यहत, यहत के
अख़ूमी और अख़ूमी के लाहद पैदा हुआ। यह
सुरआती ख़ानदानों के बापदादा थे।

3ऐताम के तीन बेटे यज़्रएल, इसमा और
इदबास थे। उनकी बहन का नाम हज़्लिलफ़ोनी
था।

4इफ़राता का पहलौठा हूर बैत-लहम का बाप
था। उसके दो बेटे जदूर का बाप फ़नुएल और हूसा
का बाप अज़र थे।

5तक़ुअ के बाप अशहूर की दो बीवियाँ हीलाह
और नारा थीं।

6नारा के बेटे अख़ूज़्ज़ाम, हिफ़र, तेमनी और
हख़सतरी थे।

7हीलाह के बेटे ज़रत, सुहर और इतनान थे।

8कूज़ के बेटे अनूब और हज़्ज़ोबीबा थे। उससे
अख़रख़ैल बिन हरूम के ख़ानदान भी निकले।

9याबीज़ की अपने भाइयों की निसबत ज़्यादा
इज़्ज़त थी। उस की माँ ने उसका नाम याबीज़
यानी 'वह तकलीफ़ देता है' रखा, क्योंकि उसने
कहा, "पैदा होते वक़्त मुझे बड़ी तकलीफ़ हुई।"
10याबीज़ ने बुलंद आवाज़ से इसराईल के ख़ुदा
से इलतमास की, "काश तू मुझे बरकत देकर
मेरा इलाक़ा वसी कर दे। तेरा हाथ मेरे साथ हो,
और मुझे नुक़सान से बचा ताकि मुझे तकलीफ़
न पहुँचे।" और अल्लाह ने उस की सुनी।

11सूख़ा के भाई कलूब महीर का और महीर
इस्तून का बाप था।

12इस्तून के बेटे बैत-रफ़ा, फ़ासह और
तख़िन्ना थे।

तख़िन्ना नाहस शहर का बाप था जिसकी
औलाद रैका में आबाद है। 13क़नज़ के बेटे
ग़ुतनियेल और सिरायाह थे। ग़ुतनियेल के बेटों
के नाम हतत और मऊनाती थे।

14मऊनाती उफ़रा का बाप था।

सिरायाह योआब का बाप था जो 'वादीए-
कारीगर' का बानी था। आबादी का यह नाम
इसलिए पड़ गया कि उसके बाशिंदे कारीगर थे।

15कालिब बिन यफ़ुन्ना के बेटे ईरू, ऐला और
नाम थे। ऐला का बेटा क़नज़ था।

16यहल्ललेल के चार बेटे ज़ीफ़, ज़ीफ़ा,
तीरियाह और असरेल थे।

17-18अज़रा के चार बेटे यतर, मरद, इफ़र
और यलून थे। मरद की शादी मिसरी बादशाह
फ़िरौन की बेटी बितियाह से हुई। उसके तीन बच्चे
मरियम, सम्मी और इसबाह पैदा हुए। इसबाह
इस्तिमुअ का बाप था। मरद की दूसरी बीवी
यहूदाह की थी, और उसके तीन बेटे जदूर का
बाप यरद, सोका का बाप हिबर और ज़नूह का
बाप यकूतियेल थे।

19हूदियाह की बीवी नहम की बहन थी। उसका
एक बेटा क़ईला जरमी का बाप और दूसरा
इस्तिमुअ माकाती था।

20सीमून के बेटे अमनोन, रिन्ना, बिन-हनान
और तीलोन थे। यिसई के बेटे ज़ोहित और बिन-
ज़ोहित थे।

21सेला बिन यहूदाह की दर्जे-ज़ैल औलाद
थी : लेका का बाप एर, मरेसा का बाप
लादा, बैत-अशबीअ में आबाद बारीक कतान
का काम करनेवालों के ख़ानदान, 22योक़ीम,
कोज़ीबा के बाशिंदे, और युआस और साराफ़ जो
क़दीम रिवायत के मुताबिक़ मोआब पर हुक्मरानी
करते थे लेकिन बाद में बैत-लहम वापस आए।
23वह नताईम और जदीरा में रहकर कुम्हार और
बादशाह के मुलाज़िम थे।

शमाऊन की औलाद

24शमाऊन के बेटे यमुएल, यमीन, यरीब,
ज़ारह और साऊल थे। 25साऊल के हाँ सल्लूम
पैदा हुआ, सल्लूम के मिबसाम, मिबसाम के
मिशमा, 26मिशमा के हम्मुएल, हम्मुएल के
ज़क्कूर और ज़क्कूर के सिमई। 27सिमई के 16
बेटे और छः बेटियाँ थीं, लेकिन उसके भाइयों के
कम बच्चे पैदा हुए। नतीजे में शमाऊन का क़बीला
यहूदाह के क़बीले की निसबत छोटा रहा।

28ज़ैल के शहर उनके गिर्दो-नवाह की
आबादियों समेत शमाऊन का क़बायली
इलाक़ा था : बैर-सबा, मोलादा, हसार-
सुआल, 29बिलहाह, अज़म, तोलद, 30बतु-
एल, हुरमा, सिक़लाज, 31बैत-मर्कबोत, हसार-
सूसीम, बैत-बिरी और शारैम। दाऊद की हुकूमत
तक यह क़बीला इन जगहों में आबाद था, 32नीज़
ऐताम, ऐन, रिम्मोन, तोकन और असन में भी।
33इन पाँच आबादियों के गिर्दो-नवाह के देहात
भी बाल तक शामिल थे। हर मक़ाम के अपने
अपने तहरीरी नसबनामे थे।

34शमाऊन के ख़ानदानों के दर्जे-ज़ैल सरपरस्त
थे : मिसोबाब, यमलीक, यूशा बिन अमसियाह,
35योएल, याहू बिन यूसिबियाह बिन सिरायाह
बिन असियेल, 36इलियूऐनी, याक़ूबा, यशूख़ाया,
असायाह, अदियेल, यसीमियेल, बिनायाह,
37ज़ीज़ा बिन शिफ़ई बिन अल्लोन बिन यदायाह
बिन सिमरी बिन समायाह।

38दर्जे-बाला आदमी अपने ख़ानदानों के
सरपरस्त थे। उनके ख़ानदान बहुत बढ़ गए,
39इसलिए वह अपने रेवड़ों को चराने की जगहें
ढूँडते ढूँडते वादी के मशरिक़ में जदूर तक फैल
गए। 40वहाँ उन्हें अच्छी और शादाब चरागाहें मिल
गईं। इलाक़ा खुला, पुरसुकून और आरामदेह भी
था। पहले हाम की कुछ औलाद वहाँ आबाद
थी, 41लेकिन हिज़क़ियाह बादशाह के ऐयाम
में शमाऊन के मज़कूरा सरपरस्तों ने वहाँ के
रहनेवाले हामियों और मऊनियों पर हमला किया
और उनके तंबुओं को तबाह करके सबको मार
दिया। एक भी न बचा। फिर वह ख़ुद वहाँ आबाद
हुए। अब उनके रेवड़ों के लिए काफ़ी चरागाहें थीं।
आज तक वह इसी इलाक़े में रहते हैं।

42एक दिन शमाऊन के 500 आदमी यिसई के
चार बेटों फ़लतियाह, नअरियाह, रिफ़ायाह और
उज़्ज़ियेल की राहनुमाई में सईर के पहाड़ी इलाक़े
में घुस गए। 43वहाँ उन्होंने उन अमालीक़ियों को
हलाक कर दिया जिन्होंने बचकर वहाँ पनाह ली
थी। फिर वह ख़ुद वहाँ रहने लगे। आज तक वह
वहीं आबाद हैं।

रूबिन की औलाद

5 इसराईल का पहलौठा रूबिन था। लेकिन
चूँकि उसने अपने बाप की दाश्ता से
हमबिसतर होने से बाप की बेहुरमती की थी
इसलिए पहलौठे का मौरूसी हक़ उसके भाई
यूसुफ़ के बेटों को दिया गया। इसी वजह से
नसबनामे में रूबिन को पहलौठे की हैसियत से
बयान नहीं किया गया। 2यहूदाह दीगर भाइयों की
निसबत ज़्यादा ताक़तवर था, और उससे क़ौम का
बादशाह निकला। तो भी यूसुफ़ को पहलौठे का
मौरूसी हक़ हासिल था।

3इसराईल के पहलौठे रूबिन के चार बेटे हनूक,
फ़ल्लू, हसरोन और करमी थे।

4योएल के हाँ समायाह पैदा हुआ, समा-
याह के जूज, जूज के सिमई, 5सिमई के मीकाह,
मीकाह के रियायाह, रियायाह के बाल और 6बाल
के बईरा। बईरा को असूर के बादशाह तिग्लत-
पिलेसर ने जिलावतन कर दिया। बईरा रूबिन
के क़बीले का सरपरस्त था। 7उनके नसबनामे
में उसके भाई उनके ख़ानदानों के मुताबिक़
दर्ज किए गए हैं, सरे-फ़हरिस्त यइयेल, फिर
ज़करियाह 8और बाला बिन अज़ज़ बिन समा बिन
योएल।

रूबिन का क़बीला अरोईर से लेकर नबू और
बाल-मऊन तक के इलाक़े में आबाद हुआ।
9मशरिक़ की तरफ़ वह उस रेगिस्तान के किनारे
तक फैल गए जो दरियाए-फ़ुरात से शुरू होता है।
क्योंकि जिलियाद में उनके रेवड़ों की तादाद बहुत
बढ़ गई थी।

10साऊल के ऐयाम में उन्होंने हाजिरियों से
लड़कर उन्हें हलाक कर दिया और ख़ुद उनकी
आबादियों में रहने लगे। यों जिलियाद के मशरिक़
का पूरा इलाक़ा रूबिन के क़बीले की मिलकियत
में आ गया।

जद की औलाद

11जद का क़बीला रूबिन के क़बीले के पड़ोसी मुल्क बसन में सलका तक आबाद था। 12उसका सरबराह योएल था, फिर साफ़म, यानी और साफ़त। वह सब बसन में आबाद थे। 13उनके भाई उनके ख़ानदानों समेत मीकाएल, मसुल्लाम, सबा, यूरी, याकान, ज़ीअ और इबर थे। 14यह सात आदमी अबीख़ैल बिन हूरी बिन यारूह बिन जिलियाद बिन मीकाएल बिन यसीसी बिन यहदू बिन बूज़ के बेटे थे। 15अख़ी बिन अबदियेल बिन जूनी इन ख़ानदानों का सरपरस्त था।

16जद का क़बीला जिलियाद और बसन के इलाक़ों की आबादियों में आबाद था। शारून से लेकर सरहद तक की पूरी चरागाहें भी उनके क़ब्ज़े में थीं। 17यह तमाम ख़ानदान यहूदाह के बादशाह यूताम और इसराईल के बादशाह यरुबियाम के ज़माने में नसबनामे में दर्ज किए गए।

दरियाए-यरदन के मशरिक़ में क़बीलों की जंग

18रूबिन, जद और मनस्सी के आधे क़बीले के 44,760 फ़ौजी थे। सब लड़ने के क़ाबिल और तजरबाकार आदमी थे, ऐसे लोग जो तीर चला सकते और ढाल और तलवार से लैस थे। 19उन्होंने हाजिरियों, यतूर, नफ़ीस और नोदब से जंग की। 20लड़ते वक़्त उन्होंने अल्लाह से मदद के लिए फ़रियाद की, तो उसने उनकी सुनकर हाजिरियों को उनके इत्तहादियों समेत उनके हवाले कर दिया। 21उन्होंने उनसे बहुत कुछ लूट लिया : 50,000 ऊँट, 2,50,000 भेड़-बकरियाँ और 2,000 गधे। साथ साथ उन्होंने 1,00,000 लोगों को क़ैद भी कर लिया। 22मैदाने-जंग में बेशुमार दुश्मन मारे गए, क्योंकि जंग अल्लाह की थी। जब तक इसराईलियों को असूर में जिलावतन न कर दिया गया वह इस इलाक़े में आबाद रहे।

मनस्सी का आधा क़बीला

23मनस्सी का आधा क़बीला बहुत बड़ा था। उसके लोग बसन से लेकर बाल-हरमून और सनीर यानी हरमून के पहाड़ी सिलसिले तक फैल गए। 24उनके ख़ानदानी सरपरस्त इफ़र, यिसई, इलियेल, अज़रियेल, यरमियाह, हूदावियाह और यहदियेल थे। सब माहिर फ़ौजी, मशहूर आदमी और ख़ानदानी सरबराह थे।

मशरिक़ी क़बीलों की जिलावतनी

25लेकिन यह मशरिक़ी क़बीले अपने बापदादा के ख़ुदा से बेवफ़ा हो गए। वह ज़िना करके मुल्क के उन अक़वाम के देवताओं के पीछे लग गए जिनको अल्लाह ने उनके आगे से मिटा दिया था। 26यह देखकर इसराईल के ख़ुदा ने असूर के बादशाह तिग्लत-पिलेसर को उनके ख़िलाफ़ बरपा किया जिसने रूबिन, जद और मनस्सी के आधे क़बीले को जिलावतन कर दिया। वह उन्हें ख़लह, दरियाए-ख़ाबूर, हारा और दरियाए-जौज़ान को ले गया जहाँ वह आज तक आबाद हैं।

इमामे-आज़म की नसल (लावी का क़बीला)

6 लावी के बेटे जैरसोन, क़िहात और मिरारी थे। 2क़िहात के बेटे अमराम, इज़हार, हबरून और उज़्ज़ियेल थे।

3अमराम के बेटे हारून और मूसा थे। बेटी का नाम मरियम था। हारून के बेटे नदब, अबीहू, इलियज़र और इतमर थे।

4इलियज़र के हाँ फ़ीनहास पैदा हुआ, फ़ीनहास के अबीसुअ, 5अबीसुअ के बुक़्क़ी, बुक़्क़ी के उज़्ज़ी, 6उज़्ज़ी के ज़रख़ियाह, ज़रख़ियाह के मिरायोत, 7मिरायोत के अमरियाह, अमरियाह के अख़ीतूब, 8अख़ीतूब के सदोक़, सदोक़ के अख़ीमाज़, 9अख़ीमाज़ के अज़रियाह, अज़रियाह के यूहनान 10और यूहनान के अज़रियाह। यही अज़रियाह रब के उस घर का पहला इमामे-आज़म था जो सुलेमान ने

यरूशलम में बनवाया था। 11उसके हाँ अमरियाह पैदा हुआ, अमरियाह के अख़ीतूब, 12अख़ीतूब के सदोक़, सदोक़ के सल्लूम, 13सल्लूम के ख़िलक़ियाह, ख़िलक़ियाह के अज़रियाह, 14अज़रियाह के सिरायाह और सिरायाह के यहूसदक़। 15जब रब ने नबूकदनज़्ज़र के हाथ से यरूशलम और पूरे यहूदाह के बाशिंदों को जिलावतन कर दिया तो यहूसदक़ भी उनमें शामिल था।

लावी की औलाद

16लावी के तीन बेटे जैरसोम, क़िहात और मिरारी थे। 17जैरसोम के दो बेटे लिबनी और सिमई थे। 18क़िहात के चार बेटे अमराम, इज़हार, हबरून और उज़्ज़ियेल थे। 19मिरारी के दो बेटे महली और मूशी थे।

ज़ैल में लावी के ख़ानदानों की फ़हरिस्त उनके बानियों के मुताबिक़ दर्ज है।

20जैरसोम के हाँ लिबनी पैदा हुआ, लिबनी के यहत, यहत के ज़िम्मा, 21ज़िम्मा के युआख़, युआख़ के इद्दू, इद्दू के ज़ारह और ज़ारह के यतरी।

22क़िहात के हाँ अम्मीनदाब पैदा हुआ, अम्मीनदाब के क़ोरह, क़ोरह के अस्सीर, 23अस्सीर के इलक़ाना, इलक़ाना के अबियासफ़, अबियासफ़ के अस्सीर, 24अस्सीर के तहत, तहत के ऊरियेल, ऊरियेल के उज़्ज़ियाह और उज़्ज़ियाह के साऊल। 25इलक़ाना के बेटे अमासी, अख़ीमोत 26और इलक़ाना थे। इलक़ाना के हाँ ज़ूफ़ी पैदा हुआ, ज़ूफ़ी के नहत, 27नहत के इलियाब, इलियाब के यरोहाम, यरोहाम के इलक़ाना और इलक़ाना के समुएल। 28समुएल का पहला बेटा योएल और दूसरा अबियाह था।

29मिरारी के हाँ महली पैदा हुआ, महली के लिबनी, लिबनी के सिमई, सिमई के उज़्ज़ा, 30उज़्ज़ा के सिमआ, सिमआ के हज्जियाह और हजयाह के असायाह।

लावी की ज़िम्मेदारियाँ

31जब अहद का संदूक़ यरूशलम में लाया गया ताकि आइंदा वहाँ रहे तो दाऊद बादशाह ने कुछ लावियों को रब के घर में गीत गाने की ज़िम्मेदारी दी। 32इससे पहले कि सुलेमान ने रब का घर बनवाया यह लोग अपनी ख़िदमत मुलाक़ात के ख़ैमे के सामने सरंजाम देते थे। वह सब कुछ मुक़र्ररा हिदायात के मुताबिक़ अदा करते थे। 33ज़ैल में उनके नाम उनके बेटों के नामों समेत दर्ज हैं।

क़िहात के ख़ानदान का हैमान पहला गुलूकार था। उसका पूरा नाम यह था : हैमान बिन योएल बिन समुएल 34बिन इलक़ाना बिन यरोहाम बिन इलियेल बिन तूख़ 35बिन सूफ़ बिन इलक़ाना बिन महत बिन अमासी 36बिन इलक़ाना बिन योएल बिन अज़रियाह बिन सफ़नियाह 37बिन तहत बिन अस्सीर बिन अबियासफ़ बिन क़ोरह 38बिन इज़हार बिन क़िहात बिन लावी बिन इसराईल।

39हैमान के दहने हाथ आसफ़ खड़ा होता था। उसका पूरा नाम यह था : आसफ़ बिन बरकियाह बिन सिमआ 40बिन मीकाएल बिन बासियाह बिन मलकियाह 41बिन अत्नी बिन ज़ारह बिन अदायाह 42बिन ऐतान बिन ज़िम्मा बिन सिमई 43बिन यहत बिन जैरसोम बिन लावी।

44हैमान के बाएँ हाथ ऐतान खड़ा होता था। वह मिरारी के ख़ानदान का फ़रद था। उसका पूरा नाम यह था : ऐतान बिन क़ीसी बिन अबदी बिन मल्लूक 45बिन हसबियाह बिन अमसियाह बिन ख़िलक़ियाह 46बिन अमसी बिन बानी बिन समर 47बिन महली बिन मूशी बिन मिरारी बिन लावी।

48दूसरे लावियों को अल्लाह की सुकूनतगाह में बाक़ीमाँदा ज़िम्मेदारियाँ दी गई थीं।

49लेकिन सिर्फ़ हारून और उस की औलाद भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ पेश करते और बख़ूर की क़ुरबानगाह पर बख़ूर जलाते थे। वही मुक़द्दसतरीन कमरे में हर ख़िदमत सरंजाम देते थे। इसराईल का कफ़्फ़ारा देना उन्हीं की

ज़िम्मेदारी थी। वह सब कुछ ऐन उन हिदायात के मुताबिक़ अदा करते थे जो अल्लाह के ख़ादिम मूसा ने उन्हें दी थीं।

50हारून के हाँ इलियज़र पैदा हुआ, इलि-
यज़र के फ़ीनहास, फ़ीनहास के अबीसुअ,
51अबीसुअ के बुक़्क़ी, बुक़्क़ी के उज़्ज़ी,
उज़्ज़ी के ज़रख़ियाह, 52ज़रख़ियाह के मिरा-
योत, मिरायोत के अमरियाह, अमरियाह के
अख़ीतूब, 53अख़ीतूब के सदोक़, सदोक़ के
अख़ीमाज़।

लावियों की आबादियाँ

54ज़ैल में वह आबादियाँ और चरागाहें दर्ज हैं
जो लावियों को क़ुरा डालकर दी गईं।

क़ुरा डालते वक़्त पहले हारून के बेटे क़िहात
की औलाद को जगहें मिल गईं। 55उसे यहूदाह
के क़बीले से हबरून शहर उस की चरागाहों
समेत मिल गया। 56लेकिन गिर्दो-नवाह के खेत
और देहात कालिब बिन यफ़ुन्ना को दिए गए।
57हबरून उन शहरों में शामिल था जिनमें हर
वह पनाह ले सकता था जिसके हाथों ग़ैरइरादी
तौर पर कोई हलाक हुआ हो। हबरून के अलावा
हारून की औलाद को ज़ैल के मक़ाम उनकी
चरागाहों समेत दिए गए : लिबना, यत्तीर,
इस्तिमुअ, 58हौलून, दबीर, 59असन, और बैत-
शम्स। 60बिनयमीन के क़बीले से उन्हें जिबऊन,
जिबा, अलमत और अनतोत उनकी चरागाहों
समेत दिए गए। इस तरह हारून के ख़ानदान को
13 शहर मिल गए।

61क़िहात के बाक़ी ख़ानदानों को मनस्सी के
मग़रिबी हिस्से के दस शहर मिल गए।

62जैरसोम की औलाद को इशकार, आ-
शर, नफ़ताली और मनस्सी के क़बीलों के 13 शहर दिए गए। यह मनस्सी का वह इलाक़ा था जो दरियाए-यरदन के मशरिक़ में मुल्के-बसन में था।

63मिरारी की औलाद को रूबिन, जद और
ज़बूलून के क़बीलों के 12 शहर मिल गए।

64-65यों इसराईलियों ने क़ुरा डालकर लावियों को मज़कूरा शहर दे दिए। सब यहूदाह, शमाऊन और बिनयमीन के क़बायली इलाक़ों में थे।

66क़िहात के चंद एक ख़ानदानों को इफ़राईम
के क़बीले से शहर उनकी चरागाहों समेत मिल
गए। 67इनमें इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े का
शहर सिकम शामिल था जिसमें हर वह पनाह ले
सकता था जिससे कोई ग़ैरइरादी तौर पर हलाक
हुआ होता था, फिर जज़र, 68युक़मियाम, बैत-
हौरून, 69ऐयालोन और जात-रिम्मोन। 70क़िहात
के बाक़ी कुंबों को मनस्सी के मग़रिबी हिस्से के
दो शहर आनेर और बिलाम उनकी चरागाहों समेत
मिल गए।

71जैरसोम की औलाद को ज़ैल के शहर भी
उनकी चरागाहों समेत मिल गए : मनस्सी के
मशरिक़ी हिस्से से जौलान जो बसन में है और
अस्तारात। 72इशकार के क़बीले से क़ादिस,
दाबरत, 73रामात और आनीम। 74आशर के
क़बीले से मिसाल, अब्दोन, 75हुक़ूक़ और रहोब।
76और नफ़ताली के क़बीले से गलील का
क़ादिस, हम्मून और क़िरियतायम।

77मिरारी के बाक़ी ख़ानदानों को ज़ैल के शहर
उनकी चरागाहों समेत मिल गए : ज़बूलून के
क़बीले से रिम्मोन और तबूर। 78-79रूबिन के
क़बीले से रेगिस्तान का बसर, यहज़, क़दीमात
और मिफ़ात (यह शहर दरियाए-यरदन के
मशरिक़ में यरीहू के मुक़ाबिल वाक़े हैं)। 80जद
के क़बीले से जिलियाद का रामात, महनायम,
81हसबोन और याज़ेर।

इशकार की औलाद

7 इशकार के चार बेटे तोला, फ़ुव्वा, यसूब
और सिमरोन थे।

2तोला के पाँच बेटे उज़्ज़ी, रिफ़ायाह, यरियेल,
यहमी, इबसाम और समुएल थे। सब अपने
ख़ानदानों के सरपरस्त थे। नसबनामे के मुताबिक़

दाऊद के ज़माने में तोला के ख़ानदान के
22,600 अफ़राद जंग करने के क़ाबिल थे।
3उज़्ज़ी का बेटा इज़्रख़ियाह था जो अपने
चार भाइयों मीकाएल, अबदियाह, योएल और
यिस्सियाह के साथ ख़ानदानी सरपरस्त था।
4नसबनामे के मुताबिक़ उनके 36,000 अफ़राद
जंग करने के क़ाबिल थे। इनकी तादाद इसलिए
ज़्यादा थी कि उज़्ज़ी की औलाद के बहुत बाल-
बच्चे थे। 5इशकार के क़बीले के ख़ानदानों के
कुल 87,000 आदमी जंग करने के क़ाबिल थे।
सब नसबनामे में दर्ज थे।

बिनयमीन और नफ़ताली की औलाद

6बिनयमीन के तीन बेटे बाला, बकर और
यदियएल थे। 7बाला के पाँच बेटे इसबून, उज़्ज़ी,
उज़्ज़ियेल, यरीमोत और ईरी थे। सब अपने
ख़ानदानों के सरपरस्त थे। उनके नसबनामे के
मुताबिक़ उनके 22,034 मर्द जंग करने के
क़ाबिल थे।
8बकर के 9 बेटे ज़मीरा, युआस, इलि-
यज़र, इलियूऐनी, उमरी, यरीमोत, अबियाह,
अनतोत और अलमत थे। 9उनके नसबनामे में
उनके सरपरस्त और 20,200 जंग करने के
क़ाबिल मर्द बयान किए गए हैं।
10बिलहान बिन यदियएल के सात बेटे यऊस,
बिनयमीन, अहूद, कनाना, ज़ैतान, तरसीस
और अख़ी-सहर थे। 11सब अपने ख़ानदानों के
सरपरस्त थे। उनके 17,200 जंग करने के
क़ाबिल मर्द थे।
12सुफ़्फ़ी और हुफ़्फ़ी ईर की और हुशी अख़ीर
की औलाद थे।
13नफ़ताली के चार बेटे यहसियेल, जूनी,
यिसर और सल्लूम थे। सब बिलहाह की औलाद
थे।

मनस्सी की औलाद

14मनस्सी की अरामी दाश्ता के दो बेटे
असरियेल और जिलियाद का बाप मकीर
पैदा हुए। 15मकीर ने हुफ़्फ़ियों और सुफ़्फ़ि-
यों की एक औरत से शादी की। बहन का
नाम माका था। मकीर के दूसरे बेटे का नाम
सिलाफ़िहाद था जिसके हाँ सिर्फ़ बेटियाँ पैदा हुईं।
16मकीर की बीवी माका के मज़ीद दो बेटे
फ़रस और शरस पैदा हुए। शरस के दो बेटे
औलाम और रक़म थे। 17औलाम के बेटे का
नाम बिदान था। यही जिलियाद बिन मकीर बिन
मनस्सी की औलाद थे।
18जिलियाद की बहन मूलिकत के तीन बेटे
इशहूद, अबियज़र और महलाह थे। 19समीदा
के चार बेटे अख़ियान, सिकम, लिक़ही और
अनियाम थे।

इफ़राईम की औलाद

20इफ़राईम के हाँ सूतलह पैदा हुआ, सूतलह
के बरद, बरद के तहत, तहत के इलियदा,
इलियदा के तहत, 21तहत के ज़बद और ज़बद
के सूतलह।
इफ़राईम के मज़ीद दो बेटे अज़र और इलियद
थे। यह दो मर्द एक दिन जात गए ताकि वहाँ
के रेवड़ लूट लें। लेकिन मक़ामी लोगों ने उन्हें
पकड़कर मार डाला। 22उनका बाप इफ़राईम
काफ़ी अरसे तक उनका मातम करता रहा, और
उसके रिश्तेदार उससे मिलने आए ताकि उसे
तसल्ली दें। 23जब इसके बाद उस की बीवी
के बेटा पैदा हुआ तो उसने उसका नाम बरिया
यानी मुसीबत रखा, क्योंकि उस वक़्त ख़ानदान
मुसीबत में आ गया था। 24इफ़राईम की बेटी सैरा
ने बालाई और नशेबी बैत-हौरून और उज़्ज़न-सैरा
को बनवाया।
25इफ़राईम के मज़ीद दो बेटे रफ़ह और रसफ़
थे। रसफ़ के हाँ तिलह पैदा हुआ, तिलह के तहन,
26तहन के लादान, लादान के अम्मीहूद, अम्मीहूद
के इलीसमा, 27इलीसमा के नून, नून के यशुअ।
28इफ़राईम की औलाद के इलाक़े में ज़ैल
के मक़ाम शामिल थे : बैतेल गिर्दो-नवाह की
आबादियों समेत, मशरिक़ में नारान तक, मग़रिब

में जज़र तक गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत,
शिमाल में सिकम और ऐयाह तक गिर्दो-नवाह की
आबादियों समेत। 29बैत-शान, तानक, मजिद्दो
और दोर गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत मनस्सी
की औलाद की मिलकियत बन गए। इन तमाम
मक़ामों में यूसुफ़ बिन इसराईल की औलाद रहती
थी।

आशर की औलाद

30आशर के चार बेटे यिमना, इसवाह, इसवी
और बरिया थे। उनकी बहन सिरह थी।

31बरिया के बेटे हिबर और बिरज़ायत का बाप
मलकियेल थे।

32हिबर के तीन बेटे यफ़लीत, शूमीर और
ख़ूताम थे। उनकी बहन सुअ थी।

33यफ़लीत के तीन बेटे फ़ासक, बिमहाल और
असवात थे। 34शूमीर के चार बेटे अख़ी, रूहजा,
हुब्बा और अराम थे। 35उसके भाई हीलम के चार
बेटे सूफ़ह, इमना, सलस और अमल थे।

36सूफ़ह के 11 बेटे सूह, हर्नफ़र, सुआल, बैरी,
इमराह,

37बसर, हूद, सम्मा, सिलसा, यितरान और
बईरा थे।

38यतर के तीन बेटे यफ़ुन्ना, फ़िसफ़ाह और
अरा थे।

39उल्ला के तीन बेटे अरख़, हन्नियेल और
रिज़ियाह थे।

40आशर के दर्जे-बाला तमाम अफ़राद अपने
अपने ख़ानदानों के सरपरस्त थे। सब चीदा
मर्द, माहिर फ़ौजी और सरदारों के सरबराह थे।
नसबनामे में 26,000 जंग करने के क़ाबिल मर्द
दर्ज हैं।

बिनयमीन की औलाद

8 बिनयमीन के पाँच बेटे बड़े से लेकर छोटे
तक बाला, अशबेल, अख़्रख़, 2नूहा और
रफ़ा थे।

3बाला के बेटे अद्दार, जीरा, अबीहूद,
4अबीसुअ, नामान, अख़ूह, 5जीरा, सफ़ू-
फ़ान और हूराम थे।

6-7अहूद के तीन बेटे नामान, अख़ियाह और
जीरा थे। यह उन ख़ानदानों के सरपरस्त थे जो
पहले जिबा में रहते थे लेकिन जिन्हें बाद में
जिलावतन करके मानहत में बसाया गया। उज़्ज़ा
और अख़ीहूद का बाप जीरा उन्हें वहाँ लेकर गया
था।

8-9सहरैम अपनी दो बीवियों हुशीम और बारा
को तलाक़ देकर मोआब चला गया। वहाँ उस की
बीवी हूदस के सात बेटे यूबाब, ज़िबिया, मेसा,
मलकाम, 10यऊज़, सकियाह और मिरमा पैदा
हुए। सब बाद में अपने ख़ानदानों के सरपरस्त बन
गए। 11पहली बीवी हुशीम के दो बेटे अबीतूब और
इलफ़ाल पैदा हुए।

12-14इलफ़ाल के आठ बेटे इबर, मिशाम,
समद, बरिया, समा, अख़ियो, शाशक़ और
यरीमोत थे। समद ओनू, लूद और गिर्दो-नवाह
की आबादियों का बानी था। बरिया और समा
ऐयालोन के बाशिंदों के सरबराह थे। उन्हीं ने जात
के बाशिंदों को निकाल दिया।

15-16बरिया के बेटे ज़बदियाह, अराद, इदर,
मीकाएल, इसफ़ाह और यूख़ा थे।

17इलफ़ाल के मज़ीद बेटे ज़बदियाह,
मसुल्लाम, हिज़क़ी, हिबर, 18यिस्मरी, यिज़-
लियाह और यूबाब थे।

19-21सिमई के बेटे यक़ीम, ज़िकरी, ज़ब-
दी, इलियैनी, ज़िल्लती, इलियेल, अदायाह,
बिरायाह और सिमरात थे।

22-25शाशक़ के बेटे इसफ़ान, इबर, इलि-
येल, अब्दोन, ज़िकरी, हनान, हननि-
याह, ऐलाम, अनतोतियाह, यफ़दियाह और
फ़नुएल थे।

26-27यरोहाम के बेटे सम्सरी, शहारियाह,
अतलियाह, यारसियाह, इलियास और ज़िकरी
थे। 28यह तमाम ख़ानदानी सरपरस्त नसबनामे
में दर्ज थे और यरूशलम में रहते थे।

जिबऊन में साऊल का ख़ानदान

29जिबऊन का बाप यइयेल जिबऊन में रहता
था। उस की बीवी का नाम माका था। 30बड़े से
लेकर छोटे तक उनके बेटे अब्दोन, सूर, क़ीस,
बाल, नदब, 31जदूर, अख़ियो, ज़कर 32और
मिक़लोत थे। मिक़लोत का बेटा सिमाह था। वह
भी अपने रिश्तेदारों के साथ यरूशलम में रहते थे।
33नैर क़ीस का बाप था और क़ीस साऊल
का। साऊल के चार बेटे यूनतन, मलकीशुअ,
अबीनदाब और इशबाल थे।
34यूनतन मरीब्बाल का बाप था और मरीब्बाल
मीकाह का।
35मीकाह के चार बेटे फ़ीतून, मलिक, तारीअ
और आख़ज़ थे।
36आख़ज़ का बेटा यहुअद्दा था जिसके तीन बेटे
अलमत, अज़मावत और ज़िमरी थे। ज़िमरी के
हाँ मौज़ा पैदा हुआ, 37मौज़ा के बिनआ, बिनआ
के राफ़ा, राफ़ा के इलियासा और इलियासा के
असील।
38असील के छः बेटे अज़रीक़ाम, बोकिरू,
इसमाईल, सअरियाह, अबदियाह और ह-
नान थे। 39असील के भाई ईशक़ के तीन बेटे
बड़े से लेकर छोटे तक औलाम, यऊस और
इलीफ़लत थे।
40औलाम के बेटे तजरबाकार फ़ौजी थे जो
महारत से तीर चला सकते थे। उनके बहुत-से
बेटे और पोते थे, कुल 150 अफ़राद। तमाम
मज़कूरा आदमी उनके ख़ानदानों समेत बिनयमीन
की औलाद थे।

जिलावतनी के बाद यरूशलम के बाशिंदे

9 तमाम इसराईल शाहाने-इसराईल की
किताब के नसबनामों में दर्ज है।
फिर यहूदाह के बाशिंदों को बेवफ़ाई के बाइस
बाबल में जिलावतन कर दिया गया। 2जो लोग
पहले वापस आकर दुबारा शहरों में अपनी मौरूसी
ज़मीन पर रहने लगे वह इमाम, लावी, रब के घर
के ख़िदमतगार और बाक़ी चंद एक इसराईली थे।
3यहूदाह, बिनयमीन, इफ़राईम और मनस्सी के
क़बीलों के कुछ लोग यरूशलम में जा बसे।
4यहूदाह के क़बीले के दर्जे-ज़ैल ख़ानदानी
सरपरस्त वहाँ आबाद हुए :
ऊती बिन अम्मीहूद बिन उमरी बिन इमरी बिन
बानी। बानी फ़ारस बिन यहूदाह की औलाद में से
था।
5सैला के ख़ानदान का पहलौठा असायाह और
उसके बेटे।
6ज़ारह के ख़ानदान का यऊएल। यहूदाह के
इन ख़ानदानों की कुल तादाद 690 थी।
7-8बिनयमीन के क़बीले के दर्जे-ज़ैल ख़ानदानी
सरपरस्त यरूशलम में आबाद हुए :
सल्लू बिन मसुल्लाम बिन हूदावियाह बिन
सनुआह।
इबनियाह बिन यरोहाम।
ऐला बिन उज़्ज़ी बिन मिक़री।
मसुल्लाम बिन सफ़तियाह बिन रऊएल बिन
इबनियाह।
9नसबनामे के मुताबिक़ बिनयमीन के इन
ख़ानदानों की कुल तादाद 956 थी।
10जो इमाम जिलावतनी से वापस आकर
यरूशलम में आबाद हुए वह ज़ैल में दर्ज हैं :
यदायाह, यहूयरीब, यकीन, 11अल्लाह के
घर का इंचार्ज अज़रियाह बिन ख़िलक़ियाह
बिन मसुल्लाम बिन सदोक़ बिन मिरायोत बिन
अख़ीतूब, 12अदायाह बिन यरोहाम बिन फ़शहूर
बिन मलकियाह और मासी बिन अदियेल बिन
यहज़ीराह बिन मसुल्लाम बिन मसिल्लिमित बिन
इम्मेर। 13इमामों के इन ख़ानदानों की कुल तादाद
1,760 थी। उनके मर्द रब के घर में ख़िदमत
सरंजाम देने के क़ाबिल थे।
14जो लावी जिलावतनी से वापस आकर
यरूशलम में आबाद हुए वह दर्जे-ज़ैल हैं :
मिरारी के ख़ानदान का समायाह बिन हस्सूब
बिन अज़रीक़ाम बिन हसबियाह, 15बक़बक़्क़र,
हरस, जलाल, मत्तनियाह बिन मीका बिन
ज़िकरी बिन आसफ़, 16अबदियाह बिन समायाह

बिन जलाल बिन यदूतून और बरकियाह बिन आसा बिन इलक़ाना। बरकियाह नतूफ़ातियों की आबादियों का रहनेवाला था।

17ज़ैल के दरबान भी वापस आए : सल्लूम, अक़्क़ूब, तलमून, अख़ीमान और उनके भाई। सल्लूम उनका इंचार्ज था। 18आज तक उसका ख़ानदान रब के घर के मशरिक़ में शाही दरवाज़े की पहरादारी करता है। यह दरबान लावियों के ख़ैमों के अफ़राद थे। 19सल्लूम बिन क़ोरे बिन अबियासफ़ बिन क़ोरह अपने भाइयों के साथ क़ोरह के ख़ानदान का था। जिस तरह उनके बापदादा की ज़िम्मेदारी रब की ख़ैमागाह में मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े की पहरादारी करनी थी उसी तरह उनकी ज़िम्मेदारी मक़दिस के दरवाज़े की पहरादारी करनी थी। 20क़दीम ज़माने में फ़ीनहास बिन इलियज़र उन पर मुक़र्रर था, और रब उसके साथ था। 21बाद में ज़करियाह बिन मसलमियाह मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े का दरबान था।

22कुल 212 मर्दों को दरबान की ज़िम्मादारी दी गई थी। उनके नाम उनकी मक़ामी जगहों के नसबनामे में दर्ज थे। दाऊद और समुएल ग़ैबबीन ने उनके बापदादा को यह ज़िम्मेदारी दी थी। 23वह और उनकी औलाद पहले रब के घर यानी मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़ों पर पहरादारी करते थे। 24यह दरबान रब के घर के चारों तरफ़ के दरवाज़ों की पहरादारी करते थे।

25लावी के अकसर लोग यरूशलम में नहीं रहते थे बल्कि बारी बारी एक हफ़ते के लिए देहात से यरूशलम आते थे ताकि वहाँ अपनी ख़िदमत सरंजाम दें। 26सिर्फ़ दरबानों के चार इंचार्ज मुसलसल यरूशलम में रहते थे। यह चार लावी अल्लाह के घर के कमरों और ख़ज़ानों को भी सँभालते 27और रात को भी अल्लाह के घर के इर्दगिर्द गुज़ारते थे, क्योंकि उन्हीं को उस की हिफ़ाज़त करना और सुबह के वक़्त उसके दरवाज़ों को खोलना था।

28बाज़ दरबान इबादत का सामान सँभालते थे। जब भी उसे इस्तेमाल के लिए अंदर और बाद में दुबारा बाहर लाया जाता तो वह हर चीज़ को गिनकर चैक करते थे। 29बाज़ बाक़ी सामान और मक़दिस में मौजूद चीज़ों को सँभालते थे। रब के घर में मुस्तामल बारीक मैदा, मै, ज़ैतून का तेल, बख़ूर और बलसान के मुख़्तलिफ़ तेल भी इनमें शामिल थे। 30लेकिन बलसान के तेलों को तैयार करना इमामों की ज़िम्मेदारी थी। 31क़ोरह के ख़ानदान का लावी मत्तितियाह जो सल्लूम का पहलौठा था क़ुरबानी के लिए मुस्तामल रोटी बनाने का इंतज़ाम चलाता था। 32क़िहात के ख़ानदान के बाज़ लावियों के हाथ में वह रोटियाँ बनाने का इंतज़ाम था जो हर हफ़ते के दिन को रब के लिए मख़सूस करके रब के घर के मुक़द्दस कमरे की मेज़ पर रखी जाती थीं।

33मौसीक़ार भी लावी थे। उनके सरबराह बाक़ी तमाम ख़िदमत में हिस्सा नहीं लेते थे, क्योंकि उन्हें हर वक़्त अपनी ही ख़िदमत सरंजाम देने के लिए तैयार रहना पड़ता था। इसलिए वह रब के घर के कमरों में रहते थे।

34लावियों के यह तमाम ख़ानदानी सरपरस्त नसबनामे में दर्ज थे और यरूशलम में रहते थे।

जिबऊन में साऊल के ख़ानदान

35जिबऊन का बाप यइयेल जिबऊन में रहता था। उस की बीवी का नाम माका था। 36बड़े से लेकर छोटे तक उनके बेटे अब्दोन, सूर, क़ीस, बाल, नैर, नदब, 37जदूर, अख़ियो, ज़करियाह और मिक़लोत थे। 38मिक़लोत का बेटा सिमाह था। वह भी अपने भाइयों के मुक़ाबिल यरूशलम में रहते थे।

39नैर क़ीस का बाप था और क़ीस साऊल का। साऊल के चार बेटे यूनतन, मलकीशुअ, अबीनदाब और इशबाल थे।

40यूनतन मरीब्बाल का बाप था और मरीब्बाल मीकाह का। 41मीकाह के चार बेटे फ़ीतून,

मलिक, तहरेअ और आख़ज़ थे। 42आख़ज़
का बेटा यारा था। यारा के तीन बेटे अलमत,
अज़मावत और ज़िमरी थे। ज़िमरी के हाँ
मौज़ा पैदा हुआ, 43मौज़ा के बिनआ, बना के
रिफ़ायाह, रिफ़ायाह के इलियासा और इलियासा
के असील।

44असील के छः बेटे अज़रीक़ाम, बोकिरू,
इसमाईल, सअरियाह, अबदियाह और ह-
नान थे।

साऊल और उसके बेटों की मौत

10 जिलबुअ के पहाड़ी सिलसिले
पर फ़िलिस्तियों और इसराई-
लियों के दरमियान जंग छिड़ गई। लड़ते लड़ते
इसराईली फ़रार होने लगे, लेकिन बहुत लोग वहीं
शहीद हो गए।

2फिर फ़िलिस्ती साऊल और उसके बेटों
यूनतन, अबीनदाब और मलकीशुअ के पास जा
पहुँचे। तीनों बेटे हलाक हो गए, 3जबकि लड़ाई
साऊल के इर्दगिर्द उरूज तक पहुँच गई। फिर
वह तीरअंदाज़ों का निशाना बनकर ज़ख़मी हो
गया। 4उसने अपने सिलाहबरदार को हुक्म दिया,
"अपनी तलवार मियान से खींचकर मुझे मार
डाल! वरना यह नामख़तून मुझे बेइज़्ज़त करेंगे।"
लेकिन सिलाहबरदार ने इनकार किया, क्योंकि
वह बहुत डरा हुआ था। आख़िर में साऊल अपनी
तलवार लेकर ख़ुद उस पर गिर गया।

5जब सिलाहबरदार ने देखा कि मेरा मालिक
मर गया है तो वह भी अपनी तलवार पर गिरकर
मर गया। 6यों उस दिन साऊल, उसके तीन बेटे
और उसका तमाम घराना हलाक हो गए। 7जब
मैदाने-यज़्रएल के इसराईलियों को ख़बर मिली
कि इसराईली फ़ौज भाग गई और साऊल अपने
बेटों समेत मारा गया है तो वह अपने शहरों को
छोड़कर भाग निकले, और फ़िलिस्ती छोड़े हुए
शहरों पर क़ब्ज़ा करके उनमें बसने लगे।

8अगले दिन फ़िलिस्ती लाशों को लूटने के
लिए दुबारा मैदाने-जंग में आ गए। जब उन्हें
जिलबुअ के पहाड़ी सिलसिले पर साऊल और
उसके तीनों बेटे मुरदा मिले 9तो उन्होंने साऊल
का सर काटकर उसका ज़िरा-बकतर उतार लिया
और क़ासिदों को अपने पूरे मुल्क में भेजकर
अपने बुतों और अपनी क़ौम को फ़तह की इत्तला
दी। 10साऊल का ज़िरा-बकतर उन्होंने अपने
देवताओं के मंदिर में महफ़ूज़ कर लिया और
उसके सर को दजून देवता के मंदिर में लटका
दिया।

11जब यबीस-जिलियाद के बाशिंदों को ख़बर
मिली कि फ़िलिस्तियों ने साऊल की लाश के
साथ क्या कुछ किया है 12तो शहर के तमाम
लड़ने के क़ाबिल आदमी बैत-शान के लिए रवाना
हुए। वहाँ पहुँचकर वह साऊल और उसके बेटों
की लाशों को उतारकर यबीस ले गए जहाँ उन्होंने
उनकी हड्डियों को यबीस के बड़े दरख़्त के साये
में दफ़नाया। उन्होंने रोज़ा रखकर पूरे हफ़्ते तक
उनका मातम किया।

13साऊल को इसलिए मारा गया कि वह रब
का वफ़ादार न रहा। उसने उस की हिदायात पर
अमल न किया, यहाँ तक कि उसने मुरदों की रूह
से राबिता करनेवाली जादूगरनी से मशवरा किया,
14हालाँकि उसे रब से दरियाफ़्त करना चाहिए
था। यही वजह है कि रब ने उसे सज़ाए-मौत देकर
सलतनत को दाऊद बिन यस्सी के हवाले कर
दिया।

दाऊद पूरे इसराईल का बादशाह बन जाता है

11 उस वक़्त तमाम इसराईल हब-
रून में दाऊद के पास आया और
कहा, "हम आप ही की क़ौम और आप ही के
रिश्तेदार हैं। 2माज़ी में भी जब साऊल बादशाह
था तो आप ही फ़ौजी मुहिमों में इसराईल की
क़ियादत करते रहे। और रब आपके ख़ुदा ने
आपसे वादा भी किया है कि तू मेरी क़ौम
इसराईल का चरवाहा बनकर उस पर हुकूमत
करेगा।"

3जब इसराईल के तमाम बुज़ुर्ग हबरून पहुँचे तो दाऊद बादशाह ने रब के हुज़ूर उनके साथ अहद बाँधा, और उन्होंने उसे मसह करके इसराईल का बादशाह बना दिया। यों रब का समुएल की मारिफ़त किया हुआ वादा पूरा हुआ।

दाऊद यरूशलम पर क़ब्ज़ा करता है

4बादशाह बनने के बाद दाऊद तमाम इसराईलियों के साथ यरूशलम गया ताकि उस पर हमला करे। उस ज़माने में उसका नाम यबूस था, और यबूसी उसमें बसते थे। 5दाऊद को देखकर यबूसियों ने उससे कहा, "आप हमारे शहर में कभी दाख़िल नहीं हो पाएँगे!"

तो भी दाऊद ने सिय्यून के क़िले पर क़ब्ज़ा कर लिया जो आजकल 'दाऊद का शहर' कहलाता है। 6यबूस पर हमला करने से पहले दाऊद ने कहा था, "जो भी यबूसियों पर हमला करने में राहनुमाई करे वह फ़ौज का कमाँडर बनेगा।" तब योआब बिन ज़रूयाह ने पहले शहर पर चढ़ाई की। चुनाँचे उसे कमाँडर मुक़र्रर किया गया।

7यरूशलम पर फ़तह पाने के बाद दाऊद क़िले में रहने लगा। उसने उसे 'दाऊद का शहर' क़रार दिया 8और उसके इर्दगिर्द शहर को बढ़ाने लगा। दाऊद का यह तामीरी काम इर्दगिर्द के चबूतरों से शुरू हुआ और चारों तरफ़ फैलता गया जबकि योआब ने शहर का बाक़ी हिस्सा बहाल कर दिया। 9यों दाऊद ज़ोर पकड़ता गया, क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज उसके साथ था।

दाऊद के मशहूर फ़ौजी

10दर्जे-ज़ैल दाऊद के सूरमाओं की फ़हरिस्त है। पूरे इसराईल के साथ उन्होंने मज़बूती से उस की बादशाही की हिमायत करके दाऊद को रब के फ़रमान के मुताबिक़ अपना बादशाह बना दिया।

11जो तीन अफ़सर योआब के भाई अबीशै के ऐन बाद आते थे उनमें यसूबियाम हकमूनी पहले नंबर पर आता था। एक बार उसने अपने नेज़े से 300 आदमियों को मार दिया। 12इन तीन अफ़सरों में से दूसरी जगह पर इलियज़र बिन दोदो बिन अख़ूही आता था। 13यह फ़स-दम्मीम में दाऊद के साथ था जब फ़िलिस्ती वहाँ लड़ने के लिए जमा हो गए थे। मैदाने-जंग में जौ का खेत था, और लड़ते लड़ते इसराईली फ़िलिस्तियों के सामने भागने लगे। 14लेकिन इलियज़र दाऊद के साथ खेत के बीच में फ़िलिस्तियों का मुक़ाबला करता रहा। फ़िलिस्तियों को मारते मारते उन्होंने खेत का दिफ़ा करके रब की मदद से बड़ी फ़तह पाई।

15-16एक और जंग के दौरान दाऊद अदुल्लाम के ग़ार के पहाड़ी क़िले में था जबकि फ़िलिस्ती फ़ौज ने वादीए-रफ़ाईम में अपनी लशकरगाह लगाई थी। उनके दस्तों ने बैत-लहम पर भी क़ब्ज़ा कर लिया था। दाऊद के तीस आला अफ़सरों में से तीन उससे मिलने आए। 17दाऊद को शदीद प्यास लगी, और वह कहने लगा, "कौन मेरे लिए बैत-लहम के दरवाज़े पर के हौज़ से कुछ पानी लाएगा?"

18यह सुनकर तीनों अफ़सर फ़िलिस्तियों की लशकरगाह पर हमला करके उसमें घुस गए और लड़ते लड़ते बैत-लहम के हौज़ तक पहुँच गए। उससे कुछ पानी भरकर वह उसे दाऊद के पास ले आए। लेकिन उसने पीने से इनकार कर दिया बल्कि उसे क़ुरबानी के तौर पर उंडेलकर रब को पेश किया 19और बोला, "अल्लाह न करे कि मैं यह पानी पियूँ। अगर ऐसा करता तो उन आदमियों का ख़ून पीता जो अपनी जान पर खेलकर पानी लाए हैं।" इसलिए वह उसे पीना नहीं चाहता था। यह इन तीन सूरमाओं के ज़बरदस्त कामों की एक मिसाल है।

20-21योआब का भाई अबीशै मज़कूरा तीन सूरमाओं पर मुक़र्रर था। एक दफ़ा उसने अपने नेज़े से 300 आदमियों को मार डाला। तीनों की निसबत उस की ज़्यादा इज़्ज़त की जाती थी, लेकिन वह ख़ुद इनमें गिना नहीं जाता था।

22बिनायाह बिन यहोयदा भी ज़बरदस्त फ़ौजी
था। वह क़बज़ियेल का रहनेवाला था, और उसने
बहुत दफ़ा अपनी मरदानगी दिखाई। मोआब के
दो बड़े सूरमा उसके हाथों हलाक हुए। एक बार
जब बहुत बर्फ़ पड़ गई तो उसने एक हौज़ में
उतरकर एक शेरबबर को मार डाला जो उसमें गिर
गया था। 23एक और मौक़े पर उसका वास्ता एक
मिसरी से पड़ा जिसका क़द साढ़े सात फ़ुट था।
मिसरी के हाथ में खड्डी के शहतीर जैसा बड़ा नेज़ा
था जबकि उसके अपने पास सिर्फ़ लाठी थी।
लेकिन बिनायाह ने उस पर हमला करके उसके
हाथ से नेज़ा छीन लिया और उसे उसके अपने
हथियार से मार डाला। 24ऐसी बहादुरी दिखाने
की बिना पर बिनायाह बिन यहोयदा मज़कूरा
तीन आदमियों के बराबर मशहूर हुआ। 25तीस
अफ़सरों के दीगर मर्दों की निसबत उस की ज़्यादा
इज़्ज़त की जाती थी, लेकिन वह मज़कूरा तीन
आदमियों में गिना नहीं जाता था। दाऊद ने उसे
अपने मुहाफ़िज़ों पर मुक़र्रर किया।

26ज़ैल के आदमी बादशाह के सूरमाओं में
शामिल थे।

योआब का भाई असाहेल, बैत-लहम
का इल्हनान बिन दोदो, 27सम्मोत हरोरी,
ख़लिस फ़लूनी, 28तक़ुअ का ईरा बिन
अक़्क़ीस, अनतोत का अबियज़र, 29सिब्ब-
की हूसाती, ईली अख़ूही, 30महरी नतूफ़ाती,
हलिद बिन बाना नतूफ़ाती, 31बिनयमीनी
शहर जिबिया का इत्ती बिन रीबी, बिनायाह
फ़िरआतोनी 32नहले-जास का हूरी, अबि-
येल अरबाती, 33अज़मावत बहरूमी, इलि-
यहबा सालबूनी, 34हशीम जिज़ूनी के बेटे,
यूनतन बिन शजी हरारी, 35अख़ियाम बिन
सकार हरारी, इलीफ़ल बिन ऊर, 36हिफ़र
मकीराती, अख़ियाह फ़लूनी, 37हसरो कर-
मिली, नारी बिन अज़बी, 38नातन का भाई
योएल, मिबख़ार बिन हाजिरी, 39सिलक़
अम्मोनी, योआब बिन ज़रूयाह का सिलाह-
बरदार नहरी बैरोती, 40ईरा इतरी, जरीब इतरी,
41ऊरियाह हित्ती, ज़बद बिन अख़ली, 42अदीना
बिन सीज़ा (रूबिन के क़बीले का यह सरदार 30
फ़ौजियों पर मुक़र्रर था), 43हनान बिन माका,
यूसफ़त मितनी, 44उज़्ज़ियाह अस्तराती, ख़ूताम
अरोईरी के बेटे समा और यइयेल, 45यदियएल
बिन सिमरी, उसका भाई यूख़ा तीसी, 46इलियेल
महावी, इलनाम के बेटे यरीबी और यूसा-
वियाह, यितमा मोआबी, 47इलियेल, ओबेद और
यासियेल मज़ोबाई।

साऊल के दौरे-हुकूमत में दाऊद के पैरोकार

12 ज़ैल के आदमी सिक़लाज में दाऊद
के साथ मिल गए, उस वक़्त जब
वह साऊल बिन क़ीस से छुपा रहता था। यह
उन फ़ौजियों में से थे जो जंग में दाऊद के साथ
मिलकर लड़ते थे 2और बेहतरीन तीरअंदाज़ थे,
क्योंकि यह न सिर्फ़ दहने बल्कि बाएँ हाथ से
भी महारत से तीर और फ़लाख़न का पत्थर चला
सकते थे। इन आदमियों में से दर्जे-ज़ैल बिनयमीन
के क़बीले और साऊल के ख़ानदान से थे।

3उनका राहनुमा अख़ियज़र, फिर युआस
(दोनों समाआह जिबियाती के बेटे थे),
यज़ियेल और फ़लत (दोनों अज़मावत के
बेटे थे), बराका, याहू अनतोती, 4इसमायाह
जिबऊनी जो दाऊद के 30 अफ़सरों का एक
सूरमा और लीडर था, यरमियाह, यहज़ि-
येल, यूहनान, यूज़बद जदीराती, 5इलिऊज़ी,
यरीमोत, बालियाह, समरियाह और सफ़-
तियाह ख़रूफ़ी।

6क़ोरह के ख़ानदान में से इलक़ाना,
यिस्सियाह, अज़रेल, युअज़र और यसू-
बियाम दाऊद के साथ थे।

7इनके अलावा यरोहाम जदूरी के बेटे यूईला
और ज़बदियाह भी थे।

8जद के क़बीले से भी कुछ बहादुर और
तजरबाकार फ़ौजी साऊल से अलग होकर दाऊद
के साथ मिल गए जब वह रेगिस्तान के क़िले में
था। यह मर्द महारत से ढाल और नेज़ा इस्तेमाल

कर सकते थे। उनके चेहरे शेरबबर के चेहरों की मानिंद थे, और वह पहाड़ी इलाक़े में ग़ज़ालों की तरह तेज़ चल सकते थे।

9उनका लीडर अज़र ज़ैल के दस आद-
मियों पर मुक़र्रर था : अबदियाह, इलियाब,
10मिस्मन्ना, यरमियाह, 11अत्ती, इलियेल,
12यूहनान, इल्ज़बद, 13यरमियाह और मक-
बन्नी।

14जद के यह मर्द सब आला फ़ौजी अफ़सर बन गए। उनमें से सबसे कमज़ोर आदमी सौ आम फ़ौजियों का मुक़ाबला कर सकता था जबकि सबसे ताक़तवर आदमी हज़ार का मुक़ाबला कर
सकता था। 15इन्हीं ने बहार के मौसम में दरियाए-यरदन को पार किया, जब वह किनारों से बाहर आ गया था, और मशरिक़ और मग़रिब की वादियों को बंद कर रखा।

16बिनयमीन और यहूदाह के क़बीलों के कुछ
मर्द दाऊद के पहाड़ी क़िले में आए। 17दाऊद
बाहर निकलकर उनसे मिलने गया और पूछा, “क्या आप सलामती से मेरे पास आए हैं? क्या आप मेरी मदद करना चाहते हैं? अगर ऐसा है तो मैं आपका अच्छा साथी रहूँगा। लेकिन अगर आप मुझे दुश्मनों के हवाले करने के लिए आए हैं हालाँकि मुझसे कोई भी ज़ुल्म नहीं हुआ है तो हमारे बापदादा का ख़ुदा इसे देखकर आपको सज़ा दे।”

18फिर रूहुल-क़ुद्स 30 अफ़सरों के राहनुमा अमासी पर नाज़िल हुआ, और उसने कहा, “ऐ दाऊद, हम तेरे ही लोग हैं। ऐ यस्सी के बेटे, हम तेरे साथ हैं। सलामती, सलामती तुझे हासिल हो, और सलामती उन्हें हासिल हो जो तेरी मदद करते हैं। क्योंकि तेरा ख़ुदा तेरी मदद करेगा।” यह सुनकर दाऊद ने उन्हें क़बूल करके अपने छापामार दस्तों पर मुक़र्रर किया।

19मनस्सी के क़बीले के कुछ मर्द भी साऊल से अलग होकर दाऊद के पास आए। उस वक़्त वह फ़िलिस्तियों के साथ मिलकर साऊल से लड़ने जा रहा था, लेकिन बाद में उसे मैदाने-जंग में आने की इजाज़त न मिली। क्योंकि फ़िलिस्ती सरदारों ने आपस में मशवरा करने के बाद उसे यह कहकर वापस भेज दिया कि ख़तरा है कि यह हमें मैदाने-जंग में छोड़कर अपने पुराने मालिक साऊल से दुबारा मिल जाए। फिर हम तबाह हो जाएंगे।

20जब दाऊद सिक़लाज वापस जा रहा था तो मनस्सी के क़बीले के दर्जे-ज़ैल अफ़सर साऊल से अलग होकर उसके साथ हो लिए : अदना, यूज़बद, यदियएल, मीकाएल, यूज़बद, इलीहू और ज़िल्लती। मनस्सी में हर एक को हज़ार हज़ार फ़ौजियों पर मुक़र्रर किया गया था।
21उन्होंने लूटनेवाले अमालीक़ी दस्तों को पकड़ने में दाऊद की मदद की, क्योंकि वह सब दिलेर और क़ाबिल फ़ौजी थे। सब उस की फ़ौज में अफ़सर बन गए।

22रोज़ बरोज़ लोग दाऊद की मदद करने के लिए आते रहे, और होते होते उस की फ़ौज अल्लाह की फ़ौज जैसी बड़ी हो गई।

हबरून में दाऊद की फ़ौज

23दर्जे-ज़ैल उन तमाम फ़ौजियों की फ़ह-रिस्त है जो हबरून में दाऊद के पास आए ताकि उसे साऊल की जगह बादशाह बनाएँ, जिस तरह रब ने हुक्म दिया था।

24यहूदाह के क़बीले के ढाल और नेज़े से लैस 6,800 मर्द थे।

25शमाऊन के क़बीले के 7,100 तजर-बाकार फ़ौजी थे।

26लावी के क़बीले के 4,600 मर्द थे। 27उनमें
हारून के ख़ानदान का सरपरस्त यहोयदा भी शामिल था जिसके साथ 3,700 आदमी थे।
28सदोक़ नामी एक दिलेर और जवान फ़ौजी भी शामिल था। उसके साथ उसके अपने ख़ानदान के 22 अफ़सर थे।

29साऊल के क़बीले बिनयमीन के भी 3,000 मर्द थे, लेकिन इस क़बीले के अकसर फ़ौजी अब तक साऊल के ख़ानदान के साथ लिपटे रहे।

30इफ़राईम के क़बीले के 20,800 फ़ौजी थे।
सब अपने ख़ानदानों में असरो-रसूख़ रखनेवाले
थे।
31मनस्सी के आधे क़बीले के 18,000 मर्द
थे। उन्हें दाऊद को बादशाह बनाने के लिए चुन
लिया गया था।
32इशकार के क़बीले के 200 अफ़सर अपने
दस्तों के साथ थे। यह लोग वक़्त की ज़रूरत
समझकर जानते थे कि इसराईल को क्या करना
है।
33ज़बूलून के क़बीले के 50,000 तजर-
बाकार फ़ौजी थे। वह हर हथियार से लैस और
पूरी वफ़ादारी से दाऊद के लिए लड़ने के लिए
तैयार थे।
34नफ़ताली के क़बीले के 1,000 अफ़सर थे।
उनके तहत ढाल और नेज़े से मुसल्लह 37,000
आदमी थे।
35दान के क़बीले के 28,600 मर्द थे जो सब
लड़ने के लिए मुस्तैद थे।
36आशर के क़बीले के 40,000 मर्द थे जो
सब लड़ने के लिए तैयार थे।
37दरियाए-यरदन के मशरिक़ में आबाद
क़बीलों रूबिन, जद और मनस्सी के आधे हिस्से
के 1,20,000 मर्द थे। हर एक हर क़िस्म के
हथियार से लैस था।
38सब तरतीब से हबरून आए ताकि पूरे अज़्म
के साथ दाऊद को पूरे इसराईल का बादशाह
बनाएँ। बाक़ी तमाम इसराईली भी मुत्तफ़िक़ थे
कि दाऊद हमारा बादशाह बन जाए। 39यह फ़ौजी
तीन दिन तक दाऊद के पास रहे जिस दौरान
उनके क़बायली भाई उन्हें खाने-पीने की चीज़ें
मुहैया करते रहे। 40क़रीब के रहनेवालों ने भी
इसमें उनकी मदद की। इशकार, ज़बूलून और
नफ़ताली तक के लोग अपने गधों, ऊँटों, ख़च्चरों
और बैलों पर खाने की चीज़ें लादकर वहाँ पहुँचे।
मैदा, अंजीर और किशमिश की टिक्कियाँ, मै,
तेल, बैल और भेड़-बकरियाँ बड़ी मिक़दार में
हबरून लाई गईं, क्योंकि तमाम इसराईली ख़ुशी
मना रहे थे।

दाऊद अहद का संदूक़ यरूशलम में लाना चाहता है

13 दाऊद ने तमाम अफ़सरों से मश-
वरा किया। उनमें हज़ार हज़ार और
सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर अफ़सर शामिल थे।
2फिर उसने इसराईल की पूरी जमात से कहा,
“अगर आपको मंज़ूर हो और रब हमारे ख़ुदा की
मरज़ी हो तो आएँ हम पूरे मुल्क के इसराईली
भाइयों को दावत दें कि आकर हमारे साथ जमा
हो जाएँ। वह इमाम और लावी भी शरीक हों
जो अपने अपने शहरों और चरागाहों में बसते हैं।
3फिर हम अपने ख़ुदा के अहद का संदूक़ दुबारा
अपने पास वापस लाएँ, क्योंकि साऊल के दौरे-
हुकूमत में हम उस की फ़िकर नहीं करते थे।”
4पूरी जमात मुत्तफ़िक़ हुई, क्योंकि यह
मनसूबा सबको दुरुस्त लगा। 5चुनाँचे दाऊद ने
पूरे इसराईल को जुनूब में मिसर के सैहूर से लेकर
शिमाल में लबो-हमात तक बुलाया ताकि सब
मिलकर अल्लाह के अहद का संदूक़ क़िरियत-
यारीम से यरूशलम ले जाएँ। 6फिर वह उनके
साथ यहूदाह के बाला यानी क़िरियत-यारीम गया
ताकि रब ख़ुदा का संदूक़ उठाकर यरूशलम ले
जाएँ, वही संदूक़ जिस पर रब के नाम का ठप्पा
लगा है और जहाँ वह संदूक़ के ऊपर करूबी
फ़रिश्तों के दरमियान तख़्तनशीन है। 7क़िरियत-
यारीम पहुँचकर लोगों ने अल्लाह के संदूक़ को
अबीनदाब के घर से निकालकर एक नई बैलगाड़ी
पर रख दिया, और उज़्ज़ा और अख़ियो उसे
यरूशलम की तरफ़ ले जाने लगे। 8दाऊद और
तमाम इसराईली गाड़ी के पीछे चल पड़े। सब
अल्लाह के हुज़ूर पूरे ज़ोर से ख़ुशी मनाने लगे।
जूनीपर की लकड़ी के मुख़्तलिफ़ साज़ भी बजाए
जा रहे थे। फ़िज़ा सितारों, सरोदों, दफ़ों, झाँझों
और तुरमों की आवाज़ों से गूँज उठी।

9वह गंदुम गाहने की एक जगह पर पहुँच गए
जिसके मालिक का नाम कैदून था। वहाँ बैल
अचानक बेकाबू हो गए। उज़्ज़ा ने जल्दी से अहद
का संदूक़ पकड़ लिया ताकि वह गिर न जाए।
10उसी लमहे रब का ग़ज़ब उस पर नाज़िल हुआ,
क्योंकि उसने अहद के संदूक़ को छूने की जुर्रत
की थी। वहीं अल्लाह के हुज़ूर उज़्ज़ा गिरकर
हलाक हुआ। 11दाऊद को बड़ा रंज हुआ कि रब
का ग़ज़ब उज़्ज़ा पर यों टूट पड़ा है। उस वक़्त से
उस जगह का नाम परज़-उज़्ज़ा यानी 'उज़्ज़ा पर
टूट पड़ना' है।

12उस दिन दाऊद को अल्लाह से ख़ौफ़ आया।
उसने सोचा, "मैं किस तरह अल्लाह का संदूक़
अपने पास पहुँचा सकूँगा?" 13चुनाँचे उसने
फ़ैसला किया कि हम अहद का संदूक़ यरूशलम
नहीं ले जाएंगे बल्कि उसे ओबेद-अदोम जाती के
घर में महफ़ूज़ रखेंगे। 14वहाँ वह तीन माह तक
पड़ा रहा। इन तीन महीनों के दौरान रब ने ओबेद-
अदोम के घराने और उस की पूरी मिलकियत को
बरकत दी।

दाऊद की तरक़्क़ी

14 एक दिन सूर के बादशाह हीराम ने
दाऊद के पास वफ़द भेजा। राज और
बढ़ई भी साथ थे। उनके पास देवदार की लकड़ी
थी ताकि दाऊद के लिए महल बनाएँ। 2यों दाऊद
ने जान लिया कि रब ने मुझे इसराईल का बादशाह
बनाकर मेरी बादशाही अपनी क़ौम इसराईल की
ख़ातिर बहुत सरफ़राज़ कर दी है।

3यरूशलम में जा बसने के बाद दाऊद
ने मज़ीद शादियाँ कीं। नतीजे में यरूशलम
में उसके कई बेटे-बेटियाँ पैदा हुए। 4जो
बेटे वहाँ पैदा हुए वह यह थे : सम्मुअ, सो-
बाब, नातन, सुलेमान, 5इबहार, इलीसुअ,
इल्फ़लत, 6नौजा, नफ़ज, यफ़ीअ, 7इली-
समा, बाल-यदा और इलीफ़लत।

फ़िलिस्तियों पर फ़तह

8जब फ़िलिस्तियों को इत्तला मिली कि
दाऊद को मसह करके इसराईल का बाद-
शाह बनाया गया है तो उन्होंने अपने फ़ौजियों
को इसराईल में भेज दिया ताकि उसे पकड़ लें।
जब दाऊद को पता चल गया तो वह उनका
मुक़ाबला करने के लिए गया। 9जब फ़िलिस्ती
इसराईल में पहुँचकर वादीए-रफ़ाईम में फैल गए
10तो दाऊद ने रब से दरियाफ़्त किया, "क्या मैं
फ़िलिस्तियों पर हमला करूँ? क्या तू मुझे उन
पर फ़तह बख़्शेगा?" रब ने जवाब दिया, "हाँ,
उन पर हमला कर! मैं उन्हें तेरे क़ब्ज़े में कर
दूँगा।" 11चुनाँचे दाऊद अपने फ़ौजियों को लेकर
बाल-पराज़ीम गया। वहाँ उसने फ़िलिस्तियों को
शिकस्त दी। बाद में उसने गवाही दी, "जितने ज़ोर
से बंद के टूट जाने पर पानी उससे फूट निकलता
है उतने ज़ोर से आज अल्लाह मेरे वसीले से दुश्मन
की सफ़ों में से फूट निकला है।" चुनाँचे उस जगह
का नाम बाल-पराज़ीम यानी 'फूट निकलने का
मालिक' पड़ गया। 12फ़िलिस्ती अपने देवताओं
को छोड़कर भाग गए, और दाऊद ने उन्हें जला
देने का हुक्म दिया।

13एक बार फिर फ़िलिस्ती आकर वादीए-
रफ़ाईम में फैल गए। 14इस दफ़ा जब दाऊद
ने अल्लाह से दरियाफ़्त किया तो उसने जवाब
दिया, "इस मरतबा उनका सामना मत करना
बल्कि उनके पीछे जाकर बका के दरख़्तों के
सामने उन पर हमला कर। 15जब उन दरख़्तों की
चोटियों से क़दमों की चाप सुनाई दे तो ख़बरदार!
यह इसका इशारा होगा कि अल्लाह ख़ुद तेरे
आगे आगे चलकर फ़िलिस्तियों को मारने के लिए
निकल आया है।" 16दाऊद ने ऐसा ही किया और
नतीजे में फ़िलिस्तियों को शिकस्त देकर जिबऊन
से लेकर जज़र तक उनका ताक़्क़ुब किया।

17दाऊद की शोहरत तमाम ममालिक में फैल
गई। रब ने तमाम क़ौमों के दिलों में दाऊद का
ख़ौफ़ डाल दिया।

यरूशलम में अहद के संदूक़ के लिए तैयारियाँ

15 यरूशलम के उस हिस्से में जिस-
का नाम 'दाऊद का शहर' पड़ गया
था दाऊद ने अपने लिए चंद इमारतें बनवाईं। उसने
अल्लाह के संदूक़ के लिए भी एक जगह तैयार
करके वहाँ ख़ैमा लगा दिया। 2फिर उसने हुक्म
दिया, "सिवाए लावियों के किसी को भी अल्लाह
का संदूक़ उठाने की इजाज़त नहीं। क्योंकि रब ने
इन्हीं को रब का संदूक़ उठाने और हमेशा के लिए
उस की ख़िदमत करने के लिए चुन लिया है।"

3इसके बाद दाऊद ने तमाम इसराईल को
यरूशलम बुलाया ताकि वह मिलकर रब का
संदूक़ उस जगह ले जाएँ जो उसने उसके लिए
तैयार कर रखी थी। 4बादशाह ने हारून और बाक़ी
लावियों की औलाद को भी बुलाया। 5दर्जे-ज़ैल
उन लावी सरपरस्तों की फ़हरिस्त है जो अपने
रिश्तेदारों को लेकर आए।

क़िहात के ख़ानदान से ऊरियेल 120 मर्दों
समेत,

6मिरारी के ख़ानदान से असायाह 220 मर्दों
समेत,

7जैरसोम के ख़ानदान से योएल 130 मर्दों
समेत,

8इलीसफ़न के ख़ानदान से समायाह 200
मर्दों समेत,

9हबरून के ख़ानदान से इलियेल 80 मर्दों
समेत,

10उज़्ज़ियेल के ख़ानदान से अम्मीनदाब 112
मर्दों समेत।

11दाऊद ने दोनों इमामों सदोक़ और अबियातर
को मज़कूरा छः लावी सरपरस्तों समेत अपने
पास बुलाकर 12उनसे कहा, "आप लावियों के
सरबराह हैं। लाज़िम है कि आप अपने क़बायली
भाइयों के साथ अपने आपको मख़सूसो-मुक़द्दस
करके रब इसराईल के ख़ुदा के संदूक़ को उस
जगह ले जाएँ जो मैंने उसके लिए तैयार कर रखी
है। 13पहली मरतबा जब हमने उसे यहाँ लाने की
कोशिश की तो यह आप लावियों के ज़रीए न
हुआ, इसलिए रब हमारे ख़ुदा का क़हर हम पर टूट
पड़ा। उस वक़्त हमने उससे दरियाफ़्त नहीं किया
था कि उसे उठाकर ले जाने का क्या मुनासिब
तरीक़ा है।" 14तब इमामों और लावियों ने अपने
आपको मख़सूसो-मुक़द्दस करके रब इसराईल के
ख़ुदा के संदूक़ को यरूशलम लाने के लिए तैयार
किया। 15फिर लावी अल्लाह के संदूक़ को उठाने
की लकड़ियों से अपने कंधों पर यों ही रखकर चल
पड़े जिस तरह मूसा ने रब के कलाम के मुताबिक़
फ़रमाया था।

16दाऊद ने लावी सरबराहों को यह हुक्म
भी दिया, "अपने क़बीले में से ऐसे आदमियों
को चुन लें जो साज़, सितार, सरोद और झाँझ
बजाते हुए ख़ुशी के गीत गाएँ।" 17इस ज़िम्मेदारी
के लिए लावियों ने ज़ैल के आदमियों को
मुक़र्रर किया : हैमान बिन योएल, उसका भाई
आसफ़ बिन बरकियाह और मिरारी के ख़ानदान
का ऐतान बिन कौसायाह। 18दूसरे मक़ाम पर
उनके यह भाई आए : ज़करियाह, याज़ि-
येल, समीरामोत, यहियेल, उन्नी, इलि-
याब, बिनायाह, मासियाह, मत्तितियाह,
इलीफ़लेहू, मिक़नियाह, ओबेद-अदोम और
यइयेल। यह दरबान थे। 19हैमान, आसफ़
और ऐतान गुलूकार थे, और उन्हें पीतल
के झाँझ बजाने की ज़िम्मेदारी दी गई।
20ज़करियाह, अज़ियेल, समीरामोत, यहि-
येल, उन्नी, इलियाब, मासियाह और बिना-
याह को अलामूत के तर्ज़ पर सितार बजाना था।
21मत्तितियाह, इलीफ़लेहू, मिक़नियाह, ओबेद-
अदोम, यइयेल और अज़ज़ियाह को शमीनीत के
तर्ज़ पर सरोद बजाने के लिए चुना गया।

22कननियाह ने लावियों की कवाइर की
राहनुमाई की, क्योंकि वह इसमें माहिर था।

23-24बरकियाह, इलक़ाना, ओबेद-अदोम
और यहियाह अहद के संदूक़ के दरबान
थे। सबनियाह, यूसफ़त, नतनियेल, अमासी,

ज़करियाह, बिनायाह और इलियज़र को तुरम बजाकर अल्लाह के संदूक़ के आगे आगे चलने की ज़िम्मेदारी दी गई। सातों इमाम थे।

दाऊद अहद का संदूक़ यरूशलम में ले आता है

25फिर दाऊद, इसराईल के बुज़ुर्ग और हज़ार
हज़ार फ़ौजियों पर मुक़र्रर अफ़सर ख़ुशी मनाते
हुए निकलकर ओबेद-अदोम के घर गए ताकि
रब के अहद का संदूक़ वहाँ से लेकर यरूशलम
पहुँचाएँ। 26जब ज़ाहिर हुआ कि अल्लाह अहद
के संदूक़ को उठानेवाले लावियों की मदद कर
रहा है तो सात जवान साँडों और सात मेंढों को
क़ुरबान किया गया। 27दाऊद बारीक कतान का
लिबास पहने हुए था, और इस तरह अहद का
संदूक़ उठानेवाले लावी, गुलूकार और कवाइर
का लीडर कननियाह भी। इसके अलावा दाऊद
कतान का बालापोश पहने हुए था। 28तमाम
इसराईली ख़ुशी के नारे लगा लगाकर, नरसिंगे
और तुरम फूँक फूँककर और झाँझ, सितार और
सरोद बजा बजाकर रब के अहद का संदूक़
यरूशलम लाए।

29रब का अहद का संदूक़ दाऊद के शहर में दाख़िल हुआ तो दाऊद की बीवी मीकल बिंत साऊल खिड़की में से जुलूस को देख रही थी। जब बादशाह कूदता और नाचता हुआ नज़र आया तो मीकल ने उसे हक़ीर जाना।

16 अल्लाह का संदूक़ उस तंबू के
दरमियान में रखा गया जो दाऊद ने
उसके लिए लगवाया था। फिर उन्होंने अल्लाह
के हुज़ूर भस्म होनेवाली और सलामती की
क़ुरबानियाँ पेश कीं। 2इसके बाद दाऊद ने
क़ौम को रब के नाम से बरकत देकर 3हर
इसराईली मर्द और औरत को एक रोटी, खजूर
की एक टिक्की और किशमिश की एक टिक्की
दे दी। 4उसने कुछ लावियों को रब के संदूक़
के सामने ख़िदमत करने की ज़िम्मेदारी दी।
उन्हें रब इसराईल के ख़ुदा की तमजीद और
हम्दो-सना करनी थी। 5उनका सरबराह आसफ़
झाँझ बजाता था। उसका नायब ज़करियाह था।
फिर यइयेल, समीरामोत, यहियेल, मत्तितियाह,
इलियाब, बिनायाह, ओबेद-अदोम और यइयेल
थे जो सितार और सरोद बजाते थे। 6बिनायाह
और यहज़ियेल इमामों की ज़िम्मेदारी अल्लाह के
अहद के संदूक़ के सामने तुरम बजाना थी।

शुक्र का गीत

7उस दिन दाऊद ने पहली दफ़ा आसफ़ और उसके साथी लावियों के हवाले ज़ैल का गीत करके उन्हें रब की सताइश करने की ज़िम्मेदारी दी।

8“रब का शुक्र करो और उसका नाम पुकारो! अक़वाम में उसके कामों का एलान करो।

9साज़ बजाकर उस की मद्हसराई करो। उसके तमाम अजायब के बारे में लोगों को बताओ।

10उसके मुक़द्दस नाम पर फ़ख़र करो। रब के तालिब दिल से ख़ुश हों।

11रब और उस की क़ुदरत की दरियाफ़्त करो, हर वक़्त उसके चेहरे के तालिब रहो।

12जो मोजिज़े उसने किए उन्हें याद करो। उसके इलाही निशान और उसके मुँह के फ़ैसले दोहराते रहो।

13तुम जो उसके ख़ादिम इसराईल की औलाद और याक़ूब के फ़रज़ंद हो, जो उसके बरगुज़ीदा लोग हो, तुम्हें सब कुछ याद रहे!

14वही रब हमारा ख़ुदा है, वही पूरी दुनिया की अदालत करता है।

15वह हमेशा अपने अहद का ख़याल रखता है, उस कलाम का जो उसने हज़ार पुश्तों के लिए फ़रमाया था।

16यह वह अहद है जो उसने इब्राहीम से बाँधा, वह वादा जो उसने क़सम खाकर इसहाक़ से किया था।

17उसने उसे याक़ूब के लिए क़ायम किया ताकि वह उसके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारे, उसने तसदीक़ की कि यह मेरा इसराईल से अबदी अहद है।

18साथ साथ उसने फ़रमाया, 'मैं तुझे मुल्के-कनान दूँगा। यह तेरी मीरास का हिस्सा होगा।'

19उस वक़्त वह तादाद में कम और थोड़े ही थे बल्कि मुल्क में अजनबी ही थे।

20अब तक वह मुख़्तलिफ़ क़ौमों और सलतनतों में घुमते-फिरते थे।

21लेकिन अल्लाह ने उन पर किसी को ज़ुल्म करने न दिया, और उनकी ख़ातिर उसने बादशाहों को डाँटा,

22'मेरे मसह किए हुए ख़ादिमों को मत छेड़ना, मेरे नबियों को नुक़सान मत पहुँचाना।'

23ऐ पूरी दुनिया, रब की तमजीद में गीत गा! रोज़ बरोज़ उस की नजात की ख़ुशख़बरी सुना।

24क़ौमों में उसका जलाल और तमाम उम्मतों में उसके अजायब बयान करो।

25क्योंकि रब अज़ीम और सताइश के बहुत लायक़ है। वह तमाम माबूदों से महीब है।

26क्योंकि दीगर क़ौमों के तमाम माबूद बुत ही हैं जबकि रब ने आसमान को बनाया।

27उसके हुज़ूर शानो-शौकत, उस की सुकूनतगाह में क़ुदरत और जलाल है।

28ऐ क़ौमों के क़बीलो, रब की तमजीद करो, रब के जलाल और क़ुदरत की सताइश करो।

29रब के नाम को जलाल दो। क़ुरबानी लेकर उसके हुज़ूर आओ। मुक़द्दस लिबास से आरास्ता होकर रब को सिजदा करो।

30पूरी दुनिया उसके सामने लरज़ उठे। यक़ीनन दुनिया मज़बूती से क़ायम है और नहीं डगमगाएगी।

31आसमान शादमान हो, और ज़मीन जशन मनाए। क़ौमों में कहा जाए कि रब बादशाह है।

32समुंदर और जो कुछ उसमें है ख़ुशी से गरज उठे, मैदान और जो कुछ उसमें है बाग़ बाग़ हो।

33फिर जंगल के दरख़्त रब के सामने शादियाना बजाएंगे, क्योंकि वह आ रहा है, वह ज़मीन की अदालत करने आ रहा है।

34रब का शुक्र करो, क्योंकि वह भला है, और उस की शफ़क़त अबदी है।

35उससे इलतमास करो, 'ऐ हमारी नजात के ख़ुदा, हमें बचा! हमें जमा करके दीगर क़ौमों के हाथ से छुड़ा। तब ही हम तेरे मुक़द्दस नाम की सताइश करेंगे और तेरे क़ाबिले-तारीफ़ कामों पर फ़ख़र करेंगे।'

36अज़ल से अबद तक रब, इसराईल के ख़ुदा की हम्द हो!"

तब पूरी क़ौम ने "आमीन" और "रब की हम्द हो" कहा।

लावियों की ज़िम्मेदारियाँ

37दाऊद ने आसफ़ और उसके साथी लावियों को रब के अहद के संदूक़ के सामने छोड़कर कहा, "आइंदा यहाँ बाक़ायदगी से रोज़ाना की ज़रूरी ख़िदमत करते जाएँ।"

38इस गुरोह में ओबेद-अदोम और मज़ीद 68 लावी शामिल थे। ओबेद-अदोम बिन यदूतून और हूसा दरबान बन गए।

39लेकिन सदोक़ इमाम और उसके साथी इमामों को दाऊद ने रब की उस सुकूनतगाह के पास छोड़ दिया जो जिबऊन की पहाड़ी पर थी।
40क्योंकि लाज़िम था कि वह वहाँ हर सुबह और शाम को भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ पेश करें और बाक़ी तमाम हिदायात पर अमल करें जो रब की तरफ़ से इसराईल के लिए शरीअत में बयान की
गई हैं। 41दाऊद ने हैमान, यदूतून और मज़ीद कुछ
चीदा लावियों को भी जिबऊन में उनके पास छोड़ दिया। वहाँ उनकी ख़ास ज़िम्मेदारी रब की हम्दो-सना करना थी, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी
है। 42उनके पास तुरम, झाँझ और बाक़ी ऐसे

साज़ थे जो अल्लाह की तारीफ़ में गाए जानेवाले गीतों के साथ बजाए जाते थे। यदूतून के बेटों को दरबान बनाया गया।

43जशन के बाद सब लोग अपने अपने घर चले गए। दाऊद भी अपने घर लौटा ताकि अपने ख़ानदान को बरकत देकर सलाम करे।

रब दाऊद के लिए अबदी बादशाही का वादा करता है

17 दाऊद बादशाह सलामती से अपने महल में रहने लगा। एक दिन उसने नातन नबी से बात की, "देखें, मैं यहाँ देवदार के महल में रहता हूँ जबकि रब के अहद का संदूक़ अब तक तंबू में पड़ा है। यह मुनासिब नहीं!" 2नातन ने बादशाह की हौसलाअफ़्ज़ाई की, "जो कुछ भी आप करना चाहते हैं वह करें। अल्लाह आपके साथ है।"

3लेकिन उसी रात अल्लाह नातन से हमकलाम हुआ, 4"मेरे ख़ादिम दाऊद के पास जाकर उसे बता दे कि रब फ़रमाता है, 'तू मेरी रिहाइश के लिए मकान तामीर नहीं करेगा। 5आज तक मैं किसी मकान में नहीं रहा। जब से मैं इसराईलियों को मिसर से निकाल लाया उस वक़्त से मैं ख़ैमे में रहकर जगह बजगह फिरता रहा हूँ। 6जिस दौरान मैं तमाम इसराईलियों के साथ इधर-उधर फिरता रहा क्या मैंने इसराईल के उन राहनुमाओं से कभी इस नाते से शिकायत की जिन्हें मैंने अपनी क़ौम की गल्लाबानी करने का हुक्म दिया था? क्या मैंने उनमें से किसी से कहा कि तुमने मेरे लिए देवदार का घर क्यों नहीं बनाया?'

7चुनाँचे मेरे ख़ादिम दाऊद को बता दे, 'रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है कि मैं ही ने तुझे चरागाह में भेड़ों की गल्लाबानी करने से फ़ारिग़ करके अपनी क़ौम इसराईल का बादशाह बना दिया है। 8जहाँ भी तूने क़दम रखा वहाँ मैं तेरे साथ रहा हूँ। तेरे देखते देखते मैंने तेरे तमाम दुश्मनों को हलाक कर दिया है। अब मैं तेरा नाम सरफ़राज़ कर दूँगा, वह दुनिया के सबसे अज़ीम आदमियों के नामों के बराबर ही होगा। 9और मैं अपनी क़ौम इसराईल के लिए एक वतन मुहैया करूँगा, पौदे की तरह उन्हें यों लगा दूँगा कि वह जड़ पकड़कर महफ़ूज़ रहेंगे और कभी बेचैन नहीं होंगे। बेदीन क़ौमें उन्हें उस तरह नहीं दबाएँगी जिस तरह माज़ी में किया करती थीं, 10उस वक़्त से जब मैं क़ौम पर क़ाज़ी मुक़र्रर करता था। मैं तेरे दुश्मनों को ख़ाक में मिला दूँगा। आज मैं फ़रमाता हूँ कि रब ही तेरे लिए घर बनाएगा। 11जब तू बूढ़ा होकर कूच कर जाएगा और अपने बापदादा से जा मिलेगा तो मैं तेरी जगह तेरे बेटों में से एक को तख़्त पर बिठा दूँगा। उस की बादशाही को मैं मज़बूत बना दूँगा। 12वही मेरे लिए घर तामीर करेगा, और मैं उसका तख़्त अबद तक क़ायम रखूँगा। 13मैं उसका बाप हूँगा और वह मेरा बेटा होगा। मेरी नज़रे-करम साऊल पर न रही, लेकिन मैं उसे तेरे बेटे से कभी नहीं हटाऊँगा। 14मैं उसे अपने घराने और अपनी बादशाही पर हमेशा क़ायम रखूँगा, उसका तख़्त हमेशा मज़बूत रहेगा'।"

दाऊद की शुक्रगुज़ारी

15नातन ने दाऊद के पास जाकर उसे सब कुछ सुनाया जो रब ने उसे रोया में बताया था। 16तब दाऊद अहद के संदूक़ के पास गया और रब के हुज़ूर बैठकर दुआ करने लगा,

"ऐ रब ख़ुदा, मैं कौन हूँ और मेरा ख़ानदान क्या हैसियत रखता है कि तूने मुझे यहाँ तक पहुँचाया है? 17और अब ऐ अल्लाह, तू मुझे और भी ज़्यादा अता करने को है, क्योंकि तूने अपने ख़ादिम के घराने के मुस्तक़बिल के बारे में भी वादा किया है। ऐ रब ख़ुदा, तूने यों मुझ पर निगाह डाली है गोया कि मैं कोई बहुत अहम बंदा हूँ। 18-19लेकिन मैं मज़ीद क्या कहूँ जब तूने यों अपने ख़ादिम की इज़्ज़त की है? ऐ रब, तू तो अपने ख़ादिम को जानता है। तूने अपने ख़ादिम की ख़ातिर और अपनी मरज़ी के मुताबिक़ यह अज़ीम काम करके इन अज़ीम वादों की इत्तला दी है।

20ऐ रब, तुझ जैसा कोई नहीं है। हमने अपने
कानों से सुन लिया है कि तेरे सिवा कोई और ख़ुदा
नहीं है। 21दुनिया में कौन-सी क़ौम तेरी उम्मत
इसराईल की मानिंद है? तूने इसी एक क़ौम का
फ़िद्या देकर उसे ग़ुलामी से छुड़ाया और अपनी
क़ौम बना लिया। तूने इसराईल के वास्ते बड़े
और हैबतनाक काम करके अपने नाम की शोहरत
फैला दी। हमें मिसर से रिहा करके तूने क़ौमों
को हमारे आगे से निकाल दिया। 22ऐ रब, तू
इसराईल को हमेशा के लिए अपनी क़ौम बनाकर
उनका ख़ुदा बन गया है।

23चुनाँचे ऐ रब, जो बात तूने अपने ख़ादिम
और उसके घराने के बारे में की है उसे अबद तक
क़ायम रख और अपना वादा पूरा कर। 24तब वह
मज़बूत रहेगा और तेरा नाम अबद तक मशहूर
रहेगा। फिर लोग तसलीम करेंगे कि इसराईल का
ख़ुदा रब्बुल-अफ़वाज वाक़ई इसराईल का ख़ुदा
है, और तेरे ख़ादिम दाऊद का घराना भी अबद
तक तेरे हुज़ूर क़ायम रहेगा। 25ऐ मेरे ख़ुदा, तूने
अपने ख़ादिम के कान को इस बात के लिए खोल
दिया है। तू ही ने फ़रमाया, 'मैं तेरे लिए घर तामीर
करूँगा।' सिर्फ़ इसी लिए तेरे ख़ादिम ने यों तुझसे
दुआ करने की जुर्रत की है। 26ऐ रब, तू ही ख़ुदा
है। तूने अपने ख़ादिम से इन अच्छी चीज़ों का वादा
किया है। 27अब तू अपने ख़ादिम के घराने को
बरकत देने पर राज़ी हो गया है ताकि वह हमेशा
तक तेरे सामने क़ायम रहे। क्योंकि तू ही ने उसे
बरकत दी है, इसलिए वह अबद तक मुबारक
रहेगा।"

दाऊद की जंगें

18 फिर ऐसा वक़्त आया कि दाऊद ने
फ़िलिस्तियों को शिकस्त देकर उन्हें
अपने ताबे कर लिया और जात शहर पर गिर्दो-
नवाह की आबादियों समेत क़ब्ज़ा कर लिया।
2उसने मोआबियों पर भी फ़तह पाई, और वह
उसके ताबे होकर उसे ख़राज देने लगे।

3दाऊद ने शिमाली शाम के शहर ज़ोबाह के
बादशाह हददअज़र को भी हमात के क़रीब हरा
दिया जब हददअज़र दरियाए-फ़ुरात पर क़ाबू पाने
के लिए निकल आया था। 4दाऊद ने 1,000
रथों, 7,000 घुड़सवारों और 20,000 प्यादा
सिपाहियों को गिरिफ़्तार कर लिया। रथों के 100
घोड़ों को उसने अपने लिए महफ़ूज़ रखा जबकि
बाक़ियों की उसने कोंचें काट दीं ताकि वह आइंदा
जंग के लिए इस्तेमाल न हो सकें।

5जब दमिश्क़ के अरामी बाशिंदे ज़ोबाह के
बादशाह हददअज़र की मदद करने आए तो दाऊद
ने उनके 22,000 अफ़राद हलाक कर दिए।
6फिर उसने दमिश्क़ के इलाक़े में अपनी फ़ौजी
चौकियाँ क़ायम कीं। अरामी उसके ताबे हो गए
और उसे ख़राज देते रहे। जहाँ भी दाऊद गया वहाँ
रब ने उसे कामयाबी बख़्शी। 7सोने की जो ढालें
हददअज़र के अफ़सरों के पास थीं उन्हें दाऊद
यरूशलम ले गया। 8हददअज़र के दो शहरों कून
और तिबख़त से उसने कसरत का पीतल छीन
लिया। बाद में सुलेमान ने यह पीतल रब के घर में
'समुंदर' नामी पीतल का हौज़, सतून और पीतल
का मुख़्तलिफ़ सामान बनाने के लिए इस्तेमाल
किया।

9जब हमात के बादशाह तूई को इत्तला मिली
कि दाऊद ने ज़ोबाह के बादशाह हददअज़र की
पूरी फ़ौज पर फ़तह पाई है 10तो उसने अपने
बेटे हदूराम को दाऊद के पास भेजा ताकि उसे
सलाम कहे। हदूराम ने दाऊद को हददअज़र पर
फ़तह के लिए मुबारकबाद दी, क्योंकि हददअज़र
तूई का दुश्मन था, और उनके दरमियान जंग
रही थी। हदूराम ने दाऊद को सोने, चाँदी और
पीतल के बहुत-से तोहफ़े भी पेश किए। 11दाऊद
ने यह चीज़ें रब के लिए मख़सूस कर दीं। जहाँ
भी वह दूसरी क़ौमों पर ग़ालिब आया वहाँ की
सोना-चाँदी उसने रब के लिए मख़सूस कर दी।
यों अदोम, मोआब, अम्मोन, फ़िलिस्तिया और
अमालीक़ की सोना-चाँदी रब को पेश की गई।

12अबीशै बिन ज़रूयाह ने नमक की वादी में
अदोमियों पर फ़तह पाकर 18,000 अफ़राद
हलाक कर दिए। 13उसने अदोम के पूरे मुल्क
में अपनी फ़ौजी चौकियाँ क़ायम कीं, और तमाम
अदोमी दाऊद के ताबे हो गए। दाऊद जहाँ भी
जाता रब उस की मदद करके उसे फ़तह बख़्शता।

दाऊद के आला अफ़सर

14जितनी देर दाऊद पूरे इसराईल पर हुकूमत
करता रहा उतनी देर तक उसने ध्यान दिया कि
क़ौम के हर एक शख़्स को इनसाफ़ मिल जाए।
15योआब बिन ज़रूयाह फ़ौज पर मुक़र्रर था।
यहूसफ़त बिन अख़ीलूद बादशाह का मुशीरे-ख़ास
था। 16सदोक़ बिन अख़ीतूब और अबीमलिक
बिन अबियातर इमाम थे। शौशा मीरमुंशी था।
17बिनायाह बिन यहोयदा दाऊद के ख़ास दस्ते
बनाम करेती और फ़लेती का कप्तान मुक़र्रर था।
दाऊद के बेटे आला अफ़सर थे।

अम्मोनी दाऊद की बेइज़्ज़ती करते हैं

19 कुछ देर के बाद अम्मोनियों का
बादशाह नाहस फ़ौत हुआ, और
उसका बेटा तख़्तनशीन हुआ। 2दाऊद ने सोचा,
"नाहस ने हमेशा मुझ पर मेहरबानी की थी,
इसलिए अब मैं भी उसके बेटे हनून पर मेहरबानी
करूँगा।" उसने बाप की वफ़ात का अफ़सोस
करने के लिए हनून के पास वफ़द भेजा।

लेकिन जब दाऊद के सफ़ीर अम्मोनियों के
दरबार में पहुँच गए ताकि हनून के सामने
अफ़सोस का इज़हार करें 3तो उस मुल्क के बुज़ुर्ग
हनून बादशाह के कान में मनफ़ी बातें भरने लगे,
"क्या दाऊद ने इन आदमियों को वाक़ई सिर्फ़
इसलिए भेजा है कि वह अफ़सोस करके आपके
बाप का एहतराम करें? हरगिज़ नहीं! यह सिर्फ़
बहाना है। असल में यह जासूस हैं जो हमारे
मुल्क के बारे में मालूमात हासिल करना चाहते
हैं ताकि उस पर क़ब्ज़ा कर सकें।" 4चुनाँचे हनून
ने दाऊद के आदमियों को पकड़वाकर उनकी
दाढ़ियाँ मुँडवा दीं और उनके लिबास को कमर से
लेकर पाँव तक काटकर उतरवाया। इसी हालत
में बादशाह ने उन्हें फ़ारिग़ कर दिया।

5जब दाऊद को इसकी ख़बर मिली तो उसने
अपने क़ासिदों को उनसे मिलने के लिए भेजा
ताकि उन्हें बताएँ, "यरीहू में उस वक़्त तक ठहरे
रहें जब तक आपकी दाढ़ियाँ दुबारा बहाल न हो
जाएँ।" क्योंकि वह अपनी दाढ़ियों की वजह से
बड़ी शरमिंदगी महसूस कर रहे थे।

अम्मोनियों से जंग

6अम्मोनियों को ख़ूब मालूम था कि इस हरकत
से हम दाऊद के दुश्मन बन गए हैं। इसलिए हनून
और अम्मोनियों ने मसोपुतामिया, अराम-माका
और ज़ोबाह को चाँदी के 34,000 किलोग्राम
भेजकर किराए पर रथ और रथसवार मँगवाए।
7यों उन्हें 32,000 रथ उनके सवारों समेत मिल
गए। माका का बादशाह भी अपने दस्तों के साथ
उनसे मुत्तहिद हुआ। मीदबा के क़रीब उन्होंने
अपनी लशकरगाह लगाई। अम्मोनी भी अपने
शहरों से निकलकर जंग के लिए जमा हुए। 8जब
दाऊद को इसका इल्म हुआ तो उसने योआब
को पूरी फ़ौज के साथ उनका मुक़ाबला करने के
लिए भेज दिया। 9अम्मोनी अपने दारुल-हुकूमत
रब्बा से निकलकर शहर के दरवाज़े के सामने ही
सफ़आरा हुए जबकि दूसरे ममालिक से आए हुए
बादशाह कुछ फ़ासले पर खुले मैदान में खड़े हो
गए।

10जब योआब ने जान लिया कि सामने और
पीछे दोनों तरफ़ से हमले का ख़तरा है तो उसने
अपनी फ़ौज को दो हिस्सों में तक़सीम कर दिया।
सबसे अच्छे फ़ौजियों के साथ वह ख़ुद शाम के
सिपाहियों से लड़ने के लिए तैयार हुआ। 11बाक़ी
आदमियों को उसने अपने भाई अबीशै के हवाले
कर दिया ताकि वह अम्मोनियों से लड़ें। 12एक
दूसरे से अलग होने से पहले योआब ने अबीशै से
कहा, "अगर शाम के फ़ौजी मुझ पर ग़ालिब आने
लगें तो मेरे पास आकर मेरी मदद करना। लेकिन

अगर आप अम्मोनियों पर क़ाबू न पा सकें तो मैं
आकर आपकी मदद करूँगा। 13हौसला रखें! हम
दिलेरी से अपनी क़ौम और अपने ख़ुदा के शहरों
के लिए लड़ें। और रब वह कुछ होने दे जो उस की
नज़र में ठीक है।"
14योआब ने अपनी फ़ौज के साथ शाम के
फ़ौजियों पर हमला किया तो वह उसके सामने
से भागने लगे। 15यह देखकर अम्मोनी भी उसके
भाई अबीशै से फ़रार होकर शहर में दाख़िल हुए।
तब योआब यरूशलम वापस चला गया।

शाम के ख़िलाफ़ जंग

16जब शाम के फ़ौजियों को शिकस्त की
बेइज़्ज़ती का एहसास हुआ तो उन्होंने दरियाए-
फ़ुरात के पार मसोपुतामिया में आबाद अरामियों
के पास क़ासिद भेजे ताकि वह भी लड़ने में
मदद करें। हददअज़र का कमाँडर सोफ़क उन
पर मुक़र्रर हुआ। 17जब दाऊद को ख़बर मिली
तो उसने इसराईल के तमाम लड़ने के क़ाबिल
आदमियों को जमा किया और दरियाए-यरदन
को पार करके उनके मुक़ाबिल सफ़आरा हुआ।
जब वह यों उनसे लड़ने के लिए तैयार हुआ तो
अरामी उसका मुक़ाबला करने लगे। 18लेकिन
उन्हें दुबारा शिकस्त मानकर फ़रार होना पड़ा।
इस दफ़ा उनके 7,000 रथबानों के अलावा
40,000 प्यादा सिपाही हलाक हुए। दाऊद ने
फ़ौज के कमाँडर सोफ़क को भी मार डाला।
19जो अरामी पहले हददअज़र के ताबे थे
उन्होंने अब हार मानकर इसराईलियों से सुलह
कर ली और उनके ताबे हो गए। उस वक़्त से
अरामियों ने अम्मोनियों की मदद करने की फिर
जुर्रत न की।

रब्बा शहर पर फ़तह

20 बहार का मौसम आ गया, वह वक़्त
जब बादशाह जंग के लिए निकलते
हैं। तब योआब ने फ़ौज लेकर अम्मोनियों का
मुल्क तबाह कर दिया। लड़ते लड़ते वह रब्बा
तक पहुँच गया और उसका मुहासरा करने लगा।
लेकिन दाऊद ख़ुद यरूशलम में रहा। फिर योआब
ने रब्बा को भी शिकस्त देकर ख़ाक में मिला
दिया। 2दाऊद ने हनून बादशाह का ताज उसके
सर से उतारकर अपने सर पर रख लिया। सोने
के इस ताज का वज़न 34 किलोग्राम था, और
उसमें एक बेशक़ीमत जौहर जड़ा हुआ था। दाऊद
ने शहर से बहुत-सा लूटा हुआ माल लेकर 3उसके
बाशिंदों को ग़ुलाम बना लिया। उन्हें पत्थर काटने
की आरियाँ, लोहे की कुदालें और कुल्हाड़ियाँ दी
गईं ताकि वह मज़दूरी करें। यही सुलूक बाक़ी
अम्मोनी शहरों के बाशिंदों के साथ भी किया
गया। जंग के इख़्तिताम पर दाऊद पूरी फ़ौज के
साथ यरूशलम लौट आया।

फ़िलिस्तियों से जंग

4इसके बाद इसराईलियों को जज़र के क़रीब
फ़िलिस्तियों से लड़ना पड़ा। वहाँ सिब्बकी हूसाती
ने देवक़ामत मर्द रफ़ा की औलाद में से एक
आदमी को मार डाला जिसका नाम सफ़्फ़ी था।
यों फ़िलिस्तियों को ताबे कर लिया गया। 5उनसे
एक और लड़ाई के दौरान इल्हनान बिन याईर
ने जाती जालूत के भाई लहमी को मौत के घाट
उतार दिया। उसका नेज़ा खड्डी के शहतीर जैसा
बड़ा था। 6एक और दफ़ा जात के पास लड़ाई
हुई। फ़िलिस्तियों का एक फ़ौजी जो रफ़ा की
नसल का था बहुत लंबा था। उसके हाथों और पैरों
की छः छः उँगलियाँ यानी मिलकर 24 उँगलियाँ
थीं। 7जब वह इसराईलियों का मज़ाक़ उड़ाने
लगा तो दाऊद के भाई सिमआ के बेटे यूनतन
ने उसे मार डाला। 8जात के यह देवक़ामत मर्द
रफ़ा की औलाद थे, और वह दाऊद और उसके
फ़ौजियों के हाथों हलाक हुए।

दाऊद की मर्दुमशुमारी

21 एक दिन इबलीस इसराईल के
ख़िलाफ़ उठ खड़ा हुआ और दाऊद
को इसराईल की मर्दुमशुमारी करने पर उकसाया।

2दाऊद ने योआब और क़ौम के बुज़ुर्गों को हुक्म
दिया, "दान से लेकर बैर-सबा तक इसराईल के
तमाम क़बीलों में से गुज़रते हुए जंग करने के
क़ाबिल मर्दों को गिन लें। फिर वापस आकर मुझे
इत्तला दें ताकि मालूम हो जाए कि उनकी कुल
तादाद क्या है।"
3लेकिन योआब ने एतराज़ किया, "ऐ बादशाह
मेरे आक़ा, काश रब अपने फ़ौजियों की तादाद सौ
गुना बढ़ा दे। क्योंकि यह तो सब आपके ख़ादिम
हैं। लेकिन मेरे आक़ा उनकी मर्दुमशुमारी क्यों
करना चाहते हैं? इसराईल आपके सबब से क्यों
क़ुसूरवार ठहरे?"
4लेकिन बादशाह योआब के एतराज़ात के
बावुजूद अपनी बात पर डटा रहा। चुनाँचे योआब
दरबार से रवाना हुआ और पूरे इसराईल में से
गुज़रकर उस की मर्दुमशुमारी की। इसके बाद वह
यरूशलम वापस आ गया। 5वहाँ उसने दाऊद को
मर्दुमशुमारी की पूरी रिपोर्ट पेश की। इसराईल
में 11,00,000 तलवार चलाने के क़ाबिल
अफ़राद थे जबकि यहूदाह के 4,70,000 मर्द
थे। 6हालाँकि योआब ने लावी और बिनयमीन के
क़बीलों को मर्दुमशुमारी में शामिल नहीं किया था,
क्योंकि उसे यह काम करने से घिन आती थी।
7अल्लाह को दाऊद की यह हरकत बुरी लगी,
इसलिए उसने इसराईल को सज़ा दी। 8तब दाऊद
ने अल्लाह से दुआ की, "मुझसे संगीन गुनाह
सरज़द हुआ है। अब अपने ख़ादिम का क़ुसूर
मुआफ़ कर। मुझसे बड़ी हमाक़त हुई है।" 9तब
रब दाऊद के ग़ैबबीन जाद नबी से हमकलाम
हुआ, 10"दाऊद के पास जाकर उसे बता देना,
'रब तुझे तीन सज़ाएँ पेश करता है। इनमें से एक
चुन ले'।"
11जाद दाऊद के पास गया और उसे रब का
पैग़ाम सुना दिया। उसने सवाल किया, "आप
किस सज़ा को तरजीह देते हैं? 12सात साल
के दौरान काल? या यह कि आपके दुश्मन तीन
माह तक आपको तलवार से मार मारकर आपका
ताक़्क़ुब करते रहें? या यह कि रब की तलवार
इसराईल में से गुज़रे? इस सूरत में रब का
फ़रिश्ता मुल्क में वबा फैलाकर पूरे इसराईल का
सत्यानास कर देगा।"
13दाऊद ने जवाब दिया, "हाय मैं क्या कहूँ?
मैं बहुत परेशान हूँ। लेकिन आदमियों के हाथों में
पड़ जाने की निसबत बेहतर है कि हम रब ही के
हाथों में पड़ जाएँ, क्योंकि उसका रहम निहायत
अज़ीम है।"
14तब रब ने इसराईल में वबा फैलने दी। मुल्क
में 70,000 अफ़राद हलाक हुए। 15अल्लाह ने
अपने फ़रिश्ते को यरूशलम को तबाह करने के
लिए भी भेजा। लेकिन फ़रिश्ता अभी इसके लिए
तैयार हो रहा था कि रब ने लोगों की मुसीबत को
देखकर तरस खाया और तबाह करनेवाले फ़रिश्ते
को हुक्म दिया, "बस कर! अब बाज़ आ।" उस
वक़्त रब का फ़रिश्ता वहाँ खड़ा था जहाँ उरनान
यानी अरौनाह यबूसी अपना अनाज गाहता था।
16दाऊद ने अपनी निगाह उठाकर रब के फ़रिश्ते
को आसमानो-ज़मीन के दरमियान खड़े देखा।
अपनी तलवार मियान से खींचकर उसने उसे
यरूशलम की तरफ़ बढ़ाया था कि दाऊद बुज़ुर्गों
समेत मुँह के बल गिर गया। सब टाट का लिबास
ओढ़े हुए थे। 17दाऊद ने अल्लाह से इलतमास
की, "मैं ही ने हुक्म दिया कि लड़ने के क़ाबिल
मर्दों को गिना जाए। मैं ही ने गुनाह किया है, यह
मेरा ही क़ुसूर है। इन भेड़ों से क्या ग़लती हुई है?
ऐ रब मेरे ख़ुदा, बराहे-करम इनको छोड़कर मुझे
और मेरे ख़ानदान को सज़ा दे। अपनी क़ौम से
वबा दूर कर!"
18फिर रब के फ़रिश्ते ने जाद की मारिफ़त
दाऊद को पैग़ाम भेजा, "अरौनाह यबूसी की
गाहने की जगह के पास जाकर उस पर रब की
क़ुरबानगाह बना ले।"
19चुनाँचे दाऊद चढ़कर गाहने की जगह के
पास आया जिस तरह रब ने जाद की मारिफ़त
फ़रमाया था। 20उस वक़्त अरौनाह अपने चार
बेटों के साथ गंदुम गाह रहा था। जब उसने
पीछे देखा तो फ़रिश्ता नज़र आया। अरौनाह

के बेटे भागकर छुप गए। 21इतने में दाऊद आ
पहुँचा। उसे देखते ही अरौनाह गाहने की जगह
को छोड़कर उससे मिलने गया और उसके सामने
औंधे मुँह झुक गया। 22दाऊद ने उससे कहा,
“मुझे अपनी गाहने की जगह दे दें ताकि मैं यहाँ
रब के लिए क़ुरबानगाह तामीर करूँ। क्योंकि
यह करने से वबा रुक जाएगी। मुझे इसकी पूरी
क़ीमत बताएँ।”
23अरौनाह ने दाऊद से कहा, “मेरे आक़ा और
बादशाह, इसे लेकर वह कुछ करें जो आपको
अच्छा लगे। देखें, मैं आपको अपने बैलों को भस्म
होनेवाली क़ुरबानियों के लिए दे देता हूँ। अनाज
को गाहने का सामान क़ुरबानगाह पर रखकर
जला दें। मेरा अनाज ग़ल्ला की नज़र के लिए
हाज़िर है। मैं ख़ुशी से आपको यह सब कुछ दे
देता हूँ।” 24लेकिन दाऊद बादशाह ने इनकार
किया, “नहीं, मैं ज़रूर हर चीज़ की पूरी क़ीमत
अदा करूँगा। जो आपकी है उसे मैं लेकर रब को
पेश नहीं करूँगा, न मैं ऐसी कोई भस्म होनेवाली
क़ुरबानी चढ़ाऊँगा जो मुझे मुफ़्त में मिल जाए।”
25चुनाँचे दाऊद ने अरौनाह को उस जगह के
लिए सोने के 600 सिक्के दे दिए। 26उसने वहाँ
रब की ताज़ीम में क़ुरबानगाह तामीर करके उस
पर भस्म होनेवाली और सलामती की क़ुरबानियाँ
चढ़ाईं। जब उसने रब से इलतमास की तो रब ने
उस की सुनी और जवाब में आसमान से भस्म
होनेवाली क़ुरबानी पर आग भेज दी। 27फिर रब
ने मौत के फ़रिश्ते को हुक्म दिया, और उसने
अपनी तलवार को दुबारा मियान में डाल दिया।
28यों दाऊद ने जान लिया कि रब ने अरौनाह
यबूसी की गहने की जगह पर मेरी सुनी जब
मैंने यहाँ क़ुरबानियाँ चढ़ाईं। 29उस वक़्त रब
का वह मुक़द्दस ख़ैमा जो मूसा ने रेगिस्तान
में बनवाया था जिबऊन की पहाड़ी पर था।
क़ुरबानियों को जलाने की क़ुरबानगाह भी वहीं
थी। 30लेकिन अब दाऊद में वहाँ जाकर रब के
हुज़ूर उस की मरज़ी दरियाफ़्त करने की जुर्रत
न रही, क्योंकि रब के फ़रिश्ते की तलवार को
देखकर उस पर इतनी शदीद दहशत तारी हुई
कि वह जा ही नहीं सकता था।

22
1इसलिए दाऊद ने फ़ैसला किया,
“रब हमारे ख़ुदा का घर गाहने की इस जगह पर
होगा, और यहाँ वह क़ुरबानगाह भी होगी जिस
पर इसराईल के लिए भस्म होनेवाली क़ुरबानी
जलाई जाती है।”

दाऊद रब का घर बनाने की तैयारियाँ करता है

2चुनाँचे उसने इसराईल में रहनेवाले पर-
देसियों को बुलाकर उन्हें अल्लाह के घर के
लिए दरकार तराशे हुए पत्थर तैयार करने की
ज़िम्मेदारी दी। 3इसके अलावा दाऊद ने दरवाज़ों
के किवाड़ों की कीलों और कड़ों के लिए लोहे के
बड़े ढेर लगाए। साथ साथ इतना पीतल इकट्ठा
किया गया कि आख़िरकार उसे तोला न जा
सका। 4इसी तरह देवदार की बहुत ज़्यादा लकड़ी
यरूशलम लाई गई। सैदा और सूर के बाशिंदों
ने उसे दाऊद तक पहुँचाया। 5यह सामान जमा
करने के पीछे दाऊद का यह ख़याल था, “मेरा
बेटा सुलेमान जवान है, और उसका अभी इतना
तजरबा नहीं है, हालाँकि जो घर रब के लिए
बनवाना है उसे इतना बड़ा और शानदार होने की
ज़रूरत है कि तमाम दुनिया हक्का-बक्का रहकर
उस की तारीफ़ करे। इसलिए मैं ख़ुद जहाँ तक
हो सके उसे बनवाने की तैयारियाँ करूँगा।” यही
वजह थी कि दाऊद ने अपनी मौत से पहले इतना
सामान जमा कराया।

दाऊद सुलेमान को रब का घर बनवाने की ज़िम्मेदारी देता है

6फिर दाऊद ने अपने बेटे सुलेमान को बुलाकर
उसे रब इसराईल के ख़ुदा के लिए सुकूनतगाह
बनवाने की ज़िम्मेदारी देकर 7कहा, “मेरे बेटे, मैं
ख़ुद रब अपने ख़ुदा के नाम के लिए घर बनाना
चाहता था। 8लेकिन मुझे इजाज़त नहीं मिली,
क्योंकि रब मुझसे हमकलाम हुआ, ‘तूने शदीद

क़िस्म की जंगें लड़कर बेशुमार लोगों को मार
दिया है। नहीं, तू मेरे नाम के लिए घर तामीर नहीं
करेगा, क्योंकि मेरे देखते देखते तू बहुत ख़ूनरेज़ी
का सबब बना है। 9लेकिन तेरे एक बेटा पैदा
होगा जो अमनपसंद होगा। उसे मैं अमनो-अमान
मुहैया करूँगा, उसे चारों तरफ़ के दुश्मनों से लड़ना
नहीं पड़ेगा। उसका नाम सुलेमान होगा, और उस
की हुकूमत के दौरान मैं इसराईल को अमनो-
अमान अता करूँगा। 10वही मेरे नाम के लिए घर
बनाएगा। वह मेरा बेटा होगा और मैं उसका बाप
हूँगा। और मैं इसराईल पर उस की बादशाही का
तख़्त हमेशा तक क़ायम रखूँगा'।"

11दाऊद ने बात जारी रखकर कहा, "मेरे बेटे,
रब आपके साथ हो ताकि आपको कामयाबी
हासिल हो और आप रब अपने ख़ुदा का घर उसके
वादे के मुताबिक़ तामीर कर सकें। 12आपको
इसराईल पर मुक़र्रर करते वक़्त रब आपको
हिकमत और समझ अता करे ताकि आप रब
अपने ख़ुदा की शरीअत पर अमल कर सकें।
13अगर आप एहतियात से उन हिदायात और
अहकाम पर अमल करें जो रब ने मूसा की
मारिफ़त इसराईल को दे दिए तो आपको ज़रूर
कामयाबी हासिल होगी। मज़बूत और दिलेर
हों। डरें मत और हिम्मत न हारें। 14देखें, मैंने
बड़ी जिद्दो-जहद के साथ रब के घर के लिए
सोने के 34,00,000 किलोग्राम और चाँदी के
3,40,00,000 किलोग्राम तैयार कर रखे हैं।
इसके अलावा मैंने इतना पीतल और लोहा इकट्ठा
किया कि उसे तोला नहीं जा सकता, नीज़ लकड़ी
और पत्थर का ढेर लगाया, अगरचे आप और भी
जमा करेंगे। 15आपकी मदद करनेवाले कारीगर
बहुत हैं। उनमें पत्थर को तराशनेवाले, राज, बढ़ई
और ऐसे कारीगर शामिल हैं जो महारत से हर
क़िस्म की चीज़ बना सकते हैं, 16ख़ाह वह सोने,
चाँदी, पीतल या लोहे की क्यों न हो। बेशुमार ऐसे
लोग तैयार खड़े हैं। अब काम शुरू करें, और रब
आपके साथ हो!"

17फिर दाऊद ने इसराईल के तमाम राहनुमाओं
को अपने बेटे सुलेमान की मदद करने का हुक्म
दिया। 18उसने उनसे कहा, "रब आपका ख़ुदा
आपके साथ है। उसने आपको पड़ोसी क़ौमों से
महफ़ूज़ रखकर अमनो-अमान अता किया है।
मुल्क के बाशिंदों को उसने मेरे हवाले कर दिया,
और अब यह मुल्क रब और उस की क़ौम के ताबे
हो गया है। 19अब दिलो-जान से रब अपने ख़ुदा
के तालिब रहें। रब अपने ख़ुदा के मक़दिस की
तामीर शुरू करें ताकि आप जल्दी से अहद का
संदूक़ और मुक़द्दस ख़ैमे के सामान को उस घर
में ला सकें जो रब के नाम की ताज़ीम में तामीर
होगा।"

23 जब दाऊद उम्ररसीदा था तो उसने
अपने बेटे सुलेमान को इसराईल का
बादशाह बना दिया।

ख़िदमत के लिए लावियों के गुरोह

2दाऊद ने इसराईल के तमाम राहनुमाओं को
इमामों और लावियों समेत अपने पास बुला
लिया। 3तमाम उन लावियों को गिना गया
जिनकी उम्र तीस साल या इससे ज़ायद थी।
उनकी कुल तादाद 38,000 थी। 4इन्हें दाऊद
ने मुख़्तलिफ़ ज़िम्मेदारियाँ सौंपीं। 24,000
अफ़राद रब के घर की तामीर के निगरान,
6,000 अफ़सर और क़ाज़ी, 54,000 दरबान
और 4,000 ऐसे मौसीक़ार बन गए जिन्हें दाऊद
के बनवाए हुए साज़ों को बजाकर रब की हम्दो-
सना करनी थी।

6दाऊद ने लावियों को लावी के तीन बेटों
जैरसोन, क़िहात और मिरारी के मुताबिक़ तीन
गुरोहों में तक़सीम किया।

7जैरसोन के दो बेटे लादान और सिमई थे।
8लादान के तीन बेटे यहियेल, ज़ैताम और योएल
थे। 9सिमई के तीन बेटे सलूमीत, हज़ियेल और
हारान थे। यह लादान के घरानों के सरबराह थे।
10-11सिमई के चार बेटे बड़े से लेकर छोटे तक
यहत, ज़ीज़ा, यऊस और बरिया थे। चूँकि यऊस

और बरिया के कम बेटे थे इसलिए उनकी औलाद
मिलकर ख़िदमत के लिहाज़ से एक ही ख़ानदान
और गुरोह की हैसियत रखती थी।
12क़िहात के चार बेटे अमराम, इज़हार, हबरून
और उज़्ज़ियेल थे। 13अमराम के दो बेटे हारून
और मूसा थे। हारून और उस की औलाद
को अलग किया गया ताकि वह हमेशा तक
मुक़द्दसतरीन चीज़ों को मख़सूसो-मुक़द्दस रखें,
रब के हुज़ूर क़ुरबानियाँ पेश करें, उस की ख़िदमत
करें और उसके नाम से लोगों को बरकत दें।
14मर्दे-ख़ुदा मूसा के बेटों को बाक़ी लावियों में
शुमार किया जाता था। 15मूसा के दो बेटे जैरसोम
और इलियज़र थे। 16जैरसोम के पहलौठे का
नाम सबुएल था। 17इलियज़र का सिर्फ़ एक
बेटा रहबियाह था। लेकिन रहबियाह की बेशुमार
औलाद थी। 18इज़हार के पहलौठे का नाम
सलूमीत था। 19हबरून के चार बेटे बड़े से लेकर
छोटे तक यरियाह, अमरियाह, यहज़ियेल और
यक़मियाम थे। 20उज़्ज़ियेल का पहलौठा मीकाह
था। दूसरे का नाम यिस्सियाह था।
21मिरारी के दो बेटे महली और मूशी थे।
महली के दो बेटे इलियज़र और क़ीस थे। 22जब
इलियज़र फ़ौत हुआ तो उस की सिर्फ़ बेटियाँ थीं।
इन बेटियों की शादी क़ीस के बेटों यानी चचाज़ाद
भाइयों से हुई। 23मूशी के तीन बेटे महली, इदर
और यरीमोत थे।
24ग़रज़ यह लावी के क़बीले के ख़ानदान और
सरपरस्त थे। हर एक को ख़ानदानी रजिस्टर में
दर्ज किया गया था। इनमें से जो रब के घर में
ख़िदमत करते थे हर एक की उम्र कम अज़ कम
20 साल थी।
25-27क्योंकि दाऊद ने मरने से पहले पहले
हुक्म दिया था कि जितने लावियों की उम्र कम
अज़ कम 20 साल है, वह ख़िदमत के लिए
रजिस्टर में दर्ज किए जाएँ। इस नाते से उसने
कहा था,
“रब इसराईल के ख़ुदा ने अपनी क़ौम को
अमनो-अमान अता किया है, और अब वह हमेशा
के लिए यरूशलम में सुकूनत करेगा। अब से
लावियों को मुलाक़ात का ख़ैमा और उसका
सामान उठाकर जगह बजगह ले जाने की ज़रूरत
नहीं रही। 28अब से वह इमामों की मदद करें
जब यह रब के घर में ख़िदमत करते हैं। वह
सहनों और छोटे कमरों को सँभालें और ध्यान
दें कि रब के घर के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस की
गई चीज़ें पाक-साफ़ रहें। उन्हें अल्लाह के घर में
कई और ज़िम्मेदारियाँ भी सौंपी जाएँ। 29ज़ैल
की चीज़ें सँभालना सिर्फ़ उन्हीं की ज़िम्मेदारी
है : मख़सूसो-मुक़द्दस की गई रोटियाँ, ग़ल्ला की
नज़रों के लिए मुस्तामल मैदा, बेख़मीरी रोटियाँ
पकाने और गूँधने का इंतज़ाम। लाज़िम है कि
वही तमाम लवाज़िमात को अच्छी तरह तोलें और
नापें। 30हर सुबह और शाम को उनके गुलूकार
रब की हम्दो-सना करें। 31जब भी रब को भस्म
होनेवाली क़ुरबानियाँ पेश की जाएँ तो लावी मदद
करें, ख़ाह सबत को, ख़ाह नए चाँद की ईद या
किसी और ईद के मौक़े पर हो। लाज़िम है कि वह
रोज़ाना मुक़र्ररा तादाद के मुताबिक़ ख़िदमत के
लिए हाज़िर हो जाएँ।”
32इस तरह लावी पहले मुलाक़ात के ख़ैमे में
और बाद में रब के घर में अपनी ख़िदमत सरंजाम
देते रहे। वह रब के घर की ख़िदमत में अपने
क़बायली भाइयों यानी इमामों की मदद करते थे।

ख़िदमत के लिए इमामों के गुरोह

24 हारून की औलाद को भी मुख़्तलिफ़
गुरोहों में तक़सीम किया गया। हारून
के चार बेटे नदब, अबीहू, इलियज़र और इतमर
थे। 2नदब और अबीहू अपने बाप से पहले मर
गए, और उनके बेटे नहीं थे। इलियज़र और
इतमर इमाम बन गए। 3दाऊद ने इमामों को
ख़िदमत के मुख़्तलिफ़ गुरोहों में तक़सीम किया।
सदोक़ और अख़ीमलिक ने इसमें दाऊद की
मदद की (सदोक़ इलियज़र की औलाद में से
और अख़ीमलिक इतमर की औलाद में से था)।
4इलियज़र की औलाद को 16 गुरोहों में और

इतमर की औलाद को 8 गुरोहों में तक़सीम
किया गया, क्योंकि इलियज़र की औलाद के
इतने ही ज़्यादा ख़ानदानी सरपरस्त थे। 5तमाम
ज़िम्मेदारियाँ क़ुरा डालकर इन मुख़्तलिफ़ गुरोहों
में तक़सीम की गईं, क्योंकि इलियज़र और इतमर
दोनों ख़ानदानों के बहुत सारे ऐसे अफ़सर थे जो
पहले से मक़दिस में रब की ख़िदमत करते थे।

6यह ज़िम्मेदारियाँ तक़सीम करने के लिए
इलियज़र और इतमर की औलाद बारी बारी
क़ुरा डालते रहे। क़ुरा डालते वक़्त बादशाह,
इसराईल के बुज़ुर्ग, सदोक़ इमाम, अख़ीमलिक
बिन अबियातर और इमामों और लावियों के
ख़ानदानी सरपरस्त हाज़िर थे। मीरमुंशी समायाह
बिन नतनियेल ने जो ख़ुद लावी था ख़िदमत के
इन गुरोहों की फ़हरिस्त ज़ैल की तरतीब से लिख
ली जिस तरह वह क़ुरा डालने से मुक़र्रर किए गए,

71. यहूयरीब, 2. यदायाह,

83. हारिम, 4. सऊरीम,

95. मलकियाह, 6. मियामीन,

107. हक़्क़ूज़, 8. अबियाह,

119. यशुअ, 10. सकनियाह,

1211. इलियासिब, 12. यक़ीम,

1313. ख़ुफ़्फ़ाह, 14. यसबियाब,

1415. बिलजा, 16. इम्मेर,

1517. ख़ज़ीर, 18. फ़िज़्ज़ीज़,

1619. फ़तहियाह, 20. यहिज़केल,

1721. यकीन, 22. जमूल,

1823. दिलायाह, 24. माज़ियाह।

19इमामों को इसी तरतीब के मुताबिक़ रब के
घर में आकर अपनी ख़िदमत सरंजाम देनी थी,
उन हिदायात के मुताबिक़ जो रब इसराईल के
ख़ुदा ने उन्हें उनके बाप हारून की मारिफ़त दी
थीं।

ख़िदमत के लिए लावियों के मज़ीद गुरोह

20ज़ैल के लावियों के मज़ीद ख़ानदानी
सरपरस्त हैं :

अमराम की औलाद में से सूबाएल,

सूबाएल की औलाद में से यहदियाह

21रहबियाह की औलाद में से यिस्सियाह
सरपरस्त था,

22इज़हार की औलाद में से सलूमीत,

सलूमीत की औलाद में से यहत,

23हबरून की औलाद में से बड़े से लेकर
छोटे तक यरियाह, अमरियाह, यहज़ियेल और
यक़मियाम,

24उज़्ज़ियेल की औलाद में से मीकाह,

मीकाह की औलाद में से समीर,

25मीकाह का भाई यिस्सियाह,

यिस्सियाह की औलाद में से ज़करियाह,

26मिरारी की औलाद में से महली और मूशी,

उसके बेटे याज़ियाह की औलाद,

27मिरारी के बेटे याज़ियाह की औलाद में से
सूहम, ज़क्कूर और इबरी,

28-29महली की औलाद में से इलियज़र और
क़ीस। इलियज़र बेऔलाद था जबकि क़ीस के हाँ
यरहमियेल पैदा हुआ।

30मूशी की औलाद में से महली, इदर और
यरीमोत भी लावियों के इन मज़ीद ख़ानदानी
सरपरस्तों में शामिल थे।

31इमामों की तरह उनकी ज़िम्मेदारियाँ
भी क़ुरा-अंदाज़ी से मुक़र्रर की गईं। इस
सिलसिले में सबसे छोटे भाई के ख़ानदान
के साथ और सबसे बड़े भाई के ख़ानदान
के साथ सुलूक बराबर था। इस कारवाई
के लिए भी दाऊद बादशाह, सदोक़, अख़ी-
मलिक और इमामों और लावियों के ख़ान-
दानी सरपरस्त हाज़िर थे।

रब के घर में मौसीक़ारों के गुरोह

25 दाऊद ने फ़ौज के आला अफ़-
सरों के साथ आसफ़, हैमान और
यदूतून की औलाद को एक ख़ास ख़िदमत के लिए
अलग कर दिया। उन्हें नबुव्वत की रूह में सरोद,
सितार और झाँझ बजाना था। ज़ैल के आदमियों
को मुक़र्रर किया गया :

2आसफ़ के ख़ानदान से आसफ़ के बेटे
ज़क्कूर, यूसुफ़, नतनियाह और असरेलाह।
उनका बाप गुरोह का राहनुमा था, और वह
बादशाह की हिदायात के मुताबिक़ नबुव्वत की
रूह में साज़ बजाता था।

3यदूतून के ख़ानदान से यदूतून के बेटे
जिदलियाह, ज़री, यसायाह, सिमई, हसबि-
याह, और मत्तितियाह। उनका बाप गुरोह का
राहनुमा था, और वह नबुव्वत की रूह में रब की
हम्दो-सना करते हुए सितार बजाता था।

4हैमान के ख़ानदान से हैमान के बेटे
बुक़्क़ियाह, मत्तनियाह, उज़्ज़ियेल, सबुएल,
यरीमोत, हननियाह, हनानी, इलियाता,
जिद्दालती, रूमम्ती-अज़र, यसबिक़ाशा, मल्लूती,
हौतीर और महाज़ियोत।
5इन सबका बाप हैमान
दाऊद बादशाह का ग़ैबबीन था। अल्लाह ने हैमान
से वादा किया था कि मैं तेरी ताक़त बढ़ा दूँगा,
इसलिए उसने उसे 14 बेटे और तीन बेटियाँ अता
की थीं।

6यह सब अपने अपने बाप यानी आसफ़,
यदूतून और हैमान की राहनुमाई में साज़ बजाते
थे। जब कभी रब के घर में गीत गाए जाते थे
तो यह मौसीक़ार साथ साथ झाँझ, सितार और
सरोद बजाते थे। वह अपनी ख़िदमत बादशाह की
हिदायात के मुताबिक़ सरंजाम देते थे।
7अपने
भाइयों समेत जो रब की ताज़ीम में गीत गाते थे
उनकी कुल तादाद 288 थी। सबके सब माहिर
थे।
8उनकी मुख़्तलिफ़ ज़िम्मेदारियाँ भी क़ुरा के
ज़रीए मुक़र्रर की गईं। इसमें सबके साथ सुलूक
एक जैसा था, ख़ाह जवान थे या बूढ़े, ख़ाह उस्ताद
थे या शागिर्द।

9क़ुरा डालकर 24 गुरोहों को मुक़र्रर किया
गया। हर गुरोह के बारह बारह आदमी थे। यों ज़ैल
के आदमियों के गुरोहों ने तश्कील पाई :

1. आसफ़ के ख़ानदान का यूसुफ़,
2. जिदलियाह,
10 3. ज़क्कूर,
11 4. ज़री,
12 5. नतनियाह,
13 6. बुक़्क़ियाह,
14 7. यसरेलाह,
15 8. यसायाह,
16 9. मत्तनियाह,
17 10. सिमई,
18 11. अज़रेल,
19 12. हसबियाह,
20 13. सूबाएल,
21 14. मत्तितियाह,
22 15. यरीमोत,
23 16. हननियाह,
24 17. यसबिक़ाशा,
25 18. हनानी,
26 19. मल्लूती,
27 20. इलियाता,
28 21. हौतीर,
29 22. जिद्दालती,
30 23. महाज़ियोत,
31 24. रूमम्ती-अज़र।

हर गुरोह में राहनुमा के बेटे और कुछ रिश्तेदार
शामिल थे।

रब के घर के दरबान

26 रब के घर के सहन के दरवाज़ों पर
पहरादारी करने के गुरोह भी मुक़र्रर
किए गए। उनमें ज़ैल के आदमी शामिल थे :

क़ोरह के ख़ानदान का फ़रद मसलमियाह
बिन क़ोरे जो आसफ़ की औलाद में से था।
2मसलमियाह के सात बेटे बड़े से लेकर छोटे तक
ज़करियाह, यदियएल, ज़बदियाह, यत्नियेल,
3ऐलाम, यूहनान और इलीहूऐनी थे।

4-5ओबेद-अदोम भी दरबान था। अल्लाह ने
उसे बरकत देकर आठ बेटे दिए थे। बड़े से
लेकर छोटे तक उनके नाम समायाह, यहू-
ज़बद, युआख़, सकार, नतनियेल, अम्मि-
येल, इशकार और फ़ऊल्लती थे।
6समायाह
बिन ओबेद-अदोम के बेटे ख़ानदानी सर-

बराह थे, क्योंकि वह काफ़ी असरो-रसूख़ रखते
थे। 7उनके नाम उतनी, रफ़ाएल, ओबेद और
इल्ज़बद थे। समायाह के रिश्तेदार इलीहू और
समकियाह भी गुरोह में शामिल थे, क्योंकि वह
भी ख़ास हैसियत रखते थे। 8ओबेद-अदोम से
निकले यह तमाम आदमी लायक़ थे। वह अपने
बेटों और रिश्तेदारों समेत कुल 62 अफ़राद थे
और सब महारत से अपनी ख़िदमत सरंजाम देते
थे।

9मसलमियाह के बेटे और रिश्तेदार कुल 18
आदमी थे। सब लायक़ थे।

10मिरारी के ख़ानदान का फ़रद हूसा के
चार बेटे सिमरी, ख़िलक़ियाह, तबलियाह और
ज़करियाह थे। हूसा ने सिमरी को ख़िदमत के
गुरोह का सरबराह बना दिया था अगरचे वह
पहलौठा नहीं था। 11दूसरे बेटे बड़े से लेकर छोटे
तक ख़िलक़ियाह, तबलियाह और ज़करियाह थे।
हूसा के कुल 13 बेटे और रिश्तेदार थे।

12दरबानों के इन गुरोहों में ख़ानदानी सरपरस्त
और तमाम आदमी शामिल थे। बाक़ी लावियों
की तरह यह भी रब के घर में अपनी ख़िदमत
सरंजाम देते थे। 13क़ुरा-अंदाज़ी से मुक़र्रर किया
गया कि कौन-सा गुरोह सहन के किस दरवाज़े
की पहरादारी करे। इस सिलसिले में बड़े और
छोटे ख़ानदानों में इम्तियाज़ न किया गया। 14यों
जब क़ुरा डाला गया तो मसलमियाह के ख़ानदान
का नाम मशरिक़ी दरवाज़े की पहरादारी करने के
लिए निकला। ज़करियाह बिन मसलमियाह के
ख़ानदान का नाम शिमाली दरवाज़े की पहरादारी
करने के लिए निकला। ज़करियाह अपने दाना
मशवरों के लिए मशहूर था। 15जब क़ुरा जुनूबी
दरवाज़े की पहरादारी के लिए डाला गया तो
ओबेद-अदोम का नाम निकला। उसके बेटों को
गोदाम की पहरादारी करने की ज़िम्मेदारी दी गई।
16जब मग़रिबी दरवाज़े और सल्कत दरवाज़े के
लिए क़ुरा डाला गया तो सुफ़्फ़ीम और हूसा के
नाम निकले। सल्कत दरवाज़ा चढ़नेवाले रास्ते पर
है।

पहरादारी की ख़िदमत यों बाँटी गई :

17रोज़ाना मशरिक़ी दरवाज़े पर छः लावी पहरा
देते थे, शिमाली और जुनूबी दरवाज़ों पर चार चार
अफ़राद और गोदाम पर दो। 18रब के घर के सहन
के मग़रिबी दरवाज़े पर छः लावी पहरा देते थे, चार
रास्ते पर और दो सहन में।

19यह सब दरबानों के गुरोह थे। सब क़ोरह और
मिरारी के ख़ानदानों की औलाद थे।

ख़िदमत के लिए लावियों के मज़ीद गुरोह

20दूसरे कुछ लावी अल्लाह के घर के ख़ज़ानों
और रब के लिए मख़सूस की गई चीज़ें सँभालते
थे।

21-22दो भाई ज़ैताम और योएल रब के घर के
ख़ज़ानों की पहरादारी करते थे। वह यहियेल के
ख़ानदान के सरपरस्त थे और यों लादान जैरसोनी
की औलाद थे। 23अमराम, इज़हार, हबरून और
उज़्ज़ियेल के ख़ानदानों की यह ज़िम्मेदारियाँ थीं :
24सबुएल बिन जैरसोम बिन मूसा ख़ज़ानों
का निगरान था। 25जैरसोम के भाई इलि-
यज़र का बेटा रहबियाह था। रहबियाह का बेटा
यसायाह, यसायाह का बेटा यूराम, यूराम का
बेटा ज़िकरी और ज़िकरी का बेटा सलूमीत था।
26सलूमीत अपने भाइयों के साथ उन मुक़द्दस
चीज़ों को सँभालता था जो दाऊद बादशाह,
ख़ानदानी सरपरस्तों, हज़ार हज़ार और सौ सौ
फ़ौजियों पर मुक़र्रर अफ़सरों और दूसरे आला
अफ़सरों ने रब के लिए मख़सूस की थीं। 27यह
चीज़ें जंगों में लूटे हुए माल में से लेकर रब के घर
को मज़बूत करने के लिए मख़सूस की गई थीं।
28इनमें वह सामान भी शामिल था जो समुएल
ग़ैबबीन, साऊल बिन क़ीस, अबिनैर बिन नैर और
योआब बिन ज़रूयाह ने मक़दिस के लिए मख़सूस
किया था। सलूमीत और उसके भाई इन तमाम
चीज़ों को सँभालते थे।

29इज़हार के ख़ानदान के अफ़राद यानी
कननियाह और उसके बेटों को रब के घर से
बाहर की ज़िम्मेदारियाँ दी गईं। उन्हें निगरानों

और क़ाज़ियों की हैसियत से इसराईल पर मुक़र्रर किया गया। 30हबरून के ख़ानदान के अफ़राद यानी हसबियाह और उसके भाइयों को दरियाए-यरदन के मग़रिब के इलाक़े को सँभालने की ज़िम्मेदारी दी गई। वहाँ वह रब के घर से मुताल्लिक़ कामों के अलावा बादशाह की ख़िदमत भी सरंजाम देते थे। इन लायक़ आदमियों की कुल तादाद 1,700 थी।

31दाऊद बादशाह की हुकूमत के 40वें साल में नसबनामे की तहक़ीक़ की गई ताकि हबरून के ख़ानदान के बारे में मालूमात हासिल हो जाएँ। पता चला कि उसके कई लायक़ रुकन जिलियाद के इलाक़े के शहर याज़ेर में आबाद हैं। यरियाह उनका सरपरस्त था। 32दाऊद बादशाह ने उसे रूबिन, जद और मनस्सी के मशरिक़ी इलाक़े को सँभालने की ज़िम्मेदारी दी। यरियाह की इस ख़िदमत में उसके ख़ानदान के मज़ीद 2,700 अफ़राद भी शामिल थे। सब लायक़ और अपने अपने ख़ानदानों के सरपरस्त थे। उस इलाक़े में वह रब के घर से मुताल्लिक़ कामों के अलावा बादशाह की ख़िदमत भी सरंजाम देते थे।

फ़ौज के गुरोह

27 दर्जे-ज़ैल उन ख़ानदानी सरपरस्तों, हज़ार हज़ार और सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर अफ़सरों और सरकारी अफ़सरों की फ़हरिस्त है जो बादशाह के मुलाज़िम थे।

फ़ौज 12 गुरोहों पर मुश्तमिल थी, और हर गुरोह के 24,000 अफ़राद थे। हर गुरोह की ड्यूटी साल में एक माह के लिए लगती थी। 2जो अफ़सर इन गुरोहों पर मुक़र्रर थे वह यह थे :

पहला माह : यसूबियाम बिन ज़बदियेल। 3वह फ़ारस के ख़ानदान का था और उस गुरोह पर मुक़र्रर था जिसकी ड्यूटी पहले महीने में होती थी।

4दूसरा माह : दोदी अख़ूही। उसके गुरोह के आला अफ़सर का नाम मिक़लोत था।

5तीसरा माह : यहोयदा इमाम का बेटा बिनायाह। 6यह दाऊद के बेहतरीन दस्ते बनाम 'तीस' पर मुक़र्रर था और ख़ुद ज़बरदस्त फ़ौजी था। उसके गुरोह का आला अफ़सर उसका बेटा अम्मीज़बद था।

7चौथा माह : योआब का भाई असाहेल। उस की मौत के बाद असाहेल का बेटा ज़बदियाह उस की जगह मुक़र्रर हुआ।

8पाँचवाँ माह : समहूत इज़राख़ी।

9छटा माह : ईरा बिन अक़्क़ीस तक़ूई।

10सातवाँ माह : ख़लिस फ़लूनी इफ़राईमी।

11आठवाँ माह : ज़ारह के ख़ानदान का सिब्बकी हूसाती।

12नवाँ माह : बिनयमीन के क़बीले का अबियज़र अनतोती।

13दसवाँ माह : ज़ारह के ख़ानदान का महरी नतूफ़ाती।

14ग्यारहवाँ माह : इफ़राईम के क़बीले का बिनायाह फ़िरआतोनी।

15बारहवाँ माह : ग़ुतनियेल के ख़ानदान का ख़लदी नतूफ़ाती।

क़बीलों के सरपरस्त

16ज़ैल के आदमी इसराईली क़बीलों के सरपरस्त थे :

रूबिन का क़बीला : इलियज़र बिन ज़िकरी।

शमाऊन का क़बीला : सफ़तियाह बिन माका।

17लावी का क़बीला : हसबियाह बिन क़मुएल। हारून के ख़ानदान का सरपरस्त सदोक़ था।

18यहूदाह का क़बीला : दाऊद का भाई इलीहू।

इशकार का क़बीला : उमरी बिन मीकाएल।

19ज़बूलून का क़बीला : इसमायाह बिन अबदियाह।

नफ़ताली का क़बीला : यरीमोत बिन अज़रियेल।

20इफ़राईम का क़बीला : होसेअ बिन अज़ज़ियाह।

मग़रिबी मनस्सी का क़बीला : योएल बिन फ़िदायाह।

21मशरिक़ी मनस्सी का क़बीला जो जिलियाद में था : यिद्दू बिन ज़करियाह।

बिनयमीन का क़बीला : यासियेल बिन अबिनैर।

22दान का क़बीला : अज़रेल बिन यरोहाम।

यह बारह लोग इसराईली क़बीलों के सरबराह थे।

23जितने इसराईली मर्दों की उम्र 20 साल या इससे कम थी उन्हें दाऊद ने शुमार नहीं किया, क्योंकि रब ने उससे वादा किया था कि मैं इसराईलियों को आसमान पर के सितारों जैसा बेशुमार बना दूँगा। 24नीज़, योआब बिन ज़रूयाह ने मर्दुमशुमारी को शुरू तो किया लेकिन उसे इख़्तिताम तक नहीं पहुँचाया था, क्योंकि अल्लाह का ग़ज़ब मर्दुमशुमारी के बाइस इसराईल पर नाज़िल हुआ था। नतीजे में दाऊद बादशाह की तारीख़ी किताब में इसराईलियों की कुल तादाद कभी नहीं दर्ज हुई।

शाही मिलकियत के इंचार्ज

25अज़मावत बिन अदियेल यरूशलम के शाही गोदामों का इंचार्ज था।

जो गोदाम देही इलाक़े, बाक़ी शहरों, गाँवों और क़िलों में थे उनको यूनतन बिन उज़्ज़ियाह सँभालता था।

26अज़री बिन कलूब शाही ज़मीनों की काश्तकारी करनेवालों पर मुक़र्रर था।

27सिमई रामाती अंगूर के बाग़ों की निगरानी करता जबकि ज़बदी शिफ़मी इन बाग़ों की मै के गोदामों का इंचार्ज था।

28बाल-हनान जदीरी ज़ैतून और अंजीर-तूत के उन बाग़ों पर मुक़र्रर था जो मग़रिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े में थे। युआस ज़ैतून के तेल के गोदामों की निगरानी करता था।

29शारून के मैदान में चरनेवाले गाय-बैल सितरी शारूनी के ज़ेरे-निगरानी थे जबकि साफ़त बिन अदली वादियों में चरनेवाले गाय-बैलों को
सँभालता था। 30ओबिल इसमाईली ऊँटों पर
मुक़र्रर था, यहदियाह मरूनोती गधियों पर 31और
याज़ीज़ हाजिरी भेड़-बकरियों पर।

यह सब शाही मिलकियत के निगरान थे।

बादशाह के क़रीबी मुशीर

32दाऊद का समझदार और आलिम चचा यूनतन बादशाह का मुशीर था। यहियेल बिन हकमूनी बादशाह के बेटों की तरबियत के
लिए ज़िम्मेदार था। 33अख़ीतुफ़ल दाऊद का
मुशीर जबकि हूसी अरकी दाऊद का दोस्त था।
34अख़ीतुफ़ल के बाद यहोयदा बिन बिनायाह और अबियातर बादशाह के मुशीर बन गए। योआब शाही फ़ौज का कमाँडर था।

इसराईल के बुज़ुर्गों के सामने दाऊद की तक़रीर

28 दाऊद ने इसराईल के तमाम बुज़ुर्गों को यरूशलम बुलाया। इनमें क़बीलों के सरपरस्त, फ़ौजी डिवीझ़नों पर मुक़र्रर अफ़सर, हज़ार हज़ार और सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर अफ़सर, शाही मिलकियत और रेवड़ों के इंचार्ज, बादशाह के बेटों की तरबियत करनेवाले अफ़सर, दरबारी, मुल्क के सूरमा और बाक़ी तमाम साहबे-हैसियत शामिल थे।

2दाऊद बादशाह उनके सामने खड़े होकर उनसे मुख़ातिब हुआ,

“मेरे भाइयो और मेरी क़ौम, मेरी बात पर ध्यान दें! काफ़ी देर से मैं एक ऐसा मकान तामीर करना चाहता था जिसमें रब के अहद का संदूक़ मुस्तक़िल तौर पर रखा जा सके। आख़िर यह तो हमारे ख़ुदा की चौकी है। इस मक़सद से
मैं तैयारियाँ करने लगा। 3लेकिन फिर अल्लाह

मुझसे हमकलाम हुआ, 'मेरे नाम के लिए मकान
बनाना तेरा काम नहीं है, क्योंकि तूने जंगजू होते
हुए बहुत ख़ून बहाया है।'
4रब इसराईल के ख़ुदा ने मेरे पूरे ख़ानदान में से
मुझे चुनकर हमेशा के लिए इसराईल का बादशाह
बना दिया, क्योंकि उस की मरज़ी थी कि यहूदाह
का क़बीला हुकूमत करे। यहूदाह के ख़ानदानों में
से उसने मेरे बाप के ख़ानदान को चुन लिया, और
इसी ख़ानदान में से उसने मुझे पसंद करके पूरे
इसराईल का बादशाह बना दिया। 5रब ने मुझे
बहुत बेटे अता किए हैं। उनमें से उसने मुक़र्रर
किया कि सुलेमान मेरे बाद तख़्त पर बैठकर रब
की उम्मत पर हुकूमत करे। 6रब ने मुझे बताया,
'तेरा बेटा सुलेमान ही मेरा घर और उसके सहन
तामीर करेगा। क्योंकि मैंने उसे चुनकर फ़रमाया
है कि वह मेरा बेटा होगा और मैं उसका बाप हूँगा।
7अगर वह आज की तरह आइंदा भी मेरे अहकाम
और हिदायात पर अमल करता रहे तो मैं उस की
बादशाही अबद तक क़ायम रखूँगा।'
8अब मेरी हिदायत पर ध्यान दें, पूरा इसराईल
यानी रब की जमात और हमारा ख़ुदा इसके गवाह
हैं। रब अपने ख़ुदा के तमाम अहकाम के ताबे
रहें! फिर आइंदा भी यह अच्छा मुल्क आपकी
मिलकियत और हमेशा तक आपकी औलाद की
मौरूसी ज़मीन रहेगा। 9ऐ सुलेमान मेरे बेटे, अपने
बाप के ख़ुदा को तसलीम करके पूरे दिलो-जान
और ख़ुशी से उस की ख़िदमत करें। क्योंकि
रब तमाम दिलों की तहक़ीक़ कर लेता है, और
वह हमारे ख़यालों के तमाम मनसूबों से वाक़िफ़
है। उसके तालिब रहें तो आप उसे पा लेंगे।
लेकिन अगर आप उसे तर्क करें तो वह आपको
हमेशा के लिए रद्द कर देगा। 10याद रहे, रब ने
आपको इसलिए चुन लिया है कि आप उसके
लिए मुक़द्दस घर तामीर करें। मज़बूत रहकर इस
काम में लगे रहें!"

रब के घर का नक़्शा

11फिर दाऊद ने अपने बेटे सुलेमान को रब के
घर का नक़्शा दे दिया जिसमें तमाम तफ़सीलात
दर्ज थीं यानी उसके बरामदे, ख़ज़ानों के कमरे,
बालाख़ाने, अंदरूनी कमरे, वह मुक़द्दसतरीन
कमरा जिसमें अहद के संदूक़ को उसके कफ़्फ़ारे
के ढकने समेत रखना था, 12रब के घर के सहन,
उसके इर्दगिर्द के कमरे और वह कमरे जिनमें रब
के लिए मख़सूस किए गए सामान को महफ़ूज़
रखना था।

दाऊद ने रूह की हिदायत से यह पूरा नक़्शा
तैयार किया था। 13उसने रब के घर की ख़िदमत
के लिए दरकार इमामों और लावियों के गुरोहों
को भी मुक़र्रर किया, और साथ साथ रब के
घर में बाक़ी तमाम ज़िम्मेदारियाँ भी। इसके
अलावा उसने रब के घर की ख़िदमत के लिए
दरकार तमाम सामान की फ़हरिस्त भी तैयार
की थी। 14उसने मुक़र्रर किया कि मुख़्तलिफ़
चीज़ों के लिए कितना सोना और कितनी चाँदी
इस्तेमाल करनी है। इनमें ज़ैल की चीज़ें शामिल
थीं : 15सोने और चाँदी के चराग़दान और उनके
चराग़ (मुख़्तलिफ़ चराग़दानों के वज़न फ़रक़ थे,
क्योंकि हर एक का वज़न उसके मक़सद पर
मुनहसिर था), 16सोने की वह मेज़ें जिन पर रब
के लिए मख़सूस रोटियाँ रखनी थीं, चाँदी की मेज़ें,
17ख़ालिस सोने के काँटे, छिड़काव के कटोरे और
सुराही, सोने-चाँदी के प्याले 18और बख़ूर जलाने
की क़ुरबानगाह पर मँढा हुआ ख़ालिस सोना।
दाऊद ने रब के रथ का नक़्शा भी सुलेमान के
हवाले कर दिया, यानी उन करूबी फ़रिश्तों का
नक़्शा जो अपने परों को फैलाकर रब के अहद
के संदूक़ को ढाँप देते हैं।

19दाऊद ने कहा, "मैंने यह तमाम तफ़-
सीलात वैसे ही क़लमबंद कर दी हैं जैसे रब ने
मुझे हिकमत और समझ अता की है।"

20फिर वह अपने बेटे सुलेमान से मुख़ातिब
हुआ, "मज़बूत और दिलेर हों! डरें मत और

हिम्मत मत हारना, क्योंकि रब ख़ुदा मेरा ख़ुदा
आपके साथ है। न वह आपको छोड़ेगा, न तर्क
करेगा बल्कि रब के घर की तकमील तक आपकी
मदद करता रहेगा। 21ख़िदमत के लिए मुक़र्रर
इमामों और लावियों के गुरोह भी आपका सहारा
बनकर रब के घर में अपनी ख़िदमत सरंजाम देंगे।
तामीर के लिए जितने भी माहिर कारीगरों की
ज़रूरत है वह ख़िदमत के लिए तैयार खड़े हैं।
बुज़ुर्गों से लेकर आम लोगों तक सब आपकी हर
हिदायत की तामील करने के लिए मुस्तैद हैं।”

रब के घर की तामीर के लिए नज़राने

29 फिर दाऊद दुबारा पूरी जमात से
मुख़ातिब हुआ, “अल्लाह ने मेरे बेटे
सुलेमान को चुनकर मुक़र्रर किया है कि वह
अगला बादशाह बने। लेकिन वह अभी जवान और
नातजरबाकार है, और यह तामीरी काम बहुत
वसी है। उसे तो यह महल इनसान के लिए नहीं
बनाना है बल्कि रब हमारे ख़ुदा के लिए। 2मैं
पूरी जाँफ़िशानी से अपने ख़ुदा के घर की तामीर
के लिए सामान जमा कर चुका हूँ। इसमें सोना-
चाँदी, पीतल, लोहा, लकड़ी, अक़ीक़े-अहमर,[a]
मुख़्तलिफ़ जड़े हुए जवाहिर और पच्चीकारी के
मुख़्तलिफ़ पत्थर बड़ी मिक़दार में शामिल हैं।
3और चूँकि मुझमें अपने ख़ुदा का घर बनाने के
लिए बोझ है इसलिए मैंने इन चीज़ों के अलावा
अपने ज़ाती ख़ज़ानों से भी सोना और चाँदी दी है
4यानी तक़रीबन 1,00,000 किलोग्राम ख़ालिस
सोना और 2,35,000 किलोग्राम ख़ालिस
चाँदी। मैं चाहता हूँ कि यह कमरों की दीवारों पर
चढ़ाई जाए। 5कुछ कारीगरों के बाक़ी कामों के
लिए भी इस्तेमाल हो सकता है। अब मैं आपसे
पूछता हूँ, आज कौन मेरी तरह ख़ुशी से रब के
काम के लिए कुछ देने को तैयार है?”

6यह सुनकर वहाँ हाज़िर ख़ानदानी सर-
परस्तों, क़बीलों के बुज़ुर्गों, हज़ार हज़ार और
सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर अफ़सरों और
बादशाह के आला सरकारी अफ़सरों ने ख़ुशी
से काम के लिए हदिये दिए। 7उस दिन रब के
घर के लिए तक़रीबन 1,70,000 किलोग्राम
सोना, सोने के 10,000 सिक्के, 3,40,000
किलोग्राम चाँदी, 6,10,000 किलोग्राम पीतल
और 34,00,000 किलोग्राम लोहा जमा हुआ।
8जिसके पास जवाहिर थे उसने उन्हें यहियेल
जैरसोनी के हवाले कर दिया जो ख़ज़ानची था
और जिसने उन्हें रब के घर के ख़ज़ाने में महफ़ूज़
कर लिया। 9पूरी क़ौम इस फ़राख़दिली को
देखकर ख़ुश हुई, क्योंकि सबने दिली ख़ुशी और
फ़ैयाज़ी से अपने हदिये रब को पेश किए। दाऊद
बादशाह भी निहायत ख़ुश हुआ।

दाऊद की दुआ

10इसके बाद दाऊद ने पूरी जमात के सामने
रब की तमजीद करके कहा,

“ऐ रब हमारे बाप इसराईल के ख़ुदा, अज़ल
से अबद तक तेरी हम्द हो। 11ऐ रब, अज़मत,
क़ुदरत, जलाल और शानो-शौकत तेरे ही हैं,
क्योंकि जो कुछ भी आसमान और ज़मीन में है
वह तेरा ही है। ऐ रब, सलतनत तेरे हाथ में है,
और तू तमाम चीज़ों पर सरफ़राज़ है। 12दौलत
और इज़्ज़त तुझसे मिलती है, और तू सब पर
हुक्मरान है। तेरे हाथ में ताक़त और क़ुदरत है,
और हर इनसान को तू ही ताक़तवर और मज़बूत
बना सकता है। 13ऐ हमारे ख़ुदा, यह देखकर हम
तेरी सताइश और तेरे जलाली नाम की तारीफ़
करते हैं।

14मेरी और मेरी क़ौम की क्या हैसियत है कि
हम इतनी फ़ैयाज़ी से यह चीज़ें दे सके? आख़िर
हमारी तमाम मिलकियत तेरी तरफ़ से है। जो कुछ
भी हमने तुझे दे दिया वह हमें तेरे हाथ से मिला है।
15अपने बापदादा की तरह हम भी तेरे नज़दीक
परदेसी और ग़ैरशहरी हैं। दुनिया में हमारी ज़िंदगी
साये की तरह आरिज़ी है, और मौत से बचने की
कोई उम्मीद नहीं। 16ऐ रब हमारे ख़ुदा, हमने यह

[a] carnelian

सारा तामीरी सामान इसलिए इकट्ठा किया है कि तेरे मुक़द्दस नाम के लिए घर बनाया जाए। लेकिन हक़ीक़त में यह सब कुछ पहले से तेरे हाथ से हासिल हुआ है। यह पहले से तेरा ही है। 17ऐ मेरे ख़ुदा, मैं जानता हूँ कि तू इनसान का दिल जाँच लेता है, कि दियानतदारी तुझे पसंद है। जो कुछ भी मैंने दिया है वह मैंने ख़ुशी से और अच्छी नीयत से दिया है। अब मुझे यह देखकर ख़ुशी है कि यहाँ हाज़िर तेरी क़ौम ने भी इतनी फ़ैयाज़ी से तुझे हदिये दिए हैं।

18ऐ रब हमारे बापदादा इब्राहीम, इसहाक़ और इसराईल के ख़ुदा, गुज़ारिश है कि तू हमेशा तक अपनी क़ौम के दिलों में ऐसी ही तड़प क़ायम रख। अता कर कि उनके दिल तेरे साथ लिपटे रहें। 19मेरे बेटे सुलेमान की भी मदद कर ताकि वह पूरे दिलो-जान से तेरे अहकाम और हिदायात पर अमल करे और उस महल को तकमील तक पहुँचा सके जिसके लिए मैंने तैयारियाँ की हैं।"

20फिर दाऊद ने पूरी जमात से कहा, "आएँ, रब अपने ख़ुदा की सताइश करें!" चुनाँचे सब रब अपने बापदादा के ख़ुदा की तमजीद करके रब और बादशाह के सामने मुँह के बल झुक गए।

21अगले दिन तमाम इसराईल के लिए भस्म होनेवाली बहुत-सी क़ुरबानियाँ उनकी मै की नज़रों समेत रब को पेश की गईं। इसके लिए 1,000 जवान बैलों, 1,000 मेंढों और 1,000 भेड़ के बच्चों को चढ़ाया गया। साथ साथ ज़बह की बेशुमार क़ुरबानियाँ भी पेश की गईं। 22उस दिन उन्होंने रब के हुज़ूर खाते-पीते हुए बड़ी ख़ुशी मनाई। फिर उन्होंने दुबारा इसकी तसदीक़ की कि दाऊद का बेटा सुलेमान हमारा बादशाह है। तेल से उसे मसह करके उन्होंने उसे रब के हुज़ूर बादशाह और सदोक़ को इमाम क़रार दिया।

सुलेमान की ज़बरदस्त हुकूमत

23यों सुलेमान अपने बाप दाऊद की जगह रब के तख़्त पर बैठ गया। उसे कामयाबी हासिल हुई, और तमाम इसराईल उसके ताबे रहा। 24तमाम आला अफ़सर, बड़े बड़े फ़ौजी और दाऊद के बाक़ी बेटों ने भी अपनी ताबेदारी का इज़हार किया। 25इसराईल के देखते देखते रब ने सुलेमान को बहुत सरफ़राज़ किया। उसने उस की सलतनत को ऐसी शानो-शौकत से नवाज़ा जो माज़ी में इसराईल के किसी भी बादशाह को हासिल नहीं हुई थी।

दाऊद की वफ़ात

26-27दाऊद बिन यस्सी कुल 40 साल तक इसराईल का बादशाह रहा, 7 साल हबरून में और 33 साल यरूशलम में। 28वह बहुत उम्ररसीदा और उम्र, दौलत और इज़्ज़त से आसूदा होकर इंतक़ाल कर गया। फिर सुलेमान तख़्तनशीन हुआ।

29बाक़ी जो कुछ दाऊद की हुकूमत के दौरान हुआ वह तीनों किताबों 'समुएल ग़ैबबीन की तारीख़,' 'नातन नबी की तारीख़' और 'जाद ग़ैबबीन की तारीख़' में दर्ज है। 30इनमें उस की हुकूमत और असरो-रसूख़ की तफ़सीलात बयान की गई हैं, नीज़ वह कुछ जो उसके साथ, इसराईल के साथ और गिर्दो-नवाह के ममालिक के साथ हुआ।

2 तवारीख़

सुलेमान रब से हिकमत माँगता है

1 सुलेमान बिन दाऊद की हुकूमत मज़बूत
हो गई। रब उसका ख़ुदा उसके साथ था,
और वह उस की ताक़त बढ़ाता रहा।
2एक दिन सुलेमान ने तमाम इसराईल को
अपने पास बुलाया। उनमें हज़ार हज़ार और सौ
सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर अफ़सर, क़ाज़ी, तमाम
बुज़ुर्ग और कुंबों के सरपरस्त शामिल थे। 3फिर
सुलेमान उनके साथ जिबऊन की उस पहाड़ी
पर गया जहाँ अल्लाह का मुलाक़ात का ख़ैमा
था, वही जो रब के ख़ादिम मूसा ने रेगिस्तान
में बनवाया था। 4अहद का संदूक़ उसमें नहीं
था, क्योंकि दाऊद ने उसे क़िरियत-यारीम से
यरूशलम लाकर एक ख़ैमे में रख दिया था जो
उसने वहाँ उसके लिए तैयार कर रखा था।
5लेकिन पीतल की जो क़ुरबानगाह बज़लियेल
बिन ऊरी बिन हूर ने बनाई थी वह अब तक
जिबऊन में रब के ख़ैमे के सामने थी। अब
सुलेमान और इसराईल उसके सामने जमा हुए
ताकि रब की मरज़ी दरियाफ़्त करें। 6वहाँ रब के
हुज़ूर सुलेमान ने पीतल की उस क़ुरबानगाह पर
भस्म होनेवाली 1,000 क़ुरबानियाँ चढ़ाईं।
7उसी रात रब सुलेमान पर ज़ाहिर हुआ और
फ़रमाया, “तेरा दिल क्या चाहता है? मुझे बता
दे तो मैं तेरी ख़ाहिश पूरी करूँगा।” 8सुलेमान
ने जवाब दिया, “तू मेरे बाप दाऊद पर बड़ी
मेहरबानी कर चुका है, और अब तूने उस की
जगह मुझे तख़्त पर बिठा दिया है। 9तूने मुझे एक
ऐसी क़ौम पर बादशाह बना दिया है जो ज़मीन की
ख़ाक की तरह बेशुमार है। चुनाँचे ऐ रब ख़ुदा, वह
वादा पूरा कर जो तूने मेरे बाप दाऊद से किया है।
10मुझे हिकमत और समझ अता फ़रमा ताकि मैं
इस क़ौम की राहनुमाई कर सकूँ। क्योंकि कौन
तेरी इस अज़ीम क़ौम का इनसाफ़ कर सकता
है?”
11अल्लाह ने सुलेमान से कहा, “मैं ख़ुश हूँ
कि तू दिल से यही कुछ चाहता है। तूने न मालो-
दौलत, न इज़्ज़त, न अपने दुश्मनों की हलाकत
और न उम्र की दराज़ी बल्कि हिकमत और समझ
माँगी है ताकि मेरी उस क़ौम का इनसाफ़ कर
सके जिस पर मैंने तुझे बादशाह बना दिया है।
12इसलिए मैं तेरी यह दरख़ास्त पूरी करके तुझे
हिकमत और समझ अता करूँगा। साथ साथ मैं
तुझे उतना मालो-दौलत और उतनी इज़्ज़त दूँगा
जितनी न माज़ी में किसी बादशाह को हासिल थी,
न मुस्तक़बिल में कभी किसी को हासिल होगी।”
13इसके बाद सुलेमान जिबऊन की उस पहाड़ी
से उतरा जिस पर मुलाक़ात का ख़ैमा था और
यरूशलम वापस चला गया जहाँ वह इसराईल पर
हुकूमत करता था।

सुलेमान की दौलत

14सुलेमान के 1,400 रथ और 12,000 घोड़े
थे। कुछ उसने रथों के लिए मख़सूस किए गए
शहरों में और कुछ यरूशलम में अपने पास रखे।
15बादशाह की सरगरमियों के बाइस चाँदी पत्थर
जैसी आम हो गई और देवदार की क़ीमती लकड़ी
मग़रिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े की अंजीर-तूत
की सस्ती लकड़ी जैसी आम हो गई। 16बादशाह
अपने घोड़े मिसर और क़ुए यानी किलिकिया से
दरामद करता था। उसके ताजिर इन जगहों पर
जाकर उन्हें ख़रीद लाते थे। 17बादशाह के रथ
मिसर से दरामद होते थे। हर रथ की क़ीमत चाँदी
के 600 सिक्के और हर घोड़े की क़ीमत चाँदी
के 150 सिक्के थी। सुलेमान के ताजिर यह
घोड़े बरामद करते हुए तमाम हित्ती और अरामी
बादशाहों तक भी पहुँचाते थे।

रब के घर की तामीर की तैयारियाँ

2 फिर सुलेमान ने रब के लिए घर और अपने
लिए शाही महल बनाने का हुक्म दिया।
2इसके लिए उसने 1,50,000 आदमियों की
भरती की। 80,000 को उसने पहाड़ी कानों
में लगाया ताकि वह पत्थर निकालें जबकि
70,000 अफ़राद की ज़िम्मेदारी यह पत्थर
यरूशलम लाना थी। इन सब पर सुलेमान ने
3,600 निगरान मुक़र्रर किए। 3उसने सूर के
बादशाह हीराम को इत्तला दी, “जिस तरह आप
मेरे बाप दाऊद को देवदार की लकड़ी भेजते रहे
जब वह अपने लिए महल बना रहे थे उसी तरह
मुझे भी देवदार की लकड़ी भेजें। 4मैं एक घर
तामीर करके उसे रब अपने ख़ुदा के नाम के
लिए मख़सूस करना चाहता हूँ। क्योंकि हमें ऐसी
जगह की ज़रूरत है जिसमें उसके हुज़ूर ख़ुशबूदार
बख़ूर जलाया जाए, रब के लिए मख़सूस रोटियाँ
बाक़ायदगी से मेज़ पर रखी जाएँ और ख़ास मौक़ों
पर भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ पेश की जाएँ यानी
हर सुबहो-शाम, सबत के दिन, नए चाँद की ईदों
और रब हमारे ख़ुदा की दीगर मुक़र्ररा ईदों पर।
यह इसराईल का दायमी फ़र्ज़ है।

5जिस घर को मैं बनाने को हूँ वह निहायत
अज़ीम होगा, क्योंकि हमारा ख़ुदा दीगर तमाम
माबूदों से कहीं अज़ीम है। 6लेकिन कौन उसके
लिए ऐसा घर बना सकता है जो उसके लायक़
हो? बुलंदतरीन आसमान भी उस की रिहाइश के
लिए छोटा है। तो फिर मेरी क्या हैसियत है कि
उसके लिए घर बनाऊँ? मैं सिर्फ़ ऐसी जगह बना
सकता हूँ जिसमें उसके लिए क़ुरबानियाँ चढ़ाई
जा सकें।

7चुनाँचे मेरे पास किसी ऐसे समझदार कारीगर
को भेज दें जो महारत से सोने-चाँदी, पीतल
और लोहे का काम जानता हो। वह नीले,
अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग का कपड़ा बनाने
और कंदाकारी का उस्ताद भी हो। ऐसा शख़्स
यरूशलम और यहूदाह में मेरे उन कारीगरों
का इंचार्ज बने जिन्हें मेरे बाप दाऊद ने काम
पर लगाया है। 8इसके अलावा मुझे लुबनान
से देवदार, जूनीपर और दीगर क़ीमती दरख़्तों
की लकड़ी भेज दें। क्योंकि मैं जानता हूँ कि
आपके लोग उम्दा क़िस्म के लकड़हारे हैं। मेरे
आदमी आपके लोगों के साथ मिलकर काम
करेंगे। 9हमें बहुत-सी लकड़ी की ज़रूरत होगी,
क्योंकि जो घर मैं बनाना चाहता हूँ वह बड़ा और
शानदार होगा। 10आपके लकड़हारों के काम के
मुआवज़े में मैं 32,75,000 किलोग्राम गंदुम,
27,00,000 किलोग्राम जौ, 4,40,000 लिटर
मै और 4,40,000 लिटर ज़ैतून का तेल दूँगा।”

11सूर के बादशाह हीराम ने ख़त लिखकर
सुलेमान को जवाब दिया, “रब अपनी क़ौम को
प्यार करता है, इसलिए उसने आपको उसका
बादशाह बनाया है। 12रब इसराईल के ख़ुदा
की हम्द हो जिसने आसमानो-ज़मीन को ख़लक़
किया है कि उसने दाऊद बादशाह को इतना
दानिशमंद बेटा अता किया है। उस की तमजीद हो
कि यह अक़्लमंद और समझदार बेटा रब के लिए
घर और अपने लिए महल तामीर करेगा। 13मैं

आपके पास एक माहिर और समझदार कारीगर
को भेज देता हूँ जिसका नाम हीराम-अबी है।
14उस की इसराईली माँ, दान के क़बीले की
है जबकि उसका बाप सूर का है। हीराम सोने-
चाँदी, पीतल, लोहे, पत्थर और लकड़ी की चीज़ें
बनाने में महारत रखता है। वह नीले, अरग़वानी
और क़िरमिज़ी रंग का कपड़ा और कतान का
बारीक कपड़ा बना सकता है। वह हर क़िस्म
की कंदाकारी में भी माहिर है। जो भी मनसूबा
उसे पेश किया जाए उसे वह पायाए-तकमील
तक पहुँचा सकता है। यह आदमी आपके और
आपके मुअज़्ज़ज़ बाप दाऊद के कारीगरों के साथ
मिलकर काम करेगा। 15चुनाँचे जिस गंदुम, जौ,
ज़ैतून के तेल और मै का ज़िक्र मेरे आक़ा ने
किया वह अपने ख़ादिमों को भेज दें। 16मुआवज़े
में हम आपके लिए दरकार दरख़्तों को लुबनान
में कटवाएँगे और उनके बेड़े बाँधकर समुंदर के
ज़रीए याफ़ा शहर तक पहुँचा देंगे। वहाँ से आप
उन्हें यरूशलम ले जा सकेंगे।”

17सुलेमान ने इसराईल में आबाद तमाम
ग़ैरमुल्कियों की मर्दुमशुमारी करवाई। (उस-
के बाप दाऊद ने भी उनकी मर्दुमशुमारी करवाई
थी।) मालूम हुआ कि इसराईल में 1,53,600
ग़ैरमुल्की रहते हैं। 18इनमें से उसने 80,000 को
पहाड़ी कानों में लगाया ताकि वह पत्थर निकालें
जबकि 70,000 अफ़राद की ज़िम्मेदारी यह
पत्थर यरूशलम लाना थी। इन सब पर सुलेमान
ने 3,600 निगरान मुक़र्रर किए।

रब के घर की तामीर

3 सुलेमान ने रब के घर को यरूशलम की
पहाड़ी मोरियाह पर तामीर किया। उसका
बाप दाऊद यह मक़ाम मुक़र्रर कर चुका था। यहीं
जहाँ पहले उरनान यानी अरौनाह यबूसी अपना
अनाज गाहता था रब दाऊद पर ज़ाहिर हुआ था।
2तामीर का यह काम सुलेमान की हुकूमत के
चौथे साल के दूसरे माह और उसके दूसरे दिन
शुरू हुआ।

3मकान की लंबाई 90 फ़ुट और चौड़ाई 30
फ़ुट थी। 4सामने एक बरामदा बनाया गया जो
इमारत जितना चौड़ा यानी 30 फ़ुट और 30
फ़ुट ऊँचा था। उस की अंदरूनी दीवारों पर उसने
ख़ालिस सोना चढ़ाया। 5बड़े हाल की दीवारों
पर उसने ऊपर से लेकर नीचे तक जूनीपर की
लकड़ी के तख़्ते लगाए, फिर तख़्तों पर ख़ालिस
सोना मँढवाकर उन्हें खजूर के दरख़्तों और ज़ंजीरों
की तस्वीरों से आरास्ता किया। 6सुलेमान ने रब
के घर को जवाहिर से भी सजाया। जो सोना
इस्तेमाल हुआ वह परवायम से मँगवाया गया था।
7सोना मकान, तमाम शहतीरों, दहलीज़ों, दीवारों
और दरवाज़ों पर मँढा गया। दीवारों पर करूबी
फ़रिश्तों की तस्वीरें भी कंदा की गईं।

मुक़द्दसतरीन कमरा

8इमारत का सबसे अंदरूनी कमरा बनाम
मुक़द्दसतरीन कमरा इमारत जैसा चौड़ा यानी 30
फ़ुट था। उस की लंबाई भी 30 फ़ुट थी। इस
कमरे की तमाम दीवारों पर 20,000 किलोग्राम
से ज़ायद सोना मँढा गया। 9सोने की कीलों का
वज़न तक़रीबन 600 ग्राम था। बालाख़ानों की
दीवारों पर भी सोना मँढा गया।

10फिर सुलेमान ने करूबी फ़रिश्तों के दो
मुजस्समे बनवाए जिन्हें मुक़द्दसतरीन कमरे में
रखा गया। उन पर भी सोना चढ़ाया गया।
11-13जब दोनों फ़रिश्तों को एक दूसरे के साथ
मुक़द्दसतरीन कमरे में खड़ा किया गया तो उनके
चार परों की मिलकर लंबाई 30 फ़ुट थी। हर एक
के दो पर थे, और हर पर की लंबाई साढ़े सात
सात फ़ुट थी। उन्हें मुक़द्दसतरीन कमरे में यों एक
दूसरे के साथ खड़ा किया गया कि हर फ़रिश्ते का
एक पर दूसरे के पर से लगता जबकि दाईं और
बाईं तरफ़ हर एक का दूसरा पर दीवार के साथ
लगता था। वह अपने पाँवों पर खड़े बड़े हाल की
तरफ़ देखते थे। 14मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े
पर सुलेमान ने बारीक कतान से बुना हुआ परदा
लगवाया। वह नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी रंग

के धागे से सजा हुआ था, और उस पर करूबी फ़रिश्तों की तस्वीरें थीं।

रब के घर के दरवाज़े पर दो सतून

15सुलेमान ने दो सतून ढलवाकर रब के घर के दरवाज़े के सामने खड़े किए। हर एक 27 फ़ुट लंबा था, और हर एक पर एक बालाई हिस्सा रखा गया जिसकी ऊँचाई साढ़े 7 फ़ुट थी। 16इन बालाई हिस्सों को ज़ंजीरों से सजाया गया जिनसे सौ अनार लटके हुए थे। 17दोनों सतूनों को सुलेमान ने रब के घर के दरवाज़े के दाईं और बाईं तरफ़ खड़ा किया। दहने हाथ के सतून का नाम उसने 'यकीन' और बाएँ हाथ के सतून का नाम 'बोअज़' रखा।

क़ुरबानगाह और समुंदर नामी हौज़

4 सुलेमान ने पीतल की एक क़ुरबानगाह भी बनवाई जिसकी लंबाई 30 फ़ुट, चौड़ाई 30 फ़ुट और ऊँचाई 15 फ़ुट थी।

2इसके बाद उसने पीतल का बड़ा गोल हौज़ ढलवाया जिसका नाम 'समुंदर' रखा गया। उस की ऊँचाई साढ़े 7 फ़ुट, उसका मुँह 15 फ़ुट चौड़ा और उसका घेरा तक़रीबन 45 फ़ुट था। 3हौज़ के किनारे के नीचे बैलों की दो क़तारें थीं। फ़ी फ़ुट तक़रीबन 6 बैल थे। बैल और हौज़ मिलकर ढाले गए थे। 4हौज़ को बैलों के 12 मुजस्समों पर रखा गया। तीन बैलों का रुख़ शिमाल की तरफ़, तीन का रुख़ मग़रिब की तरफ़, तीन का रुख़ जुनूब की तरफ़ और तीन का रुख़ मशरिक़ की तरफ़ था। उनके पिछले हिस्से हौज़ की तरफ़ थे, और हौज़ उनके कंधों पर पड़ा था। 5हौज़ का किनारा प्याले बल्कि सोसन के फूल की तरह बाहर की तरफ़ मुड़ा हुआ था। उस की दीवार तक़रीबन तीन इंच मोटी थी, और हौज़ में पानी के तक़रीबन 66,000 लिटर समा जाते थे।

6सुलेमान ने 10 बासन ढलवाए। पाँच को रब के घर के दाएँ हाथ और पाँच को उसके बाएँ हाथ खड़ा किया गया। इन बासनों में गोश्त के वह टुकड़े धोए जाते जिन्हें भस्म होनेवाली क़ुरबानी के तौर पर जलाना था। लेकिन 'समुंदर' नामी हौज़ इमामों के इस्तेमाल के लिए था। उसमें वह नहाते थे।

सोने के शमादान और मेज़ें

7सुलेमान ने सोने के 10 शमादान मुक़र्ररा तफ़सीलात के मुताबिक़ बनवाकर रब के घर में रख दिए, पाँच को दाईं तरफ़ और पाँच को बाईं तरफ़। 8दस मेज़ें भी बनाकर रब के घर में रखी गईं, पाँच को दाईं तरफ़ और पाँच को बाईं तरफ़। इन चीज़ों के अलावा सुलेमान ने छिड़काव के सोने के 100 कटोरे बनवाए।

सहन

9फिर सुलेमान ने वह अंदरूनी सहन बनवाया जिसमें सिर्फ़ इमामों को दाख़िल होने की इजाज़त थी। उसने बड़ा सहन भी उसके दरवाज़ों समेत बनवाया। दरवाज़ों के किवाड़ों पर पीतल चढ़ाया गया। 10'समुंदर' नामी हौज़ को सहन के जुनूब-मशरिक़ में रखा गया।

उस सामान की फ़हरिस्त जो हीराम ने तैयार किया

11हीराम ने बासन, बेलचे और छिड़काव के कटोरे भी बनाए। यों उसने अल्लाह के घर में वह सारा काम मुकम्मल किया जिसके लिए सुलेमान बादशाह ने उसे बुलाया था। उसने ज़ैल की चीज़ें बनाईं :

12दो सतून,
सतूनों पर लगे प्यालानुमा बालाई हिस्से,
बालाई हिस्सों पर लगी ज़ंजीरों का डिज़ायन,
13ज़ंजीरों के ऊपर लगे अनार (फ़ी बालाई हिस्सा 200 अदद),
14हथगाड़ियाँ,
इन पर के पानी के बासन,
15हौज़ बनाम समुंदर,
इसे उठानेवाले बैल के 12 मुजस्समे,

16बालटियाँ, बेलचे, गोश्त के काँटे।
तमाम सामान जो हीराम-अबी ने सुलेमान के
हुक्म पर रब के घर के लिए बनाया पीतल से
ढालकर पालिश किया गया था। 17बादशाह ने
उसे वादीए-यरदन में सुक्कात और ज़रतान के
दरमियान ढलवाया। वहाँ एक फ़ौंडरी थी जहाँ
हीराम ने गारे से साँचे बनाकर हर चीज़ ढाल दी।
18इस सामान के लिए सुलेमान बादशाह ने इतना
ज़्यादा पीतल इस्तेमाल किया कि उसका कुल
वज़न मालूम न हो सका।

रब के घर के अंदर सोने का सामान

19अल्लाह के घर के अंदर के लिए सुले-
मान ने दर्जे-ज़ैल सामान बनवाया :
सोने की क़ुरबानगाह,
सोने की वह मेज़ें जिन पर रब के लिए मख़सूस
रोटियाँ पड़ी रहती थीं,
20ख़ालिस सोने के वह शमादान और च-
राग़ जिनको क़वायद के मुताबिक़ मुक़द्दस-
तरीन कमरे के सामने जलना था,
21ख़ालिस सोने के वह फूल जिनसे शमादान
आरास्ता थे,
ख़ालिस सोने के चराग़ और बत्ती को बुझाने के
औज़ार,
22चराग़ को कतरने के ख़ालिस सोने के
औज़ार, छिड़काव के ख़ालिस सोने के कटोरे और
प्याले,
जलते हुए कोयले के लिए ख़ालिस सोने के
बरतन,
मुक़द्दसतरीन कमरे और बड़े हाल के दरवाज़े।

5 रब के घर की तकमील पर सुलेमान ने
वह सोना-चाँदी और बाक़ी तमाम क़ीमती
चीज़ें रब के घर के ख़ज़ानों में रखवा दीं जो उसके
बाप दाऊद ने अल्लाह के लिए मख़सूस की थीं।

अहद का संदूक़ रब के घर में लाया जाता है

2फिर सुलेमान ने इसराईल के तमाम बुज़ुर्गों
और क़बीलों और कुंबों के तमाम सरपरस्तों को
अपने पास यरूशलम में बुलाया, क्योंकि रब के
अहद का संदूक़ अब तक यरूशलम के उस हिस्से
में था जो 'दाऊद का शहर' या सिय्यून कहलाता
है। सुलेमान चाहता था कि क़ौम के नुमाइंदे हाज़िर
हों जब संदूक़ को वहाँ से रब के घर में पहुँचाया
जाए। 3चुनाँचे इसराईल के तमाम मर्द साल के
सातवें महीने[a] में बादशाह के पास यरूशलम में
जमा हुए। इसी महीने में झोंपड़ियों की ईद मनाई
जाती थी।
4जब सब जमा हुए तो लावी रब के संदूक़
को उठाकर 5रब के घर में लाए। इमामों के
साथ मिलकर उन्होंने मुलाक़ात के ख़ैमे को भी
उसके तमाम मुक़द्दस सामान समेत रब के घर
में पहुँचाया। 6वहाँ संदूक़ के सामने सुलेमान
बादशाह और बाक़ी तमाम जमाशुदा इसराईलियों
ने इतनी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल क़ुरबान
किए कि उनकी तादाद गिनी नहीं जा सकती थी।
7इमामों ने रब के अहद का संदूक़ पिछले यानी
मुक़द्दसतरीन कमरे में लाकर करूबी फ़रिश्तों के
परों के नीचे रख दिया। 8फ़रिश्तों के पर पूरे संदूक़
पर उस की उठाने की लकड़ियों समेत फैले रहे।
9तो भी उठाने की यह लकड़ियाँ इतनी लंबी थीं
कि उनके सिरे सामनेवाले यानी मुक़द्दस कमरे से
नज़र आते थे। लेकिन वह बाहर से देखे नहीं जा
सकते थे। आज तक वह वहीं मौजूद हैं। 10संदूक़
में सिर्फ़ पत्थर की वह दो तख़्तियाँ थीं जिनको
मूसा ने होरिब यानी कोहे-सीना के दामन में उसमें
रख दिया था, उस वक़्त जब रब ने मिसर से
निकले हुए इसराईलियों के साथ अहद बाँधा था।
11फिर इमाम मुक़द्दस कमरे से निकलकर सहन
में आए।
जितने इमाम आए थे उन सबने अपने आपको
पाक-साफ़ किया हुआ था, ख़्वाह उस वक़्त उनके

[a]सितंबर ता अक्तूबर

गुरोह की रब के घर में ड्यूटी थी या नहीं।
12लावियों के तमाम गुलूकार भी हाज़िर थे।
उनके राहनुमा आसफ़, हैमान और यदूतून अपने
बेटों और रिश्तेदारों समेत सब बारीक कतान के
लिबास पहने हुए क़ुरबानगाह के मशरिक़ में खड़े
थे। वह झाँझ, सितार और सरोद बजा रहे थे,
जबकि उनके साथ 120 इमाम तुरम फूँक रहे
थे। 13गानेवाले और तुरम बजानेवाले मिलकर रब
की सताइश कर रहे थे। तुरमों, झाँझों और बाक़ी
साज़ों के साथ उन्होंने बुलंद आवाज़ से रब की
तमजीद में गीत गाया, "वह भला है, और उस
की शफ़क़त अबदी है।"

तब रब का घर एक बादल से भर गया।
14इमाम रब के घर में अपनी ख़िदमत अंजाम न
दे सके, क्योंकि अल्लाह का घर उसके जलाल
के बादल से मामूर हो गया था।

6 यह देखकर सुलेमान ने दुआ की, "रब ने
फ़रमाया है कि मैं घने बादल के अंधेरे में
रहूँगा। 2मैंने तेरे लिए अज़ीम सुकूनतगाह बनाई
है, एक मक़ाम जो तेरी अबदी सुकूनत के लायक़
है।"

रब के घर की मख़सूसियत पर सुलेमान की तक़रीर

3फिर बादशाह ने मुड़कर रब के घर के सामने
खड़ी इसराईल की पूरी जमात की तरफ़ रुख़
किया। उसने उन्हें बरकत देकर कहा,

4"रब इसराईल के ख़ुदा की तारीफ़ हो जिसने
वह वादा पूरा किया है जो उसने मेरे बाप दाऊद से
किया था। क्योंकि उसने फ़रमाया, 5'जिस दिन
मैं अपनी क़ौम को मिसर से निकाल लाया उस
दिन से लेकर आज तक मैंने न कभी फ़रमाया कि
इसराईली क़बीलों के किसी शहर में मेरे नाम की
ताज़ीम में घर बनाया जाए, न किसी को मेरी क़ौम
इसराईल पर हुकूमत करने के लिए मुक़र्रर किया।
6लेकिन अब मैंने यरूशलम को अपने नाम की
सुकूनतगाह और दाऊद को अपनी क़ौम इसराईल
का बादशाह बनाया है।'

7मेरे बाप दाऊद की बड़ी ख़ाहिश थी कि रब
इसराईल के ख़ुदा के नाम की ताज़ीम में घर
बनाए। 8लेकिन रब ने एतराज़ किया, 'मैं ख़ुश
हूँ कि तू मेरे नाम की ताज़ीम में घर तामीर करना
चाहता है, 9लेकिन तू नहीं बल्कि तेरा बेटा ही उसे
बनाएगा।'

10और वाक़ई, रब ने अपना वादा पूरा किया है।
मैं रब के वादे के ऐन मुताबिक़ अपने बाप दाऊद
की जगह इसराईल का बादशाह बनकर तख़्त पर
बैठ गया हूँ। और अब मैंने रब इसराईल के ख़ुदा
के नाम की ताज़ीम में घर भी बनाया है। 11उसमें
मैंने वह संदूक़ रख दिया है जिसमें शरीअत की
तख़्तियाँ पड़ी हैं, उस अहद की तख़्तियाँ जो रब
ने इसराईलियों से बाँधा था।"

रब के घर की मख़सूसियत पर सुलेमान की दुआ

12फिर सुलेमान ने इसराईल की पूरी जमात
के देखते देखते रब की क़ुरबानगाह के सामने
खड़े होकर अपने हाथ आसमान की तरफ़ उठाए।
13उसने इस मौक़े के लिए पीतल का एक चबूतरा
बनवाकर उसे बैरूनी सहन के बीच में रखवा दिया
था। चबूतरा साढ़े 7 फ़ुट लंबा, साढ़े 7 फ़ुट
चौड़ा और साढ़े 4 फ़ुट ऊँचा था। अब सुलेमान
उस पर चढ़कर पूरी जमात के देखते देखते झुक
गया। अपने हाथों को आसमान की तरफ़ उठाकर
14उसने दुआ की,

"ऐ रब इसराईल के ख़ुदा, तुझ जैसा कोई ख़ुदा
नहीं है, न आसमान और न ज़मीन पर। तू अपना
वह अहद क़ायम रखता है जिसे तूने अपनी क़ौम
के साथ बाँधा है और अपनी मेहरबानी उन सब पर
ज़ाहिर करता है जो पूरे दिल से तेरी राह पर चलते
हैं। 15तूने अपने ख़ादिम दाऊद से किया हुआ
वादा पूरा किया है। जो बात तूने अपने मुँह से मेरे
बाप से की वह तूने अपने हाथ से आज ही पूरी की
है। 16ऐ रब इसराईल के ख़ुदा, अब अपनी दूसरी
बात भी पूरी कर जो तूने अपने ख़ादिम दाऊद से
की थी। क्योंकि तूने मेरे बाप से वादा किया था,

‘अगर तेरी औलाद तेरी तरह अपने चाल-चलन
पर ध्यान देकर मेरी शरीअत के मुताबिक़ मेरे हुज़ूर
चलती रहे तो इसराईल पर उस की हुकूमत हमेशा
तक क़ायम रहेगी।’ 17ऐ रब इसराईल के ख़ुदा,
अब बराहे-करम अपना यह वादा पूरा कर जो तूने
अपने ख़ादिम दाऊद से किया है।

18लेकिन क्या अल्लाह वाक़ई ज़मीन पर
इनसान के दरमियान सुकूनत करेगा? नहीं, तू तो
बुलंदतरीन आसमान में भी समा नहीं सकता! तो
फिर यह मकान जो मैंने बनाया है किस तरह तेरी
सुकूनतगाह बन सकता है? 19ऐ रब मेरे ख़ुदा, तो
भी अपने ख़ादिम की दुआ और इल्तिजा सुन जब
मैं तेरे हुज़ूर पुकारते हुए इलतमास करता हूँ 20कि
बराहे-करम दिन-रात इस इमारत की निगरानी
कर! क्योंकि यह वह जगह है जिसके बारे में तूने
ख़ुद फ़रमाया, ‘यहाँ मेरा नाम सुकूनत करेगा।’
चुनाँचे अपने ख़ादिम की गुज़ारिश सुन जो मैं इस
मक़ाम की तरफ़ रुख़ किए हुए करता हूँ। 21जब
हम इस मक़ाम की तरफ़ रुख़ करके दुआ करें
तो अपने ख़ादिम और अपनी क़ौम की इल्तिजाएँ
सुन। आसमान पर अपने तख़्त से हमारी सुन।
और जब सुनेगा तो हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर!

22अगर किसी पर इलज़ाम लगाया जाए और
उसे यहाँ तेरी क़ुरबानगाह के सामने लाया जाए
ताकि हलफ़ उठाकर वादा करे कि मैं बेक़ुसूर हूँ
23तो बराहे-करम आसमान पर से सुनकर अपने
ख़ादिमों का इनसाफ़ कर। क़ुसूरवार को सज़ा
देकर उसके अपने सर पर वह कुछ आने दे जो
उससे सरज़द हुआ है, और बेक़ुसूर को बेइलज़ाम
क़रार दे और उस की रास्तबाज़ी का बदला दे।

24हो सकता है किसी वक़्त तेरी क़ौम इसराईल
तेरा गुनाह करे और नतीजे में दुश्मन के सामने
शिकस्त खाए। अगर इसराईली आख़िरकार तेरे
पास लौट आएँ और तेरे नाम की तमजीद करके
यहाँ इस घर में तेरे हुज़ूर दुआ और इलतमास करें
25तो आसमान पर से उनकी फ़रियाद सुन लेना।
अपनी क़ौम इसराईल का गुनाह मुआफ़ करके
उन्हें दुबारा उस मुल्क में वापस लाना जो तूने उन्हें
और उनके बापदादा को दे दिया था।

26हो सकता है इसराईली तेरा इतना संगीन
गुनाह करें कि काल पड़े और बड़ी देर तक बारिश
न बरसे। अगर वह आख़िरकार इस घर की तरफ़
रुख़ करके तेरे नाम की तमजीद करें और तेरी
सज़ा के बाइस अपना गुनाह छोड़कर लौट आएँ
27तो आसमान पर से उनकी फ़रियाद सुन लेना।
अपने ख़ादिमों और अपनी क़ौम इसराईल को
मुआफ़ कर, क्योंकि तू ही उन्हें अच्छी राह की
तालीम देता है। तब उस मुल्क पर दुबारा बारिश
बरसा दे जो तूने अपनी क़ौम को मीरास में दे दिया
है।

28हो सकता है इसराईल में काल पड़ जाए,
अनाज की फ़सल किसी बीमारी, फफूँदी, टिड्डियों
या कीड़ों से मुतअस्सिर हो जाए, या दुश्मन किसी
शहर का मुहासरा करे। जो भी मुसीबत या बीमारी
हो, 29अगर कोई इसराईली या तेरी पूरी क़ौम
उसका सबब जानकर अपने हाथों को इस घर
की तरफ़ बढ़ाए और तुझसे इलतमास करे 30तो
आसमान पर अपने तख़्त से उनकी फ़रियाद सुन
लेना। उन्हें मुआफ़ करके हर एक को उस की
तमाम हरकतों का बदला दे, क्योंकि सिर्फ़ तू ही
हर इनसान के दिल को जानता है। 31फिर जितनी
देर वह उस मुल्क में ज़िंदगी गुज़ारेंगे जो तूने हमारे
बापदादा को दिया था उतनी देर वह तेरा ख़ौफ़
मानकर तेरी राहों पर चलते रहेंगे।

32आइंदा परदेसी भी तेरे अज़ीम नाम, तेरी
बड़ी क़ुदरत और तेरे ज़बरदस्त कामों के सबब
से आएँगे और इस घर की तरफ़ रुख़ करके दुआ
करेंगे। अगरचे वह तेरी क़ौम इसराईल के नहीं
होंगे 33तो भी आसमान पर से उनकी फ़रियाद
सुन लेना। जो भी दरख़ास्त वह पेश करें वह पूरी
करना ताकि दुनिया की तमाम अक़वाम तेरा नाम
जानकर तेरी क़ौम इसराईल की तरह ही तेरा
ख़ौफ़ मानें और जान लें कि जो इमारत मैंने तामीर
की है उस पर तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है।

34हो सकता है तेरी क़ौम के मर्द तेरी हिदायत
के मुताबिक़ अपने दुश्मन से लड़ने के लिए
निकलें। अगर वह तेरे चुने हुए शहर और उस
इमारत की तरफ़ रुख़ करके दुआ करें जो मैंने
तेरे नाम के लिए तामीर की है 35तो आसमान पर
से उनकी दुआ और इलतमास सुनकर उनके हक़
में इनसाफ़ क़ायम रखना।

36हो सकता है वह तेरा गुनाह करें, ऐसी हरकतें
तो हम सबसे सरज़द होती रहती हैं, और नतीजे
में तू नाराज़ होकर उन्हें दुश्मन के हवाले कर दे
जो उन्हें क़ैद करके किसी दूर-दराज़ या क़रीबी
मुल्क में ले जाए। 37शायद वह जिलावतनी में
तौबा करके दुबारा तेरी तरफ़ रुजू करें और तुझसे
इलतमास करें, 'हमने गुनाह किया है, हमसे
ग़लती हुई है, हमने बेदीन हरकतें की हैं।'

38अगर वह ऐसा करके अपनी क़ैद के मुल्क में
अपने पूरे दिलो-जान से दुबारा तेरी तरफ़ रुजू करें
और तेरी तरफ़ से बापदादा को दिए गए मुल्क,
तेरे चुने हुए शहर और उस इमारत की तरफ़
रुख़ करके दुआ करें जो मैंने तेरे नाम के लिए
तामीर की है 39तो आसमान पर अपने तख़्त से
उनकी दुआ और इलतमास सुन लेना। उनके हक़
में इनसाफ़ क़ायम करना, और अपनी क़ौम के
गुनाहों को मुआफ़ कर देना। 40ऐ मेरे ख़ुदा, तेरी
आँखें और तेरे कान उन दुआओं के लिए खुले रहें
जो इस जगह पर की जाती हैं।

41ऐ रब ख़ुदा, उठकर अपनी आरामगाह के
पास आ, तू और अहद का संदूक़ जो तेरी क़ुदरत
का इज़हार है। ऐ रब ख़ुदा, तेरे इमाम नजात से
मुलब्बस हो जाएँ, और तेरे ईमानदार तेरी भलाई
की ख़ुशी मनाएँ। 42ऐ रब ख़ुदा, अपने मसह किए
हुए ख़ादिम को रद्द न कर बल्कि उस शफ़क़त को
याद कर जो तूने अपने ख़ादिम दाऊद पर की है।"

रब के घर की मख़सूसियत पर जशन

7 सुलेमान की इस दुआ के इख़्तिताम पर
आग ने आसमान पर से नाज़िल होकर
भस्म होनेवाली और ज़बह की क़ुरबानियों को
भस्म कर दिया। साथ साथ रब का घर उसके
जलाल से यों मामूर हुआ 2कि इमाम उसमें
दाख़िल न हो सके। 3जब इसराईलियों ने देखा
कि आसमान पर से आग नाज़िल हुई है और घर
रब के जलाल से मामूर हो गया है तो वह मुँह के
बल झुककर रब की हम्दो-सना करके गीत गाने
लगे, "वह भला है, और उस की शफ़क़त अबदी
है।"

4-5फिर बादशाह और तमाम क़ौम ने रब के
हुज़ूर क़ुरबानियाँ पेश करके अल्लाह के घर
को मख़सूस किया। इस सिलसिले में सुलेमान
ने 22,000 गाय-बैलों और 1,20,000 भेड़-
बकरियों को क़ुरबान किया। 6इमाम और लावी
अपनी अपनी ज़िम्मेदारियों के मुताबिक़ खड़े थे।
लावी उन साज़ों को बजा रहे थे जो दाऊद ने
रब की सताइश करने के लिए बनवाए थे। साथ
साथ वह हम्द का वह गीत गा रहे थे जो उन्होंने
दाऊद से सीखा था, "उस की शफ़क़त अबदी
है।" लावियों के मुक़ाबिल इमाम तुरम बजा रहे
थे जबकि बाक़ी तमाम लोग खड़े थे। 7सुलेमान ने
सहन का दरमियानी हिस्सा क़ुरबानियाँ चढ़ाने के
लिए मख़सूस किया। वजह यह थी कि पीतल की
क़ुरबानगाह इतनी क़ुरबानियाँ पेश करने के लिए
छोटी थी, क्योंकि भस्म होनेवाली क़ुरबानियों और
ग़ल्ला की नज़रों की तादाद बहुत ज़्यादा थी।
इसके अलावा सलामती की बेशुमार क़ुरबानियों
की चरबी को भी जलाना था।

8-9ईद 14 दिनों तक मनाई गई। पहले हफ़्ते में
सुलेमान और तमाम इसराईल ने क़ुरबानगाह की
मख़सूसियत मनाई और दूसरे हफ़्ते में झोंपड़ियों
की ईद। इस ईद में बहुत ज़्यादा लोग शरीक
हुए। वह दूर-दराज़ इलाक़ों से यरूशलम आए थे,
शिमाल में लबो-हमात से लेकर जुनूब में उस वादी
तक जो मिसर की सरहद थी। आख़िरी दिन पूरी
जमात ने इख़्तितामी जशन मनाया। 10यह सातवें
माह के 23वें दिन वुक़ूपज़ीर हुआ। इसके बाद
सुलेमान ने इसराईलियों को रुख़सत किया। सब
शादमान और दिल से ख़ुश थे कि रब ने दाऊद,

सुलेमान और अपनी क़ौम इसराईल पर इतनी मेहरबानी की है।

रब सुलेमान से हमकलाम होता है

11चुनाँचे सुलेमान ने रब के घर और शाही महल
को तकमील तक पहुँचाया। जो कुछ भी उसने
ठान लिया था वह पूरा हुआ। 12एक रात रब उस
पर ज़ाहिर हुआ और कहा,

"मैंने तेरी दुआ को सुनकर तय कर लिया
है कि यह घर वही जगह हो जहाँ तुम मुझे
क़ुरबानियाँ पेश कर सको। 13जब कभी मैं बारिश
का सिलसिला रोकूँ, या फ़सलें ख़राब करने के
लिए टिड्डियाँ भेजूँ या अपनी क़ौम में वबा फैलने
दूँ 14तो अगर मेरी क़ौम जो मेरे नाम से कहलाती
है अपने आपको पस्त करे और दुआ करके मेरे
चेहरे की तालिब हो और अपनी शरीर राहों से बाज़
आए तो फिर मैं आसमान पर से उस की सुनकर
उसके गुनाहों को मुआफ़ कर दूँगा और मुल्क को
बहाल करूँगा। 15अब से जब भी यहाँ दुआ माँगी
जाए तो मेरी आँखें खुली रहेंगी और मेरे कान
उस पर ध्यान देंगे। 16क्योंकि मैंने इस घर को
चुनकर मख़सूसो-मुक़द्दस कर रखा है ताकि मेरा
नाम हमेशा तक यहाँ क़ायम रहे। मेरी आँखें और
दिल हमेशा इसमें हाज़िर रहेंगे। 17जहाँ तक तेरा
ताल्लुक़ है, अपने बाप दाऊद की तरह मेरे हुज़ूर
चलता रह। क्योंकि अगर तू मेरे तमाम अहकाम
और हिदायात की पैरवी करता रहे 18तो मैं तेरी
इसराईल पर हुकूमत क़ायम रखूँगा। फिर मेरा वह
वादा क़ायम रहेगा जो मैंने तेरे बाप दाऊद से अहद
बाँधकर किया था कि इसराईल पर तेरी औलाद
की हुकूमत हमेशा तक क़ायम रहेगी।

19लेकिन ख़बरदार! अगर तू मुझसे दूर होकर
मेरे दिए गए अहकाम और हिदायात को तर्क करे
बल्कि दीगर माबूदों की तरफ़ रुजू करके उनकी
ख़िदमत और परस्तिश करे 20तो मैं इसराईल को
जड़ से उखाड़कर उस मुल्क से निकाल दूँगा जो
मैंने उनको दे दिया है। न सिर्फ़ यह बल्कि मैं इस
घर को भी रद्द कर दूँगा जो मैंने अपने नाम के
लिए मख़सूसो-मुक़द्दस कर लिया है। उस वक़्त
मैं इसराईल को तमाम अक़वाम में मज़ाक़ और
लान-तान का निशाना बना दूँगा। 21इस शानदार
घर की बुरी हालत देखकर यहाँ से गुज़रनेवाले
तमाम लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, और वह
पूछेंगे, 'रब ने इस मुल्क और इस घर से ऐसा
सुलूक क्यों किया?' 22तब लोग जवाब देंगे,
'इसलिए कि गो रब उनके बापदादा का ख़ुदा
उन्हें मिसर से निकालकर यहाँ लाया तो भी यह
लोग उसे तर्क करके दीगर माबूदों से चिमट गए
हैं। चूँकि वह उनकी परस्तिश और ख़िदमत करने
से बाज़ न आए इसलिए उसने उन्हें इस सारी
मुसीबत में डाल दिया है'।"

सुलेमान की मुख़्तलिफ़ मुहिमात

8 रब के घर और शाही महल को तामीर
करने में 20 साल लग गए थे। 2इसके
बाद सुलेमान ने वह आबादियाँ नए सिरे से तामीर
कीं जो हीराम ने उसे दे दी थीं। इनमें उसने
इसराईलियों को बसा दिया।

3एक फ़ौजी मुहिम के दौरान उसने हमात-
ज़ोबाह पर हमला करके उस पर क़ब्ज़ा कर
लिया। 4इसके अलावा उसने हमात के इलाक़े में
गोदाम के शहर बनाए। रेगिस्तान के शहर तदमूर
में उसने बहुत-सा तामीरी काम कराया 5-6और
इसी तरह बालाई और नशेबी बैत-हौरून और
बालात में भी। इन शहरों के लिए उसने फ़सील
और कुंडेवाले दरवाज़े बनवाए। सुलेमान ने अपने
गोदामों के लिए और अपने रथों और घोड़ों को
रखने के लिए भी शहर बनवाए।

जो कुछ भी वह यरूशलम, लुबनान या अपनी
सलतनत की किसी और जगह बनवाना चाहता
था वह उसने बनवाया। 7-8जिन आदमियों की
सुलेमान ने बेगार पर भरती की वह इसराईली
नहीं थे बल्कि हित्ती, अमोरी, फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी
और यबूसी यानी कनान के पहले बाशिंदों की
वह औलाद थे जो बाक़ी रह गए थे। मुल्क पर
क़ब्ज़ा करते वक़्त इसराईली इन क़ौमों को पूरे

तौर पर मिटा न सके, और आज तक इनकी
औलाद को इसराईल के लिए बेगार में काम करना
पड़ता है। 9लेकिन सुलेमान ने इसराईलियों को
ऐसे काम करने पर मजबूर न किया बल्कि वह
उसके फ़ौजी और रथों के फ़ौजियों के अफ़सर
बन गए, और उन्हें रथों और घोड़ों पर मुक़र्रर किया
गया। 10सुलेमान के तामीरी काम पर भी 250
इसराईली मुक़र्रर थे जो ज़िलों पर मुक़र्रर अफ़सरों
के ताबे थे। यह लोग तामीरी काम करनेवालों की
निगरानी करते थे।

11फ़िरौन की बेटी यरूशलम के पुराने हिस्से
बनाम 'दाऊद का शहर' से उस महल में मुंतक़िल
हुई जो सुलेमान ने उसके लिए तामीर किया था,
क्योंकि सुलेमान ने कहा, "लाज़िम है कि मेरी
अहलिया इसराईल के बादशाह दाऊद के महल
में न रहे। चूँकि रब का संदूक़ यहाँ से गुज़रा है,
इसलिए यह जगह मुक़द्दस है।"

रब के घर में ख़िदमत की तरतीब

12उस वक़्त से सुलेमान रब को रब के घर
के बड़े हाल के सामने की क़ुरबानगाह पर भस्म
होनेवाली क़ुरबानियाँ पेश करता था। 13जो कुछ
भी मूसा ने रोज़ाना की क़ुरबानियों के मुताल्लिक़
फ़रमाया था उसके मुताबिक़ बादशाह क़ुरबानियाँ
चढ़ाता था। इनमें वह क़ुरबानियाँ भी शामिल थीं
जो सबत के दिन, नए चाँद की ईद पर और
साल की तीन बड़ी ईदों पर यानी फ़सह की ईद,
हफ़्तों की ईद और झोंपड़ियों की ईद पर पेश की
जाती थीं। 14सुलेमान ने इमामों के मुख़्तलिफ़
गुरोहों को वह ज़िम्मेदारियाँ सौंपीं जो उसके बाप
दाऊद ने मुक़र्रर की थीं। लावियों की ज़िम्मेदारियाँ
भी मुक़र्रर की गईं। उनकी एक ज़िम्मेदारी रब
की हम्दो-सना करने में परस्तारों की राहनुमाई
करनी थी। नीज़, उन्हें रोज़ाना की ज़रूरियात
के मुताबिक़ इमामों की मदद करनी थी। रब के
घर के दरवाज़ों की पहरादारी भी लावियों की
एक ख़िदमत थी। हर दरवाज़े पर एक अलग
गुरोह की ड्यूटी लगाई गई। यह भी मर्दे-ख़ुदा
दाऊद की हिदायात के मुताबिक़ हुआ। 15जो भी
हुक्म दाऊद ने इमामों, लावियों और ख़ज़ानों के
मुताल्लिक़ दिया था वह उन्होंने पूरा किया।

16यों सुलेमान के तमाम मनसूबे रब के घर की
बुनियाद रखने से लेकर उस की तकमील तक पूरे
हुए।

17बाद में सुलेमान अस्यून-जाबर और ऐलात
गया। यह शहर अदोम के साहिल पर वाक़े थे।
18वहाँ हीराम बादशाह ने अपने जहाज़ और
तजरबाकार मल्लाह भेजे ताकि वह सुलेमान के
आदमियों के साथ मिलकर जहाज़ों को चलाएँ।
उन्होंने ओफ़ीर तक सफ़र किया और वहाँ से
सुलेमान के लिए तक़रीबन 15,000 किलोग्राम
सोना लेकर आए।

सबा की मलिका सुलेमान से मिलती है

9
सुलेमान की शोहरत सबा की मलिका तक
पहुँच गई। जब उसने उसके बारे में सुना
तो वह सुलेमान से मिलने के लिए रवाना हुई
ताकि उसे मुश्किल पहेलियाँ पेश करके उस की
दानिशमंदी जाँच ले। वह निहायत बड़े क़ाफ़िले
के साथ यरूशलम पहुँची जिसके ऊँट बलसान,
कसरत के सोने और क़ीमती जवाहिर से लदे हुए
थे।

मलिका की सुलेमान से मुलाक़ात हुई तो उसने
उससे वह तमाम मुश्किल सवालात पूछे जो उसके
ज़हन में थे। 2सुलेमान उसके हर सवाल का
जवाब दे सका। कोई भी बात इतनी पेचीदा
नहीं थी कि वह उसका मतलब मलिका को
बता न सकता। 3सबा की मलिका सुलेमान की
हिकमत और उसके नए महल से बहुत मुतअस्सिर
हुई। 4उसने बादशाह की मेज़ों पर के मुख़्तलिफ़
खाने देखे और यह कि उसके अफ़सर किस
तरतीब से उस पर बिठाए जाते थे। उसने बैरों की
ख़िदमत, उनकी शानदार वरदियों और साक़ियों
की शानदार वरदियों पर भी ग़ौर किया। जब
उसने इन बातों के अलावा भस्म होनेवाली वह

क़ुरबानियाँ भी देखीं जो सुलेमान रब के घर में
चढ़ाता था तो मलिका हक्का-बक्का रह गई।
5वह बोल उठी, “वाक़ई, जो कुछ मैंने अपने
मुल्क में आपके शाहकारों और हिकमत के बारे
में सुना था वह दुरुस्त है। 6जब तक मैंने ख़ुद
आकर यह सब कुछ अपनी आँखों से न देखा
मुझे यक़ीन नहीं आता था। लेकिन हक़ीक़त में
मुझे आपकी ज़बरदस्त हिकमत के बारे में आधा
भी नहीं बताया गया था। वह उन रिपोर्टों से
कहीं ज़्यादा है जो मुझ तक पहुँची थीं। 7आपके
लोग कितने मुबारक हैं! आपके अफ़सर कितने
मुबारक हैं जो मुसलसल आपके सामने खड़े
रहते और आपकी दानिश भरी बातें सुनते हैं!
8रब आपके ख़ुदा की तमजीद हो जिसने आपको
पसंद करके अपने तख़्त पर बिठाया ताकि रब
अपने ख़ुदा की ख़ातिर हुकूमत करें। आपका ख़ुदा
इसराईल से मुहब्बत रखता है, और वह उसे
अबद तक क़ायम रखना चाहता है, इसी लिए
उसने आपको उनका बादशाह बना दिया है ताकि
इनसाफ़ और रास्तबाज़ी क़ायम रखें।”
9फिर मलिका ने सुलेमान को तक़रीबन
4,000 किलोग्राम सोना, बहुत ज़्यादा बलसान
और जवाहिर दे दिए। पहले कभी भी उतना
बलसान इसराईल में नहीं लाया गया था जितना
उस वक़्त सबा की मलिका लाई।
10हीराम और सुलेमान के आदमी ओफ़ीर
से न सिर्फ़ सोना लाए बल्कि उन्होंने क़ीमती
लकड़ी और जवाहिर भी इसराईल तक पहुँचाए।
11जितनी क़ीमती लकड़ी उन दिनों में यहूदाह
में दरामद हुई उतनी पहले कभी वहाँ लाई नहीं
गई थी। इस लकड़ी से बादशाह ने रब के घर
और अपने महल के लिए सीढ़ियाँ बनवाईं। यह
मौसीक़ारों के सरोद और सितार बनाने के लिए
भी इस्तेमाल हुई।
12सुलेमान बादशाह ने अपनी तरफ़ से सबा
की मलिका को बहुत-से तोह्फ़े दिए। यह उन
चीज़ों से ज़्यादा थे जो मलिका अपने मुल्क से
उसके पास लाई थी। जो भी मलिका चाहती
थी या उसने माँगा वह उसे दिया गया। फिर
वह अपने नौकर-चाकरों और अफ़सरों के हमराह
अपने वतन वापस चली गई।

सुलेमान की दौलत और शोहरत

13जो सोना सुलेमान को सालाना मिलता
था उसका वज़न तक़रीबन 23,000 किलो-
ग्राम था। 14इसमें वह टैक्स शामिल नहीं थे
जो उसे सौदागरों, ताजिरों, अरब बादशाहों और
ज़िलों के अफ़सरों से मिलते थे। यह उसे सोना
और चाँदी देते थे।
15-16सुलेमान बादशाह ने 200 बड़ी और
300 छोटी ढालें बनवाईं। उन पर सोना मँढा गया।
हर बड़ी ढाल के लिए तक़रीबन 7 किलोग्राम
सोना इस्तेमाल हुआ और हर छोटी ढाल के लिए
साढ़े 3 किलोग्राम। सुलेमान ने उन्हें ‘लुबनान का
जंगल’ नामी महल में महफ़ूज़ रखा।
17इनके अलावा बादशाह ने हाथीदाँत से
आरास्ता एक बड़ा तख़्त बनवाया जिस पर
ख़ालिस सोना चढ़ाया गया। 18-19उसके हर बाज़ू
के साथ शेरबबर का मुजस्समा था। तख़्त कुछ
ऊँचा था, और बादशाह छः पाएवाली सीढ़ी पर
चढ़कर उस पर बैठता था। दाईं और बाईं तरफ़
हर पाए पर शेरबबर का मुजस्समा था। पाँवों के
लिए सोने की चौकी बनाई गई थी। इस क़िस्म
का तख़्त किसी और सलतनत में नहीं पाया जाता
था।
20सुलेमान के तमाम प्याले सोने के थे, बल्कि
‘लुबनान का जंगल’ नामी महल में तमाम बरतन
ख़ालिस सोने के थे। कोई भी चीज़ चाँदी की नहीं
थी, क्योंकि सुलेमान के ज़माने में चाँदी की कोई
क़दर नहीं थी। 21बादशाह के अपने बहरी जहाज़
थे जो हीराम के बंदों के साथ मिलकर मुख़्तलिफ़
जगहों पर जाते थे। हर तीन साल के बाद वह
सोने-चाँदी, हाथीदाँत, बंदरों और मोरों से लदे हुए
वापस आते थे।
22सुलेमान की दौलत और हिकमत दुनिया के
तमाम बादशाहों से कहीं ज़्यादा थी। 23दुनिया

के तमाम बादशाह उससे मिलने की कोशिश
करते रहे ताकि वह हिकमत सुन लें जो अल्लाह
ने उसके दिल में डाल दी थी। 24साल बसाल
जो भी सुलेमान के दरबार में आता वह कोई न
कोई तोह्फ़ा लाता। यों उसे सोने-चाँदी के बरतन,
क़ीमती लिबास, हथियार, बलसान, घोड़े और
ख़च्चर मिलते रहे।

25घोड़ों और रथों को रखने के लिए सुलेमान
के 4,000 थान थे। उसके 12,000 घोड़े थे।
कुछ उसने रथों के लिए मख़सूस किए गए
शहरों में और कुछ यरूशलम में अपने पास रखे।
26सुलेमान उन तमाम बादशाहों का हुक्मरान
था जो दरियाए-फ़ुरात से लेकर फ़िलिस्तियों के
मुल्क की मिसरी सरहद तक हुकूमत करते थे।
27बादशाह की सरगरमियों के बाइस चाँदी पत्थर
जैसी आम हो गई और देवदार की क़ीमती लकड़ी
मग़रिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े की अंजीर-तूत
की सस्ती लकड़ी जैसी आम हो गई। 28बादशाह
के घोड़े मिसर और दीगर कई मुल्कों से दरामद
होते थे।

सुलेमान की मौत

29सुलेमान की ज़िंदगी के बारे में मज़ीद
बातें शुरू से लेकर आख़िर तक 'नातन नबी
की तारीख़,' सैला के रहनेवाले नबी अख़ि-
याह की किताब 'अख़ियाह की नबुव्वत' और
यरुबियाम बिन नबात से मुताल्लिक़ किताब 'इद्दू
ग़ैबबीन की रोयाएँ' में दर्ज हैं।

30सुलेमान 40 साल के दौरान पूरे इस-
राईल पर हुकूमत करता रहा। उसका दा-
रुल-हुकूमत यरूशलम था। 31जब वह मरकर
अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम
के उस हिस्से में दफ़न किया गया जो 'दाऊद का
शहर' कहलाता है। फिर उसका बेटा रहुबियाम
तख़्तनशीन हुआ।

शिमाली क़बीले अलग हो जाते हैं

10 रहुबियाम सिकम गया, क्योंकि
वहाँ तमाम इसराईली उसे बाद-
शाह मुक़र्रर करने के लिए जमा हो गए थे।
2यरुबियाम बिन नबात यह ख़बर सुनते ही मिसर
से जहाँ उसने सुलेमान बादशाह से भागकर पनाह
ली थी इसराईल वापस आया। 3इसराईलियों ने
उसे बुलाया ताकि उसके साथ सिकम जाएँ। जब
पहुँचा तो इसराईल की पूरी जमात यरुबियाम के
साथ मिलकर रहुबियाम से मिलने गई। उन्होंने
बादशाह से कहा, 4"जो जुआ आपके बाप ने
हम पर डाल दिया था उसे उठाना मुश्किल था,
और जो वक़्त और पैसे हमें बादशाह की ख़िदमत
में सर्फ़ करने थे वह नाक़ाबिले-बरदाश्त थे। अब
दोनों को कम कर दें। फिर हम ख़ुशी से आपकी
ख़िदमत करेंगे।"

5रहुबियाम ने जवाब दिया, "मुझे तीन दिन की
मोहलत दें, फिर दुबारा मेरे पास आएँ।" चुनाँचे
लोग चले गए। 6फिर रहुबियाम बादशाह ने उन
बुज़ुर्गों से मशवरा किया जो सुलेमान के जीते-जी
बादशाह की ख़िदमत करते रहे थे। उसने पूछा,
"आपका क्या ख़याल है? मैं इन लोगों को क्या
जवाब दूँ?" 7बुज़ुर्गों ने जवाब दिया, "हमारा
मशवरा है कि इस वक़्त उनसे मेहरबानी से पेश
आकर उनसे अच्छा सुलूक करें और नरम जवाब
दें। अगर आप ऐसा करें तो वह हमेशा आपके
वफ़ादार ख़ादिम बने रहेंगे।"

8लेकिन रहुबियाम ने बुज़ुर्गों का मशवरा रद्द
करके उस की ख़िदमत में हाज़िर उन जवानों से
मशवरा किया जो उसके साथ परवान चढ़े थे।
9उसने पूछा, "मैं इस क़ौम को क्या जवाब दूँ?
यह तक़ाज़ा कर रहे हैं कि मैं वह जुआ हलका
कर दूँ जो मेरे बाप ने उन पर डाल दिया।" 10जो
जवान उसके साथ परवान चढ़े थे उन्होंने कहा,
"अच्छा, यह लोग तक़ाज़ा कर रहे हैं कि आपके
बाप का जुआ हलका किया जाए? उन्हें बता
देना, 'मेरी छोटी उँगली मेरे बाप की कमर से

ज़्यादा मोटी है! 11बेशक जो जुआ उसने आप
पर डाल दिया उसे उठाना मुश्किल था, लेकिन
मेरा जुआ और भी भारी होगा। जहाँ मेरे बाप ने
आपको कोड़े लगाए वहाँ मैं आपकी बिच्छुओं से
तादीब करूँगा'!"

12तीन दिन के बाद जब यरुबियाम तमाम
इसराईलियों के साथ रहुबियाम का फ़ैसला सुनने
के लिए वापस आया 13तो बादशाह ने उन्हें
सख़्त जवाब दिया। बुज़ुर्गों का मशवरा रद्द करके
14उसने उन्हें जवानों का जवाब दिया, "बेशक जो
जुआ मेरे बाप ने आप पर डाल दिया उसे उठाना
मुश्किल था, लेकिन मेरा जुआ और भी भारी
होगा। जहाँ मेरे बाप ने आपको कोड़े लगाए वहाँ
मैं आपकी बिच्छुओं से तादीब करूँगा!" 15यों रब
की मरज़ी पूरी हुई कि रहुबियाम लोगों की बात
नहीं मानेगा। क्योंकि अब रब की वह पेशगोई पूरी
हुई जो सैला के नबी अख़ियाह ने यरुबियाम बिन
नबात को बताई थी।

16जब इसराईलियों ने देखा कि बादशाह हमारी
बात सुनने के लिए तैयार नहीं है तो उन्होंने उससे
कहा, "न हमें दाऊद से मीरास में कुछ मिलेगा,
न यस्सी के बेटे से कुछ मिलने की उम्मीद है। ऐ
इसराईल, सब अपने अपने घर वापस चलें! ऐ
दाऊद, अब अपना घर ख़ुद सँभाल लो!" यह
कहकर वह सब चले गए।

17सिर्फ़ यहूदाह के क़बीले के शहरों में
रहनेवाले इसराईली रहुबियाम के तहत रहे।
18फिर रहुबियाम बादशाह ने बेगारियों पर मुक़र्रर
अफ़सर अदूनीराम को शिमाली क़बीलों के पास
भेज दिया, लेकिन उसे देखकर लोगों ने उसे
संगसार किया। तब रहुबियाम जल्दी से अपने
रथ पर सवार हुआ और भागकर यरूशलम पहुँच
गया।

19यों इसराईल के शिमाली क़बीले दाऊद के
शाही घराने से अलग हो गए और आज तक उस
की हुकूमत नहीं मानते।

रहुबियाम को इसराईल से लड़ने की इजाज़त नहीं मिलती

11 जब रहुबियाम यरूशलम पहुँचा तो
उसने यहूदाह और बिनयमीन के
क़बीलों के चीदा चीदा फ़ौजियों को इसराईल
से जंग करने के लिए बुलाया। 1,80,000 मर्द
जमा हुए ताकि रहुबियाम के लिए इसराईल पर
दुबारा क़ाबू पाएँ। 2लेकिन ऐन उस वक़्त मर्दे-
ख़ुदा समायाह को रब की तरफ़ से पैग़ाम मिला,
3"यहूदाह के बादशाह रहुबियाम बिन सुलेमान
और यहूदाह और बिनयमीन के तमाम अफ़राद
को इत्तला दे, 4'रब फ़रमाता है कि अपने भाइयों
से जंग मत करना। हर एक अपने अपने घर वापस
चला जाए, क्योंकि जो कुछ हुआ है वह मेरे हुक्म
पर हुआ है'।"

तब वह रब की सुनकर यरुबियाम से लड़ने से
बाज़ आए।

रहुबियाम की क़िलाबंदी

5रहुबियाम का दारुल-हुकूमत यरूशलम रहा।
यहूदाह में उसने ज़ैल के शहरों की क़िलाबंदी की :
6बैत-लहम, ऐताम, तक़ुअ, 7बैत-सूर, सोका,
अदुल्लाम, 8जात, मरेसा, ज़ीफ़, 9अदूराईम,
लकीस, अज़ीक़ा, 10सुरआ, ऐयालोन और
हबरून। यहूदाह और बिनयमीन के इन क़िलाबंद
शहरों को 11मज़बूत करके रहुबियाम ने हर शहर
पर अफ़सर मुक़र्रर किए। उनमें उसने ख़ुराक,
ज़ैतून के तेल और मै का ज़ख़ीरा कर लिया
12और साथ साथ उनमें ढालें और नेज़े भी रखे।
इस तरह उसने उन्हें बहुत मज़बूत बनाकर यहूदाह
और बिनयमीन पर अपनी हुकूमत महफ़ूज़ कर
ली।

इमाम और लावी यहूदाह में मुंतक़िल हो जाते हैं

13गो इमाम और लावी तमाम इसराईल में
बिखरे रहते थे तो भी उन्होंने रहुबियाम का साथ
दिया। 14अपनी चरागाहों और मिलकियत को

छोड़कर वह यहूदाह और यरूशलम में आबाद
हुए, क्योंकि यरुबियाम और उसके बेटों ने उन्हें
इमाम की हैसियत से रब की ख़िदमत करने से
रोक दिया था। 15उनकी जगह उसने अपने ज़ाती
इमाम मुक़र्रर किए जो ऊँची जगहों पर के मंदिरों
को सँभालते हुए बकरे के देवताओं और बछड़े के
बुतों की ख़िदमत करते थे। 16लावियों की तरह
तमाम क़बीलों के बहुत-से ऐसे लोग यहूदाह में
मुंतक़िल हुए जो पूरे दिल से रब इसराईल के ख़ुदा
के तालिब रहे थे। वह यरूशलम आए ताकि रब
अपने बापदादा के ख़ुदा को क़ुरबानियाँ पेश कर
सकें। 17यहूदाह की सलतनत ने ऐसे लोगों से
तक़वियत पाई। वह रहुबियाम बिन सुलेमान के
लिए तीन साल तक मज़बूती का सबब थे, क्योंकि
तीन साल तक यहूदाह दाऊद और सुलेमान के
अच्छे नमूने पर चलता रहा।

रहुबियाम का ख़ानदान

18रहुबियाम की शादी महलत से हुई जो
यरीमोत और अबीख़ैल की बेटी थी। यरीमोत
दाऊद का बेटा और अबीख़ैल इलियाब बिन
यस्सी की बेटी थी। 19महलत के तीन बेटे
यऊस, समरियाह और ज़हम पैदा हुए। 20बाद में
रहुबियाम की माका बिंत अबीसलूम से शादी हुई।
इस रिश्ते से चार बेटे अबियाह, अत्ती, ज़ीज़ा और
सलूमीत पैदा हुए। 21रहुबियाम की 18 बीवियाँ
और 60 दाश्ताएँ थीं। इनके कुल 28 बेटे और 60
बेटियाँ पैदा हुईं। लेकिन माका बिंत अबीसलूम
रहुबियाम को सबसे ज़्यादा प्यारी थी। 22उसने
माका के पहलौठे अबियाह को उसके भाइयों
का सरबराह बना दिया और मुक़र्रर किया कि
यह बेटा मेरे बाद बादशाह बनेगा। 23रहुबियाम
ने अपने बेटों से बड़ी समझदारी के साथ सुलूक
किया, क्योंकि उसने उन्हें अलग अलग करके
यहूदाह और बिनयमीन के पूरे क़बायली इलाक़े
और तमाम क़िलाबंद शहरों में बसा दिया। साथ
साथ वह उन्हें कसरत की ख़ुराक और बीवियाँ
मुहैया करता रहा।

मिसर की यहूदाह पर फ़तह

12 जब रहुबियाम की सलतनत ज़ोर
पकड़कर मज़बूत हो गई तो उसने
तमाम इसराईल समेत रब की शरीअत को तर्क
कर दिया। 2उनकी रब से बेवफ़ाई का नतीजा
यह निकला कि रहुबियाम की हुकूमत के पाँचवें
साल में मिसर के बादशाह सीसक़ ने यरूशलम
पर हमला किया। 3उस की फ़ौज बहुत बड़ी
थी। 1,200 रथों के अलावा 60,000 घुड़सवार
और लिबिया, सुक्कियों के मुल्क और एथोपिया
के बेशुमार प्यादा सिपाही थे। 4यके बाद दीगरे
यहूदाह के क़िलाबंद शहरों पर क़ब्ज़ा करते करते
मिसरी बादशाह यरूशलम तक पहुँच गया।

5तब समायाह नबी रहुबियाम और यहूदाह के
उन बुज़ुर्गों के पास आया जिन्होंने सीसक़ के आगे
आगे भागकर यरूशलम में पनाह ली थी। उसने
उनसे कहा, "रब फ़रमाता है, 'तुमने मुझे तर्क
कर दिया है, इसलिए अब मैं तुम्हें तर्क करके
सीसक़ के हवाले कर दूँगा'।" 6यह पैग़ाम सुनकर
रहुबियाम और यहूदाह के बुज़ुर्गों ने बड़ी इंकिसारी
के साथ तसलीम किया कि रब ही आदिल है।
7उनकी यह आजिज़ी देखकर रब ने समायाह से
कहा, "चूँकि उन्होंने बड़ी ख़ाकसारी से अपना
ग़लत रवैया तसलीम कर लिया है इसलिए मैं
उन्हें तबाह नहीं करूँगा बल्कि जल्द ही उन्हें रिहा
करूँगा। मेरा ग़ज़ब सीसक़ के ज़रीए यरूशलम
पर नाज़िल नहीं होगा। 8लेकिन वह इस क़ौम को
ज़रूर अपने ताबे कर रखेगा। तब वह समझ लेंगे
कि मेरी ख़िदमत करने और दीगर ममालिक के
बादशाहों की ख़िदमत करने में क्या फ़रक़ है।"

9मिसर के बादशाह सीसक़ ने यरूशलम पर
हमला करते वक़्त रब के घर और शाही महल के
तमाम ख़ज़ाने लूट लिए। सोने की वह ढालें भी
छीन ली गईं जो सुलेमान ने बनवाई थीं। 10इनकी
जगह रहुबियाम ने पीतल की ढालें बनवाईं और
उन्हें उन मुहाफ़िज़ों के अफ़सरों के सुपुर्द किया
जो शाही महल के दरवाज़े की पहरादारी करते

थे। 11जब भी बादशाह रब के घर में जाता तब मुहाफ़िज़ यह ढालें उठाकर साथ ले जाते। इसके बाद वह उन्हें पहरेदारों के कमरे में वापस ले जाते थे।

12चूँकि रहुबियाम ने बड़ी इंकिसारी से अपना ग़लत रवैया तसलीम किया इसलिए रब का उस पर ग़ज़ब ठंडा हो गया, और वह पूरे तौर पर तबाह न हुआ। दर-हक़ीक़त यहूदाह में अब तक कुछ न कुछ पाया जाता था जो अच्छा था।

रहुबियाम की मौत

13रहुबियाम की सलतनत ने दुबारा तक़वियत पाई, और यरूशलम में रहकर वह अपनी हुकूमत जारी रख सका। 41 साल की उम्र में वह तख़्तनशीन हुआ था, और वह 17 साल बादशाह रहा। उसका दारुल-हुकूमत यरूशलम था, वह शहर जिसे रब ने तमाम इसराईली क़बीलों में से चुन लिया ताकि उसमें अपना नाम क़ायम करे। उस की माँ नामा अम्मोनी थी। 14रहुबियाम ने अच्छी ज़िंदगी न गुज़ारी, क्योंकि वह पूरे दिल से रब का तालिब न रहा था।

15बाक़ी जो कुछ रहुबियाम की हुकूमत के दौरान शुरू से लेकर आख़िर तक हुआ उसका समायाह नबी और ग़ैबबीन इद्दू की तारीख़ी किताब में बयान है। वहाँ उसके नसबनामे का ज़िक्र भी है। दोनों बादशाहों रहुबियाम और यरुबियाम के जीते-जी उनके दरमियान जंग जारी रही। 16जब रहुबियाम मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में दफ़नाया गया जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है। फिर उसका बेटा अबियाह तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह अबियाह

13 अबियाह इसराईल के बादशाह यरुबियाम अव्वल की हुकूमत के 18वें साल में यहूदाह का बादशाह बना। 2वह तीन साल बादशाह रहा, और उसका दारुल-हुकूमत यरूशलम था। उस की माँ माका बिंत ऊरियेल जिबिया की रहनेवाली थी।

एक दिन अबियाह और यरुबियाम के दरमियान जंग छिड़ गई। 34,00,000 तजरबाकार फ़ौजियों को जमा करके अबियाह यरुबियाम से लड़ने के लिए निकला। यरुबियाम 8,00,000 तजरबाकार फ़ौजियों के साथ उसके मुक़ाबिल सफ़आरा हुआ। 4फिर अबियाह ने इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े के पहाड़ समरैम पर चढ़कर बुलंद आवाज़ से पुकारा,

"यरुबियाम और तमाम इसराईलियो, मेरी बात सुनें! 5क्या आपको नहीं मालूम कि रब इसराईल के ख़ुदा ने दाऊद से नमक का अबदी अहद बाँधकर उसे और उस की औलाद को हमेशा के लिए इसराईल की सलतनत अता की है? 6तो भी सुलेमान बिन दाऊद का मुलाज़िम यरुबियाम बिन नबात अपने मालिक के ख़िलाफ़ उठकर बाग़ी हो गया। 7उसके इर्दगिर्द कुछ बदमाश जमा हुए और रहुबियाम बिन सुलेमान की मुख़ालफ़त करने लगे। उस वक़्त वह जवान और नातजरबाकार था, इसलिए उनका सहीह मुक़ाबला न कर सका।

8और अब आप वाक़ई समझते हैं कि हम रब की बादशाही पर फ़तह पा सकते हैं, उसी बादशाही पर जो दाऊद की औलाद के हाथ में है। आप समझते हैं कि आपकी फ़ौज बहुत ही बड़ी है, और कि सोने के बछड़े आपके साथ हैं, वही बुत जो यरुबियाम ने आपकी पूजा के लिए तैयार कर रखे हैं। 9लेकिन आपने रब के इमामों यानी हारून की औलाद को लावियों समेत मुल्क से निकालकर उनकी जगह ऐसे पुजारी ख़िदमत के लिए मुक़र्रर किए जैसे बुतपरस्त क़ौमों में पाए जाते हैं। जो भी चाहता है कि उसे मख़सूस करके इमाम बनाया जाए उसे सिर्फ़ एक जवान बैल और सात मेंढे पेश करने की ज़रूरत है। यह इन नामनिहाद ख़ुदाओं का पुजारी बनने के लिए काफ़ी है।

10लेकिन जहाँ तक हमारा ताल्लुक़ है रब ही
हमारा ख़ुदा है। हमने उसे तर्क नहीं किया। सिर्फ़
हारून की औलाद ही हमारे इमाम हैं। सिर्फ़ यह
और लावी रब की ख़िदमत करते हैं। 11यही
सुबह-शाम उसे भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ और
ख़ुशबूदार बख़ूर पेश करते हैं। पाक मेज़ पर रब
के लिए मख़सूस रोटियाँ रखना और सोने के
शमादान के चराग़ जलाना इन्हीं की ज़िम्मेदारी
रही है। ग़रज़, हम रब अपने ख़ुदा की हिदायात
पर अमल करते हैं जबकि आपने उसे तर्क कर
दिया है। 12चुनाँचे अल्लाह हमारे साथ है। वही
हमारा राहनुमा है, और उसके इमाम तुरम बजाकर
आपसे लड़ने का एलान करेंगे। इसराईल के मर्दो,
ख़बरदार! रब अपने बापदादा के ख़ुदा से मत
लड़ना। यह जंग आप जीत ही नहीं सकते!”

13इतने में यरुबियाम ने चुपके से कुछ दस्तों
को यहूदाह की फ़ौज के पीछे भेज दिया ताकि
वहाँ ताक में बैठ जाएँ। यों उस की फ़ौज का
एक हिस्सा यहूदाह की फ़ौज के सामने और
दूसरा हिस्सा उसके पीछे था। 14अचानक यहूदाह
के फ़ौजियों को पता चला कि दुश्मन सामने
और पीछे से हम पर हमला कर रहा है। चीख़ते-
चिल्लाते हुए उन्होंने रब से मदद माँगी। इमामों ने
अपने तुरम बजाए 15और यहूदाह के मर्दों ने जंग
का नारा लगाया। जब उनकी आवाज़ें बुलंद हुईं
तो अल्लाह ने यरुबियाम और तमाम इसराईलियों
को शिकस्त देकर अबियाह और यहूदाह की फ़ौज
के सामने से भगा दिया। 16इसराईली फ़रार हुए,
लेकिन अल्लाह ने उन्हें यहूदाह के हवाले कर
दिया। 17अबियाह और उसके लोग उन्हें बड़ा
नुक़सान पहुँचा सके। इसराईल के 5,00,000
तजरबाकार फ़ौजी मैदाने-जंग में मारे गए। 18उस
वक़्त इसराईल की बड़ी बेइज़्ज़ती हुई जबकि
यहूदाह को तक़वियत मिली। क्योंकि वह रब
अपने बापदादा के ख़ुदा पर भरोसा रखते थे।

19अबियाह ने यरुबियाम का ताक़्क़ुब करते
करते उससे तीन शहर गिर्दो-नवाह की आबादियों
समेत छीन लिए, बैतेल, यसाना और इफ़रोन।
20अबियाह के जीते-जी यरुबियाम दुबारा
तक़वियत न पा सका, और थोड़ी देर के बाद रब
ने उसे मार दिया। 21उसके मुक़ाबले में अबियाह
की ताक़त बढ़ती गई। उस की 14 बीवियों के
22 बेटे और 16 बेटियाँ पैदा हुईं।

22बाक़ी जो कुछ अबियाह की हुकूमत के
दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया और कहा,
वह इद्दू नबी की किताब में बयान किया गया है।

14 जब अबियाह मरकर अपने बापदादा
से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस
हिस्से में दफ़नाया गया जो ‘दाऊद का शहर’
कहलाता है। फिर उसका बेटा आसा तख़्तनशीन
हुआ।

यहूदाह का बादशाह आसा

आसा की हुकूमत के तहत मुल्क में 10
साल तक अमनो-अमान क़ायम रहा। 2आसा वह
कुछ करता रहा जो रब उसके ख़ुदा के नज़दीक
अच्छा और ठीक था। 3उसने अजनबी माबूदों
की क़ुरबानगाहों को ऊँची जगहों के मंदिरों समेत
गिराकर देवताओं के लिए मख़सूस किए गए
सतूनों को टुकड़े टुकड़े कर दिया और यसीरत देवी
के खंबे काट डाले। 4साथ साथ उसने यहूदाह के
बाशिंदों को हिदायत दी कि वह रब अपने बापदादा
के ख़ुदा के तालिब हों और उसके अहकाम के ताबे
रहें। 5यहूदाह के तमाम शहरों से उसने बख़ूर की
क़ुरबानगाहें और ऊँची जगहों के मंदिर दूर कर
दिए। चुनाँचे उस की हुकूमत के दौरान बादशाही
में सुकून रहा।

6अमनो-अमान के इन सालों के दौरान आसा
यहूदाह में कई शहरों की क़िलाबंदी कर सका।
जंग का ख़तरा नहीं था, क्योंकि रब ने उसे सुकून
मुहैया किया। 7बादशाह ने यहूदाह के बाशिंदों
से कहा, “आएँ, हम इन शहरों की क़िलाबंदी
करें! हम इनके इर्दगिर्द फ़सीलें बनाकर उन्हें
बुर्जों, दरवाज़ों और कुंडों से मज़बूत करें। क्योंकि
अब तक मुल्क हमारे हाथ में है। चूँकि हम रब
अपने ख़ुदा के तालिब रहे हैं इसलिए उसने हमें

चारों तरफ़ सुलह-सलामती मुहैया की है।” चुनाँचे
क़िलाबंदी का काम शुरू हुआ बल्कि तकमील
तक पहुँच सका।

एथोपिया पर फ़तह

8आसा की फ़ौज में बड़ी ढालों और नेज़ों से
लैस यहूदाह के 3,00,000 अफ़राद थे। इसके
अलावा छोटी ढालों और कमानों से मुसल्लह
बिनयमीन के 2,80,000 अफ़राद थे। सब
तजरबाकार फ़ौजी थे।

9एक दिन एथोपिया के बादशाह ज़ारह ने
यहूदाह पर हमला किया। उसके बेशुमार फ़ौजी
और 300 रथ थे। बढ़ते बढ़ते वह मरेसा तक पहुँच
गया। 10आसा उसका मुक़ाबला करने के लिए
निकला। वादीए-सफ़ाता में दोनों फ़ौजें लड़ने के
लिए सफ़आरा हुईं। 11आसा ने रब अपने ख़ुदा
से इलतमास की, “ऐ रब, सिर्फ़ तू ही बेबसों को
ताक़तवरों के हमलों से महफ़ूज़ रख सकता है। ऐ
रब हमारे ख़ुदा, हमारी मदद कर! क्योंकि हम तुझ
पर भरोसा रखते हैं। तेरा ही नाम लेकर हम इस
बड़ी फ़ौज का मुक़ाबला करने के लिए निकले
हैं। ऐ रब, तू ही हमारा ख़ुदा है। ऐसा न होने दे
कि इनसान तेरी मरज़ी की ख़िलाफ़वरज़ी करने
में कामयाब हो जाए।”

12तब रब ने आसा और यहूदाह के देखते देखते
दुश्मन को शिकस्त दी। एथोपिया के फ़ौजी फ़रार
हुए, 13और आसा ने अपने फ़ौजियों के साथ
जिरार तक उनका ताक़्क़ुब किया। दुश्मन के इतने
अफ़राद हलाक हुए कि उस की फ़ौज बाद में
बहाल न हो सकी। रब ख़ुद और उस की फ़ौज ने
दुश्मन को तबाह कर दिया था। यहूदाह के मर्दों ने
बहुत-सा माल लूट लिया। 14वह जिरार के इर्दगिर्द
के शहरों पर भी क़ब्ज़ा करने में कामयाब हुए,
क्योंकि मक़ामी लोगों में रब की दहशत फैल गई
थी। नतीजे में इन शहरों से भी बहुत-सा माल
छीन लिया गया। 15इस मुहिम के दौरान उन्होंने
गल्लाबानों की ख़ैमागाहों पर भी हमला किया
और उनसे कसरत की भेड़-बकरियाँ और ऊँट
लूटकर अपने साथ यरूशलम ले आए।

आसा रब से अहद की तजदीद करता है

15 अल्लाह का रूह अज़रियाह बिन
ओदीद पर नाज़िल हुआ, 2और वह
आसा से मिलने के लिए निकला और कहा,
“ऐ आसा और यहूदाह और बिनयमीन के तमाम
बाशिंदो, मेरी बात सुनो! रब तुम्हारे साथ है अगर
तुम उसी के साथ रहो। अगर तुम उसके तालिब
रहो तो उसे पा लोगे। लेकिन जब भी तुम उसे तर्क
करो तो वह तुम्हीं को तर्क करेगा। 3लंबे अरसे तक
इसराईली हक़ीक़ी ख़ुदा के बग़ैर ज़िंदगी गुज़ारते
रहे। न कोई इमाम था जो उन्हें अल्लाह की राह
सिखाता, न शरीअत। 4लेकिन जब कभी वह
मुसीबत में फँस जाते तो दुबारा रब इसराईल के
ख़ुदा के पास लौट आते। वह उसे तलाश करते
और नतीजे में उसे पा लेते। 5उस ज़माने में सफ़र
करना ख़तरनाक होता था, क्योंकि अमनो-अमान
कहीं नहीं था। 6एक क़ौम दूसरी क़ौम के साथ
और एक शहर दूसरे के साथ लड़ता रहता था।
इसके पीछे अल्लाह का हाथ था। वही उन्हें हर
क़िस्म की मुसीबत में डालता रहा। 7लेकिन जहाँ
तक तुम्हारा ताल्लुक़ है, मज़बूत हो और हिम्मत
न हारो। अल्लाह ज़रूर तुम्हारी मेहनत का अज्र
देगा।”

8जब आसा ने ओदीद के बेटे अज़रियाह नबी
की पेशगोई सुनी तो उसका हौसला बढ़ गया, और
उसने अपने पूरे इलाक़े के घिनौने बुतों को दूर कर
दिया। इसमें यहूदाह और बिनयमीन के अलावा
इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े के वह शहर शामिल
थे जिन पर उसने क़ब्ज़ा कर लिया था। साथ
साथ उसने उस क़ुरबानगाह की मरम्मत करवाई
जो रब के घर के दरवाज़े के सामने थी। 9फिर
उसने यहूदाह और बिनयमीन के तमाम लोगों को
यरूशलम बुलाया। उन इसराईलियों को भी दावत
मिली जो इफ़राईम, मनस्सी और शमाऊन के
क़बायली इलाक़ों से मुंतक़िल होकर यहूदाह में

आबाद हुए थे। क्योंकि बेशुमार लोग यह देखकर
कि रब आसा का ख़ुदा उसके साथ है इसराईल
से निकलकर यहूदाह में जा बसे थे।
10आसा बादशाह की हुकूमत के 15वें साल
और तीसरे महीने में सब यरूशलम में जमा हुए।
11वहाँ उन्होंने लूटे हुए माल में से रब को 700
बैल और 7,000 भेड़-बकरियाँ क़ुरबान कर दीं।
12उन्होंने अहद बाँधा, 'हम पूरे दिलो-जान से रब
अपने बापदादा के ख़ुदा के तालिब रहेंगे। 13और
जो रब इसराईल के ख़ुदा का तालिब नहीं रहेगा
उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी, ख़ाह वह छोटा हो
या बड़ा, मर्द हो या औरत।' 14बुलंद आवाज़ से
उन्होंने क़सम खाकर रब से अपनी वफ़ादारी का
एलान किया। साथ साथ तुरम और नरसिंगे बजते
रहे। 15यह अहद तमाम यहूदाह के लिए ख़ुशी
का बाइस था, क्योंकि उन्होंने पूरे दिल से क़सम
खाकर उसे बाँधा था। और चूँकि वह पूरे दिल से
ख़ुदा के तालिब थे इसलिए वह उसे पा भी सके।
नतीजे में रब ने उन्हें चारों तरफ़ अमनो-अमान
मुहैया किया।
16आसा की माँ माका बादशाह की माँ होने
के बाइस बहुत असरो-रसूख़ रखती थी। लेकिन
आसा ने यह ओहदा ख़त्म कर दिया जब माँ ने
यसीरत देवी का घिनौना खंबा बनवा लिया। आसा
ने यह बुत कटवाकर टुकड़े टुकड़े कर दिया और
वादीए-क़िदरोन में जला दिया। 17अफ़सोस कि
उसने इसराईल की ऊँची जगहों के मंदिरों को
दूर न किया। तो भी आसा अपने जीते-जी पूरे
दिल से रब का वफ़ादार रहा। 18सोना-चाँदी और
बाक़ी जितनी चीज़ें उसके बाप और उसने रब के
लिए मख़सूस की थीं उन सबको वह रब के घर में
लाया।
19आसा की हुकूमत के 35वें साल तक जंग
दुबारा न छिड़ी।

शाम के साथ आसा का मुआहदा

16 आसा की हुकूमत के 36वें साल में
इसराईल के बादशाह बाशा ने यहूदाह
पर हमला करके रामा शहर की क़िलाबंदी की।
मक़सद यह था कि न कोई यहूदाह के मुल्क में
दाख़िल हो सके, न कोई वहाँ से निकल सके।
2जवाब में आसा ने शाम के बादशाह बिन-
हदद के पास वफ़्द भेजा जिसका दारुल-हुकूमत
दमिश्क़ था। उसने रब के घर और शाही महल
के ख़ज़ानों की सोना-चाँदी वफ़्द के सुपुर्द करके
दमिश्क़ के बादशाह को पैग़ाम भेजा, 3"मेरा
आपके साथ अहद है जिस तरह मेरे बाप का
आपके बाप के साथ अहद था। गुज़ारिश है कि
आप सोने-चाँदी का यह तोहफ़ा क़बूल करके
इसराईल के बादशाह बाशा के साथ अपना अहद
मनसूख़ कर दें ताकि वह मेरे मुल्क से निकल
जाए।"
4बिन-हदद मुत्तफ़िक़ हुआ। उसने अपने फ़ौजी
अफ़सरों को इसराईल के शहरों पर हमला करने
के लिए भेज दिया तो उन्होंने ऐय्यून, दान,
अबील-मायम और नफ़ताली के उन तमाम शहरों
पर क़ब्ज़ा कर लिया जिनमें शाही गोदाम थे।
5जब बाशा को इसकी ख़बर मिली तो उसने रामा
की क़िलाबंदी करने से बाज़ आकर अपनी यह
मुहिम छोड़ दी।
6फिर आसा बादशाह ने यहूदाह के तमाम मर्दों
की भरती करके उन्हें रामा भेज दिया ताकि वह
उन तमाम पत्थरों और शहतीरों को उठाकर ले
जाएँ जिनसे बाशा बादशाह रामा की क़िलाबंदी
करना चाहता था। इस सामान से आसा ने जिबा
और मिसफ़ाह शहरों की क़िलाबंदी की।

आसा के आख़िरी साल और मौत

7उस वक़्त हनानी ग़ैबबीन यहूदाह के बादशाह
आसा को मिलने आया। उसने कहा, "अफ़सोस
कि आपने रब अपने ख़ुदा पर एतमाद न किया
बल्कि अराम के बादशाह पर, क्योंकि इसका बुरा
नतीजा निकला है। रब शाम के बादशाह की फ़ौज
को आपके हवाले करने के लिए तैयार था, लेकिन
अब यह मौक़ा जाता रहा है। 8क्या आप भूल
गए हैं कि एथोपिया और लिबिया की कितनी

बड़ी फ़ौज आपसे लड़ने आई थी? उनके साथ
कसरत के रथ और घुड़सवार भी थे। लेकिन उस
वक़्त आपने रब पर एतमाद किया, और जवाब
में उसने उन्हें आपके हवाले कर दिया। 9रब तो
अपनी नज़र पूरी रूए-ज़मीन पर दौड़ाता रहता है
ताकि उनकी तक़वियत करे जो पूरी वफ़ादारी से
उससे लिपटे रहते हैं। आपकी अहमक़ाना हरकत
की वजह से आपको अब से मुतवातिर जंगें तंग
करती रहेंगी।” 10यह सुनकर आसा ग़ुस्से से
लाल-पीला हो गया। आपे से बाहर होकर उसने
हुक्म दिया कि नबी को गिरिफ़्तार करके उसके
पाँव काठ में ठोंको। उस वक़्त से आसा अपनी
क़ौम के कई लोगों पर ज़ुल्म करने लगा।

11बाक़ी जो कुछ शुरू से लेकर आख़िर तक
आसा की हुकूमत के दौरान हुआ वह ‘शाहाने-
यहूदाहो-इसराईल की तारीख़’ की किताब में
बयान किया गया है। 12हुकूमत के 39वें साल
में उसके पाँवों को बीमारी लग गई। गो उस की
बुरी हालत थी तो भी उसने रब को तलाश न किया
बल्कि सिर्फ़ डाक्टरों के पीछे पड़ गया। 13हुकूमत
के 41वें साल में आसा मरकर अपने बापदादा
से जा मिला। 14उसने यरूशलम के उस हिस्से
में जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है अपने लिए
चट्टान में क़ब्र तराशी थी। अब उसे इसमें दफ़न
किया गया। जनाज़े के वक़्त लोगों ने लाश को
एक पलंग पर लिटा दिया जो बलसान के तेल
और मुख़्तलिफ़ क़िस्म के ख़ुशबूदार मरहमों से
ढाँपा गया था। फिर उसके एहतराम में लकड़ी
का ज़बरदस्त ढेर जलाया गया।

यहूदाह का बादशाह यहूसफ़त

17 आसा के बाद उसका बेटा यहू-
सफ़त तख़्तनशीन हुआ। उसने
यहूदाह की ताक़त बढ़ाई ताकि वह इसराईल
का मुक़ाबला कर सके। 2यहूदाह के तमाम
क़िलाबंद शहरों में उसने दस्ते बिठाए। यहूदाह
के पूरे क़बायली इलाक़े में उसने चौकियाँ तैयार
कर रखीं और इसी तरह इफ़राईम के उन शहरों में
भी जो उसके बाप आसा ने इसराईल से छीन लिए
थे। 3रब यहूसफ़त के साथ था, क्योंकि वह दाऊद
के नमूने पर चलता था और बाल देवताओं के पीछे
न लगा। 4इसराईल के बादशाहों के बरअक्स वह
अपने बाप के ख़ुदा का तालिब रहा और उसके
अहकाम पर अमल करता रहा। 5इसी लिए रब
ने यहूदाह पर यहूसफ़त की हुकूमत को ताक़तवर
बना दिया। लोग तमाम यहूदाह से आकर उसे
तोहफ़े देते रहे, और उसे बड़ी दौलत और इज़्ज़त
मिली। 6रब की राहों पर चलते चलते उसे बड़ा
हौसला हुआ और नतीजे में उसने ऊँची जगहों के
मंदिरों और यसीरत देवी के खंबों को यहूदाह से
दूर कर दिया।

7अपनी हुकूमत के तीसरे साल के दौरान
यहूसफ़त ने अपने मुलाज़िमों को यहूदाह के
तमाम शहरों में भेजा ताकि वह लोगों को
रब की शरीअत की तालीम दें। इन अफ़सरों
में बिन-ख़ैल, अबदियाह, ज़करियाह, नतनि-
येल और मीकायाह शामिल थे। 8उनके साथ
9 लावी बनाम समायाह, नतनियाह, ज़बदियाह,
असाहेल, समीरामोत, यहूनतन, अदूनियाह,
तूबियाह, और तूब-अदूनियाह थे। इमामों की
तरफ़ से इलीसमा और यहूराम साथ गए। 9रब
की शरीअत की किताब अपने साथ लेकर इन
आदमियों ने यहूदाह में शहर बशहर जाकर लोगों
को तालीम दी।

10उस वक़्त यहूदाह के पड़ोसी ममालिक पर
रब का ख़ौफ़ छा गया, और उन्होंने यहूसफ़त
से जंग करने की जुर्रत न की। 11ख़राज के
तौर पर उसे फ़िलिस्तियों से हदिये और चाँदी
मिलती थी, जबकि अरब उसे 7,700 मेंढे और
7,700 बकरे दिया करते थे। 12यों यहूसफ़त
की ताक़त बढ़ती गई। यहूदाह की कई जगहों
पर उसने क़िले और शाही गोदाम के शहर तामीर
किए। 13साथ साथ उसने यहूदाह के शहरों में
ज़रूरियाते-ज़िंदगी के बड़े ज़ख़ीरे जमा किए और
यरूशलम में तजरबाकार फ़ौजी रखे।

14यहूसफ़त की फ़ौज को कुंबों के मुता-
बिक़ तरतीब दिया गया था। यहूदाह के क़बीले
का कमाँडर अदना था। उसके तहत 3,00,000
तजरबाकार फ़ौजी थे। 15उसके अलावा यूहनान
था जिसके तहत 2,80,000 अफ़राद थे
16और अमसियाह बिन ज़िकरी जिसके तहत
2,00,000 अफ़राद थे। अमसियाह ने अपने
आपको रज़ाकाराना तौर पर रब की ख़िदमत
के लिए वक़्फ़ कर दिया था। 17बिनयमीन के
क़बीले का कमाँडर इलियदा था जो ज़बरदस्त
फ़ौजी था। उसके तहत कमान और ढालों से
लैस 2,00,000 फ़ौजी थे। 18उसके अलावा
यहूज़बद था जिसके 1,80,000 मुसल्लह
आदमी थे।

19सब फ़ौज में बादशाह की ख़िदमत सरंजाम
देते थे। उनमें वह फ़ौजी नहीं शुमार किए जाते थे
जिन्हें बादशाह ने पूरे यहूदाह के क़िलाबंद शहरों
में रखा हुआ था।

झूटे नबियों और मीकायाह का मुक़ाबला

18 ग़रज़ यहूसफ़त को बड़ी दौलत और
इज़्ज़त हासिल हुई। उसने अपने
पहलौठे की शादी इसराईल के बादशाह अख़ियब
की बेटी से कराई।

2कुछ साल के बाद वह अख़ियब से मिलने
के लिए सामरिया गया। इसराईल के बादशाह
ने यहूसफ़त और उसके साथियों के लिए बहुत-
सी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल ज़बह किए।
फिर उसने यहूसफ़त को अपने साथ रामात-
जिलियाद से जंग करने पर उकसाया। 3अख़ियब
ने यहूसफ़त से सवाल किया, “क्या आप मेरे
साथ रामात-जिलियाद जाएंगे ताकि उस पर
क़ब्ज़ा करें?” उसने जवाब दिया, “जी ज़रूर,
हम तो भाई हैं, मेरी क़ौम को अपनी क़ौम
समझें! हम आपके साथ मिलकर लड़ने के लिए
निकलेंगे। 4लेकिन मेहरबानी करके पहले रब की
मरज़ी मालूम कर लें।”

5इसराईल के बादशाह ने 400 नबियों को
बुलाकर उनसे पूछा, “क्या हम रामात-जिलियाद
पर हमला करें या मैं इस इरादे से बाज़ रहूँ?”
नबियों ने जवाब दिया, “जी, करें, क्योंकि
अल्लाह उसे बादशाह के हवाले कर देगा।”

6लेकिन यहूसफ़त मुतमइन न हुआ। उसने
पूछा, “क्या यहाँ रब का कोई नबी नहीं जिससे
हम दरियाफ़्त कर सकें?” 7इसराईल का
बादशाह बोला, “हाँ, एक तो है जिसके ज़रीए
हम रब की मरज़ी मालूम कर सकते हैं। लेकिन
मैं उससे नफ़रत करता हूँ, क्योंकि वह मेरे बारे में
कभी भी अच्छी पेशगोई नहीं करता। वह हमेशा
बुरी पेशगोइयाँ सुनाता है। उसका नाम मीकायाह
बिन इमला है।” यहूसफ़त ने एतराज़ किया,
“बादशाह ऐसी बात न कहे!” 8तब इसराईल
के बादशाह ने किसी मुलाज़िम को बुलाकर हुक्म
दिया, “मीकायाह बिन इमला को फ़ौरन हमारे
पास पहुँचा देना!”

9अख़ियब और यहूसफ़त अपने शाही लिबास
पहने हुए सामरिया के दरवाज़े के क़रीब अपने
अपने तख़्त पर बैठे थे। यह ऐसी खुली जगह थी
जहाँ अनाज गाहा जाता था। तमाम 400 नबी
वहाँ उनके सामने अपनी पेशगोइयाँ पेश कर रहे
थे। 10एक नबी बनाम सिदक़ियाह बिन कनाना
ने अपने लिए लोहे के सींग बनाकर एलान किया,
“रब फ़रमाता है कि इन सींगों से तू शाम के
फ़ौजियों को मार मारकर हलाक कर देगा।”

11दूसरे नबी भी इस क़िस्म की पेशगोइयाँ कर
रहे थे, “रामात-जिलियाद पर हमला करें, क्योंकि
आप ज़रूर कामयाब हो जाएंगे। रब शहर को
आपके हवाले कर देगा।”

12जिस मुलाज़िम को मीकायाह को बुलाने के
लिए भेजा गया था उसने रास्ते में उसे समझाया,
“देखें, बाक़ी तमाम नबी मिलकर कह रहे हैं कि
बादशाह को कामयाबी हासिल होगी। आप भी
ऐसी ही बातें करें, आप भी फ़तह की पेशगोई
करें!” 13लेकिन मीकायाह ने एतराज़ किया,

“रब की हयात की क़सम, मैं बादशाह को सिर्फ़
वही कुछ बताऊँगा जो मेरा ख़ुदा फ़रमाएगा।”
14जब मीकायाह अख़ियब के सामने खड़ा
हुआ तो बादशाह ने पूछा, “मीकायाह, क्या हम
रामात-जिलियाद पर हमला करें या मैं इस इरादे
से बाज़ रहूँ?”
मीकायाह ने जवाब दिया, “उस पर हमला
करें, क्योंकि उन्हें आपके हवाले कर दिया
जाएगा, और आपको कामयाबी हासिल होगी।”
15बादशाह नाराज़ हुआ, “मुझे कितनी दफ़ा
आपको समझाना पड़ेगा कि आप क़सम खाकर
मुझे रब के नाम में सिर्फ़ वह कुछ सुनाएँ जो
हक़ीक़त है।”
16तब मीकायाह ने जवाब में कहा, “मुझे
तमाम इसराईल गल्लाबान से महरूम भेड़-
बकरियों की तरह पहाड़ों पर बिखरा हुआ नज़र
आया। फिर रब मुझसे हमकलाम हुआ, ‘इनका
कोई मालिक नहीं है। हर एक सलामती से अपने
घर वापस चला जाए’।”
17इसराईल के बादशाह ने यहूसफ़त से कहा,
“लो, क्या मैंने आपको नहीं बताया था कि यह
शख़्स हमेशा मेरे बारे में बुरी पेशगोइयाँ करता
है?”
18लेकिन मीकायाह ने अपनी बात जारी रखी,
“रब का फ़रमान सुनें! मैंने रब को उसके तख़्त
पर बैठे देखा। आसमान की पूरी फ़ौज उसके
दाएँ और बाएँ हाथ खड़ी थी। 19रब ने पूछा,
‘कौन इसराईल के बादशाह अख़ियब को रामात-
जिलियाद पर हमला करने पर उकसाएगा ताकि
वह वहाँ जाकर मर जाए?’ एक ने यह मशवरा
दिया, दूसरे ने वह। 20आख़िरकार एक रूह रब
के सामने खड़ी हुई और कहने लगी, ‘मैं उसे
उकसाऊँगी’। रब ने सवाल किया, ‘किस तरह?’
21रूह ने जवाब दिया, ‘मैं निकलकर उसके तमाम
नबियों पर यों क़ाबू पाऊँगी कि वह झूट ही
बोलेंगे।’ रब ने फ़रमाया, ‘तू कामयाब होगी। जा
और यों ही कर!’ 22ऐ बादशाह, रब ने आप पर
आफ़त लाने का फ़ैसला कर लिया है, इसलिए
उसने झूटी रूह को आपके इन तमाम नबियों के
मुँह में डाल दिया है।”
23तब सिदक़ियाह बिन कनाना ने आगे बढ़कर
मीकायाह के मुँह पर थप्पड़ मारा और बोला,
“रब का रूह किस तरह मुझसे निकल गया ताकि
तुझसे बात करे?” 24मीकायाह ने जवाब दिया,
“जिस दिन आप कभी इस कमरे में, कभी उसमें
खिसककर छुपने की कोशिश करेंगे उस दिन
आपको पता चलेगा।”
25तब अख़ियब बादशाह ने हुक्म दिया,
“मीकायाह को शहर पर मुक़र्रर अफ़सर अमून
और मेरे बेटे युआस के पास वापस भेज दो!
26उन्हें बता देना, ‘इस आदमी को जेल में
डालकर मेरे सहीह-सलामत वापस आने तक कम
से कम रोटी और पानी दिया करें’।” 27मीकायाह
बोला, “अगर आप सहीह-सलामत वापस आएँ
तो मतलब होगा कि रब ने मेरी मारिफ़त बात नहीं
की।” फिर वह साथ खड़े लोगों से मुख़ातिब हुआ,
“तमाम लोग ध्यान दें!”

अख़ियब रामात के क़रीब मर जाता है

28इसके बाद इसराईल का बादशाह
अख़ियब और यहूदाह का बादशाह यहू-
सफ़त मिलकर रामात-जिलियाद पर हमला करने
के लिए रवाना हुए। 29जंग से पहले अख़ियब ने
यहूसफ़त से कहा, “मैं अपना भेस बदलकर
मैदाने-जंग में जाऊँगा। लेकिन आप अपना
शाही लिबास न उतारें।” चुनाँचे इसराईल का
बादशाह अपना भेस बदलकर मैदाने-जंग में
आया। 30शाम के बादशाह ने रथों पर मुक़र्रर
अपने अफ़सरों को हुक्म दिया था, “सिर्फ़ और
सिर्फ़ बादशाह पर हमला करें। किसी और से मत
लड़ना, ख़ाह वह छोटा हो या बड़ा।”
31जब लड़ाई छिड़ गई तो रथों के अफ़सर
यहूसफ़त पर टूट पड़े, क्योंकि उन्होंने कहा, “यही
इसराईल का बादशाह है!” लेकिन जब यहूसफ़त
मदद के लिए चिल्ला उठा तो रब ने उस की सुनी।
उसने उनका ध्यान यहूसफ़त से खींच लिया,

32क्योंकि जब दुश्मनों को मालूम हुआ कि यह
अख़ियब बादशाह नहीं है तो वह उसका ताक़्क़ुब
करने से बाज़ आए। 33लेकिन किसी ने ख़ास
निशाना बाँधे बग़ैर अपना तीर चलाया तो वह
अख़ियब को ऐसी जगह जा लगा जहाँ ज़िरा-
बकतर का जोड़ था। बादशाह ने अपने रथबान को
हुक्म दिया, "रथ को मोड़कर मुझे मैदाने-जंग से
बाहर ले जाओ! मुझे चोट लग गई है।" 34लेकिन
चूँकि उस पूरे दिन शदीद क़िस्म की लड़ाई जारी
रही, इसलिए बादशाह अपने रथ में टेक लगाकर
दुश्मन के मुक़ाबिल खड़ा रहा। जब सूरज ग़ुरूब
होने लगा तो वह मर गया।

19 लेकिन यहूदाह का बादशाह यहू-
सफ़त सहीह-सलामत यरूश-
लम और अपने महल में पहुँचा। 2उस वक़्त
याहू बिन हनानी जो ग़ैबबीन था उसे मिलने के
लिए निकला और बादशाह से कहा, "क्या यह
ठीक है कि आप शरीर की मदद करें? आप क्यों
उनको प्यार करते हैं जो रब से नफ़रत करते हैं?
यह देखकर रब का ग़ज़ब आप पर नाज़िल हुआ
है। 3तो भी आपमें अच्छी बातें भी पाई जाती
हैं। आपने यसीरत देवी के खंबों को मुल्क से दूर
करके अल्लाह के तालिब होने का पक्का इरादा
कर रखा है।"

यहूसफ़त क़ानूनी काररवाई की इसलाह करता है

4इसके बाद यहूसफ़त यरूशलम में रहा।
लेकिन एक दिन वह दुबारा निकला। इस बार
उसने जुनूब में बैर-सबा से लेकर शिमाल में
इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े तक पूरे यहूदाह का
दौरा किया। हर जगह वह लोगों को रब उनके
बापदादा के ख़ुदा के पास वापस लाया। 5उसने
यहूदाह के तमाम क़िलाबंद शहरों में क़ाज़ी भी
मुक़र्रर किए। 6उन्हें समझाते हुए उसने कहा,
"अपनी रविश पर ध्यान दें! याद रहे कि आप
इनसान के जवाबदेह नहीं हैं बल्कि रब के।
वही आपके साथ होगा जब आप फ़ैसले करेंगे।
7चुनाँचे अल्लाह का ख़ौफ़ मानकर एहतियात
से लोगों का इनसाफ़ करें। क्योंकि जहाँ रब
हमारा ख़ुदा है वहाँ बेइनसाफ़ी, जानिबदारी और
रिश्वतख़ोरी हो ही नहीं सकती।"

8यरूशलम में यहूसफ़त ने कुछ लावियों,
इमामों और ख़ानदानी सरपरस्तों को इन-
साफ़ करने की ज़िम्मेदारी दी। रब की शरीअत से
मुताल्लिक़ किसी मामले या यरूशलम के बाशिंदों
के दरमियान झगड़े की सूरत में उन्हें फ़ैसला करना
था। 9यहूसफ़त ने उन्हें समझाते हुए कहा, "रब
का ख़ौफ़ मानकर अपनी ख़िदमत को वफ़ादारी
और पूरे दिल से सरंजाम दें। 10आपके भाई
शहरों से आकर आपके सामने अपने झगड़े पेश
करेंगे ताकि आप उनका फ़ैसला करें। आपको
क़त्ल के मुक़दमों का फ़ैसला करना पड़ेगा। ऐसे
मामलात भी होंगे जो रब की शरीअत, किसी
हुक्म, हिदायत या उसूल से ताल्लुक़ रखेंगे। जो
भी हो, लाज़िम है कि आप उन्हें समझाएँ ताकि
वह रब का गुनाह न करें। वरना उसका ग़ज़ब आप
और आपके भाइयों पर नाज़िल होगा। अगर आप
यह करें तो आप बेक़ुसूर रहेंगे। 11इमामे-आज़म
अमरियाह रब की शरीअत से ताल्लुक़ रखनेवाले
मामलात का हतमी फ़ैसला करेगा। जो मुक़दमे
बादशाह से ताल्लुक़ रखते हैं उनका हतमी फ़ैसला
यहूदाह के क़बीले का सरबराह ज़बदियाह बिन
इसमाईल करेगा। अदालत का इंतज़ाम चलाने में
लावी आपकी मदद करेंगे। अब हौसला रखकर
अपनी ख़िदमत सरंजाम दें। जो भी सहीह काम
करेगा उसके साथ रब होगा।"

अम्मोनियों का यहूदाह पर हमला

20 कुछ देर के बाद मोआबी, अम्मो-
नी और कुछ मऊनी यहूसफ़त से जंग
करने के लिए निकले। 2एक क़ासिद ने आकर
बादशाह को इत्तला दी, "मुल्के-अदोम से एक
बड़ी फ़ौज आपसे लड़ने के लिए आ रही है। वह
बहीराए-मुरदार के दूसरे किनारे से बढ़ती बढ़ती

इस वक़्त हससून-तमर पहुँच चुकी है” (हससून
ऐन-जदी का दूसरा नाम है)।

3यह सुनकर यहूसफ़त घबरा गया। उसने रब
से राहनुमाई माँगने का फ़ैसला करके एलान
किया कि तमाम यहूदाह रोज़ा रखे। 4यहूदाह
के तमाम शहरों से लोग यरूशलम आए ताकि
मिलकर मदद के लिए रब से दुआ माँगें। 5वह रब
के घर के नए सहन में जमा हुए और यहूसफ़त ने
सामने आकर 6दुआ की,

“ऐ रब, हमारे बापदादा के ख़ुदा! तू ही
आसमान पर तख़्तनशीन ख़ुदा है, और तू ही
दुनिया के तमाम ममालिक पर हुकूमत करता
है। तेरे हाथ में क़ुदरत और ताक़त है। कोई भी
तेरा मुक़ाबला नहीं कर सकता। 7ऐ हमारे ख़ुदा,
तूने इस मुल्क के पुराने बाशिंदों को अपनी क़ौम
इसराईल के आगे से निकाल दिया। इब्राहीम तेरा
दोस्त था, और उस की औलाद को तूने यह मुल्क
हमेशा के लिए दे दिया। 8इसमें तेरी क़ौम आबाद
हुई। तेरे नाम की ताज़ीम में मक़दिस बनाकर
उन्होंने कहा, 9‘जब भी आफ़त हम पर आए तो
हम यहाँ तेरे हुज़ूर आ सकेंगे, चाहे जंग, वबा,
काल या कोई और सज़ा हो। अगर हम उस वक़्त
इस घर के सामने खड़े होकर मदद के लिए तुझे
पुकारें तो तू हमारी सुनकर हमें बचाएगा, क्योंकि
इस इमारत पर तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है।’

10अब अम्मोन, मोआब और पहाड़ी मुल्क
सईर की हरकतों को देख! जब इसराईल मिसर
से निकला तो तूने उसे इन क़ौमों पर हमला करने
और इनके इलाक़े में से गुज़रने की इजाज़त न दी।
इसराईल को मुतबादिल रास्ता इख़्तियार करना
पड़ा, क्योंकि उसे इन्हें हलाक करने की इजाज़त
न मिली। 11अब ध्यान दे कि यह बदले में क्या कर
रहे हैं। यह हमें उस मौरूसी ज़मीन से निकालना
चाहते हैं जो तूने हमें दी थी। 12ऐ हमारे ख़ुदा,
क्या तू उनकी अदालत नहीं करेगा? हम तो इस
बड़ी फ़ौज के मुक़ाबले में बेबस हैं। इसके हमले
से बचने का रास्ता हमें नज़र नहीं आता, लेकिन
हमारी आँखें मदद के लिए तुझ पर लगी हैं।”

13यहूदाह के तमाम मर्द, औरतें और बच्चे वहाँ
रब के हुज़ूर खड़े रहे। 14तब रब का रूह एक
लावी बनाम यहज़ियेल पर नाज़िल हुआ जब
वह जमात के दरमियान खड़ा था। यह आदमी
आसफ़ के ख़ानदान का था, और उसका पूरा
नाम यहज़ियेल बिन ज़करियाह बिन बिनायाह
बिन यइयेल बिन मत्तनियाह था। 15उसने कहा,
“यहूदाह और यरूशलम के लोगो, मेरी बात
सुनें! ऐ बादशाह, आप भी इस पर ध्यान दें।
रब फ़रमाता है कि डरो मत, और इस बड़ी
फ़ौज को देखकर मत घबराना। क्योंकि यह जंग
तुम्हारा नहीं बल्कि मेरा मामला है। 16कल उनके
मुक़ाबले के लिए निकलो। उस वक़्त वह दर्राए-
सीस से होकर तुम्हारी तरफ़ बढ़ रहे होंगे। तुम्हारा
उनसे मुक़ाबला उस वादी के सिरे पर होगा जहाँ
यरुएल का रेगिस्तान शुरू होता है। 17लेकिन
तुम्हें लड़ने की ज़रूरत नहीं होगी। बस दुश्मन के
आमने-सामने खड़े होकर रुक जाओ और देखो
कि रब किस तरह तुम्हें छुटकारा देगा। लिहाज़ा
मत डरो, ऐ यहूदाह और यरूशलम, और दहशत
मत खाओ। कल उनका सामना करने के लिए
निकलो, क्योंकि रब तुम्हारे साथ होगा।”

18यह सुनकर यहूसफ़त मुँह के बल झुक गया।
यहूदाह और यरूशलम के तमाम लोगों ने भी औंधे
मुँह झुककर रब की परस्तिश की। 19फिर क़िहात
और क़ोरह के ख़ानदानों के कुछ लावी खड़े होकर
बुलंद आवाज़ से रब इसराईल के ख़ुदा की हम्दो-
सना करने लगे।

अम्मोनियों पर फ़तह

20अगले दिन सुबह-सवेरे यहूदाह की फ़ौज
तक़ुअ के रेगिस्तान के लिए रवाना हुई। निकलते
वक़्त यहूसफ़त ने उनके सामने खड़े होकर कहा,
“यहूदाह और यरूशलम के मर्दो, मेरी बात सुनें!
रब अपने ख़ुदा पर भरोसा रखें तो आप क़ायम
रहेंगे। उसके नबियों की बातों का यक़ीन करें
तो आपको कामयाबी हासिल होगी।” 21लोगों
से मशवरा करके यहूसफ़त ने कुछ मर्दों को रब

की ताज़ीम में गीत गाने के लिए मुक़र्रर किया।
मुक़द्दस लिबास पहने हुए वह फ़ौज के आगे आगे
चलकर हम्दो-सना का यह गीत गाते रहे, "रब की
सताइश करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी
है।"

22उस वक़्त रब हमलाआवर फ़ौज के
मुख़ालिफ़ों को खड़ा कर चुका था। अब जब
यहूदाह के मर्द हम्द के गीत गाने लगे तो वह
ताक में से निकलकर बढ़ती हुई फ़ौज पर टूट पड़े
और उसे शिकस्त दी। 23फिर अम्मोनियों और
मोआबियों ने मिलकर पहाड़ी मुल्क सईर के मर्दों
पर हमला किया ताकि उन्हें मुकम्मल तौर पर
ख़त्म कर दें। जब यह हलाक हुए तो अम्मोनी और
मोआबी एक दूसरे को मौत के घाट उतारने लगे।
24यहूदाह के फ़ौजियों को इसका इल्म नहीं था।
चलते चलते वह उस मक़ाम तक पहुँच गए जहाँ
से रेगिस्तान नज़र आता है। वहाँ वह दुश्मन को
तलाश करने लगे, लेकिन लाशें ही लाशें ज़मीन
पर बिखरी नज़र आईं। एक भी दुश्मन नहीं बचा
था। 25यहूसफ़त और उसके लोगों के लिए सिर्फ़
दुश्मन को लूटने का काम बाक़ी रह गया था।
कसरत के जानवर, क़िस्म क़िस्म का सामान,
कपड़े और कई क़ीमती चीज़ें थीं। इतना सामान
था कि वह उसे एक वक़्त में उठाकर अपने साथ
ले जा नहीं सकते थे। सारा माल जमा करने में
तीन दिन लगे।

26चौथे दिन वह क़रीब की एक वादी में जमा
हुए ताकि रब की तारीफ़ करें। उस वक़्त से
वादी का नाम 'तारीफ़ की वादी' पड़ गया।
27इसके बाद यहूदाह और यरूशलम के तमाम
मर्द यहूसफ़त की राहनुमाई में ख़ुशी मनाते हुए
यरूशलम वापस आए। क्योंकि रब ने उन्हें दुश्मन
की शिकस्त से ख़ुशी का सुनहरा मौक़ा अता
किया था। 28सितार, सरोद और तुरम बजाते हुए
वह यरूशलम में दाख़िल हुए और रब के घर के
पास जा पहुँचे। 29जब इर्दगिर्द के ममालिक ने
सुना कि किस तरह रब इसराईल के दुश्मनों से
लड़ा है तो उनमें अल्लाह की दहशत फैल गई।
30उस वक़्त से यहूसफ़त सुकून से हुकूमत कर
सका, क्योंकि अल्लाह ने उसे चारों तरफ़ के
ममालिक के हमलों से महफ़ूज़ रखा था।

यहूसफ़त के आख़िरी साल और मौत

31यहूसफ़त 35 साल की उम्र में बादशाह बना,
और वह यरूशलम में रहकर 25 साल हुकूमत
करता रहा। उस की माँ अज़ूबा बिंत सिलही
थी। 32वह अपने बाप आसा के नमूने पर चलता
और वह कुछ करता रहा जो रब को पसंद था।
33लेकिन उसने भी ऊँचे मक़ामों के मंदिरों को
ख़त्म न किया, और लोगों के दिल अपने बापदादा
के ख़ुदा की तरफ़ मायल न हुए।

34बाक़ी जो कुछ यहूसफ़त की हुकूमत के
दौरान हुआ वह शुरू से लेकर आख़िर तक याहू
बिन हनानी की तारीख़ में बयान किया गया है।
बाद में सब कुछ 'शाहाने-इसराईल की तारीख़'
की किताब में दर्ज किया गया।

35बाद में यहूदाह के बादशाह यहूसफ़त ने
इसराईल के बादशाह अख़ज़ियाह से इत्तहाद
किया, गो उसका रवैया बेदीनी का था। 36दोनों ने
मिलकर तिजारती जहाज़ों का ऐसा बेड़ा बनवाया
जो तरसीस तक पहुँच सके। जब यह जहाज़
बंदरगाह अस्यून-जाबर में तैयार हुए 37तो मरेसा
का रहनेवाला इलियज़र बिन दूदावाहू ने यहूसफ़त
के ख़िलाफ़ पेशगोई की, "चूँकि आप अख़ज़ियाह
के साथ मुत्तहिद हो गए हैं इसलिए रब आपका
काम तबाह कर देगा!" और वाक़ई, यह जहाज़
कभी अपनी मनज़िले-मक़सूद तरसीस तक पहुँच
न सके, क्योंकि वह पहले ही टुकड़े टुकड़े हो गए।

21 जब यहूसफ़त मरकर अपने बापदादा
से जा मिला तो उसे यरूशलम के
उस हिस्से में जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है
ख़ानदानी क़ब्र में दफ़न किया गया। फिर उसका
बेटा यहूराम तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह यहूराम

2यहूसफ़त के बाक़ी बेटे अज़रियाह, यहियेल, ज़करियाह, अज़रियाहू, मीकाएल और सफ़तियाह थे। 3यहूसफ़त ने उन्हें बहुत सोना-चाँदी और दीगर क़ीमती चीज़ें देकर यहूदाह के क़िलाबंद शहरों पर मुक़र्रर किया था। लेकिन यहूराम को उसने पहलौठा होने के बाइस अपना जा-नशीन बनाया था। 4बादशाह बनने के बाद जब यहूदाह की हुकूमत मज़बूती से उसके हाथ में थी तो यहूराम ने अपने तमाम भाइयों को यहूदाह के कुछ राहनुमाओं समेत क़त्ल कर दिया।

5यहूराम 32 साल की उम्र में बादशाह बना, और वह यरूशलम में रहकर 8 साल तक हुकूमत करता रहा। 6उस की शादी इसराईल के बादशाह अख़ियब की बेटी से हुई थी, और वह इसराईल के बादशाहों और ख़ासकर अख़ियब के ख़ानदान के बुरे नमूने पर चलता रहा। उसका चाल-चलन रब को नापसंद था। 7तो भी वह दाऊद के घराने को तबाह नहीं करना चाहता था, क्योंकि उसने दाऊद से अहद बाँधकर वादा किया था कि तेरा और तेरी औलाद का चराग़ हमेशा तक जलता रहेगा।

8यहूराम की हुकूमत के दौरान अदोमियों ने बग़ावत की और यहूदाह की हुकूमत को रद्द करके अपना बादशाह मुक़र्रर किया। 9तब यहूराम अपने अफ़सरों और तमाम रथों को लेकर उनके पास पहुँचा। जब जंग छिड़ गई तो अदोमियों ने उसे और उसके रथों पर मुक़र्रर अफ़सरों को घेर लिया, लेकिन रात को बादशाह घेरनेवालों की सफ़ों को तोड़ने में कामयाब हो गया। 10तो भी मुल्के-अदोम आज तक दुबारा यहूदाह की हुकूमत के तहत नहीं आया। उसी वक़्त लिबना शहर भी सरकश होकर ख़ुदमुख़तार हो गया। यह सब कुछ इसलिए हुआ कि यहूराम ने रब अपने बापदादा के ख़ुदा को तर्क कर दिया था, 11यहाँ तक कि उसने यहूदाह के पहाड़ी इलाक़े में कई ऊँची जगहों पर मंदिर बनवाए और यरूशलम के बाशिंदों को रब से बेवफ़ा हो जाने पर उकसाया। पूरे यहूदाह को वह बुतपरस्ती की ग़लत राह पर ले आया।

12तब यहूराम को इलियास नबी से ख़त मिला जिसमें लिखा था, "रब आपके बाप दाऊद का ख़ुदा फ़रमाता है, 'तू अपने बाप यहूसफ़त और अपने दादा आसा बादशाह के अच्छे नमूने पर नहीं चला 13बल्कि इसराईल के बादशाहों की ग़लत राहों पर। बिलकुल अख़ियब के ख़ानदान की तरह तू यरूशलम और पूरे यहूदाह के बाशिंदों को बुतपरस्ती की राह पर लाया है। और यह तेरे लिए काफ़ी नहीं था, बल्कि तूने अपने सगे भाइयों को भी जो तुझसे बेहतर थे क़त्ल कर दिया। 14इसलिए रब तेरी क़ौम, तेरे बेटों और तेरी बीवियों को तेरी पूरी मिलकियत समेत बड़ी मुसीबत में डालने को है। 15तू ख़ुद बीमार हो जाएगा। लाइलाज मरज़ की ज़द में आकर तुझे बड़ी देर तक तकलीफ़ होगी। आख़िरकार तेरी अंतड़ियाँ जिस्म से निकलेंगी'।"

16उन दिनों में रब ने फ़िलिस्तियों और एथोपिया के पड़ोस में रहनेवाले अरब क़बीलों को यहूराम पर हमला करने की तहरीक दी। 17यहूदाह में घुसकर वह यरूशलम तक पहुँच गए और बादशाह के महल को लूटने में कामयाब हुए। तमाम मालो-असबाब के अलावा उन्होंने बादशाह के बेटों और बीवियों को भी छीन लिया। सिर्फ़ सबसे छोटा बेटा यहुआख़ज़ यानी अख़ज़ियाह बच निकला।

18इसके बाद रब का ग़ज़ब बादशाह पर नाज़िल हुआ। उसे लाइलाज बीमारी लग गई जिससे उस की अंतड़ियाँ मुतअस्सिर हुईं। 19बादशाह की हालत बहुत ख़राब होती गई। दो साल के बाद अंतड़ियाँ जिस्म से निकल गईं। यहूराम शदीद दर्द की हालत में कूच कर गया। जनाज़े पर उस की क़ौम ने उसके एहतराम में लकड़ी का बड़ा ढेर न जलाया, गो उन्होंने यह उसके बापदादा के लिए किया था।

20यहूराम 32 साल की उम्र में बादशाह बना और यरूशलम में रहकर 8 साल तक हुकूमत

करता रहा था। जब फ़ौत हुआ तो किसी को भी
अफ़सोस न हुआ। उसे यरूशलम शहर के उस
हिस्से में दफ़न तो किया गया जो ‘दाऊद का
शहर’ कहलाता है, लेकिन शाही क़ब्रों में नहीं।

यहूदाह का बादशाह अख़ज़ियाह

22 यरूशलम के बाशिंदों ने यहूराम के
सबसे छोटे बेटे अख़ज़ियाह को तख़्त
पर बिठा दिया। बाक़ी तमाम बेटों को उन
लुटेरों ने क़त्ल किया था जो अरबों के साथ
शाही लशकरगाह में घुस आए थे। यही वजह
थी कि यहूदाह के बादशाह यहूराम का बेटा
अख़ज़ियाह बादशाह बना। 2वह 22 साल की
उम्र में तख़्तनशीन हुआ और यरूशलम में रहकर
एक साल बादशाह रहा। उस की माँ अतलियाह
इसराईल के बादशाह उमरी की पोती थी।
3अख़ज़ियाह भी अख़ियब के ख़ानदान के ग़लत
नमूने पर चल पड़ा, क्योंकि उस की माँ उसे
बेदीन राहों पर चलने पर उभारती रही। 4बाप
की वफ़ात पर वह अख़ियब के घराने के मशवरे
पर चलने लगा। नतीजे में उसका चाल-चलन रब
को नापसंद था। आख़िरकार यही लोग उस की
हलाकत का सबब बन गए।

5इन्हीं के मशवरे पर वह इसराईल के बादशाह
यूराम बिन अख़ियब के साथ मिलकर शाम के
बादशाह हज़ाएल से लड़ने के लिए निकला।
जब रामात-जिलियाद के क़रीब जंग छिड़ गई तो
यूराम शाम के फ़ौजियों के हाथों ज़ख़मी हुआ
6और मैदाने-जंग को छोड़कर यज्रएल वापस
आया ताकि ज़ख़म भर जाएँ। जब वह वहाँ ठहरा
हुआ था तो यहूदाह का बादशाह अख़ज़ियाह
बिन यहूराम उसका हाल पूछने के लिए यज्रएल
आया। 7लेकिन अल्लाह की मरज़ी थी कि यह
मुलाक़ात अख़ज़ियाह की हलाकत का बाइस
बने। वहाँ पहुँचकर वह यूराम के साथ याहू बिन
निमसी से मिलने के लिए निकला, वही याहू
जिसे रब ने मसह करके अख़ियब के ख़ानदान
को नेस्तो-नाबूद करने के लिए मख़सूस किया
था। 8अख़ियब के ख़ानदान की अदालत करते
करते याहू की मुलाक़ात यहूदाह के कुछ अफ़सरों
और अख़ज़ियाह के बाज़ रिश्तेदारों से हुई जो
अख़ज़ियाह की ख़िदमत में उसके साथ आए थे।
इन्हें क़त्ल करके 9याहू अख़ज़ियाह को ढूँडने
लगा। पता चला कि वह सामरिया शहर में छुप
गया है। उसे याहू के पास लाया गया जिसने उसे
क़त्ल कर दिया। तो भी उसे इज़्ज़त के साथ दफ़न
किया गया, क्योंकि लोगों ने कहा, “आख़िर वह
यहूसफ़त का पोता है जो पूरे दिल से रब का
तालिब रहा।” उस वक़्त अख़ज़ियाह के ख़ानदान
में कोई न पाया गया जो बादशाह का काम सँभाल
सकता।

अतलियाह की ज़ालिमाना हुकूमत

10जब अख़ज़ियाह की माँ अतलियाह को
मालूम हुआ कि मेरा बेटा मर गया है तो वह यहूदाह
के पूरे शाही ख़ानदान को क़त्ल करने लगी।
11लेकिन अख़ज़ियाह की सगी बहन यहूसबा ने
अख़ज़ियाह के छोटे बेटे युआस को चुपके से उन
शहज़ादों में से निकाल लिया जिन्हें क़त्ल करना
था और उसे उस की दाया के साथ एक स्टोर में
छुपा दिया जिसमें बिस्तर वग़ैरा महफ़ूज़ रखे जाते
थे। वहाँ वह अतलियाह की गिरिफ़्त से महफ़ूज़
रहा। यहूसबा यहोयदा इमाम की बीवी थी। 12बाद
में युआस को रब के घर में मुंतक़िल किया गया
जहाँ वह उनके साथ उन छः सालों के दौरान छुपा
रहा जब अतलियाह मलिका थी।

अतलियाह का अंजाम और युआस की हुकूमत

23 अतलियाह की हुकूमत के सातवें
साल में यहोयदा ने जुर्रत करके सौ सौ
फ़ौजियों पर मुक़र्रर पाँच अफ़सरों से अहद बाँधा।
उनके नाम अज़रियाह बिन यरोहाम, इसमाईल
बिन यूहनान, अज़रियाह बिन ओबेद, मासियाह
बिन अदायाह और इलीसाफ़त बिन ज़िकरी थे।
2इन आदमियों ने चुपके से यहूदाह के तमाम

शहरों में से गुज़रकर लावियों और इसराईली
ख़ानदानों के सरपरस्तों को जमा किया और फिर
उनके साथ मिलकर यरूशलम आए। 3अल्लाह
के घर में पूरी जमात ने जवान बादशाह युआस के
साथ अहद बाँधा।

यहोयदा उनसे मुख़ातिब हुआ, "हमारे बादशाह
का बेटा ही हम पर हुकूमत करे, क्योंकि रब
ने मुक़र्रर किया है कि दाऊद की औलाद यह
ज़िम्मेदारी सँभाले। 4चुनाँचे अगले सबत के दिन
आप इमामों और लावियों में से जितने ड्यूटी पर
आएँगे वह तीन हिस्सों में तक़सीम हो जाएँ। एक
हिस्सा रब के घर के दरवाज़ों पर पहरा दे, 5दूसरा
शाही महल पर और तीसरा बुनियाद नामी दरवाज़े
पर। बाक़ी सब आदमी रब के घर के सहनों में
जमा हो जाएँ। 6ख़िदमत करनेवाले इमामों और
लावियों के सिवा कोई और रब के घर में दाख़िल
न हो। सिर्फ़ यही अंदर जा सकते हैं, क्योंकि
रब ने उन्हें इस ख़िदमत के लिए मख़सूस किया
है। लाज़िम है कि पूरी क़ौम रब की हिदायात
पर अमल करे। 7बाक़ी लावी बादशाह के इर्दगिर्द
दायरा बनाकर अपने हथियारों को पकड़े रखें और
जहाँ भी वह जाए उसे घेरे रखें। जो भी रब के घर
में घुसने की कोशिश करे उसे मार डालना।"

8लावी और यहूदाह के इन तमाम मर्दों ने ऐसा
ही किया। अगले सबत के दिन सब अपने बंदों
समेत उसके पास आए, वह भी जिनकी ड्यूटी
थी और वह भी जिनकी अब छुट्टी थी। क्योंकि
यहोयदा ने ख़िदमत करनेवालों में से किसी को
भी जाने की इजाज़त नहीं दी थी। 9इमाम ने
सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर अफ़सरों को दाऊद
बादशाह के वह नेज़े और छोटी और बड़ी ढालें दीं
जो अब तक रब के घर में महफ़ूज़ रखी हुई थीं।
10फिर उसने फ़ौजियों को बादशाह के इर्दगिर्द
खड़ा किया। हर एक अपने हथियार पकड़े तैयार
था। क़ुरबानगाह और रब के घर के दरमियान
उनका दायरा रब के घर की जुनूबी दीवार से
लेकर उस की शिमाली दीवार तक फैला हुआ था।
11फिर वह युआस को बाहर लाए और उसके सर
पर ताज रखकर उसे क़वानीन की किताब दे दी।
यों युआस को बादशाह बना दिया गया। उन्होंने
उसे मसह किया और बुलंद आवाज़ से नारा लगाने
लगे, "बादशाह ज़िंदाबाद!"

12लोगों का शोर अतलियाह तक पहुँचा,
क्योंकि सब दौड़कर जमा हो रहे और बादशाह की
ख़ुशी में नारे लगा रहे थे। वह रब के घर के सहन
में उनके पास आई 13तो क्या देखती है कि नया
बादशाह दरवाज़े के क़रीब उस सतून के पास खड़ा
है जहाँ बादशाह रिवाज के मुताबिक़ खड़ा होता है,
और वह अफ़सरों और तुरम बजानेवालों से घिरा
हुआ है। तमाम उम्मत भी साथ खड़ी तुरम बजा
बजाकर ख़ुशी मना रही है। साथ साथ गुलूकार
अपने साज़ बजाकर हम्द के गीत गाने में राहनुमाई
कर रहे हैं। अतलियाह रंजिश के मारे अपने कपड़े
फाड़कर चीख़ उठी, "ग़द्दारी, ग़द्दारी!"

14यहोयदा इमाम ने सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर
उन अफ़सरों को बुलाया जिनके सुपुर्द फ़ौज की
गई थी और उन्हें हुक्म दिया, "उसे बाहर ले
जाएँ, क्योंकि मुनासिब नहीं कि उसे रब के घर
के पास मारा जाए। और जो भी उसके पीछे आए
उसे तलवार से मार देना।" 15वह अतलियाह को
पकड़कर वहाँ से बाहर ले गए और उसे घोड़ों के
दरवाज़े पर मार दिया जो शाही महल के पास था।

16फिर यहोयदा ने क़ौम और बादशाह के साथ
मिलकर रब से अहद बाँधकर वादा किया कि
हम रब की क़ौम रहेंगे। 17इसके बाद सब बाल
के मंदिर पर टूट पड़े और उसे ढा दिया। उस
की क़ुरबानगाहों और बुतों को टुकड़े टुकड़े करके
उन्होंने बाल के पुजारी मत्तान को क़ुरबानगाहों के
सामने ही मार डाला।

18यहोयदा ने इमामों और लावियों को दुबारा
रब के घर को सँभालने की ज़िम्मेदारी दी। दाऊद
ने उन्हें ख़िदमत के लिए गुरोहों में तक़सीम किया
था। उस की हिदायात के मुताबिक़ उन्हीं को
ख़ुशी मनाते और गीत गाते हुए भस्म होनेवाली
क़ुरबानियाँ पेश करनी थीं, जिस तरह मूसा की
शरीअत में लिखा है। 19रब के घर के दरवाज़ों पर

यहोयदा ने दरबान खड़े किए ताकि ऐसे लोगों को अंदर आने से रोका जाए जो किसी भी वजह से नापाक हों।

20फिर वह सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर
अफ़सरों, असरो-रसूख़वालों, क़ौम के हुक्मरानों और बाक़ी पूरी उम्मत के हमराह जुलूस निकालकर बादशाह को बालाई दरवाज़े से होकर शाही महल में ले गया। वहाँ उन्होंने बादशाह को
तख़्त पर बिठा दिया, 21और तमाम उम्मत ख़ुशी
मनाती रही। यों यरूशलम शहर को सुकून मिला, क्योंकि अतलियाह को तलवार से मार दिया गया था।

युआस रब के घर की मरम्मत करवाता है

24 युआस 7 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया 40 साल था। उस की माँ
ज़िबियाह बैर-सबा की रहनेवाली थी। 2यहोयदा
के जीते-जी युआस वह कुछ करता रहा जो रब को
पसंद था। 3यहोयदा ने उस की शादी दो ख़वातीन
से कराई जिनके बेटे-बेटियाँ पैदा हुए।

4कुछ देर के बाद युआस ने रब के घर की
मरम्मत कराने का फ़ैसला किया। 5इमामों और
लावियों को अपने पास बुलाकर उसने उन्हें हुक्म दिया, "यहूदाह के शहरों में से गुज़रकर तमाम लोगों से पैसे जमा करें ताकि आप साल बसाल अपने ख़ुदा के घर की मरम्मत करवाएँ। अब जाकर जल्दी करें।" लेकिन लावियों ने बड़ी देर लगाई।

6तब बादशाह ने इमामे-आज़म यहोयदा को
बुलाकर पूछा, "आपने लावियों से मुतालबा क्यों नहीं किया कि वह यहूदाह के शहरों और यरूशलम से रब के घर की मरम्मत के पैसे जमा करें? यह तो कोई नई बात नहीं है, क्योंकि रब का ख़ादिम मूसा भी मुलाक़ात का ख़ैमा ठीक रखने के लिए
इसराईली जमात से टैक्स लेता रहा। 7आपको
ख़ुद मालूम है कि उस बेदीन औरत अतलियाह ने अपने पैरोकारों के साथ रब के घर में नक़ब लगाकर रब के लिए मख़सूस हदिये छीन लिए और बाल के अपने बुतों की ख़िदमत के लिए इस्तेमाल किए थे।"

8बादशाह के हुक्म पर एक संदूक़ बनवाया गया
जो बाहर, रब के घर के सहन के दरवाज़े पर
रखा गया। 9पूरे यहूदाह और यरूशलम में एलान
किया गया कि रब के लिए वह टैक्स अदा किया जाए जिसका ख़ुदा के ख़ादिम मूसा ने रेगिस्तान
में इसराईलियों से मुतालबा किया था। 10यह
सुनकर तमाम राहनुमा बल्कि पूरी क़ौम ख़ुश हुई। अपने हदिये रब के घर के पास लाकर वह उन्हें संदूक़ में डालते रहे। जब कभी वह भर जाता
11तो लावी उसे उठाकर बादशाह के अफ़सरों के
पास ले जाते। अगर उसमें वाक़ई बहुत पैसे होते तो बादशाह का मीरमुंशी और इमामे-आज़म का एक अफ़सर आकर उसे ख़ाली कर देते। फिर लावी उसे उस की जगह वापस रख देते थे। यह सिलसिला रोज़ाना जारी रहा, और आख़िरकार बहुत बड़ी रक़म इकट्ठी हो गई।

12बादशाह और यहोयदा यह पैसे उन ठेकेदारों
को दिया करते थे जो रब के घर की मरम्मत करवाते थे। यह पैसे पत्थर तराशनेवालों, बढ़इयों और उन कारीगरों की उजरत के लिए सर्फ़ हुए
जो लोहे और पीतल का काम करते थे। 13रब के
घर की मरम्मत के निगरानों ने मेहनत से काम किया, और उनके ज़ेरे-निगरानी तरक़्क़ी होती गई। आख़िर में रब के घर की हालत पहले की-सी हो गई थी बल्कि उन्होंने उसे मज़ीद मज़बूत बना
दिया। 14काम के इख़्तिताम पर ठेकेदार बाक़ी
पैसे युआस बादशाह और यहोयदा के पास लाए। इनसे उन्होंने रब के घर की ख़िदमत के लिए दरकार प्याले, सोने और चाँदी के बरतन और दीगर कई चीज़ें जो क़ुरबानियाँ चढ़ाने के लिए इस्तेमाल होती थीं बनवाईं। यहोयदा के जीते-जी रब के घर में बाक़ायदगी से भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ पेश की जाती रहीं।

15यहोयदा निहायत बूढ़ा हो गया। 130 साल
की उम्र में वह फ़ौत हुआ। 16उसे यरूशलम के

उस हिस्से में शाही क़ब्रिस्तान में दफ़नाया गया
जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है, क्योंकि उसने
इसराईल में अल्लाह और उसके घर की अच्छी
ख़िदमत की थी।

युआस बादशाह रब को तर्क करता है

17यहोयदा की मौत के बाद यहूदाह के बुज़ुर्ग
युआस के पास आकर मुँह के बल झुक गए।
उस वक़्त से वह उनके मशवरों पर अमल करने
लगा। 18इसका एक नतीजा यह निकला कि
वह उनके साथ मिलकर रब अपने बाप के ख़ुदा
के घर को छोड़कर यसीरत देवी के खंबों और
बुतों की पूजा करने लगा। इस गुनाह की वजह
से अल्लाह का ग़ज़ब यहूदाह और यरूशलम पर
नाज़िल हुआ। 19उसने अपने नबियों को लोगों
के पास भेजा ताकि वह उन्हें समझाकर रब के
पास वापस लाएँ। लेकिन कोई भी उनकी बात
सुनने के लिए तैयार न हुआ। 20फिर अल्लाह का
रूह यहोयदा इमाम के बेटे ज़करियाह पर नाज़िल
हुआ, और उसने क़ौम के सामने खड़े होकर कहा,
"अल्लाह फ़रमाता है, 'तुम रब के अहकाम की
ख़िलाफ़वरज़ी क्यों करते हो? तुम्हें कामयाबी
हासिल नहीं होगी। चूँकि तुमने रब को तर्क कर
दिया है इसलिए उसने तुम्हें तर्क कर दिया है'!"

21जवाब में लोगों ने ज़करियाह के ख़ि-
लाफ़ साज़िश करके उसे बादशाह के हुक्म पर
रब के घर के सहन में संगसार कर दिया। 22यों
युआस बादशाह ने उस मेहरबानी का ख़याल न
किया जो यहोयदा ने उस पर की थी बल्कि उसे
नज़रंदाज़ करके उसके बेटे को क़त्ल किया। मरते
वक़्त ज़करियाह बोला, "रब ध्यान देकर मेरा
बदला ले!"

23अगले साल के आग़ाज़ में शाम की फ़ौज
युआस से लड़ने आई। यहूदाह में घुसकर उन्होंने
यरूशलम पर फ़तह पाई और क़ौम के तमाम
बुज़ुर्गों को मार डाला। सारा लूटा हुआ माल
दमिश्क़ को भेजा गया जहाँ बादशाह था।
24अगरचे शाम की फ़ौज यहूदाह की फ़ौज की
निसबत बहुत छोटी थी तो भी रब ने उसे फ़तह
बख़्शी। चूँकि यहूदाह ने रब अपने बापदादा के
ख़ुदा को तर्क कर दिया था इसलिए युआस को
शाम के हाथों सज़ा मिली। 25जंग के दौरान
यहूदाह का बादशाह शदीद ज़ख़मी हुआ। जब
दुश्मन ने मुल्क को छोड़ दिया तो युआस के
अफ़सरों ने उसके ख़िलाफ़ साज़िश की। यहोयदा
इमाम के बेटे के क़त्ल का इंतक़ाम लेकर उन्होंने
उसे मार डाला जब वह बीमार हालत में बिस्तर पर
पड़ा था। बादशाह को यरूशलम के उस हिस्से में
दफ़न किया गया जो 'दाऊद का शहर' कहलाता
है। लेकिन शाही क़ब्रिस्तान में नहीं दफ़नाया
गया। 26साज़िश करनेवालों के नाम ज़बद और
यहूज़बद थे। पहले की माँ सिमआत अम्मोनी थी
जबकि दूसरे की माँ सिमरीत मोआबी थी।

27युआस के बेटों, उसके ख़िलाफ़ नबियों के
फ़रमानों और अल्लाह के घर की मरम्मत के
बारे में मज़ीद मालूमात 'शाहान की किताब' में
दर्ज हैं। युआस के बाद उसका बेटा अमसियाह
तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह अमसियाह

25 अमसियाह 25 साल की उम्र में
बादशाह बना और यरूशलम में उस
की हुकूमत का दौरानिया 29 साल था। उस की
माँ यहुअद्दान यरूशलम की रहनेवाली थी। 2जो
कुछ अमसियाह ने किया वह रब को पसंद था,
लेकिन वह पूरे दिल से रब की पैरवी नहीं करता
था। 3ज्योंही उसके पाँव मज़बूती से जम गए
उसने उन अफ़सरों को सज़ाए-मौत दी जिन्होंने
बाप को क़त्ल कर दिया था। 4लेकिन उनके बेटों
को उसने ज़िंदा रहने दिया और यों मूसवी शरीअत
के ताबे रहा जिसमें रब फ़रमाता है, "वालिदैन को
उनके बच्चों के जरायम के सबब से सज़ाए-मौत
न दी जाए, न बच्चों को उनके वालिदैन के जरायम
के सबब से। अगर किसी को सज़ाए-मौत देनी हो
तो उस गुनाह के सबब से जो उसने ख़ुद किया
है।"

अदोम से जंग

5अमसियाह ने यहूदाह और बिनयमीन के
क़बीलों के तमाम मर्दों को बुलाकर उन्हें ख़ानदानों
के मुताबिक़ तरतीब दिया। उसने हज़ार हज़ार
और सौ सौ फ़ौजियों पर अफ़सर मुक़र्रर किए।
जितने भी मर्द 20 या इससे ज़ायद साल के थे
उन सबकी भरती हुई। इस तरह 3,00,000
फ़ौजी जमा हुए। सब बड़ी ढालों और नेज़ों से
लैस थे। 6इसके अलावा अमसियाह ने इसराईल
के 1,00,000 तजरबाकार फ़ौजियों को उजरत
पर भरती किया ताकि वह जंग में मदद करें। उन्हें
उसने चाँदी के तक़रीबन 3,400 किलोग्राम दिए।
7लेकिन एक मर्दे-ख़ुदा ने अमसियाह के
पास आकर उसे समझाया, “बादशाह सलामत,
लाज़िम है कि यह इसराईली फ़ौजी आपके साथ
मिलकर लड़ने के लिए न निकलें। क्योंकि रब
उनके साथ नहीं है, वह इफ़राईम के किसी भी
रहनेवाले के साथ नहीं है। 8अगर आप उनके
साथ मिलकर निकलें ताकि मज़बूती से दुश्मन
से लड़ें तो अल्लाह आपको दुश्मन के सामने
गिरा देगा। क्योंकि अल्लाह को आपकी मदद
करने और आपको गिराने की क़ुदरत हासिल
है।” 9अमसियाह ने एतराज़ किया, “लेकिन
मैं इसराईलियों को चाँदी के 3,400 किलोग्राम
अदा कर चुका हूँ। इन पैसों का क्या बनेगा?”
मर्दे-ख़ुदा ने जवाब दिया, “रब आपको इससे
कहीं ज़्यादा अता कर सकता है।” 10चुनाँचे
अमसियाह ने इफ़राईम से आए हुए तमाम
फ़ौजियों को फ़ारिग़ करके वापस भेज दिया, और
वह यहूदाह से बहुत नाराज़ हुए। हर एक बड़े तैश
में अपने अपने घर चला गया।

11तो भी अमसियाह जुर्रत करके जंग के लिए
निकला। अपनी फ़ौज को नमक की वादी में ले
जाकर उसने अदोमियों पर फ़तह पाई। उनके
10,000 मर्द मैदाने-जंग में मारे गए। 12दुश्मन
के मज़ीद 10,000 आदमियों को गिरिफ़्तार कर
लिया गया। यहूदाह के फ़ौजियों ने क़ैदियों को
एक ऊँची चट्टान की चोटी पर ले जाकर नीचे गिरा
दिया। इस तरह सब पाश पाश होकर हलाक हुए।
13इतने में फ़ारिग़ किए गए इसराईली फ़ौजियों
ने सामरिया और बैत-हौरून के बीच में वाक़े
यहूदाह के शहरों पर हमला किया था। लड़ते
लड़ते उन्होंने 3,000 मर्दों को मौत के घाट उतार
दिया और बहुत-सा माल लूट लिया था।

अमसियाह की बुतपरस्ती

14अदोमियों को शिकस्त देने के बाद
अमसियाह सईर के बाशिंदों के बुतों को लूटकर
अपने घर वापस लाया। वहाँ उसने उन्हें खड़ा
किया और उनके सामने औंधे मुँह झुककर उन्हें
क़ुरबानियाँ पेश कीं। 15यह देखकर रब उससे
बहुत नाराज़ हुआ। उसने एक नबी को उसके
पास भेजा जिसने कहा, “तू इन देवताओं की
तरफ़ क्यों रुजू कर रहा है? यह तो अपनी क़ौम
को तुझसे नजात न दिला सके।” 16अमसियाह
ने नबी की बात काटकर कहा, “हमने कब से तुझे
बादशाह का मुशीर बना दिया है? ख़ामोश, वरना
तुझे मार दिया जाएगा।” नबी ने ख़ामोश होकर
इतना ही कहा, “मुझे मालूम है कि अल्लाह ने
आपको आपकी इन हरकतों की वजह से और
इसलिए कि आपने मेरा मशवरा क़बूल नहीं किया
तबाह करने का फ़ैसला कर लिया है।”

अमसियाह इसराईल के बादशाह युआस से लड़ता है

17एक दिन यहूदाह के बादशाह अमसि-
याह ने अपने मुशीरों से मशवरा करने के बाद
युआस बिन यहुआख़ज़ बिन याहू को पैग़ाम
भेजा, “आएँ, हम एक दूसरे का मुक़ाबला करें!”
18लेकिन इसराईल के बादशाह युआस ने जवाब
दिया, “लुबनान में एक काँटेदार झाड़ी ने देवदार
के एक दरख़्त से बात की, ‘मेरे बेटे के साथ
अपनी बेटी का रिश्ता बान्धो।’ लेकिन उसी वक़्त
लुबनान के जंगली जानवरों ने उसके ऊपर से
गुज़रकर उसे पाँवों तले कुचल डाला। 19अदोम

पर फ़तह पाने के सबब से आपका दिल मग़रूर
होकर मज़ीद शोहरत हासिल करना चाहता है।
लेकिन मेरा मशवरा है कि आप अपने घर में
रहें। आप ऐसी मुसीबत को क्यों दावत देते हैं
जो आप और यहूदाह की तबाही का बाइस बन
जाए?” 20लेकिन अमसियाह मानने के लिए
तैयार नहीं था। अल्लाह उसे और उस की क़ौम को
इसराईलियों के हवाले करना चाहता था, क्योंकि
उन्होंने अदोमियों के देवताओं की तरफ़ रुजू किया
था।

21तब इसराईल का बादशाह युआस अप-
नी फ़ौज लेकर यहूदाह पर चढ़ आया।
बैत-शम्स के पास उसका यहूदाह के बाद-
शाह अमसियाह के साथ मुक़ाबला हुआ।
22इसराईली फ़ौज ने यहूदाह की फ़ौज को
शिकस्त दी, और हर एक अपने अपने घर
भाग गया। 23इसराईल के बादशाह युआस ने
यहूदाह के बादशाह अमसियाह बिन युआस बिन
अख़ज़ियाह को वहीं बैत-शम्स में गिरिफ़्तार कर
लिया। फिर वह उसे यरूशलम लाया और शहर
की फ़सील इफ़राईम नामी दरवाज़े से लेकर कोने
के दरवाज़े तक गिरा दी। इस हिस्से की लंबाई
तक़रीबन 600 फ़ुट थी। 24जितना भी सोना,
चाँदी और क़ीमती सामान रब के घर और शाही
महल के ख़ज़ानों में था उसे उसने पूरे का पूरा
छीन लिया। उस वक़्त ओबेद-अदोम रब के घर
के ख़ज़ाने सँभालता था। युआस लूटा हुआ माल
और बाज़ यरग़मालों को लेकर सामरिया वापस
चला गया।

अमसियाह की मौत

25इसराईल के बादशाह युआस बिन
यहुआख़ज़ की मौत के बाद यहूदाह का बादशाह
अमसियाह बिन युआस मज़ीद 15 साल जीता
रहा। 26बाक़ी जो कुछ अमसियाह की हुकूमत
के दौरान हुआ वह शुरू से लेकर आख़िर तक
‘शाहाने-इसराईलो-यहूदाह’ की किताब में दर्ज
है। 27जब से वह रब की पैरवी करने से बाज़
आया उस वक़्त से लोग यरूशलम में उसके
ख़िलाफ़ साज़िश करने लगे। आख़िरकार उसने
फ़रार होकर लकीस में पनाह ली, लेकिन साज़िश
करनेवालों ने अपने लोगों को उसके पीछे भेजा,
और वह वहाँ उसे क़त्ल करने में कामयाब हो
गए। 28उस की लाश घोड़े पर उठाकर यहूदाह के
शहर यरूशलम लाई गई जहाँ उसे ख़ानदानी क़ब्र
में दफ़नाया गया।

यहूदाह का बादशाह उज़्ज़ियाह

26 यहूदाह के तमाम लोगों ने अम-
सियाह की जगह उसके बेटे
उज़्ज़ियाह को तख़्त पर बिठा दिया। उस की
उम्र 16 साल थी 2जब उसका बाप मरकर अपने
बापदादा से जा मिला। बादशाह बनने के बाद
उज़्ज़ियाह ने ऐलात शहर पर क़ब्ज़ा करके उसे
दुबारा यहूदाह का हिस्सा बना लिया। उसने शहर
में बहुत तामीरी काम करवाया।

3उज़्ज़ियाह 16 साल की उम्र में बादशाह
बना और यरूशलम में रहकर 52 साल हुकूमत
करता रहा। उस की माँ यकूलियाह यरूशलम की
रहनेवाली थी। 4अपने बाप अमसियाह की तरह
उसका चाल-चलन रब को पसंद था। 5इमामे-
आज़म ज़करियाह के जीते-जी उज़्ज़ियाह रब
का तालिब रहा, क्योंकि ज़करियाह उसे अल्लाह
का ख़ौफ़ मानने की तालीम देता रहा। जब तक
बादशाह रब का तालिब रहा उस वक़्त तक
अल्लाह उसे कामयाबी बख़्शता रहा।

6उज़्ज़ियाह ने फ़िलिस्तियों से जंग करके जात,
यबना और अशदूद की फ़सीलों को ढा दिया।
दीगर कई शहरों को उसने नए सिरे से तामीर
किया जो अशदूद के क़रीब और फ़िलिस्तियों
के बाक़ी इलाक़े में थे। 7लेकिन अल्लाह ने न
सिर्फ़ फ़िलिस्तियों से लड़ते वक़्त उज़्ज़ियाह की
मदद की बल्कि उस वक़्त भी जब जूर-बाल
में रहनेवाले अरबों और मऊनियों से जंग छिड़
गई। 8अम्मोनियों को उज़्ज़ियाह को ख़राज अदा

करना पड़ा, और वह इतना ताक़तवर बना कि उस
की शोहरत मिसर तक फैल गई।
9यरूशलम में उज़्ज़ियाह ने कोने के दरवाज़े,
वादी के दरवाज़े और फ़सील के मोड़ पर मज़बूत
बुर्ज बनवाए। 10उसने बयाबान में भी बुर्ज तामीर
किए और साथ साथ पत्थर के बेशुमार हौज़
तराशे, क्योंकि मग़रिबी यहूदाह के नशेबी पहाड़ी
इलाक़े और मैदानी इलाक़े में उसके बड़े बड़े रेवड़
चरते थे। बादशाह को काश्तकारी का काम ख़ास
पसंद था। बहुत लोग पहाड़ी इलाक़ों और ज़रख़ेज़
वादियों में उसके खेतों और अंगूर के बाग़ों की
निगरानी करते थे।
11उज़्ज़ियाह की ताक़तवर फ़ौज थी। बादशाह
के आला अफ़सर हननियाह की राहनुमाई में
मीरमुंशी यइयेल ने अफ़सर मासियाह के साथ
फ़ौज की भरती करके उसे तरतीब दिया था।
12इन दस्तों पर कुंबों के 2,600 सरपरस्त मुक़र्रर
थे। 13फ़ौज 3,07,500 जंग लड़ने के क़ाबिल
मर्दों पर मुश्तमिल थी। जंग में बादशाह उन पर
पूरा भरोसा कर सकता था। 14उज़्ज़ियाह ने अपने
तमाम फ़ौजियों को ढालों, नेज़ों, ख़ोदों, ज़िरा-
बकतरों, कमानों और फ़लाख़न के सामान से
मुसल्लह किया। 15और यरूशलम के बुर्जों और
फ़सील के कोनों पर उसने ऐसी मशीनें लगाएँ जो
तीर चला सकती और बड़े बड़े पत्थर फेंक सकती
थीं।

उज़्ज़ियाह मग़रूर हो जाता है

ग़रज़, अल्लाह की मदद से उज़्ज़ियाह की
शोहरत दूर दूर तक फैल गई, और उस की ताक़त
बढ़ती गई।
16लेकिन इस ताक़त ने उसे मग़रूर कर
दिया, और नतीजे में वह ग़लत राह पर आ
गया। रब अपने ख़ुदा का बेवफ़ा होकर वह एक
दिन रब के घर में घुस गया ताकि बख़ूर की
क़ुरबानगाह पर बख़ूर जलाए। 17लेकिन इमामे-
आज़म अज़रियाह रब के मज़ीद 80 बहादुर
इमामों को अपने साथ लेकर उसके पीछे पीछे
गया। 18उन्होंने बादशाह उज़्ज़ियाह का सामना
करके कहा, “मुनासिब नहीं कि आप रब को
बख़ूर की क़ुरबानी पेश करें। यह हारून की
औलाद यानी इमामों की ज़िम्मेदारी है जिन्हें इसके
लिए मख़सूस किया गया है। मक़दिस से निकल
जाएँ, क्योंकि आप अल्लाह से बेवफ़ा हो गए
हैं, और आपकी यह हरकत रब ख़ुदा के सामने
इज़्ज़त का बाइस नहीं बनेगी।” 19उज़्ज़ियाह
बख़ूरदान को पकड़े बख़ूर को पेश करने को था
कि इमामों की बातें सुनकर आग-बगूला हो गया।
लेकिन उसी लमहे उसके माथे पर कोढ़ फूट
निकला। 20यह देखकर इमामे-आज़म अज़रियाह
और दीगर इमामों ने उसे जल्दी से रब के घर
से निकाल दिया। उज़्ज़ियाह ने ख़ुद भी वहाँ से
निकलने की जल्दी की, क्योंकि रब ही ने उसे
सज़ा दी थी।
21उज़्ज़ियाह जीते-जी इस बीमारी से शफ़ा न
पा सका। उसे अलहदा घर में रहना पड़ा, और
उसे रब के घर में दाख़िल होने की इजाज़त नहीं
थी। उसके बेटे यूताम को महल पर मुक़र्रर किया
गया, और वही उम्मत पर हुकूमत करने लगा।
22बाक़ी जो कुछ उज़्ज़ियाह की हुकूमत के
दौरान शुरू से लेकर आख़िर तक हुआ वह आमूस
के बेटे यसायाह नबी ने क़लमबंद किया है। 23जब
उज़्ज़ियाह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो
उसे कोढ़ की वजह से दूसरे बादशाहों के साथ नहीं
दफ़नाया गया बल्कि क़रीब के एक खेत में जो
शाही ख़ानदान का था। फिर उसका बेटा यूताम
तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह यूताम

27 यूताम 25 साल की उम्र में बादशाह
बना और यरूशलम में रहकर 16
साल तक हुकूमत करता रहा। उस की माँ यरूसा
बिंत सदोक़ थी। 2यूताम ने वह कुछ किया जो रब
को पसंद था। वह अपने बाप उज़्ज़ियाह के नमूने
पर चलता रहा, अगरचे उसने कभी भी बाप की

तरह रब के घर में घुस जाने की कोशिश न की।
लेकिन आम लोग अपनी ग़लत राहों से न हटे।
3यूताम ने रब के घर का बालाई दरवाज़ा
तामीर किया। ओफ़ल पहाड़ी जिस पर रब का
घर था उस की दीवार को उसने बहुत जगहों पर
मज़बूत बना दिया। 4यहूदाह के पहाड़ी इलाक़े में
उसने शहर तामीर किए और जंगली इलाक़ों में
क़िले और बुर्ज बनाए। 5जब अम्मोनी बादशाह
के साथ जंग छिड़ गई तो उसने अम्मोनियों
को शिकस्त दी। तीन साल तक उन्हें उसे
सालाना ख़राज के तौर पर तक़रीबन 3,400
किलोग्राम चाँदी, 16,00,000 किलोग्राम गंदुम
और 13,50,000 किलोग्राम जौ अदा करना
पड़ा। 6यों यूताम की ताक़त बढ़ती गई। और
वजह यह थी कि वह साबितक़दमी से रब अपने
ख़ुदा के हुज़ूर चलता रहा।
7बाक़ी जो कुछ यूताम की हुकूमत के दौरान
हुआ वह 'शाहाने-इसराईलो-यहूदाह' की किताब
में क़लमबंद है। उसमें उस की तमाम जंगों और
बाक़ी कामों का ज़िक्र है। 8वह 25 साल की
उम्र में बादशाह बना और यरूशलम में रहकर
16 साल हुकूमत करता रहा। 9जब वह मरकर
अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम
के उस हिस्से में जो 'दाऊद का शहर' कहलाता
है दफ़नाया गया। फिर उसका बेटा आख़ज़
तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह आख़ज़

28 आख़ज़ 20 साल की उम्र में बादशाह
बना और यरूशलम में रहकर 16
साल हुकूमत करता रहा। वह अपने बाप दाऊद
के नमूने पर न चला बल्कि वह कुछ करता रहा जो
रब को नापसंद था। 2क्योंकि उसने इसराईल के
बादशाहों का चाल-चलन अपनाया। बाल के बुत
ढलवाकर 3उसने न सिर्फ़ वादीए-बिन-हिन्नूम में
बुतों को क़ुरबानियाँ पेश कीं बल्कि अपने बेटों
को भी क़ुरबानी के तौर पर जला दिया। यों वह
उन क़ौमों के घिनौने रस्मो-रिवाज अदा करने
लगा जिन्हें रब ने इसराईलियों के आगे मुल्क से
निकाल दिया था। 4आख़ज़ बख़ूर जलाकर अपनी
क़ुरबानियाँ ऊँचे मक़ामों, पहाड़ियों की चोटियों
और हर घने दरख़्त के साये में चढ़ाता था।
5इसी लिए रब उसके ख़ुदा ने उसे शाम के
बादशाह के हवाले कर दिया। शाम की फ़ौज ने
उसे शिकस्त दी और यहूदाह के बहुत-से लोगों
को क़ैदी बनाकर दमिश्क़ ले गई। आख़ज़ को
इसराईल के बादशाह फ़िक़ह बिन रमलियाह के
हवाले भी कर दिया गया जिसने उसे शदीद
नुक़सान पहुँचाया। 6एक ही दिन में यहूदाह के
1,20,000 तजरबाकार फ़ौजी शहीद हुए। यह
सब कुछ इसलिए हुआ कि क़ौम ने रब अपने
बापदादा के ख़ुदा को तर्क कर दिया था। 7उस
वक़्त इफ़राईम के क़बीले के पहलवान ज़िकरी
ने आख़ज़ के बेटे मासियाह, महल के इंचार्ज
अज़रीक़ाम और बादशाह के बाद सबसे आला
अफ़सर इलक़ाना को मार डाला। 8इसराईलियों
ने यहूदाह की 2,00,000 औरतें और बच्चे छीन
लिए और कसरत का माल लूटकर सामरिया ले
गए।

इसराईल क़ैदियों को रिहा कर देता है

9सामरिया में रब का एक नबी बनाम ओदीद
रहता था। जब इसराईली फ़ौजी मैदाने-जंग से
वापस आए तो ओदीद उनसे मिलने के लिए
निकला। उसने उनसे कहा, "देखें, रब आपके
बापदादा का ख़ुदा यहूदाह से नाराज़ था, इसलिए
उसने उन्हें आपके हवाले कर दिया। लेकिन आप
लोग तैश में आकर उन पर यों टूट पड़े कि
उनका क़त्ले-आम आसमान तक पहुँच गया है।
10लेकिन यह काफ़ी नहीं था। अब आप यहूदाह
और यरूशलम के बचे हुओं को अपने ग़ुलाम
बनाना चाहते हैं। क्या आप समझते हैं कि हम
उनसे अच्छे हैं? नहीं, आपसे भी रब अपने ख़ुदा
के ख़िलाफ़ गुनाह सरज़द हुए हैं। 11चुनाँचे मेरी
बात सुनें! इन क़ैदियों को वापस करें जो आपने

अपने भाइयों से छीन लिए हैं। क्योंकि रब का
सख़्त ग़ज़ब आप पर नाज़िल होनेवाला है।”

12इफ़राईम के क़बीले के कुछ सरपरस्तों
ने भी फ़ौजियों का सामना किया। उनके
नाम अज़रियाह बिन यूहनान, बरकियाह बिन
मसिल्लमोत, यहिज़क़ियाह बिन सल्लूम और
अमासा बिन ख़दली थे। 13उन्होंने कहा, “इन
क़ैदियों को यहाँ मत ले आएँ, वरना हम रब के
सामने क़ुसूरवार ठहरेंगे। क्या आप चाहते हैं कि
हम अपने गुनाहों में इज़ाफ़ा करें? हमारा क़ुसूर
पहले ही बहुत बड़ा है। हाँ, रब इसराईल पर सख़्त
ग़ुस्से है।”

14तब फ़ौजियों ने अपने क़ैदियों को आज़ाद
करके उन्हें लूटे हुए माल के साथ बुज़ुर्गों और
पूरी जमात के हवाले कर दिया। 15मज़कूरा चार
आदमियों ने सामने आकर क़ैदियों को अपने
पास महफ़ूज़ रखा। लूटे हुए माल में से कपड़े
निकालकर उन्होंने उन्हें उनमें तक़सीम किया जो
बरहना थे। इसके बाद उन्होंने तमाम क़ैदियों को
कपड़े और जूते दे दिए, उन्हें खाना खिलाया, पानी
पिलाया और उनके ज़ख़मों की मरहम-पट्टी की।
जितने थकावट की वजह से चल न सकते थे उन्हें
उन्होंने गधों पर बिठाया, फिर चलते चलते सबको
खजूर के शहर यरीहू तक पहुँचाया जहाँ उनके
अपने लोग थे। फिर वह सामरिया लौट आए।

आख़ज़ असूर के बादशाह से मदद लेता है

16उस वक़्त आख़ज़ बादशाह ने असूर के
बादशाह से इलतमास की, “हमारी मदद करने
आएँ।” 17क्योंकि अदोमी यहूदाह में घुसकर कुछ
लोगों को गिरिफ़्तार करके अपने साथ ले गए
थे। 18साथ साथ फ़िलिस्ती मग़रिबी यहूदाह के
नशेबी पहाड़ी इलाक़े और जुनूबी इलाक़े में घुस
आए थे और ज़ैल के शहरों पर क़ब्ज़ा करके उनमें
रहने लगे थे : बैत-शम्स, ऐयालोन, जदीरोत,
नीज़ सोका, तिमनत और जिमज़ू गिर्दो-नवाह
की आबादियों समेत। 19इस तरह रब ने यहूदाह
को आख़ज़ की वजह से ज़ेर कर दिया, क्योंकि
बादशाह ने यहूदाह में बेलगाम बेराहरवी फैलने
दी और रब से अपनी बेवफ़ाई का साफ़ इज़हार
किया था।

20असूर के बादशाह तिग्लत-पिलेसर अपनी
फ़ौज लेकर मुल्क में आया, लेकिन आख़ज़ की
मदद करने के बजाए उसने उसे तंग किया।
21आख़ज़ ने रब के घर, शाही महल और अपने
आला अफ़सरों के ख़ज़ानों को लूटकर सारा
माल असूर के बादशाह को भेज दिया, लेकिन
बेफ़ायदा। इससे उसे सहीह मदद न मिली।

22गो वह उस वक़्त बड़ी मुसीबत में था तो भी
रब से और दूर हो गया। 23वह शाम के देवताओं
को क़ुरबानियाँ पेश करने लगा, क्योंकि उसका
ख़याल था कि इन्हीं ने मुझे शिकस्त दी है। उसने
सोचा, “शाम के देवता अपने बादशाहों की मदद
करते हैं! अब से मैं उन्हें क़ुरबानियाँ पेश करूँगा
ताकि वह मेरी भी मदद करें।” लेकिन यह देवता
बादशाह आख़ज़ और पूरी क़ौम के लिए तबाही
का बाइस बन गए। 24आख़ज़ ने हुक्म दिया कि
अल्लाह के घर का सारा सामान निकालकर टुकड़े
टुकड़े कर दिया जाए। फिर उसने रब के घर के
दरवाज़ों पर ताला लगा दिया। उस की जगह
उसने यरूशलम के कोने कोने में क़ुरबानगाहें खड़ी
कर दीं। 25साथ साथ उसने दीगर माबूदों को
क़ुरबानियाँ पेश करने के लिए यहूदाह के हर शहर
की ऊँची जगहों पर मंदिर तामीर किए। ऐसी
हरकतों से वह रब अपने बापदादा के ख़ुदा को
तैश दिलाता रहा।

26बाक़ी जो कुछ उस की हुकूमत के दौरान
हुआ और जो कुछ उसने किया वह शुरू से
लेकर आख़िर तक ‘शाहाने-यहूदाहो-इसराईल’
की किताब में दर्ज है। 27जब आख़ज़ मरकर
अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम
में दफ़न किया गया, लेकिन शाही क़ब्रिस्तान में
नहीं। फिर उसका बेटा हिज़क़ियाह तख़्तनशीन
हुआ।

हिज़क़ियाह बादशाह रब के घर को दुबारा खोल देता है

29 जब हिज़क़ियाह बादशाह बना तो उस
की उम्र 25 साल थी। यरूशलम में
रहकर वह 29 साल हुकूमत करता रहा। उस की
माँ अबियाह बिंत ज़करियाह थी।

2अपने बाप दाऊद की तरह उसने ऐसा काम
किया जो रब को पसंद था। 3अपनी हुकूमत के
पहले साल के पहले महीने में उसने रब के घर
के दरवाज़ों को खोलकर उनकी मरम्मत करवाई।
4लावियों और इमामों को बुलाकर उसने उन्हें रब
के घर के मशरिक़ी सहन में जमा किया 5और
कहा,

"ऐ लावियो, मेरी बात सुनें! अपने आपको
ख़िदमत के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करें, और रब
अपने बापदादा के ख़ुदा के घर को भी मख़सूसो-
मुक़द्दस करें। तमाम नापाक चीज़ें मक़दिस से
निकालें! 6हमारे बापदादा बेवफ़ा होकर वह कुछ
करते गए जो रब हमारे ख़ुदा को नापसंद था।
उन्होंने उसे छोड़ दिया, अपने मुँह को रब की
सुकूनतगाह से फेरकर दूसरी तरफ़ चल पड़े।
7रब के घर के सामनेवाले बरामदे के दरवाज़ों पर
उन्होंने ताला लगाकर चराग़ों को बुझा दिया। न
इसराईल के ख़ुदा के लिए बख़ूर जलाया जाता,
न भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ मक़दिस में पेश की
जाती थीं। 8इसी वजह से रब का ग़ज़ब यहूदाह
और यरूशलम पर नाज़िल हुआ है। हमारी हालत
को देखकर लोग घबरा गए, उनके रोंगटे खड़े हो
गए हैं। हम दूसरों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन
गए हैं। आप ख़ुद इसके गवाह हैं। 9हमारी बेवफ़ाई
की वजह से हमारे बाप तलवार की ज़द में आकर
मारे गए और हमारे बेटे-बेटियाँ और बीवियाँ हमसे
छीन ली गई हैं। 10लेकिन अब मैं रब इसराईल के
ख़ुदा के साथ अहद बाँधना चाहता हूँ ताकि उसका
सख़्त क़हर हमसे टल जाए। 11मेरे बेटो, अब
सुस्ती न दिखाएँ, क्योंकि रब ने आपको चुनकर
अपने ख़ादिम बनाया है। आपको उसके हुज़ूर खड़े
होकर उस की ख़िदमत करने और बख़ूर जलाने
की ज़िम्मेदारी दी गई है।"

12फिर ज़ैल के लावी ख़िदमत के लिए तैयार
हुए :

क़िहात के ख़ानदान का महत बिन अमासी और
योएल बिन अज़रियाह,

मिरारी के ख़ानदान का क़ीस बिन अबदी और
अज़रियाह बिन यहल्ललेल,

जैरसोन के ख़ानदान का युआख़ बिन ज़िम्मा
और अदन बिन युआख़,

13इलीसफ़न के ख़ानदान का सिमरी और
यइयेल,

आसफ़ के ख़ानदान का ज़करियाह और
मत्तनियाह,

14हैमान के ख़ानदान का यहियेल और सिमई,

यदूतून के ख़ानदान का समायाह और
उज़्ज़ियेल।

15बाक़ी लावियों को बुलाकर उन्होंने अपने
आपको रब की ख़िदमत के लिए मख़सूसो-
मुक़द्दस किया। फिर वह बादशाह के हुक्म के
मुताबिक़ रब के घर को पाक-साफ़ करने लगे।
काम करते करते उन्होंने इसका ख़याल किया कि
सब कुछ रब की हिदायात के मुताबिक़ हो रहा हो।
16इमाम रब के घर में दाख़िल हुए और उसमें से
हर नापाक चीज़ निकालकर उसे सहन में लाए।
वहाँ से लावियों ने सब कुछ उठाकर शहर से बाहर
वादीए-क़िदरोन में फेंक दिया। 17रब के घर की
क़ुद्दूसियत बहाल करने का काम पहले महीने के
पहले दिन शुरू हुआ, और एक हफ़्ते के बाद वह
सामनेवाले बरामदे तक पहुँच गए थे। एक और
हफ़्ता पूरे घर को मख़सूसो-मुक़द्दस करने में लग
गया।

पहले महीने के 16वें दिन काम मुकम्मल
हुआ। 18हिज़क़ियाह बादशाह के पास जाकर
उन्होंने कहा, "हमने रब के पूरे घर को पाक-
साफ़ कर दिया है। इसमें जानवरों को जलाने की
क़ुरबानगाह उसके सामान समेत और वह मेज़
जिस पर रब के लिए मख़सूस रोटियाँ रखी जाती

हैं उसके सामान समेत शामिल है। 19और जितनी
चीज़ें आख़ज़ ने बेवफ़ा बनकर अपनी हुकूमत के
दौरान रद्द कर दी थीं उन सबको हमने ठीक करके
दुबारा मख़सूसो-मुक़द्दस कर दिया है। अब वह रब
की क़ुरबानगाह के सामने पड़ी हैं।”

रब के घर की दुबारा मख़सूसियत

20अगले दिन हिज़क़ियाह बादशाह सुबह-सवेरे
शहर के तमाम बुज़ुर्गों को बुलाकर उनके साथ
रब के घर के पास गया। 21सात जवान बैल,
सात मेंढे और भेड़ के सात बच्चे भस्म होनेवाली
क़ुरबानी के लिए सहन में लाए गए, नीज़ सात
बकरे जिन्हें गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर शाही
ख़ानदान, मक़दिस और यहूदाह के लिए पेश
करना था। हिज़क़ियाह ने हारून की औलाद यानी
इमामों को हुक्म दिया कि इन जानवरों को रब की
क़ुरबानगाह पर चढ़ाएँ। 22पहले बैलों को ज़बह
किया गया। इमामों ने उनका ख़ून जमा करके
उसे क़ुरबानगाह पर छिड़का। इसके बाद मेंढों को
ज़बह किया गया। इस बार भी इमामों ने उनका
ख़ून क़ुरबानगाह पर छिड़का। भेड़ के बच्चों के
ख़ून के साथ भी यही कुछ किया गया। 23आख़िर
में गुनाह की क़ुरबानी के लिए मख़सूस बकरों को
बादशाह और जमात के सामने लाया गया, और
उन्होंने अपने हाथों को बकरों के सरों पर रख
दिया। 24फिर इमामों ने उन्हें ज़बह करके उनका
ख़ून गुनाह की क़ुरबानी के तौर पर क़ुरबानगाह
पर छिड़का ताकि इसराईल का कफ़्फ़ारा दिया
जाए। क्योंकि बादशाह ने हुक्म दिया था कि
भस्म होनेवाली और गुनाह की क़ुरबानी तमाम
इसराईल के लिए पेश की जाए।

25हिज़क़ियाह ने लावियों को झाँझ, सि-
तार और सरोद थमाकर उन्हें रब के घर में खड़ा
किया। सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक़ हुआ
जो रब ने दाऊद बादशाह, उसके ग़ैबबीन जाद
और नातन नबी की मारिफ़त दी थीं। 26लावी उन
साज़ों के साथ खड़े हो गए जो दाऊद ने बनवाए
थे, और इमाम अपने तुरमों को थामे उनके साथ
खड़े हुए। 27फिर हिज़क़ियाह ने हुक्म दिया कि
भस्म होनेवाली क़ुरबानी क़ुरबानगाह पर पेश की
जाए। जब इमाम यह काम करने लगे तो लावी
रब की तारीफ़ में गीत गाने लगे। साथ साथ तुरम
और दाऊद बादशाह के बनवाए हुए साज़ बजने
लगे। 28तमाम जमात औंधे मुँह झुक गई जबकि
लावी गीत गाते और इमाम तुरम बजाते रहे।
यह सिलसिला इस क़ुरबानी की तकमील तक
जारी रहा। 29इसके बाद हिज़क़ियाह और तमाम
हाज़िरीन दुबारा मुँह के बल झुक गए। 30बादशाह
और बुज़ुर्गों ने लावियों को कहा, “दाऊद और
आसफ़ ग़ैबबीन के ज़बूर गाकर रब की सताइश
करें।” चुनाँचे लावियों ने बड़ी ख़ुशी से हम्दो-सना
के गीत गाए। वह भी औंधे मुँह झुक गए।

31फिर हिज़क़ियाह लोगों से मुख़ातिब हुआ,
“आज आपने अपने आपको रब के लिए वक़्फ़
कर दिया है। अब वह कुछ रब के घर के पास ले
आएँ जो आप ज़बह और सलामती की क़ुरबानी
के तौर पर पेश करना चाहते हैं।” तब लोग
ज़बह और सलामती की अपनी क़ुरबानियाँ ले
आए। नीज़, जिसका भी दिल चाहता था वह
भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ लाया। 32इस तरह
भस्म होनेवाली क़ुरबानी के लिए 70 बैल, 100
मेंढे और भेड़ के 200 बच्चे जमा करके रब
को पेश किए गए। 33उनके अलावा 600 बैल
और 3,000 भेड़-बकरियाँ रब के घर के लिए
मख़सूस की गईं। 34लेकिन इतने जानवरों की
खालों को उतारने के लिए इमाम कम थे, इसलिए
लावियों को उनकी मदद करनी पड़ी। इस काम
के इख़्तिताम तक बल्कि जब तक मज़ीद इमाम
ख़िदमत के लिए तैयार और पाक नहीं हो गए थे
लावी मदद करते रहे। इमामों की निसबत ज़्यादा
लावी पाक-साफ़ हो गए थे, क्योंकि उन्होंने ज़्यादा
लग्न से अपने आपको रब के लिए मख़सूसो-
मुक़द्दस किया था। 35भस्म होनेवाली बेशुमार
क़ुरबानियों के अलावा इमामों ने सलामती की
क़ुरबानियों की चरबी भी जलाई। साथ साथ
उन्होंने मै की नज़रें पेश कीं।

यों रब के घर में ख़िदमत का नए सिरे से
आग़ाज़ हुआ। 36हिज़क़ियाह और पूरी क़ौम ने
ख़ुशी मनाई कि अल्लाह ने यह सब कुछ इतनी
जल्दी से हमें मुहैया किया है।

फ़सह की ईद के लिए दावत

30 हिज़क़ियाह ने इसराईल और यहूदाह
की हर जगह अपने क़ासिदों को
भेजकर लोगों को रब के घर में आने की दावत
दी, क्योंकि वह उनके साथ रब इसराईल के
ख़ुदा की ताज़ीम में फ़सह की ईद मनाना चाहता
था। उसने इफ़राईम और मनस्सी के क़बीलों को
भी दावतनामे भेजे। 2बादशाह ने अपने अफ़सरों
और यरूशलम की पूरी जमात के साथ मिलकर
फ़ैसला किया कि हम यह ईद दूसरे महीने में
मनाएँगे। 3आम तौर पर यह पहले महीने में मनाई
जाती थी, लेकिन उस वक़्त तक ख़िदमत के लिए
तैयार इमाम काफ़ी नहीं थे। क्योंकि अब तक सब
अपने आपको पाक-साफ़ न कर सके। दूसरी बात
यह थी कि लोग इतनी जल्दी से यरूशलम में जमा
न हो सके। 4इन बातों के पेशे-नज़र बादशाह और
तमाम हाज़िरीन इस पर मुत्तफ़िक़ हुए कि फ़सह
की ईद मुलतवी की जाए। 5उन्होंने फ़ैसला किया
कि हम तमाम इसराईलियों को जुनूब में बैर-सबा
से लेकर शिमाल में दान तक दावत देंगे। सब
यरूशलम आएँ ताकि हम मिलकर रब इसराईल
के ख़ुदा की ताज़ीम में फ़सह की ईद मनाएँ।
असल में यह ईद बड़ी देर से हिदायात के मुताबिक़
नहीं मनाई गई थी।

6बादशाह के हुक्म पर क़ासिद इसराईल और
यहूदाह में से गुज़रे। हर जगह उन्होंने लोगों को
बादशाह और उसके अफ़सरों के ख़त पहुँचा दिए।
ख़त में लिखा था,

"ऐ इसराईलियो, रब इब्राहीम, इसहाक़ और
इसराईल के ख़ुदा के पास वापस आएँ! फिर
वह भी आपके पास जो असूरी बादशाहों के हाथ
से बच निकले हैं वापस आएगा। 7अपने बापदादा
और भाइयों की तरह न बनें जो रब अपने बापदादा
के ख़ुदा से बेवफ़ा हो गए थे। यही वजह है कि
उसने उन्हें ऐसी हालत में छोड़ दिया कि जिसने
भी उन्हें देखा उसके रोंगटे खड़े हो गए। आप ख़ुद
इसके गवाह हैं। 8उनकी तरह अड़े न रहें बल्कि
रब के ताबे हो जाएँ। उसके मक़दिस में आएँ,
जो उसने हमेशा के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस कर
दिया है। रब अपने ख़ुदा की ख़िदमत करें ताकि
आप उसके सख़्त ग़ज़ब का निशाना न रहें। 9अगर
आप रब के पास लौट आएँ तो जिन्होंने आपके
भाइयों और उनके बाल-बच्चों को क़ैद कर लिया
है वह उन पर रहम करके उन्हें इस मुल्क में वापस
आने देंगे। क्योंकि रब आपका ख़ुदा मेहरबान और
रहीम है। अगर आप उसके पास वापस आएँ तो
वह अपना मुँह आपसे नहीं फेरेगा।"

10क़ासिद इफ़राईम और मनस्सी के पूरे
क़बायली इलाक़े में से गुज़रे और हर शहर को यह
पैग़ाम पहुँचाया। फिर चलते चलते वह ज़बूलून
तक पहुँच गए। लेकिन अकसर लोग उनकी बात
सुनकर हँस पड़े और उनका मज़ाक़ उड़ाने लगे।
11सिर्फ़ आशर, मनस्सी और ज़बूलून के चंद एक
आदमी फ़रोतनी का इज़हार करके मान गए और
यरूशलम आए। 12यहूदाह में अल्लाह ने लोगों
को तहरीक दी कि उन्होंने यकदिली से उस हुक्म
पर अमल किया जो बादशाह और बुज़ुर्गों ने रब
के फ़रमान के मुताबिक़ दिया था।

हिज़क़ियाह और क़ौम फ़सह की ईद मनाते हैं

13दूसरे महीने में बहुत ज़्यादा लोग बेख़मीरी
रोटी की ईद मनाने के लिए यरूशलम पहुँचे।
14पहले उन्होंने शहर से बुतों की तमाम
क़ुरबानगाहों को दूर कर दिया। बख़ूर जलाने की
छोटी क़ुरबानगाहों को भी उन्होंने उठाकर वादीए-
क़िदरोन में फेंक दिया। 15दूसरे महीने के 14वें
दिन फ़सह के लेलों को ज़बह किया गया। इमामों
और लावियों ने शरमिंदा होकर अपने आपको
ख़िदमत के लिए पाक-साफ़ कर रखा था, और
अब उन्होंने भस्म होनेवाली क़ुरबानियों को रब

के घर में पेश किया। 16वह ख़िदमत के लिए यों
खड़े हो गए जिस तरह मर्दे-ख़ुदा मूसा की शरीअत
में फ़रमाया गया है। लावी क़ुरबानियों का ख़ून
इमामों के पास लाए जिन्होंने उसे क़ुरबानगाह पर
छिड़का।

17लेकिन हाज़िरीन में से बहुत-से लोगों ने
अपने आपको सहीह तौर पर पाक-साफ़ नहीं
किया था। उनके लिए लावियों ने फ़सह के लेलों
को ज़बह किया ताकि उनकी क़ुरबानियों को भी
रब के लिए मख़सूस किया जा सके। 18ख़ासकर
इफ़राईम, मनस्सी, ज़बूलून और इशकार के
अकसर लोगों ने अपने आपको सहीह तौर पर
पाक-साफ़ नहीं किया था। चुनाँचे वह फ़सह के
खाने में उस हालत में शरीक न हुए जिसका
तक़ाज़ा शरीअत करती है। लेकिन हिज़क़ियाह
ने उनकी शफ़ाअत करके दुआ की, "रब जो
मेहरबान है हर एक को मुआफ़ करे 19जो पूरे
दिल से रब अपने बापदादा के ख़ुदा का तालिब
रहने का इरादा रखता है, ख़ाह उसे मक़दिस के
लिए दरकार पाकीज़गी हासिल न भी हो।" 20रब
ने हिज़क़ियाह की दुआ सुनकर लोगों को बहाल
कर दिया।

21यरूशलम में जमाशुदा इसराईलियों ने बड़ी
ख़ुशी से सात दिन तक बेख़मीरी रोटी की ईद
मनाई। हर दिन लावी और इमाम अपने साज़
बजाकर बुलंद आवाज़ से रब की सताइश करते
रहे। 22लावियों ने रब की ख़िदमत करते वक़्त
बड़ी समझदारी दिखाई, और हिज़क़ियाह ने इसमें
उनकी हौसलाअफ़्ज़ाई की।

पूरे हफ़ते के दौरान इसराईली रब को सलामती
की क़ुरबानियाँ पेश करके क़ुरबानी का अपना
हिस्सा खाते और रब अपने बापदादा के ख़ुदा की
तमजीद करते रहे।

23इस हफ़ते के बाद पूरी जमात ने फ़ैसला
किया कि ईद को मज़ीद सात दिन मनाया जाए।
चुनाँचे उन्होंने ख़ुशी से एक और हफ़ते के दौरान
ईद मनाई। 24तब यहूदाह के बादशाह हिज़क़ियाह
ने जमात के लिए 1,000 बैल और 7,000 भेड़-
बकरियाँ पेश कीं जबकि बुज़ुर्गों ने जमात के लिए
1,000 बैल और 10,000 भेड़-बकरियाँ चढ़ाईं।
इतने में मज़ीद बहुत-से इमामों ने अपने आपको
रब की ख़िदमत के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस कर
लिया था।

25जितने भी आए थे ख़ुशी मना रहे थे, ख़ाह
वह यहूदाह के बाशिंदे थे, ख़ाह इमाम, लावी,
इसराईली या इसराईल और यहूदाह में रहनेवाले
परदेसी मेहमान। 26यरूशलम में बड़ी शादमानी
थी, क्योंकि ऐसी ईद दाऊद बादशाह के बेटे
सुलेमान के ज़माने से लेकर उस वक़्त तक
यरूशलम में मनाई नहीं गई थी।

27ईद के इख़्तिताम पर इमामों और लावियों ने
खड़े होकर क़ौम को बरकत दी। और अल्लाह ने
उनकी सुनी, उनकी दुआ आसमान पर उस की
मुक़द्दस सुकूनतगाह तक पहुँची।

पूरे यहूदाह में बुतपरस्ती का ख़ातमा

31 ईद के बाद जमात के तमाम
इसराईलियों ने यहूदाह के शहरों में
जाकर पत्थर के बुतों को टुकड़े टुकड़े कर दिया,
यसीरत देवी के खंबों को काट डाला, ऊँची जगहों
के मंदिरों को ढा दिया और ग़लत क़ुरबानगाहों
को ख़त्म कर दिया। जब तक उन्होंने यह काम
यहूदाह, बिनयमीन, इफ़राईम और मनस्सी के पूरे
इलाक़ों में तकमील तक नहीं पहुँचाया था उन्होंने
आराम न किया। इसके बाद वह सब अपने अपने
शहरों और घरों को चले गए।

रब के घर में इंतज़ाम की इसलाह

2हिज़क़ियाह ने इमामों और लावियों को दुबारा
ख़िदमत के वैसे ही गुरोहों में तक़सीम किया जैसे
पहले थे। उनकी ज़िम्मेदारियाँ भस्म होनेवाली
और सलामती की क़ुरबानियाँ चढ़ाना, रब के घर
में मुख़्तलिफ़ क़िस्म की ख़िदमात अंजाम देना
और हम्दो-सना के गीत गाना थीं।

3जो जानवर बादशाह अपनी मिलकियत से
रब के घर को देता रहा वह भस्म होनेवाली उन

क़ुरबानियों के लिए मुक़र्रर थे जिनको रब की शरीअत के मुताबिक़ हर सुबह-शाम, सबत के दिन, नए चाँद की ईद और दीगर ईदों पर रब के घर में पेश की जाती थीं।

4हिज़क़ियाह ने यरूशलम के बाशिंदों को हुक्म दिया कि अपनी मिलकियत में से इमामों और लावियों को कुछ दें ताकि वह अपना वक़्त रब की शरीअत की तकमील के लिए वक़्फ़ कर सकें।
5बादशाह का यह एलान सुनते ही इसराईली फ़राख़दिली से ग़ल्ला, अंगूर के रस, ज़ैतून के तेल, शहद और खेतों की बाक़ी पैदावार का पहला फल रब के घर में लाए। बहुत कुछ इकट्ठा हुआ, क्योंकि लोगों ने अपनी पैदावार का पूरा दसवाँ हिस्सा वहाँ पहुँचाया। 6यहूदाह के बाक़ी शहरों के बाशिंदे भी साथ रहनेवाले इसराईलियों समेत अपनी पैदावार का दसवाँ हिस्सा रब के घर में लाए। जो भी बैल, भेड़-बकरियाँ और बाक़ी चीज़ें उन्होंने रब अपने ख़ुदा के लिए वक़्फ़ की थीं वह रब के घर में पहुँचीं जहाँ लोगों ने उन्हें बड़े ढेर लगाकर इकट्ठा किया। 7चीज़ें जमा करने का यह सिलसिला तीसरे महीने में शुरू हुआ और सातवें महीने में इख़्तिताम को पहुँचा। 8जब हिज़क़ियाह और उसके अफ़सरों ने आकर देखा कि कितनी चीज़ें इकट्ठी हो गई हैं तो उन्होंने रब और उस की क़ौम इसराईल को मुबारक कहा।

9जब हिज़क़ियाह ने इमामों और लावियों से इन ढेरों के बारे में पूछा 10तो सदोक़ के ख़ानदान का इमामे-आज़म अज़रियाह ने जवाब दिया, "जब से लोग अपने हदिये यहाँ ले आते हैं उस वक़्त से हम जी भरकर खा सकते हैं बल्कि काफ़ी कुछ बच भी जाता है। क्योंकि रब ने अपनी क़ौम को इतनी बरकत दी है कि यह सब कुछ बाक़ी रह गया है।"

11तब हिज़क़ियाह ने हुक्म दिया कि रब के घर में गोदाम बनाए जाएँ। जब ऐसा किया गया 12तो रज़ाकाराना हदिये, पैदावार का दसवाँ हिस्सा और रब के लिए मख़सूस किए गए अतियात उनमें रखे गए। कूननियाह लावी इन चीज़ों का इंचार्ज बना जबकि उसका भाई सिमई उसका मददगार मुक़र्रर हुआ। 13इमामे-आज़म अज़रियाह रब के घर के पूरे इंतज़ाम का इंचार्ज था, इसलिए हिज़क़ियाह बादशाह ने उसके साथ मिलकर दस निगरान मुक़र्रर किए जो कूननियाह और सिमई के तहत ख़िदमत अंजाम दें। उनके नाम यहियेल, अज़ज़ियाह, नहत, असाहेल, यरीमोत, यूज़बद, इलियेल, इसमाकियाह, महत और बिनायाह थे।

14जो लावी मशरिक़ी दरवाज़े का दरबान था उसका नाम क़ोरे बिन यिमना था। अब उसे रब को रज़ाकाराना तौर पर दिए गए हदिये और उसके लिए मख़सूस किए गए अतीए तक़सीम करने का निगरान बनाया गया। 15अदन, मिन्यमीन, यशुअ, समायाह, अमरियाह और सकनियाह उसके मददगार थे। उनकी ज़िम्मेदारी लावियों के शहरों में रहनेवाले इमामों को उनका हिस्सा देना थी। बड़ी वफ़ादारी से वह ख़याल रखते थे कि ख़िदमत के मुख़्तलिफ़ गुरोहों के तमाम इमामों को वह हिस्सा मिल जाए जो उनका हक़ बनता था, ख़ाह वह बड़े थे या छोटे। 16जो अपने गुरोह के साथ रब के घर में ख़िदमत करता था उसे उसका हिस्सा बराहे-रास्त मिलता था। इस सिलसिले में लावी के क़बीले के जितने मर्दों और लड़कों की उम्र तीन साल या इससे ज़ायद थी उनकी फ़हरिस्त बनाई गई। 17इन फ़हरिस्तों में इमामों को उनके कुंबों के मुताबिक़ दर्ज किया गया। इसी तरह 20 साल या इससे ज़ायद के लावियों को उन ज़िम्मेदारियों और ख़िदमत के मुताबिक़ जो वह अपने गुरोहों में सँभालते थे फ़हरिस्तों में दर्ज किया गया। 18ख़ानदानों की औरतें और बेटे-बेटियाँ छोटे बच्चों समेत भी इन फ़हरिस्तों में दर्ज थीं। चूँकि उनके मर्द वफ़ादारी से रब के घर में ख़िदमत करते थे, इसलिए यह दीगर अफ़राद भी मख़सूसो-मुक़द्दस समझे जाते थे। 19जो इमाम शहरों से बाहर उन चरागाहों में रहते थे जो उन्हें हारून की औलाद की हैसियत से मिली थीं उन्हें भी हिस्सा मिलता था। हर शहर के लिए आदमी चुने गए जो इमामों के ख़ानदानों के मर्दों और

फ़हरिस्त में दर्ज तमाम लावियों को वह हिस्सा
दिया करें जो उनका हक़ था।
20हिज़क़ियाह बादशाह ने हुक्म दिया कि पूरे
यहूदाह में ऐसा ही किया जाए। उसका काम रब
के नज़दीक अच्छा, मुंसिफ़ाना और वफ़ादाराना
था। **21**जो कुछ उसने अल्लाह के घर में इंतज़ाम
दुबारा चलाने और शरीअत को क़ायम करने के
सिलसिले में किया उसके लिए वह पूरे दिल
से अपने ख़ुदा का तालिब रहा। नतीजे में उसे
कामयाबी हासिल हुई।

असूरी यहूदाह में घुस आते हैं

32 हिज़क़ियाह ने वफ़ादारी से यह तमाम
मनसूबे तकमील तक पहुँचाए। फिर
एक दिन असूर का बादशाह सनहेरिब अपनी
फ़ौज के साथ यहूदाह में घुस आया और क़िलाबंद
शहरों का मुहासरा करने लगा ताकि उन पर
क़ब्ज़ा करे। **2**जब हिज़क़ियाह को इत्तला मिली
कि सनहेरिब आकर यरूशलम पर हमला करने
की तैयारियाँ कर रहा है **3**तो उसने अपने सरकारी
और फ़ौजी अफ़सरों से मशवरा किया। ख़याल
यह पेश किया गया कि यरूशलम शहर के बाहर
तमाम चश्मों को मलबे से बंद किया जाए। सब
मुत्तफ़िक़ हो गए, **4**क्योंकि उन्होंने कहा, "असूर
के बादशाह को यहाँ आकर कसरत का पानी क्यों
मिले?" बहुत-से आदमी जमा हुए और मिलकर
चश्मों को मलबे से बंद कर दिया। उन्होंने उस
ज़मीनदोज़ नाले का मुँह भी बंद कर दिया जिसके
ज़रीए पानी शहर में पहुँचता था।
5इसके अलावा हिज़क़ियाह ने बड़ी मेह-
नत से फ़सील के टूटे-फूटे हिस्सों की मरम्मत
करवाकर उस पर बुर्ज बनवाए। फ़सील के बाहर
उसने एक और चारदीवारी तामीर की जबकि
यरूशलम के उस हिस्से के चबूतरे मज़ीद मज़बूत
करवाए जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है। साथ
साथ उसने बड़ी मिक़दार में हथियार और ढालें
बनवाईं। **6**हिज़क़ियाह ने लोगों पर फ़ौजी अफ़सर
मुक़र्रर किए।
फिर उसने सबको दरवाज़े के साथ-
वाले चौक पर इकट्ठा करके उनकी हौसला-
अफ़्ज़ाई की, **7**"मज़बूत और दिलेर हों! असूर
के बादशाह और उस की बड़ी फ़ौज को देखकर
मत डरें, क्योंकि जो ताक़त हमारे साथ है वह उसे
हासिल नहीं है। **8**असूर के बादशाह के लिए सिर्फ़
ख़ाकी आदमी लड़ रहे हैं जबकि रब हमारा ख़ुदा
हमारे साथ है। वही हमारी मदद करके हमारे लिए
लड़ेगा!" हिज़क़ियाह बादशाह के इन अलफ़ाज़
से लोगों की बड़ी हौसलाअफ़्ज़ाई हुई।

असूरी यरूशलम का मुहासरा करते हैं

9जब असूर का बादशाह सनहेरिब अपनी पूरी
फ़ौज के साथ लकीस का मुहासरा कर रहा था
तो उसने वहाँ से यरूशलम को वफ़द भेजा ताकि
यहूदाह के बादशाह हिज़क़ियाह और यहूदाह के
तमाम बाशिंदों को पैग़ाम पहुँचाए,
10"शाहे-असूर सनहेरिब फ़रमाते हैं, तुम्हारा
भरोसा किस चीज़ पर है कि तुम मुहासरे के
वक़्त यरूशलम को छोड़ना नहीं चाहते? **11**जब
हिज़क़ियाह कहता है, 'रब हमारा ख़ुदा हमें असूर
के बादशाह से बचाएगा' तो वह तुम्हें ग़लत राह पर
ला रहा है। इसका सिर्फ़ यह नतीजा निकलेगा कि
तुम भूके और प्यासे मर जाओगे। **12**हिज़क़ियाह
ने तो इस ख़ुदा की बेहुरमती की है। क्योंकि उसने
उस की ऊँची जगहों के मंदिरों और क़ुरबानगाहों
को ढाकर यहूदाह और यरूशलम से कहा है कि
एक ही क़ुरबानगाह के सामने परस्तिश करें, एक
ही क़ुरबानगाह पर क़ुरबानियाँ चढ़ाएँ। **13**क्या
तुम्हें इल्म नहीं कि मैं और मेरे बापदादा ने दीगर
ममालिक की तमाम क़ौमों के साथ क्या कुछ
किया? क्या इन क़ौमों के देवता अपने मुल्कों
को मुझसे बचाने के क़ाबिल रहे हैं? हरगिज़
नहीं! **14**मेरे बापदादा ने इन सबको तबाह कर
दिया, और कोई भी देवता अपनी क़ौम को मुझसे
बचा न सका। तो फिर तुम्हारा देवता तुम्हें किस
तरह मुझसे बचाएगा? **15**हिज़क़ियाह से फ़रेब न
खाओ! वह इस तरह तुम्हें ग़लत राह पर न लाए।

उस की बात पर एतमाद मत करना, क्योंकि
अब तक किसी भी क़ौम या सलतनत का देवता
अपनी क़ौम को मेरे या मेरे बापदादा के क़ब्ज़े से
छुटकारा न दिला सका। तो फिर तुम्हारा देवता
तुम्हें मेरे क़ब्ज़े से किस तरह बचाएगा?”

16ऐसी बातें करते करते सनहेरिब के अफ़सर
रब इसराईल के ख़ुदा और उसके ख़ादिम
हिज़क़ियाह पर कुफ़र बकते गए।

17असूर के बादशाह ने वफ़द के हाथ ख़त
भी भेजा जिसमें उसने रब इसराईल के ख़ुदा
की इहानत की। ख़त में लिखा था, “जिस तरह
दीगर ममालिक के देवता अपनी क़ौमों को मुझसे
महफ़ूज़ न रख सके उसी तरह हिज़क़ियाह का
देवता भी अपनी क़ौम को मेरे क़ब्ज़े से नहीं
बचाएगा।”

18असूरी अफ़सरों ने बुलंद आवाज़ से इबरानी
ज़बान में बादशाह का पैग़ाम फ़सील पर खड़े
यरूशलम के बाशिंदों तक पहुँचाया ताकि उनमें
ख़ौफ़ो-हिरास फैल जाए और यों शहर पर क़ब्ज़ा
करने में आसानी हो जाए। 19इन अफ़सरों ने
यरूशलम के ख़ुदा का यों तमस्ख़ुर उड़ाया जैसा
वह दुनिया की दीगर क़ौमों के देवताओं का उड़ाया
करते थे, हालाँकि दीगर माबूद सिर्फ़ इनसानी
हाथों की पैदावार थे।

रब सनहेरिब को सज़ा देता है

20फिर हिज़क़ियाह बादशाह और आमूस के
बेटे यसायाह नबी ने चिल्लाते हुए आसमान पर
तख़्तनशीन ख़ुदा से इलतमास की। 21जवाब
में रब ने असूरियों की लशकरगाह में एक
फ़रिश्ता भेजा जिसने तमाम बेहतरीन फ़ौजियों
को अफ़सरों और कमाँडरों समेत मौत के घाट
उतार दिया। चुनाँचे सनहेरिब शरमिंदा होकर
अपने मुल्क लौट गया। वहाँ एक दिन जब वह
अपने देवता के मंदिर में दाख़िल हुआ तो उसके
कुछ बेटों ने उसे तलवार से क़त्ल कर दिया।

22इस तरह रब ने हिज़क़ियाह और यरू-
शलम के बाशिंदों को शाहे-असूर सनहेरिब
से छुटकारा दिलाया। उसने उन्हें दूसरी क़ौमों
के हमलों से भी महफ़ूज़ रखा, और चारों
तरफ़ अमनो-अमान फैल गया। 23बेशुमार लोग
यरूशलम आए ताकि रब को क़ुरबानियाँ पेश करें
और हिज़क़ियाह बादशाह को क़ीमती तोह्फ़े दें।
उस वक़्त से तमाम क़ौमें उसका बड़ा एहतराम
करने लगीं।

हिज़क़ियाह के आख़िरी साल

24उन दिनों में हिज़क़ियाह इतना बीमार हुआ
कि मरने की नौबत आ पहुँची। तब उसने रब
से दुआ की, और रब ने उस की सुनकर
एक इलाही निशान से इसकी तसदीक़ की।
25लेकिन हिज़क़ियाह मग़रूर हुआ, और उसने
इस मेहरबानी का मुनासिब जवाब न दिया। नतीजे
में रब उससे और यहूदाह और यरूशलम से
नाराज़ हुआ। 26फिर हिज़क़ियाह और यरूशलम
के बाशिंदों ने पछताकर अपना ग़ुरूर छोड़ दिया,
इसलिए रब का ग़ज़ब हिज़क़ियाह के जीते-जी
उन पर नाज़िल न हुआ।

27हिज़क़ियाह को बहुत दौलत और इज़्ज़त
हासिल हुई, और उसने अपनी सोने-चाँदी,
जवाहिर, बलसान के क़ीमती तेल, ढालों और
बाक़ी क़ीमती चीज़ों के लिए ख़ास ख़ज़ाने
बनवाए। 28उसने ग़ल्ला, अंगूर का रस और ज़ैतून
का तेल महफ़ूज़ रखने के लिए गोदाम तामीर किए
और अपने गाय-बैलों और भेड़-बकरियों को रखने
की बहुत-सी जगहें भी बनवा लीं। 29उसके गाय-
बैलों और भेड़-बकरियों में इज़ाफ़ा होता गया,
और उसने कई नए शहरों की बुनियाद रखी,
क्योंकि अल्लाह ने उसे निहायत ही अमीर बना
दिया था। 30हिज़क़ियाह ही ने जैहून चश्मे का
मुँह बंद करके उसका पानी सुरंग के ज़रीए मग़रिब
की तरफ़ यरूशलम के उस हिस्से में पहुँचाया जो
‘दाऊद का शहर’ कहलाता है। जो भी काम उसने
शुरू किया उसमें वह कामयाब रहा। 31एक दिन
बाबल के हुक्मरानों ने उसके पास वफ़द भेजा
ताकि उस इलाही निशान के बारे में मालूमात

हासिल करें जो यहूदाह में हुआ था। उस वक़्त अल्लाह ने उसे अकेला छोड़ दिया ताकि उसके दिल की हक़ीक़ी हालत जाँच ले।

32बाक़ी जो कुछ हिज़क़ियाह की हुकूमत के दौरान हुआ और जो नेक काम उसने किया वह 'आमूस के बेटे यसायाह नबी की रोया' में क़लमबंद है जो 'शाहाने-यहूदाहो-इसराईल' की किताब में दर्ज है। 33जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे शाही क़ब्रिस्तान की एक ऊँची जगह पर दफ़नाया गया। जब जनाज़ा निकला तो यहूदाह और यरूशलम के तमाम बाशिंदों ने उसका एहतराम किया। फिर उसका बेटा मनस्सी तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह मनस्सी

33 मनस्सी 12 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया 55 साल था। 2मनस्सी का चाल-चलन रब को नापसंद था। उसने उन क़ौमों के क़ाबिले-घिन रस्मो-रिवाज अपना लिए जिन्हें रब ने इसराईलियों के आगे से निकाल दिया था। 3ऊँची जगहों के जिन मंदिरों को उसके बाप हिज़क़ियाह ने ढा दिया था उन्हें उसने नए सिरे से तामीर किया। उसने बाल देवताओं की क़ुरबानगाहें बनवाईं और यसीरत देवी के खंबे खड़े किए। इनके अलावा वह सूरज, चाँद बल्कि आसमान के पूरे लशकर को सिजदा करके उनकी ख़िदमत करता था। 4उसने रब के घर में भी अपनी क़ुरबानगाहें खड़ी कीं, हालाँकि रब ने इस मक़ाम के बारे में फ़रमाया था, "यरूशलम में मेरा नाम अबद तक क़ायम रहेगा।" 5लेकिन मनस्सी ने परवा न की बल्कि रब के घर के दोनों सहनों में आसमान के पूरे लशकर के लिए क़ुरबानगाहें बनवाईं। 6यहाँ तक कि उसने वादीए-बिन-हिन्नूम में अपने बेटों को भी क़ुरबान करके जला दिया। जादूगरी, ग़ैबदानी और अफ़सूँगरी करने के अलावा वह मुरदों की रूहों से राबिता करनेवालों और रम्मालों से भी मशवरा करता था। ग़रज़ उसने बहुत कुछ किया जो रब को नापसंद था और उसे तैश दिलाया। 7देवी का बुत बनवाकर उसने उसे अल्लाह के घर में खड़ा किया, हालाँकि रब ने दाऊद और उसके बेटे सुलेमान से कहा था, "इस घर और इस शहर यरूशलम में जो मैंने तमाम इसराईली क़बीलों में से चुन लिया है मैं अपना नाम अबद तक क़ायम रखूँगा। 8अगर इसराईली एहतियात से मेरे उन तमाम अहकाम और हिदायात की पैरवी करें जो मूसा ने शरीअत में उन्हें दिए तो मैं कभी नहीं होने दूँगा कि इसराईलियों को उस मुल्क से जिलावतन कर दिया जाए जो मैंने उनके बापदादा को अता किया था।" 9लेकिन मनस्सी ने यहूदाह और यरूशलम के बाशिंदों को ऐसे ग़लत काम करने पर उकसाया जो उन क़ौमों से भी सरज़द नहीं हुए थे जिन्हें रब ने मुल्क में दाख़िल होते वक़्त उनके आगे से तबाह कर दिया था।

10गो रब ने मनस्सी और अपनी क़ौम को समझाया, लेकिन उन्होंने परवा न की। 11तब रब ने असूरी बादशाह के कमाँडरों को यहूदाह पर हमला करने दिया। उन्होंने मनस्सी को पकड़कर उस की नाक में नकेल डाली और उसे पीतल की ज़ंजीरों में जकड़कर बाबल ले गए। 12जब वह यों मुसीबत में फँस गया तो मनस्सी रब अपने ख़ुदा का ग़ज़ब ठंडा करने की कोशिश करने लगा और अपने आपको अपने बापदादा के ख़ुदा के हुज़ूर पस्त कर दिया।

13और रब ने उस की इलतमास पर ध्यान देकर उस की सुनी। उसे यरूशलम वापस लाकर उसने उस की हुकूमत बहाल कर दी। तब मनस्सी ने जान लिया कि रब ही ख़ुदा है।

14इसके बाद उसने 'दाऊद के शहर' की बैरूनी फ़सील नए सिरे से बनवाई। यह फ़सील जैहून चश्मे के मग़रिब से शुरू हुई और वादीए-क़िदरोन में से गुज़रकर मछली के दरवाज़े तक पहुँच गई। इस दीवार ने रब के घर की पूरी पहाड़ी बनाम ओफ़ल का इहाता कर लिया और बहुत बुलंद थी। इसके अलावा बादशाह ने यहूदाह के तमाम

क़िलाबंद शहरों पर फ़ौजी अफ़सर मुक़र्रर किए।
15उसने अजनबी माबूदों को बुत समेत रब के घर
से निकाल दिया। जो क़ुरबानगाहें उसने रब के घर
की पहाड़ी और बाक़ी यरूशलम में खड़ी की थीं
उन्हें भी उसने ढाकर शहर से बाहर फेंक दिया।
16फिर उसने रब की क़ुरबानगाह को नए सिरे से
तामीर करके उस पर सलामती और शुक्रगुज़ारी
की क़ुरबानियाँ चढ़ाईं। साथ साथ उसने यहूदाह
के बाशिंदों से कहा कि रब इसराईल के ख़ुदा की
ख़िदमत करें। 17गो लोग इसके बाद भी ऊँची
जगहों पर अपनी क़ुरबानियाँ पेश करते थे, लेकिन
अब से वह इन्हें सिर्फ़ रब अपने ख़ुदा को पेश करते
थे।

18बाक़ी जो कुछ मनस्सी की हुकूमत के
दौरान हुआ वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख़'
की किताब में दर्ज है। वहाँ उस की अपने ख़ुदा
से दुआ भी बयान की गई है और वह बातें भी जो
ग़ैबबीनों ने रब इसराईल के ख़ुदा के नाम में उसे
बताई थीं। 19ग़ैबबीनों की किताब में भी मनस्सी
की दुआ बयान की गई है और यह कि अल्लाह
ने किस तरह उस की सुनी। वहाँ उसके तमाम
गुनाहों और बेवफ़ाई का ज़िक्र है, नीज़ उन ऊँची
जगहों की फ़हरिस्त दर्ज है जहाँ उसने अल्लाह के
ताबे हो जाने से पहले मंदिर बनाकर यसीरत देवी
के खंबे और बुत खड़े किए थे। 20जब मनस्सी
मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे उसके
महल में दफ़न किया गया। फिर उसका बेटा अमून
तख़्तनशीन हुआ।

यहूदाह का बादशाह अमून

21अमून 22 साल की उम्र में बादशाह बना
और दो साल तक यरूशलम में हुकूमत करता
रहा। 22अपने बाप मनस्सी की तरह वह ऐसा
ग़लत काम करता रहा जो रब को नापसंद था।
जो बुत उसके बाप ने बनवाए थे उन्हीं की पूजा
वह करता और उन्हीं को क़ुरबानियाँ पेश करता
था। 23लेकिन उसमें और मनस्सी में यह फ़रक़
था कि बेटे ने अपने आपको रब के सामने पस्त
न किया बल्कि उसका क़ुसूर मज़ीद संगीन होता
गया। 24एक दिन अमून के कुछ अफ़सरों ने
उसके ख़िलाफ़ साज़िश करके उसे महल में क़त्ल
कर दिया। 25लेकिन उम्मत ने तमाम साज़िश
करनेवालों को मार डाला और अमून की जगह
उसके बेटे यूसियाह को बादशाह बना दिया।

यूसियाह बादशाह बुतपरस्ती की मुख़ालफ़त करता है

34 यूसियाह 8 साल की उम्र में बादशाह
बना, और यरूशलम में रहकर उस की
हुकूमत का दौरानिया 31 साल था। 2यूसियाह
वह कुछ करता रहा जो रब को पसंद था। वह
अपने बाप दाऊद के अच्छे नमूने पर चलता रहा
और उससे न दाईं, न बाईं तरफ़ हटा।

3अपनी हुकूमत के आठवें साल में वह अपने
बाप दाऊद के ख़ुदा की मरज़ी तलाश करने लगा,
गो उस वक़्त वह जवान ही था। अपनी हुकूमत
के 12वें साल में वह ऊँची जगहों के मंदिरों,
यसीरत देवी के खंबों और तमाम तराशे और
ढाले हुए बुतों को पूरे मुल्क से दूर करने लगा।
यों तमाम यरूशलम और यहूदाह इन चीज़ों से
पाक-साफ़ हो गया। 4बादशाह के ज़ेरे-निगरानी
बाल देवताओं की क़ुरबानगाहों को ढा दिया गया।
बख़ूर की जो क़ुरबानगाहें उनके ऊपर थीं उन्हें
उसने टुकड़े टुकड़े कर दिया। यसीरत देवी के
खंबों और तराशे और ढाले हुए बुतों को ज़मीन
पर पटख़कर उसने उन्हें पीसकर उनकी क़ब्रों पर
बिखेर दिया जिन्होंने जीते-जी उनको क़ुरबानियाँ
पेश की थीं। 5बुतपरस्त पुजारियों की हड्डियों
को उनकी अपनी क़ुरबानगाहों पर जलाया गया।
इस तरह से यूसियाह ने यरूशलम और यहूदाह
को पाक-साफ़ कर दिया। 6-7यह उसने न सिर्फ़
यहूदाह बल्कि मनस्सी, इफ़राईम, शमाऊन और
नफ़ताली तक के शहरों में इर्दगिर्द के खंडरात
समेत भी किया। उसने क़ुरबानगाहों को गिराकर
यसीरत देवी के खंबों और बुतों को टुकड़े टुकड़े
करके चकनाचूर कर दिया। तमाम इसराईल की

बख़ूर की क़ुरबानगाहों को उसने ढा दिया। इसके बाद वह यरूशलम वापस चला गया।

रब के घर की मरम्मत

8अपनी हुकूमत के 18वें साल में यूसियाह ने साफ़न बिन असलियाह, यरूशलम पर मुक़र्रर अफ़सर मासियाह और बादशाह के मुशीरे-ख़ास युआख़ बिन युआख़ज़ को रब अपने ख़ुदा के घर के पास भेजा ताकि उस की मरम्मत करवाएँ। उस वक़्त मुल्क और रब के घर को पाक-साफ़ करने की मुहिम जारी थी। 9इमामे-आज़म ख़िलक़ियाह के पास जाकर उन्होंने उसे वह पैसे दिए जो लावी के दरबानों ने रब के घर में जमा किए थे। यह हदिये मनस्सी और इफ़राईम के बाशिंदों, इसराईल के तमाम बचे हुए लोगों और यहूदाह, बिनयमीन और यरूशलम के रहनेवालों की तरफ़ से पेश किए गए थे।

10अब यह पैसे उन ठेकेदारों के हवाले कर दिए गए जो रब के घर की मरम्मत करवा रहे थे। इन पैसों से ठेकेदारों ने उन कारीगरों की उजरत अदा की जो रब के घर की मरम्मत करके उसे मज़बूत कर रहे थे। 11कारीगरों और तामीर करनेवालों ने इन पैसों से तराशे हुए पत्थर और शहतीरों की लकड़ी भी ख़रीदी। इमारतों में शहतीरों को बदलने की ज़रूरत थी, क्योंकि यहूदाह के बादशाहों ने उन पर ध्यान नहीं दिया था, लिहाज़ा वह गल गए थे। 12इन आदमियों ने वफ़ादारी से ख़िदमत सरंजाम दी। चार लावी इनकी निगरानी करते थे जिनमें यहत और अबदियाह मिरारी के ख़ानदान के थे जबकि ज़करियाह और मसुल्लाम क़िहात के ख़ानदान के थे। जितने लावी साज़ बजाने में माहिर थे 13वह मज़दूरों और तमाम दीगर कारीगरों पर मुक़र्रर थे। कुछ और लावी मुंशी, निगरान और दरबान थे।

रब के घर में शरीअत की किताब मिल जाती है

14जब वह पैसे बाहर लाए गए जो रब के घर में जमा हुए थे तो ख़िलक़ियाह को शरीअत की वह किताब मिली जो रब ने मूसा की मारिफ़त दी थी। 15उसे मीरमुंशी साफ़न को देकर उसने कहा, “मुझे रब के घर में शरीअत की किताब मिली है।” 16तब साफ़न किताब को लेकर बादशाह के पास गया और उसे इत्तला दी, “जो भी ज़िम्मेदारी आपके मुलाज़िमों को दी गई उन्हें वह अच्छी तरह पूरा कर रहे हैं। 17उन्होंने रब के घर में जमाशुदा पैसे मरम्मत पर मुक़र्रर ठेकेदारों और बाक़ी काम करनेवालों को दे दिए हैं।” 18फिर साफ़न ने बादशाह को बताया, “ख़िलक़ियाह ने मुझे एक किताब दी है।” किताब को खोलकर वह बादशाह की मौजूदगी में उस की तिलावत करने लगा।

19किताब की बातें सुनकर बादशाह ने रंजीदा होकर अपने कपड़े फाड़ लिए। 20उसने ख़िलक़ियाह, अख़ीक़ाम बिन साफ़न, अब्दोन बिन मीकाह, मीरमुंशी साफ़न और अपने ख़ास ख़ादिम असायाह को बुलाकर उन्हें हुक्म दिया, 21“जाकर मेरी और इसराईल और यहूदाह के बचे हुए अफ़राद की ख़ातिर रब से इस किताब में दर्ज बातों के बारे में दरियाफ़्त करें। रब का जो ग़ज़ब हम पर नाज़िल होनेवाला है वह निहायत सख़्त है, क्योंकि हमारे बापदादा न रब के फ़रमान के ताबे रहे, न उन हिदायात के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी है जो किताब में दर्ज की गई हैं।”

22चुनाँचे ख़िलक़ियाह बादशाह के भेजे हुए चंद आदमियों के साथ ख़ुलदा नबिया को मिलने गया। ख़ुलदा का शौहर सल्लूम बिन तोक़हत बिन ख़सरा रब के घर के कपड़े सँभालता था। वह यरूशलम के नए इलाक़े में रहते थे। 23-24ख़ुलदा ने उन्हें जवाब दिया,

“रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि जिस आदमी ने तुम्हें भेजा है उसे बता देना, ‘रब

फ़रमाता है कि मैं इस शहर और इसके बाशिंदों पर आफ़त नाज़िल करूँगा। वह तमाम लानतें पूरी हो जाएँगी जो बादशाह के हुज़ूर पढ़ी गई किताब में बयान की गई हैं। 25क्योंकि मेरी क़ौम ने मुझे तर्क करके दीगर माबूदों को क़ुरबानियाँ पेश की हैं और अपने हाथों से बुत बनाकर मुझे तैश दिलाया है। मेरा ग़ज़ब इस मक़ाम पर नाज़िल हो जाएगा और कभी ख़त्म नहीं होगा।’ 26लेकिन यहूदाह के बादशाह के पास जाएँ जिसने आपको रब से दरियाफ़्त करने के लिए भेजा है और उसे बता दें कि रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है, ‘मेरी बातें सुनकर 27तेरा दिल नरम हो गया है। जब तुझे पता चला कि मैंने इस मक़ाम और इसके बाशिंदों के ख़िलाफ़ बात की है तो तूने अपने आपको अल्लाह के सामने पस्त कर दिया। तूने बड़ी इंकिसारी से रंजीदा होकर अपने कपड़े फाड़ लिए और मेरे हुज़ूर फूट फूटकर रोया। रब फ़रमाता है कि यह देखकर मैंने तेरी सुनी है। 28जब तू मेरे कहने पर मरकर अपने बापदादा से जा मिलेगा तो सलामती से दफ़न होगा। जो आफ़त मैं शहर और उसके बाशिंदों पर नाज़िल करूँगा वह तू ख़ुद नहीं देखेगा’।”

अफ़सर बादशाह के पास वापस गए और उसे ख़ुलदा का जवाब सुना दिया।

यूसियाह रब से अहद बाँधता है

29तब बादशाह यहूदाह और यरूशलम के तमाम बुज़ुर्गों को बुलाकर 30रब के घर में गया। सब लोग छोटे से लेकर बड़े तक उसके साथ गए यानी यहूदाह के आदमी, यरूशलम के बाशिंदे, इमाम और लावी। वहाँ पहुँचकर जमात के सामने अहद की उस पूरी किताब की तिलावत की गई जो रब के घर में मिली थी।

31फिर बादशाह ने अपने सतून के पास खड़े होकर रब के हुज़ूर अहद बाँधा और वादा किया, “हम रब की पैरवी करेंगे, हम पूरे दिलो-जान से उसके अहकाम और हिदायात पूरी करके इस किताब में दर्ज अहद की बातें क़ायम रखेंगे।” 32यूसियाह ने मुतालबा किया कि यरूशलम और यहूदाह के तमाम बाशिंदे अहद में शरीक हो जाएँ। उस वक़्त से यरूशलम के बाशिंदे अपने बापदादा के ख़ुदा के अहद के साथ लिपटे रहे।

33यूसियाह ने इसराईल के पूरे मुल्क से तमाम घिनौने बुतों को दूर कर दिया। इसराईल के तमाम बाशिंदों को उसने ताकीद की, “रब अपने ख़ुदा की ख़िदमत करें।” चुनाँचे यूसियाह के जीते-जी वह रब अपने बापदादा की राह से दूर न हुए।

यूसियाह फ़सह की ईद मनाता है

35 फिर यूसियाह ने रब की ताज़ीम में फ़सह की ईद मनाई। पहले महीने के 14वें दिन फ़सह का लेला ज़बह किया गया। 2बादशाह ने इमामों को काम पर लगाकर उनकी हौसलाअफ़्ज़ाई की कि वह रब के घर में अपनी ख़िदमत अच्छी तरह अंजाम दें। 3लावियों को तमाम इसराईलियों को शरीअत की तालीम देने की ज़िम्मेदारी दी गई थी, और साथ साथ उन्हें रब की ख़िदमत के लिए मख़सूस किया गया था। उनसे यूसियाह ने कहा,

“मुक़द्दस संदूक़ को उस इमारत में रखें जो इसराईल के बादशाह दाऊद के बेटे सुलेमान ने तामीर किया। उसे अपने कंधों पर उठाकर इधर-उधर ले जाने की ज़रूरत नहीं है बल्कि अब से अपना वक़्त रब अपने ख़ुदा और उस की क़ौम इसराईल की ख़िदमत में सर्फ़ करें। 4उन ख़ानदानी गुरोहों के मुताबिक़ ख़िदमत के लिए तैयार रहें जिनकी तरतीब दाऊद बादशाह और उसके बेटे सुलेमान ने लिखकर मुक़र्रर की थी। 5फिर मक़दिस में उस जगह खड़े हो जाएँ जो आपके ख़ानदानी गुरोह के लिए मुक़र्रर है और उन ख़ानदानों की मदद करें जो क़ुरबानियाँ चढ़ाने के लिए आते हैं और जिनकी ख़िदमत करने की ज़िम्मेदारी आपको दी गई है। 6अपने आपको ख़िदमत के लिए मख़सूस करें और फ़सह के लेले ज़बह करके अपने हमवतनों के लिए इस तरह

तैयार करें जिस तरह रब ने मूसा की मारिफ़त
हुक्म दिया था।”
7ईद की ख़ुशी में यूसियाह ने ईद मना-
नेवालों को अपनी मिलकियत में से 30,000
भेड़-बकरियों के बच्चे दिए। यह जानवर फ़सह की
क़ुरबानी के तौर पर चढ़ाए गए जबकि बादशाह
की तरफ़ से 3,000 बैल दीगर क़ुरबानियों के
लिए इस्तेमाल हुए। 8इसके अलावा बादशाह के
अफ़सरों ने भी अपनी ख़ुशी से क़ौम, इमामों और
लावियों को जानवर दिए। अल्लाह के घर के
सबसे आला अफ़सरों ख़िलक़ियाह, ज़करियाह
और यहियेल ने दीगर इमामों को फ़सह की
क़ुरबानी के लिए 2,600 भेड़-बकरियों के बच्चे
दिए, नीज़ 300 बैल। 9इसी तरह लावियों
के राहनुमाओं ने दीगर लावियों को फ़सह की
क़ुरबानी के लिए 5,000 भेड़-बकरियों के बच्चे
दिए, नीज़ 500 बैल। उनमें से तीन भाई बनाम
कूननियाह, समायाह और नतनियेल थे जबकि
दूसरों के नाम हसबियाह, यइयेल और यूज़बद
थे। 10जब हर एक ख़िदमत के लिए तैयार था तो
इमाम अपनी अपनी जगह पर और लावी अपने
अपने गुरोहों के मुताबिक़ खड़े हो गए जिस तरह
बादशाह ने हिदायत दी थी। 11लावियों ने फ़सह
के लेलों को ज़बह करके उनकी खालें उतारीं
जबकि इमामों ने लावियों से जानवरों का ख़ून
लेकर क़ुरबानगाह पर छिड़का। 12जो कुछ भस्म
होनेवाली क़ुरबानियों के लिए मुक़र्रर था उसे क़ौम
के मुख़्तलिफ़ ख़ानदानों के लिए एक तरफ़ रख
दिया गया ताकि वह उसे बाद में रब को क़ुरबानी
के तौर पर पेश कर सकें, जिस तरह मूसा की
शरीअत में लिखा है। बैलों के साथ भी ऐसा
ही किया गया। 13फ़सह के लेलों को हिदायात
के मुताबिक़ आग पर भूना गया जबकि बाक़ी
गोश्त को मुख़्तलिफ़ क़िस्म की देगों में उबाला
गया। ज्योंही गोश्त पक गया तो लावियों ने उसे
जल्दी से हाज़िरीन में तक़सीम किया। 14इसके
बाद उन्होंने अपने और इमामों के लिए फ़सह के
लेले तैयार किए, क्योंकि हारून की औलाद यानी
इमाम भस्म होनेवाली क़ुरबानियों और चरबी को
चढ़ाने में रात तक मसरूफ़ रहे।
15ईद के पूरे दौरान आसफ़ के ख़ानदान के
गुलूकार अपनी अपनी जगह पर खड़े रहे, जिस
तरह दाऊद, आसफ़, हैमान और बादशाह के
ग़ैबबीन यदूतून ने हिदायत दी थी। दरबान भी
रब के घर के दरवाज़ों पर मुसलसल खड़े रहे।
उन्हें अपनी जगहों को छोड़ने की ज़रूरत भी नहीं
थी, क्योंकि बाक़ी लावियों ने उनके लिए भी
फ़सह के लेले तैयार कर रखे। 16यों उस दिन
यूसियाह के हुक्म पर क़ुरबानियों के पूरे इंतज़ाम
को तरतीब दिया गया ताकि आइंदा फ़सह की ईद
मनाई जाए और भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ रब
की क़ुरबानगाह पर पेश की जाएँ।
17यरूशलम में जमा हुए इसराईलियों ने फ़सह
की ईद और बेख़मीरी रोटी की ईद एक हफ़्ते
के दौरान मनाई। 18फ़सह की ईद इसराईल में
समुएल नबी के ज़माने से लेकर उस वक़्त तक
इस तरह नहीं मनाई गई थी। इसराईल के किसी
भी बादशाह ने उसे यों नहीं मनाया था जिस
तरह यूसियाह ने उसे उस वक़्त इमामों, लावियों,
यरूशलम और तमाम यहूदाह और इसराईल
से आए हुए लोगों के साथ मिलकर मनाई।
19यूसियाह बादशाह की हुकूमत के 18वें साल
में पहली दफ़ा रब की ताज़ीम में ऐसी ईद मनाई
गई।

यूसियाह की मौत

20रब के घर की बहाली की तकमील के
बाद एक दिन मिसर का बादशाह निकोह
दरियाए-फ़ुरात पर के शहर करकिमीस के लिए
रवाना हुआ ताकि वहाँ दुश्मन से लड़े। लेकिन
रास्ते में यूसियाह उसका मुक़ाबला करने के
लिए निकला। 21निकोह ने अपने क़ासिदों को
यूसियाह के पास भेजकर उसे इत्तला दी,
“ऐ यहूदाह के बादशाह, मेरा आपसे क्या
वास्ता? इस वक़्त मैं आप पर हमला करने के
लिए नहीं निकला बल्कि उस शाही ख़ानदान पर

जिसके साथ मेरा झगड़ा है। अल्लाह ने फ़रमाया
है कि मैं जल्दी करूँ। वह तो मेरे साथ है। चुनाँचे
उसका मुक़ाबला करने से बाज़ आएँ, वरना वह
आपको हलाक कर देगा।”

22लेकिन यूसियाह बाज़ न आया बल्कि लड़ने
के लिए तैयार हुआ। उसने निकोह की बात न
मानी गो अल्लाह ने उसे उस की मारिफ़त आगाह
किया था। चुनाँचे वह भेस बदलकर फ़िरौन से
लड़ने के लिए मजिद्दो के मैदान में पहुँचा। 23जब
लड़ाई छिड़ गई तो यूसियाह तीरों से ज़ख़मी हुआ,
और उसने अपने मुलाज़िमों को हुक्म दिया, “मुझे
यहाँ से ले जाओ, क्योंकि मैं सख़्त ज़ख़मी हो
गया हूँ।” 24लोगों ने उसे उसके अपने रथ पर
से उठाकर उसके एक और रथ में रखा जो उसे
यरूशलम ले गया। लेकिन उसने वफ़ात पाई, और
उसे अपने बापदादा के ख़ानदानी क़ब्रिस्तान में
दफ़न किया गया। पूरे यहूदाह और यरूशलम ने
उसका मातम किया।

25यरमियाह ने यूसियाह की याद में मातमी
गीत लिखे, और आज तक गीत गानेवाले मर्दो-
ख़वातीन यूसियाह की याद में मातमी गीत गाते
हैं, यह पक्का दस्तूर बन गया है। यह गीत ‘नोहा
की किताब’ में दर्ज हैं।

26-27बाक़ी जो कुछ शुरू से लेकर आख़िर तक
यूसियाह की हुकूमत के दौरान हुआ वह ‘शाहाने-
यहूदाहो-इसराईल’ की किताब में बयान किया
गया है। वहाँ उसके नेक कामों का ज़िक्र है और
यह कि उसने किस तरह शरीअत के अहकाम पर
अमल किया।

यहूदाह का बादशाह यहुआख़ज़

36 उम्मत ने यूसियाह के बेटे यहु-
आख़ज़ को बाप के तख़्त पर बिठा
दिया। 2यहुआख़ज़ 23 साल की उम्र में बादशाह
बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत का
दौरानिया तीन माह था। 3फिर मिसर के बादशाह
ने उसे तख़्त से उतार दिया, और मुल्के-यहूदाह
को तक़रीबन 3,400 किलोग्राम चाँदी और 34
किलोग्राम सोना ख़राज के तौर पर अदा करना
पड़ा। 4मिसर के बादशाह ने यहुआख़ज़ के सगे
भाई इलियाक़ीम को यहूदाह और यरूशलम का
नया बादशाह बनाकर उसका नाम यहूयक़ीम में
बदल दिया। यहुआख़ज़ को वह क़ैद करके अपने
साथ मिसर ले गया।

यहूदाह का बादशाह यहूयक़ीम

5यहूयक़ीम 25 साल की उम्र में बादशाह
बना, और यरूशलम में रहकर वह 11 साल
तक हुकूमत करता रहा। उसका चाल-चलन रब
उसके ख़ुदा को नापसंद था। 6एक दिन बाबल
के नबूकदनज़्ज़र ने यहूदाह पर हमला किया और
यहूयक़ीम को पीतल की ज़ंजीरों में जकड़कर
बाबल ले गया। 7नबूकदनज़्ज़र रब के घर की कई
क़ीमती चीज़ें भी छीनकर अपने साथ बाबल ले
गया और वहाँ अपने मंदिर में रख दीं।

8बाक़ी जो कुछ यहूयक़ीम की हुकूमत के
दौरान हुआ वह ‘शाहाने-यहूदाहो-इसराईल’ की
किताब में दर्ज है। वहाँ यह बयान किया गया है
कि उसने कैसी घिनौनी हरकतें कीं और कि क्या
कुछ उसके साथ हुआ। उसके बाद उसका बेटा
यहूयाकीन तख़्तनशीन हुआ।

यहूयाकीन की हुकूमत

9यहूयाकीन 18 साल की उम्र में बादशाह
बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत का
दौरानिया तीन माह और दस दिन था। उसका
चाल-चलन रब को नापसंद था। 10बहार के
मौसम में नबूकदनज़्ज़र बादशाह ने हुक्म दिया
कि उसे गिरिफ़्तार करके बाबल ले जाया जाए।
साथ साथ फ़ौजियों ने रब के घर की क़ीमती चीज़ें
भी छीनकर बाबल पहुँचाईं। यहूयाकीन की जगह
नबूकदनज़्ज़र ने यहूयाकीन के चचा सिदक़ियाह
को यहूदाह और यरूशलम का बादशाह बना
दिया।

सिदक़ियाह बादशाह और यरूशलम की तबाही

11सिदक़ियाह 21 साल की उम्र में तख़्त-
नशीन हुआ, और यरूशलम में उस की
हुकूमत का दौरानिया 11 साल था। 12उस-
का चाल-चलन रब उसके ख़ुदा को नापसंद था।
जब यरमियाह नबी ने उसे रब की तरफ़ से आगाह
किया तो उसने अपने आपको नबी के सामने पस्त
न किया। 13सिदक़ियाह को अल्लाह की क़सम
खाकर नबूकदनज़्ज़र बादशाह का वफ़ादार रहने
का वादा करना पड़ा। तो भी वह कुछ देर के बाद
सरकश हो गया। वह अड़ गया, और उसका दिल
इतना सख़्त हो गया कि वह रब इसराईल के ख़ुदा
की तरफ़ दुबारा रुजू करने के लिए तैयार नहीं था।

14लेकिन यहूदाह के राहनुमाओं, इमामों
और क़ौम की बेवफ़ाई भी बढ़ती गई। पड़ो-
सी क़ौमों के घिनौने रस्मो-रिवाज अपनाकर
उन्होंने रब के घर को नापाक कर दिया, गो उसने
यरूशलम में यह इमारत अपने लिए मख़सूस की
थी।

15बार बार रब उनके बापदादा का ख़ुदा अपने
पैग़ंबरों को उनके पास भेजकर उन्हें समझाता
रहा, क्योंकि उसे अपनी क़ौम और सुकूनतगाह
पर तरस आता था। 16लेकिन लोगों ने अल्लाह
के पैग़ंबरों का मज़ाक़ उड़ाया, उनके पैग़ाम हक़ीर
जाने और नबियों को लान-तान की। आख़िरकार
रब का ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ, और बचने का
कोई रास्ता न रहा। 17उसने बाबल के बादशाह
नबूकदनज़्ज़र को उनके ख़िलाफ़ भेजा तो दुश्मन
यहूदाह के जवानों को तलवार से क़त्ल करने
के लिए मक़दिस में घुसने से भी न झिजके।
किसी पर भी रहम न किया गया, ख़ाह जवान मर्द
या जवान ख़ातून, ख़ाह बुज़ुर्ग या उम्ररसीदा हो।
रब ने सबको नबूकदनज़्ज़र के हवाले कर दिया।
18नबूकदनज़्ज़र ने अल्लाह के घर की तमाम
चीज़ें छीन लीं, ख़ाह वह बड़ी थीं या छोटी। वह
रब के घर, बादशाह और उसके आला अफ़सरों
के तमाम ख़ज़ाने भी बाबल ले गया। 19फ़ौजियों
ने रब के घर और तमाम महलों को जलाकर
यरूशलम की फ़सील को गिरा दिया। जितनी भी
क़ीमती चीज़ें रह गई थीं वह तबाह हुईं। 20और
जो तलवार से बच गए थे उन्हें बाबल का बादशाह
क़ैद करके अपने साथ बाबल ले गया। वहाँ उन्हें
उस की और उस की औलाद की ख़िदमत करनी
पड़ी। उनकी यह हालत उस वक़्त तक जारी रही
जब तक फ़ारसी क़ौम की सलतनत शुरू न हुई।

21यों वह कुछ पूरा हुआ जिसकी पेशगोई रब
ने यरमियाह नबी की मारिफ़त की थी, क्योंकि
ज़मीन को आख़िरकार सबत का वह आराम मिल
गया जो बादशाहों ने उसे नहीं दिया था। जिस तरह
नबी ने कहा था, अब ज़मीन 70 साल तक तबाह
और वीरान रही।

जिलावतनी से वापसी

22फ़ारस के बादशाह ख़ोरस की हुकूमत के
पहले साल में रब ने वह कुछ पूरा होने दिया
जिसकी पेशगोई उसने यरमियाह की मारिफ़त
की थी। उसने ख़ोरस को ज़ैल का एलान करने
की तहरीक दी। यह एलान ज़बानी और तहरीरी
तौर पर पूरी बादशाही में किया गया।

23“फ़ारस का बादशाह ख़ोरस फ़रमाता है, रब
आसमान के ख़ुदा ने दुनिया के तमाम ममालिक
मेरे हवाले कर दिए हैं। उसने मुझे यहूदाह के शहर
यरूशलम में उसके लिए घर बनाने की ज़िम्मेदारी
दी है। आपमें से जितने उस की क़ौम के हैं
यरूशलम के लिए रवाना हो जाएँ। रब आपका
ख़ुदा आपके साथ हो।”

अज़रा

जिलावतनी से वापसी

1 फ़ारस के बादशाह ख़ोरस की हुकूमत के पहले साल में रब ने वह कुछ पूरा होने दिया जिसकी पेशगोई उसने यरमियाह की मारिफ़त की थी। उसने ख़ोरस को ज़ैल का एलान करने की तहरीक दी। यह एलान ज़बानी और तहरीरी तौर पर पूरी बादशाही में किया गया।

2“फ़ारस का बादशाह ख़ोरस फ़रमाता है, रब आसमान के ख़ुदा ने दुनिया के तमाम ममालिक मेरे हवाले कर दिए हैं। उसने मुझे यहूदाह के शहर यरूशलम में उसके लिए घर बनाने की ज़िम्मेदारी दी है। 3आपमें से जितने उस की क़ौम के हैं यरूशलम के लिए रवाना हो जाएँ ताकि वहाँ रब इसराईल के ख़ुदा के लिए घर बनाएँ, उस ख़ुदा के लिए जो यरूशलम में सुकूनत करता है। आपका ख़ुदा आपके साथ हो। 4जहाँ भी इसराईली क़ौम के बचे हुए लोग रहते हैं, वहाँ उनके पड़ोसियों का फ़र्ज़ है कि वह सोने-चाँदी और माल-मवेशी से उनकी मदद करें। इसके अलावा वह अपनी ख़ुशी से यरूशलम में अल्लाह के घर के लिए हदिये भी दें।”

5तब कुछ इसराईली रवाना होकर यरूशलम में रब के घर को तामीर करने की तैयारियाँ करने लगे। उनमें यहूदाह और बिनयमीन के ख़ानदानी सरपरस्त, इमाम और लावी शामिल थे यानी जितने लोगों को अल्लाह ने तहरीक दी थी। 6उनके तमाम पड़ोसियों ने उन्हें सोना-चाँदी और माल-मवेशी देकर उनकी मदद की। इसके अलावा उन्होंने अपनी ख़ुशी से भी रब के घर के लिए हदिये दिए।

7ख़ोरस बादशाह ने वह चीज़ें वापस कर दीं जो नबूकदनज़्ज़र ने यरूशलम में रब के घर से लूटकर अपने देवता के मंदिर में रख दी थीं। 8उन्हें निकालकर फ़ारस के बादशाह ने मित्रदात ख़ज़ानची के हवाले कर दिया जिसने सब कुछ गिनकर यहूदाह के बुज़ुर्ग शेसबज़्ज़र को दे दिया। 9जो फ़हरिस्त उसने लिखी उसमें ज़ैल की चीज़ें थीं :

सोने के 30 बासन,
चाँदी के 1,000 बासन,
29 छुरियाँ,
10सोने के 30 प्याले,
चाँदी के 410 प्याले,
बाक़ी चीज़ें 1,000 अदद।

11सोने और चाँदी की कुल 5,400 चीज़ें थीं। शेसबज़्ज़र यह सब कुछ अपने साथ ले गया जब वह जिलावतनों के साथ बाबल से यरूशलम के लिए रवाना हुआ।

वापस आए हुओं की फ़हरिस्त

2 ज़ैल में यहूदाह के उन लोगों की फ़हरिस्त है जो जिलावतनी से वापस आए। बाबल का बादशाह नबूकदनज़्ज़र उन्हें क़ैद करके बाबल ले गया था, लेकिन अब वह यरूशलम और

यहूदाह के उन शहरों में फिर जा बसे जहाँ
उनके ख़ानदान पहले रहते थे। 2उनके राहनुमा
ज़रुब्बाबल, यशुअ, नहमियाह, सिरायाह,
रालायाह, मर्दकी, बिलशान, मिसफ़ार, बिगवई,
रहूम और बाना थे। ज़ैल की फ़हरिस्त में वापस
आए हुए ख़ानदानों के मर्द बयान किए गए हैं।
3परऊस का ख़ानदान : 2,172,
4सफ़तियाह का ख़ानदान : 372,
5अरख़ का ख़ानदान : 775,
6पख़त-मोआब का ख़ानदान यानी यशुअ और
योआब की औलाद : 2,812,
7ऐलाम का ख़ानदान : 1,254,
8ज़त्तू का ख़ानदान : 945,
9ज़क्की का ख़ानदान : 760,
10बानी का ख़ानदान : 642,
11बबी का ख़ानदान : 623,
12अज़जाद का ख़ानदान : 1,222,
13अदूनिक़ाम का ख़ानदान : 666,
14बिगवई का ख़ानदान : 2,056,
15अदीन का ख़ानदान : 454,
16अतीर का ख़ानदान यानी हिज़क़ियाह की
औलाद : 98,
17बज़ी का ख़ानदान : 323,
18यूरा का ख़ानदान : 112,
19हाशूम का ख़ानदान : 223,
20जिब्बार का ख़ानदान : 95,
21बैत-लहम के बाशिंदे : 123,
22नतूफ़ा के 56 बाशिंदे,
23अनतोत के बाशिंदे : 128,
24अज़मावत के बाशिंदे : 42,
25क़िरियत-यारीम, कफ़ीरा और बैरोत के
बाशिंदे : 743,
26रामा और जिबा के बाशिंदे : 621,
27मिकमास के बाशिंदे : 122,
28बैतेल और अई के बाशिंदे : 223,
29नबू के बाशिंदे : 52,
30मजबीस के बाशिंदे : 156,
31दूसरे ऐलाम के बाशिंदे : 1,254,
32हारिम के बाशिंदे : 320,
33लूद, हादीद और ओनू के बाशिंदे : 725,
34यरीहू के बाशिंदे : 345,
35सनाआह के बाशिंदे : 3,630।
36ज़ैल के इमाम जिलावतनी से वापस आए।
यदायाह का ख़ानदान जो यशुअ की नसल का
था : 973,
37इम्मेर का ख़ानदान : 1,052,
38फ़शहूर का ख़ानदान : 1,247,
39हारिम का ख़ानदान : 1,017।
40ज़ैल के लावी जिलावतनी से वापस आए।
यशुअ और क़दमियेल का ख़ानदान यानी
हूदावियाह की औलाद : 74,
41गुलूकार : आसफ़ के ख़ानदान के 128
आदमी,
42रब के घर के दरबान : सल्लूम, अतीर,
तलमून, अक़्क़ूब, ख़तीता और सोबी के
ख़ानदानों के 139 आदमी।
43रब के घर के ख़िदमतगारों के दर्जे-ज़ैल
ख़ानदान जिलावतनी से वापस आए।
ज़ीहा, हसूफ़ा, तब्बाओत, 44क़रूस, सि-
याहा, फ़दून, 45लिबाना, हजाबा, अक़्क़ूब,
46हजाब, शलमी, हनान, 47जिद्देल, जहर,
रियायाह, 48रज़ीन, नक़ूदा, जज़्ज़ाम,
49उज़्ज़ा, फ़ासिह, बसी, 50अस्ना, मऊनीम,
नफ़ूसीम, 51बक़बूक़, हक़ूफ़ा, हरहूर, 52बज़
लूत, महीदा, हरशा, 53बरक़ूस, सीसरा, तामह,
54नज़ियाह और ख़तीफ़ा।
55सुलेमान के ख़ादिमों के दर्जे-ज़ैल ख़ान-
दान जिलावतनी से वापस आए।
सूती, सूफ़िरत, फ़रूदा, 56याला, दरक़ून,
जिद्देल, 57सफ़तियाह, ख़त्तील, फ़ूकिरत-
ज़बायम और अमी।
58रब के घर के ख़िदमतगारों और सुलेमान के
ख़ादिमों के ख़ानदानों में से वापस आए हुए मर्दों
की तादाद 392 थी।
59-60वापस आए हुए ख़ानदानों दिलायाह,
तूबियाह और नक़ूदा के 652 मर्द साबित न कर

सके कि इसराईल की औलाद हैं, गो वह तल-मिलह, तल-हरशा, करूब, अद्दून और इम्मेर के रहनेवाले थे।

61-62हबायाह, हक़्क़ूज़ और बरज़िल्ली के ख़ानदानों के कुछ इमाम भी वापस आए, लेकिन उन्हें रब के घर में ख़िदमत करने की इजाज़त न मिली। क्योंकि गो उन्होंने नसबनामे में अपने नाम तलाश किए उनका कहीं ज़िक्र न मिला, इसलिए उन्हें नापाक क़रार दिया गया। (बरज़िल्ली के ख़ानदान के बानी ने बरज़िल्ली जिलियादी की बेटी से शादी करके अपने सुसर का नाम अपना लिया था।) 63यहूदाह के गवर्नर ने हुक्म दिया कि इन तीन ख़ानदानों के इमाम फ़िलहाल क़ुरबानियों का वह हिस्सा खाने में शरीक न हों जो इमामों के लिए मुक़र्रर है। जब दुबारा इमामे-आज़म मुक़र्रर किया जाए तो वही ऊरीम और तुम्मीम नामी क़ुरा डालकर मामला हल करे।

64कुल 42,360 इसराईली अपने वतन लौट आए, 65नीज़ उनके 7,337 ग़ुलाम और लौंडियाँ और 200 गुलूकार जिनमें मर्दो-ख़वातीन शामिल थे।

66इसराईलियों के पास 736 घोड़े, 245 ख़च्चर, 67435 ऊँट और 6,720 गधे थे।

68जब वह यरूशलम में रब के घर के पास पहुँचे तो कुछ ख़ानदानी सरपरस्तों ने अपनी ख़ुशी से हदिये दिए ताकि अल्लाह का घर नए सिरे से उस जगह तामीर किया जा सके जहाँ पहले था। 69हर एक ने उतना दे दिया जितना दे सका। उस वक़्त सोने के कुल 61,000 सिक्के, चाँदी के 2,800 किलोग्राम और इमामों के 100 लिबास जमा हुए।

70इमाम, लावी, गुलूकार, रब के घर के दरबान और ख़िदमतगार, और अवाम के कुछ लोग अपनी अपनी आबाई आबादियों में दुबारा जा बसे। यों तमाम इसराईली दुबारा अपने अपने शहरों में रहने लगे।

नई क़ुरबानगाह पर क़ुरबानियाँ

3 सातवें महीने की इब्तिदा में पूरी क़ौम यरूशलम में जमा हुई। उस वक़्त इसराईली अपनी आबादियों में दुबारा आबाद हो गए थे। 2जमा होने का मक़सद इसराईल के ख़ुदा की क़ुरबानगाह को नए सिरे से तामीर करना था ताकि मर्दे-ख़ुदा मूसा की शरीअत के मुताबिक़ उस पर भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ पेश की जा सकें। चुनाँचे यशुअ बिन यूसदक़ और ज़रुब्बाबल बिन सियालतियेल काम में लग गए। यशुअ के इमाम भाइयों और ज़रुब्बाबल के भाइयों ने उनकी मदद की। 3गो वह मुल्क में रहनेवाली दीगर क़ौमों से सहमे हुए थे ताहम उन्होंने क़ुरबानगाह को उस की पुरानी बुनियाद पर तामीर किया और सुबह-शाम उस पर रब को भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ पेश करने लगे। 4झोंपड़ियों की ईद उन्होंने शरीअत की हिदायत के मुताबिक़ मनाई। उस हफ़्ते के हर दिन उन्होंने भस्म होनेवाली उतनी क़ुरबानियाँ चढ़ाईं जितनी ज़रूरी थीं।

5उस वक़्त से इमाम भस्म होनेवाली तमाम दरकार क़ुरबानियाँ बाक़ायदगी से पेश करने लगे, नीज़ नए चाँद की ईदों और रब की बाक़ी मख़सूसो-मुक़द्दस ईदों की क़ुरबानियाँ। क़ौम अपनी ख़ुशी से भी रब को क़ुरबानियाँ पेश करती थी। 6गो रब के घर की बुनियाद अभी डाली नहीं गई थी तो भी इसराईली सातवें महीने के पहले दिन से रब को भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ पेश करने लगे। 7फिर उन्होंने राजों और कारीगरों को पैसे देकर काम पर लगाया और सूर और सैदा के बाशिंदों से देवदार की लकड़ी मँगवाई। यह लकड़ी लुबनान के पहाड़ी इलाक़े से समुंदर तक लाई गई और वहाँ से समुंदर के रास्ते याफ़ा पहुँचाई गई। इसराईलियों ने मुआवज़े में खाने-पीने की चीज़ें और ज़ैतून का तेल दे दिया। फ़ारस के बादशाह ख़ोरस ने उन्हें यह करवाने की इजाज़त दी थी।

रब के घर की तामीरे-नौ

8जिलावतनी से वापस आने के दूसरे साल
के दूसरे महीने में रब के घर की नए सिरे से
तामीर शुरू हुई। इस काम में ज़रुब्बाबल बिन
सियालतियेल, यशुअ बिन यूसदक़, दीगर इमाम
और लावी और वतन में वापस आए हुए बाक़ी
तमाम इसराईली शरीक हुए। तामीरी काम की
निगरानी उन लावियों के ज़िम्मे लगा दी गई
जिनकी उम्र 20 साल या इससे ज़ायद थी।

9ज़ैल के लोग मिलकर रब का घर बनानेवालों
की निगरानी करते थे : यशुअ अपने बेटों और
भाइयों समेत, क़दमियेल और उसके बेटे जो
हूदावियाह की औलाद थे और हनदाद के ख़ानदान
के लावी।

10रब के घर की बुनियाद रखते वक़्त इमाम
अपने मुक़द्दस लिबास पहने हुए साथ खड़े हो
गए और तुरम बजाने लगे। आसफ़ के ख़ानदान
के लावी साथ साथ झाँझ बजाने और रब की
सताइश करने लगे। सब कुछ इसराईल के
बादशाह दाऊद की हिदायात के मुताबिक़ हुआ।
11वह हम्दो-सना के गीत से रब की तारीफ़ करने
लगे, "वह भला है, और इसराईल पर उस की
शफ़क़त अबदी है!" जब हाज़िरीन ने देखा कि
रब के घर की बुनियाद रखी जा रही है तो सब रब
की ख़ुशी में ज़ोरदार नारे लगाने लगे।

12लेकिन बहुत-से इमाम, लावी और ख़ानदानी
सरपरस्त हाज़िर थे जिन्होंने रब का पहला घर
देखा हुआ था। जब उनके देखते देखते रब के नए
घर की बुनियाद रखी गई तो वह बुलंद आवाज़ से
रोने लगे जबकि बाक़ी बहुत सारे लोग ख़ुशी के
नारे लगा रहे थे। 13इतना शोर था कि ख़ुशी के
नारों और रोने की आवाज़ों में इम्तियाज़ न किया
जा सका। शोर दूर दूर तक सुनाई दिया।

रब के घर की तामीर की मुख़ालफ़त

4 यहूदाह और बिनयमीन के दुश्मनों को
पता चला कि वतन में वापस आए हुए
इसराईली रब इसराईल के ख़ुदा के लिए घर
तामीर कर रहे हैं। 2ज़रुब्बाबल और ख़ानदानी
सरपरस्तों के पास आकर उन्होंने दरख़ास्त की,
"हम भी आपके साथ मिलकर रब के घर को
तामीर करना चाहते हैं। क्योंकि जब से असूर
के बादशाह असरहद्दून ने हमें यहाँ लाकर बसाया
है उस वक़्त से हम आपके ख़ुदा के तालिब
रहे और उसे क़ुरबानियाँ पेश करते आए हैं।"
3लेकिन ज़रुब्बाबल, यशुअ और इसराईल के
बाक़ी ख़ानदानी सरपरस्तों ने इनकार किया,
"नहीं, इसमें आपका हमारे साथ कोई वास्ता
नहीं। हम अकेले ही रब इसराईल के ख़ुदा के लिए
घर बनाएँगे, जिस तरह फ़ारस के बादशाह ख़ोरस
ने हमें हुक्म दिया है।"

4यह सुनकर मुल्क की दूसरी क़ौमें यहूदाह
के लोगों की हौसलाशिकनी और उन्हें डराने की
कोशिश करने लगीं ताकि वह इमारत बनाने से
बाज़ आएँ। 5यहाँ तक कि वह फ़ारस के बादशाह
ख़ोरस के कुछ मुशीरों को रिश्वत देकर काम रोकने
में कामयाब हो गए। यों रब के घर की तामीर
ख़ोरस बादशाह के दौरे-हुकूमत से लेकर दारा
बादशाह की हुकूमत तक रुकी रही।

6बाद में जब अख़स्वेरुस बादशाह की हुकूमत
शुरू हुई तो इसराईल के दुश्मनों ने यहूदाह
और यरूशलम के बाशिंदों पर इलज़ाम लगाकर
शिकायती ख़त लिखा।

7फिर अर्तख़शस्ता बादशाह के दौरे-हुकूमत में
उसे यहूदाह के दुश्मनों की तरफ़ से शिकायती
ख़त भेजा गया। ख़त के पीछे ख़ासकर बिशलाम,
मित्रदात और ताबियेल थे। पहले उसे अरामी
ज़बान में लिखा गया, और बाद में उसका तरजुमा
हुआ। 8सामरिया के गवर्नर रहूम और उसके
मीरमुंशी शम्सी ने शहनशाह को ख़त लिख दिया
जिसमें उन्होंने यरूशलम पर इलज़ामात लगाए।
पते में लिखा था,

9अज़ : रहूम गवर्नर और मीरमुंशी शम्सी, नीज़
उनके हमख़िदमत क़ाज़ी, सफ़ीर और तरपल,
सिप्पर, अरक, बाबल और सोसन यानी ऐलाम के
मर्द, 10नीज़ बाक़ी तमाम क़ौमें जिनको अज़ीम

और अज़ीज़ बादशाह अशूरबनीपाल ने उठाकर सामरिया और दरियाए-फ़ुरात के बाक़ीमाँदा मग़रिबी इलाक़े में बसा दिया था।

11ख़त में लिखा था,

“शहनशाह अर्तख़शस्ता के नाम,

अज़ : आपके ख़ादिम जो दरियाए-फ़ुरात के मग़रिब में रहते हैं।

12शहनशाह को इल्म हो कि जो यहूदी आपके हुज़ूर से हमारे पास यरूशलम पहुँचे हैं वह इस वक़्त उस बाग़ी और शरीर शहर को नए सिरे से तामीर कर रहे हैं। वह फ़सील को बहाल करके बुनियादों की मरम्मत कर रहे हैं। 13शहनशाह को इल्म हो कि अगर शहर नए सिरे से तामीर हो जाए और उस की फ़सील तकमील तक पहुँचे तो यह लोग टैक्स, ख़राज और महसूल अदा करने से इनकार कर देंगे। तब बादशाह को नुक़सान पहुँचेगा। 14हम तो नमकहराम नहीं हैं, न शहनशाह की तौहीन बरदाश्त कर सकते हैं। इसलिए हम गुज़ारिश करते हैं 15कि आप अपने बापदादा की तारीख़ी दस्तावेज़ात से यरूशलम के बारे में मालूमात हासिल करें, क्योंकि उनमें इस बात की तसदीक़ मिलेगी कि यह शहर माज़ी में सरकश रहा। हक़ीक़त में शहर को इसी लिए तबाह किया गया कि वह बादशाहों और सूबों को तंग करता रहा और क़दीम ज़माने से ही बग़ावत का मंबा रहा है। 16ग़रज़ हम शहनशाह को इत्तला देते हैं कि अगर यरूशलम को दुबारा तामीर किया जाए और उस की फ़सील तकमील तक पहुँचे तो दरियाए-फ़ुरात के मग़रिबी इलाक़े पर आपका क़ाबू जाता रहेगा।”

17शहनशाह ने जवाब में लिखा,

“मैं यह ख़त रहूम गवर्नर, शम्सी मीरमुंशी और सामरिया और दरियाए-फ़ुरात के मग़रिब में रहनेवाले उनके हमख़िदमत अफ़सरों को लिख रहा हूँ।

आपको सलाम! 18आपके ख़त का तरजुमा मेरी मौजूदगी में हुआ है और उसे मेरे सामने पढ़ा गया है। 19मेरे हुक्म पर यरूशलम के बारे में मालूमात हासिल की गई हैं। मालूम हुआ कि वाक़ई यह शहर क़दीम ज़माने से बादशाहों की मुख़ालफ़त करके सरकशी और बग़ावत का मंबा रहा है। 20नीज़, यरूशलम ताक़तवर बादशाहों का दारुल-हुकूमत रहा है। उनकी इतनी ताक़त थी कि दरियाए-फ़ुरात के पूरे मग़रिबी इलाक़े को उन्हें मुख़्तलिफ़ क़िस्म के टैक्स और ख़राज अदा करना पड़ा। 21चुनाँचे अब हुक्म दें कि यह आदमी शहर की तामीर करने से बाज़ आएँ। जब तक मैं ख़ुद हुक्म न दूँ उस वक़्त तक शहर को नए सिरे से तामीर करने की इजाज़त नहीं है। 22ध्यान दें कि इस हुक्म की तकमील में सुस्ती न की जाए, ऐसा न हो कि शहनशाह को बड़ा नुक़सान पहुँचे।”

23ज्योंही ख़त की कापी रहूम, शम्सी और उनके हमख़िदमत अफ़सरों को पढ़कर सुनाई गई तो वह यरूशलम के लिए रवाना हुए और यहूदियों को ज़बरदस्ती काम जारी रखने से रोक दिया।

24चुनाँचे यरूशलम में अल्लाह के घर का तामीरी काम रुक गया, और वह फ़ारस के बादशाह दारा की हुकूमत के दूसरे साल तक रुका रहा।

रब के घर की तामीर दुबारा शुरू होती है

5 एक दिन दो नबी बनाम हज्जी और ज़करियाह बिन इद्दू उठकर इसराईल के ख़ुदा के नाम में जो उनके ऊपर था यहूदाह और यरूशलम के यहूदियों के सामने नबुव्वत करने लगे। 2उनके हौसला-अफ़्ज़ा अलफ़ाज़ सुनकर ज़रुब्बाबल बिन सियालतियेल और यशुअ बिन यूसदक़ ने फ़ैसला किया कि हम दुबारा यरूशलम में अल्लाह के घर की तामीर शुरू करेंगे। दोनों नबी इसमें उनके साथ थे और उनकी मदद करते रहे।

3लेकिन ज्योंही काम शुरू हुआ तो दरियाए-फ़ुरात के मग़रिबी इलाक़े के गवर्नर तत्तनी और शतर-बोज़नी अपने हमख़िदमत अफ़सरों समेत यरूशलम पहुँचे। उन्होंने पूछा, “किसने आपको यह घर बनाने और इसका ढाँचा तकमील तक पहुँचाने की इजाज़त दी? 4इस काम के

लिए ज़िम्मेदार आदमियों के नाम हमें बताएँ!”
5लेकिन उनका ख़ुदा यहूदाह के बुज़ुर्गों की
निगरानी कर रहा था, इसलिए उन्हें रोका न गया।
क्योंकि लोगों ने सोचा कि पहले दारा बादशाह को
इत्तला दी जाए। जब तक वह फ़ैसला न करे उस
वक़्त तक काम रोका न जाए।

6फिर दरियाए-फ़ुरात के मग़रिबी इलाक़े
के गवर्नर तत्तनी, शतर-बोज़नी और उनके
हमख़िदमत अफ़सरों ने दारा बादशाह को ज़ैल
का ख़त भेजा,

7“दारा बादशाह को दिल की गहराइयों से
सलाम कहते हैं! 8शहनशाह को इल्म हो कि
सूबा यहूदाह में जाकर हमने देखा कि वहाँ अज़ीम
ख़ुदा का घर बनाया जा रहा है। उसके लिए बड़े
तराशे हुए पत्थर इस्तेमाल हो रहे हैं और दीवारों में
शहतीर लगाए जा रहे हैं। लोग बड़ी जाँफ़िशानी
से काम कर रहे हैं, और मकान उनकी मेहनत
के बाइस तेज़ी से बन रहा है। 9हमने बुज़ुर्गों
से पूछा, ‘किसने आपको यह घर बनाने और
इसका ढाँचा तकमील तक पहुँचाने की इजाज़त
दी है?’ 10हमने उनके नाम भी मालूम किए ताकि
लिखकर आपको भेज सकें। 11उन्होंने हमें जवाब
दिया,

‘हम आसमानो-ज़मीन के ख़ुदा के ख़ादिम हैं,
और हम उस घर को अज़ सरे-नौ तामीर कर रहे
हैं जो बहुत साल पहले यहाँ क़ायम था। इसराईल
के एक अज़ीम बादशाह ने उसे क़दीम ज़माने में
बनाकर तकमील तक पहुँचाया था। 12लेकिन
हमारे बापदादा ने आसमान के ख़ुदा को तैश
दिलाया, और नतीजे में उसने उन्हें बाबल के
बादशाह नबूकदनज़्ज़र के हवाले कर दिया जिसने
रब के घर को तबाह कर दिया और क़ौम को क़ैद
करके बाबल में बसा दिया। 13लेकिन बाद में जब
ख़ोरस बादशाह बन गया तो उसने अपनी हुकूमत
के पहले साल में हुक्म दिया कि अल्लाह के इस
घर को दुबारा तामीर किया जाए। 14साथ साथ
उसने सोने-चाँदी की वह चीज़ें वापस कर दीं जो
नबूकदनज़्ज़र ने यरूशलम में अल्लाह के घर से
लूटकर बाबल के मंदिर में रख दी थीं। ख़ोरस ने
यह चीज़ें एक आदमी के सुपुर्द कर दीं जिसका
नाम शेसबज़्ज़र था और जिसे उसने यहूदाह का
गवर्नर मुक़र्रर किया था। 15उसने उसे हुक्म दिया
कि सामान को यरूशलम ले जाओ और रब के
घर को पुरानी जगह पर अज़ सरे-नौ तामीर करके
यह चीज़ें उसमें महफ़ूज़ रखो। 16तब शेसबज़्ज़र
ने यरूशलम आकर अल्लाह के घर की बुनियाद
रखी। उसी वक़्त से यह इमारत ज़ेरे-तामीर है,
अगरचे यह आज तक मुकम्मल नहीं हुई।’

17चुनाँचे अगर शहनशाह को मंज़ूर हो तो वह
तफ़तीश करें कि क्या बाबल के शाही दफ़्तर में
कोई ऐसी दस्तावेज़ मौजूद है जो इस बात की
तसदीक़ करे कि ख़ोरस बादशाह ने यरूशलम
में रब के घर को अज़ सरे-नौ तामीर करने का
हुक्म दिया। गुज़ारिश है कि शहनशाह हमें अपना
फ़ैसला पहुँचा दें।”

दारा बादशाह यहूदियों की मदद करता है

6 तब दारा बादशाह ने हुक्म दिया कि बाबल
के ख़ज़ाने के दफ़्तर में तफ़तीश की जाए।
इसका खोज लगाते लगाते 2आख़िरकार मादी
शहर इक्बताना के क़िले में तूमार मिल गया
जिसमें लिखा था,

3“ख़ोरस बादशाह की हुकूमत के पहले साल
में शहनशाह ने हुक्म दिया कि यरूशलम में
अल्लाह के घर को उस की पुरानी जगह पर
नए सिरे से तामीर किया जाए ताकि वहाँ दुबारा
क़ुरबानियाँ पेश की जा सकें। उस की बुनियाद
रखने के बाद उस की ऊँचाई 90 और चौड़ाई 90
फ़ुट हो। 4दीवारों को यों बनाया जाए कि तराशे
हुए पत्थरों के हर तीन रद्दों के बाद देवदार के
शहतीरों का एक रद्दा लगाया जाए। अख़राजात
शाही ख़ज़ाने से पूरे किए जाएँ। 5नीज़ सोने-चाँदी
की जो चीज़ें नबूकदनज़्ज़र यरूशलम के इस घर
से निकालकर बाबल लाया वह वापस पहुँचाई
जाएँ। हर चीज़ अल्लाह के घर में उस की अपनी
जगह पर वापस रख दी जाए।”

6यह ख़बर पढ़कर दारा ने दरियाए-फ़ुरात के मग़रिबी इलाक़े के गवर्नर तत्तनी, शतर-बोज़नी और उनके हमख़िदमत अफ़सरों को ज़ैल का जवाब भेज दिया,

"अल्लाह के इस घर की तामीर में मुदाख़लत मत करना! 7लोगों को काम जारी रखने दें। यहूदियों का गवर्नर और उनके बुज़ुर्ग अल्लाह का यह घर उस की पुरानी जगह पर तामीर करें।

8न सिर्फ़ यह बल्कि मैं हुक्म देता हूँ कि आप इस काम में बुज़ुर्गों की मदद करें। तामीर के तमाम अख़राजात वक़्त पर मुहैया करें ताकि काम न रुके। यह पैसे शाही ख़ज़ाने यानी दरियाए-फ़ुरात के मग़रिबी इलाक़े से जमा किए गए टैक्सों में से अदा किए जाएँ। 9रोज़ बरोज़ इमामों को भस्म होनेवाली क़ुरबानियों के लिए दरकार तमाम चीज़ें मुहैया करते रहें, ख़्वाह वह जवान बैल, मेंढे, भेड़ के बच्चे, गंदुम, नमक, मै या ज़ैतून का तेल क्यों न माँगें। इसमें सुस्ती न करें 10ताकि वह आसमान के ख़ुदा को पसंदीदा क़ुरबानियाँ पेश करके शहनशाह और उसके बेटों की सलामती के लिए दुआ कर सकें।

11इसके अलावा मैं हुक्म देता हूँ कि जो भी इस फ़रमान की ख़िलाफ़वरज़ी करे उसके घर से शहतीर निकालकर खड़ा किया जाए और उसे उस पर मसलूब किया जाए। साथ साथ उसके घर को मलबे का ढेर बनाया जाए। 12जिस ख़ुदा ने वहाँ अपना नाम बसाया है वह हर बादशाह और क़ौम को हलाक करे जो मेरे इस हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी करके यरूशलम के घर को तबाह करने की जुर्रत करे। मैं, दारा ने यह हुक्म दिया है। इसे हर तरह से पूरा किया जाए।"

रब के घर की मख़सूसियत

13दरियाए-फ़ुरात के मग़रिबी इलाक़े के गवर्नर तत्तनी, शतर-बोज़नी और उनके हम-ख़िदमत अफ़सरों ने हर तरह से दारा बाद-शाह के हुक्म की तामील की। 14चुनाँचे यहूदी बुज़ुर्ग रब के घर पर काम जारी रख सके। दोनों नबी हज्जी और ज़करियाह बिन इद्दू अपनी नबुव्वतों से उनकी हौसला-अफ़्ज़ाई करते रहे, और यों सारा काम इसराईल के ख़ुदा और फ़ारस के बादशाहों ख़ोरस, दारा और अर्तख़शस्ता के हुक्म के मुताबिक़ ही मुकम्मल हुआ।

15रब का घर दारा बादशाह की हुकूमत के छटे साल में तकमील तक पहुँचा। अदार के महीने का तीसरा दिन[a] था। 16इसराईलियों ने इमामों, लावियों और जिलावतनी से वापस आए हुए इसराईलियों समेत बड़ी ख़ुशी से रब के घर की मख़सूसियत की ईद मनाई। 17उन्होंने 100 बैल, 200 मेंढे और भेड़ के 400 बच्चे क़ुरबान किए। पूरे इसराईल के लिए गुनाह की क़ुरबानी भी पेश की गई, और इसके लिए फ़ी क़बीला एक बकरा यानी मिलकर 12 बकरे चढ़ाए गए। 18फिर इमामों और लावियों को रब के घर की ख़िदमत के मुख़्तलिफ़ गुरोहों में तक़सीम किया गया, जिस तरह मूसा की शरीअत हिदायत देती है।

इसराईली फ़सह की ईद मनाते हैं

19पहले महीने के 14वें दिन[b] जिलावतनी से वापस आए हुए इसराईलियों ने फ़सह की ईद मनाई। 20तमाम इमामों और लावियों ने अपने आपको पाक-साफ़ कर रखा था। सबके सब पाक थे। लावियों ने फ़सह के लेले जिलावतनी से वापस आए हुए इसराईलियों, उनके भाइयों यानी इमामों और अपने लिए ज़बह किए। 21लेकिन न सिर्फ़ जिलावतनी से वापस आए हुए इसराईली इस खाने में शरीक हुए बल्कि मुल्क के वह तमाम लोग भी जो ग़ैरयहूदी क़ौमों की नापाक राहों से अलग होकर उनके साथ रब इसराईल के ख़ुदा के तालिब हुए थे। 22उन्होंने सात दिन बड़ी ख़ुशी से बेख़मीरी रोटी की ईद मनाई। रब ने उनके दिलों को ख़ुशी से भर दिया था, क्योंकि उसने फ़ारस के

[a]12 मार्च।

[b]21 अप्रैल।

बादशाह का दिल उनकी तरफ़ मायल कर दिया था ताकि उन्हें इसराईल के ख़ुदा के घर को तामीर करने में मदद मिले।

अज़रा इमाम को यरूशलम भेजा जाता है

7 इन वाक़ियात के काफ़ी अरसे बाद
एक आदमी बनाम अज़रा बाबल
को छोड़कर यरूशलम आया। उस वक़्त
फ़ारस के बादशाह अर्तख़शस्ता की हुकूमत
थी। आदमी का पूरा नाम अज़रा बिन
सिरायाह बिन अज़रियाह बिन ख़िलक़ियाह
2बिन सल्लूम बिन सदोक़ बिन अख़ीतूब
3बिन अमरियाह बिन अज़रियाह बिन मिरा-
योत 4बिन ज़रख़ियाह बिन उज़्ज़ी बिन बुक़्क़ी
5बिन अबीसुअ बिन फ़ीनहास बिन इलियज़र
बिन हारून था। (हारून इमामे-आज़म था)।
6अज़रा पाक नविश्तों का उस्ताद और उस
शरीअत का आलिम था जो रब इसराईल के ख़ुदा
ने मूसा की मारिफ़त दी थी। जब अज़रा बाबल से
यरूशलम के लिए रवाना हुआ तो शहनशाह ने उस
की हर ख़ाहिश पूरी की, क्योंकि रब उसके ख़ुदा
का शफ़ीक़ हाथ उस पर था। 7कई इसराईली
उसके साथ गए। इमाम, लावी, गुलूकार और
रब के घर के दरबान और ख़िदमतगार भी उनमें
शामिल थे। यह अर्तख़शस्ता बादशाह की हुकूमत
के सातवें साल में हुआ। 8-9क़ाफ़िला पहले महीने
के पहले दिन[a] बाबल से रवाना हुआ और पाँचवें
महीने के पहले दिन[b] सहीह-सलामत यरूशलम
पहुँचा, क्योंकि अल्लाह का शफ़ीक़ हाथ अज़रा
पर था। 10वजह यह थी कि अज़रा ने अपने
आपको रब की शरीअत की तफ़तीश करने,
उसके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारने और इसराईलियों
को उसके अहकाम और हिदायात की तालीम देने
के लिए वक़्फ़ किया था।

शहनशाह अज़रा को मुख़तार-नामा देता है

11अर्तख़शस्ता बादशाह ने अज़रा इमाम को
ज़ैल का मुख़तारनामा दे दिया, उसी अज़रा को
जो पाक नविश्तों का उस्ताद और उन अहकाम
और हिदायात का आलिम था जो रब ने इसराईल
को दी थीं। मुख़तारनामे में लिखा था,
12“अज़ : शहनशाह अर्तख़शस्ता
अज़रा इमाम को जो आसमान के ख़ुदा की
शरीअत का आलिम है, सलाम! 13मैं हुक्म
देता हूँ कि अगर मेरी सलतनत में मौजूद कोई
भी इसराईली आपके साथ यरूशलम जाकर वहाँ
रहना चाहे तो वह जा सकता है। इसमें इमाम
और लावी भी शामिल हैं, 14शहनशाह और उसके
सात मुशीर आपको यहूदाह और यरूशलम भेज
रहे हैं ताकि आप अल्लाह की उस शरीअत की
रौशनी में जो आपके हाथ में है यहूदाह और
यरूशलम का हाल जाँच लें। 15जो सोना-चाँदी
शहनशाह और उसके मुशीरों ने अपनी ख़ुशी से
यरूशलम में सुकूनत करनेवाले इसराईल के ख़ुदा
के लिए क़ुरबान की है उसे अपने साथ ले जाएँ।
16नीज़, जितनी भी सोना-चाँदी आपको सूबा
बाबल से मिल जाएगी और जितने भी हदिये
क़ौम और इमाम अपनी ख़ुशी से अपने ख़ुदा के
घर के लिए जमा करें उन्हें अपने साथ ले जाएँ।
17उन पैसों से बैल, मेंढे, भेड़ के बच्चे और उनकी
क़ुरबानियों के लिए दरकार ग़ल्ला और मै की
नज़रें ख़रीद लें, और उन्हें यरूशलम में अपने ख़ुदा
के घर की क़ुरबानगाह पर क़ुरबान करें। 18जो पैसे
बच जाएँ उनको आप और आपके भाई वैसे ख़र्च
कर सकते हैं जैसे आपको मुनासिब लगे। शर्त यह
है कि आपके ख़ुदा की मरज़ी के मुताबिक़ हो।
19यरूशलम में अपने ख़ुदा को वह तमाम चीज़ें
पहुँचाएँ जो आपको रब के घर में ख़िदमत के लिए
दी जाएँगी। 20बाक़ी जो कुछ भी आपको अपने
ख़ुदा के घर के लिए ख़रीदना पड़े उसके पैसे शाही
ख़ज़ाना अदा करेगा।

[a]8 अप्रैल।
[b]4 अगस्त।

21मैं, अर्तख़शस्ता बादशाह दरियाए-फ़ुरात के मग़रिब में रहनेवाले तमाम ख़ज़ान-चियों को हुक्म देता हूँ कि हर तरह से अज़रा इमाम की माली मदद करें। जो भी आसमान के ख़ुदा की शरीअत का यह उस्ताद माँगे वह उसे दिया जाए। 22उसे 3,400 किलोग्राम चाँदी, 16,000 किलोग्राम गंदुम, 2,200 लिटर मै और 2,200 लिटर ज़ैतून का तेल तक देना। नमक उसे उतना मिले जितना वह चाहे। 23ध्यान से सब कुछ मुहैया करें जो आसमान का ख़ुदा अपने घर के लिए माँगे। ऐसा न हो कि शहनशाह और उसके बेटों की सलतनत उसके ग़ज़ब का निशाना बन जाए। 24नीज़, आपको इल्म हो कि आपको अल्लाह के इस घर में ख़िदमत करनेवाले किसी शख़्स से भी ख़राज या किसी क़िस्म का टैक्स लेने की इजाज़त नहीं है, ख़ाह वह इमाम, लावी, गुलूकार, रब के घर का दरबान या उसका ख़िदमतगार हो।

25ऐ अज़रा, जो हिकमत आपके ख़ुदा ने आपको अता की है उसके मुताबिक़ मजिस्ट्रेट और क़ाज़ी मुक़र्रर करें जो आपकी क़ौम के उन लोगों का इनसाफ़ करें जो दरियाए-फ़ुरात के मग़रिब में रहते हैं। जितने भी आपके ख़ुदा के अहकाम जानते हैं वह इसमें शामिल हैं। और जितने इन अहकाम से वाक़िफ़ नहीं हैं उन्हें आपको तालीम देनी है। 26जो भी आपके ख़ुदा की शरीअत और शहनशाह के क़ानून की ख़िलाफ़वरज़ी करे उसे सख़्ती से सज़ा दी जाए। जुर्म की संजीदगी का लिहाज़ करके उसे या तो सज़ाए-मौत दी जाए या जिलावतन किया जाए, उस की मिलकियत ज़ब्त की जाए या उसे जेल में डाला जाए।”

अज़रा की सताइश

27रब हमारे बापदादा के ख़ुदा की तमजीद हो जिसने शहनशाह के दिल को यरूशलम में रब के घर को शानदार बनाने की तहरीक दी है। 28उसी ने शहनशाह, उसके मुशीरों और तमाम असरो-रसूख़ रखनेवाले अफ़सरों के दिलों को मेरी तरफ़ मायल कर दिया है। चूँकि रब मेरे ख़ुदा का शफ़ीक़ हाथ मुझ पर था इसलिए मेरा हौसला बढ़ गया, और मैंने इसराईल के ख़ानदानी सरपरस्तों को अपने साथ इसराईल वापस जाने के लिए जमा किया।

अज़रा के साथ जिलावतनी से वापस आनेवालों की फ़हरिस्त

8 दर्जे-ज़ैल उन ख़ानदानी सरपरस्तों की फ़हरिस्त है जो अर्तख़शस्ता बादशाह की हुकूमत के दौरान मेरे साथ बाबल से यरूशलम के लिए रवाना हुए। हर ख़ानदान के मर्दों की तादाद भी दर्ज है :

2-3फ़ीनहास के ख़ानदान का जैरसोम,
इतमर के ख़ानदान का दानियाल,
दाऊद के ख़ानदान का हत्तूश बिन सकनियाह,
परऊस के ख़ानदान का ज़करियाह। 150 मर्द उसके साथ नसबनामे में दर्ज थे।

4पख़त-मोआब के ख़ानदान का इलीहूऐनी बिन ज़रख़ियाह 200 मर्दों के साथ,
5ज़त्तू के ख़ानदान का सकनियाह बिन यहज़ियेल 300 मर्दों के साथ,
6अदीन के ख़ानदान का अबद बिन यूनतन 50 मर्दों के साथ,
7ऐलाम के ख़ानदान का यसायाह बिन अतलियाह 70 मर्दों के साथ,
8सफ़तियाह के ख़ानदान का ज़बदियाह बिन मीकाएल 80 मर्दों के साथ,
9योआब के ख़ानदान का अबदियाह बिन यहियेल 218 मर्दों के साथ,
10बानी के ख़ानदान का सलूमीत बिन यूसिफ़ियाह 160 मर्दों के साथ,
11बबी के ख़ानदान का ज़करियाह बिन बबी 28 मर्दों के साथ,
12अज़जाद के ख़ानदान का यूहनान बिन हक़्क़ातान 110 मर्दों के साथ,

13अदूनिक़ाम के ख़ानदान के आख़िरी लोग
इलीफ़लत, यइयेल और समायाह 60 मर्दों के
साथ,
14बिगवई का ख़ानदान का ऊती और ज़बूद
70 मर्दों के साथ।

15मैं यानी अज़रा ने मज़कूरा लोगों को उस
नहर के पास जमा किया जो अहावा की तरफ़
बहती है। वहाँ हम ख़ैमे लगाकर तीन दिन ठहरे
रहे। इस दौरान मुझे पता चला कि गो आम
लोग और इमाम आ गए हैं लेकिन एक भी
लावी हाज़िर नहीं है। 16चुनाँचे मैंने इलियज़र,
अरियेल, समायाह, इलनातन, यरीब, इलनातन,
नातन, ज़करियाह और मसुल्लाम को अपने पास
बुला लिया। यह सब ख़ानदानी सरपरस्त थे
जबकि शरीअत के दो उस्ताद बनाम यूयारीब
और इलनातन भी साथ थे। 17मैंने उन्हें लावियों
की आबादी कासिफ़ियाह के बुज़ुर्ग इद्दू के पास
भेजकर वह कुछ बताया जो उन्हें इद्दू, उसके
भाइयों और रब के घर के ख़िदमतगारों को
बताना था ताकि वह हमारे ख़ुदा के घर के लिए
ख़िदमतगार भेजें।
18अल्लाह का शफ़ीक़ हाथ हम पर था,
इसलिए उन्होंने हमें महली बिन लावी बिन
इसराईल के ख़ानदान का समझदार आदमी
सरिबियाह भेज दिया। सरिबियाह अपने बेटों और
भाइयों के साथ पहुँचा। कुल 18 मर्द थे। 19इनके
अलावा मिरारी के ख़ानदान के हसबियाह और
यसायाह को भी उनके बेटों और भाइयों के साथ
हमारे पास भेजा गया। कुल 20 मर्द थे। 20उनके
साथ रब के घर के 220 ख़िदमतगार थे। इनके
तमाम नाम नसबनामे में दर्ज थे। दाऊद और
उसके मुलाज़िमों ने उनके बापदादा को लावियों
की ख़िदमत करने की ज़िम्मेदारी दी थी।

यरूशलम के लिए रवानगी की तैयारियाँ

21वहीं अहावा की नहर के पास ही मैंने एलान
किया कि हम सब रोज़ा रखकर अपने आपको
अपने ख़ुदा के सामने पस्त करें और दुआ करें कि
वह हमें हमारे बाल-बच्चों और सामान के साथ
सलामती से यरूशलम पहुँचाए। 22क्योंकि हमारे
साथ फ़ौजी और घुड़सवार नहीं थे जो हमें रास्ते
में डाकुओं से महफ़ूज़ रखते। बात यह थी कि
मैं शहनशाह से यह माँगने से शर्म महसूस कर
रहा था, क्योंकि हमने उसे बताया था, "हमारे
ख़ुदा का शफ़ीक़ हाथ हर एक पर ठहरता है जो
उसका तालिब रहता है। लेकिन जो भी उसे तर्क
करे उस पर उसका सख़्त ग़ज़ब नाज़िल होता
है।" 23चुनाँचे हमने रोज़ा रखकर अपने ख़ुदा से
इलतमास की कि वह हमारी हिफ़ाज़त करे, और
उसने हमारी सुनी।
24फिर मैंने इमामों के 12 राहनुमाओं को चुन
लिया, नीज़ सरिबियाह, हसबियाह और मज़ीद
10 लावियों को। 25उनकी मौजूदगी में मैंने
सोना-चाँदी और बाक़ी तमाम सामान तोल लिया
जो शहनशाह, उसके मुशीरों और अफ़सरों और
वहाँ के तमाम इसराईलियों ने हमारे ख़ुदा के घर
के लिए अता किया था।
26मैंने तोलकर ज़ैल का सामान उनके
हवाले कर दिया : तक़रीबन 22,000 कि-
लोग्राम चाँदी, चाँदी का कुछ सामान जिसका कुल
वज़न तक़रीबन 3,400 किलोग्राम था, 3,400
किलोग्राम सोना, 27सोने के 20 प्याले जिनका
कुल वज़न तक़रीबन साढ़े 8 किलोग्राम था, और
पीतल के दो पालिश किए हुए प्याले जो सोने के
प्यालों जैसे क़ीमती थे।
28मैंने आदमियों से कहा, "आप और यह
तमाम चीज़ें रब के लिए मख़सूस हैं। लोगों
ने अपनी ख़ुशी से यह सोना-चाँदी रब आपके
बापदादा के ख़ुदा के लिए क़ुरबान की है।
29सब कुछ एहतियात से महफ़ूज़ रखें, और जब
आप यरूशलम पहुँचेंगे तो इसे रब के घर के
ख़ज़ाने तक पहुँचाकर राहनुमा इमामों, लावियों
और ख़ानदानी सरपरस्तों की मौजूदगी में दुबारा
तोलना।"

30फिर इमामों और लावियों ने सोना-चाँदी और
बाक़ी सामान लेकर उसे यरूशलम में हमारे ख़ुदा
के घर में पहुँचाने के लिए महफ़ूज़ रखा।

यरूशलम तक सफ़र

31हम पहले महीने के 12वें दिन[a] अहावा नहर
से यरूशलम के लिए रवाना हुए। अल्लाह का
शफ़ीक़ हाथ हम पर था, और उसने हमें रास्ते
में दुश्मनों और डाकुओं से महफ़ूज़ रखा। 32हम
यरूशलम पहुँचे तो पहले तीन दिन आराम किया।
33चौथे दिन हमने अपने ख़ुदा के घर में सोना-
चाँदी और बाक़ी मख़सूस सामान तोलकर इमाम
मरीमोत बिन ऊरियाह के हवाले कर दिया। उस
वक़्त इलियज़र बिन फ़ीनहास और दो लावी
बनाम यूज़बद बिन यशुअ और नौअदियाह बिन
बिन्नूई उसके साथ थे। 34हर चीज़ गिनी और
तोली गई, फिर उसका पूरा वज़न फ़हरिस्त में
दर्ज किया गया।

35इसके बाद जिलावतनी से वापस आए हुए
तमाम लोगों ने इसराईल के ख़ुदा को भस्म
होनेवाली क़ुरबानियाँ पेश कीं। इस नाते से उन्होंने
पूरे इसराईल के लिए 12 बैल, 96 मेंढे, भेड़ के
77 बच्चे और गुनाह की क़ुरबानी के 12 बकरे
क़ुरबान किए।

36मुसाफ़िरों ने दरियाए-फ़ुरात के मग़रिबी
इलाक़े के गवर्नरों और हाकिमों को शहन-
शाह की हिदायात पहुँचाईं। इनको पढ़कर उन्होंने
इसराईली क़ौम और अल्लाह के घर की हिमायत
की।

ग़ैरयहूदी बीवियों पर अफ़सोस

9 1-2कुछ देर बाद क़ौम के राहनुमा मेरे पास
आए और कहने लगे, "क़ौम के आम
लोगों, इमामों और लावियों ने अपने आपको
मुल्क की दीगर क़ौमों से अलग नहीं रखा, गो
यह घिनौने रस्मो-रिवाज के पैरोकार हैं। उनकी
औरतों से शादी करके उन्होंने अपने बेटों की भी
शादी उनकी बेटियों से कराई है। यों अल्लाह की
मुक़द्दस क़ौम कनानियों, हित्तियों, फ़रिज़्ज़ियों,
यबूसियों, अम्मोनियों, मोआबियों, मिसरियों और
अमोरियों से आलूदा हो गई है। और बुज़ुर्गों और
अफ़सरों ने इस बेवफ़ाई में पहल की है!"

3यह सुनकर मैंने रंजीदा होकर अपने कपड़ों
को फाड़ लिया और सर और दाढ़ी के बाल नोच
नोचकर नंगे फ़र्श पर बैठ गया। 4वहाँ मैं शाम
की क़ुरबानी तक बेहिसो-हरकत बैठा रहा। इतने
में बहुत-से लोग मेरे इर्दगिर्द जमा हो गए। वह
जिलावतनी से वापस आए हुए लोगों की बेवफ़ाई
के बाइस थरथरा रहे थे, क्योंकि वह इसराईल के
ख़ुदा के जवाब से निहायत ख़ौफ़ज़दा थे। 5शाम
की क़ुरबानी के वक़्त मैं वहाँ से उठ खड़ा हुआ
जहाँ मैं तौबा की हालत में बैठा हुआ था। वही फटे
हुए कपड़े पहने हुए मैं घुटने टेककर झुक गया और
अपने हाथों को आसमान की तरफ़ उठाए हुए रब
अपने ख़ुदा से दुआ करने लगा,

6"ऐ मेरे ख़ुदा, मैं निहायत शरमिंदा हूँ। अपना
मुँह तेरी तरफ़ उठाने की मुझमें जुर्रत नहीं रही।
क्योंकि हमारे गुनाहों का इतना बड़ा ढेर लग गया
है कि वह हमसे ऊँचा है, बल्कि हमारा क़ुसूर
आसमान तक पहुँच गया है। 7हमारे बापदादा के
ज़माने से लेकर आज तक हमारा क़ुसूर संजीदा
रहा है। इसी वजह से हम बार बार परदेसी
हुक्मरानों के क़ब्ज़े में आए हैं जिन्होंने हमें और
हमारे बादशाहों और इमामों को क़त्ल किया,
गिरिफ़्तार किया, लूट लिया और हमारी बेहुरमती
की। बल्कि आज तक हमारी हालत यही रही है।

8लेकिन इस वक़्त रब हमारे ख़ुदा ने थोड़ी देर
के लिए हम पर मेहरबानी की है। हमारी क़ौम
के बचे-खुचे हिस्से को उसने रिहाई देकर अपने
मुक़द्दस मक़ाम पर महफ़ूज़ रखा है। यों हमारे
ख़ुदा ने हमारी आँखों में दुबारा चमक पैदा की
और हमें कुछ सुकून मुहैया किया है, गो हम अब
तक ग़ुलामी में हैं। 9बेशक हम ग़ुलाम हैं, तो भी

[a]19 अप्रैल।

अल्लाह ने हमें तर्क नहीं किया बल्कि फ़ारस के बादशाह को हम पर मेहरबानी करने की तहरीक दी है। उसने हमें अज़ सरे-नौ ज़िंदगी अता की है ताकि हम अपने ख़ुदा का घर दुबारा तामीर और उसके खंडरात बहाल कर सकें। अल्लाह ने हमें यहूदाह और यरूशलम में एक महफ़ूज़ चारदीवारी से घेर रखा है।

10लेकिन ऐ हमारे ख़ुदा, अब हम क्या कहें? अपनी इन हरकतों के बाद हम क्या जवाब दें? हमने तेरे उन अहकाम को नज़रंदाज़ किया
है 11जो तूने अपने ख़ादिमों यानी नबियों की मारिफ़त दिए थे।

तूने फ़रमाया, 'जिस मुल्क में तुम दाख़िल हो रहे हो ताकि उस पर क़ब्ज़ा करो वह उसमें रहनेवाली क़ौमों के घिनौने रस्मो-रिवाज के सबब से नापाक है। मुल्क एक सिरे से दूसरे सिरे तक
उनकी नापाकी से भर गया है। 12लिहाज़ा अपनी बेटियों की उनके बेटों के साथ शादी मत करवाना, न अपने बेटों का उनकी बेटियों के साथ रिश्ता बाँधना। कुछ न करो जिससे उनकी सलामती और कामयाबी बढ़ती जाए। तब ही तुम ताक़तवर होकर मुल्क की अच्छी पैदावार खाओगे, और तुम्हारी औलाद हमेशा तक मुल्क की अच्छी चीज़ें विरासत में पाती रहेगी।'

13अब हम अपनी शरीर हरकतों और बड़े क़ुसूर की सज़ा भुगत रहे हैं, गो ऐ अल्लाह, तूने हमें इतनी सख़्त सज़ा नहीं दी जितनी हमें मिलनी चाहिए थी। तूने हमारा यह बचा-खुचा हिस्सा
ज़िंदा छोड़ा है। 14तो क्या यह ठीक है कि हम तेरे अहकाम की ख़िलाफ़वरज़ी करके ऐसी क़ौमों से रिश्ता बाँधें जो इस क़िस्म की घिनौनी हरकतें करती हैं? हरगिज़ नहीं! क्या इसका यह नतीजा नहीं निकलेगा कि तेरा ग़ज़ब हम पर नाज़िल होकर सब कुछ तबाह कर देगा और यह बचा-
खुचा हिस्सा भी ख़त्म हो जाएगा? 15ऐ रब
इसराईल के ख़ुदा, तू ही आदिल है। आज हम बचे हुए हिस्से की हैसियत से तेरे हुज़ूर खड़े हैं। हम क़ुसूरवार हैं और तेरे सामने क़ायम नहीं रह सकते।"

बुतपरस्त बीवियों को तलाक़

10 जब अज़रा इस तरह दुआ कर रहा और अल्लाह के घर के सामने पड़े हुए और रोते हुए क़ौम के क़ुसूर का इक़रार कर रहा था तो उसके इर्दगिर्द इसराईली मर्दों, औरतों और बच्चों का बड़ा हुजूम जमा हो गया। वह भी फूट फूटकर रोने लगे।

2फिर ऐलाम के ख़ानदान के सकनियाह बिन यहियेल ने अज़रा से कहा,

"वाक़ई हमने पड़ोसी क़ौमों की औरतों से शादी करके अपने ख़ुदा से बेवफ़ाई की है। तो भी अब तक इसराईल के लिए उम्मीद की किरण बाक़ी
है। 3आएँ, हम अपने ख़ुदा से अहद बाँधकर वादा करें कि हम उन तमाम औरतों को उनके बच्चों समेत वापस भेज देंगे। जो भी मशवरा आप और अल्लाह के अहकाम का ख़ौफ़ माननेवाले दीगर लोग हमें देंगे वह हम करेंगे। सब कुछ शरीअत
के मुताबिक़ किया जाए। 4अब उठें! क्योंकि यह मामला दुरुस्त करना आप ही का फ़र्ज़ है। हम आपके साथ हैं, इसलिए हौसला रखें और वह कुछ करें जो ज़रूरी है।"

5तब अज़रा उठा और राहनुमा इमामों, लावियों और तमाम क़ौम को क़सम खिलाई कि हम
सकनियाह के मशवरे पर अमल करेंगे। 6फिर
अज़रा अल्लाह के घर के सामने से चला गया और यूहनान बिन इलियासिब के कमरे में दाख़िल हुआ। वहाँ उसने पूरी रात कुछ खाए-पिए बग़ैर गुज़ारी। अब तक वह जिलावतनी से वापस आए हुए लोगों की बेवफ़ाई पर मातम कर रहा था।

7-8सरकारी अफ़सरों और बुज़ुर्गों ने फ़ैस-ला किया कि यरूशलम और पूरे यहूदाह में एलान किया जाए, "लाज़िम है कि जितने भी इसराईली जिलावतनी से वापस आए हैं वह सब तीन दिन के अंदर अंदर यरूशलम में जमा हो जाएँ। जो भी इस दौरान हाज़िर न हो उसे जिलावतनों की जमात

से ख़ारिज कर दिया जाएगा और उस की तमाम मिलकियत ज़ब्त हो जाएगी।” 9तब यहूदाह और बिनयमीन के क़बीलों के तमाम आदमी तीन दिन के अंदर अंदर यरूशलम पहुँचे। नवें महीने के बीसवें दिन[a] सब लोग अल्लाह के घर के सहन में जमा हुए। सब मामले की संजीदगी और मौसम के सबब से काँप रहे थे, क्योंकि बारिश हो रही थी।

10अज़रा इमाम खड़े होकर कहने लगा, “आप अल्लाह से बेवफ़ा हो गए हैं। ग़ैरयहूदी औरतों से रिश्ता बाँधने से आपने इसराईल के क़ुसूर में इज़ाफ़ा कर दिया है। 11अब रब अपने बापदादा के ख़ुदा के हुज़ूर अपने गुनाहों का इक़रार करके उस की मरज़ी पूरी करें। पड़ोसी क़ौमों और अपनी परदेसी बीवियों से अलग हो जाएँ।”

12पूरी जमात ने बुलंद आवाज़ से जवाब दिया, “आप ठीक कहते हैं! लाज़िम है कि हम आपकी हिदायत पर अमल करें। 13लेकिन यह कोई ऐसा मामला नहीं है जो एक या दो दिन में दुरुस्त किया जा सके। क्योंकि हम बहुत लोग हैं और हमसे संजीदा गुनाह सरज़द हुआ है। नीज़, इस वक़्त बरसात का मौसम है, और हम ज़्यादा देर तक बाहर नहीं ठहर सकते। 14बेहतर है कि हमारे बुज़ुर्ग पूरी जमात की नुमाइंदगी करें। फिर जितने भी आदमियों की ग़ैरयहूदी बीवियाँ हैं वह एक मुक़र्ररा दिन मक़ामी बुज़ुर्गों और क़ाज़ियों को साथ लेकर यहाँ आएँ और मामला दुरुस्त करें। और लाज़िम है कि यह सिलसिला उस वक़्त तक जारी रहे जब तक रब का ग़ज़ब ठंडा न हो जाए।”

15तमाम लोग मुत्तफ़िक़ हुए, सिर्फ़ यूनतन बिन असाहेल और यहज़ियाह बिन तिक़वा ने फ़ैसले की मुख़ालफ़त की जबकि मसुल्लाम और सब्बती लावी उनके हक़ में थे। 16-17तो भी इसराईलियों ने मनसूबे पर अमल किया। अज़रा इमाम ने चंद एक ख़ानदानी सरपरस्तों के नाम लेकर उन्हें यह ज़िम्मेदारी दी कि जहाँ भी किसी यहूदी मर्द की ग़ैरयहूदी औरत से शादी हुई है वहाँ वह पूरे मामले की तहक़ीक़ करें। उनका काम दसवें महीने के पहले दिन[b] शुरू हुआ और पहले महीने के पहले दिन[c] तकमील तक पहुँचा।

18-19दर्जे-ज़ैल उन आदमियों की फ़हरिस्त है जिन्होंने ग़ैरयहूदी औरतों से शादी की थी। उन्होंने क़सम खाकर वादा किया कि हम अपनी बीवियों से अलग हो जाएंगे। साथ साथ हर एक ने क़ुसूर की क़ुरबानी के तौर पर मेंढा क़ुरबान किया।

इमामों में से क़ुसूरवार :

यशुअ बिन यूसदक़ और उसके भाई मासियाह, इलियज़र, यरीब और जिदलियाह,

20इम्मेर के ख़ानदान का हनानी और ज़बदियाह,

21हारिम के ख़ानदान का मासियाह, इलियास, समायाह, यहियेल और उज़्ज़ियाह,

22फ़शहूर के ख़ानदान का इलियूऐनी, मासियाह, इसमाईल, नतनियेल, यूज़बद और इलियासा।

23लावियों में से क़ुसूरवार :

यूज़बद, सिमई, क़िलायाह यानी क़लीता, फ़तहियाह, यहूदाह और इलियज़र।

24गुलूकारों में से क़ुसूरवार :

इलियासिब।

रब के घर के दरबानों में से क़ुसूरवार :

सल्लूम, तलम और ऊरी।

25बाक़ी क़ुसूरवार इसराईली :

परऊस के ख़ानदान का रमियाह, यज़्ज़ियाह, मलकियाह, मियामीन, इलियज़र, मलकियाह और बिनायाह।

26ऐलाम के ख़ानदान का मत्तनियाह, ज़करियाह, यहियेल, अबदी, यरीमोत और इलियास,

[a] 19 सितंबर।
[b] 29 दिसंबर।
[c] 27 मार्च।

27ज़त्तू के ख़ानदान का इलियूऐनी, इलि-
यासिब, मत्तनियाह, यरीमोत, ज़बद और
अज़ीज़ा।
28बबी के ख़ानदान का यूहनान, हननि-
याह, ज़ब्बी और अतली।
29बानी के ख़ानदान का मसुल्लाम,
मल्लूक, अदायाह, यसूब, सियाल और यरी-
मोत।
30पख़त-मोआब के ख़ानदान का अदना,
किलाल, बिनायाह, मासियाह, मत्तनियाह,
बज़लियेल, बिन्नूई और मनस्सी।
31हारिम के ख़ानदान का इलियज़र,
यिस्सियाह, मलकियाह, समायाह, शमाऊन,
32बिनयमीन, मल्लूक और समरियाह।
33हाशूम के ख़ानदान का मत्तनी, मत्तत्ताह,
ज़बद, इलीफ़लत, यरेमी, मनस्सी और सिमई।
34बानी के ख़ानदान का मादी, अम-
राम, ऊएल, 35बिनायाह, बदियाह, कलूही,
36वनियाह, मरीमोत, इलियासिब, 37मत्त-
नियाह, मत्तनी और यासी।
38बिन्नूई के ख़ानदान का सिमई, 39सल-
मियाह, नातन, अदायाह, 40मक्नदबी, सा-
सी, सारी, 41अज़रेल, सलमियाह, सम-
रियाह, 42सल्लूम, अमरियाह और यूसुफ़।
43नबू के ख़ानदान का यइयेल, मत्तिति-
याह, ज़बद, ज़बीना, यद्दी, योएल और बिनायाह।
44इन तमाम आदमियों की ग़ैरयहूदी औरतों से
शादी हुई थी, और उनके हाँ बच्चे पैदा हुए थे।

नहमियाह

नहमियाह यरूशलम के लिए दुआ करता है

1 ज़ैल में नहमियाह बिन हकलियाह की
रिपोर्ट दर्ज है।
मैं अर्तख़शस्ता बादशाह की हुकूमत के 20वें
साल किसलेव के महीने में सोसन के क़िले
में था 2कि एक दिन मेरा भाई हनानी मुझसे
मिलने आया। उसके साथ यहूदाह के चंद एक
आदमी थे। मैंने उनसे पूछा, “जो यहूदी बचकर
जिलावतनी से यहूदाह वापस गए हैं उनका क्या
हाल है? और यरूशलम शहर का क्या हाल
है?” 3उन्होंने जवाब दिया, “जो यहूदी बचकर
जिलावतनी से यहूदाह वापस गए हैं उनका बहुत
बुरा और ज़िल्लतआमेज़ हाल है। यरूशलम की
फ़सील अब तक ज़मीनबोस है, और उसके तमाम
दरवाज़े राख हो गए हैं।”
4यह सुनकर मैं बैठकर रोने लगा। कई दिन मैं
रोज़ा रखकर मातम करता और आसमान के ख़ुदा
से दुआ करता रहा,
5“ऐ रब, आसमान के ख़ुदा, तू कितना अज़ीम
और महीब ख़ुदा है! जो तुझे प्यार और तेरे
अहकाम की पैरवी करते हैं उनके साथ तू अपना
अहद क़ायम रखता और उन पर मेहरबानी करता
है। 6मेरी बात सुनकर ध्यान दे कि तेरा ख़ादिम
किस तरह तुझसे इलतमास कर रहा है। दिन-रात
मैं इसराईलियों के लिए जो तेरे ख़ादिम हैं दुआ
करता हूँ। मैं इक़रार करता हूँ कि हमने तेरा
गुनाह किया है। इसमें मैं और मेरे बाप का घराना
भी शामिल है। 7हमने तेरे ख़िलाफ़ निहायत
शरीर क़दम उठाए हैं, क्योंकि जो अहकाम और
हिदायात तूने अपने ख़ादिम मूसा को दी थीं हम
उनके ताबे न रहे। 8लेकिन अब वह कुछ याद कर
जो तूने अपने ख़ादिम को फ़रमाया, ‘अगर तुम
बेवफ़ा हो जाओ तो मैं तुम्हें मुख़्तलिफ़ क़ौमों में
मुंतशिर कर दूँगा, 9लेकिन अगर तुम मेरे पास
वापस आकर दुबारा मेरे अहकाम के ताबे हो
जाओ तो मैं तुम्हें तुम्हारे वतन में वापस लाऊँगा,
ख़ाह तुम ज़मीन की इंतहा तक क्यों न पहुँच
गए हो। मैं तुम्हें उस जगह वापस लाऊँगा जिसे
मैंने चुन लिया है ताकि मेरा नाम वहाँ सुकूनत
करे।’ 10ऐ रब, यह लोग तो तेरे अपने ख़ादिम हैं,
तेरी अपनी क़ौम जिसे तूने अपनी अज़ीम क़ुदरत
और क़वी हाथ से फ़िद्या देकर छुड़ाया है। 11ऐ
रब, अपने ख़ादिम और उन तमाम ख़ादिमों की
इलतमास सुन जो पूरे दिल से तेरे नाम का ख़ौफ़
मानते हैं। जब तेरा ख़ादिम आज शहनशाह के
पास होगा तो उसे कामयाबी अता कर। बख़्श दे
कि वह मुझ पर रहम करे।”
मैंने यह इसलिए कहा कि मैं शहनशाह का
साक़ी था।

नहमियाह को यरूशलम जाने की इजाज़त मिलती है

2 चार महीने गुज़र गए। नीसान के महीने
के एक दिन जब मैं शहनशाह अर्तख़शस्ता
को मै पिला रहा था तो मेरी मायूसी उसे नज़र
आई। पहले उसने मुझे कभी उदास नहीं देखा
था, 2इसलिए उसने पूछा, "आप इतने ग़मगीन
क्यों दिखाई दे रहे हैं? आप बीमार तो नहीं लगते
बल्कि कोई बात आपके दिल को तंग कर रही
है।"

मैं सख़्त घबरा गया 3और कहा, "शहनशाह
अबद तक जीता रहे! मैं किस तरह ख़ुश हो
सकता हूँ? जिस शहर में मेरे बापदादा को
दफ़नाया गया है वह मलबे का ढेर है, और उसके
दरवाज़े राख हो गए हैं।"

4शहनशाह ने पूछा, "तो फिर मैं किस तरह
आपकी मदद करूँ?" ख़ामोशी से आसमान के
ख़ुदा से दुआ करके 5मैंने शहनशाह से कहा,
"अगर बात आपको मंज़ूर हो और आप अपने
ख़ादिम से ख़ुश हों तो फिर बराहे-करम मुझे
यहूदाह के उस शहर भेज दीजिए जिसमें मेरे
बापदादा दफ़न हुए हैं ताकि मैं उसे दुबारा तामीर
करूँ।"

6उस वक़्त मलिका भी साथ बैठी थी।
शहनशाह ने सवाल किया, "सफ़र के लिए
कितना वक़्त दरकार है? आप कब तक वापस
आ सकते हैं?" मैंने उसे बताया कि मैं कब
तक वापस आऊँगा तो वह मुत्तफ़िक़ हुआ। 7फिर
मैंने गुज़ारिश की, "अगर बात आपको मंज़ूर
हो तो मुझे दरियाए-फ़ुरात के मग़रिबी इलाक़े
के गवर्नरों के लिए ख़त दीजिए ताकि वह मुझे
अपने इलाक़ों में से गुज़रने दें और मैं सलामती
से यहूदाह तक पहुँच सकूँ। 8इसके अलावा
शाही जंगलात के निगरान आसफ़ के लिए ख़त
लिखवाएँ ताकि वह मुझे लकड़ी दे। जब मैं रब के
घर के साथवाले क़िले के दरवाज़े, फ़सील और
अपना घर बनाऊँगा तो मुझे शहतीरों की ज़रूरत
होगी।" अल्लाह का शफ़ीक़ हाथ मुझ पर था,
इसलिए शहनशाह ने मुझे यह ख़त दे दिए।

9शहनशाह ने फ़ौजी अफ़सर और घुड़-
सवार भी मेरे साथ भेजे। यों रवाना होकर मैं
दरियाए-फ़ुरात के मग़रिबी इलाक़े के गवर्नरों के
पास पहुँचा और उन्हें शहनशाह के ख़त दिए।
10जब गवर्नर संबल्लत हौरूनी और अम्मोनी
अफ़सर तूबियाह को मालूम हुआ कि कोई
इसराईलियों की बहबूदी के लिए आ गया है तो
वह निहायत नाख़ुश हुए।

नहमियाह फ़सील का मुआयना करता है

11सफ़र करते करते मैं यरूशलम पहुँच गया।
तीन दिन के बाद 12मैं रात के वक़्त शहर से
निकला। मेरे साथ चंद एक आदमी थे, और हमारे
पास सिर्फ़ वही जानवर था जिस पर मैं सवार
था। अब तक मैंने किसी को भी उस बोझ के
बारे में नहीं बताया था जो मेरे ख़ुदा ने मेरे दिल
पर यरूशलम के लिए डाल दिया था। 13चुनाँचे
मैं अंधेरे में वादी के दरवाज़े से शहर से निकला
और जुनूब की तरफ़ अज़दहे के चश्मे से होकर
कचरे के दरवाज़े तक पहुँचा। हर जगह मैंने गिरी
हुई फ़सील और भस्म हुए दरवाज़ों का मुआयना
किया। 14फिर मैं शिमाल यानी चश्मे के दरवाज़े
और शाही तालाब की तरफ़ बढ़ा, लेकिन मलबे
की कसरत की वजह से मेरे जानवर को गुज़रने
का रास्ता न मिला, 15इसलिए मैं वादीए-क़िदरोन
में से गुज़रा। अब तक अंधेरा ही अंधेरा था। वहाँ
भी मैं फ़सील का मुआयना करता गया। फिर मैं
मुड़ा और वादी के दरवाज़े में से दुबारा शहर में
दाख़िल हुआ।

फ़सील को तामीर करने का फ़ैसला

16यरूशलम के अफ़सरों को मालूम नहीं था कि
मैं कहाँ गया और क्या कर रहा था। अब तक मैंने
न उन्हें और न इमामों या दीगर उन लोगों को अपने
मनसूबे से आगाह किया था जिन्हें तामीर का यह
काम करना था। 17लेकिन अब मैं उनसे मुख़ातिब

हुआ, "आपको ख़ुद हमारी मुसीबत नज़र आती है। यरूशलम मलबे का ढेर बन गया है, और उसके दरवाज़े राख हो गए हैं। आएँ, हम फ़सील को नए सिरे से तामीर करें ताकि हम दूसरों के मज़ाक़ का निशाना न बने रहें।"
18मैंने उन्हें बताया कि अल्लाह का शफ़ीक़ हाथ किस तरह मुझ पर रहा था और कि शहनशाह ने मुझसे किस क़िस्म का वादा किया था। यह सुनकर उन्होंने जवाब दिया, "ठीक है, आएँ हम तामीर का काम शुरू करें!" चुनाँचे वह इस अच्छे काम में लग गए।

19जब संबल्लत हौरूनी, अम्मोनी अफ़सर तूबियाह और जशम अरबी को इसकी ख़बर मिली तो उन्होंने हमारा मज़ाक़ उड़ाकर हिक़ारतआमेज़ लहजे में कहा, "यह तुम लोग क्या कर रहे हो? क्या तुम शहनशाह से ग़द्दारी करना चाहते हो?"
20मैंने जवाब दिया, "आसमान का ख़ुदा हमें कामयाबी अता करेगा। हम जो उसके ख़ादिम हैं तामीर का काम शुरू करेंगे। जहाँ तक यरूशलम का ताल्लुक़ है, न आज और न माज़ी में आपका कभी कोई हिस्सा या हक़ था।"

फ़सील की तामीरे-नौ

3 इमामे-आज़म इलियासिब बाक़ी इमामों के साथ मिलकर तामीरी काम में लग गया। उन्होंने भेड़ के दरवाज़े को नए सिरे से बना दिया और उसे मख़सूस करके उसके किवाड़ लगा दिए। उन्होंने फ़सील के साथवाले हिस्से को भी मिया बुर्ज और हननेल के बुर्ज तक बनाकर मख़सूस किया।

2यरीहू के आदमियों ने फ़सील के अगले हिस्से को खड़ा किया जबकि ज़क्कूर बिन इमरी ने उनके हिस्से से मुलहिक़ हिस्से को तामीर किया।

3मछली का दरवाज़ा सनाआह के ख़ानदान की ज़िम्मेदारी थी। उसे शहतीरों से बनाकर उन्होंने किवाड़, चटख़नियाँ और कुंडे लगा दिए।

4अगले हिस्से की मरम्मत मरीमोत बिन ऊरियाह बिन हक़्क़ूज़ ने की।

अगला हिस्सा मसुल्लाम बिन बरकियाह बिन मशेज़बेल की ज़िम्मेदारी थी।

सदोक़ बिन बाना ने अगले हिस्से को तामीर किया।

5अगला हिस्सा तक़ुअ के बाशिंदों ने बनाया। लेकिन शहर के बड़े लोग अपने बुज़ुर्गों के तहत काम करने के लिए तैयार न थे।

6यसाना का दरवाज़ा योयदा बिन फ़ासिह और मसुल्लाम बिन बसूदियाह की ज़िम्मेदारी थी। उसे शहतीरों से बनाकर उन्होंने किवाड़, चटख़नियाँ और कुंडे लगा दिए।

7अगला हिस्सा मलतियाह जिबऊनी और यदून मरूनोती ने खड़ा किया। यह लोग जिबऊन और मिसफ़ाह के थे, वही मिसफ़ाह जहाँ दरियाए-फ़ुरात के मग़रिबी इलाक़े के गवर्नर का दारुल-हुकूमत था।

8अगले हिस्से की मरम्मत एक सुनार बनाम उज़्ज़ियेल बिन हरहियाह के हाथ में थी।

अगले हिस्से पर एक इत्रसाज़ बनाम हननियाह मुक़र्रर था। इन लोगों ने फ़सील की मरम्मत 'मोटी दीवार' तक की।

9अगले हिस्से को रिफ़ायाह बिन हूर ने खड़ा किया। यह आदमी ज़िले यरूशलम के आधे हिस्से का अफ़सर था।

10यदायाह बिन हरूमफ़ ने अगले हिस्से की मरम्मत की जो उसके घर के मुक़ाबिल था।

अगले हिस्से को हत्तूश बिन हसब्नियाह ने तामीर किया।

11अगले हिस्से को तनूरों के बुर्ज तक मलकियाह बिन हारिम और हस्सूब बिन पख़त-मोआब ने खड़ा किया।

12अगला हिस्सा सल्लूम बिन हल्लूहेश की ज़िम्मेदारी थी। यह आदमी ज़िले यरूशलम के दूसरे आधे हिस्से का अफ़सर था। उस की बेटियों ने उस की मदद की।

13हनून ने ज़नूह के बाशिंदों समेत वादी के दरवाज़े को तामीर किया। शहतीरों से उसे बनाकर उन्होंने किवाड़, चटख़नियाँ और कुंडे लगाए।

इसके अलावा उन्होंने फ़सील को वहाँ से कचरे के दरवाज़े तक खड़ा किया। इस हिस्से का फ़ासला तक़रीबन 1,500 फ़ुट यानी आधा किलोमीटर था।

14कचरे का दरवाज़ा मलकियाह बिन रैकाब की ज़िम्मेदारी थी। यह आदमी ज़िले बैत-करम का अफ़सर था। उसने उसे बनाकर किवाड़, चटख़नियाँ और कुंडे लगाए।

15चश्मे के दरवाज़े की तामीर सल्लून बिन कुलहोज़ा के हाथ में थी जो ज़िले मिसफ़ाह का अफ़सर था। उसने दरवाज़े पर छत बनाकर उसके किवाड़, चटख़नियाँ और कुंडे लगा दिए। साथ साथ उसने फ़सील के उस हिस्से की मरम्मत की जो शाही बाग़ के पासवाले तालाब से गुज़रता है। यह वही तालाब है जिसमें पानी नाले के ज़रीए पहुँचता है। सल्लून ने फ़सील को उस सीढ़ी तक तामीर किया जो यरूशलम के उस हिस्से से उतरती है जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है।

16अगला हिस्सा नहमियाह बिन अज़बुक़ की ज़िम्मेदारी थी जो ज़िले बैत-सूर के आधे हिस्से का अफ़सर था। फ़सील का यह हिस्सा दाऊद बादशाह के क़ब्रिस्तान के मुक़ाबिल था और मसनूई तालाब और सूरमाओं के कमरों पर ख़त्म हुआ।

17ज़ैल के लावियों ने अगले हिस्सों को खड़ा किया : पहले रहूम बिन बानी का हिस्सा था।

ज़िले क़ईला के आधे हिस्से के अफ़सर हसबियाह ने अगले हिस्से की मरम्मत की।

18अगले हिस्से को लावियों ने बिन्नूई बिन हनदाद के ज़ेरे-निगरानी खड़ा किया जो ज़िले क़ईला के दूसरे आधे हिस्से पर मुक़र्रर था।

19अगला हिस्सा मिसफ़ाह के सरदार अज़र बिन यशुअ की ज़िम्मेदारी थी। यह हिस्सा फ़सील के उस मोड़ पर था जहाँ रास्ता असलाख़ाने की तरफ़ चढ़ता है।

20अगले हिस्से को बारूक बिन ज़ब्बी ने बड़ी मेहनत से तामीर किया। यह हिस्सा फ़सील के मोड़ से शुरू होकर इमामे-आज़म इलियासिब के घर के दरवाज़े पर ख़त्म हुआ।

21अगला हिस्सा मरीमोत बिन ऊरियाह बिन हक़्क़ूज़ की ज़िम्मेदारी थी और इलियासिब के घर के दरवाज़े से शुरू होकर उसके कोने पर ख़त्म हुआ।

22ज़ैल के हिस्से उन इमामों ने तामीर किए जो शहर के गिर्दो-नवाह में रहते थे।

23अगले हिस्से की तामीर बिनयमीन और हस्सूब के ज़ेरे-निगरानी थी। यह हिस्सा उनके घरों के सामने था।

अज़रियाह बिन मासियाह बिन अननियाह ने अगले हिस्से की मरम्मत की। यह हिस्सा उसके घर के पास ही था।

24अगला हिस्सा बिन्नूई बिन हनदाद की ज़िम्मेदारी थी। यह अज़रियाह के घर से शुरू हुआ और मुड़ते मुड़ते कोने पर ख़त्म हुआ।

25अगला हिस्सा फ़ालाल बिन ऊज़ी की ज़िम्मेदारी थी। यह हिस्सा मोड़ से शुरू हुआ, और ऊपर का जो बुर्ज शाही महल से उस जगह निकलता है जहाँ मुहाफ़िज़ों का सहन है वह भी इसमें शामिल था।

अगला हिस्सा फ़िदायाह बिन परऊस 26और ओफ़ल पहाड़ी पर रहनेवाले रब के घर के ख़िदमतगारों के ज़िम्मे था। यह हिस्सा पानी के दरवाज़े और वहाँ से निकले हुए बुर्ज पर ख़त्म हुआ।

27अगला हिस्सा इस बुर्ज से लेकर ओफ़ल पहाड़ी की दीवार तक था। तक़ुअ के बाशिंदों ने उसे तामीर किया।

28घोड़े के दरवाज़े से आगे इमामों ने फ़सील की मरम्मत की। हर एक ने अपने घर के सामने का हिस्सा खड़ा किया।

29उनके बाद सदोक़ बिन इम्मेर का हिस्सा आया। यह भी उसके घर के मुक़ाबिल था।

अगला हिस्सा समायाह बिन सकनियाह ने खड़ा किया। यह आदमी मशरिक़ी दरवाज़े का पहरेदार था।

30अगला हिस्सा हननियाह बिन सलमि-
याह और सलफ़ के छटे बेटे हनून के ज़िम्मे था।
अगला हिस्सा मसुल्लाम बिन बरकियाह ने
तामीर किया जो उसके घर के मुक़ाबिल था।
31एक सुनार बनाम मलकियाह ने अगले हिस्से
की मरम्मत की। यह हिस्सा रब के घर के
ख़िदमतगारों और ताजिरों के उस मकान पर ख़त्म
हुआ जो पहरे के दरवाज़े के सामने था। फ़सील
के कोने पर वाक़े बालाखाना भी इसमें शामिल
था।
32आख़िरी हिस्सा भेड़ के दरवाज़े पर ख़त्म
हुआ। सुनारों और ताजिरों ने उसे खड़ा किया।

संबल्लत यहूदियों का मज़ाक़ उड़ाता है

4 जब संबल्लत को पता चला कि हम
फ़सील को दुबारा तामीर कर रहे हैं तो वह
आग-बगूला हो गया। हमारा मज़ाक़ उड़ा उड़ाकर
2उसने अपने हमख़िदमत अफ़सरों और सामरिया
के फ़ौजियों की मौजूदगी में कहा, "यह ज़ईफ़
यहूदी क्या कर रहे हैं? क्या यह वाक़ई यरूशलम
की क़िलाबंदी करना चाहते हैं? क्या यह समझते
हैं कि चंद एक क़ुरबानियाँ पेश करके हम फ़सील
को आज ही खड़ा करेंगे? वह इन जले हुए पत्थरों
और मलबे के इस ढेर से किस तरह नई दीवार बना
सकते हैं?" 3अम्मोनी अफ़सर तूबियाह उसके
साथ खड़ा था। वह बोला, "उन्हें करने दो! दीवार
इतनी कमज़ोर होगी कि अगर लोमड़ी भी उस पर
छलाँग लगाए तो गिर जाएगी।"
4ऐ हमारे ख़ुदा, हमारी सुन, क्योंकि लोग हमें
हक़ीर जानते हैं। जिन बातों से उन्होंने हमें ज़लील
किया है वह उनकी ज़िल्लत का बाइस बन जाएँ।
बख़्श दे कि लोग उन्हें लूट लें और उन्हें क़ैद करके
जिलावतन कर दें। 5उनका क़ुसूर नज़रंदाज़ न कर
बल्कि उनके गुनाह तुझे याद रहें। क्योंकि उन्होंने
फ़सील को तामीर करनेवालों को ज़लील करने
से तुझे तैश दिलाया है।
6मुख़ालफ़त के बावुजूद हम फ़सील की
मरम्मत करते रहे, और होते होते पूरी दीवार की
आधी ऊँचाई खड़ी हुई, क्योंकि लोग पूरी लग्न से
काम कर रहे थे।

दुश्मन के हमलों की मुदाफ़अत

7जब संबल्लत, तूबियाह, अरबों, अम्मो-
नियों और अशदूद के बाशिंदों को इत्तला मिली
कि यरूशलम की फ़सील की तामीर में तरक़्क़ी
हो रही है बल्कि जो हिस्से अब तक खड़े न हो
सके थे वह भी बंद होने लगे हैं तो वह बड़े ग़ुस्से
में आ गए। 8सब मुत्तहिद होकर यरूशलम पर
हमला करने और उसमें गड़बड़ पैदा करने की
साज़िशें करने लगे। 9लेकिन हमने अपने ख़ुदा से
इलतमास करके पहरेदार लगाए जो हमें दिन-रात
उनसे बचाए रखें।
10उस वक़्त यहूदाह के लोग कराहने लगे,
"मज़दूरों की ताक़त ख़त्म हो रही है, और अभी
तक मलबे के बड़े ढेर बाक़ी हैं। फ़सील को बनाना
हमारे बस की बात नहीं है।"
11दूसरी तरफ़ दुश्मन कह रहे थे, "हम
अचानक उन पर टूट पड़ेंगे। उनको उस वक़्त पता
चलेगा जब हम उनके बीच में होंगे। तब हम उन्हें
मार देंगे और काम रुक जाएगा।"
12जो यहूदी उनके क़रीब रहते थे वह बार बार
हमारे पास आकर हमें इत्तला देते रहे, "दुश्मन
चारों तरफ़ से आप पर हमला करने के लिए तैयार
खड़ा है।"
13तब मैंने लोगों को फ़सील के पीछे एक जगह
खड़ा कर दिया जहाँ दीवार सबसे नीची थी, और
वह तलवारों, नेज़ों और कमानों से लैस अपने
ख़ानदानों के मुताबिक़ खुले मैदान में खड़े हो गए।
14लोगों का जायज़ा लेकर मैं खड़ा हुआ और
कहने लगा, "उनसे मत डरें! रब को याद करें
जो अज़ीम और महीब है। ज़हन में रखें कि हम
अपने भाइयों, बेटों बेटियों, बीवियों और घरों के
लिए लड़ रहे हैं।"
15जब हमारे दुश्मनों को मालूम हुआ कि उनकी
साज़िशों की ख़बर हम तक पहुँच गई है और
कि अल्लाह ने उनके मनसूबे को नाकाम होने

दिया तो हम सब अपनी अपनी जगह पर दुबारा
तामीर के काम में लग गए। 16लेकिन उस दिन से
मेरे जवानों का सिर्फ़ आधा हिस्सा तामीरी काम
में लगा रहा। बाक़ी लोग नेज़ों, ढालों, कमानों
और ज़िरा-बकतर से लैस पहरा देते रहे। अफ़सर
यहूदाह के उन तमाम लोगों के पीछे खड़े रहे 17जो
दीवार को तामीर कर रहे थे। सामान उठानेवाले
एक हाथ से हथियार पकड़े काम करते थे। 18और
जो भी दीवार को खड़ा कर रहा था उस की
तलवार कमर में बँधी रहती थी। जिस आदमी
को तुरम बजाकर ख़तरे का एलान करना था वह
हमेशा मेरे साथ रहा। 19मैंने शुरफ़ा, बुज़ुर्गों और
बाक़ी लोगों से कहा, “यह काम बहुत ही बड़ा और
वसी है, इसलिए हम एक दूसरे से दूर और बिखरे
हुए काम कर रहे हैं। 20ज्योंही आपको तुरम की
आवाज़ सुनाई दे तो भागकर आवाज़ की तरफ़
चले आएँ। हमारा ख़ुदा हमारे लिए लड़ेगा!”

21हम पौ फटने से लेकर उस वक़्त तक काम में
मसरूफ़ रहते जब तक सितारे नज़र न आते, और
हर वक़्त आदमियों का आधा हिस्सा नेज़े पकड़े
पहरा देता था। 22उस वक़्त मैंने सबको यह हुक्म
भी दिया, “हर आदमी अपने मददगारों के साथ
रात का वक़्त यरूशलम में गुज़ारे। फिर आप रात
के वक़्त पहरादारी में भी मदद करेंगे और दिन के
वक़्त तामीरी काम में भी।” 23उन तमाम दिनों
के दौरान न मैं, न मेरे भाइयों, न मेरे जवानों और
न मेरे पहरेदारों ने कभी अपने कपड़े उतारे। नीज़,
हर एक अपना हथियार पकड़े रहा।

ग़रीबों का क़र्ज़ा मनसूख़

5 कुछ देर बाद कुछ मर्दो-ख़वातीन मेरे पास
आकर अपने यहूदी भाइयों की शिकायत
करने लगे। 2बाज़ ने कहा, “हमारे बहुत ज़्यादा
बेटे-बेटियाँ हैं, इसलिए हमें मज़ीद अनाज मिलना
चाहिए, वरना हम ज़िंदा नहीं रहेंगे।” 3दूसरों ने
शिकायत की, “काल के दौरान हमें अपने खेतों,
अंगूर के बाग़ों और घरों को गिरवी रखना पड़ा
ताकि अनाज मिल जाए।” 4कुछ और बोले, “हमें
अपने खेतों और अंगूर के बाग़ों पर बादशाह का
टैक्स अदा करने के लिए उधार लेना पड़ा। 5हम
भी दूसरों की तरह यहूदी क़ौम के हैं, और हमारे
बच्चे उनसे कम हैसियत नहीं रखते। तो भी हमें
अपने बच्चों को ग़ुलामी में बेचना पड़ता है ताकि
गुज़ारा हो सके। हमारी कुछ बेटियाँ लौंडियाँ बन
चुकी हैं। लेकिन हम ख़ुद बेबस हैं, क्योंकि हमारे
खेत और अंगूर के बाग़ दूसरों के क़ब्ज़े में हैं।”

6उनका वावैला और शिकायतें सुनकर मुझे
बड़ा ग़ुस्सा आया। 7बहुत सोच-बिचार के बाद
मैंने शुरफ़ा और अफ़सरों पर इलज़ाम लगाया,
“आप अपने हमवतन भाइयों से ग़ैरमुनासिब सूद
ले रहे हैं!” मैंने उनसे निपटने के लिए एक
बड़ी जमात इकट्ठी करके 8कहा, “हमारे कई
हमवतन भाइयों को ग़ैरयहूदियों को बेचा गया था।
जहाँ तक मुमकिन था हमने उन्हें वापस ख़रीदकर
आज़ाद करने की कोशिश की। और अब आप
ख़ुद अपने हमवतन भाइयों को बेच रहे हैं। क्या
हम अब उन्हें दुबारा वापस ख़रीदें?” वह ख़ामोश
रहे और कोई जवाब न दे सके।

9मैंने बात जारी रखी, “आपका यह सुलूक
ठीक नहीं। आपको हमारे ख़ुदा का ख़ौफ़ मानकर
ज़िंदगी गुज़ारना चाहिए ताकि हम अपने ग़ैरयहूदी
दुश्मनों की लान-तान का निशाना न बनें। 10मैं,
मेरे भाइयों और मुलाज़िमों ने भी दूसरों को उधार
के तौर पर पैसे और अनाज दिया है। लेकिन आएँ,
हम उनसे सूद न लें! 11आज ही अपने क़र्ज़दारों
को उनके खेत, घर और अंगूर और ज़ैतून के
बाग़ वापस कर दें। जितना सूद आपने लगाया
था उसे भी वापस कर दें, ख़ाह उसे पैसों, अनाज,
ताज़ा मै या ज़ैतून के तेल की सूरत में अदा करना
हो।” 12उन्होंने जवाब दिया, “हम उसे वापस कर
देंगे और आइंदा उनसे कुछ नहीं माँगेंगे। जो कुछ
आपने कहा वह हम करेंगे।”

तब मैंने इमामों को अपने पास बुलाया ताकि
शुरफ़ा और बुज़ुर्ग उनकी मौजूदगी में क़सम खाएँ
कि हम ऐसा ही करेंगे। 13फिर मैंने अपने लिबास
की तहें झाड़ झाड़कर कहा, “जो भी अपनी

क़सम तोड़े उसे अल्लाह इसी तरह झाड़कर उसके
घर और मिलकियत से महरूम कर दे!”
तमाम जमाशुदा लोग बोले, “आमीन, ऐसा ही
हो!” और रब की तारीफ़ करने लगे। सबने अपने
वादे पूरे किए।

नहमियाह का अच्छा नमूना

14मैं कुल बारह साल सूबा यहूदाह का गवर्नर
रहा यानी अर्तख़शस्ता बादशाह की हुकूमत के
20वें साल से उसके 32वें साल तक। इस पूरे
अरसे में न मैंने और न मेरे भाइयों ने वह आमदनी
ली जो हमारे लिए मुक़र्रर की गई थी। 15असल
में माज़ी के गवर्नरों ने क़ौम पर बड़ा बोझ डाल
दिया था। उन्होंने रिआया से न सिर्फ़ रोटी और
मै बल्कि फ़ी दिन चाँदी के 40 सिक्के भी लिए
थे। उनके अफ़सरों ने भी आम लोगों से ग़लत
फ़ायदा उठाया था। लेकिन चूँकि मैं अल्लाह का
ख़ौफ़ मानता था, इसलिए मैंने उनसे ऐसा सुलूक
न किया। 16मेरी पूरी ताक़त फ़सील की तकमील
में सर्फ़ हुई, और मेरे तमाम मुलाज़िम भी इस
काम में शरीक रहे। हममें से किसी ने भी ज़मीन
न ख़रीदी। 17मैंने कुछ न माँगा हालाँकि मुझे
रोज़ाना यहूदाह के 150 अफ़सरों की मेहमान-
नवाज़ी करनी पड़ती थी। उनमें वह तमाम मेहमान
शामिल नहीं हैं जो गाहे बगाहे पड़ोसी ममालिक से
आते रहे। 18रोज़ाना एक बैल, छः बेहतरीन भेड़-
बकरियाँ और बहुत-से परिंदे मेरे लिए ज़बह करके
तैयार किए जाते, और दस दस दिन के बाद हमें
कई क़िस्म की बहुत-सी मै ख़रीदनी पड़ती थी।
इन अख़राजात के बावुजूद मैंने गवर्नर के लिए
मुक़र्ररा वज़ीफ़ा न माँगा, क्योंकि क़ौम पर बोझ
वैसे भी बहुत ज़्यादा था।
19ऐ मेरे ख़ुदा, जो कुछ मैंने इस क़ौम के लिए
किया है उसके बाइस मुझ पर मेहरबानी कर।

नहमियाह के ख़िलाफ़ साज़िश

6 संबल्लत, तूबियाह, जशम अरबी और
हमारे बाक़ी दुश्मनों को पता चला कि मैंने
फ़सील को तकमील तक पहुँचाया है और दीवार
में कहीं भी ख़ाली जगह नज़र नहीं आती। सिर्फ़
दरवाज़ों के किवाड़ अब तक लगाए नहीं गए थे।
2तब संबल्लत और जशम ने मुझे पैग़ाम भेजा,
“हम वादीए-ओनू के शहर कफ़ीरीम में आपसे
मिलना चाहते हैं।” लेकिन मुझे मालूम था कि वह
मुझे नुक़सान पहुँचाना चाहते हैं। 3इसलिए मैंने
क़ासिदों के हाथ जवाब भेजा, “मैं इस वक़्त एक
बड़ा काम तकमील तक पहुँचा रहा हूँ, इसलिए मैं
आ नहीं सकता। अगर मैं आपसे मिलने आऊँ तो
पूरा काम रुक जाएगा।”
4चार दफ़ा उन्होंने मुझे यही पैग़ाम भेजा और
हर बार मैंने वही जवाब दिया। 5पाँचवें मरतबा जब
संबल्लत ने अपने मुलाज़िम को मेरे पास भेजा तो
उसके हाथ में एक खुला ख़त था। 6ख़त में लिखा
था, “पड़ोसी ममालिक में अफ़वाह फैल गई है
कि आप और बाक़ी यहूदी बग़ावत की तैयारियाँ
कर रहे हैं। जशम ने इस बात की तसदीक़ की
है। लोग कहते हैं कि इसी वजह से आप फ़सील
बना रहे हैं। इन रिपोर्टों के मुताबिक़ आप उनके
बादशाह बनेंगे। 7कहा जाता है कि आपने नबियों
को मुक़र्रर किया है जो यरूशलम में एलान करें कि
आप यहूदाह के बादशाह हैं। बेशक ऐसी अफ़वाहें
शहनशाह तक भी पहुँचेंगी। इसलिए आएँ, हम
मिलकर एक दूसरे से मशवरा करें कि क्या करना
चाहिए।”
8मैंने उसे जवाब भेजा, “जो कुछ आप कह रहे
हैं वह झूट ही झूट है। कुछ नहीं हो रहा, बल्कि
आपने फ़रज़ी कहानी घड़ ली है!” 9असल में
दुश्मन हमें डराना चाहते थे। उन्होंने सोचा, “अगर
हम ऐसी बातें कहें तो वह हिम्मत हारकर काम से
बाज़ आएँगे।” लेकिन अब मैंने ज़्यादा अज़्म के
साथ काम जारी रखा।
10एक दिन मैं समायाह बिन दिलायाह बिन
महेतबेल से मिलने गया जो ताला लगाकर घर में
बैठा था। उसने मुझसे कहा, “आएँ, हम अल्लाह
के घर में जमा हो जाएँ और दरवाज़ों को अपने

पीछे बंद करके कुंडी लगाएँ। क्योंकि लोग इसी
रात आपको क़त्ल करने के लिए आएँगे।”
11मैंने एतराज़ किया, “क्या यह ठीक है कि
मुझ जैसा आदमी भाग जाए? या क्या मुझ जैसा
शख़्स जो इमाम नहीं है रब के घर में दाख़िल होकर
ज़िंदा रह सकता है? हरगिज़ नहीं! मैं ऐसा नहीं
करूँगा!” 12मैंने जान लिया कि समायाह की यह
बात अल्लाह की तरफ़ से नहीं है। संबल्लत और
तूबियाह ने उसे रिश्वत दी थी, इसी लिए उसने मेरे
बारे में ऐसी पेशगोई की थी। 13इससे वह मुझे
डराकर गुनाह करने पर उकसाना चाहते थे ताकि
वह मेरी बदनामी करके मुझे मज़ाक़ का निशाना
बना सकें।
14ऐ मेरे ख़ुदा, तूबियाह और संबल्लत की यह
बुरी हरकतें मत भूलना! नौअदियाह नबिया और
बाक़ी उन नबियों को याद रख जिन्होंने मुझे डराने
की कोशिश की है।

फ़सील की तकमील

15फ़सील इलूल के महीने के 25वें दिन[a] यानी
52 दिनों में मुकम्मल हुई। 16जब हमारे दुश्मनों
को यह ख़बर मिली तो पड़ोसी ममालिक सहम
गए, और वह एहसासे-कमतरी का शिकार हो
गए। उन्होंने जान लिया कि अल्लाह ने ख़ुद यह
काम तकमील तक पहुँचाया है।
17उन 52 दिनों के दौरान यहूदाह के शुरफ़ा
तूबियाह को ख़त भेजते रहे और उससे जवाब
मिलते रहे थे। 18असल में यहूदाह के बहुत-से
लोगों ने क़सम खाकर उस की मदद करने का
वादा किया था। वजह यह थी कि वह सकनियाह
बिन अरख़ का दामाद था, और उसके बेटे यूहनान
की शादी मसुल्लाम बिन बरकियाह की बेटी से हुई
थी। 19तूबियाह के यह मददगार मेरे सामने उसके
नेक कामों की तारीफ़ करते रहे और साथ साथ
मेरी हर बात उसे बताते रहे। फिर तूबियाह मुझे
ख़त भेजता ताकि मैं डरकर काम से बाज़ आऊँ।
7 फ़सील की तकमील पर मैंने दरवाज़ों
के किवाड़ लगवाए। फिर रब के घर के
दरबान, गुलूकार और ख़िदमतगुज़ार लावी मुक़र्रर
किए गए। 2मैंने दो आदमियों को यरूशलम के
हुक्मरान बनाया। एक मेरा भाई हनानी और दूसरा
क़िले का कमाँडर हननियाह था। हननियाह को
मैंने इसलिए चुन लिया कि वह वफ़ादार था और
अकसर लोगों की निसबत अल्लाह का ज़्यादा
ख़ौफ़ मानता था। 3मैंने दोनों से कहा, “यरूशलम
के दरवाज़े दोपहर के वक़्त जब धूप की शिद्दत है
खुले न रहें, और पहरा देते वक़्त भी उन्हें बंद करके
कुंडे लगाएँ। यरूशलम के आदमियों को पहरादारी
के लिए मुक़र्रर करें जिनमें से कुछ फ़सील पर
और कुछ अपने घरों के सामने ही पहरा दें।”

जिलावतनी से वापस आए हुओं की फ़हरिस्त

4गो यरूशलम शहर बड़ा और वसी था, लेकिन
उसमें आबादी थोड़ी थी। ढाए गए मकान अब तक
दुबारा तामीर नहीं हुए थे। 5चुनाँचे मेरे ख़ुदा ने मेरे
दिल को शुरफ़ा, अफ़सरों और अवाम को इकट्ठा
करने की तहरीक दी ताकि ख़ानदानों की रजिस्ट्री
तैयार करूँ। इस सिलसिले में मुझे एक किताब
मिल गई जिसमें उन लोगों की फ़हरिस्त दर्ज थी
जो हमसे पहले जिलावतनी से वापस आए थे।
उसमें लिखा था,
6“ज़ैल में यहूदाह के उन लोगों की फ़हरिस्त
है जो जिलावतनी से वापस आए। बाबल का
बादशाह नबूकदनज़्ज़र उन्हें क़ैद करके बाबल ले
गया था, लेकिन अब वह यरूशलम और यहूदाह
के उन शहरों में फिर जा बसे जहाँ पहले रहते थे।
7उनके राहनुमा ज़रुब्बाबल, यशुअ, नह-
मियाह, अज़रियाह, रामियाह, नहमानी, मर्दकी,
बिलशान, मिस्फ़रत, बिगवई, नहूम और बाना थे।

[a] 2 अक्तूबर।

ज़ैल की फ़हरिस्त में वापस आए हुए ख़ानदानों के मर्द बयान किए गए हैं।

8परऊस का ख़ानदान : 2,172,

9सफ़तियाह का ख़ानदान : 372,

10अरख़ का ख़ानदान : 652,

11पख़त-मोआब का ख़ानदान यानी यशुअ और योआब की औलाद : 2,818,

12ऐलाम का ख़ानदान : 1,254,

13ज़त्तू का ख़ानदान : 845,

14ज़क्की का ख़ानदान : 760,

15बिन्नूई का ख़ानदान : 648,

16बबी का ख़ानदान : 628,

17अज़जाद का ख़ानदान : 2,322,

18अदूनिक़ाम का ख़ानदान : 667,

19बिगवई का ख़ानदान : 2,067,

20अदीन का ख़ानदान : 655,

21अतीर का ख़ानदान यानी हिज़क़ियाह की औलाद : 98,

22हाशूम का ख़ानदान : 328,

23बज़ी का ख़ानदान : 324,

24ख़ारिफ़ का ख़ानदान : 112,

25जिबऊन का ख़ानदान : 95,

26बैत-लहम और नतूफ़ा के बाशिंदे : 188,

27अनतोत के बाशिंदे : 128,

28बैत-अज़मावत के बाशिंदे : 42,

29क़िरियत-यारीम, कफ़ीरा और बैरोत के बाशिंदे : 743,

30रामा और जिबा के बाशिंदे : 621,

31मिकमास के बाशिंदे : 122,

32बैतेल और अई के बाशिंदे : 123,

33दूसरे नबू के बाशिंदे : 52,

34दूसरे ऐलाम के बाशिंदे : 1,254,

35हारिम के बाशिंदे : 320,

36यरीहू के बाशिंदे : 345,

37लूद, हादीद और ओनू के बाशिंदे : 721,

38सनाआह के बाशिंदे : 3,930।

39ज़ैल के इमाम जिलावतनी से वापस आए।

यदायाह का ख़ानदान जो यशुअ की नसल का था : 973,

40इम्मेर का ख़ानदान : 1,052,

41फ़शहूर का ख़ानदान : 1,247,

42हारिम का ख़ानदान : 1,017।

43ज़ैल के लावी जिलावतनी से वापस आए।

यशुअ और क़दमियेल का ख़ानदान यानी हूदावियाह की औलाद : 74,

44गुलूकार : आसफ़ के ख़ानदान के 148 आदमी,

45रब के घर के दरबान : सल्लूम, अतीर, तलमून, अक़्क़ूब, ख़तीता और सोबी के ख़ानदानों के 138 आदमी।

46रब के घर के ख़िदमतगारों के दर्जे-ज़ैल ख़ानदान जिलावतनी से वापस आए।

ज़ीहा, हसूफ़ा, तब्बाओत, 47क़रूस, सिया,
फ़दून, 48लिबाना, हजाबा, शलमी, 49हनान,
जिद्देल, जहर, 50रियायाह, रज़ीन, नक़ूदा,
51जज़्ज़ाम, उज़्ज़ा, फ़ासिह, 52बसी, मऊनीम,
नफ़ूसीम, 53बक़बूक़, हक़ूफ़ा, हरहूर, 54बज़लूत,
महीदा, हर्शा, 55बरक़ूस, सीसरा, तामह,
56नज़ियाह और ख़तीफ़ा।

57सुलेमान के ख़ादिमों के दर्जे-ज़ैल ख़ानदान जिलावतनी से वापस आए।

सूती, सूफ़िरत, फ़रूदा, 58याला, दरक़ून,
जिद्देल, 59सफ़तियाह, ख़त्तील, फ़ूकिरत-
ज़बायम और अमून।

60रब के घर के ख़िदमतगारों और सुलेमान के ख़ादिमों के ख़ानदानों में से वापस आए हुए मर्दों की तादाद 392 थी।

61-62वापस आए हुए ख़ानदानों में से दिलायाह, तूबियाह और नक़ूदा के 642 मर्द साबित न कर सके कि इसराईल की औलाद हैं, गो वह तल-मिलह, तल-हर्शा, करूब, अद्दून और इम्मेर के रहनेवाले थे।

63-64हबायाह, हक़्क़ूज़ और बरज़िल्ली के ख़ानदानों के कुछ इमाम भी वापस आए, लेकिन

उन्हें रब के घर में ख़िदमत करने की इजाज़त न मिली। क्योंकि गो उन्होंने नसबनामे में अपने नाम तलाश किए लेकिन उनका कहीं ज़िक्र न मिला, इसलिए उन्हें नापाक क़रार दिया गया। (बरज़िल्ली के ख़ानदान के बानी ने बरज़िल्ली जिलियादी की बेटी से शादी करके अपने सुसर का नाम अपना लिया था।) 65यहूदाह के गवर्नर ने हुक्म दिया कि इन तीन ख़ानदानों के इमाम फ़िलहाल क़ुरबानियों का वह हिस्सा खाने में शरीक न हों जो इमामों के लिए मुक़र्रर है। जब दुबारा इमामे-आज़म मुक़र्रर किया जाए तो वही ऊरीम और तुम्मीम नामी क़ुरा डालकर मामला हल करे।

66कुल 42,360 इसराईली अपने वतन लौट आए, 67नीज़ उनके 7,337 ग़ुलाम और लौंडियाँ और 245 गुलूकार जिनमें मर्दो-ख़वातीन शामिल थे।

68इसराईलियों के पास 736 घोड़े, 245 ख़च्चर, 69435 ऊँट और 6,720 गधे थे।

70कुछ ख़ानदानी सरपरस्तों ने रब के घर की तामीरे-नौ के लिए अपनी ख़ुशी से हदिये दिए। गवर्नर ने सोने के 1,000 सिक्के, 50 कटोरे और इमामों के 530 लिबास दिए। 71कुछ ख़ानदानी सरपरस्तों ने ख़ज़ाने में सोने के 20,000 सिक्के और चाँदी के 1,200 किलोग्राम डाल दिए। 72बाक़ी लोगों ने सोने के 20,000 सिक्के, चाँदी के 1,100 किलोग्राम और इमामों के 67 लिबास अता किए।

73इमाम, लावी, रब के घर के दरबान और ख़िदमतगार, गुलूकार और अवाम के कुछ लोग अपनी अपनी आबाई आबादियों में दुबारा जा बसे। यों तमाम इसराईली दुबारा अपने अपने शहरों में रहने लगे।”

अज़रा शरीअत की तिलावत करता है

सातवें महीने यानी अक्तूबर में जब इसराईली अपने अपने शहरों में दुबारा
8 आबाद हो गए थे 1तो सब लोग मिलकर पानी के दरवाज़े के चौक में जमा हो गए। उन्होंने शरीअत के आलिम अज़रा से दरख़ास्त की कि वह शरीअत ले आएँ जो रब ने मूसा की मारिफ़त इसराईली क़ौम को दे दी थी।
2चुनाँचे अज़रा ने हाज़िरीन के सामने शरीअत की तिलावत की। सातवें महीने का पहला दिन[a] था। न सिर्फ़ मर्द बल्कि औरतें और शरीअत की बातें समझने के क़ाबिल तमाम बच्चे भी जमा हुए थे।
3सुबह-सवेरे से लेकर दोपहर तक अज़रा पानी के दरवाज़े के चौक में पढ़ता रहा, और तमाम जमात ध्यान से शरीअत की बातें सुनती रही।

4अज़रा लकड़ी के एक चबूतरे पर खड़ा था जो ख़ासकर इस मौक़े के लिए बनाया गया था। उसके दाएँ हाथ मत्तितियाह, समा, अनायाह, ऊरियाह, ख़िलक़ियाह और मासियाह खड़े थे। उसके बाएँ हाथ फ़िदायाह, मीसाएल, मलकियाह, हाशूम, हस्बद्दाना, ज़करियाह और मसुल्लाम खड़े थे।

5चूँकि अज़रा ऊँची जगह पर खड़ा था इसलिए वह सबको नज़र आया। चुनाँचे जब उसने किताब को खोल दिया तो सब लोग खड़े हो गए। 6अज़रा ने रब अज़ीम ख़ुदा की सताइश की, और सबने अपने हाथ उठाकर जवाब में कहा, “आमीन, आमीन।” फिर उन्होंने झुककर रब को सिजदा किया।

7कुछ लावी हाज़िर थे जिन्होंने लोगों के लिए शरीअत की तशरीह की। उनके नाम यशुअ, बानी, सरिबियाह, यमीन, अक़्क़ूब, सब्बती, हूदियाह, मासियाह, क़लीता, अज़-रियाह, यूज़बद, हनान और फ़िलायाह थे। हाज़िरीन अब तक खड़े थे। 8शरीअत की तिलावत के साथ साथ मज़कूरा लावी क़दम

[a]8 अक्तूबर।

बक़दम उस की तशरीह यों करते गए कि लोग
उसे अच्छी तरह समझ सके।
9शरीअत की बातें सुन सुनकर वह रोने लगे।
लेकिन नहमियाह गवर्नर, शरीअत के आलिम
अज़रा इमाम और शरीअत की तशरीह करनेवाले
लावियों ने उन्हें तसल्ली देकर कहा, "उदास न
हों और मत रोएँ! आज रब आपके ख़ुदा के
लिए मख़सूसो-मुक़द्दस ईद है। 10अब जाएँ, उम्दा
खाना खाकर और पीने की मीठी चीज़ें पीकर
ख़ुशी मनाएँ। जो अपने लिए कुछ तैयार न कर
सकें उन्हें अपनी ख़ुशी में शरीक करें। यह दिन
हमारे रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस है। उदास न
हों, क्योंकि रब की ख़ुशी आपकी पनाहगाह है।"
11लावियों ने भी तमाम लोगों को सुकून
दिलाकर कहा, "उदास न हों, क्योंकि यह दिन
रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस है।"
12फिर सब अपने अपने घर चले गए। वहाँ
उन्होंने बड़ी ख़ुशी से खा-पीकर जशन मनाया।
साथ साथ उन्होंने दूसरों को भी अपनी ख़ुशी में
शरीक किया। उनकी बड़ी ख़ुशी का सबब यह था
कि अब उन्हें उन बातों की समझ आई थी जो उन्हें
सुनाई गई थीं।

झोंपड़ियों की ईद

13अगले दिन[a] ख़ानदानी सरपरस्त, इमाम
और लावी दुबारा शरीअत के आलिम अज़रा के
पास जमा हुए ताकि शरीअत की मज़ीद तालीम
पाएँ। 14जब वह शरीअत का मुतालआ कर रहे
थे तो उन्हें पता चला कि रब ने मूसा की मारिफ़त
हुक्म दिया था कि इसराईली सातवें महीने की
ईद के दौरान झोंपड़ियों में रहें। 15चुनाँचे उन्होंने
यरूशलम और बाक़ी तमाम शहरों में एलान
किया, "पहाड़ों पर से ज़ैतून, आस,[b] खजूर और
बाक़ी सायादार दरख़्तों की शाख़ें तोड़कर अपने
घर ले जाएँ। वहाँ उनसे झोंपड़ियाँ बनाएँ, जिस
तरह शरीअत ने हिदायत दी है।"
16लोगों ने ऐसा ही किया। वह घरों से निकले
और दरख़्तों की शाख़ें तोड़कर ले आए। उनसे
उन्होंने अपने घरों की छतों पर और सहनों में
झोंपड़ियाँ बना लीं। बाज़ ने अपनी झोंपड़ियों को
रब के घर के सहनों, पानी के दरवाज़े के चौक
और इफ़राईम के दरवाज़े के चौक में भी बनाया।
17जितने भी जिलावतनी से वापस आए थे वह
सब झोंपड़ियाँ बनाकर उनमें रहने लगे। यशुअ
बिन नून के ज़माने से लेकर उस वक़्त तक यह
ईद इस तरह नहीं मनाई गई थी। सब निहायत ही
ख़ुश थे। 18ईद के हर दिन अज़रा ने अल्लाह की
शरीअत की तिलावत की। सात दिन इसराईलियों
ने ईद मनाई, और आठवें दिन सब लोग इजतिमा
के लिए इकट्ठे हुए, बिलकुल उन हिदायात के
मुताबिक़ जो शरीअत में दी गई हैं।

इसराईली अपने गुनाहों का इक़रार करते हैं

9 उसी महीने के 24वें दिन[c] इसराईली
रोज़ा रखने के लिए जमा हुए। टाट के
लिबास पहने हुए और सर पर ख़ाक डालकर
वह यरूशलम आए। 2अब वह तमाम ग़ैरयहूदियों
से अलग होकर उन गुनाहों का इक़रार करने के
लिए हाज़िर हुए जो उनसे और उनके बापदादा से
सरज़द हुए थे। 3तीन घंटे वह खड़े रहे, और उस
दौरान रब उनके ख़ुदा की शरीअत की तिलावत
की गई। फिर वह रब अपने ख़ुदा के सामने मुँह
के बल झुककर मज़ीद तीन घंटे अपने गुनाहों का
इक़रार करते रहे।
4यशुअ, बानी, क़दमियेल, सबनियाह, बुन्नी,
सरिबियाह, बानी और कनानी जो लावी थे एक
चबूतरे पर खड़े हुए और बुलंद आवाज़ से रब अपने
ख़ुदा से दुआ की।
5फिर यशुअ, क़दमियेल, बानी, हसब्नि-
याह, सरिबियाह, हूदियाह, सबनियाह और
फ़तहियाह जो लावी थे बोल उठे, "खड़े होकर

[a] 9 अक्तूबर।
[b] myrtle।
[c] 31 अक्तूबर।

रब अपने ख़ुदा की जो अज़ल से अबद तक है
सताइश करें!”

उन्होंने दुआ की,

“तेरे जलाली नाम की तमजीद हो, जो हर
मुबारकबादी और तारीफ़ से कहीं बढ़कर है। 6ऐ
रब, तू ही वाहिद ख़ुदा है! तूने आसमान को
एक सिरे से दूसरे सिरे तक उसके लशकर समेत
ख़लक़ किया। ज़मीन और जो कुछ उस पर है,
समुंदर और जो कुछ उसमें है सब कुछ तू ही
ने बनाया है। तूने सबको ज़िंदगी बख़्शी है, और
आसमानी लशकर तुझे सिजदा करता है।

7तू ही रब और वह ख़ुदा है जिसने अब्राम
को चुन लिया और कसदियों के शहर ऊर से
बाहर लाकर इब्राहीम का नाम रखा। 8तूने उसका
दिल वफ़ादार पाया और उससे अहद बाँधकर
वादा किया, ‘मैं तेरी औलाद को कनानियों,
हित्तियों, अमोरियों, फ़रिज़्ज़ियों, यबूसियों और
जिरजासियों का मुल्क अता करूँगा।’ और तू
अपने वादे पर पूरा उतरा, क्योंकि तू क़ाबिले-
एतमाद और आदिल है।

9तूने हमारे बापदादा के मिसर में बुरे हाल
पर ध्यान दिया, और बहरे-क़ुलज़ुम के किनारे
पर मदद के लिए उनकी चीख़ें सुनीं। 10तूने
इलाही निशानों और मोजिज़ों से फ़िरौन, उसके
अफ़सरों और उसके मुल्क की क़ौम को सज़ा दी,
क्योंकि तू जानता था कि मिसरी हमारे बापदादा
से कैसा गुस्ताखाना सुलूक करते रहे हैं। यों तेरा
नाम मशहूर हुआ और आज तक याद रहा है।
11क़ौम के देखते देखते तूने समुंदर को दो हिस्सों
में तक़सीम कर दिया, और वह ख़ुश्क ज़मीन
पर चलकर उसमें से गुज़र सके। लेकिन उनका
ताक़्क़ुब करनेवालों को तूने मुतलातिम पानी में
फेंक दिया, और वह पत्थरों की तरह समुंदर की
गहराइयों में डूब गए।

12दिन के वक़्त तूने बादल के सतून से और
रात के वक़्त आग के सतून से अपनी क़ौम की
राहनुमाई की। यों वह रास्ता अंधेरे में भी रौशन
रहा जिस पर उन्हें चलना था। 13तू कोहे-सीना
पर उतर आया और आसमान से उनसे हमकलाम
हुआ। तूने उन्हें साफ़ हिदायात और क़ाबिले-
एतमाद अहकाम दिए, ऐसे क़वायद जो अच्छे
हैं। 14तूने उन्हें सबत के दिन के बारे में आगाह
किया, उस दिन के बारे में जो तेरे लिए मख़सूसो-
मुक़द्दस है। अपने ख़ादिम मूसा की मारिफ़त तूने
उन्हें अहकाम और हिदायात दीं। 15जब वह भूके
थे तो तूने उन्हें आसमान से रोटी खिलाई, और
जब प्यासे थे तो तूने उन्हें चट्टान से पानी पिलाया।
तूने हुक्म दिया, ‘जाओ, मुल्क में दाख़िल होकर
उस पर क़ब्ज़ा कर लो, क्योंकि मैंने हाथ उठाकर
क़सम खाई है कि तुम्हें यह मुल्क दूँगा।’

16अफ़सोस, हमारे बापदादा मग़रूर और ज़िद्दी
हो गए। वह तेरे अहकाम के ताबे न रहे। 17उन्होंने
तेरी सुनने से इनकार किया और वह मोजिज़ात
याद न रखे जो तूने उनके दरमियान किए थे। वह
यहाँ तक अड़ गए कि उन्होंने एक राहनुमा को
मुक़र्रर किया जो उन्हें मिसर की ग़ुलामी में वापस
ले जाए। लेकिन तू मुआफ़ करनेवाला ख़ुदा है जो
मेहरबान और रहीम, तहम्मुल और शफ़क़त से
भरपूर है। तूने उन्हें तर्क न किया, 18उस वक़्त
भी नहीं जब उन्होंने अपने लिए सोने का बछड़ा
ढालकर कहा, ‘यह तेरा ख़ुदा है जो तुझे मिसर
से निकाल लाया।’ इस क़िस्म का संजीदा कुफ़र
वह बकते रहे। 19लेकिन तू बहुत रहमदिल है,
इसलिए तूने उन्हें रेगिस्तान में न छोड़ा। दिन के
वक़्त बादल का सतून उनकी राहनुमाई करता
रहा, और रात के वक़्त आग का सतून वह रास्ता
रौशन करता रहा जिस पर उन्हें चलना था। 20न
सिर्फ़ यह बल्कि तूने उन्हें अपना नेक रूह अता
किया जो उन्हें तालीम दे। जब उन्हें भूक और
प्यास थी तो तू उन्हें मन खिलाने और पानी पिलाने
से बाज़ न आया। 21चालीस साल वह रेगिस्तान

में फिरते रहे, और उस पूरे अरसे में तू उनकी ज़रूरियात को पूरा करता रहा। उन्हें कोई भी कमी नहीं थी। न उनके कपड़े घिसकर फटे और न उनके पाँव सूजे।

22तूने ममालिक और क़ौमें उनके हवाले कर दीं, मुख़्तलिफ़ इलाक़े यके बाद दीगरे उनके क़ब्ज़े में आए। यों वह सीहोन बादशाह के मुल्क हसबोन और ओज बादशाह के मुल्क बसन पर फ़तह पा सके। 23उनकी औलाद तेरी मरज़ी से आसमान पर के सितारों जैसी बेशुमार हुई, और तू उन्हें उस मुल्क में लाया जिसका वादा तूने उनके बापदादा से किया था। 24वह मुल्क में दाख़िल होकर उसके मालिक बन गए। तूने कनान के बाशिंदों को उनके आगे आगे ज़ेर कर दिया। मुल्क के बादशाह और क़ौमें उनके क़ब्ज़े में आ गईं, और वह अपनी मरज़ी के मुताबिक़ उनसे निपट सके। 25क़िलाबंद शहर और ज़रख़ेज़ ज़मीनें तेरी क़ौम के क़ाबू में आ गईं, नीज़ हर क़िस्म की अच्छी चीज़ों से भरे घर, तैयारशुदा हौज़, अंगूर के बाग़ और कसरत के ज़ैतून और दीगर फलदार दरख़्त। वह जी भरकर खाना खाकर मोटे हो गए और तेरी बरकतों से लुत्फ़अंदोज़ होते रहे।

26इसके बावुजूद वह ताबे न रहे बल्कि सरकश हुए। उन्होंने अपना मुँह तेरी शरीअत से फेर लिया। और जब तेरे नबी उन्हें समझा समझाकर तेरे पास वापस लाना चाहते थे तो उन्होंने बड़े कुफ़र बककर उन्हें क़त्ल कर दिया। 27यह देखकर तूने उन्हें उनके दुश्मनों के हवाले कर दिया जो उन्हें तंग करते रहे। जब वह मुसीबत में फँस गए तो वह चीख़ें मार मारकर तुझसे फ़रियाद करने लगे। और तूने आसमान पर से उनकी सुनी। बड़ा तरस खाकर तूने उनके पास ऐसे लोगों को भेज दिया जिन्होंने उन्हें दुश्मनों के हाथ से छुड़ाया।
28लेकिन ज्योंही इसराईलियों को सुकून मिलता वह दुबारा ऐसी हरकतें करने लगते जो तुझे नापसंद थीं। नतीजे में तू उन्हें दुबारा उनके दुश्मनों के हाथ में छोड़ देता। जब वह उनकी हुकूमत के तहत पिसने लगते तो वह एक बार फिर चिल्ला चिल्लाकर तुझसे इलतमास करने लगते। इस बार भी तू आसमान पर से उनकी सुनता। हाँ, तू इतना रहमदिल है कि तू उन्हें बार बार छुटकारा देता रहा!
29तू उन्हें समझाता रहा ताकि वह दुबारा तेरी शरीअत की तरफ़ रुजू करें, लेकिन वह मग़रूर थे और तेरे अहकाम के ताबे न हुए। उन्होंने तेरी हिदायात की ख़िलाफ़वरज़ी की, हालाँकि इन्हीं पर चलने से इनसान को ज़िंदगी हासिल होती है। लेकिन उन्होंने परवा न की बल्कि अपना मुँह तुझसे फेरकर अड़ गए और सुनने के लिए तैयार न हुए।

30उनकी हरकतों के बावुजूद तू बहुत सालों तक सब्र करता रहा। तेरा रूह उन्हें नबियों के ज़रीए समझाता रहा, लेकिन उन्होंने ध्यान न दिया। तब तूने उन्हें ग़ैरक़ौमों के हवाले कर दिया।
31ताहम तेरा रहम से भरा दिल उन्हें तर्क करके तबाह नहीं करना चाहता था। तू कितना मेहरबान और रहीम ख़ुदा है!

32ऐ हमारे ख़ुदा, ऐ अज़ीम, क़वी और महीब ख़ुदा जो अपना अहद और अपनी शफ़क़त क़ायम रखता है, इस वक़्त हमारी मुसीबत पर ध्यान दे और उसे कम न समझ! क्योंकि हमारे बादशाह, बुज़ुर्ग, इमाम और नबी बल्कि हमारे बापदादा और पूरी क़ौम असूरी बादशाहों के पहले हमलों से लेकर आज तक सख़्त मुसीबत बरदाश्त करते रहे हैं। 33हक़ीक़त तो यह है कि जो भी मुसीबत हम पर आई है उसमें तू रास्त साबित हुआ है। तू वफ़ादार रहा है, गो हम क़ुसूरवार ठहरे हैं।
34हमारे बादशाह और बुज़ुर्ग, हमारे इमाम और बापदादा, उन सबने तेरी शरीअत की पैरवी न की। जो अहकाम और तंबीह तूने उन्हें दी उस पर उन्होंने ध्यान ही न दिया। 35तूने उन्हें उनकी अपनी बादशाही, कसरत की अच्छी चीज़ों और एक वसी और ज़रख़ेज़ मुल्क से नवाज़ा था। तो

भी वह तेरी ख़िदमत करने के लिए तैयार न थे और अपनी ग़लत राहों से बाज़ न आए।

36इसका अंजाम यह हुआ है कि आज हम उस मुल्क में ग़ुलाम हैं जो तूने हमारे बापदादा को अता किया था ताकि वह उस की पैदावार और दौलत से लुत्फ़अंदोज़ हो जाएँ। 37मुल्क की वाफ़िर पैदावार उन बादशाहों तक पहुँचती है जिन्हें तूने हमारे गुनाहों की वजह से हम पर मुक़र्रर किया है। अब वही हम पर और हमारे मवेशियों पर हुकूमत करते हैं। उन्हीं की मरज़ी चलती है। चुनाँचे हम बड़ी मुसीबत में फँसे हैं।

क़ौम का अहदनामा

38यह तमाम बातें मद्दे-नज़र रखकर हम अहद बाँधकर उसे क़लमबंद कर रहे हैं। हमारे बुज़ुर्ग, लावी और इमाम दस्तख़त करके अहदनामे पर मुहर लगा रहे हैं।”

10 ज़ैल के लोगों ने दस्तख़त किए।
गवर्नर नहमियाह बिन हकलि-
याह, सिदक़ियाह, 2सिरायाह, अज़रियाह,
यरमियाह, 3फ़शहूर, अमरियाह, मलकि-
याह, 4हत्तूश, सबनियाह, मल्लूक, 5हारिम,
मरीमोत, अबदियाह, 6दानियाल, जिन्नतून,
बारूक, 7मसुल्लाम, अबियाह, मियामीन,
8माज़ियाह, बिलजी और समायाह। सिरा-
याह से लेकर समायाह तक इमाम थे।

9फिर ज़ैल के लावियों ने दस्तख़त किए।

यशुअ बिन अज़नियाह, हनदाद के
ख़ानदान का बिन्नूई, क़दमियेल, 10उनके
भाई सबनियाह, हूदियाह, क़लीता, फ़िला-
याह, हनान, 11मीका, रहोब, हसबियाह,
12ज़क्कूर, सरिबियाह, सबनियाह, 13हूदि-
याह, बानी और बनीनू।

14इनके बाद ज़ैल के क़ौमी बुज़ुर्गों ने दस्तख़त किए।

परऊस, पख़त-मोआब, ऐलाम, ज़त्तू,
बानी 15बुन्नी, अज़जाद, बबी, 16अदूनियाह,
बिगवई, अदीन, 17अतीर, हिज़क़ियाह, अज़्ज़ूर,
18हूदियाह, हाशूम, बज़ी, 19ख़ारिफ़, अनतोत,
नेबी, 20मगफ़ियास, मसुल्लाम, हिज़ीर
21मशेज़बेल, सदोक़, यद्दू, 22फ़लतियाह,
हनान, अनायाह, 23होसेअ, हननियाह, हस्सूब,
24हल्लूहेश, फ़िलहा, सोबेक़, 25रहूम, हसब्नाह,
मासियाह, 26अख़ियाह, हनान, अनान,
27मल्लूक, हारिम और बाना।

28क़ौम के बाक़ी लोग भी अहद में शरीक
हुए यानी बाक़ी इमाम, लावी, रब के घर के
दरबान और ख़िदमतगार, गुलूकार, नीज़ सब
जो ग़ैरयहूदी क़ौमों से अलग हो गए थे ताकि
रब की शरीअत की पैरवी करें। उनकी बीवियाँ
और वह बेटे-बेटियाँ भी शरीक हुए जो अहद
को समझ सकते थे। 29अपने बुज़ुर्ग भाइयों के
साथ मिलकर उन्होंने क़सम खाकर वादा किया,
“हम उस शरीअत की पैरवी करेंगे जो अल्लाह ने
हमें अपने ख़ादिम मूसा की मारिफ़त दी है। हम
एहतियात से रब अपने आक़ा के तमाम अहकाम
और हिदायात पर अमल करेंगे।”

30नीज़, उन्होंने क़सम खाकर वादा किया,

“हम अपने बेटे-बेटियों की शादी ग़ैर-यहूदियों से नहीं कराएँगे।

31जब ग़ैरयहूदी हमें सबत के दिन या रब के लिए मख़सूस किसी और दिन अनाज या कोई और माल बेचने की कोशिश करें तो हम कुछ नहीं ख़रीदेंगे।

हर सातवें साल हम ज़मीन की खेतीबाड़ी नहीं करेंगे और तमाम कर्ज़े मनसूख़ करेंगे।

32हम सालाना रब के घर की ख़िदमत के
लिए चाँदी का छोटा सिक्का[a] देंगे। इस ख़िदमत
में ज़ैल की चीज़ें शामिल हैं : 33अल्लाह के
लिए मख़सूस रोटी, ग़ल्ला की नज़र और भस्म
होनेवाली वह क़ुरबानियाँ जो रोज़ाना पेश की

[a]चाँदी के तक़रीबन 4 ग्राम।

जाती हैं, सबत के दिन, नए चाँद की ईद और बाक़ी ईदों पर पेश की जानेवाली क़ुरबानियाँ, ख़ास मुक़द्दस क़ुरबानियाँ, इसराईल का कफ़्फ़ारा देनेवाली गुनाह की क़ुरबानियाँ, और हमारे ख़ुदा के घर का हर काम।

34हमने क़ुरा डालकर मुक़र्रर किया है कि इमामों, लावियों और बाक़ी क़ौम के कौन कौन-से ख़ानदान साल में किन किन मुक़र्ररा मौक़ों पर रब के घर में लकड़ी पहुँचाएँ। यह लकड़ी हमारे ख़ुदा की क़ुरबानगाह पर क़ुरबानियाँ जलाने के लिए इस्तेमाल की जाएगी, जिस तरह शरीअत में लिखा है।

35हम सालाना अपने खेतों और दरख़्तों का पहला फल रब के घर में पहुँचाएँगे।

36जिस तरह शरीअत में दर्ज है, हम अपने पहलौठों को रब के घर में लाकर अल्लाह के लिए मख़सूस करेंगे। गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के पहले बच्चे हम ख़िदमतगुज़ार इमामों को क़ुरबान करने के लिए देंगे।
37उन्हें हम साल के पहले ग़ल्ला से गूँधा हुआ आटा, अपने दरख़्तों का पहला फल, अपनी नई मै और ज़ैतून के नए तेल का पहला हिस्सा देकर रब के घर के गोदामों में पहुँचाएँगे।

देहात में हम लावियों को अपनी फ़सलों का दसवाँ हिस्सा देंगे, क्योंकि वही देहात में यह हिस्सा जमा करते हैं।
38दसवाँ हिस्सा मिलते वक़्त कोई इमाम यानी हारून के ख़ानदान का कोई मर्द लावियों के साथ होगा, और लावी माल का दसवाँ हिस्सा हमारे ख़ुदा के घर के गोदामों में पहुँचाएँगे।
39आम लोग और लावी वहाँ ग़ल्ला, नई मै और ज़ैतून का तेल लाएँगे। इन कमरों में मक़दिस की ख़िदमत के लिए दरकार तमाम सामान महफ़ूज़ रखा जाएगा। इसके अलावा वहाँ इमामों, दरबानों और गुलूकारों के कमरे होंगे।

हम अपने ख़ुदा के घर में तमाम फ़रायज़ सरंजाम देने में ग़फ़लत नहीं बरतेंगे।”

यरूशलम और यहूदाह के बाशिंदे

11 क़ौम के बुज़ुर्ग यरूशलम में आबाद हुए थे। फ़ैसला किया गया कि बाक़ी लोगों के हर दसवें ख़ानदान को मुक़द्दस शहर यरूशलम में बसना है। यह ख़ानदान क़ुरा डालकर मुक़र्रर किए गए। बाक़ी ख़ानदानों को उनकी मक़ामी जगहों में रहने की इजाज़त थी।
2लेकिन जितने लोग अपनी ख़ुशी से यरूशलम जा बसे उन्हें दूसरों ने मुबारकबाद दी।

3ज़ैल में सूबे के उन बुज़ुर्गों की फ़हरिस्त है जो यरूशलम में आबाद हुए। (अकसर लोग यहूदाह के बाक़ी शहरों और देहात में अपनी मौरूसी ज़मीन पर बसते थे। इनमें आम इसराईली, इमाम, लावी, रब के घर के ख़िदमतगार और सुलेमान के ख़ादिमों की औलाद शामिल थे।
4लेकिन यहूदाह और बिनयमीन के चंद एक लोग यरूशलम में जा बसे।)

यहूदाह का क़बीला :

फ़ारस के ख़ानदान का अतायाह बिन उज़्ज़ियाह बिन ज़करियाह बिन अमरियाह बिन सफ़तियाह बिन महललेल,

5सिलोनी के ख़ानदान का मासियाह बिन बारूक बिन कुलहोज़ा बिन हज़ायाह बिन अदायाह बिन यूयारीब बिन ज़करियाह।

6फ़ारस के ख़ानदान के 468 असरो-रसूख़ रखनेवाले आदमी अपने ख़ानदानों समेत यरूशलम में रिहाइशपज़ीर थे।

7बिनयमीन का क़बीला :

सल्लू बिन मसुल्लाम बिन योएद बिन फ़िदायाह बिन क़ौलायाह बिन मासियाह बिन ईतियेल बिन यसायाह।

8सल्लू के साथ जब्बी और सल्ली थे। कुल 928 आदमी थे।
9इन पर योएल बिन ज़िकरी मुक़र्रर था जबकि यहूदाह बिन सनुआह शहर की इंतज़ामिया में दूसरे नंबर पर आता था।

10यरूशलम में ज़ैल के इमाम रहते थे।

यदायाह, यूयारीब, यकीन 11और सिरा-
याह बिन ख़िलक़ियाह बिन मसुल्लाम बिन
सदोक़ बिन मिरायोत बिन अख़ीतूब। सिरा-
याह अल्लाह के घर का मुन्तज़िम था।

12इन इमामों के 822 भाई रब के घर में
ख़िदमत करते थे।

नीज़, अदायाह बिन यरोहाम बिन फ़िल-
लियाह बिन अमसी बिन ज़करियाह बिन फ़शहूर
बिन मलकियाह। 13उसके साथ 242 भाई थे जो
अपने अपने ख़ानदानों के सरपरस्त थे।

इनके अलावा अमश्सी बिन अज़रेल बिन
अख़ज़ी बिन मसिल्लमोत बिन इम्मेर। 14उसके
साथ 128 असरो-रसूख़ रखनेवाले भाई थे।
ज़बदियेल बिन हज्जदूलीम उनका इंचार्ज था।

15ज़ैल के लावी यरूशलम में रिहाइश-
पज़ीर थे। समायाह बिन हस्सूब बिन अज़-
रीक़ाम बिन हसबियाह बिन बुन्नी,

16नीज़ सब्बती और यूज़बद जो अल्लाह के
घर से बाहर के काम पर मुक़र्रर थे,

17नीज़ शुक्रगुज़ारी का राहनुमा मत्तनियाह बिन
मीका बिन ज़बदी बिन आसफ़ था जो दुआ करते
वक़्त हम्दो-सना की राहनुमाई करता था,

नीज़ उसका मददगार मत्तनियाह का भाई
बक़बूक़ियाह,

और आख़िर में अबदा बिन सम्मुअ बिन जलाल
बिन यदूतून।

18लावियों के कुल 284 मर्द मुक़द्दस शहर में
रहते थे।

19रब के घर के दरबानों के दर्जे-ज़ैल मर्द
यरूशलम में रहते थे।

अक़्क़ूब और तलमून अपने भाइयों समेत
दरवाज़ों के पहरेदार थे। कुल 172 मर्द थे।

20क़ौम के बाक़ी लोग, इमाम और लावी
यरूशलम से बाहर यहूदाह के दूसरे शहरों में
आबाद थे। हर एक अपनी आबाई ज़मीन पर रहता
था।

21रब के घर के ख़िदमतगार ओफ़ल पहाड़ी पर
बसते थे। ज़ीहा और जिसफ़ा उन पर मुक़र्रर थे।

22यरूशलम में रहनेवाले लावियों का निगरान
उज़्ज़ी बिन बानी बिन हसबियाह बिन मत्तनियाह
बिन मीका था। वह आसफ़ के ख़ानदान का था,
उस ख़ानदान का जिसके गुलूकार अल्लाह के
घर में ख़िदमत करते थे। 23बादशाह ने मुक़र्रर
किया था कि आसफ़ के ख़ानदान के किन किन
आदमियों को किस किस दिन रब के घर में गीत
गाने की ख़िदमत करनी है।

24फ़तहियाह बिन मशेज़बेल इसराईली
मामलों में फ़ारस के बादशाह की नुमाइंदगी करता
था। वह ज़ारह बिन यहूदाह के ख़ानदान का था।

25यहूदाह के क़बीले के अफ़राद ज़ैल के शहरों
में आबाद थे।

क़िरियत-अरबा, दीबोन और क़बज़ियेल गिर्दो-
नवाह की आबादियों समेत, 26यशुअ, मोलादा,
बैत-फ़लत, 27हसार-सुआल, बैर-सबा गिर्दो-
नवाह की आबादियों समेत, 28सिक़लाज,
मकूनाह गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत,
29ऐन-रिम्मोन, सुरआ, यरमूत, 30ज़नूह,
अदुल्लाम गिर्दो-नवाह की हवेलियों समेत,
लकीस गिर्दो-नवाह के खेतों समेत और अज़ीक़ा
गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत। ग़रज़, वह
जुनूब में बैर-सबा से लेकर शिमाल में वादीए-
हिन्नूम तक आबाद थे।

31बिनयमीन के क़बीले की रिहाइश ज़ैल के
मक़ामों में थी।

जिबा, मिकमास, ऐयाह, बैतेल गिर्दो-नवाह की
आबादियों समेत, 32अनतोत, नोब, अननियाह,
33हसूर, रामा, जित्तैम, 34हादीद, ज़बोईम,
नबल्लात, 35लूद, ओनू और कारीगरों की वादी।

36लावी क़बीले के कुछ ख़ानदान जो पहले
यहूदाह में रहते थे अब बिनयमीन के क़बायली
इलाक़े में आबाद हुए।

इमामों और लावियों की फ़हरिस्त

12 दर्जे-ज़ैल उन इमामों और लावियों की फ़हरिस्त है जो ज़रुब्बाबल बिन सियालतियेल और यशुअ के साथ जिलावतनी से वापस आए।

इमाम :

सिरायाह, यरमियाह, अज़रा, 2अमरियाह,
मल्लूक, हत्तूश, 3सकनियाह, रहूम, मरीमोत, 4इद्दू, जिन्नतून, अबियाह, 5मियामीन,
मुअदियाह, बिलजा, 6समायाह, यूयारीब,
यदायाह, 7सल्लू, अमूक़, ख़िलक़ियाह, और यदायाह। यह यशुअ के ज़माने में इमामों और उनके भाइयों के राहनुमा थे।

8लावी :

यशुअ, बिन्नूई, क़दमियेल, सरिबियाह, यहूदाह और मत्तनियाह। मत्तनियाह अपने भाइयों के साथ रब के घर में हम्दो-सना के गीत गाने में राहनुमाई करता था।
9बक़बूक़ियाह और उन्नी अपने भाइयों के साथ इबादत के दौरान उनके मुक़ाबिल खड़े होते थे।

10इमामे-आज़म यशुअ की औलाद :

यशुअ यूयक़ीम का बाप था, यूयक़ीम इलियासिब का, इलियासिब योयदा का,
11योयदा यूनतन का, यूनतन यद्दू का।

12जब यूयक़ीम इमामे-आज़म था तो ज़ैल के इमाम अपने ख़ानदानों के सरपरस्त थे।

सिरायाह के ख़ानदान का मिरायाह,
यरमियाह के ख़ानदान का हननियाह,
13अज़रा के ख़ानदान का मसुल्लाम,
अमरियाह के ख़ानदान का यूहनान,
14मल्लूक के ख़ानदान का यूनतन,
सबनियाह के ख़ानदान का यूसुफ़,
15हारिम के ख़ानदान का अदना,
मिरायोत के ख़ानदान का ख़िलक़ी,
16इद्दू के ख़ानदान का ज़करियाह,
जिन्नतून के ख़ानदान का मसुल्लाम,
17अबियाह के ख़ानदान का ज़िकरी,
मिन्यमीन के ख़ानदान का एक आदमी,
मुअदियाह के ख़ानदान का फ़िलती,
18बिलजा के ख़ानदान का सम्मुअ,
समायाह के ख़ानदान का यहूनतन,
19यूयारीब के ख़ानदान का मत्तनी,
यदायाह के ख़ानदान का उज़्ज़ी,
20सल्ली के ख़ानदान का क़ल्ली,
अमूक़ के ख़ानदान का इबर,
21ख़िलक़ियाह के ख़ानदान का हसबियाह,
यदायाह के ख़ानदान का नतनियेल।

22जब इलियासिब, योयदा, यूहनान और यद्दू इमामे-आज़म थे तो लावी के सरपरस्तों की फ़हरिस्त तैयार की गई और इसी तरह फ़ारस के बादशाह दारा के ज़माने में इमामों के ख़ानदानी सरपरस्तों की फ़हरिस्त।

23लावी के ख़ानदानी सरपरस्तों के नाम इमामे-आज़म यूहनान बिन इलियासिब के ज़माने तक तारीख़ की किताब में दर्ज किए गए।

24-25लावी के ख़ानदानी सरपरस्त हसबियाह, सरिबियाह, यशुअ, बिन्नूई और क़दमियेल ख़िदमत के उन गुरोहों की राहनुमाई करते थे जो रब के घर में हम्दो-सना के गीत गाते थे। उनके मुक़ाबिल मत्तनियाह, बक़बूक़ियाह और अबदियाह अपने गुरोहों के साथ खड़े होते थे। गीत गाते वक़्त कभी यह गुरोह और कभी उसके मुक़ाबिल का गुरोह गाता था। सब कुछ उस तरतीब से हुआ जो मर्दे-ख़ुदा दाऊद ने मुक़र्रर की थी।

मसुल्लाम, तलमून और अक़्क़ूब दरबान थे जो रब के घर के दरवाज़ों के साथ वाक़े गोदामों की पहरादारी करते थे।

26यह आदमी इमामे-आज़म यूयक़ीम बिन यशुअ बिन यूसदक़, नहमियाह गवर्नर और शरीअत के आलिम अज़रा इमाम के ज़माने में अपनी ख़िदमत सरंजाम देते थे।

फ़सील की मख़सूसियत

27फ़सील की मख़सूसियत के लिए पूरे मुल्क
के लावियों को यरूशलम बुलाया गया ताकि
वह ख़ुशी मनाने में मदद करके हम्दो-सना
के गीत गाएँ और झाँझ, सितार और सरोद
बजाएँ। 28गुलूकार यरूशलम के गिर्दो-नवाह से,
नतूफ़ातियों के देहात, 29बैत-जिलजाल और
जिबा और अज़मावत के इलाक़े से आए। क्योंकि
गुलूकारों ने अपनी अपनी आबादियाँ यरूशलम के
इर्दगिर्द बनाई थीं। 30पहले इमामों और लावियों ने
अपने आपको जशन के लिए पाक-साफ़ किया,
फिर उन्होंने आम लोगों, दरवाज़ों और फ़सील को
भी पाक-साफ़ कर दिया।

31इसके बाद मैंने यहूदाह के क़बीले के
बुज़ुर्गों को फ़सील पर चढ़ने दिया और गुलूकारों
को शुक्रगुज़ारी के दो बड़े गुरोहों में तक़सीम
किया। पहला गुरोह फ़सील पर चलते चलते
जुनूब में वाक़े कचरे के दरवाज़े की तरफ़
बढ़ गया। 32इन गुलूकारों के पीछे हूसायाह
यहूदाह के आधे बुज़ुर्गों के साथ चला 33जबकि
इनके पीछे अज़रियाह, अज़रा, मसुल्लाम,
34यहूदाह, बिनयमीन, समायाह और यरमियाह
चले। 35आख़िरी गुरोह इमाम थे जो तुरम
बजाते रहे। इनके पीछे ज़ैल के मौसीक़ार
आए : ज़करियाह बिन यूनतन बिन समायाह
बिन मत्तनियाह बिन मीकायाह बिन ज़क्कूर बिन
आसफ़ 36और उसके भाई समायाह, अज़रेल,
मिलली, जिलली, माई, नतनियेल, यहूदाह और
हनानी। यह आदमी मर्दे-ख़ुदा दाऊद के साज़
बजाते रहे। शरीअत के आलिम अज़रा ने जुलूस
की राहनुमाई की। 37चश्मे के दरवाज़े के पास
आकर वह सीधे उस सीढ़ी पर चढ़ गए जो
यरूशलम के उस हिस्से तक पहुँचाती है जो
'दाऊद का शहर' कहलाता है। फिर दाऊद के
महल के पीछे से गुज़रकर वह शहर के मग़रिब में
वाक़े पानी के दरवाज़े तक पहुँच गए।

38शुक्रगुज़ारी का दूसरा गुरोह फ़सील पर
चलते चलते शिमाल में वाक़े तनूरों के बुर्ज और
'मोटी दीवार' की तरफ़ बढ़ गया, और मैं बाक़ी
लोगों के साथ उसके पीछे हो लिया। 39हम
इफ़राईम के दरवाज़े, यसाना के दरवाज़े, मछली
के दरवाज़े, हननेल के बुर्ज, मिया बुर्ज और भेड़
के दरवाज़े से होकर मुहाफ़िज़ों के दरवाज़े तक
पहुँच गए जहाँ हम रुक गए।

40फिर शुक्रगुज़ारी के दोनों गुरोह रब के घर
के पास खड़े हो गए। मैं भी बुज़ुर्गों के आधे
हिस्से 41और ज़ैल के तुरम बजानेवाले इमामों
के साथ रब के घर के सहन में खड़ा हुआ :
इलियाक़ीम, मासियाह, मिन्यमीन, मीकायाह,
इलियूऐनी, ज़करियाह और हननियाह।
42मासियाह, समायाह, इलियज़र, उज़्ज़ी,
यूहनान, मलकियाह, ऐलाम और अज़र भी हमारे
साथ थे। गुलूकार इज़्रख़ियाह की राहनुमाई में
हम्दो-सना के गीत गाते रहे।

43उस दिन ज़बह की बड़ी बड़ी क़ुरबानियाँ पेश
की गईं, क्योंकि अल्लाह ने हम सबको बाल-
बच्चों समेत बड़ी ख़ुशी दिलाई थी। ख़ुशियों का
इतना शोर मच गया कि उस की आवाज़ दूर-दराज़
इलाक़ों तक पहुँच गई।

रब के घर के गोदामों की ज़िम्मेदारी

44उस वक़्त कुछ आदमियों को उन गोदामों
के निगरान बनाया गया जिनमें हदिये, फ़सलों
का पहला फल और पैदावार का दसवाँ हिस्सा
महफ़ूज़ रखा जाता था। उनमें शहरों की फ़सलों
का वह हिस्सा जमा करना था जो शरीअत ने
इमामों और लावियों के लिए मुक़र्रर किया था।
क्योंकि यहूदाह के बाशिंदे ख़िदमत करनेवाले
इमामों और लावियों से ख़ुश थे 45जो अपने
ख़ुदा की ख़िदमत तहारत के रस्मो-रिवाज समेत
अच्छी तरह अंजाम देते थे। रब के घर के गुलूकार
और दरबान भी दाऊद और उसके बेटे सुलेमान
की हिदायात के मुताबिक़ ही ख़िदमत करते थे।
46क्योंकि दाऊद और आसफ़ के ज़माने से ही

गुलूकारों के लीडर अल्लाह की हम्दो-सना के गीतों में राहनुमाई करते थे।

47चुनाँचे ज़रुब्बाबल और नहमियाह के दिनों में तमाम इसराईल रब के घर के गुलूकारों और दरबानों की रोज़ाना ज़रूरियात पूरी करता था। लावियों को वह हिस्सा दिया जाता जो उनके लिए मख़सूस था, और लावी उसमें से इमामों को वह हिस्सा दिया करते थे जो उनके लिए मख़सूस था।

मोआबियों और अम्मोनियों से अलहदगी

13 उस दिन क़ौम के सामने मूसा की शरीअत की तिलावत की गई। पढ़ते पढ़ते मालूम हुआ कि अम्मोनियों और मोआबियों को कभी भी अल्लाह की क़ौम में शरीक होने की इजाज़त नहीं। 2वजह यह है कि इन क़ौमों ने मिसर से निकलते वक़्त इसराईलियों को खाना खिलाने और पानी पिलाने से इनकार किया था। न सिर्फ़ यह बल्कि उन्होंने बिलाम को पैसे दिए थे ताकि वह इसराईली क़ौम पर लानत भेजे, अगरचे हमारे ख़ुदा ने लानत को बरकत में तबदील किया। 3जब हाज़िरीन ने यह हुक्म सुना तो उन्होंने तमाम ग़ैरयहूदियों को जमात से ख़ारिज कर दिया।

रब के घर के इंतज़ाम की इसलाह

4इस वाक़िये से पहले रब के घर के गोदामों पर मुक़र्रर इमाम इलियासिब ने अपने रिश्तेदार तूबियाह 5के लिए एक बड़ा कमरा ख़ाली कर दिया था जिसमें पहले ग़ल्ला की नज़रें, बख़ूर और कुछ आलात रखे जाते थे। नीज़, ग़ल्ला, नई मै और ज़ैतून के तेल का जो दसवाँ हिस्सा लावियों, गुलूकारों और दरबानों के लिए मुक़र्रर था वह भी उस कमरे में रखा जाता था और साथ साथ इमामों के लिए मुक़र्रर हिस्सा भी। 6उस वक़्त मैं यरूशलम में नहीं था, क्योंकि बाबल के बादशाह अर्तख़शस्ता की हुकूमत के 32वें साल में मैं उसके दरबार में वापस आ गया था। कुछ देर बाद मैं शहनशाह से इजाज़त लेकर दुबारा यरूशलम के लिए रवाना हुआ। 7वहाँ पहुँचकर मुझे पता चला कि इलियासिब ने कितनी बुरी हरकत की है, कि उसने अपने रिश्तेदार तूबियाह के लिए रब के घर के सहन में कमरा ख़ाली कर दिया है। 8यह बात मुझे निहायत ही बुरी लगी, और मैंने तूबियाह का सारा सामान कमरे से निकालकर फेंक दिया। 9फिर मैंने हुक्म दिया कि कमरे नए सिरे से पाक-साफ़ कर दिए जाएँ। जब ऐसा हुआ तो मैंने रब के घर का सामान, ग़ल्ला की नज़रें और बख़ूर दुबारा वहाँ रख दिया।

10मुझे यह भी मालूम हुआ कि लावी और गुलूकार रब के घर में अपनी ख़िदमत को छोड़कर अपने खेतों में काम कर रहे हैं। वजह यह थी कि उन्हें वह हिस्सा नहीं मिल रहा था जो उनका हक़ था। 11तब मैंने ज़िम्मेदार अफ़सरों को झिड़ककर कहा, “आप अल्लाह के घर का इंतज़ाम इतनी बेपरवाई से क्यों चला रहे हैं?” मैंने लावियों और गुलूकारों को वापस बुलाकर दुबारा उनकी ज़िम्मेदारियों पर लगाया। 12यह देखकर तमाम यहूदाह ग़ल्ला, नई मै और ज़ैतून के तेल का दसवाँ हिस्सा गोदामों में लाने लगा। 13गोदामों की निगरानी मैंने सलमियाह इमाम, सदोक़ मुंशी और फ़िदायाह लावी के सुपुर्द करके हनान बिन ज़क्कूर बिन मत्तनियाह को उनका मददगार मुक़र्रर किया, क्योंकि चारों को क़ाबिले-एतमाद समझा जाता था। उन्हीं को इमामों और लावियों में उनके मुक़र्ररा हिस्से तक़सीम करने की ज़िम्मेदारी दी गई।

14ऐ मेरे ख़ुदा, इस काम के बाइस मुझे याद कर! वह सब कुछ न भूल जो मैंने वफ़ादारी से अपने ख़ुदा के घर और उसके इंतज़ाम के लिए किया है।

सबत की बहाली

15उस वक़्त मैंने यहूदाह में कुछ लोगों को देखा जो सबत के दिन अंगूर का रस निचोड़कर मै बना रहे थे। दूसरे ग़ल्ला लाकर मै, अंगूर, अंजीर और दीगर मुख़्तलिफ़ क़िस्म की पैदावार के साथ गधों

पर लाद रहे और यरूशलम पहुँचा रहे थे। यह सब
कुछ सबत के दिन हो रहा था। मैंने उन्हें तंबीह की
कि सबत के दिन ख़ुराक फ़रोख़्त न करना। 16सूर
के कुछ आदमी भी जो यरूशलम में रहते थे सबत
के दिन मछली और दीगर कई चीज़ें यरूशलम
में लाकर यहूदाह के लोगों को बेचते थे। 17यह
देखकर मैंने यहूदाह के शुरफ़ा को डाँटकर कहा,
"यह कितनी बुरी बात है! आप तो सबत के दिन
की बेहुरमती कर रहे हैं। 18जब आपके बापदादा
ने ऐसा किया तो अल्लाह यह सारी आफ़त हम
पर और इस शहर पर लाया। अब आप सबत के
दिन की बेहुरमती करने से अल्लाह का इसराईल
पर ग़ज़ब मज़ीद बढ़ा रहे हैं।"

19मैंने हुक्म दिया कि जुमे को यरूशलम के
दरवाज़े शाम के उस वक़्त बंद किए जाएँ जब
दरवाज़े सायों में डूब जाएँ, और कि वह सबत
के पूरे दिन बंद रहें। सबत के इख़्तिताम तक
उन्हें खोलने की इजाज़त नहीं थी। मैंने अपने
कुछ लोगों को दरवाज़ों पर खड़ा भी किया ताकि
कोई भी अपना सामान सबत के दिन शहर में
न लाए। 20यह देखकर ताजिरों और बेचनेवालों
ने कई मरतबा सबत की रात शहर से बाहर
गुज़ारी और वहाँ अपना माल बेचने की कोशिश
की। 21तब मैंने उन्हें तंबीह की, "आप सबत की
रात क्यों फ़सील के पास गुज़ारते हैं? अगर
आप दुबारा ऐसा करें तो आपको हवालाए-पुलिस
किया जाएगा।" उस वक़्त से वह सबत के दिन
आने से बाज़ आए। 22लावियों को मैंने हुक्म
दिया कि अपने आपको पाक-साफ़ करके शहर
के दरवाज़ों की पहरादारी करें ताकि अब से सबत
का दिन मख़सूसो-मुक़द्दस रहे।

ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे इस नेकी के बाइस याद
करके अपनी अज़ीम शफ़क़त के मुताबिक़ मुझ
पर मेहरबानी कर।

ग़ैरयहूदियों से रिश्ता बाँधना मना है

23उस वक़्त मुझे यह भी मालूम हुआ कि
बहुत-से यहूदी मर्दों की शादी अशदूद, अम्मोन
और मोआब की औरतों से हुई है। 24उनके आधे
बच्चे सिर्फ़ अशदूद की ज़बान या कोई और
ग़ैरमुल्की ज़बान बोल लेते थे। हमारी ज़बान से
वह नावाक़िफ़ ही थे। 25तब मैंने उन्हें झिड़का
और उन पर लानत भेजी। बाज़ एक के बाल नोच
नोचकर मैंने उनकी पिटाई की। मैंने उन्हें अल्लाह
की क़सम खिलाने पर मजबूर किया कि हम अपने
बेटे-बेटियों की शादी ग़ैरमुल्कियों से नहीं कराएँगे।
26मैंने कहा, "इसराईल के बादशाह सुलेमान को
याद करें। ऐसी ही शादियों ने उसे गुनाह करने पर
उकसाया। उस वक़्त उसके बराबर कोई बादशाह
नहीं था। अल्लाह उसे प्यार करता था और उसे
पूरे इसराईल का बादशाह बनाया। लेकिन उसे भी
ग़ैरमुल्की बीवियों की तरफ़ से गुनाह करने पर
उकसाया गया। 27अब आपके बारे में भी यही
कुछ सुनना पड़ता है! आपसे भी यही बड़ा गुनाह
सरज़द हो रहा है। ग़ैरमुल्की औरतों से शादी करने
से आप हमारे ख़ुदा से बेवफ़ा हो गए हैं!"

28इमामे-आज़म इलियासिब के बेटे यो-
यदा के एक बेटे की शादी संबल्लत हौरूनी की
बेटी से हुई थी, इसलिए मैंने बेटे को यरूशलम से
भगा दिया।

29ऐ मेरे ख़ुदा, उन्हें याद कर, क्योंकि उन्होंने
इमाम के ओहदे और इमामों और लावियों के
अहद की बेहुरमती की है।

30चुनाँचे मैंने इमामों और लावियों को हर
ग़ैरमुल्की चीज़ से पाक-साफ़ करके उन्हें
उनकी ख़िदमत और मुख़्तलिफ़ ज़िम्मा-
दारियों के लिए हिदायात दीं।

31नीज़, मैंने ध्यान दिया कि फ़सल की पहली
पैदावार और क़ुरबानियों को जलाने की लकड़ी
वक़्त पर रब के घर में पहुँचाई जाए।

ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे याद करके मुझ पर मेहरबानी
कर!।

आस्तर

अख़स्वेरुस जशन मनाता है

1 अख़स्वेरुस बादशाह की सलतनत भारत से लेकर एथोपिया तक 127 सूबों पर मुश्तमिल थी। 2जिन वाक़ियात का ज़िक्र है वह उस वक़्त हुए जब वह सोसन शहर के क़िले से हुकूमत करता था। 3अपनी हुकूमत के तीसरे साल में उसने अपने तमाम बुज़ुर्गों और अफ़सरों की ज़ियाफ़त की। फ़ारस और मादी के फ़ौजी अफ़सर और सूबों के शुरफ़ा और रईस सब शरीक हुए। 4शहनशाह ने पूरे 180 दिन तक अपनी सलतनत की ज़बरदस्त दौलत और अपनी क़ुव्वत की शानो-शौकत का मुज़ाहरा किया।

5इसके बाद उसने सोसन के क़िले में रहनेवाले तमाम लोगों की छोटे से लेकर बड़े तक ज़ियाफ़त की। यह जशन सात दिन तक शाही बाग़ के सहन में मनाया गया। 6मरमर[a] के सतूनों के दरमियान कतान के सफ़ेद और क़िरमिज़ी रंग के क़ीमती परदे लटकाए गए थे, और वह सफ़ेद और अरग़वानी रंग की डोरियों के ज़रीए सतूनों में लगे चाँदी के छल्लों के साथ बँधे हुए थे। मेहमानों के लिए सोने और चाँदी के सोफ़े पच्चीकारी के ऐसे फ़र्श पर रखे हुए थे जिसमें मरमर के अलावा मज़ीद तीन क़ीमती पत्थर इस्तेमाल हुए थे। 7मै सोने के प्यालों में पिलाई गई। हर प्याला फ़रक़ और लासानी था, और बादशाह की फ़ैयाज़ी के मुताबिक़ शाही मै की कसरत थी। 8हर कोई जितनी जी चाहे पी सकता था, क्योंकि बादशाह ने हुक्म दिया था कि साक़ी मेहमानों की हर ख़ाहिश पूरी करें।

वशती मलिका की बरतरफ़ी

9इस दौरान वशती मलिका ने महल के अंदर ख़वातीन की ज़ियाफ़त की। 10सातवें दिन जब बादशाह का दिल मै पी पीकर बहल गया था तो उसने उन सात ख़्वाजासराओं को बुलाया जो ख़ास उस की ख़िदमत करते थे। उनके नाम महूमान, बिज़्ज़ता, ख़रबूना, बिगता, अबग्ता, ज़ितार और कर्कस थे। 11उसने हुक्म दिया, "वशती मलिका को शाही ताज पहनाकर मेरे हुज़ूर ले आओ ताकि शुरफ़ा और बाक़ी मेहमानों को उस की ख़ूबसूरती मालूम हो जाए।" क्योंकि वशती निहायत ख़ूबसूरत थी। 12लेकिन जब ख़्वाजासरा मलिका के पास गए तो उसने आने से इनकार कर दिया।

यह सुनकर बादशाह आग-बगूला हो गया 13और दानाओं से बात की जो औक़ात के आलिम थे, क्योंकि दस्तूर यह था कि बादशाह क़ानूनी मामलों में उलमा से मशवरा करे। 14आलिमों के नाम कारशीना, सितार, अदमाता, तरसीस, मरस, मरसिना और ममूकान थे। फ़ारस और मादी के यह सात शुरफ़ा आज़ादी से बादशाह

[a]लफ़्ज़ी तरजुमा : संगे-जर्राहत, alabaster।

के हुज़ूर आ सकते थे और सलतनत में सबसे आला ओहदा रखते थे।

15अख़स्वेरुस ने पूछा, "क़ानून के लिहाज़ से वशती मलिका के साथ क्या सुलूक किया जाए? क्योंकि उसने ख़्वाजासराओं के हाथ भेजे हुए शाही हुक्म को नहीं माना।"

16ममूकान ने बादशाह और दीगर शुरफ़ा की मौजूदगी में जवाब दिया, "वशती मलिका ने इससे न सिर्फ़ बादशाह का बल्कि उसके तमाम शुरफ़ा और सलतनत के तमाम सूबों में रहनेवाली क़ौमों का भी गुनाह किया है। 17क्योंकि जो कुछ उसने किया है वह तमाम ख़वातीन को मालूम हो जाएगा। फिर वह अपने शौहरों को हक़ीर जानकर कहेंगी, 'गो बादशाह ने वशती मलिका को अपने हुज़ूर आने का हुक्म दिया तो भी उसने उसके हुज़ूर आने से इनकार किया।' 18आज ही फ़ारस और मादी के शुरफ़ा की बीवियाँ मलिका की यह बात सुनकर अपने शौहरों से ऐसा ही सुलूक करेंगी। तब हम ज़िल्लत और ग़ुस्से के जाल में उलझ जाएंगे। 19अगर बादशाह को मंज़ूर हो तो वह एलान करें कि वशती मलिका को फिर कभी अख़स्वेरुस बादशाह के हुज़ूर आने की इजाज़त नहीं। और लाज़िम है कि यह एलान फ़ारस और मादी के क़वानीन में दर्ज किया जाए ताकि उसे मनसूख़ न किया जा सके। फिर बादशाह किसी और को मलिका का ओहदा दें, ऐसी औरत को जो ज़्यादा लायक़ हो। 20जब एलान पूरी सलतनत में किया जाएगा तो तमाम औरतें अपने शौहरों की इज़्ज़त करेंगी, ख़ाह वह छोटे हों या बड़े।"

21यह बात बादशाह और उसके शुरफ़ा को पसंद आई। ममूकान के मशवरे के मुताबिक़ 22अख़स्वेरुस ने सलतनत के तमाम सूबों में ख़त भेजे। हर सूबे को उसके अपने तर्ज़े-तहरीर में और हर क़ौम को उस की अपनी ज़बान में ख़त मिल गया कि हर मर्द अपने घर का सरपरस्त है और कि हर ख़ानदान में शौहर की ज़बान बोली जाए।

नई मलिका की तलाश

2 बाद में जब बादशाह का ग़ुस्सा ठंडा हो गया तो मलिका उसे दुबारा याद आने लगी। जो कुछ वशती ने किया था और जो फ़ैसला उसके बारे में हुआ था वह भी उसके ज़हन में घूमता रहा।
2फिर उसके मुलाज़िमों ने ख़याल पेश किया, "क्यों न पूरी सलतनत में शहनशाह के लिए ख़ूबसूरत कुँवारियाँ तलाश की जाएँ? 3बादशाह अपनी सलतनत के हर सूबे में अफ़सर मुक़र्रर करें जो यह ख़ूबसूरत कुँवारियाँ चुनकर सोसन के क़िले के ज़नानख़ाने में लाएँ। उन्हें ज़नानख़ाने के इंचार्ज हैजा ख़्वाजासरा की निगरानी में दे दिया जाए और उनकी ख़ूबसूरती बढ़ाने के लिए रंग निखारने का हर ज़रूरी तरीक़ा इस्तेमाल किया जाए। 4फिर जो लड़की बादशाह को सबसे ज़्यादा पसंद आए वह वशती की जगह मलिका बन जाए।"

यह मनसूबा बादशाह को अच्छा लगा, और उसने ऐसा ही किया।

5उस वक़्त सोसन के क़िले में बिनयमीन के क़बीले का एक यहूदी रहता था जिस-का नाम मर्दकी बिन याईर बिन सिमई बिन क़ीस था। 6मर्दकी का ख़ानदान उन इसराईलियों में शामिल था जिनको बाबल का बादशाह नबूकदनज़्ज़र यहूदाह के बादशाह यहूयाकीन[a] के साथ जिलावतन करके अपने साथ ले गया था। 7मर्दकी के चचा की एक निहायत ख़ूबसूरत बेटी बनाम हदस्साह थी जो आस्तर भी कहलाती थी। उसके वालिदैन के मरने पर मर्दकी ने उसे लेकर अपनी बेटी की हैसियत से पाल लिया था।

8जब बादशाह का हुक्म सादिर हुआ तो बहुत-सी लड़कियों को सोसन के क़िले में लाकर ज़नानख़ाने के इंचार्ज हैजा के सुपुर्द कर दिया गया। आस्तर भी उन लड़कियों में शामिल थी। 9वह हैजा को पसंद आई बल्कि उसे उस की ख़ास मेहरबानी हासिल हुई। ख़्वाजासरा ने जल्दी

[a]इबरानी में यहूयाकीन का मुतरादिफ़ यकूनियाह मुस्तामल है।

जल्दी बनाव-सिंगार का सिलसिला शुरू किया,
खाने-पीने का मुनासिब इंतज़ाम करवाया और
शाही महल की सात चुनीदा नौकरानियाँ आस्तर
के हवाले कर दीं। रिहाइश के लिए आस्तर और
उस की लड़कियों को ज़नानख़ाने के सबसे अच्छे
कमरे दिए गए।

10आस्तर ने किसी को नहीं बताया था कि
मैं यहूदी औरत हूँ, क्योंकि मर्दकी ने उसे हुक्म
दिया था कि इसके बारे में ख़ामोश रहे। **11**हर
दिन मर्दकी ज़नानख़ाने के सहन से गुज़रता ताकि
आस्तर के हाल का पता करे और यह कि उसके
साथ क्या क्या हो रहा है।

12-13अख़स्वेरुस बादशाह से मिलने से पहले
हर कुँवारी को बारह महीनों का मुक़र्ररा बनाव-
सिंगार करवाना था, छ: माह मुर के तेल से और
छ: माह बलसान के तेल और रंग निखारने के
दीगर तरीक़ों से। जब उसे बादशाह के महल में
जाना था तो ज़नानख़ाने की जो भी चीज़ वह
अपने साथ लेना चाहती उसे दी जाती।

14शाम के वक़्त वह महल में जाती और अगले
दिन उसे सुबह के वक़्त दूसरे ज़नानख़ाने में
लाया जाता जहाँ बादशाह की दाश्ताएँ शाशजज़
ख़्वाजासरा की निगरानी में रहती थीं। इसके बाद
वह फिर कभी बादशाह के पास न आती। उसे
सिर्फ़ इसी सूरत में वापस लाया जाता कि वह
बादशाह को ख़ास पसंद आती और वह उसका
नाम लेकर उसे बुलाता।

आस्तर मलिका बन जाती है

15होते होते आस्तर बिंत अबीख़ैल की बारी
आई (अबीख़ैल मर्दकी का चचा था, और मर्दकी
ने उस की बेटी को लेपालक बना लिया था)।
जब आस्तर से पूछा गया कि आप ज़नानख़ाने की
क्या चीज़ें अपने साथ ले जाना चाहती हैं तो उसने
सिर्फ़ वह कुछ ले लिया जो हैजा ख़्वाजासरा ने
उसके लिए चुना। और जिसने भी उसे देखा उसने
उसे सराहा। **16**चुनाँचे उसे बादशाह की हुकूमत
के सातवें साल के दसवें महीने बनाम तेबत में
अख़स्वेरुस के पास महल में लाया गया।

17बादशाह को आस्तर दूसरी लड़कियों की
निसबत कहीं ज़्यादा प्यारी लगी। दीगर तमाम
कुँवारियों की निसबत उसे उस की ख़ास
क़बूलियत और मेहरबानी हासिल हुई। चुनाँचे
बादशाह ने उसके सर पर ताज रखकर उसे वशती
की जगह मलिका बना दिया। **18**इस मौक़े की
ख़ुशी में उसने आस्तर के एज़ाज़ में बड़ी ज़ियाफ़त
की। तमाम शुरफ़ा और अफ़सरों को दावत दी
गई। साथ साथ सूबों में कुछ टैक्सों की मुआफ़ी
का एलान किया गया और फ़ैयाज़ी से तोहफ़े
तक़सीम किए गए।

मर्दकी बादशाह को बचाता है

19जब कुँवारियों को एक बार फिर जमा किया
गया तो मर्दकी शाही सहन के दरवाज़े में बैठा
था।[a] **20**आस्तर ने अब तक किसी को नहीं
बताया था कि मैं यहूदी हूँ, क्योंकि मर्दकी ने यह
बताने से मना किया था। पहले की तरह जब वह
उसके घर में रहती थी अब भी आस्तर उस की हर
बात मानती थी।

21एक दिन जब मर्दकी शाही सहन के दरवाज़े
में बैठा था तो दो ख़्वाजासरा बनाम बिगतान और
तरश ग़ुस्से में आकर अख़स्वेरुस को क़त्ल करने
की साज़िशें करने लगे। दोनों शाही कमरों के
पहरेदार थे। **22**मर्दकी को पता चला तो उसने
आस्तर को ख़बर पहुँचाई जिसने मर्दकी का नाम
लेकर बादशाह को इत्तला दी। **23**मामले की
तफ़तीश की गई तो दुरुस्त साबित हुआ, और
दोनों मुलाज़िमों को फाँसी दे दी गई। यह वाक़िया
बादशाह की मौजूदगी में उस किताब में दर्ज किया
गया जिसमें रोज़ाना उस की हुकूमत के अहम
वाक़ियात लिखे जाते थे।

[a]शाही सहन के दरवाज़े में शाही इंतज़ामिया थी, इसलिए ऐन मुमकिन है कि मर्दकी शाही मुलाज़िम हो।

हामान यहूदी क़ौम को हलाक करना चाहता है

3 कुछ देर के बाद बादशाह ने हामान बिन हम्मदाता अजाजी को सरफ़राज़ करके दरबार में सबसे आला ओहदा दिया। 2जब कभी हामान आ मौजूद होता तो शाही सहन के दरवाज़े के तमाम शाही अफ़सर मुँह के बल झुक जाते, क्योंकि बादशाह ने ऐसा करने का हुक्म दिया था। लेकिन मर्दकी ऐसा नहीं करता था।

3यह देखकर दीगर शाही मुलाज़िमों ने उससे पूछा, “आप बादशाह के हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी क्यों कर रहे हैं?”

4उसने जवाब दिया, “मैं तो यहूदी हूँ।” रोज़ बरोज़ दूसरे उसे समझाते रहे, लेकिन वह न माना। आख़िरकार उन्होंने हामान को इत्तला दी, क्योंकि वह देखना चाहते थे कि क्या वह मर्दकी का जवाब क़बूल करेगा या नहीं।

5जब हामान ने ख़ुद देखा कि मर्दकी मेरे सामने मुँह के बल नहीं झुकता तो वह आग-बगूला हो गया। 6वह फ़ौरन मर्दकी को क़त्ल करने के मनसूबे बनाने लगा। लेकिन यह उसके लिए काफ़ी नहीं था। चूँकि उसे बताया गया था कि मर्दकी यहूदी है इसलिए वह फ़ारसी सलतनत में रहनेवाले तमाम यहूदियों को हलाक करने का रास्ता ढूँडने लगा।

7चुनाँचे अख़स्वेरुस बादशाह की हुकूमत के 12वें साल के पहले महीने नीसान[a] में हामान की मौजूदगी में क़ुरा डाला गया। क़ुरा डालने से हामान यहूदियों को क़त्ल करने की सबसे मुबारक तारीख़ मालूम करना चाहता था। (क़ुरा के लिए ‘पूर’ कहा जाता था।) इस तरीक़े से 12वें महीने अदार का 13वाँ दिन[b] निकला। 8तब हामान ने बादशाह से बात की, “आपकी सलतनत के तमाम सूबों में एक क़ौम बिखरी हुई है जो अपने आपको दीगर क़ौमों से अलग रखती है। उसके क़वानीन दूसरी तमाम क़ौमों से मुख़्तलिफ़ हैं, और उसके अफ़राद बादशाह के क़वानीन को नहीं मानते। मुनासिब नहीं कि बादशाह उन्हें बरदाश्त करें!

9अगर बादशाह को मंज़ूर हो तो एलान करें कि इस क़ौम को हलाक कर दिया जाए। तब मैं शाही ख़ज़ानों में 3,35,000 किलोग्राम चाँदी जमा करा दूँगा।”

10बादशाह ने अपनी उँगली से वह अंगूठी उतारी जो शाही मुहर लगाने के लिए इस्तेमाल होती थी और उसे यहूदियों के दुश्मन हामान बिन हम्मदाता अजाजी को देकर 11कहा, “चाँदी और क़ौम आप ही की हैं, उसके साथ वह कुछ करें जो आपको अच्छा लगे।”

12पहले महीने के 13वें दिन[c] हामान ने शाही मुहर्रिरों को बुलाया ताकि वह उस की तमाम हिदायात के मुताबिक़ ख़त लिखकर बादशाह के गवर्नरों, सूबों के दीगर हाकिमों और तमाम क़ौमों के बुज़ुर्गों को भेजें। यह ख़त हर क़ौम के अपने तर्ज़े-तहरीर और अपनी ज़बान में क़लमबंद हुए। उन्हें बादशाह का नाम लेकर लिखा गया, फिर शाही अंगूठी की मुहर उन पर लगाई गई। उनमें ज़ैल का एलान किया गया।

13“एक ही दिन में तमाम यहूदियों को हलाक और पूरे तौर पर तबाह करना है, ख़ाह छोटे हों या बड़े, बच्चे हों या औरतें। साथ साथ उनकी मिलकियत भी ज़ब्त कर ली जाए।” इसके लिए 12वें महीने अदार का 13वाँ दिन[d] मुक़र्रर किया गया।

यह एलान तेज़रौ क़ासिदों के ज़रीए सलतनत के तमाम सूबों में पहुँचाया गया 14ताकि उस की तसदीक़ क़ानूनी तौर पर की जाए और तमाम क़ौमें मुक़र्ररा दिन के लिए तैयार हों।

15बादशाह के हुक्म पर क़ासिद चल निकले। यह एलान सोसन के क़िले में भी किया गया। फिर बादशाह और हामान खाने-पीने के लिए बैठ गए। लेकिन पूरे शहर में हलचल मच गई।

[a]अप्रैल ता मई।
[b]7 मार्च, 473 क़ म।
[c]17 अप्रैल।
[d]7 मार्च।

मर्दकी आस्तर से मदद माँगता है

4 जब मर्दकी को मालूम हुआ कि क्या हुआ
है तो उसने रंजिश से अपने कपड़ों को
फाड़कर टाट का लिबास पहन लिया और सर
पर राख डाल ली। फिर वह निकलकर बुलंद
आवाज़ से गिर्याओ-ज़ारी करते करते शहर में से
गुज़रा। 2वह शाही सहन के दरवाज़े तक पहुँच
गया लेकिन दाख़िल न हुआ, क्योंकि मातमी
कपड़े पहनकर दाख़िल होने की इजाज़त नहीं थी।
3सलतनत के तमाम सूबों में जहाँ जहाँ बादशाह
का एलान पहुँचा वहाँ यहूदी ख़ूब मातम करने और
रोज़ा रखकर रोने और गिर्याओ-ज़ारी करने लगे।
बहुत-से लोग टाट का लिबास पहनकर राख में
लेट गए।

4जब आस्तर की नौकरानियों और ख़्वा-
जासराओं ने आकर उसे इत्तला दी तो वह सख़्त
घबरा गई। उसने मर्दकी को कपड़े भेज दिए जो
वह अपने मातमी कपड़ों के बदले पहन ले, लेकिन
उसने उन्हें क़बूल न किया। 5तब आस्तर ने हताक
ख़्वाजासरा को मर्दकी के पास भेजा ताकि वह
मालूम करे कि क्या हुआ है, मर्दकी ऐसी हरकतें
क्यों कर रहा है। (बादशाह ने हताक को आस्तर
की ख़िदमत करने की ज़िम्मेदारी दी थी।)

6हताक शाही सहन के दरवाज़े से निकल-
कर मर्दकी के पास आया जो अब तक साथवाले
चौक में था। 7मर्दकी ने उसे हामान का पूरा
मनसूबा सुनाकर यह भी बताया कि हामान ने
यहूदियों को हलाक करने के लिए शाही ख़ज़ाने
को कितने पैसे देने का वादा किया है। 8इसके
अलावा मर्दकी ने ख़्वाजासरा को उस शाही
फ़रमान की कापी दी जो सोसन में सादिर हुआ था
और जिसमें यहूदियों को नेस्तो-नाबूद करने का
एलान किया गया था। उसने गुज़ारिश की, “यह
एलान आस्तर को दिखाकर उन्हें तमाम हालात
से बा-ख़बर कर दें। उन्हें हिदायत दें कि बादशाह
के हुज़ूर जाएँ और उससे इल्तिजा करके अपनी
क़ौम की सिफ़ारिश करें।”

9हताक वापस आया और मर्दकी की बातों
की ख़बर दी। 10यह सुनकर आस्तर ने उसे
दुबारा मर्दकी के पास भेजा ताकि उसे बताए,
11“बादशाह के तमाम मुलाज़िम बल्कि सूबों के
तमाम बाशिंदे जानते हैं कि जो भी बुलाए बग़ैर
महल के अंदरूनी सहन में बादशाह के पास आए
उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी, ख़ाह वह मर्द हो
या औरत। वह सिर्फ़ इस सूरत में बच जाएगा
कि बादशाह सोने का अपना असा उस की तरफ़
बढ़ाए। बात यह भी है कि बादशाह को मुझे बुलाए
30 दिन हो गए हैं।”

12आस्तर का पैग़ाम सुनकर 13मर्दकी ने
जवाब वापस भेजा, “यह न सोचना कि मैं शाही
महल में रहती हूँ, इसलिए गो दीगर तमाम यहूदी
हलाक हो जाएँ मैं बच जाऊँगी। 14अगर आप इस
वक़्त ख़ामोश रहेंगी तो यहूदी कहीं और से रिहाई
और छुटकारा पा लेंगे जबकि आप और आपके
बाप का घराना हलाक हो जाएंगे। क्या पता है,
शायद आप इसी लिए मलिका बन गई हैं कि ऐसे
मौक़े पर यहूदियों की मदद करें।”

15आस्तर ने मर्दकी को जवाब भेजा, 16“ठीक
है, फिर जाएँ और सोसन में रहनेवाले तमाम
यहूदियों को जमा करें। मेरे लिए रोज़ा रखकर
तीन दिन और तीन रात न कुछ खाएँ, न पिएँ।
मैं भी अपनी नौकरानियों के साथ मिलकर रोज़ा
रखूँगी। इसके बाद बादशाह के पास जाऊँगी, गो
यह क़ानून के ख़िलाफ़ है। अगर मरना है तो मर
ही जाऊँगी।”

17तब मर्दकी चला गया और वैसा ही किया
जैसा आस्तर ने उसे हिदायत की थी।

आस्तर बादशाह और हामान को दावत देती है

5 तीसरे दिन आस्तर मलिका अपना शाही
लिबास पहने हुए महल के अंदरूनी सहन
में दाख़िल हुई। यह सहन उस हाल के सामने
था जिसमें तख़्त लगा था। उस वक़्त बादशाह
दरवाज़े के मुक़ाबिल अपने तख़्त पर बैठा था।

2आस्तर को सहन में खड़ी देखकर वह ख़ुश हुआ
और सोने के शाही असा को उस की तरफ़ बढ़ा
दिया। तब आस्तर क़रीब आई और असा के सिरे
को छू दिया। 3बादशाह ने उससे पूछा, “आस्तर
मलिका, क्या बात है? आप क्या चाहती हैं?
मैं उसे देने के लिए तैयार हूँ, ख़ाह सलतनत का
आधा हिस्सा क्यों न हो!”
4आस्तर ने जवाब दिया, “मैंने आज के लिए
ज़ियाफ़त की तैयारियाँ की हैं। अगर बादशाह को
मंज़ूर हो तो वह हामान को अपने साथ लेकर
उसमें शिरकत करें।”
5बादशाह ने अपने मुलाज़िमों को हुक्म दिया,
“जल्दी करो! हामान को बुलाओ ताकि हम
आस्तर की ख़ाहिश पूरी कर सकें।” चुनाँचे
बादशाह और हामान आस्तर की तैयारशुदा
ज़ियाफ़त में शरीक हुए। 6मै पी पीकर बादशाह
ने आस्तर से पूछा, “अब मुझे बताएँ, आप क्या
चाहती हैं? वह आपको दिया जाएगा। अपनी
दरख़ास्त पेश करें, क्योंकि मैं सलतनत के आधे
हिस्से तक आपको देने के लिए तैयार हूँ।”
7आस्तर ने जवाब दिया, “मेरी दरख़ास्त और
आरज़ू यह है, 8अगर बादशाह मुझसे ख़ुश हों और
उन्हें मेरी गुज़ारिश और दरख़ास्त पूरी करना मंज़ूर
हो तो वह कल एक बार फिर हामान के साथ
एक ज़ियाफ़त में शिरकत करें जो मैं आपके लिए
तैयार करूँ। फिर मैं बादशाह को जवाब दूँगी।”

मर्दकी को क़त्ल करने के लिए हामान की तैयारियाँ

9उस दिन जब हामान महल से निकला तो वह
बड़ा ख़ुश और ज़िंदादिल था। लेकिन फिर उस की
नज़र मर्दकी पर पड़ गई जो शाही सहन के दरवाज़े
के पास बैठा था। न वह खड़ा हुआ, न हामान को
देखकर काँप गया। हामान लाल-पीला हो गया,
10लेकिन अपने आप पर क़ाबू रखकर वह चला
गया।
घर पहुँचकर वह अपने दोस्तों और अपनी बीवी
ज़रिश को अपने पास बुलाकर 11उनके सामने
अपनी ज़बरदस्त दौलत और मुतअद्दिद बेटों पर
शेख़ी मारने लगा। उसने उन्हें उन सारे मौक़ों की
फ़हरिस्त सुनाई जिन पर बादशाह ने उस की
इज़्ज़त की थी और फ़ख़र किया कि बादशाह ने
मुझे तमाम बाक़ी शुरफ़ा और अफ़सरों से ज़्यादा
ऊँचा ओहदा दिया है। 12हामान ने कहा, “न
सिर्फ़ यह, बल्कि आज आस्तर मलिका ने ऐसी
ज़ियाफ़त की जिसमें बादशाह के अलावा सिर्फ़ मैं
ही शरीक था। और मुझे मलिका से कल के लिए
भी दावत मिली है कि बादशाह के साथ ज़ियाफ़त
में शिरकत करूँ। 13लेकिन जब तक मर्दकी यहूदी
शाही महल के सहन के दरवाज़े पर बैठा नज़र
आता है मैं चैन का साँस नहीं लूँगा।”
14उस की बीवी ज़रिश और बाक़ी अज़ी-
ज़ों ने मशवरा दिया, “सूली बनवाएँ जिसकी
ऊँचाई 75 फ़ुट हो। फिर कल सुबह-सवेरे
बादशाह के पास जाकर गुज़ारिश करें कि मर्दकी
को उससे लटकाया जाए। इसके बाद आप
तसल्ली से बादशाह के साथ जाकर ज़ियाफ़त के
मज़े ले सकते हैं।” यह मनसूबा हामान को अच्छा
लगा, और उसने सूली तैयार करवाई।

बादशाह मर्दकी की इज़्ज़त करता है

6 उस रात बादशाह को नींद न आई, इसलिए
उसने हुक्म दिया कि वह किताब लाई
जाए जिसमें रोज़ाना हुकूमत के अहम वाक़ियात
लिखे जाते हैं। उसमें से पढ़ा गया 2तो इसका
भी ज़िक्र हुआ कि मर्दकी ने किस तरह बादशाह
को दोनों ख़्वाजासराओं बिगताना और तरश के
हाथ से बचाया था, कि जब शाही कमरों के
इन पहरेदारों ने अख़स्वेरुस को क़त्ल करने की
साज़िश की तो मर्दकी ने बादशाह को इत्तला दी
थी। 3जब यह वाक़िया पढ़ा गया तो बादशाह ने
पूछा, “इसके एवज़ मर्दकी को क्या एज़ाज़ दिया
गया?” मुलाज़िमों ने जवाब दिया, “कुछ भी नहीं
दिया गया।”
4उसी लमहे हामान महल के बैरूनी सहन में
आ पहुँचा था ताकि बादशाह से मर्दकी को उस

सूली से लटकाने की इजाज़त माँगे जो उसने
उसके लिए बनवाई थी। बादशाह ने सवाल किया,
“बाहर सहन में कौन है?” 5मुलाज़िमों ने जवाब
दिया, “हामान है।” बादशाह ने हुक्म दिया, “उसे
अंदर आने दो।”

6हामान दाख़िल हुआ तो बादशाह ने उससे
पूछा, “उस आदमी के लिए क्या किया जाए
जिसकी बादशाह ख़ास इज़्ज़त करना चाहे?”
हामान ने सोचा, “वह मेरी ही बात कर रहा है!
क्योंकि मेरी निसबत कौन है जिसकी बादशाह
ज़्यादा इज़्ज़त करना चाहता है?” 7चुनाँचे उसने
जवाब दिया, “जिस आदमी की बादशाह ख़ास
इज़्ज़त करना चाहें 8उसके लिए शाही लिबास
चुना जाए जो बादशाह ख़ुद पहन चुके हों। एक
घोड़ा भी लाया जाए जिसका सर शाही सजावट
से सजा हुआ हो और जिस पर बादशाह ख़ुद सवार
हो चुके हों। 9यह लिबास और घोड़ा बादशाह के
आलातरीन अफ़सरों में से एक के सुपुर्द किया
जाए। वही उस शख़्स को जिसकी बादशाह ख़ास
इज़्ज़त करना चाहते हैं कपड़े पहनाए और उसे
घोड़े पर बिठाकर शहर के चौक में से गुज़ारे। साथ
साथ वह उसके आगे आगे चलकर एलान करे,
‘यही उसके साथ किया जाता है जिसकी इज़्ज़त
बादशाह करना चाहते हैं’।”

10अख़स्वेरुस ने हामान से कहा, “फिर जल्दी
करें, मर्दकी यहूदी शाही सहन के दरवाज़े के
पास बैठा है। शाही लिबास और घोड़ा मँगवाकर
उसके साथ ऐसा ही सुलूक करें। जो भी करने का
मशवरा आपने दिया वही कुछ करें, और ध्यान दें
कि इसमें किसी भी चीज़ की कमी न हो!”

11हामान को ऐसा ही करना पड़ा। शाही
लिबास को चुनकर उसने उसे मर्दकी को पहना
दिया। फिर उसे बादशाह के अपने घोड़े पर
बिठाकर उसने उसे शहर के चौक में से गुज़ारा।
साथ साथ वह उसके आगे आगे चलकर एलान
करता रहा, “यही उस शख़्स के साथ किया जाता
है जिसकी इज़्ज़त बादशाह करना चाहता है।”
12फिर मर्दकी शाही सहन के दरवाज़े के पास
वापस आया।

लेकिन हामान उदास होकर जल्दी से अपने घर
चला गया। शर्म के मारे उसने मुँह पर कपड़ा डाल
लिया था। 13उसने अपनी बीवी ज़रिश और अपने
दोस्तों को सब कुछ सुनाया जो उसके साथ हुआ
था। तब उसके मुशीरों और बीवी ने उससे कहा,
“आपका बेड़ा ग़रक़ हो गया है, क्योंकि मर्दकी
यहूदी है और आप उसके सामने शिकस्त खाने
लगे हैं। आप उसका मुक़ाबला नहीं कर सकेंगे।”

14वह अभी उससे बात कर ही रहे थे कि
बादशाह के ख़्वाजासरा पहुँच गए और उसे लेकर
जल्दी जल्दी आस्तर के पास पहुँचाया। ज़ियाफ़त
तैयार थी।

हामान का सत्यानास

7 चुनाँचे बादशाह और हामान आस्तर
मलिका की ज़ियाफ़त में शरीक हुए। 2मै
पीते वक़्त बादशाह ने पहले दिन की तरह अब भी
पूछा, “आस्तर मलिका, अब बताएँ, आप क्या
चाहती हैं? वह आपको दिया जाएगा। अपनी
दरख़ास्त पेश करें, क्योंकि मैं सलतनत के आधे
हिस्से तक आपको देने के लिए तैयार हूँ।”

3मलिका ने जवाब दिया, “अगर बादशाह
मुझसे ख़ुश हों और उन्हें मेरी बात मंज़ूर हो तो
मेरी गुज़ारिश पूरी करें कि मेरी और मेरी क़ौम की
जान बची रहे। 4क्योंकि मुझे और मेरी क़ौम को
उनके हाथ बेच डाला गया है जो हमें तबाह और
हलाक करके नेस्तो-नाबूद करना चाहते हैं। अगर
हम बिककर ग़ुलाम और लौंडियाँ बन जाते तो मैं
ख़ामोश रहती। ऐसी कोई मुसीबत बादशाह को
तंग करने के लिए काफ़ी न होती।”

5यह सुनकर अख़स्वेरुस ने आस्तर से सवाल
किया, “कौन ऐसी हरकत करने की जुर्रत करता
है? वह कहाँ है?” 6आस्तर ने जवाब दिया,
“हमारा दुश्मन और मुख़ालिफ़ यह शरीर आदमी
हामान है!”

तब हामान बादशाह और मलिका से दहशत
खाने लगा। 7बादशाह आग-बगूला होकर खड़ा हो
गया और मै को छोड़कर महल के बाग़ में टहलने
लगा। हामान पीछे रहकर आस्तर से इल्तिजा
करने लगा, “मेरी जान बचाएँ” क्योंकि उसे
अंदाज़ा हो गया था कि बादशाह ने मुझे सज़ाए-
मौत देने का फ़ैसला कर लिया है।

8जब बादशाह वापस आया तो क्या देखता
है कि हामान उस सोफ़े पर गिर गया है जिस
पर आस्तर टेक लगाए बैठी है। बादशाह गरजा,
“क्या यह आदमी यहीं महल में मेरे हुज़ूर मलिका
की इसमतदरी करना चाहता है?” ज्योंही
बादशाह ने यह अलफ़ाज़ कहे मुलाज़िमों ने हामान
के मुँह पर कपड़ा डाल दिया। 9बादशाह का
ख़्वाजासरा ख़रबूनाह बोल उठा, “हामान ने अपने
घर के क़रीब सूली तैयार करवाई है जिसकी
ऊँचाई 75 फ़ुट है। वह मर्दकी के लिए बनवाई
गई है, उस शख़्स के लिए जिसने बादशाह की
जान बचाई।” बादशाह ने हुक्म दिया, “हामान
को उससे लटका दो।”

10चुनाँचे हामान को उसी सूली से लटका दिया
गया जो उसने मर्दकी के लिए बनवाई थी। तब
बादशाह का ग़ुस्सा ठंडा हो गया।

अख़स्वेरुस यहूदियों की मदद करता है

8 उसी दिन अख़स्वेरुस ने आस्तर मलिका
को यहूदियों के दुश्मन हामान का घर दे
दिया। फिर मर्दकी को बादशाह के सामने लाया
गया, क्योंकि आस्तर ने उसे बता दिया था कि
वह मेरा रिश्तेदार है। 2बादशाह ने अपनी उँगली
से वह अंगूठी उतारी जो मुहर लगाने के लिए
इस्तेमाल होती थी और जिसे उसने हामान से
वापस ले लिया था। अब उसने उसे मर्दकी के
हवाले कर दिया। उस वक़्त आस्तर ने उसे हामान
की मिलकियत का निगरान भी बना दिया।

3एक बार फिर आस्तर बादशाह के सामने
गिर गई और रो रोकर इलतमास करने
लगी, “जो शरीर मनसूबा हामान अजाजी
ने यहूदियों के ख़िलाफ़ बाँध लिया है उसे
रोक दें।” 4बादशाह ने सोने का अपना
असा आस्तर की तरफ़ बढ़ाया, तो वह उठ-
कर उसके सामने खड़ी हो गई। 5उसने
कहा, “अगर बादशाह को बात अच्छी और
मुनासिब लगे, अगर मुझे उनकी मेहरबानी
हासिल हो और वह मुझसे ख़ुश हों तो
वह हामान बिन हम्मदाता अजाजी के उस
फ़रमान को मनसूख़ करें जिसके मुताबिक़
सलतनत के तमाम सूबों में रहनेवाले यहू-
दियों को हलाक करना है। 6अगर मेरी क़ौम और
नसल मुसीबत में फँसकर हलाक हो जाए तो मैं
यह किस तरह बरदाश्त करूँगी?”

7तब अख़स्वेरुस ने आस्तर और मर्दकी यहूदी
से कहा, “मैंने आस्तर को हामान का घर दे दिया।
उसे ख़ुद मैंने यहूदियों पर हमला करने की वजह
से फाँसी दी है। 8लेकिन जो भी फ़रमान बादशाह
के नाम में सादिर हुआ है और जिस पर उस
की अंगूठी की मुहर लगी है उसे मनसूख़ नहीं
किया जा सकता। लेकिन आप एक और काम
कर सकते हैं। मेरे नाम में एक और फ़रमान जारी
करें जिस पर मेरी मुहर लगी हो। उसे अपनी
तसल्ली के मुताबिक़ यों लिखें कि यहूदी महफ़ूज़
हो जाएँ।”

9उसी वक़्त बादशाह के मुहर्रिर बुलाए गए।
तीसरे महीने सीवान का 23वाँ दिन[a] था। उन्होंने
मर्दकी की तमाम हिदायात के मुताबिक़ फ़रमान
लिख दिया जिसे यहूदियों और तमाम 127 सूबों
के गवर्नरों, हाकिमों और रईसों को भेजना था।
भारत से लेकर एथोपिया तक यह फ़रमान हर
सूबे के अपने तर्ज़े-तहरीर और हर क़ौम की अपनी
ज़बान में क़लमबंद था। यहूदी क़ौम को भी उसके
अपने तर्ज़े-तहरीर और उस की अपनी ज़बान
में फ़रमान मिल गया। 10मर्दकी ने यह फ़रमान
बादशाह के नाम में लिखकर उस पर शाही मुहर

[a]25 जून।

लगाई। फिर उसने उसे शाही डाक के तेज़रफ़्तार घोड़ों पर सवार क़ासिदों के हवाले कर दिया। फ़रमान में लिखा था,

11“बादशाह हर शहर के यहूदियों को अपने दिफ़ा के लिए जमा होने की इजाज़त देते हैं। अगर मुख़्तलिफ़ क़ौमों और सूबों के दुश्मन उन पर हमला करें तो यहूदियों को उन्हें बाल-बच्चों समेत तबाह करने और हलाक करके नेस्तो-नाबूद करने की इजाज़त है। नीज़, वह उनकी मिलकियत पर क़ब्ज़ा कर सकते हैं। 12एक ही दिन यानी 12वें महीने अदार के 13वें दिन[a] यहूदियों को बादशाह के तमाम सूबों में यह कुछ करने की इजाज़त है।”

13हर सूबे में फ़रमान की क़ानूनी तसदीक़ करनी थी और हर क़ौम को इसकी ख़बर पहुँचानी थी ताकि मुक़र्ररा दिन यहूदी अपने दुश्मनों से इंतक़ाम लेने के लिए तैयार हों। 14बादशाह के हुक्म पर तेज़रौ क़ासिद शाही डाक के बेहतरीन घोड़ों पर सवार होकर चल पड़े। फ़रमान का एलान सोसन के क़िले में भी हुआ।

15मर्दकी क़िरमिज़ी और सफ़ेद रंग का शाही लिबास, नफ़ीस कतान और अरग़वानी रंग की चादर और सर पर सोने का बड़ा ताज पहने हुए महल से निकला। तब सोसन के बाशिंदे नारे लगा लगाकर ख़ुशी मनाने लगे। 16यहूदियों के लिए आबो-ताब, ख़ुशी-ओ-शादमानी और इज़्ज़तो-जलाल का ज़माना शुरू हुआ। 17हर सूबे और हर शहर में जहाँ भी बादशाह का नया फ़रमान पहुँच गया, वहाँ यहूदियों ने ख़ुशी के नारे लगा लगाकर एक दूसरे की ज़ियाफ़त की और जशन मनाया। उस वक़्त दूसरी क़ौमों के बहुत-से लोग यहूदी बन गए, क्योंकि उन पर यहूदियों का ख़ौफ़ छा गया था।

यहूदी बदला लेते हैं

9 फिर 12वें महीने अदार का 13वाँ दिन[b] आ गया जब बादशाह के फ़रमान पर अमल करना था। दुश्मनों ने उस दिन यहूदियों पर ग़ालिब आने की उम्मीद रखी थी, लेकिन अब इसके उलट हुआ, यहूदी ख़ुद उन पर ग़ालिब आए जो उनसे नफ़रत रखते थे। 2सलतनत के तमाम सूबों में वह अपने अपने शहरों में जमा हुए ताकि उन पर हमला करें जो उन्हें नुक़सान पहुँचाना चाहते थे। कोई उनका मुक़ाबला न कर सका, क्योंकि दीगर तमाम क़ौमों के लोग उनसे डर गए थे। 3साथ साथ सूबों के शुरफ़ा, गवर्नरों, हाकिमों और दीगर शाही अफ़सरों ने यहूदियों की मदद की, क्योंकि मर्दकी का ख़ौफ़ उन पर तारी हो गया था, 4और दरबार में उसके ऊँचे ओहदे और उसके बढ़ते हुए असरो-रसूख़ की ख़बर तमाम सूबों में फैल गई थी।

5उस दिन यहूदियों ने अपने दुश्मनों को तलवार से मार डाला और हलाक करके नेस्तो-नाबूद कर दिया। जो भी उनसे नफ़रत रखता था उसके साथ उन्होंने जो जी चाहा सुलूक किया। 6सोसन के क़िले में उन्होंने 500 आदमियों को मार डाला, 7-10नीज़ यहूदियों के दुश्मन हामान के 10 बेटों को भी। उनके नाम परशंदाता, दलफ़ून, असपाता, पोराता, अदलियाह, अरीदाता, परमश्ता, अरीसी, अरिदी और वैज़ाता थे। लेकिन यहूदियों ने उनका माल न लूटा।

11उसी दिन बादशाह को इत्तला दी गई कि सोसन के क़िले में कितने अफ़राद हलाक हुए थे। 12तब उसने आस्तर मलिका से कहा, “सिर्फ़ यहाँ सोसन के क़िले में यहूदियों ने हामान के 10 बेटों के अलावा 500 आदमियों को मौत के घाट उतार दिया है। तो फिर उन्होंने दीगर सूबों में क्या कुछ न किया होगा! अब मुझे बताएँ, आप मज़ीद क्या चाहती हैं? वह आपको दिया जाएगा। अपनी दरख़ास्त पेश करें, क्योंकि वह पूरी की जाएगी।” 13आस्तर ने जवाब दिया, “अगर बादशाह को मंज़ूर हो तो सोसन के यहूदियों को इजाज़त दी जाए कि वह आज की तरह कल भी

[a] 7 मार्च।

[b] 7 मार्च।

अपने दुश्मनों पर हमला करें। और हामान के 10 बेटों की लाशें सूली से लटकाई जाएँ।”

14बादशाह ने इजाज़त दी तो सोसन में इसका एलान किया गया। तब हामान के 10 बेटों को सूली से लटका दिया गया, 15और अगले दिन यानी महीने के 14वें दिन[a] शहर के यहूदी दुबारा जमा हुए। इस बार उन्होंने 300 आदमियों को क़त्ल किया। लेकिन उन्होंने किसी का माल न लूटा।

16-17सलतनत के सूबों के बाक़ी यहूदी भी महीने के 13वें दिन[b] अपने दिफ़ा के लिए जमा हुए थे। उन्होंने 75,000 दुश्मनों को क़त्ल किया लेकिन किसी का माल न लूटा था। अब वह दुबारा चैन का साँस लेकर आराम से ज़िंदगी गुज़ार सकते थे। अगले दिन उन्होंने एक दूसरे की ज़ियाफ़त करके ख़ुशी का बड़ा जशन मनाया। 18सोसन के यहूदियों ने महीने के 13वें और 14वें दिन जमा होकर अपने दुश्मनों पर हमला किया था, इसलिए उन्होंने 15वें दिन ख़ुशी का बड़ा जशन मनाया। 19यही वजह है कि देहात और खुले शहरों में रहनेवाले यहूदी आज तक 12वें महीने के 14वें दिन[c] जशन मनाते हुए एक दूसरे की ज़ियाफ़त करते और एक दूसरे को तोह्फ़े देते हैं।

ईदे-पूरीम की इब्तिदा

20जो कुछ उस वक़्त हुआ था उसे मर्दकी ने क़लमबंद कर दिया। साथ साथ उसने फ़ारसी सलतनत के क़रीबी और दूर-दराज़ के तमाम सूबों में आबाद यहूदियों को ख़त लिख दिए 21जिनमें उसने एलान किया, “अब से सालाना अदार महीने के 14वें और 15वें दिन जशन मनाना है। 22ख़ुशी मनाते हुए एक दूसरे की ज़ियाफ़त करना, एक दूसरे को तोह्फ़े देना और ग़रीबों में ख़ैरात तक़सीम करना, क्योंकि इन दिनों के दौरान आपको अपने दुश्मनों से सुकून हासिल हुआ है, आपका दुख सुख में और आपका मातम शादमानी में बदल गया।”

23मर्दकी की इन हिदायात के मुताबिक़ इन दो दिनों का जशन दस्तूर बन गया।

24-26ईद का नाम ‘पूरीम’ पड़ गया, क्योंकि जब यहूदियों का दुश्मन हामान बिन हम्मदाता अजाजी उन सबको हलाक करने का मनसूबा बाँध रहा था तो उसने यहूदियों को मारने का सबसे मुबारक दिन मालूम करने के लिए क़ुरा बनाम पूर डाल दिया। जब अख़स्वेरुस को सब कुछ मालूम हुआ तो उसने हुक्म दिया कि हामान को वह सज़ा दी जाए जिसकी तैयारियाँ उसने यहूदियों के लिए की थीं। तब उसे उसके बेटों समेत फाँसी से लटकाया गया।

चूँकि यहूदी इस तजरबे से गुज़रे थे और मर्दकी ने हिदायत दी थी 27इसलिए वह मुत्तफ़िक़ हुए कि हम सालाना इसी वक़्त यह दो दिन ऐन हिदायात के मुताबिक़ मनाएँगे। यह दस्तूर न सिर्फ़ हमारा फ़र्ज़ है, बल्कि हमारी औलाद और उन ग़ैरयहूदियों का भी जो यहूदी मज़हब में शरीक हो जाएंगे। 28लाज़िम है कि जो कुछ हुआ है हर नसल और हर ख़ानदान उसे याद करके मनाता रहे, ख़ाह वह किसी भी सूबे या शहर में क्यों न हो। ज़रूरी है कि यहूदी पूरीम की ईद मनाने का दस्तूर कभी न भूलें, कि उस की याद उनकी औलाद में से कभी भी मिट न जाए।

29मलिका आस्तर बिंत अबीख़ैल और मर्दकी यहूदी ने पूरे इख़्तियार के साथ पूरीम की ईद के बारे में एक और ख़त लिख दिया ताकि उस की तसदीक़ हो जाए। 30यह ख़त फ़ारसी सलतनत के 127 सूबों में आबाद तमाम यहूदियों को भेजा गया। सलामती की दुआ और अपनी वफ़ादारी का इज़हार करने के बाद 31मलिका और मर्दकी ने उन्हें दुबारा हिदायत की, “जिस तरह हमने फ़रमाया है, यह ईद लाज़िमन मुतैयिन औक़ात के ऐन मुताबिक़ मनानी है। इसे मनाने के लिए

[a]8 मार्च।
[b]7 मार्च।
[c]फ़रवरी ता मार्च।

यों मुत्तफ़िक़ हो जाएँ जिस तरह आपने अपने और अपनी औलाद के लिए रोज़ा रखने और मातम करने के दिन मुक़र्रर किए हैं।”
32अपने इस फ़रमान से आस्तर ने पूरीम की ईद और उसे मनाने के क़वायद की तसदीक़ की, और यह तारीख़ी किताब में दर्ज किया गया।

मर्दकी अपनी क़ौम का सहारा बना रहता है

10 बादशाह ने पूरी सलतनत के तमाम ममालिक पर साहिली इलाक़ों तक टैक्स लगाया।
2उस की तमाम ज़बरदस्त कामयाबियों का बयान ‘शाहाने-मादी-ओ-फ़ारस की तारीख़’ की किताब में किया गया है। वहाँ इसका भी पूरा ज़िक्र है कि उसने मर्दकी को किस ऊँचे ओहदे पर फ़ायज़ किया था।
3मर्दकी बादशाह के बाद सलतनत का सबसे आला अफ़सर था। यहूदियों में वह मुअज़्ज़ज़ था, और वह उस की बड़ी क़दर करते थे, क्योंकि वह अपनी क़ौम की बहबूदी का तालिब रहता और तमाम यहूदियों के हक़ में बात करता था।